GUIDING CHART

रहनुमा चार्ट (संकेताक्षरी)

हमज़:	अ अि अी अु अू अे अै
हमज़: साकिन	अ्
हमज़-ए-वस्ल	अ्
अ़ैन	अ़ अ़ि अ़ी अ़ु अ़ू अ़े अ़ै
अ़ैन साकिन	ऽ

काफ़	क	क़ाफ़	क़
ख़े	ख़	ग़ैन	ग़
फ़े	फ़	जीम	ज
ज़े	ज़	ज़ाल	ज़
ज़ोय	ज़	ज़ाद	ज़
ते	त	तोय	त
गोल ते	त	सीन	स
साद	स	से	स
हे	ह	बड़ी हे	ह
हे साकिन	ह्	बड़ी हे साकिन	ह्
खड़ी ज़ेर	(ब)	उल्टा पेश	(हु)

रुकूअ़ ★; सिज्दः ★★; रुब्अ़, निस्फ़, सुल्स पर ●; वक़्फ़ लाज़िम, वक़्फ़ मंज़िल, वक़्फ़उलनबी, वक़्फ़ जिब्रील अलैहिस्सलाम और वक़्फ़ ग़ुफ़रान पर निशान ●

रमूज़े औक़ाफ़:—

आयत	( )	तोय	त्
जीम	ज	मीम	म्
लाम अलिफ़ ऊपर का	ला	स्वाद	स्
लाम अलिफ़ नीचे का	ला	क़िफ़्	क़िफ़्
सिल (सलु)	सिल्	सला (सल्ला)	सला
वक़्फ़:	वक़्फ़:	काफ़	क्
क़ाफ़	क़्	ज़े	ज़
		सक्ता	स्

∴ (मुआनक़ः) ∴

मद (प्लुत) ॆ (अलिफ़ ला'म मी'म)

नोट—इस रहनुमा चार्ट के अलावा, तिलावत (पाठ) के मौक़े पर वस्ल और वक़्फ़ (सन्धि और विग्रह) के नियम भी ग्रंथ के शुरू में दिये जाँयगे जो संस्कृत के नियमों से बहुत कुछ मिलते-जुलते हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हामिदन व मुसल्लियन व मुसल्लिमन

जनाब नन्दकुमार अवस्थी साहब से उनके हिन्दी रसमे ख़त में क़ुरानशरीफ़ को मुन्तक़िल करने और हिन्दी में तर्जुमा करने के मसले पर कई दफ़े बातचीत हुई। मैं देवनागरी से वाक़िफ़ियत नहीं रखता, लेकिन अवस्थी साहब ने जिस वज़ाहत से अरबी को हिन्दी में (रसमे ख़त में) मुन्तक़िल करने के अपने ईजाद करदा क़वायदों ज़वाबित बताए उससे यह तशफ़्फ़ी हो जाती है कि क़ुरानशरीफ़ के अलफ़ाज़ बेऐनिही देवनागरी में मुन्तक़िल हो जाते हैं और किसी तरह का तसर्रुफ़ उनमें नहीं हुआ है।

इस इत्मीनान के बाद मैं अपनी मसर्रत का इज़हार किये बग़ैर नहीं रह सकता कि अवस्थी साहब ने क़ुरान-शरीफ़ की वह ख़िदमत अन्जाम दी है जो तक़ाज़ाय ज़माना के ऐन मुताबिक़ है। मैं उम्मीद करता हूँ कि यह ख़िदमत आने वाली नसलों के लिए पूरी तरह मुफ़ीद साबित होगी।

फ़क़त

मुहर

दः (मुफ़्ती) मुहम्मद रज़ा अंसारी

फ़िरंगीमहल, लखनऊ

ता० ३० रबीउस्सानी सन् १३८५ हिजरी,

(२८ अगस्त सन् ६५ ईस्वी)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मोहम्मद ओवैस नदवी (नगरामी)

दारुलउलूम नदवतुल उलमा,

लखनऊ (इण्डिया)

जनाब नन्दकुमार अवस्थी साहब से मेरी मुलाक़ात मुहतरमी सुबाहुद्दीन "उमर" के जरिये से हुई और हिन्दी रस्मुलखत में क़ुरान मजीद को हिन्दी तर्जुमे के साथ शाया करने का इरादा मालूम हुआ। मुझको हिन्दी रस्मुलख़्त में क़ुरान मजीद के लिखने में बेहद तरद्दुद था, लेकिन अवस्थी साहब ने अपने उसूलों-जवाबित का मुझसे तज़किरा फ़र्माया और मैंने कई जगह से पढ़वा कर सुना। फिर दारुलउलूम के दर्जात सानविया के अफ़सर-मुदर्रिस अरशी साहब से हिन्दी रस्मुलख़त के जाँचने की दरख़्वास्त की। अरशी साहब ने इस पर इज़हार इत्मीनान किया।

मेरा ख़्याल है कि इमकानी हद तक हिन्दी रस्मुलख़त और तर्जुमे में पूरी एहतियात रखी गई है। हिन्दी तर्जुमे में मेरी दरख़्वास्त पर अवस्थी साहब ने मौलाना अब्दुल माजिद साहब दरयाबादी का तर्जुमा सामने रखा है। मैं ख़ुदा के भरोसे पर कह सकता हूँ कि यह मिहनत हर तरह क़ाबिल इत्मीनान है। ख़ुदा करे इसी एहतियात के साथ यह काम अन्जाम को पहुँचे।

द: मुहम्मद ओवैस नदवी
(शेख़ुल् तफ़सीर दारुलउलूम,)
नदवतुल उलमा, लखनऊ

ता०२१ अगस्त सन् १९६५ ई०

(जनाब मौलाना मुहम्मद ओवैस, दारुल उलूम नदवतुल उलमा, की दरख़्वास्त पर जनाब अरशी साहब की जाँच व रिपोर्ट)

श्री नन्दकुमार अवस्थी साहब ने क़ुरान शरीफ़ को सिर्फ़ हिन्दी जानने वालों के लिए हिन्दी रस्मुलख़त में ऐसे मुस्तहकम और नाक़ाबिल तब्दील उसूलों के साथ तहरीर किया है कि उनको ज़ेहन में महफ़ूज़ कर लेने के बाद अलफ़ाज़े क़ुरानी का सही तलफ़्फ़ुज़ व आसानी अदा किया जा सकता है। इसके लिए हिन्दी मुरव्विजा रस्मुलख़त में बड़ी काविश और इन्तहाई तफ़हहुज़ व तनक़ीद और तहक़ीक़ के साथ नई अलामात ऐसी वज़ा की हैं जिनकी वाक़िफ़ियत से सीन, से, स्वाद या हे, बड़ी हे या ज़े, ज़ाल, ज़ाद, ज़ो या अलिफ़, ऐन, हमज़ः या ते, तो और हुरूफ़े मुतहर्रिक़ व हुरूफ़े साकिन का फ़र्क़ पूरी तरह मुतमाइज़ हो जाता है। मौसूफ़ ने क़ुरान-शरीफ़ को सही पढ़ने के लिए जो रमूज़ औक़ाफ़ मुरत्तब फ़रमाये हैं, उनसे मुझे क़ुल्लियतन इत्तफ़ाक़ है। हिन्दी रस्मे खत के साथ उन्होंने अरबी रसमें ख़त में असल क़ुरानशरीफ़ के मत्न को भी शामिल रखा है, ताकि सेहते कलामे रब्बानी में किसी तरह नक़्स न पैदा होने पाये।

मैं मौसूफ़ को इस मुबारिक कोशिश के लिए अपनी दिली मुबारिकबाद पेश करता हूँ। मुझे यक़ीने कामिल है कि हिन्दी-दाँ तबक़ा इस कलामे पाक के शाया होने पर ख़ातिरख़्वाह इस्तफ़ादः कर सकेगा।

फ़क़त

ख़ादिमुल् असातिज़ा,
मुहम्मद हसन "अरशी"
इंचार्ज मदरसा सानविया,
दारुलउलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ।

तारीख़ १९ अगस्त सन् १९६५ ई०
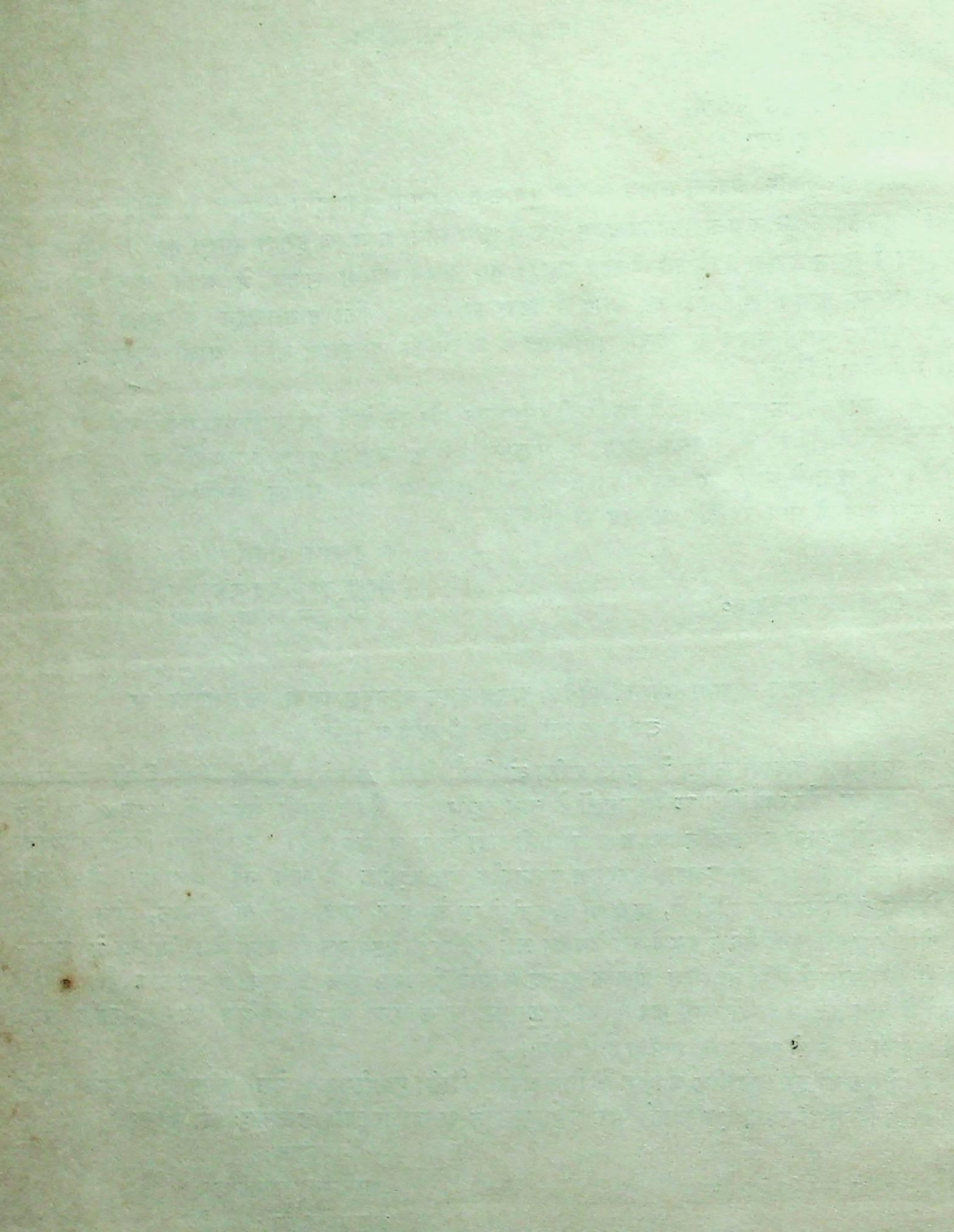
(बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम)

Phone 24733
Syed Kalbe Abid
(Imam-e-juma)
Jauhari Mohalla, Lucknow-3 (India)

जनाब नन्दकुमार साहब अवस्थी ने एक मुद्दत तक मेहनत व जाफ़िशानी करके ऐसा तरीक़ा ईजाद फ़र्माया है जिससे अरबी अलफ़ाज़ को हिन्दी रसमुलख़त में इस तरह तहरीर करना मुमकिन हो गया है कि सही तलफ़्फ़ुज़ के साथ अरबी अलफ़ाज़ को अदा किया जा सके। और मुश्तबहुस्सौत अलफ़ाज़ को उनके मख़ारिज के फ़र्क़ के साथ समझा जा सके। मुझे उम्मीद है कि जनाब मौसूफ़ की यह ज़हमत व मेहनत अरबाब इल्म में क़दर की निगाह से देखी जाय गी।

मौसूफ़ ने इस सिलसिले में सब से पहले क़ुर्आन मजीद को हिन्दी रसमुल ख़त में लिखने और उसको मय तर्जुमे के शाया करने का इरादा फ़र्माया है। बाज़ उन अफ़राद ने जो हिन्दी से वाक़िफ़ हैं उसको और मुझे बतलाया कि अगर उन क़वायद व ज़वाबित को मलहूज़ रखा जावे जिनको जनाब अवस्थी साहब ने इब्तिदा में बयान कर दिया है तो क़ुरानी अलफ़ाज़ को सही तलफ़्फ़ुज़ के साथ तरतील का लिहाज़ करते हुये पढ़ना ममकिन है। और उन हज़रात ने जनाब अवस्थी साहब की बड़ी तारीफ़ की।

कलाम मजीद के तरजुमे को मैंने बाज़ जगह से सुना। इस सिलसिले में भी मौसूफ़ ने बड़ी मेहनत की है और किसी एक तरजुमे पर भरोसा करने के बजाय मुख़्तलिफ़ तराजुम को अपने सामने रखा है। मौसूफ़ (ने) न सिर्फ़ क़ुर्आन मजीद को हिन्दी रसमुल ख़त में तब्आ कराया है बल्कि साथ अरबी रसमुल ख़त में भी छप वाया है। इससे एक फ़ायदा यह भी है कि वह हज़रात जो दोनो रसमुल ख़त से वाक़िफ़ हैं दोनो का तक़ाबुल भी कर सकते हैं और दोनो रसमुल ख़त से फ़ायदा हासिल कर सकते हैं। मैं उम्मीद करता हूँ कि जनाब अवस्थी साहब की मेहनत ख़ास तौर पर इस हल्के में ज्यादा मक़बूल होगी जो मशरक़ी ज़बानों को एक दूसरे से क़रीब करना चाहते हैं और मौसूफ़ की इल्मी हल्क़ों की तरफ़ से वैसी ही क़दरदानी होगी जिसके आप मुस्तहक़ हैं।

ता. १८ नवंबर १९६५

द: फ़िदवी—सैयद कल्बे आबिद
(इमामे जुमा)
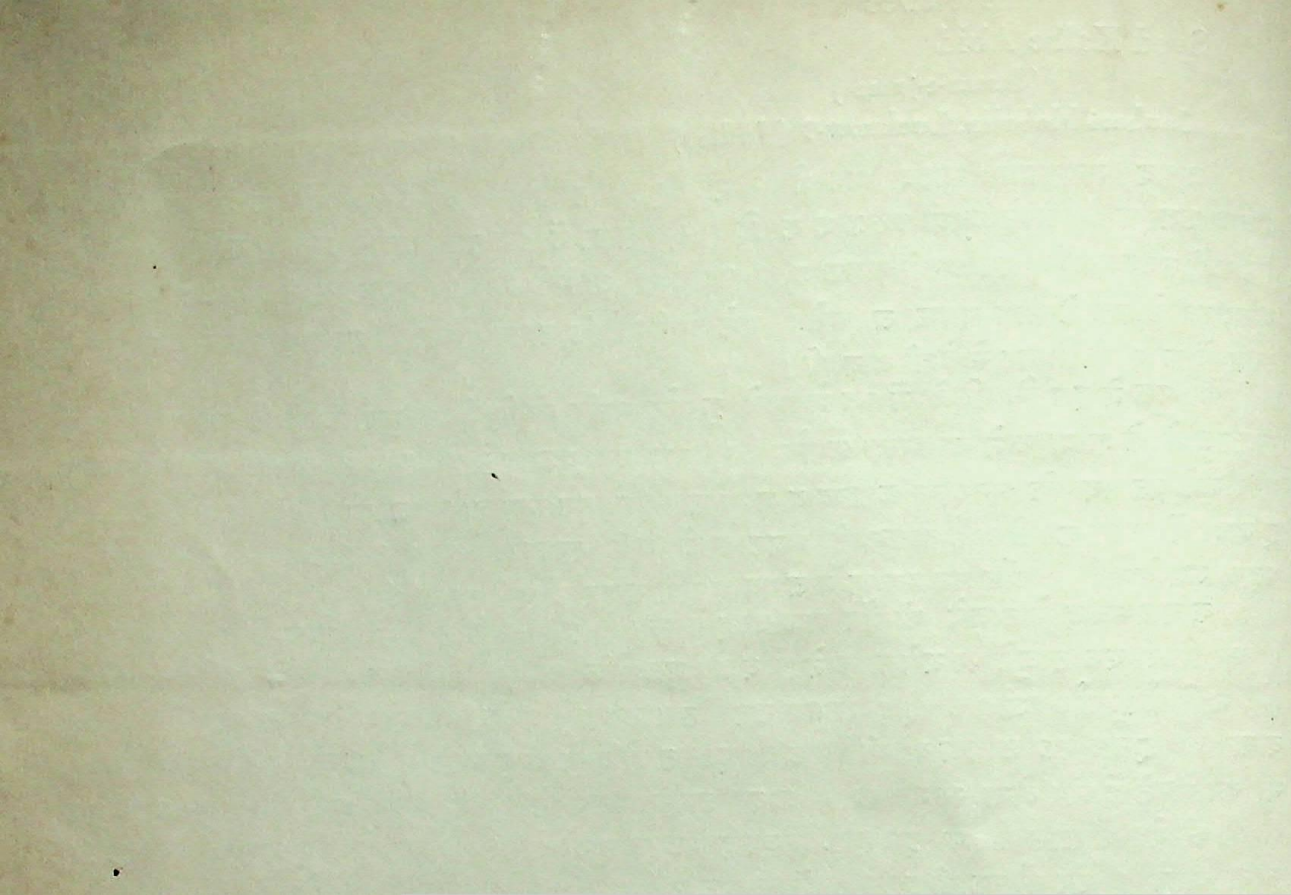
Dr. S. B. Samadi
M. A., Ph. D., D. Litt.
Department of Arabic
Lucknow University

Tel.no. 25759
Akhtar Manzil
Lucknow

मुझे बहुत मसर्रत है कि श्रीनन्दकुमार जी अवस्थी ने कई वर्षों की अन्तहक कोशिश के बाद इस अमर में पूरी कामयाबी हासिल की कि क़ुराने पाक को मय उसके तमाम ऐराब, रमूज़ औक़ाफ़ और मुख़्तलिफ़ हुरूफ़ की अस्वात बहुत सही तौर पर देवनागरी रसमुलख़त में मुन्तक़िल कर दिया। यह एक बड़ा कारनामा है। ख़ुसूसन इस वजेह से और भी कि अब हिन्दुस्तान की क़ौमी ज़बान हिन्दी हो गई है और मुसलमानों और ग़ैरमुस्लिमों दोनो को हिन्दी जानना चाहिये। इस लिहाज़ से हिन्दी रसमुलख़त में क़ुरान की मौजूदगी एक बड़े ख़ला को पुर करती है। इसके मासिवा अवस्थी जी ने एक और काम यह भी किया है कि अरबी में क़ुरान भी हर सफ़े पर दे दिया है। ताकि नक़ायल करने में आसानी हो और अग़लात का इमकान बजुज़ कि सिफ़र के रह गया है। मज़ीदबरां आपने क़ुरान शरीफ़ का आसान तर्जुमा और उसपर हाशिया भी मुस्तनद किताबों को मुताला करके इजाफ़ा कर दिया है। इन सब लवाज़मात की वजेह से हिन्दी रसमुलख़त का यह नुस्ख़ए क़ुरानशरीफ़ अपने अन्दर तमाम ख़ूबियों का हामिल है और मैं इस अहम काम की अन्जामदेही पर श्री नन्दकुमार जी को मुबारकबाद पेश करता हूँ और अल्लाह से दुआ करता हूँ कि उनकी यह कोशिश बारआवर हो और इसका कमाइक़ा उज्र उनको मिले। आमीन सम आमीन।

दस्तख़त समदी,

२३ अक्तूबर सन् ६५

हेड, डिपार्टमेण्ट आफ़ अरेबिक
लखनऊ यूनीवर्सिटी एण्ड
कनवीनर बोर्ड आफ़ ओरियण्टल स्टडीज़
इन अरेबिक एण्ड परशियन, लखनऊ यूनीवर्सिटी
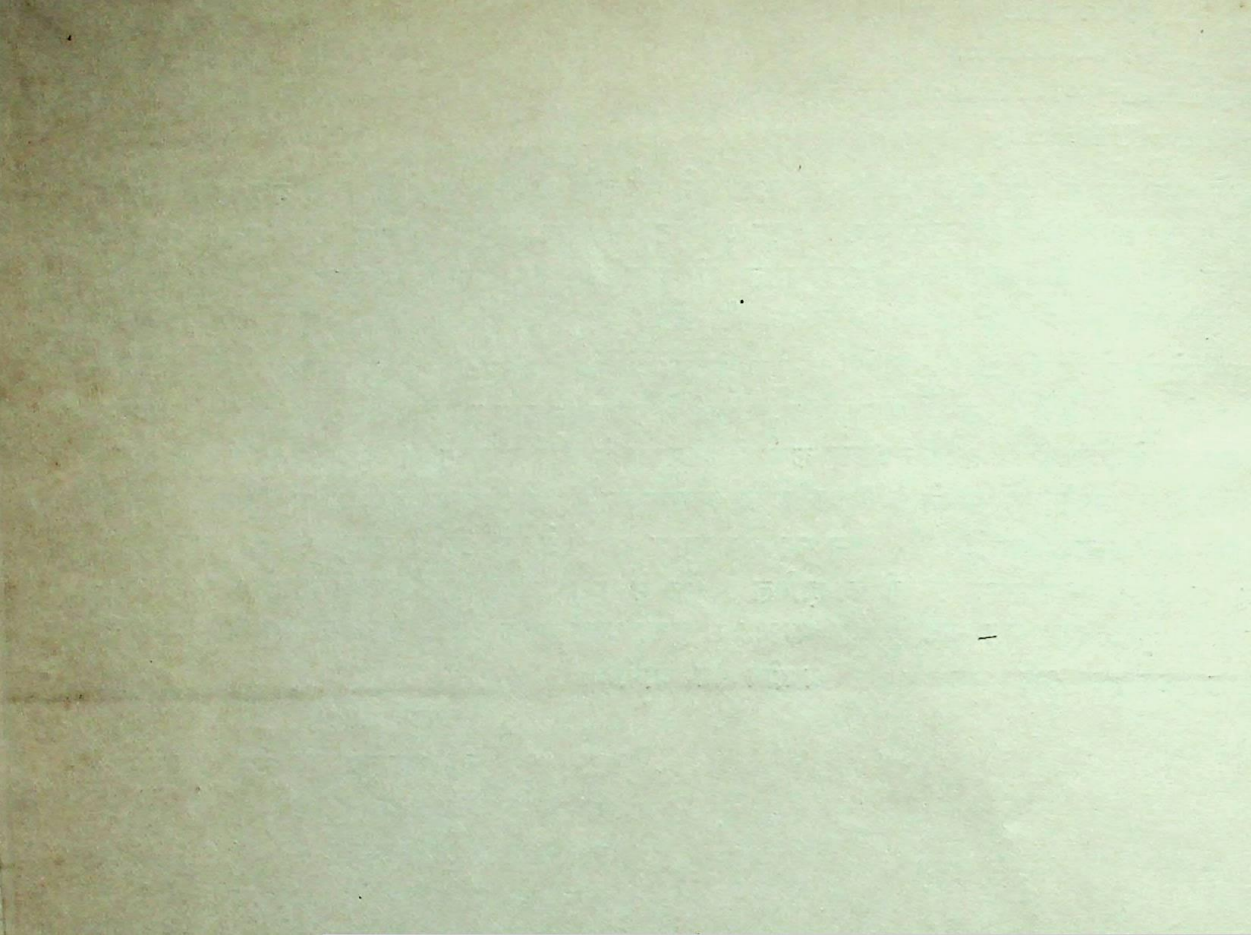
जनाब सय्यद मुहम्मद अब्दुर्रब सूफ़ी, (क़ारी) एम ए,

बुधवारी, उन्नाव

......मौलाना....................साहब हों या कोई दूसरा, जो भी आयतों को हिन्दी लिपि में लिखता चला जायगा और नुक़्तों से तथा हायफ़ेन से (और) बेरोक तथा रोक तथा ध्वनि तथा स्वर आदि पर प्रतिबन्ध का प्रबन्ध नहीं करेगा, उसकी लिपि द्वारा आयतें शुद्धतापूर्वक कदापि नहीं पढ़ी जा सकतीं। इस विषय में आपने बहुत उन्नति की है और लगभग पूर्ण रूप से शुद्ध पढ़े जाने का प्रबन्ध कर लिया है। इसमें आप धन्यवाद के पात्र हैं।.........।

आपका

ए. आर सूफ़ी

२६-२-६५

(श्री विनोबा जी की रूहुल क़ुर्आन के हिन्दी संस्करण के सर्वेसर्वा श्री अच्युत भाई देशपाण्डे, सर्व-सेवा संघ-प्रकाशन, वाराणसी, से होते रहे लम्बे पत्र व्यवहार में से उनका कुछ कथनांश)

......आपके काम के लिए विनोबा जी का आशीर्वाद सदा प्राप्त है।......आपकी पुस्तक तैयार हो जाने पर आप उन्हें अंकित कर सकते हैं। आपका यह काम एक मिशन ही है, इस विषय में संदेह रखने की कोई गुंजाइश नहीं है।

सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन

वाराणसी

ता. २६-३-६५

अच्युत भाऊी

(ह: अच्युत भाऊी देश पाण्डे)

आपका पैकेट कल मिला। बहुत बहुत शुक्रिया। आपके काम को पाकर तबियत में बेहद ख़ुशी हुई। इस ख़ुश होने का बाइस सिर्फ़ यह है कि मेरे को जिस तरह की चीज़ (हिन्दी क़ुर्आन) की तमन्ना थी वह हासिल हो गई।

फ़क़त

गुलाम मुहम्मद क़ुरैशी

राहत गढ़, सागर (मध्य प्रदेश)

ता. २८-१०-६५
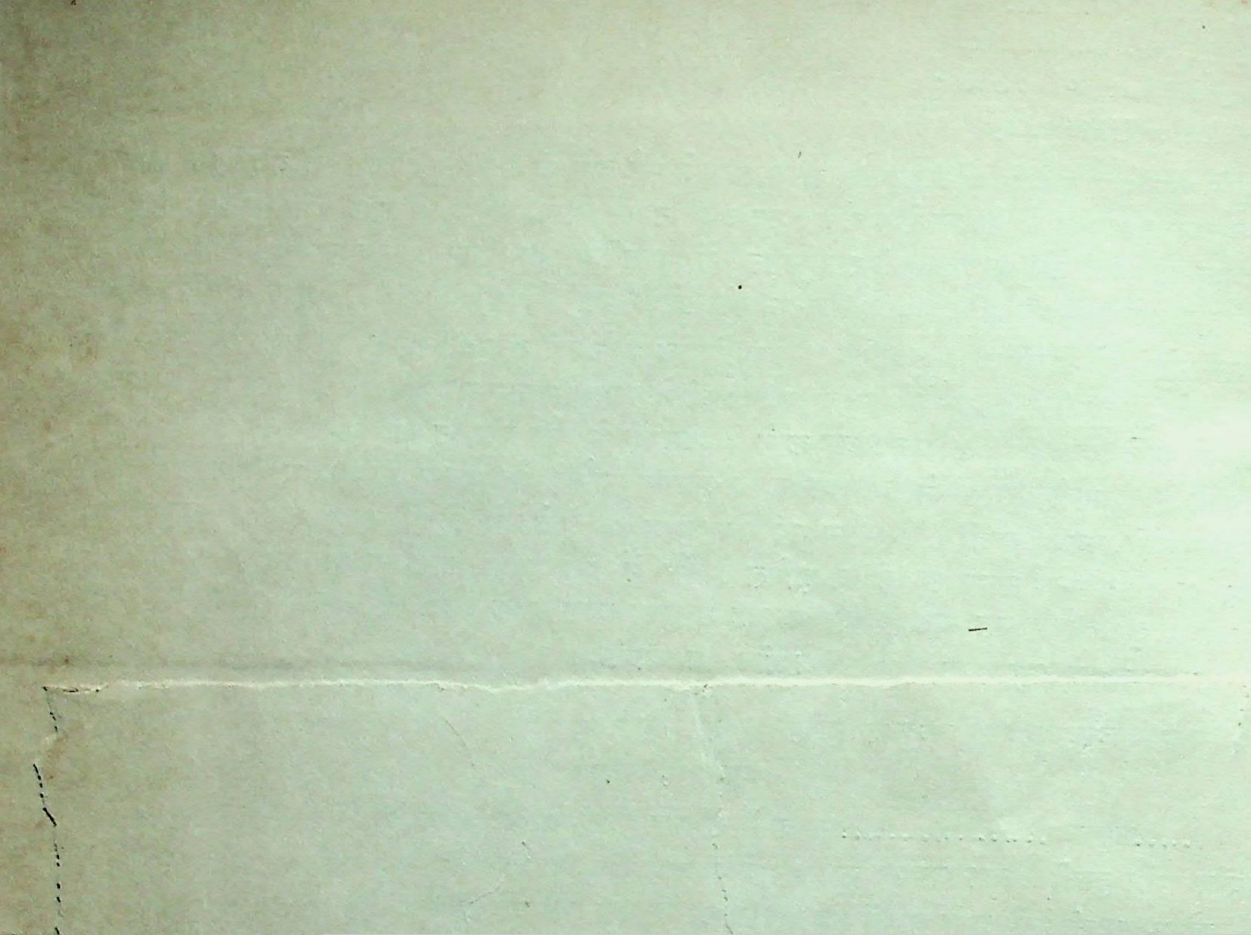
(मोहर) मेम्बर लेजिस्लेटिव काउन्सिल, उत्तर प्रदेश

श्री नन्दकुमार अवस्थी जी ने क़ुर्आन मजीद को हिन्दी रसमुल ख़त में लिखने की जो क़ाबिले तारीफ़ और मुफ़ीद बरसों अन्तहक कोशिश में कामयाबी हासिल की है उसे हिन्दी जानने वाले अरबी के अफ़ाज़िल-अहबाब से मालूम करके बहुत मसर्रत हुई। दोनो ज़बानों के रसमुल ख़त में जो फ़र्क़ हैं उस पर उबूर हासिल करने में जो दुश्वारियाँ मौसूफ़ को हुई होंगी उनका अन्दाज़ः वह हज़रात कर सकते हैं जो दोनो ज़बानों से वाक़िफ़ हैं. जैसा कि मुझे मौलवी इक़्तिदा हुसैन साहब एम. ए. (कोविद-हिन्दी) से पढ़वा कर मालूम हुआ।

बहरहाल यह इल्मी ख़िदमत क़ाबिल क़दर व तक़लीद है।

ता. ७. १०. ६५
नसीर मंज़िल,
विक्टोरिया स्ट्रीट, लखनऊ

दः सैयद मु. नसीर
(मौलाना सय्यद मुहम्मद नसीर एम. एल. सी.)
प्रिंसिपल शिया अरबी कालेज, लखनऊ

Syed Mohammed Saeed Abaqati, Mujtahid.
Founder Member: Muntadann Nashar, Najaf (Iraq)
Patron: Aniuman Moienul Zairien. Shaheed Salis (Agra)
Member: Oriental Board, Lucunow University
Managing Trustee: Nasiria Library. Lucknow
President: Majlise Ulma Shia degree College. Lucknow

Naseer Manzil
Victoria Street,
Lucknow

Date............

७८६

जनाब मौलवी इक़्तिदाहुसैन साहब, लेक्चरर शिया डिगरी कालेज व दीगर हिन्दी दाँ हज़रात की तहरीरों से वाज़े होता है कि श्री नन्दकुमार अवस्थी साहब ने हिन्दी रसमुल ख़त में क़ुरानमजीद तहरीर करने के लिए बड़ी मेहनत और जाफ़िशानी से क़ाबिले मदह व सना ख़िदमत अन्जाम दी है। मुझे उम्मीद है कि अहले मारफ़त मौसूफ़ की हिम्मत अफ़ज़ाई करेंगे।

७ अक्तूबर, १९६५

दः नाचीज़ स० मु० सईद,

(जनाब मौ. सैय्यद मुहम्मद नसीर व मौ. सै. सईद, साहब की दरख़्वास्त पर
जनाब मौ. इक़्तिदा हुसैन साहब की जाँच व रिपोर्ट)

Saiyid Eqtida Husain Taqvi
M, A, Fazil, Hindi Kovid (BY.)
Lecturer, Shia College, Lueknow

Phone no 6757
Post & Village Baragaon
Dist. Faizabad(U.P.)
Nt. 2, 9. 65

जनाब नन्दकुमार साहब अवस्थी ने क़ुर्आन मजीद के अरबी रसमुल ख़त को देवनागरी रसमुल ख़त में तबाअत का सिलसिला शुरू किया है जिसके लिए मफ़रूज़ः अलामात को बरूएकार लाकर सही तिलावत की जा सकती है। मौसूफ़ को इसकी जद्दो जेहद में तक़रीबन १२ साल की तवील मुद्दत सर्फ़ करनी पड़ी जिसके लिए मौसूफ़ बहरे नहेज क़ाबिल सतायश व मुबारकबाद हैं।

मफ़रूज़ः अलामात की अयानत से मैंने सूरः बक़र को बनज़रे ग़ायर बिलिस्तिआब देखा। मफ़रूज़ः अलामात ही इस क़ुरान मजीद की तिलावत की रूह हैं।

मुझे उम्मीद है कि दीगर अहल ज़ौक़ को भी बतरीक़े मज़कूरा तिलावत कलामे पाक में कोई दिक़्क़त व मुश्किल का सामना न करना पड़ेगा।

दः अहक़रुलकौनैन इक़्तिदा हुसैन तक़वी
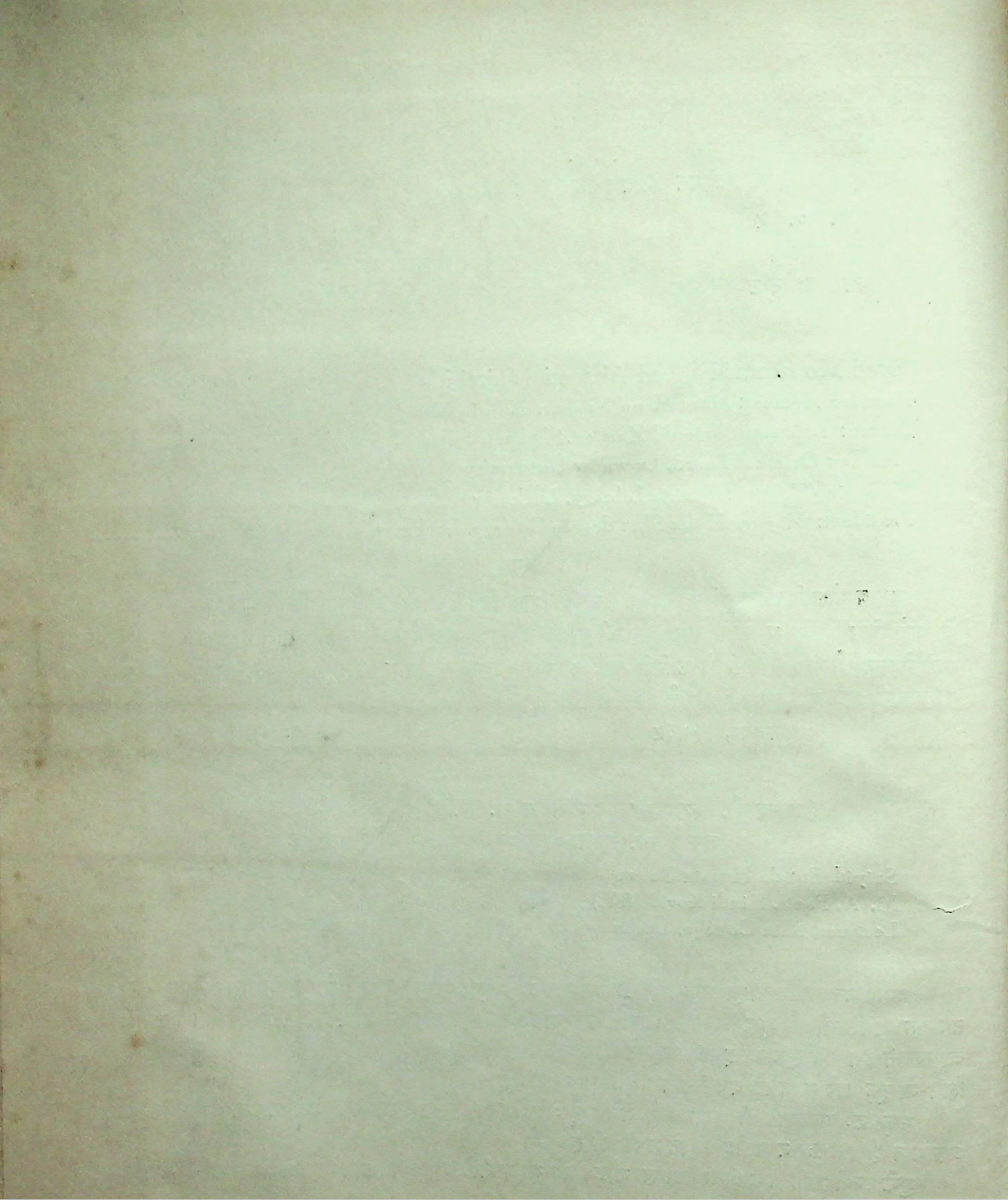
☪ १ सूरतुल् फ़ातिहः ५ ☪

यह सूरत मक्के में उतरी; इसमें अरबी के १२३ अक्षर, २५ शब्द ७ आयतें और १ रुकूअ़ हैं। ❀

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीमि ●

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन ला (१) अर्रह्मानिर्रहीमि ला (२) मालिकि यौमिद्दीनि त् (३) ईयाक नअ्बुदु व ईयाक नस्तईनु त् (४) इह्दि-नस्सिरातल्मुस्तक़ीम ला (५) सिरातल्लज़ीन अन्अम्त अलैहिम् ५ ला (६) ग़ैरिल् - मग़्ज़ूबि अलैहिम् वलज़्ज़ाल्लीन (७) ★

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला बेहद मेहरबान है।

हर तरह की तारीफ़ ख़ुदा ही के लिए है, जो सारे संसार का पालनहार (रब) है।(१) निहायत दयावान बेहद मेहरबान है।(२) जज़ा (अन्तिम न्याय) के दिन का मालिक।(३) (ऐ ख़ुदा!) हम तेरी ही इबादत (उपासना) करते हैं और तुझही से मदद चाहते हैं।(४) हमको सीधी राह चला।(५) उन लोगों की राह जिनको तूने निअ़मत§ से निहाल (परस्कृत) किया (६) न कि उनकी (राह) जो तेरे ग़ज़ब (प्रकोप) में पड़े और न भटके हुओं की।(७) ★

★ रु. १ आ ७

❀ सूरे फ़ातिहः सम्पूर्ण क़ुर्आन का मंगलाचरण है। इस सूरत के उतरने की संख्या ५ होते हुये भी इसको धर्मग्रंथ के शुरू में दिये जाने से इसकी अहमियत (महानता) ज़ाहिर है। महज़ अल्लाह की तारीफ़ और इबादत इस सूरत का सार है। नमाज़ व अनेक मौक़ों पर इसका पाठ ज़रूरी है। यह इस्लाम धर्म की आत्मा (रूह) है और क़ुर्आन के सारे पाठ में सूरे फ़ातिहः का भाव घुलामिला है। § अलभ्य पदार्थ।
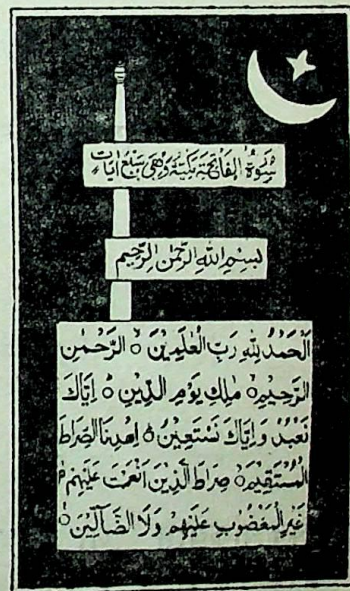
✪✪ पहला पारः ✪✪

✪✪ अलिफ़् ला'म् मी'म् ✪✪

✪ २ सूरतुल् बक़रः ८७ ✪

सूरए बक़र (मदनी) इसमें अरबी के २०००० अक्षर ६०२१ शब्द

२८६ आयतें और ४० रुकूअ् हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीमि •

अलिफ़् ला'म् मी'म् ज् (१) जालिकल्किताबु ला रैब ज् सला ∴ फ़ीहि ∴ज् हुदल्लिलमुत्तक़ीन ला (२) अल्लजीन युअ्मिनून बिल्ग़ैबि व युक़ीमूनस्सलात व मिम्मा रजक़्ना-हुम् युन्फ़िक़ून ला (३) वल्लजीन युअ्मिनून बिमा' अुन्ज़िल अिलैक व मा' अुन्ज़िल मिन् क़ब्लिक ज् व बिल्-आख़िरति हुम् यूक़िनून त् (४)

मु. अ्र मु ता ख़. १

२ सूरतुल् बक़रः ८७

सूरए बक़र (मदनी) इसमें अरबी के २०००० अक्षर ६०२१ शब्द
२८६ आयतें और ४० रुकूअ हैं। *

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीमि ●

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो निहायत दयावान बेहद मेहरबान है।

अलिफ़् ला'म्-मी'म्§ (१) यह वह पुस्तक है, जिसमें (ख़ुदा का कलाम होने में) कुछ भी सन्देह नहीं। ख़ुदा से डरनेवालों को राह (सुपथ) दिखाती है।(२) (और उनको) जो अनदेखे (अव्यक्त) पर ईमान रखते और नमाज़ क़ायम करते और जो कुछ हमने उनको दे रखा है, उसमें से (राहे ख़ुदा में) ख़र्च करते हैं।(३) और (ऐ मुहम्मद!) जो किताब (क़ुर्आन) तुम पर उतारी गई है और जो तुमसे पहले (इंजील तौरेत वग़ैरः) उतारी गई हैं उनको जो मानते हैं और आख़िरत (अन्तिम न्याय)‡ पर भी विश्वास करते हैं। (४)

---

* आलिमों का मत है कि क़ुर्आन की सबसे लम्बी सूरत सूरे बक़र की २८६ आयतों में क़ुर्आन में जहाँ-तहाँ दी हुई सभी हिदायतें (शिक्षाएँ) मौजूद हैं। १ से २६ आयतों में संसार में तीन तरह के इंसानों और उन पर अल्लाह के संदेश के अलग-अलग प्रभाव का बयान है। आ. ३०-३६ में मनुष्य की पैदाइश उसको अन्त में कहाँ जाना है, उसका पतन (ज़वाल) तथा उसके लिए हमेशा खुली हुई भलाई की राह की चर्चा है। आ. ४०-८६ में इस्राईलियों (यहूदियों) की कथा उनके ही ग्रन्थों तथा परम्पराओं (रवायतों) की बुनियाद पर खुलासा कहती है कि किस तरह उनको बड़ाई मिली और उसका बेजा इस्तेमाल उन्होंने कैसे किया। इंसान के चढ़ाव-गिराव की सहज कथा का बयान है। आ. ८७-१२१ में, किस तरह ईश्वरीय ग्रन्थ (तौरात) के इन माननेवालों ने उस अपने ग्रंथ को ही झुठलाया और नबियों के सिलसिले की आख़िरी कड़ी 'मुहम्मद' को ईश्वर दूत मानने से इन्कार किया, इसका बयान है। आ. १२२-१४१ में यहूदी अपने को हज़रत इब्राहीम का जानशीन (उत्तराधिकारी) कहते हैं, जो बेशक सच्चे पैग़म्बर थे। लेकिन वह अरबों के पुरखे इस्माईल और यहूदियों के इस्राईल इन दोनो के ही बुज़ुर्ग थे। उन्होंने हज़रत इसमाईल (अगले सफ़े पर)

§ अलिफ़् ला'म् मी'म्—इनका क्या अर्थ है? इनका सही इल्म सिर्फ़ ईश्वर ही को है। इस तरह के जितने अक्षर क़ुर्आन में हैं, उनको हुरूफ़ 'मुक़त्तआत' कहा जाता है। अब्दुल्ला यूसुफ़ अली की तफ़सीर के अनुसार ईमानवालों को ये अक्षर रूहानी क़ुवत देते हैं। ‡ क़ियामत (महाप्रलय) वह दिनहोगा, जब ख़िलक़त (सृष्टि) तबाह हो जायगी। जब किसी की बनावटी हुकूमत न रहेगी। सिर्फ़ सच्चा हाकिम ख़ुदा ही न्याय-सिंहासन पर बिराजता होगा और उसी के हुक्म का बोलबाला होगा और लोग अपने कर्म (अमल) का बदला दिये जाने के लिए दुबारा ज़िन्दः किये जायँगे। वही 'आख़िरत' (अन्तिम न्याय) का दिन होगा।

अुला'अिक अला हुदम्मिर्रब्बिहिम् क् व अुला'अिक हुमुल्मुफ़्लिहून (५) अिन्नल्लजीन कफ़रू सवा'अुन् अलैहिम् अअन्जर्तहुम् अम् लम् तुन्जिर्हुम् ला युअ्मिनून (६) ख़तमल्लाहु अला क़ुलूबिहिम् व अला सम्अिहिम् त् व अला' अब्सारिहिम् ग़िशावतुन् ज़् ०व लहुम् अजाबुन् अज़ीमुन् (७) ★ व मिनन्नासि मैंयक़ूलु आमन्ना बिल्लाहि व बिल्यौमिल्आख़िरि व मा हुम् बिमुअ्मिनीन म् ● (८) युख़ादिअ़ूनल्लाह वल्लज़ीन आमनू ज् व मा यख़्दअ़ून अिल्ला' अन्फ़ुसहुम् व मा यश्अ़ुरून त् (९) फ़ी क़ुलूबिहिम् मरज़ुन् ला फ़ज़ादहुमुल्लाहु मरज़न् ज् व लहुम् अजाबुन् अलीमुन् ۵ ला बिमा कानू यक्जिबून (१०) व अिजा क़ील लहुम् ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि ला क़ालू' अिन्नमा नह्नु मुस्लिहून (११) अला' अिन्नहुम् हुमुल् मुफ़्सिदून व लाकिल्ला यश्अ़ुरून (१२) व अिजा क़ील लहुम् आमिनू कमा' आमनन्नासु क़ालू' अनुअ्मिनु कमा' आमनस्सुफ़हा'अु त् अला' अिन्नहुम् हुमुस्सुफ़हा'अु व लाकिल्ला यअ़्लमून (१३) व अिजा लक़ुल्लजीन आमनू क़ालू' आमन्ना ज् सला व अिजा ख़लौ अिला शयातीनिहिम् ला क़ालू' अिन्ना मअ़कुम् ला अिन्नमा नह्नु मुस्तह्ज़िअून (१४) अल्लाहु यस्तह्ज़िअु बिहिम् व यमुद्दुहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ़्महून (१५) अुला'अिकल्लजीनश्तरवुज़्ज़लालत बिल्हुदा त् फ़मा रबिहत् तिजारतुहुम् व मा कानू मुह्तदीन (१६) मसलुहुम् कमसलिल्लजिस्तौक़द नारन् ज् फ़लम्मा' अज़ा'अत् मा हौलहू जहबल्लाहु बिनूरिहिम् व तरकहुम् फ़ी जुलुमातिल्ला युब्सिरून (१७) सुम्मुम् बुक्मुन् अुम्युन् फ़हुम् ला यर्जिअ़ून ला (१८) औ कसैयिबिम् मिनस्समा'अि फ़ीहि जुलुमातुंव रअ़्दूंव बर्क़ुन् ज् यज्अ़लून असाबिअ़ हुम् फ़ी' आजानिहिम् मिनस्सवाअ़िक़ि हज़रल्मौति त् वल्लाहु मुहीतुम्बिल्काफ़िरीन (१९)

रु. १ / १ आ ७

● व. ला जि म

البقرة ٢ ٤ الم

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ
قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ ۖ وَعَلَىٰ أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝
وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُم بِمُؤْمِنِينَ ۝
يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا
يَشْعُرُونَ ۝ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ
قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ۝ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَٰكِن لَّا
يَشْعُرُونَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا
آمَنَ السُّفَهَاءُ ۗ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَٰكِن لَّا يَعْلَمُونَ ۝ وَإِذَا لَقُوا
الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شَيَاطِينِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ
مُسْتَهْزِئُونَ ۝ اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبِحَت تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا
مُهْتَدِينَ ۝ مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ
ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمَاتٍ لَّا يُبْصِرُونَ ۝ صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ
فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ۝ أَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمَاتٌ وَرَعْدٌ وَبَرْقٌ
يَجْعَلُونَ أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِم مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ۚ وَاللَّهُ مُحِيطٌ

منزل

यही लोग अपने परवरदिगार की ओर से (निश्चित) सही राह पर हैं और यही सफल हैं। § (५) बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र (इन्कार) अपनाया है, तुम उनको डराओ या न डराओ उनके लिए बराबर है। वह ईमान न लायेंगे। (६) उनके दिलों पर और उनके कानों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है और उनकी आँखों पर पर्दा है और उनके लिए बड़ी (ही) सज़ा है। (७) ★

★ रु. १/१ आ. ७ • व. ला.

लोगों में कुछ ऐसे (भी) हैं, जो कह देते हैं कि हम अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाये, हालाँकि वह ईमानवाले नहीं हैं ●। (८) (वे अपनी समझ में) अल्लाह को और ईमानवालों को धोखा देना चाहते हैं, मगर नहीं जानते कि वह अपने आपको धोखा देते हैं। (९) उनके दिलों में रोग है, सो अल्लाह ने उनका मरज़ और भी बढ़ा दिया और उनके झूठ बोलने के कारण उनको दुखदाई अज़ाब (दण्ड) होगा। ‡ (१०) और जब उनसे कहा जाता है कि फ़साद मत फैलाओ, तो कहते हैं कि अरे! हम तो सुधार करनेवाले हैं। (११) और जान लो कि वस्तुत: यही लोग फ़सादी हैं; परन्तु यह बात भी समझते नहीं हैं। (१२) और जब उनसे कहा जाता है कि जिस तरह लोग ईमान लाये हैं, तुम भी (कपट छोड़कर ईमान लाओ, तो कहते हैं, क्या हम भी ईमान ले आयें, जिस तरह मूर्ख ईमान ले आये हैं? सुनो! यही लोग मूर्ख हैं परन्तु समझते नहीं। (१३) और जब उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान ला चुके हैं, तो कहते हैं, हम भी तो ईमान ला चुके हैं और जब एकांत में अपने शैतानों (दुष्ट मुखियों) से मिलते हैं तो कहते हैं—हम तुम्हारे साथ हैं। हम तो सिर्फ़ (मुसलमानों का) मज़ाक़ बनाते हैं १४) (नहीं जानते कि) अल्लाह उनका मज़ाक़ बना रहा है और उनको ढील दे रहा है। वे इस सरकशी (उद्दंडता) में भटक रहे हैं। (१५) यही हैं वह लोग जिन्होंने हिदायत (सन्मार्ग) के बदले भटकना मोल लिया, सो न तो इनका व्यापार (सांसारिक) ही लाभकारी हुआ, न उन्होंने सच्चा मार्ग पाया। (१६) उनकी मिसाल तो उसकी सी है, जिसने आग जलाई, फिर जब आग के आस-पास की चीज़ जगमगा उठी, तो अल्लाह ने उनकी रोशनी छीन ली और उनको अँधेरों में छोड़ दिया। (अब) उनको कुछ नहीं सूझता। (१७) (ये) बहरे, गूँगे, अँधे ♦ हैं, इसलिए (सच्चे मार्ग पर) वापस नहीं आ सकते। (१८) या फिर (उनकी यह मिसाल वैसी है) जैसे कि आकाश से ज़ोर का जल बरसे, उसमें अँधेरा, गरज और बिजली हो और (उस वक़्त) कड़क के डर से प्राण बचाने के लिए उँगलियाँ कानों में ठूसे हों ꣸ हालाँकि अल्लाह इन्कार करनेवालों को घेरे हुए है। (१९)

(पिछले सफ़े से) के साथ काबा की तामीर (निर्माण) करके इस्लाम की बुनियाद रखी थी। आ. १४२-१६७ में सब की इबादत का स्थान और इस्लाम की एकता का विश्वकेन्द्र (मरकज़) 'काबा' का वर्णन है। आ. १६८-२४२ में इस मरकज़ के क़ायम होने के बाद सामाजिक नियमों की हिदायत देकर इस पर पूरा ज़ोर दिया गया है कि श्रद्धा, दयालुता, प्रार्थना, दान, सत्यनिष्ठा और संतोष आदि पर अमल ही परहेज़गारी और ईमान है। हराम-हलाल, शराब, वसीयत रोज़ा, जिहाद, जुआ तथा स्त्रियों और अनाथों के हक़ में एक शरीयत (आचरण-संहिता) है। आ. २४३-२५३ में जिहाद का फिर खुलासा है। आ. २५४-२८३ में अल्लाह के विश्वसिंहासन और संयम दयालुता तथा ईमान पर अमल की महिमा गाई है। आ. २८४-२८६ में श्रद्धा, भक्ति, उत्तरदायित्व (फ़रायज़) और प्रार्थना के उपदेश के साथ सूरे बक़र की समाप्ति है।

§ ऐसे लोगों का पहले दर्जे में शुमार है जो ईश्वर की कृपा से सदैव फलें-फूलेंगे। † दूसरे अरब के काफ़िर थे जो कुफ़्र से इतना घिरे थे कि उनको हक़ (सत्य) की बात सुनने, बोलने और देखने ही से परहेज़ था। इस लिए वे तो कभी भी सही राह पर आही नहीं सकते। ‡ तीसरे वे मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) थे जो इस्लाम के रोब या डर या किसी लालच या मतलब साधने की ग़रज़ से ऐसा ज़ाहिर करते कि वह भी ईमान लाने वालों में से हैं। ऐसों ही का यहाँ ज़िक्र है कि जब कोई कठिनाई या पस्तगी की बात दिखाई देती तो वह अपना कपट का रूप भी क़ायम न रख पाते और इस्लाम के हुक्म से भाग खड़े होते थे। इनका मर्ज़ बिलकुल लाइलाज नहीं था। ♦ सत्य को सुनने, कहने व देखने में नाक़ाबिल। ꣸ अँधेरा गरज नाउम्मेदी और डर हैं। उसमें पड़े इन्कारी लोग जब जब बीच में बिजली की चमक क्षणभर को देखते हैं तब फिर खुदा को भूलकर अपने बल पर भरोसा करने लगते हैं और फिर तूफ़ान के अज़ाब (कोप) में फस कर रह जाते हैं। (अ. यू.)

रु. २/२ आ १३

★ यकादुल्बर्क़ु यख़्तफ़ु अब्सारहुम् त् कुल्लमा अज़ाअ लहुम् मशौ फ़ीहि क़् ला व अिज़ा अज़्लम अ़लैहिम् क़ामू त् व लौ शाअल्लाहु लज़हब बिसम्अिहिम् व अब्सारिहिम् त् अिन्नल्लाह अ़ला कुल्लि शैअिन् क़दीरुन् (२०) ★ याअैयुहन्नासुअ़्बुदू रब्बकुमुल्लज़ी ख़लक़कुम् वल्लज़ीन मिन् क़ब्लिकुम् लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून ला (२१) अ्ल्लज़ी जअ़ल लकुमुल्अर्ज़ फ़िराशौंवस्समाअ बिनाअन् स् व अन्ज़ल मिनस्समाअि माअन् फ़अख़्रज बिही मिनस्समराति रिज़्क़ल्लकुम् ज् फ़ला तज्अ़लू लिल्लाहि अन्दादौंव अन्तुम् तअ़्लमून (२२) व अिन् कुन्तुम् फ़ी रैबिम्मिम्मा नज़्ज़ल्ना अ़ला अ़ब्दिना फ़अ्तू बिसूरतिम्मिम्-मिस्लिही स् वद्अ़ू शुहदाअ कुम् मिन्दूनिल्लाहि अिन् कुन्तुम् स़ादिक़ीन (२३) फ़अिल्लम् तफ़्अ़लू व लन् तफ़्अ़लू फ़त्तक़ुन्नारल्लती व क़ूदुहन्नासु वल्हिजारतु ज् स़ला अुअ़िद्दत् लिल्काफ़िरीन (२४) व बश्शिरिल्लज़ीन आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति अन्न लहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु त् कुल्लमा रुज़िक़ू मिन्हा मिन् समरतिर्रिज़्क़न् ला क़ालू हाज़ल्लज़ी रुज़िक़्ना मिन् क़ब्लु ला व अुतू बिही मुतशाबिहन् त् व लहुम् फ़ीहा अज़्वाजुम् मुतह्हरतुन् क़् ला ०व हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (२५) अिन्नल्लाह ला यस्तह्यी अैयज़्रिब मसलम्मा बअ़ूज़तन् फ़मा फ़ौक़हा त् फ़अम्मल्लज़ीन आमनू फ़यअ़्लमून अन्नहुल्हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम् ज् व अम्मल्लज़ीन कफ़रू फ़यक़ूलून मा ज़ा अरादल्लाहु बिहाज़ा मसलन् म् ● युज़िल्लु बिही कसीरन् ला ०व यह्दी बिही कसीरन् त् व मा युज़िल्लु बिही अिल्लल्फ़ासिक़ीन ला (२६) अ्ल्लज़ीन यन्क़ुज़ून अ़ह्दल्लाहि मिम्बअ़्दि मीसाक़िही स् व यक़्तअ़ून मा अमरल्लाहु बिही अैयूसल व युफ़्सिदून फ़िल्अर्ज़ि त् अुलाअिक हुमुल्ख़ासिरून (२७)

● व. लाज़िम

الم ٥ البقرة

بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾ يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ؕ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ ۙ وَ اِذَآ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٢١﴾ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً ۪ وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَاِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ۪ وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٣﴾ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۚۖ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِيْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙۗ وَّهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَحْيٖٓ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّيَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا ؕ وَمَا يُضِلُّ بِهٖٓ اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۪ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٢٧﴾

منزل

क़रीब है कि बिजली उनकी निगाहों को छीन ले, जब उनके आगे बिजली चमकी, तो उसमें कुछ चले और जब उन पर अँधेरा छा गया, (तो) खड़े रह गये, अगर अल्लाह चाहता तो उनकी सुनने और देखने की ताक़तें छीन लेता। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर (समर्थ) है§। (२०)★

★ रु. २/२ आ १३

लोगो ! अपने पालनहार की इबादत (उपासना) करो ; जिसने तुमको और उन लोगों को जो तुमसे पहले गुज़रे हैं, पैदा किया, अजब नहीं तुम (भी) परहेज़गार (सदाचारी) बन जाओ। (२१) वही (परवरदिगार है) जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन का फ़र्श बनाया और आसमान की छत और आसमान से पानी बरसाकर उससे तुम्हारे खाने के लिए फल पैदा किये। पस तुम किसी को अल्लाह के बराबर मत बनाओ और तुम जानते हो†। (२२) और वह जो हमने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर (क़ुर्आन) उतारा है, अगर तुमको उसमें शक हो तो तुम उसके मानिन्द (उस शक्ल की) एक सूरत (अध्याय) बना लाओ; अगर तुम सच्चे हो, तो ख़ुदा के मुक़ाबिले में जो तुम्हारे सहायक हों, उनको बुलालो।‡ (२३) लेकिन अगर तुम ऐसा न कर सको और हरगिज़ (तुम) न कर सकोगे तो उस (दोज़ख़ की) आग से डरो, जिसका ईंधन आदमी और पत्थर (की मूर्तियाँ) होंगे (और) वह काफ़िरों (इन्कारियों) के लिए तैयार है। (२४) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये, उनको ख़ुशख़बरी सुना दो कि उनके लिए (बहिश्त के) बाग़ हैं, जिनमें नहरें बह रही हैं जब उनको उनमें का कोई मेवा खाने को दिया जायगा, तो कह उठेंगे, यह तो वही है जो हमको पहले मिल चुका है और उनको (सचमुच) मिलते जुलते मेवे मिला करेंगे और वहाँ उनके लिए बीवियाँ पाक-साफ़ होंगी और वह उनमें सदैव रहेंगे। (२५) अल्लाह किसी मिसाल के बयान करने में ज़रा भी नहीं सकुचता, चाहे वह मिसाल मच्छर की हो या उससे भी बढ़कर तुच्छ हो♦। सो जो लोग ईमान ला चुके हैं, वह तो विश्वास रखते हैं कि वह (मिसाल) सचमुच उनके पालनकर्ता की तरफ़ से ठीक है, अलबत्ता जो इन्कारी हैं, वह यही कहते रहते हैं कि इस मिसाल के बयान करने में ख़ुदा को कौन-सा मतलब था●। (देखो) ऐसी ही (मिसाल) से ख़ुदा बहुतेरों को भटकाता और ऐसी ही (मिसाल) से बहुतेरों को हिदायत देता है; लेकिन वह बेहुक्मों (अवज्ञाकारियों) के सिवा किसी को नहीं भटकाता। (२६) यह वही लोग हैं जो ख़ुदा से एक अहद (भक्ति की प्रतिज्ञा) करने के बाद उस अहद को तोड़ देते और जिस चीज़ को जोड़े रखने को ख़ुदा ने कहा था, उनको काटते और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं, यही लोग नुक़सान उठायेंगे। (२७)

● व. ला.

---

§ आयत ७ के फ़ुटनोट में बयान किये गये काफ़िरों की रोशनी तो अल्लाह ने बिलकुल छीन ली। वह कभी भी सुधर नहीं सकते। अलबत्ता आयात १० व १६ के फ़ुटनोट में बयान किये गये मुनाफ़िक़ों की रोशनी पूरे तौर पर नहीं छीनी है। क़ुर्आन के क़ानून के अनुसार जो बिलकुल देखना ही न चाहें उनके लिए तो पूरा अन्धापन है। लेकिन जो कुछ भी देखने की चाहना रखते हैं वे जितनी आँखें खुली रखें उतना देख सकते हैं। (अ. यू.) † हमारी माद्दई (भौतिक) और रूहानी (आध्यात्मिक) तरक्क़ी को देने वाले महज़ एक अल्लाह को जानकर फिर किसी दूसरे को उसके साथ साथ अपना पूजित न बनाओ फिर चाहे वह कोई मूर्ति हो चाहे वह तुम्हारा धन, वैभव, शक्ति या यश का ग़ुरूर हो। (अ. यू.) ‡ क़ुर्आन की आयतें भाषा में जितनी सुन्दर और ज्ञान में जितनी पूरी हैं, यह इस बात का सुबूत है कि वह अल्लाह की ओर से नाज़िल हुई हैं न कि किसी इंसान की रचना हैं। इन्कारी लोगों से कहा जाता है कि अगर तुमको इस सच्चाई में शक हो तो तुम अल्लाह के अलावा किसी अपने मददगार से ऐसी आयतें बनवा कर पेश करो। ♦ क़ुर्आन में कहीं-कहीं मक्खी और मकड़ी की भी मिसाल को सुनकर काफ़िर कहते थे कि ख़ुदा को इन छोटी-छोटी चीज़ों की मिसाल न देना थी, ख़ुदा की ज़ात तो बड़ी है। इसका जवाब दिया गया है कि जब ख़ुदा ने इन छोटी चीज़ों को पैदा करने में शर्म न की तो उनकी मिसाल देते क्यों शर्माये।

कैफ़ तक्फ़ुरून् बिल्लाहि व कुन्तुम् अम्वातन् फ़अह्याकुम् ज सुम्म युमीतुकुम् सुम्म युह्यीकुम् सुम्म अिलैहि तुर्जअून (२८) हुवल्लज़ी ख़लक़ लकुम् मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअन् क़् सुम्मस्तवा। अिलस्समा। अि फ़सौवाहुन्न सब्अ समावातिन् त् व हुव बिकुल्लि शैअिन् अलीमुन् (२९) ★ व अिज़्क़ाल रब्बुक लिल्मला।अिकति अिन्नी जाअिलुन् फ़िल्अर्ज़ि ख़लीफ़तन् त् क़ालू। अतज्अलु फ़ीहा मैंयुफ़्सिदु फ़ीहा व यस्फ़िकुद्दिमा।अ ज् व नह्नु नुसब्बिहु बिहम्दिक व नुक़द्दिसु लक त् क़ाल अिन्नी। अअ्लमु मा ला तअ्लमून (३०) व अल्लम आदमल्अस्मा।अ कुल्लहा सुम्म अरज़हुम् अलल्मला।अिकति ला फ़क़ाल अम्बिअूनी बिअस्मा।अि हा।अुला।अि अिन् कुन्तुम् सादिक़ीन (३१) क़ालू सुब्हानक ला अिल्म लना। अिल्ला मा अल्लम्तना त् अिन्नक अन्तल्अलीमुल्हकीमु (३२) क़ाल या। आदमु अम्बिअ्हुम् बिअस्मा।अिहिम् ज फ़लम्मा। अम्बअहुम् बिअस्मा।अिहिम् ला क़ाल अलम् अक़ुल्लकुम् अिन्नी। अअ्लमु ग़ैबस्समावाति वल्अर्ज़ि ला व अअ्लमु मा तुब्दून व मा कुन्तुम् तक्तुमून (३३) व अिज़् क़ुल्ना लिल्मला।अिकतिस्जुदू लिआदम फ़सजदू। अिल्ला। अिब्लीस त् अबा वस्तक्बर क़् ज़् व कान मिनल्काफ़िरीन (३४) व क़ुल्ना या। आदमुस्कुन् अन्त व ज़ौजुकल्जन्नत व कुला मिन्हा रग़दन् हैसु शिअ्तुमा स् व ला तक़्रबा हाज़िहिश्शजरत फ़तकूना मिनज़्ज़ालिमीन (३५) फ़अज़ल्लहुमश्शैतानु अन्हा फ़अख़्रजहुमा मिम्मा काना फ़ीहि स् व क़ुल्नह्बितू बअ्ज़ुकुम् लिबअ्ज़िन् अदूवुन् ज व लकुम् फ़िल्अर्ज़ि मुस्तक़र्रुंव मताअुन् अिलाहीनिन् (३६) फ़तलक़्क़ा। आदमु मिर्रब्बिही कलिमातिन् फ़ताब अलैहि त् अिन्नहु हुवत्तौवाबुर्रहीमु (३७) क़ुल्नह्बितू मिन्हा जमीअन् ज फ़अिम्मा यअ्तियन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ़मन् तबिअ हुदाय फ़ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (३८) वल्लज़ीन कफ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना। अुला।अिक अस्हाबुन्नारि ज हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (३९) ★

الٓمّٓ ۲ البقرة

كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ
تُرْجَعُوْنَ ۝ هُوَالَّذِيْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ثُمَّ اسْتَوٰۤى اِلَى السَّمَآءِ
فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ
جَاعِلٌ فِي الْاَرْضِ خَلِيْفَةً قَالُوْۤا اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ
الدِّمَآءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ قَالَ اِنِّيْۤ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَ
عَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِيْ بِاَسْمَآءِ
هٰۤؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَاۤ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا اِنَّكَ
اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝ قَالَ يٰۤاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ فَلَمَّاۤ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ
قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّيْۤ اَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ
وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ۝ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ
اَبٰى وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَقُلْنَا يٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ
وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ
عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ۝ فَتَلَقّٰۤى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ
فَتَابَ عَلَيْهِ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝ قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ
مِّنِّيْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ يٰبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا

منزل

लोगो! क्योंकर तुम ख़ुदा से इन्कार कर सकते हो (देखो!) जबकि तुम बेजान थे, तो उसने तुममें जान डाली, फिर वही तुमको मारता (वही) तुमको जिलायेगा, फिर उसीकी तरफ़ लौटाये जाओगे। (२८) वही है, जिसने तुम्हारे लिए धरती की सब की सब चीज़ें पैदा कीं, फिर आकाश की तरफ़ ध्यान दिया; तो सात आसमान हमवार बना दिये और वह सर्वज्ञ (हर चीज से जानकार) है। (२९)★

और जब तुम्हारे पालनकर्ता ने फ़रिश्तों से कहा—"मैं ज़मीन में अपना नायब (प्रतिनिधि) बनाना चाहता हूँ" (तो फ़रिश्ते) बोले—क्या तू ज़मीन में ऐसे को (नायब) बनायेगा, जो उसमें फ़साद फैलाये और ख़ून बहायेगा? जबकि हम स्तुति-बन्दना के साथ तेरी बड़ाई और पवित्रता बयान करते रहते हैं। (ख़ुदा ने) कहा—मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (३०) और (फिर) आदम को सब (चीज़ों के) 'नाम' बता दिये; फिर उन चीज़ों को फ़रिश्तों के सामने पेश करके कहा कि अगर तुम सच्चे हो, तो मुझको इन चीज़ों के नाम§ बताओ। (३१) (फ़रिश्ते) बोले—तू पाक है, जो तूने हमको बता दिया है, उसके सिवा हमको कुछ मालूम नहीं। सचमुच तू ही जाननेवाला मसलहत पहचाननेवाला (सर्वविद् और ज्ञानमय) है। (३२) (तब ख़ुदा ने) हुक्म दिया कि ऐ आदम! तुम फ़रिश्तों को इनके नाम बता दो; फिर जब आदम ने फ़रिश्तों को उन (चीज़ों) के नाम बता दिये, तो ख़ुदा ने (फ़रिश्तों से) कहा—क्यों! मैंने तुमसे नहीं कहा था कि आकाश की और धरती की सब छिपी चीज़ें हमें मालूम हैं और जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ तुम (हमसे) छिपाते हो (वह) हमको (सब) मालूम है। (३३) और (वह समय याद करो) जब हमने (ख़ुदा ने) फ़रिश्तों से कहा कि आदम की ओर सजदः करो, तो शैतान को छोड़कर (सारे फ़रिश्तों ने) माथा टेक दिया। उसने न माना और घमण्ड में आ गया और काफ़िर बन बैठा। (३४) और हमने कहा ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीबी बहिश्त में रहो बसो और उसमें जहाँ कहीं से तुम्हारा जी चाहे बेखटके खाओ, मगर इस पेड़‡ के पास मत फटकना। (ऐसा करोगे तो) अन्यायियों में हो जाओगे। (३५) पस, शैतान ने दोनो (आदम और हौवा) को इसी पेड़ के कारन बहकाया और उस ऐश से निकाल कर छोड़ा जिसमें वह थे। हमने हुक्म दिया कि तुम उतर जाओ, तुममें से बाज़ लोग बाज़ लोगों के दुश्मन रहेंगे और ज़मीन में तुम्हारे लिए एक वक़्त तक ठिकाना और (जीवन काटने का) साज व सामान है। (३६) फिर आदम ने अपने पालनकर्ता से कुछ ज्ञान प्राप्त किया और ख़ुदा ने उनकी तौबः मान ली। बेशक वह बार-बार क्षमा करनेवाला बेहद मेहरबान है। (३७) (और) हमने हुक्म दिया कि तुम सब यहाँ से उतर जाओ, और जब मेरी तरफ़ से तुम लोगों के पास कोई हिदायत (पथ-प्रदर्शन) पहुँचे तो जो मेरी हिदायत की पैरवी करेंगे उन पर न तो डर होगा और न वह रन्जीदः ही होंगे। (३८) (लेकिन) जो लोग इन्कार करेंगे और हमारी आयतों को झुठलायेंगे वही दोज़ख़ी होंगे, वह सदैव दोज़ख़ में रहेंगे। ꣺ (३९)★

★ रु. ३/३ आ ६

★ रु. ४/४ आ १०

§ कुछ आलिमों की राय में नाम से मतलब 'ज्ञान-विवेक' याने भले-बुरे की तमीज़ से है। इसी तमीज़ से इन्सान अपने को सवाब या अज़ाब का हक़दार बना सकता है। यह तमीज़ फ़रिश्तों को न थी। कुछ के ख़याल में ख़ुदा ने आदम को ख़िलक़त (सृष्टि) की तमाम चीज़ों के नाम बतला दिये। ‡ शायद लाइल्मी (अज्ञान) का वृक्ष। (अ. यू.) ꣺ इस प्रकार बार बार माफ़ किये जाने के बावजूद जो मुन्किर होंगे उन जान-बूझ कर सत्य से मुँह मोड़नेवालों के लिए फिर सिवाय नरक के और चारा नहीं। (अ. यू.)

या बनी अिस्राअीलज्कुरू निअ़्मतियल्लती अन्अ़म्तु अ़लैकुम् व औफ़ू बिअ़्हदी ऊफ़ि बिअ़्हदिकुम् ज् व अीयाय फ़र्हबूनि (४०) व आमिनू बिमा अन्ज़ल्तु मुसद्दिक़लिमा मअ़कुम् व ला तकूनू औवल काफ़िरिम् बिही स्र व ला तश्तरू बिआयाती समनन् क़लीलन् ज् व अीयाय फ़त्तक़ूनि (४१) व ला तल्बिसुल्हक़्क़ बिल्बातिलि व तक्तुमुल्हक़्क़ व अन्तुम् तअ़्लमून (४२) व अक़ीमुस्सलात व आतुज़्ज़कात वर्कअ़ू मअ़र्राकिअ़ीन (४३) अतअ़्मुरूनन्नास बिल्बिर्रि व तन्सौन अन्फ़ुसकुम् व अन्तुम् तत्लूनल्किताब त् अफ़ला तअ़्क़िलून (४४) वस्तअ़ीनू बिस्सब्रि वस्सलाति त् व अिन्नहा लकबीरतुन् अिल्ला अ़लल्ख़ाशिअ़ीन ला (४५) अ़ल्लज़ीन यज़ुन्नून अन्नहुम् मुलाक़ू रब्बिहिम् व अन्नहुम् अिलैहि राजिअ़ून (४६) ★●

या बनी अिस्राअीलज्कुरू निअ़्मतियल्लती अन्अ़म्तु अ़लैकुम् व अन्नी फ़ज़्ज़ल्तुकुम् अ़लल्आ़लमीन (४७) वत्तक़ू यौमल्ला तज्ज़ी नफ़्सुन् अ़न् नफ़्सिन् शैऔंव ला युक़्बलु मिन्हा शफ़ाअ़तुंव ला युअ़्ख़ज़ु मिन्हा अ़द्लुंव ला हुम् युन्सरून (४८) व अिज़् नज्जैनाकुम् मिन् आलि फ़िऔ़न यसूमूनकुम् सूअल्अ़ज़ाबि युज़ब्बिहून अब्नाअकुम् व यस्तह्यून निसाअकुम् त् व फ़ी ज़ालिकुम् बलाउम् मिर्रब्बिकुम् अ़ज़ीमुन् (४९) व अिज़् फ़रक़्ना बिकुमुल्बह्र फ़अन्-जैनाकुम् व अग़्रक़्ना आल फ़िऔ़न व अन्तुम् तन्ज़ुरून (५०) व अिज़् वाअ़द्ना मूसा अर्बअ़ीन लैलतन् सुम्मत्तख़ज़्तुमुल्अ़िज्ल मिम्बअ़्दिही व अन्तुम् ज़ालिमून (५१) सुम्म अ़फ़ौना अ़न्कुम् मिम्बअ़्दि ज़ालिक लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (५२) व अिज़् आतैना मूसल्किताब वल्फ़ुर्क़ान लअ़ल्लकुम् तह्तदून (५३) व अिज़् क़ाल मूसा लिक़ौमिही या क़ौमि अिन्नकुम् ज़लम्तुम् अन्फ़ुसकुम् बित्तिख़ाज़िकुमुल्अ़िज्ल फ़तूबू अिला बारिअिकुम् फ़क़्तुलू अन्फ़ुसकुम् त् ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् अ़िन्द बारिअिकुम् त् फ़ताब अ़लैकुम् त् अिन्नहू हुवत्तौवाबुर्रहीमु (५४)

★ रु० ५/५ आ० ७ ● रु० ब० आ० १/४

البقرة

نعمتي التي أنعمت عليكم وأوفوا بعهدي أوف بعهدكم وإياي فارهبون ۝ وآمنوا بما أنزلت مصدقا لما معكم ولا تكونوا أول كافر به ولا تشتروا بآياتي ثمنا قليلا وإياي فاتقون ۝ ولا تلبسوا الحق بالباطل وتكتموا الحق وأنتم تعلمون ۝ وأقيموا الصلوة وآتوا الزكوة واركعوا مع الراكعين ۝ أتأمرون الناس بالبر وتنسون أنفسكم وأنتم تتلون الكتب أفلا تعقلون ۝ واستعينوا بالصبر والصلوة وإنها لكبيرة إلا على الخاشعين ۝ الذين يظنون أنهم ملقوا ربهم وأنهم إليه راجعون ۝ يا بني إسرائيل اذكروا نعمتي التي أنعمت عليكم وأني فضلتكم على العالمين ۝ واتقوا يوما لا تجزي نفس عن نفس شيئا ولا يقبل منها شفاعة ولا يؤخذ منها عدل ولا هم ينصرون ۝ وإذ نجيناكم من آل فرعون يسومونكم سوء العذاب يذبحون أبناءكم ويستحيون نساءكم وفي ذلكم بلاء من ربكم عظيم ۝ وإذ فرقنا بكم البحر فأنجيناكم وأغرقنا آل فرعون وأنتم تنظرون ۝ وإذ وعدنا موسى أربعين ليلة ثم اتخذتم العجل من بعده وأنتم ظالمون ۝ ثم عفونا عنكم من بعد ذلك لعلكم تشكرون ۝ وإذ آتينا موسى الكتب والفرقان لعلكم تهتدون ۝ وإذ قال موسى لقومه يا قوم إنكم ظلمتم أنفسكم باتخاذكم العجل فتوبوا إلى بارئكم فاقتلوا أنفسكم ذلكم خير لكم عند بارئكم فتاب عليكم إنه هو التواب الرحيم ۝ وإذ قلتم

منزل ١

ऐ बनी इस्राईल§(ऐ याक़ूब की संतान !) मेरे इहसानों को याद करो जो मैं तुम पर कर चुका हूँ और तुम उस अहद (प्रतिज्ञा) को पूरा करो जो मुझसे किया है। मैं उस प्रतिज्ञा को पूरा करूँगा जो (मैंने) तुमसे की है, और मुझही से डरते रहो।(४०) और (क़ुर्आन) जो हमने उतारा है उस पर ईमान लाओ (और वह) उस किताब (तौरात) की तसदीक़ करता है जो तुम्हारे पास है और सबसे पहले (तुमही) इसके इन्कारी न बनो और थोड़ी सी क़ीमत (साधारण दुनियावी लाभ) को लेकर मेरी आयतों को न बेंच डालो और मुझही से डरते रहो।(४१) सच को झूठ के साथ मत मिलाओ, जान-बूझकर सत्य को मत छिपाओ।(४२) नमाज़ पर दृढ़ रहो और ज़कात† (नियत दान) दिया करो और जो लोग (नमाज़) में झुकते हैं उनके साथ तुम भी झुका करो।(४३) कैसा (अचरज है कि) तुम लोगों से तो भलाई पर चलने को कहते हो और अपनी ख़बर नहीं लेते, हालाँकि तुम किताब (तौरात) पढ़ते रहते हो! क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते ? (४४) और सब्र‡ और नमाज़ के ज़रिये (ख़ुदा का) सहारा लो। निस्सन्देह नमाज़ कठिन काम है, मगर उन पर नहीं जो मुझसे डरते हैं।(४५) जिनकी यह निश्चय धारणा है कि उनको अपने पालनकर्त्ता से मिलना है और उसकी तरफ़ लौटकर जाना है।(४६)★●

★ रु० ५/५ आ ७ ● रु ब्/अ० १/४

ऐ याक़ूब की सन्तान ! मेरे उन इहसानों को याद करो जो मैं तुम पर कर चुका हूँ और इस बात को भी याद करो कि मैंने तुमको संसार के लोगों पर प्रधानता दी थी।(४७) और उस दिन से डरो जब कोई मनुष्य किसी मनुष्य के कुछ काम न आयेगा, न उसकी तरफ़ से (किसी की) सिफ़ारिश क़बूल होगी, न उससे कुछ बदले में लेकर छोड़ा जायगा और न लोगों को (कहीं से) मदद पहुँचेगी।(४८) और (उस समय की याद करो) जब हमने तुमको फ़िरऔन* के लोगों से छुटकारा दिलवाया जो तुम पर बहुत ही ज़ुल्म करते थे।(वे) तुम्हारे बेटों को हलाल करते और तुम्हारी स्त्रियों (यानी बहू-बेटियों) को (अपनी सेवा के लिए) जीवित रहने देते, इसमें तुम्हारे पालनकर्ता की तरफ़ से तुम्हारे लिए एक बड़ी आज़माइश (कसौटी) थी।(४९) (वह वक़्त भी याद करो) जब हमने तुम्हारी वजह से नदी को फाड़ दिया था। फिर तुमको सकुशल पार लगाया और फ़िरऔनों के लोगों को तुम्हारे देखते डुबो दिया।(५०) और (वह वक़्त भी याद करो) जब मैंने मूसा से (नविश्ता देने के लिए) चालीस रातों (यानी एक चिल्लः) की प्रतिज्ञा की, फिर तुमने उनकी ग़ैर मौजूदगी में (पूजने के लिए) बछड़ा बना लिया और तुम खुला ज़ुल्म (अन्याय) कर रहे थे।(५१) फिर इसके बाद भी हमने तुमको क्षमा किया कि शायद तुम इहसान मानो।(५२) और (वह समय भी याद करो) जब मैंने मूसा को किताब (तौरात) और क़ानून (यानी शरीअत-धर्मशास्त्र) दिया ताकि तुम सही राह पा जाओ।(५३) और (वह समय भी याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा ऐ मेरी क़ौम ! तुमने बछड़े की पूजा करके अपने ऊपर ज़ुल्म किया तो (अब) अपने सृष्टिकर्ता के सामने तौबः (पश्चाताप) करो और अपने (लोगों) को मार डालो। तुम्हारे पैदा करनेवाले के सामने तुम्हारे लिए यही उत्तम है। फिर ख़ुदा ने तुम्हारी तौबः क़बूल कर ली। बेशक वह बार बार तौबः क़बूल करने वाला (क्षमाशील और) बेहद मेहरबान है।(५४)

---

§ 'बनी इस्राईल' हज़रत याक़ूब के बारह बेटे व उनकी औलाद को कहते हैं। यह किसी समय मिस्र के बादशाहों (फ़िरऔन) के कुशासन में पड़ गये थे, तब हज़रत मूसा ने फ़िरऔनों को नष्ट करके बनी इस्राईल को अधिकारी बनाया। इन्हीं के वंशज यहूदी हैं। हज़रत मूसा पर नाज़िल 'तौरात' इनका आकाशी धर्म-ग्रंथ है। † साल भर बचे रखे हुये माल पर जो ५२½ तोले चाँदी या ७½ तोले सोने या उसकी क़ीमत से कम न हो, उसका चालीसवाँ हिस्सा शरीअत के अनुसार ख़ैरात करना ज़कात कहलाता है। ‡ अरबी शब्द 'सब्र' का अर्थ 'संतोष' है। याने निकम्मापन, डर, लाचारी और पछताव के बिना धीरज शान्ति और मज़बूती से अटल रह कर, अपने फ़र्ज़ में लगे रहने की हालत को 'सब्र' कहते हैं। * यह मूसा के वक़्त में मिश्र के बादशाहों का ख़िताब था।

व अिज् क़ुल्तुम् या मूसा लन् नुअ्मिन लक हृत्ता नरल्लाह जह्रतन् फ़अख़जत्कुमुस्साअिक़तु व अन्तुम् तन्ज़ुरून (५५) सुम्म बअस्नाकुम् मिम्बअ्दि मौतिकुम् लअल्लकुम् तश्कुरून (५६) व जल्लल्ना अलैकुमुल्ग़माम व अन्ज़ल्ना अलैकुमुलमन्न वस्सल्वा त़् कुलू मिन् तैयिबाति मा रज़क़्नाकुम् त़् व मा ज़लमूना व लाकिन् कानू॑ अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (५७) व अिज् क़ुलनद्ख़ुलू हाज़िहिल् क़र्यत्न फ़कुलू मिन्हा हैसु शिअ्तुम् रग़दौंवद्ख़ुलुल्बाब सुज्जदौंव क़ूलू हि़त्ततुन् नग़्फ़िर् लकुम् ख़तायाकुम् त़् व सनज़ीदुलमुह्सिनीन (५८) फ़बद्दलल्लज़ीन ज़लमू क़ौलन् ग़ैरल्लज़ी क़ील लहुम् फ़अन्ज़ल्ना अलल्लज़ीन ज़लमू रिज्ज़म्मिनस्समा॑अि बिमा कानू यफ़्सुक़ून (५९) ★ व अिजिस्तस्क़ा मूसा लिक़ौमिही फ़क़ुल्नज़्रिब बिअसाकल्हजर त़् फ़न्फ़जरत् मिन्हुस्नता अश्रत्न अैनन् त़् क़द् अलिम कुल्लु अुनासिम् मश्रबहुम् त़् कुलू वश्रबू मिर्रिज़्क़िल्लाहि व ला तअ्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (६०) व अिज् क़ुल्तुम् या मूसा लन् नस्बिर अला तआमिंव्वाहिदिन् फ़द्अु लना रब्बक युख़्रिज् लना मिम्मा तुम्बितुल् अर्ज़ु मिम्बक़्लिहा व क़िस्सा॑अिहा व फ़ूमिहा व अदसिहा व बसलिहा त़् क़ाल अतस्तब्दिलूनल्लज़ी हुव अद्ना बिल्लज़ी हुव ख़ैरुन् त़् अिह्बितू मिस्रन् फ़अिन्न लकुम् मा सअल्तुम् त़् व ज़ुरिबत् अलैहिमुज्जिल्लतु वलमस्कनतु क़् व बा॑अू बिग़ज़बिम्मिनल्लाहि त़् ज़ालिक बिअन्नहुम् कानू यक्फ़ुरून बिआयातिल्लाहि व यक़्तुलूनन्नबीयीन बिग़ैरिल् हृक़्क़ि त़् ज़ालिक बिमा अससौ व कानू यअ्तदून (६१) ★ अिन्नल्लज़ीन आमनू वल्लज़ीन हादू वन्नसारा वस्साबिअीन मन् आमन बिल्लाहि वल्यौमिल्आख़िरि व अमिल सालिहृन् फ़लहुम् अज्रुहुम् अिन्द रब्बिहिम् ज् स़् व ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व लाहुम् यहृज़नून (६२)

الٓمّٓ ٨ البقرة

يموسى لن نؤمن لك حتى نرى الله جهرة فاخذتكم الصعقة وانتم تنظرون ۝ ثم بعثنكم من بعد موتكم لعلكم تشكرون ۝ وظللنا عليكم الغمام وانزلنا عليكم المن والسلوى كلوا من طيبت ما رزقنكم وما ظلمونا ولكن كانوا انفسهم يظلمون ۝ واذ قلنا ادخلوا هذه القرية فكلوا منها حيث شئتم رغدا وادخلوا الباب سجدا وقولوا حطة نغفر لكم خطيكم وسنزيد المحسنين ۝ فبدل الذين ظلموا قولا غير الذي قيل لهم فانزلنا على الذين ظلموا رجزا من السماء بما كانوا يفسقون ۝ واذ استسقى موسى لقومه فقلنا اضرب بعصاك الحجر فانفجرت منه اثنتا عشرة عينا قد علم كل اناس مشربهم كلوا واشربوا من رزق الله ولا تعثوا في الارض مفسدين ۝ واذ قلتم يموسى لن نصبر على طعام واحد فادع لنا ربك يخرج لنا مما تنبت الارض من بقلها وقثائها وفومها وعدسها وبصلها قال اتستبدلون الذي هو ادنى بالذي هو خير اهبطوا مصرا فان لكم ما سالتم وضربت عليهم الذلة والمسكنة وباءو بغضب من الله ذلك بانهم كانوا يكفرون بايت الله ويقتلون النبين بغير الحق ذلك بما عصوا وكانوا يعتدون ۝ ان الذين امنوا والذين هادوا والنصرى والصبين من امن بالله واليوم الاخر وعمل صالحا فلهم اجرهم عند ربهم ولا خوف عليهم ولا هم

منزل ١

★ रु. ६ | ६ आ १३

★ रु. ७ | ७ आ २

और (वह समय याद करो जब तुमने) कहा था कि ऐ मूसा! जब तक हम ख़ुदा को सामने न देख लें, किसी तरह तुम्हारा हम तो विश्वास करनेवाले नहीं। इस पर तुमको बिजली ने आ दबोचा और तुम देखते रहे। (५५) फिर तुम्हारे मरने के बाद हमने तुमको जिला उठाया कि शायद तुम शुक्र अदा करो। (५६) और हमने तुम पर बादल की छाया की और तुम पर मन§ और सलवा† उतारा और (कहा कि) हमने जो तुमको पवित्र भोजन दिये हैं खाओ (लेकिन इन लोगों ने अवज्ञा की) और इन लोगों ने हमारा तो कुछ नहीं विगाड़ा लेकिन अपनाही खोते रहे। (५७) और (वह समय याद करो) जब हमने तुमको आज्ञा दी कि इस बस्ती में जाओ और उसमें जहाँ चाहो निश्चित होकर खाओ और दरवाज़े में सज्दः करते (माथा नवाते) हुए दाख़िल होना और मुँह से 'हित्ततुन' (हमारी तौबः है) कहते जाना तो हम तुम्हारे अपराध क्षमा करेंगे और जो नेक काम करेंगे उनको हम इसके सिवा और भी देंगे। (५८) तो जो लोग अन्यायी थे दुआएँ जो उनको बताई गई थीं उनको बदलकर दूसरी बोलने लगे तो हमने उन अन्यायियों पर आसमान से सज़ाएँ उतारीं क्योंकि वे नाफ़र्मान (अवज्ञाकारी) थे‡। (५९)★

★ रु. ६/६ आ १३

(वह घटना भी याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति के लिए पानी की प्रार्थना की तो हमने कहा कि ऐ मूसा! अपनी लाठी (असा) उस पत्थर पर मारो, (लाठी मारने पर) पत्थर से बारह चश्मे (सोते) फूट निकले। सब लोगों ने अपना घाट मालूम कर लिया और हुक्म हुआ कि अल्लाह की (दी हुई) रोज़ी खाओ पिओ और ज़मीन में फ़साद न फैलाते फिरो। (६०) (वह ससय भी याद करो) जब तुमने कहा कि ऐ मूसा! हमसे बराबर एक जैसे खाने पर नहीं रहा जाता तो आप अपने पालनकर्ता से दुआ कीजिए कि ज़मीन से जो चीज़ें उगती हैं यानी तरकारी, ककड़ी और गेहूँ और मसूर और प्याज़ (मन व सलवा के बजाय) हमारे लिए पैदा करे। (मूसा ने) कहा कि जो चीज़ उत्तम है क्या तुम उसके बदले में ऐसी चीज़ लेना चाहते हो जो घटिया है। (अच्छा तो) किसी शहर में उतर पड़ो, जो माँगते हो (वहाँ) तुमको मिलेगा और उन पर ज़िल्लत (अपमान) और मुहताजी (दीनता) डाल दी गई और वे ख़ुदा के ग़ज़ब (प्रकोप) में आ गये, इसलिए कि वह अल्लाह की आयतों से इनकार करते और पैग़म्बरों को व्यर्थ मार डाला करते थे; यह इसलिए कि वे हुक्म को न मानते और हद से बढ़ जाया करते थे। (६१)★

★ रु. ७/७ आ २

निस्सन्देह मुसलमान✡ यहूदी+ ईसाई@ और साबिई♦ इनमें से जो लोग अल्लाह पर और आख़िरत पर ईमान लाये और अच्छे काम करते रहे तो इनको उनका फल उनके पालनकर्ता के यहाँ मिलेगा और न उन पर डर होगा और न वह उदास होंगे। (६२)

---

§ स्वादिष्ट काला दाना जो आसमान से उतरता था (तुरंजबीन)। † बटेर-जैसी चिड़ियों का मांस। ‡ आयत ४८-६१ तक बार-बार यहूदियों को नबियों की ओर से दी गई चेतावनी और फिर उनके गुमराह होने पर अल्लाह की ओर से बार बार माफ़ी और दया होने और फिर उस परवर्दिगार की रहमत को भूल कर ज़्यादती और ज़ुल्म में हरबार भटक जाने का ज़िक्र है। अपने इसी स्वभाव के अनुसार क़ुर्आन और हज़रत मुहम्मद की ओर से भी उन्होंने इन्कार किया था। ✡ क़ुर्आन के माननेवाले मुसलमान कहलाते हैं। + तौरात के माननेवाले यहूदी कहलाते हैं। @ इंजील के माननेवाले ईसाई कहलाते हैं। ♦ साबिई वह लोग थे जो हज़रत इब्राहीम को भी मानते थे और फ़रिश्तों को भी पूजते थे। वे ज़बूर भी पढ़ते थे और काबे की तरफ़ नमाज़ भी पढ़ते थे। सबकी अच्छी बातें मानते थे। शायद किसी एक किताब के बन्धन में न होकर वे मानव धर्म—नैतिकता और सदाचार (अख़लाक़) के हामी थे। (अ. यू.)

व अिज् अख़ज़्ना मीसाक़कुम् व रफ़ऽना फ़ौक़कुमुत्तूर त् ख़ुज़ू मा॑ आतैनाकुम् बिक़ूवतिंव्वज्कुरू मा फ़ीहि लअ़ल्लकुम् ततक़ून (६३) सुम्म तवल्लैतुम् मिम्बऽदि जालिक ज् फ़लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अलैकुम् व रह्मतुहू लकुन्तुम् मिनल्ख़ासिरीन (६४) व लक़द् अलिम्तुमुल्लजीनऽतदौ मिन्कुम् फ़िस्सब्ति फ़क़ुल्ना लहुम् कूनू क़िरदतन् ख़ासिअीन ज् (६५) फ़जअ़ल्नाहा नकाललिलमा बैन यदैहा व मा ख़ल्फ़हा व मौअ़िजतल्लिल् मुत्तक़ीन (६६) व अिज् क़ाल मूसा लिक़ौमिही॑ अिन्नल्लाह यअ्मुरुकुम् अन् तज्बहू बक़रतन् त् क़ालू॑ अतत्तख़िज़ुना हुज़ुवन् त् क़ाल अअ़ूज़ु बिल्लाहि अन् अकून मिनल्जाहिलीन (६७) क़ालुद्अु लना रब्बक युबैयिल्लना मा हिय त् क़ाल अिन्नहू यक़ूलु अिन्नहा बक़रतुल्ला फ़ारिज़ुँव ला बिक्रुन् त् अ़वानुम्बैन जालिक त् फ़फ़्अ़लू मा तुअ्मरून (६८) क़ालुद्अु लना रब्बक युबैयिल्लना मालौनुहा त् क़ाल अिन्नहू यक़ूलु अिन्नहा बक़रतुन् सफ़्रा॑अु ला फ़ाक़िअ़ुल्लौनुहा तसुर्रुन्नाजिरीन (६९) क़ालुद्अु लना रब्बक युबैयिल्लना मा हिय ला अिन्नल् बक़र तशाबह अलैना त् व अिन्ना॑ अिन्शा॑अल्लाहु लमुह्तदून (७०) क़ाल अिन्नहू यक़ूलू अिन्नहा बक़रतुल्ला जलूलुन् तुसीरुल्अर्ज़ व ला तस्क़िल्ह़र्स ज् मुसल्लमतुल्ला शियत फ़ीहा त् क़ालुल्आन जिअ्त बिल्ह़क़्क़ि त् फ़जबहूहा व मा कादू यफ़्अ़लून (७१) ★ व अिज् क़तल्तुम् नफ़्सन् फ़द्दारअ्तुम् फ़ीहा त् वल्लाहु मुख़्रिजुम्मा कुन्तुम् तक्तुमून ज् (७२) फ़क़ुल्नज़्रिबूहु बिबऽज़िहा त् कजालिक युह़्यिल्लाहुल्मौता ला व युरीकुम् आयातिही॑ लअ़ल्लकुम् तऽक़िलून (७३)

الم ٩ البقرة

يحزنون ۝ وإذ أخذنا ميثاقكم ورفعنا فوقكم الطور خذوا ما آتيناكم
بقوة واذكروا ما فيه لعلكم تتقون ۝ ثم توليتم من بعد ذلك فلولا
فضل الله عليكم ورحمته لكنتم من الخاسرين ۝ ولقد علمتم
الذين اعتدوا منكم في السبت فقلنا لهم كونوا قردة خاسئين ۝
فجعلناها نكالا لما بين يديها وما خلفها وموعظة للمتقين ۝
وإذ قال موسى لقومه إن الله يأمركم أن تذبحوا بقرة قالوا أتتخذنا
هزوا قال أعوذ بالله أن أكون من الجاهلين ۝ قالوا ادع لنا ربك
يبين لنا ما هي قال إنه يقول إنها بقرة لا فارض ولا بكر عوان
بين ذلك فافعلوا ما تؤمرون ۝ قالوا ادع لنا ربك يبين لنا ما لونها
قال إنه يقول إنها بقرة صفراء فاقع لونها تسر الناظرين ۝ قالوا
ادع لنا ربك يبين لنا ما هي إن البقر تشابه علينا وإنا إن شاء
الله لمهتدون ۝ قال إنه يقول إنها بقرة لا ذلول تثير الأرض
ولا تسقي الحرث مسلمة لا شية فيها قالوا الآن جئت بالحق
فذبحوها وما كادوا يفعلون ۝ وإذ قتلتم نفسا فادارأتم فيها
والله مخرج ما كنتم تكتمون ۝ فقلنا اضربوه ببعضها كذلك
يحيي الله الموتى ويريكم آياته لعلكم تعقلون ۝ ثم قست قلوبكم
من بعد ذلك فهي كالحجارة أو أشد قسوة وإن من الحجارة

منزل

रु. ८/८ आ १०

(और ऐ यहूद ! वह समय याद करो) जब हमने तुमसे (तौरात की तामील का) इक़रार (वचन) लिया और तूर (सिनाई पहाड़) उठाकर तुम्हारे ऊपर ऊँचा किया (और फ़र्माया कि यह किताब तौरात) जो हमने तुमको दी है उसको मज़बूती से पकड़े रहो और जो उसमें (लिखा) है (उसको) याद रखो, अजब नहीं तुम परहेज़गार (संयमी) बन जाओ। (६३) फिर उसके बाद भी (अपने अहद से) तुम पलट गये, तो अगर तुम पर खुदा की कृपा और उसकी दया न होती तो तुम घाटे में आ गये होते। (६४) और तुम ख़ूब जान चुके हो अपनों में से उन लोगों को, जिन्होंने हफ़्ते के दिन (शनिश्चर) में ज़्यादती की§ तो हमने उनसे कहा ज़लील बन्दर बन जाओ। (६५) पस हमने इस घटना को उन लोगों के लिए जो उस वक़्त मौजूद थे और उन लोगों के लिए जो इसके बाद आनेवाले थे, चेतावनी और खुदा से डरनेवालों के लिए नसीहत (शिक्षा) बनाई (६६) (वह समय भी याद करो) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, अल्लाह फ़र्माता है कि तुम एक बैल हलाल करो। वह कहने लगे, क्या आप हमसे हँसी करते हैं? (मूसा ने) कहा, खुदा मुझको अपनी पनाह में रखे कि मैं नादान बनूँ।† (६७) वह बोले अपने परवरदिगार से हमारे लिए दरख़्वास्त कीजिये कि हमको भलीभाँति समझा दे कि वह कैसा हो। (मूसा ने) कहा खुदा फ़र्माता है कि वह बैल न बूढ़ा हो और न बछड़ा बल्कि दोनों में बीच की रास हो। पस तुमको जो हुक्म दिया गया है उसको पूरा करो। (६८) वह बोले अपने पालनकर्त्ता से हमारे लिए प्रार्थना कीजिये कि वह हमको अच्छी तरह समझा दे कि उसका रंग कैसा हो। (मूसा ने) कहा खुदा फ़र्माता है कि उस बैल का रंग ख़ूब गहरा ज़र्द (पीला) हो कि देखनेवालों को भला लगे। (६९) वह बोले कि अपने परवरदिगार से हमारे लिये पूछिये कि हमको अच्छी तरह समझा दे कि वह (और) क्या (गुण रखता) हो, हमको तो (इस रंग के बहुतेरे) बैल एक ही तरह के दिखाई देते हैं और (इस बार) खुदा ने चाहा तो हम ज़रूर (उसका) ठीक पता पा लेंगे। (७०) (मूसा ने) कहा खुदा फ़र्माता है वह न तो हल में जुता हुआ हो, न ज़मीन जोतता हो और न खेती को पानी देता हो, और हर तरह बेऐब (सालिम) हो उसमें किसी तरह का दाग़ न हो। वह बोले (हाँ) अब आप ठीक (पता) लाये। ग़रज़ उन्होंने उसको हलाल किया और उनसे उम्मीद न थी कि करेंगे। (७१)★

★ रु. ८ | ८ आ १०

(और ऐ याक़ूब के बेटो!) जब तुमने एक शख़्स को मार डाला और उसके बारे में (आपस में) झगड़ने लगे और जो तुम छिपा रहे थे अल्लाह को उसका भेद खोलना मंज़ूर था। (७२) पस हमने कहा कि बैल का कोई टुकड़ा मुर्दे को छुआ दो, इसी तरह (क़ियामत में) अल्लाह मुर्दों को जिलायेगा। वह तुमको अपनी (क़ुदरत का) चमत्कार दिखाता है, शायद तुमको समझ आजाय। (७३)

---

§ यहूदियों को शनिश्चर के दिन मछली का शिकार खेलने की इजाज़त न थी। उन्होंने शुक्रवार के दिन नदी के किनारे गढ़े खोदे ताकि सनीचर को उसमें मछलियाँ आ जायें और वह इतवार को उनको पकड़कर कहें कि यह शिकार तो शुक्रवार का है। † मूसा के समय में एक बड़ा धनवान आदमी था। उसके कोई सन्तान न थी। उसके भतीजे ने उसे माल धन के लोभ से इस तरह मार डाला कि कोई जान न सके। कुछ लोग हज़रत मूसा के पास गये कि क्या करें जिससे क़ातिल का पता चल जाय। मूसा ने कहा, बैल ज़बह करो। इस पर (हत्या का भेद खुल जने के डर से) उन लोगों ने कहा, हम तो क़ातिल को जानना चाहते हैं और तुम हमसे कहते हो बैल हलाल करो! यह क्या मज़ाक है? काटने के बाद, मांस का एक टुकड़ा मरे हुए आदमी को मारा गया। वह उठ बैठा और उसने अपने क़ातिल का पता बताया। मक़तूल का नाम आमील था। इस क़िस्से से यह ज़ाहिर हुआ कि जिस तरह खुदा ने उस क़त्ल हुये शख़्स को ज़िन्दः कर दिया उसी तरह क़ियामत के दिन तमाम मुर्दों को उठा खड़ा करेगा।

सुम्म क़सत् क़ुलूबुकुम् मिम्बअ़्दि ज़ालिक फ़हिय कल्हि़जारति औ अशद्दु क़स्वतन् ṭ व अिन्न मिनल्हि़जारति लमा यतफ़ज्जरु मिन्हुल्अन्हारु ṭ व अिन्न मिन्हा लमा यश्शक़्क़क़ु फ़यख्रुजु मिन्हुल्मा॑अु ṭ व अिन्न मिन्हा लमा यह्बितु मिन् ख़शयतिल्लाहि ṭ व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ़्मलून (७४)

لما يتفجر منه الانهر وان منها لما يشقق فيخرج منه الماء و
ان منها لما يهبط من خشية الله وما الله بغافل عما تعملون ۝
افتطمعون ان يؤمنوا لكم وقد كان فريق منهم يسمعون كلم
الله ثم يحرفونه من بعد ما عقلوه وهم يعلمون ۝ واذا لقوا الذين
امنوا قالوا امنا واذا خلا بعضهم الى بعض قالوا اتحدثونهم بما
فتح الله عليكم ليحاجوكم به عند ربكم افلا تعقلون ۝ اولا يعلمون
ان الله يعلم ما يسرون وما يعلنون ۝ ومنهم اميون لا يعلمون
الكتب الا اماني وان هم الا يظنون ۝ فويل للذين يكتبون الكتب
بايديهم ثم يقولون هذا من عند الله ليشتروا به ثمنا قليلا
فويل لهم مما كتبت ايديهم وويل لهم مما يكسبون ۝ وقالوا
لن تمسنا النار الا اياما معدودة قل اتخذتم عند الله عهدا فلن
يخلف الله عهده ام تقولون على الله ما لا تعلمون ۝ بلى من كسب
سيئة واحاطت به خطيئته فاولئك اصحب النار هم فيها
خلدون ۝ والذين امنوا وعملوا الصلحت اولئك اصحب الجنة هم
فيها خلدون ۝ واذ اخذنا ميثاق بني اسراءيل لا تعبدون الا
الله وبالوالدين احسانا وذي القربى واليتمى والمسكين وقولوا للناس
حسنا واقيموا الصلوة واتوا الزكوة ثم توليتم الا قليلا منكم وانتم

منزل ١

अफ़ततम्अ़ून अंय्युअ्मिनू लकुम् व क़द् कान फ़रीक़ुम् मिन्हुम् यस्मअ़ून कलामल्लाहि सुम्म युहर्रिफ़ूनहू मिम्बअ़्दि मा अ़क़लूहु व हुम् यअ़्लमून (७५) व अिज़ा लक़ुल्लज़ीन आमनू क़ालू॑ आमन्ना ज् सला व अिज़ा ख़ला बअ़्ज़ुहुम् अिला बअ़्ज़िन् क़ालू॑ अतुहद्दिसूनहुम् बिमा फ़तहल्लाहु अ़लैकुम् लियुहा॑ज्जू कुम् बिही॑ अ़िन्द रब्बिकुम् ṭ अफ़ला तअ़्क़िलून (७६) अव ला यअ़्लमून अन्नल्लाह यअ़्लमु मा युसिर्रून व मा युअ़्लिनून (७७) व मिन्हुम् उम्मीयून ला यअ़्लमूनल्किताब अिल्ला॑ अमानीय व अिन् हुम् अिल्ला यज़ुन्नून (७८) ● फ़वैलुल्लिल्लज़ीन यक्तुबूनल्किताब बिऐदीहिम् क़् सुम्म यक़ूलून हाज़ा मिन् अ़िन्दिल्लाहि लियश्तरू बिही॑ समनन् क़लीलन् ṭ फ़वैलुल्लहुम् मिम्मा कतबत् ऐदीहिम् व वैलुल्लहुम् मिम्मा यक्सिबून (७९) व क़ालू लन् तमस्सनन्नारु अिल्ला॑ अैयामम्मअ़्दूदतन् ṭ क़ुल् अत्तख़ज़्तुम् अ़िन्दल्लाहि अ़ह्दन् फ़लैंयुख़्लिफ़ल्लाहु अ़ह्दहू॑ अम् तक़ूलून अ़लल्लाहि मा ला तअ़्लमून (८०) बला मन् कसब सैयिअतौंव अह़ातत् बिही॑ ख़ती॑अतुहू फ़अुला॑अिक अस्हा़बुन्नारि ज् हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (८१) वल्लज़ीन आमनू व अ़मिलुस्सालिहा़ति अुला॑अिक अस्हा़बुल्जन्नति ज् हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (८२) ★ व अिज़् अख़ज़्ना मीसाक़ बनी॑ अिस्रा॑अील ला तअ़्बुदून अिल्लल्लाह क़िफ़् व बिल्वालिदैनि अिह्-सानौंव ज़िल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि व क़ूलू लिन्नासि हुस्नौंव अक़ीमुस्सलात व आतुज़्ज़कात ṭ सुम्म तवल्लैतुम् अिल्ला क़लीलम् मिन्कुम् व अन्तुम् मुअ़्रिज़ून (८३)

● नि १/२

★ रु. ९/९ आ ११

फिर इसके बाद भी तुम्हारे दिल सख़्त ही रहे कि गोया वह पत्थर हैं बल्कि उनसे भी बढ़कर कठोर। (क्योंकि) पत्थरों में कुछ ऐसे भी हैं कि उनसे नदियाँ फूट निकलती हैं और कुछ पत्थर ऐसे हैं जो फट जाते हैं और उनसे पानी झरता है और कुछ पत्थर ऐसे भी हैं जो अल्लाह के डर से लुढ़क पड़ते हैं, और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं। (७४) तो (मुसलमानो!) क्या तुमको आशा है कि (यहूदी) तुम्हारी बात मान कर ईमान ले आवेंगे? (जबकि) उनका हाल यह है कि उनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं जो ख़ुदा का कलाम सुनते हैं फिर उसको समझ लेने के बाद भी उसको कुछ का कुछ कर देते हैं। और वह इसे (ख़ूब) जानते भी हैं। (७५) और जब ईमानवालों से मिलते हैं तो कह देते हैं कि हम भी ईमान ला चुके हैं और जब आपस में अकेले में होते हैं तो कहते हैं कि जो कुछ (तौरात में) ख़ुदा ने तुम पर खोला है, क्या तुम मुसलमानों को उसकी ख़बर दिये देते हो कि तुम्हारे पालनकर्ता के सामने उसी बात की सनद पकड़कर तुमको क़ायल कर दें,§ तो क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते। (७६) (परन्तु) क्या इन मनुष्यों को यह बात मालूम नहीं कि वह जो कुछ छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं, अल्लाह जानता है। (७७) और बाज़ उनमें अनपढ़ हैं जो अपने दिलों को खुश करने वाली झूठी ख़्वाहिशों (मनोरथों) के अलावा किताब का ज्ञान नहीं रखते और वह फ़क़त ख़याल पकाया करते हैं। (७८) ● पस ख़राबी है उन लोगों पर जो अपने हाथ से तो किताब लिखें फिर कहें कि यह ख़ुदा के यहाँ से (उतरी) है ताकि उसके द्वारा थोड़े से दाम हासिल करें: सो ख़राबी है उनके लिए उनके ऐसा लिखने के कारण और ख़राबी है उनके लिए ऐसी कमाई करने पर। (७९) और वे कहते हैं कि गिनती के चन्द रोज़ के सिवा (दोज़ख़ की) आग उनको छुएगी नहीं†। (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो, क्या तुमने अल्लाह से कोई अहद पा लिया है और इसलिए अब अल्लाह अपनी प्रतिज्ञा के हरगिज़ ख़िलाफ़ नहीं करेगा, या बेसमझे अल्लाह के लिए ऐसी बातें कहते हो? (८०) सच्ची बात तो यह है कि जो भी बुरी बातें करता है और (जो) हर तरफ़ से पापों में घिरा है तो ऐसे ही लोग दोज़ख़ी हैं कि वह सदैव जहन्नम (नरक) ही में रहेंगे। (८१) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये, ऐसे ही लोग जन्नती हैं कि वह हमेशा जन्नत ही में रहेंगे। (८२) ★

● नि. १/२

★ रु. ९/९ आ ११

और (वह समय याद करो) जब हमने याक़ूब के बेटों से पक्की प्रतिज्ञा ली कि ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत नहीं करेंगे और माता पिता के साथ सलूक से पेश आयेंगे और रिश्तेदारों, अनाथों और दीन दुखियों के साथ (भी)। और लोगों से साफ़ और भले तौर पर (मुलायमत से) बात करेंगे और नमाज़ क़ायम करेंगे और ज़कात देते रहेंगे। फिर तुममें से थोड़े आदमियों के सिवा बाक़ी सब पलट गये और तुम लोग तो पलट जाया ही करते हो। (८३)

§ यहूदियों के धर्मग्रंथ में उनसे ख़ुदा की यह भविष्यवाणी है कि आगे चलकर तुम्हारे ही भाईबन्दों (सेमेटिक जाति की ही दूसरी शाखा अरबों) में हम एक धर्मग्रंथ और पैग़म्बर को भेजेंगे। लेकिन डाह के सबब, यहूदी इस बात से मुकरते थे और क़ुर्आन और मुहम्मद का स्वागत नहीं कर रहे थे। धर्म और अधर्म का यह सनातन से झगड़ा है। लेकिन स्वयं रसूल (मुहम्मद) के कथनानुसार ज्ञान को चीन जैसे दूर देश से भी हासिल करके, अपने स्थान पर ही अधर्म और अज्ञान का नाश किया जा सकता है। (अ.यू.) † यहूदी कहते थे कि हम अल्लाह के प्यारे हैं। हम चाहे जितने पाप करें, चन्द दिन से आगे नरक में नहीं रह सकते। कुछ ने कहा चालीस दिन, जितने दिन बछड़ा पूजा था; कुछ ने कहा चालीस साल, जितने वर्ष 'तीह' में मारे मारे फिरे; कुछ ने कहा हर एक जितने दिन तक जीवित रहा।

व अिज़् अख़ज़्ना मीसाक़कुम् ला तस्फ़िकून दिमा'अकुम् व ला तुख़्रिजून अन्फ़ुसकुम् मिन् दियारिकुम् सुम्म अक़्रर्तुम् व अन्तुम् तश्हदून (८४) सुम्म अन्तुम् हा'अुला'अि तक़्तुलून अन्फ़ुसकुम् व तुख़्रिजून फ़रीक़म्मिन्कुम् मिन् दियारिहिम् ज़् तज़ाहरून अलैहिम् बिल् अिस्मि वल्अुद्वानि त् व अींयअ्तूकुम् अुसारा तुफ़ादूहुम् व हुव मुहर्रमुन् अलैकुम् अिख़्राजुहुम् त् अफ़तुअ्मिनून बिबअ्ज़िल्-किताबि व तक्फ़ुरून बिबअ्ज़िन् ज़् फ़मा जज़ा'अु मैंयफ़्अलु ज़ालिक मिन्कुम् अिल्ला ख़िज़्युन् फ़िल्हयातिद्दुन्या ज़् व यौमल्क़ियामति युरद्दून अिला अशद्दिल्अज़ाबि त् व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अम्मा तअ्मलून (८५) अुला'अिकल्लज़ीनश्तर - वुल्हयातद्दुन्या बिल्आख़िरति ज़् फ़लायुख़फ़्फ़फ़ु अन्हुमुल्अज़ाबु व ला हुम् युन्सरून (८६) ★ व लक़द् आतैना मूसल्किताब व क़फ़्फ़ैना मिम्बअ्दिही बिर्रुसुलि ज़् व आतैना अीसब्न मर्यमल्बैयिनाति व अैयद्नाहु बिरूहिल्क़ुदुसि त् अफ़कुल्लमा जा'अकुम् रसूलुम्बिमा ला तह्वा अन्फ़ुसुकुमुस्-तक्बर्तुम् ज़् फ़फ़रीक़न् कज़्ज़ब्तुम् ज़् व फ़रीक़न् तक़्तुलून (८७) व क़ालू क़ुलूबुना ग़ुल्फ़ुन् त् बल् लअनहुमुल्लाहु बिकुफ़्रिहिम् फ़क़लीलम्मा युअ्मिनून (८८) व लम्मा जा'अहुम् किताबुम्मिन् अिन्दिल्लाहि मुसद्दिक़ुल्लिमा मअहुम् ला व कानू मिन् क़ब्लु यस्तफ़्तिहून अलल्लज़ीन कफ़रू ज़् सला फ़लम्मा जा'अहुम् मा अरफ़ू कफ़रू बिही ज़् फ़लअ्नतुल्लाहि अलल्-काफ़िरीन (८९) बिअ्समश्तरौ बिही अन्फ़ुसहुम् अैंयक्फ़ुरू बिमा अन्ज़लल्लाहु बग़्यन् अैंयुनज़्ज़िलल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही अला मैंयशा'अु मिन् अिबादिही ज़् फ़बा'अू बिग़ज़बिन् अला ग़ज़बिन् त् व लिल्काफ़िरीन अज़ाबुम्मुहीनुन् (९०) व अिज़ा क़ील लहुम् आमिनू बिमा अन्ज़लल्लाहु क़ालू नुअ्मिनु बिमा अुन्ज़िल अलैना व यक्फ़ुरून बिमा वरा'अहू क् व हुवल्हक़्क़ु मुसद्दिक़ल्लिमा मअहुम् त् क़ुल् फ़लिम तक़्तुलून अम्बिया'अल्लाहि मिन् क़ब्लु अिन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (९१)

★ रु. १० / १० आ ४

الم ١١ البقرة ٢

مُعْرِضُونَ ۝ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُونَ دِمَاءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُونَ أَنْفُسَكُمْ
مِنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ أَقْرَرْتُمْ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ۝ ثُمَّ أَنْتُمْ هٰؤُلَاءِ تَقْتُلُونَ أَنْفُسَكُمْ
وَتُخْرِجُونَ فَرِيقًا مِنْكُمْ مِنْ دِيَارِهِمْ تَظٰهَرُونَ عَلَيْهِمْ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ
وَإِنْ يَأْتُوكُمْ أُسٰرٰى تُفٰدُوهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ إِخْرَاجُهُمْ أَفَتُؤْمِنُونَ بِبَعْضِ
الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ فَمَا جَزَاءُ مَنْ يَفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ إِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُرَدُّونَ إِلٰى أَشَدِّ الْعَذَابِ وَمَا اللّٰهُ بِغٰفِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝
أُولٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا
هُمْ يُنْصَرُونَ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهِ بِالرُّسُلِ وَآتَيْنَا
عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَأَيَّدْنٰهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ أَفَكُلَّمَا جَاءَكُمْ رَسُولٌ بِمَا
لَا تَهْوٰى أَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِيقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيقًا تَقْتُلُونَ ۝ وَقَالُوا قُلُوبُنَا
غُلْفٌ بَلْ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا مَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَلَمَّا جَاءَهُمْ كِتٰبٌ مِنْ
عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَهُمْ وَكَانُوا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى الَّذِينَ
كَفَرُوا فَلَمَّا جَاءَهُمْ مَا عَرَفُوا كَفَرُوا بِهِ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِينَ ۝ بِئْسَمَا اشْتَرَوْا
بِهِ أَنْفُسَهُمْ أَنْ يَكْفُرُوا بِمَا أَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا أَنْ يُنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهِ عَلٰى
مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ فَبَاءُوا بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ وَلِلْكٰفِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝
وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا بِمَا أَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوا نُؤْمِنُ بِمَا أُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ
بِمَا وَرَاءَهُ وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِمَا مَعَهُمْ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنْبِيَاءَ اللّٰهِ مِنْ

منزل ١

(और वह समय याद करो) जब हमने तुमसे पक्की प्रतिज्ञा ली कि आपस में एक दूसरे का ख़ून न बहाना और न अपने शहरों से अपने लोगों को देश-निकाला देना, फिर तुमने प्रतिज्ञा की और तुम (इस बात के) गवाह भी हो। (८४) फिर तुम वही हो कि अपनों को क़त्ल भी करते हो और अपनों ही में से कुछ को देशनिकाला भी कराते हो (और) उनपर गुनाह और ज़ुल्म के साथ (चढ़ाई करके उन अपनों के विरोधियों का) साथ भी देते हो। और उन्हीं में से कोई अगर क़ैद होकर तुम तक पहुँचते हैं तो तुम फ़िदयः (बदले में धन) देकर उनको छुड़ा लेते हो§। हालांकि उनको देश-निकाला कराना ही तुमको हराम (निषिद्ध) था। तो क्या किताब की कुछ बातों को मानते हो और कुछ को नहीं मानते? तो जो लोग तुममें से ऐसा करें, इसके सिवा उसकी और क्या सज़ा हो सकती है कि दुनिया की ज़िन्दगी में अपमानित हों और क़ियामत के दिन बड़ी ही कठिन सज़ा की तरफ़ लौटा दिये जायँ और जो कुछ भी तुम लोग करते हो, अल्लाह उससे बेख़बर नहीं है। (८५) यही हैं जिन्होंने आख़िरत (परलोक) के बदले संसार की ज़िन्दगी मोल ली। सो न तो (क़ियामत के दिन) उनकी सज़ा ही हलकी की जायगी और न उनको मदद ही पहुँचेगी। (८६)★

★ रु. १० / १० आ ४

और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी और उनके बाद एक के बाद एक रसूल (पैग़म्बर) भेजे और मरियम के बेटे ईसा को (भी) खुले निशान (चमत्कार) दिये और पाक रूह के द्वारा उनकी ताईद (पुष्टि) की। तो जब-जब तुम्हारे पास कोई रसूल (ईश्वर-दूत) तुम्हारी इच्छाओं के ख़िलाफ़ कोई हिदायत लेकर आया, तुमने घंमड किया ? फिर कुछ को तुमने झुठलाया और कुछ को मार डालने लगे। (८७) और वह (यहूदी घमण्ड से) कहते हैं कि हमारे दिल कवच से सुरक्षित हैं,† बल्कि (सही यों है कि) कुफ़्र के कारण ख़ुदा ने इनको फटकार दिया है। सो उनका ईमान बहुत ही थोड़ा (सीमित) है। (८८) और जब ख़ुदा की तरफ़ से इनके पास एक किताब (क़ुर्आन) आई, जो उनकी किताब (तौरात) की तसदीक़ करती है और इससे पहले वह काफ़िरों के मुक़ाबिले में ख़ुद ही बयान किया करते थे तो जब वह चीज़, जिसको जाने-पहचाने हुए थे, आ मौजूद हुई, तो उससे इनकार कर बैठे। इन इन्कारियों पर ख़ुदा की फटकार। (८९) वह चीज़ बुरी है जिसके बदले उन लोगों ने अपने आप को बेच डाला—कि इन्कारी हो गये उस चीज़ के जिसको अल्लाह ने उतारा, सिर्फ़ इस ज़िद पर कि ख़ुदा (क्यों) अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है (उसी पर) अपनी कृपा से (इल्म) उतारता है♦। इसलिए कोप पर कोप में पड़े और इन्कारियों के लिए ज़िल्लत (अपमान) की सज़ा है। (९०) और जब इनसे कहा जाता है कि क़ुर्आन जो ख़ुदा ने उतारा है उस पर ईमान लाओ तो कहते हैं कि हम उसी को मानते हैं जो हम पर उतर चुकी है और उसके अतिरिक्त दूसरी किताब से इन्कार करते हैं। हालाँकि यह क़ुर्आन सच्चा है और जो किताब उनके पास है उसकी तसदीक़ (समर्थन) करता है। (ऐ पैग़म्बर! इनसे यह तो) पूछो कि (अगर तुम ईमानवाले थे तो) इसके पहले (तौरात के ही समर्थक) ख़ुदा के पैग़म्बरों को क्यों मार डाला करते थे? ‡ (९१)

---

§ यह ज़िक्र इस तौर पर है। यहूदियों में 'बनी क़ुरैज़ः' और 'बनी नुज़ैर' दो वंश थे, जिनमें अदावत चलती थी। उसी तरह मुशरिकों में 'औस' और 'ख़ज़रज' दो कुटुम्ब थे, जो आपस में बैर रखते (अगले पृष्ठ पर)

† यहूदियों का कहना था कि सारा इल्म हमारे दिलों में महफ़ूज़ है। किसी दूसरे इल्म, किताब या रसूल की अब इसमें गंजाइश नहीं है। (अ. यू.) ♦ यहूदी दूसरी जाति में नबी पैदा होने से मारे डाह के कहते थे कि ख़ुदा ने मुहम्मद ही को पैग़म्बरी के लिए क्यों चुना। जवाब दिया गया है कि ख़ुदा जिसको जो दर्जा दे, उसकी मरज़ी है। ‡ अगर महम्मद से दूसरी क़ौम होने के सबब से तुमको हसद है तो तुम्हारी ही क़ौम में जो ईसा वग़ैरः नबी हुये उनको क्यों क़त्ल कर डालते थे। मतलब तो यह कि उनकी इन्कारी का असली सबब तो उनका अपना स्वार्थ, अपनी तंगनज़री और ख़ुदग़रज़ी थी (अ.यू.)

व लक़द् जा॑अकुम् मूसा बिल् बैयिनाति सुम्मत्तख़ज़्तुमुल्‌अिज्ल मिम्बअ़्दिहीؕ व अन्तुम् ज़ालिमून (९२) व अिज़् अख़ज़्ना मीसाक़कुम् व रफ़अ़्ना फ़ौक़कुमुत्तूर त् ख़ुज़ू मा॑ आतैनाकुम् बिक़ूवतिंव्वस्मअ़ू त् क़ालू समिअ़्ना व अ़सैना क़् व अुश्‌रिबू फ़ी क़ुलूबिहिमुल्‌अिज्ल बिकुफ़्‌रिहिम् त् क़ुल् बिअ्‌समा यअ्‌मुरुकुम् बिहीؕ॑ अीमानुकुम् अिन् कुन्तुम् मुअ्‌मिनीन (९३) क़ुल् अिन् कानत् लकुमुद्दारुल्‌आख़िरतु अिन्दल्लाहि ख़ालिसतम्मिन्दूनिन्नासि फ़तमन्नवुल्-मौत अिन् कुन्तुम् सादिक़ीन (९४) व लैंयतमन्नौहु अबदम्‌बिमा क़द्दमत् अैदीहिम् त् वल्लाहु अ़लीमुम्-बिज़्ज़ालिमीन (९५) व लतजिदन्नहुम् अह्‌रसन्नासि अ़ला हूयातिन् ज् ∴ व मिनल्लज़ीन अश्‌रकू ∴ ज् यवद्दु अहदुहुम् लौ युअ़म्मरु अल्फ़ सनतिन् ज् व मा हुव बिमुज़ह्‌ज़िहिहीؕ मिनल्‌अ़ज़ाबि अैंयुअ़म्मर त् वल्लाहु बसीरुम्-बिमा यअ़्मलून (९६) ★ क़ुल् मन् कान अ़दूवल्लिजिब्‌रील फ़अिन्नहू नज़्ज़लहू अ़ला क़ल्बिक बिअिज़्निल्लाहि मुसद्दिक़ल्लिमा बैन यदैहि व हुदौंव बुश्रा लिलमुअ्‌मिनीन (९७) मन् कान अ़दूवल्लिल्लाहि व मला॑अिकतिहीؕ व रुसुलिहीؕ व जिब्‌रील व मीकाल फ़अिन्नल्लाह अ़दूवुल्लिलकाफ़िरीन (९८) व लक़द् अन्ज़ल्ना॑ अिलैक आयातिम् बैयिनातिन् ज् व मा यक्फ़ुरु बिहा॑ अिल्लल्‌फ़ासिक़ून (९९) अव कुल्लमा आ़हदू अ़हदन्नबज़हू फ़रीक़ुम्मिन्हुम् त् बल् अक्सरुहुम् ला युअ्‌मिनून (१००) व लम्मा जा॑अहुम् रसूलुम्मिन् अ़िन्दिल्लाहि मुसद्दिक़ुल्लिमा मअ़हुम् नबज़ फ़रीक़ुम्मिनल्लज़ीन अूतुल्‌किताब क़् ला किताबल्लाहि वरा॑अ ज़ुहूरिहिम् कअन्नहुम् ला यअ़्लमून ज् (१०१)

∴ मु. अि. मु. ता ख. २ ★ रु. ११ ११ आ १०

الم ۱ — ۱۲ — البقرة ۲

قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ
مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝ وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا
مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا ؕ قَالُوْا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا ٭ وَاُشْرِبُوْا فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ
بِكُفْرِهِمْ ؕ قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖۤ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ قُلْ اِنْ
كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ
بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ ۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ
يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ يُّعَمَّرَ ؕ
وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ۝ قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى
قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝
مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ
لِّلْكٰفِرِيْنَ ۝ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ۝
اَوَكُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَ
لَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا
الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا
يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ۗ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ؕ وَمَا

منزل ۱

और तुम्हारे पास मूसा खुले निशान लेकर आये, इस पर भी तुम (जब वे तौरात लेने तूर पहाड़ पर गये) उनके पीछे बछड़े को (पूजने के लिए) ले बैठे और तुम तो हो ही अन्यायी। (९२) (वह समय याद करो) जब हमने तुमसे पक्की प्रतिज्ञा ली और तूर (पहाड़) लाकर तुम पर ऊँचा उठाया और हुक्म दिया कि यह किताब (तौरात) जो हमने तुमको दी है, इसको मज़बूती से पकड़े रहो, सुनो और पल्ले बाँधो। उत्तर में उन लोगों ने कहा कि हमने सुन लिया; लेकिन हमने माना नहीं§ और उनकी (अब तक की) इन्कारी के कारण बछड़ा उनके दिल में समाया हुआ था। (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि अगर तुम ईमानवाले (बनते) हो तो तुम्हारा ईमान तुमको कैसी बुरी बात सिखला रहा है। (९३) (ऐ पैग़म्बर!) कहो कि अगर ख़ुदा के यहाँ आक़िबत का घर (परलोक का सुख) ख़ास कर तुम्हारे ही लिए है, दूसरे लोगों के लिए नहीं और अगर तुम्हारा यह ख़याल सच्चा है तो मौत की इच्छा कर देखो। (९४) लेकिन वह अपने पिछले कुकर्मों के कारण मौत की प्रार्थना कभी नहीं कर सकते और ख़ुदा अन्यायियों को ख़ूब जानता है (९५) और (ऐ रसूल) उन्हें और सब आदमियों से और मुशरिकों† से भी संसारी जीवन के लिए ज़्यादा लालची पाओगे और उनमें से हर एक चाहता है कि हज़ार बरस उम्र पावे और इतनी उम्र पा भी जावें तो वह उन्हें (आख़िरत की) सज़ा से बचा न सकेगी। और ख़ुदा देखता है जो कुछ वह करते हैं। (९६)★

★ रु. ११/११ आ १०

(ऐ पैग़म्बर!) कहो जो शख़्स जिबरील फ़रिश्ते का दुश्मन हो, उसको मालूम हो कि उसने तो (क़ुर्आन) ख़ुदा के हुक्म से तुम्हारे दिल में डाला है, जो उन (किताबों) की भी तसदीक़ करता है जो इससे पहले से मौजूद हैं और ईमानवालों के लिए हिदायत और ख़ुशख़बरी देता है। (९७) जो मनुष्य अल्लाह का दुश्मन हो और उसके फ़रिश्तों का और उसके रसूलों का और जिबरील का और मीकाईल (फ़रिश्ते) का, तो अल्लाह भी ऐसे काफ़िरों का दुश्मन है। (९८) और (ऐ पैग़म्बर!) हमने तुम्हारे पास खुली (स्पष्ट) आयतें भेजी हैं और बदकिरदारों (दुष्कर्मियों) के सिवाय और कोई उनसे इन्कार न करेगा। (९९) जब कभी वे कोई प्रतिज्ञा कर लेते हैं तो इनमें का कोई न कोई फ़रीक़ उस अह्द (प्रतिज्ञा) को तोड़ फेंकता है, बल्कि इनमें के ज़्यादातर तो ईमान ही नहीं रखते। (१००) और जब उनके पास ख़ुदा की तरफ़ से रसूल (मुहम्मद) आये (और वह) उस किताब (तौरात) की जो इन (यहूदियों) के पास है, तसदीक़ भी करते हैं तो (इन) किताबवालों में से एक गरोह ने अल्लाह की किताब (तौरात) को (जिसमें इन रसूल की पेशींगोई भी है) अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया कि गोया वह कुछ जानते ही नहीं (कि यह कौन किताब है और इसमें कैसी पेशींगोइयाँ हैं)‡। (१०१)

(पिछले पृष्ठ से) थे। एक दूसरे के धर्म के विरोधी होते हुए भी 'बनी क़ुरैज़ः' औस के साथ मिलकर और 'बनी नुज़ैर' ख़ज़रज की सहायता से एक दूसरे से लड़ते और देश से निकलवा देते व उनकी जायदाद पर अधिकार कर लेते। एक ओर तो अपनों को ग़ैरों की मदद से नष्ट करते, दूसरी ओर अपनी धर्मपुस्तक तौरात के हुक्म के अनुसार क़ैदी की शकल में आने पर उन्हीं को बदले में धन देकर क़ैद से छुड़ा भी लेते। क्या कहा जाय? वह तौरात के ख़िलाफ़ करते थे या मुआफ़िक़, या दोनों?

§ उन्होंने ज़बानी तो अह्द कर लिया लेकिन दिल में इन्कारी बसी होने के सबब उस अह्द पर अमल नहीं किया। (अ. यू.) † ख़ुदा में, उसकी ज़ात में, उसकी सिफ़तों में, उसकी इबादत (उपासना) में दूसरे को शरीक करनेवाले मुशरिक कहलाते हैं—(विभाजक)। ‡ यह हर क़ौम का एक चलन देखा गया है कि जब उन पर कोई ज्ञान उतरता है तो कुछ दिनों उस पर चल कर और दुनियावी और रूहानी तरक़्क़ी हासिल कर लेने के बाद उन पर एक नशा छाने लगता है कि अल्लाह के बस वही बन्दे हैं। उनके अलावा सारी ख़िलक़त का ख़ुदा से वास्ता नहीं और न ख़ुदा उनकी परवाह करेगा। यह कमज़ोरी ही उस क़ौम के ज़वाल का सबब होता है। कोई मज़हब हत्ता कि मुसलमान भी इस भरम के उतने ही शिकार हो सकते हैं जितने कि दूसरे लोग।

वत्तबअू मा तत्लुश्शयातीनु अला मुल्कि सुलैमान ज् व मा कफ़र सुलैमानु व लाकिन्नश्शयातीन कफ़रू युअल्लिमूनन्नासस्सिह्र क् व मा॑ उन्ज़िल अलल्मलकैनि बिबाबिल हारूत व मारूत त् व मा युअल्लिमानि मिन् अह़दिन् ह़त्ता यक़ूला॑ इन्नमा नह़्नु फ़ित्नतुन् फ़ला तक्फ़ुर् त् फ़यतअल्लमून मिन्हुमा मा युफ़र्रिक़ून बिही बैनल्-मर्अि व ज़ौजिही त् व मा हुम् बिज़ा॑र्रीन बिही मिन् अह़दिन् इल्ला बिइज़्निल्लाहि त् व यतअल्लमून मा यज़ुर्रुहुम् व ला यन्फ़अु-हुम् त् व लक़द् अलिमू लमनिश्तराहु मा लहू फ़िल्आख़िरति मिन् ख़लाक़िन् क़िफ़ त् व लबिअ्स मा शरौ बिही॑ अन्फ़ुसहुम् त् लौ कानू यअ्लमून (१०२) व लौ अन्नहुम् आमनू वत्तक़ौ लमसूबतुम्मिन् अिन्दिल्लाहि ख़ैरुन् त् लौ कानू यअ्लमून (१०३) ★ या॑ अैयुहल्लजीन आमनू ला तक़ूलू राअिना व क़ूलुन्ज़ुर्ना वस्मअू त् व लिल्काफ़िरीन अज़ाबुन् अलीमुन् (१०४) मा यवद्दुल्लजीन कफ़रू मिन् अह्लिल्किताबि व लल्मुश्रिकीन अैंयुनज़्ज़ल अलैकुम् मिन्ख़ैरिम्मिर्रब्बिकुम् त् वल्लाहु यख़्तस्सु बिरह़्मतिही मैंयशा॑उ त् वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल् अज़ीमि (१०५) मा नन्सख़् मिन् आयतिन् औ नुन्सिहा नअ्ति बिख़ैरिम्मिन्हा॑ औ मिस्लिहा त् अलम् तअ्लम् अन्नल्लाह अला कुल्लि शैअिन् क़दीरुन् (१०६) अलम् तअ्लम् अन्नल्लाह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि त् व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलीयिंव्व ला नसीरिन् (१०७) अम् तुरीदून अन् तस्अलू रसूलकुम् कमा सुअिल मूसा मिन् क़ब्लु त् व मैंयतबद्दलिल्कुफ़्र बिल्ईमानि फ़क़द् ज़ल्ल सवा॑अस्सबीलि (१०८) वद्द कसीरुम्मिन् अह्लिल्किताबि लौ यरुद्दूनकुम् मिम्बअ्दि ईमानिकुम् कुफ़्फ़ारन् ज् सला ह़ूसदम्मिन् अिन्दि अन्फ़ुसिहिम् मिम्बअ्दि मा तबैयन लहुमुल्ह़क़्क़ु ज् फ़अ्फ़ू वस्फ़ह़ू ह़त्ता यअ्तियल्लाहु बिअम्रिही त् इन्नल्लाह अला कुल्लि शैअिन् क़दीरुन् (१०९) ● व अक़ीमुस्सलात व आतुज़्ज़कात त् व मा तुक़द्दिमू लिअन्फ़ुसिकुम् मिन् ख़ैरिन् तजिदूहु अिन्दल्लाहि त् इन्नल्लाह बिमा तअ्मलून बसीरुन् (११०)

रु. १२/१२ आ ७

सु. ३/४

يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا
مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ
اللّٰهِ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَلَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ
فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝
وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا وَلِلْكٰفِرِيْنَ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ
يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ
ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝ مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ
مِثْلِهَا اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ اَمْ
تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ
الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ۝ وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْ
بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ اِنَّ اللّٰهَ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَمَا تُقَدِّمُوْا
لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝

और उन (ढकोसलों) के पीछे लग गये जिनकी सुलेमान के राज्यकाल में शैतान चर्चा किया करते थे (यानी जादू) हालाँकि सुलेमान तो काफ़िर न थे बल्कि वह शैतान थे जो कुफ़्र करते थे और लोगों को जादू सिखाया करते थे, और (वह उसके पीछे हो लिये) जो बाबुल (शहर) में हारूत और मारूत फ़रिश्तों पर उतरा था। और वह (दोनो) किसी को कुछ न सिखाते थे जब तक उनसे न कह देते थे कि हम तो जाँच के लिए हैं, बस तू काफ़िर न हो जाना। इस पर भी उनसे ऐसी बातें सीखते जिसके द्वारा पति-पत्नी में जुदाई पड़ जाय। हालाँकि बग़ैर हुक्म खुदा वह अपनी इन बातों से किसी को नुक़सान नहीं पहुँचा सकते। ग़रज़ यह लोग ऐसी बातें सीखते जिनसे इन्हें ही नुक़सान था, फ़ायदा नहीं। और वह इतना ज़रूर जानते थे कि जो शख़्स इन बातों का ख़रीदार हुआ उसके लिए आख़िरत (परलोक) में कोई हिस्सा नहीं, और निस्सन्देह वह बहुत बुरा था जिसके बदले इन्होंने अपने आप को बेच डाला। हा शोक! इनको अगर समझ होती। (१०२) और अगर यह ईमान लाते और परहेज़गार बनते तो खुदा के पास से अच्छा फल मिलता अगर इनको समझ होती। (१०३) ★

★ रु. १२/१२ आ ७

ऐ ईमानवालो! (पैग़म्बर के साथ) 'राअ़िना' कहकर सम्बोधन न किया करो बल्कि उन्ज़ुर्ना§ कहा करो और उन्हें ध्यान से सुना करो। काफ़िर के लिए दुखदाई सज़ा है। (१०४) किताबवालों में से जो लोग इन्कारी हैं और मुशरिक, वे इस बात से खुश नहीं हैं कि तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से तुम पर भलाई उतरे, (यहूदी तमन्ना करते हैं कि बनी इस्राईल में से अन्तिम रसूल होता और मुशरिक चाहते हैं कि अन्तिम रसूल उनकी जाति में से होता परन्तु अल्लाह ने जिस पर चाहा अपनी दया उतारी।) और अल्लाह जिसको चाहता है अपनी दया के लिए ख़ास चुन लेता है और अल्लाह बड़ा दयावान है। (१०५) (ऐ पैग़म्बर!) हम कोई आयत मन्सूख़ (वर्जित) कर दें या बुद्धि से उसको उतार दें तो उससे अच्छी या वैसीही (आयत) पहुँचा देते हैं; † क्या तुमको मालूम नहीं कि अल्लाह हर चीज़ पर समर्थ है? (१०६) क्या तुमको मालूम नहीं कि आसमान और ज़मीन का राज्य उसी अल्लाह का है और अल्लाह के सिवाय तुम्हारा कोई दोस्त और मददगार नहीं है? (१०७) क्या तुम यह चाहते हो कि जिस तरह पहले मूसा से सवालात किये गये थे, (उनकी बातों में सन्देह के कारण, जो ईमान के विरुद्ध है) तुम भी अपने रसूल से सवालात करो (यहूदियों के बहकाने से सन्देह में पड़ कर, जो रसूल पर विश्वास करने के विरुद्ध है), और जो ईमान के बदले कुफ़्र ले ले (सन्देह में पड़ना कुफ़्र है) तो वह सीधे रास्ते से भटक गया। (१०८) अक्सर किताब के माननेवाले सच्चाई ज़ाहिर हो जाने के बावजूद अपनी दिली ईर्ष्या की वजह से चाहते हैं कि तुम्हारे ईमान लाने के बाद फिर तुमको काफ़िर बना दें, तो क्षमा करो, और उन पर ध्यान न दो, यहाँ तक कि खुदा अपनी आज्ञा जारी करे। (आख़िर आज्ञा आ गई कि यहूदियों को मदीने के आस पास से निकाल बाहर करो) बेशक अल्लाह हर चीज़ पर शक्तिशाली है। (१०९) ● नमाज़ पर दृढ़ रहो और ज़कात देते रहो और जो कुछ भलाई अपने लिए पहले से भेज दोगे उसको खुदा के यहाँ पाओगे। बेशक अल्लाह जो कुछ भी तुम करते हो देख रहा है। (११०)

● मु. ३/४

§ 'राअ़िना' के माने हैं 'हमारी ओर ध्यान दें'। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि व आलिही व सल्लम के दरबार में यहूदी आकर बैठते और हुज़ूर का कोई शब्द समझ में न आता तो 'राअ़िना' के स्थान पर 'राअ़ीना' का शब्द शरारत से इस्तेमाल करते। **'राअ़ीना' के माने हैं** 'हमारा चर्वाहा' और यहूदियों की बोली में राअ़िना मूर्ख को भी कहते हैं। इसलिए मुसलमान भी यहूदियों की इस शरारत में भटक न जायँ, उन्हें हिदायत की गई कि वे 'उन्ज़ुर्ना' कहा करें। उसके माने हैं हमारी ओर ध्यान दीजिये। इस प्रकार 'राअ़िना' और 'राअ़ीना' की भूल से बच जायँ। † बाज़ लोगों की मुराद यहाँ क़ुर्आन की ही आयतों से है और बाज़ का कहना है कि और दूसरी खुदाई किताबों की आयतों पर भी मुराद है। मतलब यह है कि (अगले पृष्ठ पर)

व क़ालू लैंयद्ख़ुलल्जन्नत अिल्ला मन् कान हूदन् औ नसारा ṭ तिल्क अमानीयुहुम् ṭ क़ुल् हातू बुर्हानकुम् अिन् कुन्तुम् सादिक़ीन (१११) बला क़् मन् अस्लम वज्हहु लिल्लाहि व हुव मुह्सिनुन् फ़लहू अज्रुहु अिन्द रब्बिही स् व ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (११२) ★ व क़ालतिल्यहूदु लैसतिन्नसारा अला शैअिन् स् ०व क़ालतिन्नसारा लैसतिल्यहूदु अला शैअिन् ला ०व हुम् यत्लूनल्किताब ṭ कजालिक क़ालल्लजीन ला यअ्लमून मिस्ल क़ौलिहिम् ज् फ़ल्लाहु यह्कुमु बैनहुम् यौमल्क़ियामति फ़ी मा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (११३) व मन् अज़्लमु मिम्मम्मनअ मसाजिदल्लाहि अैंयुज़्कर फ़ीहस्मुहू व सआ फ़ी ख़राबिहा ṭ अुलाअिक मा कान लहुम् अैंयद्ख़ुलूहा अिल्ला ख़ाअिफ़ीन ० ṭ लहुम् फ़िद्दुन्या ख़िज़्यूंव लहुम् फ़िल्आख़िरति अजाबुन् अज़ीमुन् (११४) व लिल्लाहिल्मश्रिक़ु वल्मग़्रिबु क़् फ़अैनमा तुवल्लू फ़सम्म वज्हुल्लाहि ṭ अिन्नल्लाह वासिअुन् अलीमुन् (११५) व क़ालुत्तख़ज़ल्लाहु वलदन् ला सुब्हानहू ṭ बल्लहू मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ṭ कुल्लुल्लहू क़ानितून (११६) बदीअुस्समावाति वल्अर्ज़ि ṭ व अिजा क़ज़ा अम्रन् फ़अिन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़यकूनु (११७) व क़ालल्लजीन ला यअ्लमून लौ ला युकल्लिमुनल्लाहु औतअ्तीना आयतुन् ṭ कजालिक क़ालल्लजीन मिन् क़ब्लिहिम् मिस्ल क़ौलिहिम् ṭ तशाबहत् क़ुलूबुहुम् ṭ क़द् बैयन्नल्आयाति लिक़ौमींयूक़िनून (११८) अिन्ना अर्सल्नाक बिल्हक़्क़ि बशीरौंव नजीरन् ला ०व ला तुस्अलु अन् अस्हाबिल्जहीमि (११९) व लन् तर्ज़ा अन्कल्यहूदु व लन्नसारा हत्ता तत्तबिअ मिल्लतहुम् ṭ क़ुल् अिन्न हुदल्लाहि हुवल्हुदा ṭ व लअिनित्तबअ्त अह्वाअहुम् बअ्दल्लजी जाअक मिनल्अिल्मि ला मा लक मिनल्लाहि मिंव्वलीयिंव्व ला नसीरिन् ● (१२०)

वَقَالُوا لَنْ يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَنْ كَانَ هُودًا أَوْ نَصٰرٰى تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ قُلْ
هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ۝ بَلٰى مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلّٰهِ وَهُوَ
مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُودُ
لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَيْءٍ وَقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلٰى شَيْءٍ وَهُمْ
يَتْلُونَ الْكِتٰبَ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ
بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَنَعَ
مَسٰجِدَ اللّٰهِ أَنْ يُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسَعٰى فِي خَرَابِهَا أُولٰئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَنْ
يَدْخُلُوهَا إِلَّا خَائِفِينَ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝
وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ فَأَيْنَمَا تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ إِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝
وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهُ بَلْ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ كُلٌّ لَهُ
قٰنِتُونَ ۝ بَدِيعُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَإِذَا قَضٰى أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ
فَيَكُونُ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ أَوْ تَأْتِينَا آيَةٌ كَذٰلِكَ
قَالَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِثْلَ قَوْلِهِمْ تَشَابَهَتْ قُلُوبُهُمْ قَدْ بَيَّنَّا الْآيٰتِ
لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَا تُسْئَلُ عَنْ أَصْحٰبِ
الْجَحِيمِ ۝ وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ قُلْ
إِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ الَّذِي جَاءَكَ مِنَ
الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ الَّذِينَ آتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُونَهُ

और यहूदी कहते हैं कि हमारे सिवा और ईसाई कहते हैं कि हमारे सिवा बहिश्त में कोई नहीं जाने पायेगा। यह उनकी (अपनी) ख़ियाली बातें हैं। (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो अगर सच्चे हो तो अपनी सनद (प्रमाण) पेश करो। (१११) हाँ सच बात तो यह है कि जिसने अपने को (भक्तिपूर्वक) ख़ुदा को सौंप दिया और नेककार (सत्कर्मी) भी हो* तो उसके लिए उसका फल उसके पालनकर्त्ता से मिलेगा और ऐसे लोगों पर न डर होगा और न वह उदास होंगे। (११२) ★

और यहूदी कहते हैं ईसाइयों का मज़हब कुछ नहीं और ईसाई कहते हैं यहूद का मज़हब कुछ नहीं, हालाँकि वह (दोनो ही ख़ुदाई) किताब (तौरात व इंजील) के पढ़नेवाले हैं। इसी तरह इन्हीं जैसी बातें (अरब के मुशरिक भी) कहा करते हैं जो कुछ भी (ईश्वरीय) ज्ञान नहीं रखते। तो जिस बात में यह लोग झगड़ रहे हैं क़ियामत के दिन अल्लाह इनमें उसका फ़ैसला कर देगा। (११३) उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है जो अल्लाह की मसजिदों (प्रार्थना-स्थलों) में उसका नाम लिए जाने को मना करे और उनके उजाड़ने की कोशिश करे? § यह लोग खुद इस योग्य नहीं कि मसजिदों में आने पावें सिवा इसके कि डरते हुए। इनके लिए दुनिया में अपमान व निरादर और आख़िरत में बड़ी सज़ा है। (११४) (यहूद व नसारा अपने अपने क़िबलों के लिए झगड़ते हैं हालाँकि) अल्लाह ही का पूर्व और पश्चिम है तो जिस ओर भी तुम मुँह करो, उधर ही अल्लाह का सामना है। बेशक अल्लाह बेहद वसत वाला (सर्वव्यापी) और सब कुछ जाननेवाला (सर्वज्ञ) है। (११५) और कहते हैं कि ख़ुदा औलाद रखता है (हालाँकि) वह इन बातों से पाक है बल्कि जो कुछ आसमान और ज़मीन में है वह सबका स्वामी है (न कि बाप) और सब उसकी आज्ञा के आधीन है। (११६) वह आसमान और ज़मीन का बनानेवाला है और जब किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उसके लिए फ़र्मा देता है कि 'हो' और वह हो जाता है। (११७) जो कुछ नहीं जानते वे कहते हैं कि ख़ुदा हमसे बात क्यों नहीं करता या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती (जिससे हम पैग़म्बरी की तसदीक़ कर लें), इसी तरह जो लोग इनसे पहले हो गये हैं इन्हीं-जैसी मूर्खता की बातें वह भी कहा करते थे। इन सबके दिल एक ही तरह के हैं। जो लोग यक़ीन रखते हैं उनको तो हम निशानियाँ साफ़ तौर पर दिखा चुके। (११८) (ऐ पैग़म्बर!) हमने तुमको सच्ची बात देकर मंगल समाचार देनेवाला और डरानेवाला (बनाकर) भेजा है और तुमसे दोज़ख़ (नरक की राह) पर तुले लोगों की बाबत कुछ पूछताछ नहीं होगी। (११९) और न तो यहूदी ही तुमसे कभी रज़ामंद होंगे और न ईसाई ही, जब तक कि तुम उन्हीं के मत की पैरवी न करो। (ऐ पैग़म्बर!) इन लोगों से कहो कि अल्लाह की हिदायत (इस्लाम) ही हिदायत है और (ऐ पैग़म्बर!) अगर तुम इसके बाद कि तुम्हारे पास इल्म (यानी क़ुर्आन) आ चुका है, उनकी ख़्वाहिशों पर चले तो तुमको ख़ुदा के कोप से बचाने-वाला न कोई दोस्त है और न कोई मददगार ● । (१२०).

★ रु. १३ १३ आ ६

● न. मं.

(पिछाले पृष्ठ से) ईश्वर का पैग़ाम तो हमेशा एक और न बदलनेवाला है लेकिन ज़माने के लिहाज़ से उन आज्ञाओं की शक्लें बदल कर खुदा की तरफ़ से आ सकती हैं। तौरात, इंजील और क़ुर्आन तीनो ईश्वर का हुक्म होते हुये भी उनमें समय के अनुसार खुदा ने जब जो मुनासिब समझा आयत को भेजा, बदला या मन्सूख़ किया। (अ. यू.)

* सिर्फ़ किसी खास धर्म में नामज़द होजाने से बहिश्त या अल्लाह की कृपा मयस्सर नहीं। ईमान और अमल—श्रद्धा और आचरण दोनो होने पर ही खुदा के फ़ज़ल (कृपा) की प्राप्ति होती है। § मक्का के मुशरिक. काबा में, जहाँ उन्होंने सैकड़ों मूर्तियाँ स्थापित कर रखी थीं. मुसलमानों को प्रवेश नहीं करने देते थे। जब कि मुसलमान एक मात्र अल्लाह के सच्चे मानने वाले थे और इब्राहीम का काबा सचमुच उनके लिए ही इबादत का स्थान था, न कि उन बहुदेव-पूजकों के लिए। † ईसाई हज़रत ईसा को खुदा का बेटा कहते हैं। उनको ही मुख़ातिब करते हुये यह आयत उतरी है। जिस तरह मनुष्य या पशु के औलाद होती है उस तरह से अल्लाह के औलाद होना यह कहना अन्याय है।

रु. १४ १४ आ ६

अल्लज़ीन आतैना-हुमुल्किताब यत्लूनहू हक़्क़ तिलावतिही ट़् उला॑इक युअ्मिनून बिही ट़् व मैंयक्फ़ुर् बिही फ़उला॑इक हुमुल्ख़ासिरून (१२१) ★ या बनी॑ इस्रा॑ईलज़्कुरू निअ्मतियल्लती॑ अन्अम्तु अलैकुम् व अन्नी फ़ज़्ज़ल्तुकुम् अलल्आलमीन (१२२) वत्तक़ू यौमल्ला तज्ज़ी नफ़्सुन् अन् नफ़्सिन् शैऔंव ला युक़्बलु मिन्हा अद्लूँव ला तन्फ़अुहा शफ़ाअ़तूँव ला हुम् युन्सरून (१२३) व अिज़िब्तला॑ अिब्राहीम रब्बुहू बिकलिमातिन् फ़अतम्महुन्न ट़् क़ाल अिन्नी जाअिलुक लिन्नासि अिमामन् ट़् क़ाल व मिन् ज़ुर्रीयती ट़् क़ाल ला यनालु अह्दिज़्ज़ालिमीन (१२४) व अिज़् जअ़ल्नल्बैत मसाबतल्लिन्नासि व अम्नन् ट़् वत्तख़िज़ू मिम्मक़ामि अिब्राहीम मुसल्लन् ट़् व अहिद्ना॑ अिला॑ अिब्राहीम व अिस्माअील अन् तह्हिरा बैतिय लित्ता॑अिफ़ीन वल्आकिफ़ीन वर्रुक्कअिस्सुजूदि (१२५) व अिज़् क़ाल अिब्राहीमु रब्बिज्अल् हाज़ा बलदन् आमिनौंवर्ज़ुक़् अह्लहू मिनस्समराति मन् आमन मिन्हुम् बिल्लाहि वल्यौमिल्आख़िरि ट़् क़ाल व मन् कफ़र फ़उमत्तिअुहू क़लीलन् सुम्म अज़्तर्रुहू॑ अिला अज़ाबिन्नारि ट़् व बिअ्सल्मसीरु (१२६) व अिज़् यर्फ़अु अिब्राहीमुल्क़वाअिद मिनल्बैति व अिस्माअीलु ट़् रब्बना तक़ब्बल् मिन्ना ट़् अिन्नक अन्तस्समीअुल्अलीमु (१२७) रब्बना वज्अल्ना मुस्लिमैनि लक व मिन् ज़ुर्रीयतिना॑ उम्मतम्मुस्लिमतल्लक ट़् व अरिना मनासि-कना व तुब् अलैना ज् अिन्नक अन्तत्तौवाबुर्रहीमु (१२८) रब्बना वब्अस् फ़ीहिम् रसूलम्मिन्हुम् यत्लू अलैहिम् आयातिक व युअ़ल्लिमुहुमुल्किताब वल्हिक्मत व युज़क्कीहिम् ट़् अिन्नक अन्तल्अज़ीज़ुल्हकीमु (१२९) ★ व मैंयर्ग़बु अम्मिल्लति अिब्राहीम अिल्ला मन् सफ़िह नफ़्सहू ट़् व लक़दिस्तफ़ैनाहु फ़िद्दुन्या ज् व अिन्नहू फ़िल्आख़िरति लमिनस्सालिहीन (१३०) अिज़् क़ाल लहू रब्बुहू॑ अस्लिम् ला क़ाल अस्लम्तु लिरब्बिल्आलमीन (१३१)

रु. १५ १५ आ ८

البقرة ١٥

حَقَّ تِلَاوَتِهِ أُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ
يٰبَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى
الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْئًا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا
عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝ وَإِذِ ابْتَلٰٓى إِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ
بِكَلِمٰتٍ فَأَتَمَّهُنَّ قَالَ إِنِّيْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامًا قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ قَالَ
لَا يَنَالُ عَهْدِي الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا وَ
اتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ إِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى وَعَهِدْنَآ إِلٰٓى إِبْرٰهٖمَ وَإِسْمٰعِيْلَ أَنْ
طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ۝ وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهٖمُ رَبِّ
اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ أَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَأُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ أَضْطَرُّهٗٓ إِلٰى عَذَابِ
النَّارِ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمٰعِيْلُ
رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَ
مِنْ ذُرِّيَّتِنَآ أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ
التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝ رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ
الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ
مِّلَّةِ إِبْرٰهٖمَ إِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا وَإِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ
لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ إِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗٓ أَسْلِمْ قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَوَصّٰى

जिन लोगों को हमने किताब दी है अगर वह उसको उसी तरह पढ़ते रहे जैसे कि उसे पढ़ना चाहिये (तो) ऐसे ही लोग उसपर ईमान लानेवाले हैं। और जो इसका इन्कार करेंगे तो वही लोग हैं जो घाटे में रहेंगे। (१२१)★

★ रु. १४/१४ आ ६

ऐ याक़ूब की सन्तान! मेरी उन नियामतों को याद करो, जो मैंने तुम को दीं और इस बात को कि मैंने तुमको सारे संसार के लोगों पर प्रधानता दी।(१२२) और उस दिन (की सज़ा)से डरो कि कोई शख़्स किसी शख़्स का बोझ न बटा सकेगा और न उसकी तरफ़ से कोई बदला क़बूल किया जायगा और न सिफ़ारिश उसको फ़ायदा देगी और न लोगों को मदद पहुँचेगी।(१२३)§ और जब इबराहीम को उसके पालनकर्त्ता ने चन्द बातों में आज़माया और इबराहीम ने उन बातों को पूरा कर दिखाया, (तो ख़ुदा ने संतुष्ट होकर) कहा कि मैं तुमको लोगों का इमाम (यानी सरदार) बनाऊँगा। (इबराहीम ने) निवेदन किया कि मेरी संतान में से भी (इमाम बना)। (ख़ुदा ने) कहा, मगर मेरे इक़रार (वचन) में वह दाख़िल नहीं जो नाफ़र्मान (अवज्ञाकारी) होंगे।(१२४) और जब हमने काबे के घर को लोगों के जमा होने और शांति की जगह बनाया और (लोगों को हुक्म भेजा कि) इबराहीम की जगह को नमाज़ की जगह बनाओ और हमने इबराहीम और इस्माईल दोनो को आज्ञा दी कि मेरे घर को तवाफ़† (परिक्रमा) करने वालों और इअतिकाफ़‡ करनेवालों (उपासकों) और रुकूअ♦ (और) सजदः ❀ करने वालों के लिए पाक साफ़ रखो।*(१२५) और (ऐ पैग़म्बर! इनको वह समय भी याद दिलाओ) जब इबराहीम ने दुआ माँगी कि ऐ मेरे पालनकर्त्ता! इसको शान्ति का नगर बना और अल्लाह और क़ियामत पर ईमान रखनेवाले इसके निवासियों को फल फलाहार खाने को देता रह। (अल्लाह ने)फ़र्माया कि(इनके अलावा) जो कुफ़्र करेगा मैं उसको भी चन्द रोज़ के लिए चीज़ों से फ़ायदा उठाने दूँगा। फिर उसको मजबूर करके दोज़ख़(नरक)की सज़ा में ले जा दाख़िल करूँगा और (याद दिलाओ कि)वह बुरा ठिकाना है।(१२६) और जब इबराहीम और इस्माईल (दोनो) काबे की नीवें(बुनयादें)उठा रहे थे(और दुआएँ माँगते जाते थे) कि ऐ हमारे पालनेवाले हमारी (यह सेवा) क़बूल कर। बेशक तूही सुनने और जाननेवाला है।(१२७) ऐ हमारे पालनकर्त्ता! हमको अपना सच्चा आज्ञाकारी बना और हमारी सन्तान में से एक गरोह (पैदा कर) जो तेरा सच्चा आज्ञाकारी हो और हमको हमारे दीनी क़ायदे(धार्मिक विधि)बता और हमारी ओर ध्यान रख, बेशक तूही बड़ा ध्यान रखनेवाला है, बेहद मेहरबान है।(१२८)ऐ हमारे पालनेवाले! इनमें इन्हीं में से एक पैग़म्बर उठा@ कि इनको तेरी आयतें पढ़कर सुनाये और इनको किताब (क़ुर्आन) और ज्ञान की शिक्षा दे और इनको पवित्र और संयमी बनाए। बेशक तू बड़ा ही शक्तिशाली व ज्ञानवान है।(१२९)★

★ रु. १५/१५ आ ८

और कौन है जो इबराहीम के तरीक़ों से मुँह फेरे। सिवा उसके जो बिलकुल बेअक़्ल हो। बेशक हमने इबराहीम को दुनिया लोक में चुन लिया और आख़िरत (परलोक) में (भी)वह सदाचारियों में होंगे।(१३०) और जब उनसे पालनकर्त्ता ने कहा कि (मेरे) आज्ञाकारी बनो, (तो जवाब में) निवेदन किया कि मैं सारे संसार के स्वामी का आज्ञापालक हुआ।(१३१)

---

§ आयत१२२-१२३ में आयत ४७-४८ को दुहराया है। यहूदियों को इस चेतावनी को बार बार देने के बाद अब आयत १२४ से अरबों की विशेषता की चर्चा है। † तवाफ़—काबे के गिर्द नियमानुसार घूमने को तवाफ़ कहते हैं। ‡ इअ्तिकाफ़—मसजिद में एक नियत समय तक जम कर रहने को 'इअ्तिकाफ़' कहते हैं। ♦ घुटनों पर हाथ लगाकर झुके हुए खड़े होने को "रुकूअ्' कहते हैं। यह हालत नमाज़ में होती है। ❀ सजदः—घुटने टेक कर दोनों हाथों की हथेलियाँ और पाँचों उंगलियाँ ज़मीन पर रख कर और हाथों के बीच में माथा और नाक टेक कर ज़बान से ख़ुदा की पवित्रता के मंत्र का जाप करने को सजदः कहते हैं। * गन्दगी व मूर्तियों से पाक रखो। @ ह. मुहम्मद (स०) की पैग़म्बरी इसी प्रार्थना का परिणाम थी।

व वस्सा बिहा अब्राहीमु बनीहि व यअ़्क़ूबु त् या बनीय अिन्नल्लाहस्तफ़ा लकुमुद्दीन फ़ला तमूतुन्न अिल्ला व अन्तुम् मुस्लिमून त् (१३२) अम् कुन्तुम् शुहदाअ अिज़् हज़र यअ़्क़ूबलमौतु ला अिज़् क़ाल लिबनीहि मा तअ़्बुदून मिम्बअ़्दी त् क़ालू नअ़्बुदु अिलाहक व अिलाह आबाअिक अब्राहीम व अिस्माअ़ील व अिस्हाक़ अिलाहौंवाहिदन् ज् सला ०व नह्नु लहू मुस्लिमून (१३३) तिल्क **उम्मतुन्** क़द् ख़लत् ज् लहा मा कसबत् व **लकुम्** मा कसब्तुम् ज् व ला तुस्अलून अ़म्मा कानू यअ़्मलून (१३४) व क़ालू कूनू हूदन् औ नसारा तह्तदू त् क़ुल् बल् मिल्लत अब्राहीम हनीफ़न् त् व मा कान मिनल्मुश्रिकीन (१३५) क़ूलू आमन्ना बिल्लाहि व मा अुन्ज़िल अिलैना व मा अुन्ज़िल अिला अब्राहीम व अिस्माअ़ील व अिस्हाक़ व यअ़्क़ूब वल्अस्बाति व मा अूतिय मूसा व अ़ीसा व मा अूतियन्नबीयून मिर्रब्बिहिम् ज् ला नुफ़र्रिक़ु बैन अहदिम् मिन्हुम् ज् सला व नह्नु लहू मुस्लिमून (१३६) फ़अिन् आमनू बिमिस्लि मा आमन्तुम् बिही फ़क़दिह्तदौ ज् व अिन् तवल्लौ फ़अिन्नमा हुम् फ़ी शिक़ाक़िन ज् फ़सयक्फ़ीकहुमुल्लाहु ज् व हुवस्समी-अ़ुल् अ़लीमु त् (१३७) **सिब्ग़तल्लाहि** ज् व मन् अह्सनु मिनल्लाहि **सिब्ग़तन्** ज् ०व नह्नु लहू आ़बिदून (१३८) क़ुल् अतुहाज्जूनना फ़िल्लाहि व हुव रब्बुना व रब्बुकुम् ज् व लना अअ़्मालुना व लकुम् अअ़्मालुकुम् ज् व नह्नु लहू मुख़्लिसून ला (१३९) अम् तक़ूलून अिन्न अब्राहीम व अिस्माअ़ील व अिस्हाक़ व यअ़्क़ूब वल्अस्बात कानू हूदन् औ नसारा त् क़ुल् अअन्तुम् अअ़्लमु अमिल्लाहु त् व मन् अज़्लमु मिम्मन् कतम शहादतन् अ़िन्दहू मिनल्लाहि त् व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ़्मलून (१४०) तिल्क अुम्मतुन् क़द् ख़लत् ज् लहा मा कसबत् व लकुम्मा कसब्तुम् ज् व ला तुस्अलून अ़म्मा कानू यअ़्मलून (१४१) ★

البقرة ١٦ الٓمّٓ

بِهَا اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَيَعْقُوْبُ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِيْ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْئَلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ قُوْلُوْا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِيَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝ فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا هُمْ فِيْ شِقَاقٍ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ صِبْغَةَ اللّٰهِ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً وَّنَحْنُ لَهٗ عٰبِدُوْنَ ۝ قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِي اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ۝ اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ كَانُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْئَلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ ع

منزل

★ रु० १६ | १६ आ० १२

॥ इति पहला पारः ॥

और इसकी (बाबत) इबराहीम अपने बेटों को वसीयत कर गये और इसी तरह याक़ूब भी कि ऐ मेरे बेटों! अल्लाह ने इस दीन को तुम्हारे लिए पसंद फ़रमाया है। तो ऐसा हरगिज़ न हो कि मरते समय तुम मुसलमान के सिवा कुछ और हो। (१३२) (ऐ यहूद!) क्या तुम मौजूद थे जब याक़ूब के सामने मौत आ खड़ी हुई? उस वक़्त उन्होंने अपने बेटों से पूछा कि मेरे बाद किसकी इबादत (उपासना) करोगे? उन्होंने जवाब दिया कि हम आपके माबूद (उपास्य) और आपके पूर्वज यानी इबराहीम, इस्माईल और इसहाक़ के पूजित एक ख़ुदा की ही भक्ति करेंगे और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।§(१३३) (ऐ यहूद!) यह लोग हो चुके, उनका किया उनके काम आयेगा और तुम्हारा किया तुम्हारे, और तुमसे उनके काम की पूछ-ताछ नहीं होगी।†(१३४) और (यहूद और ईसाई, मुसलमानों से) कहते हैं कि यहूदी या ईसाई बन जाओ तो सच्चे रास्ते पर आओगे। (ऐ पैग़म्बर! तुम इन लोगों से) कहो (नहीं) बल्कि हम इबराहीम की सीधी राह पर हैं जो (एक ख़ुदा के हो रहे थे और) मुशरिकीन में से न थे।‡(१३५) (मुसलमानो! तुम यहूद व नसारा से) कह दो कि हम तो ईमान लाये हैं अल्लाह पर और उस पर जो हम पर उतारी गई है और उस पर जोकि इबराहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याक़ूब और उनकी संतान पर उतरी और मूसा और ईसा को जो (किताब) मिली (उस पर भी) और जो (दूसरे) पैग़म्बरों को उनके पालनेवाले से मिला (उस पर भी); हम इनमें से किसी एक में भी (किसी तरह का) फ़र्क़ नहीं समझते और हम (एक) अल्लाह के ही आज्ञाकारी हैं। (१३६) तो अगर यह लोग भी ईमान ले आवें, जिस तरह तुम ईमान लाये तो बस सच्चे रास्ते पर आ गये, और मुँह फेरें (तो समझो) बस वह (तुम्हारे) विरोधी हैं, बस अब ख़ुदा तुम्हारी ओर से उनके मुक़ाबिले में काफ़ी है और वह सब सुनता और जानता है। (१३७) (कहो कि) हम तो अल्लाह के रंग में रंग गये।छ और अल्लाह के रंग से और किसका रंग अच्छा होगा? और हम तो उसी की बन्दना करने वाले हैं। (१३८) (ऐ पैग़म्बर!) कहो कि क्या तुम अल्लाह के बारे में हमसे हुज्जत (कुतर्क) करते हो? हालाँकि वही हमारा पालनहार है और तुम्हारा भी परवरदिगार है। और हमारे काम हमारे लिए हैं और तुम्हारे काम तुम्हारे लिए और हम ख़ास उसी की अिबादत करनेवाले हैं। (१३९) क्या तुम्हारा (यह) दावा है कि इबराहीम, इस्माईल और इसहाक़ और याक़ूब और याक़ूब की संतान (यह लोग) यहूदी थे, या ईसाई थे! (ऐ पैग़म्बर! इनसे) कहो कि तुम ज़्यादा जाननेवाले हो या ख़ुदा? और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जिसके पास ख़ुदा की तरफ़ से गवाही हो और वह उसको छिपाये। और तुम्हारी करतूतों से अल्लाह बेख़बर नहीं। (१४०) वह एक जमात थी जो गुज़र चुकी। उनका किया उनके और तुम्हारा किया तुम्हारे (आगे आयेगा) और जो कुछ वह कर गुज़रे तुमसे उसकी पूछताछ नहीं होगी। (१४१) ★

★ रु. १६ १६ आ १२

॥ इति पहला पारः ॥

---

§ यहूदियों को उनके पूर्वजों के पूनित एक और सिर्फ़ एक अल्लाह की ओर मुख़ातिब किया गया है, इसलिए कि इस समय यहूदी उस सारे जहान के स्वामी अल्लाह को एक सीमित जातीय (Tribal) ख़ुदा जैसा मानने लगे थे। † याने तुम्हारे पूर्वजों के नेक आमालों में तुम्हारा कोई हिस्सा न होगा। तुम्हारे ही कर्म तुम्हारे काम आवेंगे। ‡ जिन्होंने ख़ुदा के साथ ख़ुदाओं को नहीं जोड़ा था। छ 'सिब्ग़त' (अरबी) का अर्थ रंग है। इसी के अनुसार ईसाई 'बप्तिसमा' में जल में रंग मिला कर ज़ाहिर करते हैं कि अब उनकी ज़िन्दगी का रंग ही बदल गया। लेकिन इस्लाम में इस दुनियावी रंग के बजाय अल्लाह का रंग ही चोखा समझा गया है। (अ. यू.)

☪☪ दूसरा पारः (सयक़ूलु) ☪☪

☪ सूरतुल् बक़रः आयात् १४२ से २५२ ☪

सयक़ूलुस्सुफ़हा'अु मिनन्नासि मा वल्ला हुम् अन् क़िब्लतिहिमुल्लती कानू अलैहा त् क़ुल् लिल्लाहिल्मश्‌रिक़ु वल्मग़्‌रिबु त् यह्‌दी मैंयशा'अु अिला सिरातिम्मुस्तक़ीमिन् (१४२) व कज़ालिक जअलनाकुम् अुम्मतौंव सतल्लितकूनू शुहदा'अ अलन्नासि व यकूनर्रसूलु अलैकुम् शहीदन् त् व मा जअलनल्-क़िब्लतल्लती कुन्त अलैहा' अिल्ला लिनअ्लम मैंयत्तबिअुर्रसूल मिम्मैंयन्-क़लिबु अला अक़िबैहि त् व अिन् कानत् लकबीरतन् अिल्ला अलल्लज़ीन हदल्लाहु त् व मा कानल्लाहु लियुज़ीअ अीमानकुम् त् अिन्नल्लाह बिन्नासि लरअूफ़ुर्रहीमुन् (१४३) क़द् नरा तक़ल्लुब वज्‌हिक फ़िस्समा'अि ज फ़लनुवल्लियन्नक क़िब्लतन् तर्ज़ाहा स् फ़वल्लि वज्‌हक शत्‌रल्मस्‌जिदिल्-हरामि त् व हैसु मा कुन्तुम् फ़वल्लू वुजूहकुम् शत्‌रहू त् व अिन्नल्लज़ीन अूतुल्किताब लयअ्लमून अन्नहुल्हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम् त् व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अम्मा यअ्मलून (१४४) व लअिन् अतैतल्लज़ीन अूतुल्किताब बिकुल्लि आयतिम्मा तबिअू क़िब्लतक ज व मा' अन्त बिताबिअिन् क़िब्लतहुम् ज व मा बअ्ज़ुहुम् बिताबिअिन् क़िब्लत बअ्ज़िन् त् व लअिनित्तबअ्त अह्वा'अ हुम् मिम्बअ्दि मा जा'अक मिनल्अिल्मि ला अिन्नक अिज़ल्लमिनज़्ज़ालिमीन म् ● (१४५) अल्लज़ीन आतैना हुमुल्किताब यअ्रिफ़ूनहू कमा यअ्रिफ़ून अब्ना'अ हुम् त् व अिन्न फ़रीक़म्मिन्हुम् लयक्तुमूनल्हक़्क़ व हुम् यअ्लमून ● (१४६) अल्हक़्क़ु मिर्रब्बिक फ़ला तकूनन्न मिनल्मुम्तरीन (१४७) ★

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّاهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا ۚ قُلْ لِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ۗ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ ۚ وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۗ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝ قَدْ نَرَىٰ تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ ۖ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا ۚ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۗ وَإِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ۝ وَلَئِنْ أَتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ مَا تَبِعُوا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَا أَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۚ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ إِنَّكَ إِذًا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ۝ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ ۖ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ ۖ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۝ وَلِكُلٍّ وِجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيهَا ۖ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۚ أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمُ اللَّهُ جَمِيعًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

व. ला ● ● व. मं. ★ रु. १७/१ आ. ६

दूसरा पारः (सयक़ूलु)

सूरतुल् बक़रः (आयात १४२ से २५२)

अब मूर्ख लोग कहेंगे कि मुसलमान जिस क़िब्ले पर (पहले) थे (यानी बैतुल्मुक़द्दस) उससे इनके (काबे की तरफ़ को) मुड़ जाने का क्या कारण हुआ? (पैग़म्बर! तुम यह) जवाब दो कि पूर्व और पश्चिम (सब) अल्लाह ही का है। वह जिसको चाहता है सीधी राह चलाता § है। (१४२) और इसी तरह हमने तुमको एक आदिल (न्यायशील) उम्मत (गिरोह जो किसी पैग़म्बर के आधीन हो) बनाया है ताकि लोगों के मुक़ाबिले में तुम गवाह बनो और तुम्हारे मुक़ाबिले में पैग़म्बर गवाह बनें और (ऐ पैग़म्बर!) जिस क़िब्ले पर तुम थे (यानी बैतुलमुक़द्दस्) हमने उसको इसी मतलब से ठहराया था ताकि हमको मालूम हो जावे कि कौन-कौन पैग़म्बर के आधीन रहेगा और कौन उलटा फिरेगा, और यह बात अगरचे भारीहै लेकिन उन पर नहीं जिनको अल्लाह ने राह दिखा दी है। और ख़ुदा ऐसा नहीं कि तुम्हारा ईमान लाना अकारथ कर दे। ख़ुदा तो लोगों पर बड़ी कृपा रखनेवाला दयालु है।@ (१४३) (ऐ पैग़म्बर) तुम्हारे मुँह का आसमान की ओर बार-बार उठना हम देख रहे हैं, तो जो क़िब्ला तुम चाहते हो हम तुमको उसी की तरफ़ फेरे देते हैं। अब अपना मुँह मसजिदे हराम (काबा) की ओर फेर लो और (मुसलमानों) तुम लोग जहाँ भी हुआ करो अपना मुँह उसी की ओर किया करो। और जिन लोगों को किताब दी गई है, उनको मालूम है कि यह (क़िब्ला बदलना) ठीक है (और उनके परवरदिगार की ही ओर से है और जो वे कर रहे हैं, ख़ुदा उससे बेख़बर नहीं। (१४४) और (ऐ पैग़म्बर) जिन लोगों को किताब दी गई है, अगर तुम तमाम दलीलें उनके पास ले आओ, (तो भी) वह तुम्हारे क़िब्ले को न मानेंगे और न तुम्हीं उनके क़िब्ले को मानोगे। और न वह आपस में एक दूसरे के क़िब्ले को माननेवाले हैं। और तुमको जो ज्ञान मिल चुका है, अगर उसके बाद भी तुम इनकी इच्छाओं पर चले, तो ऐसी दशा में बेशक तुम भी अन्यायियों में गिने जाओगे।● (१४५) जिन लोगों को हमने किताब दी है, वह जिस तरह अपनी औलादों को पहचानते हैं (उसी तरह) तुम (मुहम्मद) को भी पहचानते हैं, और उनमें से कुछ लोग ख़ूब जान-बूझकर सच को छिपाते हैं।● (१४६) (हालाँकि) बेशक यह तुम्हारे परवरदिगार की ओर से हक़ (साबित हो चुका) है। तो कहीं सन्देह करनेवालों में से न हो जाना। (१४७) ★

● व. ला ● व. मं ★ रु. १७/१ आ ६

§ मदीना प्रस्थान से पहले मुहम्मद साहब (स०) व मुसलमान काबा की ओर ही मुँह कर के नमाज़ पढ़ते थे। मदीना आने पर जेरूशलम में 'बैतुलमुक़द्दस' की ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ते रहे जो यहूदियों और ईसाइयों का भी पवित्र स्थान था। अब फिर काबा की ओर मुँह करने का हुक्म ख़ुदा की ओर से होने पर यहूदी आक्षेप करने लगे कि क़िब्ले की दिशा ही बदल गई! इस पर यह आदेश हुआ कि अल्लाह का हुक्म प्रधान है; चाहे पूरब हो चाहे पच्छिम, सब उसी के हैं। @ यहूदी कहते थे कि अगर काबा ही मुसलमानों का सही क़िब्ला था तो इससे पहले बैतुलमुक़द्दस की ओर पढ़ी गई नमाज़ें बेकार गईं। इस पर कहा गया कि ख़ुदा किसी का ईमान लाना अकारथ नहीं करता।

व लिकुल्लिंव्विज्-हतुन् हुव मुवल्लीहा फ़स्तबिक़ुल्ख़ैराति त् ● अैन मा तकूनू यअ्ति बिकुमुल्लाहु जमीअन् त् अिन्नल्लाह अला कुल्लि शैअिन् क़दीरुन् (१४८) व मिन् हैसु ख़रज्त फ़वल्लि वज्हक शत्रल्-मस्जिदिल्हरामि त् व अिन्नहु लल्हक़्क़ु मिर्रब्बिक त् व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अम्मा तअ्मलून (१४९) व मिन् हैसु ख़रज्त फ़वल्लि वज्हक शत्रल्-मस्जिदिल्हरामि त् व हैसु मा कुन्तुम् फ़वल्लू वुजूहकुम् शत्रहु ला लिअल्ला यकून लिन्नासि अलैकुम् हुज्जतुन् क़् ला अिल्लल्लजीन जलमू मिन्हुम् क़् फ़ला तख़्शौहुम् वख़्शौनी क़् व लिअुतिम्म निअ्मती अलैकुम् व लअल्लकुम् तह्तदून ला ∴ (१५०) कमा अर्सल्ना फ़ीकुम् रसूलम् मिन्कुम् यत्लू अलैकुम् आयातिना व युज़क्कीकुम् व युअल्लि-मुकुमुल्किताब वल्हिक्मत व युअल्लिमुकुम्मालम् तकूनू तअ्लमून त् ∴ (१५१) फ़ज्कुरूनी अज्कुर्-कुम् वश्कुरूली व ला तक्फ़ुरूनि (१५२) ★ या अैयुहल्लजीन आमनुस्तअीनू बिस्सब्रि वस्सलाति त् अिन्नल्लाह मअस्साबिरीन (१५३) व ला तक़ूलू लिमैंयुक़्तलु फ़ी सबीलिल्लाहि अम्वातुन् त् बल् अह्याअुं व लाकिल्ला तश्अुरून (१५४) व लनब्लुवन्नकुम् बिशैअिम् मिनल्ख़ौफ़ि वल्जूअि व नक़्सिम्मिनल्-अम्वालि वल्अन्फ़ुसि वस्समराति त् व बश्शिरिस्साबिरीन ला (१५५) अल्लजीन अिजा असाबत् हुम्मुसीबतुन् ला क़ालू अिन्ना लिल्लाहि व अिन्ना अिलैहि राजिअून त् (१५६) अुलाअिक अलैहिम् सलवातुम्मिर्रब्बिहिम् व रह्मतुन् क़िफ़् व अुलाअिक हुमुल्मुह्तदून (१५७) अिन्नस्सफ़ा वल्मर्वत मिन् शआअिरिल्लाहि ज् फ़मन् हज्जल्बैत अविअ्तमर फ़ला जुनाह अलैहि अैंयत्तौवफ़ बिहिमा त् व मन् ततौवअ ख़ैरन् ला फ़अिन्नल्लाह शाकिरुन् अलीमुन् (१५८)

سیقول ۲ ۱۸ البقرة ۲

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ وَإِنَّهُ لَلْحَقُّ
مِنْ رَبِّكَ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ
وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ
شَطْرَهُ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ
فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي وَلِأُتِمَّ نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝
كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِنْكُمْ يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَ
يُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ۝
فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝ وَلَا
تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَٰكِنْ لَا
تَشْعُرُونَ ۝ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِنَ
الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ ۗ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ۝ الَّذِينَ إِذَا
أَصَابَتْهُمْ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ۝ أُولَٰئِكَ
عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ۝
إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ ۖ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ
اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا ۚ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ
اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ

منزل

व. नबी

मु. अि. मु. ता. ख. २

★ रु. १८/२ आ ५

हरएक के लिए दिशा है जिधर को (नमाज़ में) वह अपना मुँह करता है, (तो दिशा-भेद की परवा न करके) भलाइयों की तरफ़ लपको। तुम कहीं भी हो, अल्लाह तुम सबको खींच बुलायेगा।♦ बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर (शक्तिशाली) है।(१४८) (ऐ पैग़म्बर!) तुम कहीं से भी निकलो, अपना मुँह इज़्ज़तवाली मसजिद (काबे) की तरफ़ कर लिया करो। बिला शक यह तुम्हारे पालनकर्ता द्वारा निश्चित है। अल्लाह तुम्हारे कामों से बेख़बर नहीं है।(१४९) (ऐ पैग़म्बर!) तुम कहीं से भी निकलो अपना मुँह इज़्ज़तवाली मसजिद की तरफ़ कर लिया करो और तुम लोग जहाँ कहीं हो उसी की तरफ़ अपना मुँह करो; ताकि लोगों को तुम्हारे ख़िलाफ़ हुज्जत की जगह न रहे।§ सिवा उनके जो उनमें से अन्यायी हैं, सो तुम उनसे मत डरो और हमारा ही डर रखो। ताकि मैं अपनी मेहरबानी तुम पर पूरी करूँ। और ताकि तुम सीधी राह पर रहो।(१५०) जैसा हमने तुम्हारे बीच तुम्हीं में का एक रसूल भेजा, वह हमारी आयतें तुमको पढ़कर सुनाता और तुमको पवित्र करता और तुमको किताब और समझ (की बातें) सिखाता‡ और तुमको ऐसी-ऐसी बातें बताता है, जो (पहले) तुम जानते न थे।(१५१) तो तुम मेरी याद में लगे रहो। मैं भी तुम्हें याद रखूँगा और मेरा इहसान मानते रहो, और नाशुक्री न करो।(१५२)★

ऐ ईमानवालो! सब्र और नमाज़ से मदद लो। बेशक अल्लाह संतोषियों के साथ है।(१५३) और जो लोग अल्लाह की राह पर मारे जायँ, उनको मरा हुआ न कहना। (वह मरे नहीं) बल्कि जिन्द: हैं; मगर तुम नहीं जान पाते।(१५४) और बेशक हम थोड़े डर से और भूख से और माल, जान और पैदावार के नुक़सान से तुम्हारी जाँच करेंगे और ऐ पैग़म्बर! संतोषियों को ख़ुशख़बरी सुना दो।(१५५) यह लोग, जब इन पर मुसीबत आ पड़ती है, तो बोल उठते हैं कि बेशक हम तो (मय दौलत-औलाद) अल्लाह के ही हैं और हम उसी की तरफ़ लौटकर जानेवाले हैं।(१५६) यही लोग हैं, जिन पर परवरदिगार की मेहरबानी और इनायतें हैं और यही सच्चे मार्ग पर हैं।(१५७) (पहाड़) सफ़ा‡ और मर्वह‡ अल्लाह की निशानियों में से हैं। तो जो व्यक्ति काबे का हज या उमर: करे उस पर इन दोनों के बीच फेरे करने में कुछ गुनाह नहीं और जो ख़ुशदिली से नेक काम करे, तो अल्लाह बड़ा क़द्रदान और सब कुछ जाननेवाला है।(१५८)

म. न. बी. स.

★ रु. १८ / र / आ ५

♦ बात यों है कि हिजरत के बाद रसूल स० लगभग डेढ़ साल तक यहूदियों के क़िब्ले बैतुलमुक़द्दस की ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ते रहे। बाद में काब: की ओर मुँह करने का हुक्म हुआ। इस पर यहूदी एतराज़ करने लगे। इस लिए यह आयत उतरी कि इस बात में झगड़ना कि हमारा क़िब्ला श्रेष्ठ है या तुम्हारा, या हम पूरब की तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ते हैं तुम पच्छिम की तरफ़—यह सब कोरी जिहालत है। श्रेष्ठता तो नेकअमली (सदाचार) में है। उसीके अनुसार आख़िरत में सब को एक जगह जमा होना है। § यहूद तो मुसलमानों को यह इल्ज़ाम देते थे कि वे हमारे दीन को तो नहीं मानते हैं लेकिन नमाज़ हमारे ही क़िब्ले की तरफ़ मुँह करके पढ़ते हैं; दावा तो इबराहीम के रास्ते पर चलने का करते हैं मगर उनके क़िब्ले की तरफ़ नमाज़ नहीं पढ़ते। इसलिए काब: की ओर नमाज़ पढ़ने की हिदायत से यहूदियों का एतराज़ समाप्त हो गया ‡ स म की बातों से मतलब हलाल-हराम, उचित-अनुचित की हिदायतों से है। ‡ सफ़ा और मर्वह दो पहाड़ों के नाम हैं। एक समय ईश्वर की आज्ञा से हज़रत इबराहीम अ० अपनी बीबी हज़रत हाजिर: और दूधपीते बच्चे इस्माईल को छोड़कर चले गये। बच्चे को प्यासा देख हज़रत हाजिर: इन्हीं पहाड़ों पर पानी की तलाश में दौड़ती थीं। ईश्वर की कृपा से एक चश्मा निकल आया, जो 'ज़मज़म' के नाम से प्रसिद्ध है। इन्हीं पर्वतों पर मुसलमान आज भी फेरे देते हैं।

अिन्नल्लजीन यक्तुमून मा अन्ज़ल्ना मिनल्बैयिनाति वल्हुदा मिम्बअ़्दि मा बैयन्नाहु लिन्नासि फ़िल्किताबि ला अुलाअिक यल्अ़नुहुमुल्लाहु व यल्अ़नुहुमुल्लाअ़िनून ला (१५९) अिल्लल्लजीन ताबू व अस्लहू व बैयनू फ़अुलाअिक अतूबु अ़लैहिम् ज व अनत्तौवाबुर्रहीमु (१६०) अिन्नल्लजीन कफ़रू व मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् अुलाअिक अ़लैहिम् लअ़्नतुल्लाहि वलमलाअिकति वन्नासि अज्मअ़ीन ला (१६१) ख़ालिदीन फ़ीहा ज ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुमुल्अ़जाबु व ला हुम् युन्जरून (१६२) व अिलाहुकुम् अिलाहुँ - वाहिदुन् ज ला अिलाह अिल्लाहु-वर्रहमानुर्रहीमु (१६३) ★ अिन्न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि वल्फ़ुल्किल्लती तज्री फ़िल्बह्रि बिमा यन्फ़अ़ुन्नास व मा अन्ज़लल्लाहु मिनस्समाअि मिम्माअिन् फ़अह्या बिहिल्अर्ज़ बअ़्द मौतिहा व बस्स फ़ीहा मिन् कुल्लि दाब्बतिन् त ०व तस्रीफ़िर्रियाहि वस्सहाबिल् - मुसख़्ख़रि बैनस्समाअि वल्अर्ज़ि लआयातिल्लिक़ौमीं-यअ़्क़िलून (१६४) व मिनन्नासि मैंयत्तख़िजु मिन् दूनिल्लाहि अन्दादैंयुहिब्बूनहुम् कहुब्बिल्लाहि त वल्लजीन आमनू अशद्दु हुब्बल्लिल्लाहि त व लौ यरल्लजीन ज़लमू अिज् यरौनल्अ़जाब ला अन्नल्क़ूवत लिल्लाहि जमीअ़न् ला ०व अन्नल्लाह शदीदुल्अ़जाबि (१६५) अिज् तबर्र-अल्लजीनत्तुबिअ़ू मिनल्लजीनत्तबअ़ू वरअवुल्अ़जाब व तक़त्तअ़त् बिहिमुल्अस्बाबु (१६६) व क़ालल्लजीनत्तबअ़ू लौ अन्न लना कर्रतन् फ़नतबर्रअ मिन् हुम् कमा तबर्रअ़ू मिन्ना त कजालिक युरीहिमुल्लाहु अअ़्मालहुम् हसरातिन् अ़लैहिम् त व मा हुम् बिख़ारिजीन मिनन्नारि (१६७) ★

सيقول ٢ ١٩ البقرة ٢

وَالْهُدٰى مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتٰبِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ
اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَبَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ
اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۞ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا
وَهُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ
اَجْمَعِيْنَ ۙ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ
يُنْظَرُوْنَ ۞ وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۞
اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَ
الْفُلْكِ الَّتِيْ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ
السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ
دَآبَّةٍ ۠ وَّتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۞ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ وَلَوْ
يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّ
اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ۞ اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْا وَرَاَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ۞ وَقَالَ الَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ
يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ

منزل

★ रु. १९ । ३ आ ११

★ रु. २० । ४ आ ४

हमने खुली हुई निशानियाँ और हिदायतें उतारीं और उन लोगों के लिए किताब (तौरात) में हमने साफ़-साफ़ समझा दिया। इसके बाद भी जो उनको छिपाये तो बेशक यही लोग हैं जिन पर अल्लाह लानत करता है और (दूसरे) लानत करनेवाले (भी) उन पर लानत करते हैं†।(१५९) मगर जिन्होंने तौबः की और (अपनी हालत को) सम्भाल लिया और (जो छिपाया था साफ़-साफ़) बयान कर दिया तो यही लोग हैं, जिनकी तौबः मैं मानता हूँ और मैं क्षमा करनेवाला बेहद मेहरबान हूँ।(१६०) बेशक जो लोग इन्कार करते रहे और इन्कारी की ही हालत में मर गये, यही हैं जिन पर अल्लाह की और फ़रिश्तों की और आदमियों की सब की लानत है।(१६१) वह हमेशा इसी (हालत) में रहेंगे। इनकी न तो सज़ा ही हल्की की जायगी और न मुहलत ही मिलेगी।(१६२) तुम्हारा पूजित एक अल्लाह है, उसके सिवा कोई पूजित नहीं। वही बड़ा दया करनेवाला बेहद मेहरबान है।(१६३)★

★ रु. १६ | ३ आ ११

बेशक आसमान और ज़मीन के पैदा करने में और रात और दिन के आने-जाने में और कश्तियों में जो लोगों के फ़ायदे की चीज़ें समुद्र में लेकर चलती हैं और मेह में जिसको अल्लाह आकाश से बरसाता है, फिर उसके ज़रीए ज़मीन को उसके मरे (उजड़े) पीछे ज़िन्दः करता (लहलहाता) है और हर क़िस्म के जानवरों में जो अल्लाह ने ज़मीन की सतह पर फैला रखे हैं और हवाओं के फेरने में, और बादल में जो (अल्लाह के हुक्म से) आकाश और धरती के बीच आधीन रहते हैं, (इन सब में) उन लोगों के लिए जो समझ रखते हैं (अल्लाह की क़ुदरत की) निशानियाँ हैं।ꣳ(१६४) और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं, जो अल्लाह के सिवा (और को भी) बराबर (पूजित) ठहराते हैं। जैसी मुहब्बत अल्लाह से रखनी चाहिये वैसी मुहब्बत उनसे रखते हैं।‡ और जो ईमानवाले हैं, उनको तो सबसे बढ़कर अल्लाह ही से मुहब्बत होती है। क्या अच्छा होता कि इन अन्यायियों को सुझाई दे जाता जो उस समय सुझाई देगा जब अज़ाब उन के सामने होगा कि सारी ताक़त अल्लाह के ही लिए है और यह कि अल्लाह कड़ा अज़ाब देनेवाला है।(१६५) उस वक़्त अगुवाकार अपने पीछे चलनेवालों से अलग हो जायेंगे और (अपनी आँखों) सब अज़ाब देख रहे होंगे। और उनके आपसी सम्बन्ध टूट-टाट जायँगे।(१६६) और पीछे चलनेवाले कह उठेंगे कि क्या अच्छा होता कि हमको फिर लौटकर दुनिया में जाना मिले, तो जैसे यह (अगुवाकार) हमसे दस्तबरदार हो गये, उसी तरह हम भी उनसे (किनारा कर जायें)§। यों अल्लाह उनके काम (उनके सामने) लायेगा कि उनको हसरत होगी और वे आग (नरक) से कभी निकल न सकेंगे।(१६७)★

★ रु. २० | ४ आ ४

† यह उन लोगों के सम्बन्ध में कहा गया है जिनको (खुदाई किताबें) ईश्वरीय ज्ञान पहुँचा और फिर भी सांसारिक लाभ में भटक कर वे लोग उन किताबों द्वारा दिखाये गये मार्ग को भूल कर गुमराह हो गये। उन खुदाई किताबों की हिदायतों को तोड़-मरोड़ कर अपने स्वार्थों के अनुसार ढालने लगे। उन पर खुदा लानत करता है। ꣳ मक्के के काफ़िरों का कहना था कि वे ३६० खुदा रखते थे। इस आयत में एक ईश्वर द्वारा संसार की रचना और व्यवस्था (निज़ाम) की महिमा का बखान करते हुये समझाया गया है कि वे ३६० मिलकर भी एक शहर तक का बन्दोबस्त नहीं कर पाते। ‡ सर्वशक्तिमान ईश्वर के समान ही वे फ़रिश्तों या बुतों को भी पूज्य मानते और उनसे वैसी ही प्रीति रखते थे जैसी अल्लाह से रखना चाहिये। § आख़िरत के दिन मुशरिकों के गुरू और पेशवा अपने पीछे चलनेवालों से अलग हो जाँयगे। और एक ईश्वर के अलावा दूसरों को भी पूज्य बनाने व कुफ़्र करने के कारन दोज़ख की आग में वे पीछे चलनेवाले लावारिस भुगत रहे होंगे और पछता रहे होंगे कि नाहक़ पिछली ज़िन्दगी में हम इन धोखेबाज़ ग़लत रहनुमाओं के पीछे चले। काश अब दूसरी ज़िन्दगी मिले तो हम भी ऐसे गुरुओं से अपने को दूर रखें और एक अल्लाह की ही बन्दगी करें।

या' अैयुहन्नासु कुलू मिम्मा फ़िल्अर्ज़ि हलालन् तैयिबन् ज् सला ०व ला तत्तबिअ़ू ख़ुतुवातिश्शैतानि त् अिन्नहु लकुम् अ़दूवुम्मुबीनुन् (१६८) अिन्नमा यअ्मुरुकुम् बिस्सू'अि वल्फ़हूशा'अि व अन् तक़ूलू अ़लल्लाहि मा ला तअ़्लमून (१६९) व अिजा क़ील लहुमुत्तबिअ़ू मा' अन्ज़लल्लाहु क़ालू बल् नत्तबिअ़ु मा' अल्फ़ैना अ़लैहि आबा'अना त् अवलौ कान आबा'अुहुम् ला यअ़्क़िलून शैऔंव ला यह्तदून (१७०) व मसलुल्लज़ीन कफ़रू कमसलिल्लज़ी यन्अ़िक़ु बिमा ला यस्मअ़ु अिल्ला दुआ'औंव निदा'अन् त् सुम्मुम्-बुक्मुन् अ़ुम्युन् फ़हुम् ला यअ़्क़िलून (१७१) या' अैयुहल्लजीन आमनू कुलू मिन् तैयिबाति मा रज़क़्ना कुम् वश्कुरू लिल्लाहि अिन् कुन्तुम् अीयाहु तअ़्बुदून (१७२) अिन्नमा हूर्रम अ़लैकुमुल्मैतत व्दम व लह्मल्ख़िन्ज़ीरि व मा' अुहिल्ल बिही लिग़ैरिल्लाहि ज् फ़मनिज़्तुर्र ग़ैर बाग़िंव्व ला आदिन् फ़ला' अिस्म अ़लैहि त् अिन्नल्लाह ग़फ़ूरुर्रहीमुन् (१७३) अिन्नल्लजीन यक्तुमून मा' अन्ज़लल्लाहु मिनल् - किताबि व यश्तरून बिही समनन् क़लीलन् ला अुला'अिक मा यअ्कुलून फ़ी बुतूनिहिम् अिल्लन्नार व ला युकल्लिमुहुमुल्लाहु यौमल् - क़ियामति व ला युज़क्कीहिम् ज् सला व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीमुन् (१७४) अुला'अिकल्लजीनश्तर-वुज़्ज़लालत बिल्हुदा वल्अ़ज़ाब बिल्मग़्फ़िरति ज् फ़मा' अस्बर हुम् अ़लन्नारि (१७५) ज़ालिक बिअन्नल्लाह नज़्ज़लल्किताब बिल् हूक़्क़ि त् व अिन्नल्लजीनख़्तलफ़ू फ़िल्किताबि लफ़ी शिक़ाक़िम् - बअ़ीदिन् (१७६) ★ ●

سیقول ۲ ۲۰ البقرة ۲

النار ۞ يايها الناس كلوا مما في الارض حللا طيبا ولا تتبعوا خطوت الشيطن انه لكم عدو مبين ۞ انما يامركم بالسوء والفحشاء وان تقولوا على الله ما لا تعلمون ۞ واذا قيل لهم اتبعوا ما انزل الله قالوا بل نتبع ما الفينا عليه اباءنا اولو كان اباؤهم لا يعقلون شيئا ولا يهتدون ۞ ومثل الذين كفروا كمثل الذي ينعق بما لا يسمع الا دعاء ونداء صم بكم عمي فهم لا يعقلون ۞ يايها الذين امنوا كلوا من طيبت ما رزقنكم واشكروا لله ان كنتم اياه تعبدون ۞ انما حرم عليكم الميتة والدم ولحم الخنزير وما اهل به لغير الله فمن اضطر غير باغ ولا عاد فلا اثم عليه ان الله غفور رحيم ۞ ان الذين يكتمون ما انزل الله من الكتب ويشترون به ثمنا قليلا اولئك ما ياكلون في بطونهم الا النار ولا يكلمهم الله يوم القيمة ولا يزكيهم ولهم عذاب اليم ۞ اولئك الذين اشتروا الضللة بالهدى والعذاب بالمغفرة فما اصبرهم على النار ۞ ذلك بان الله نزل الكتب بالحق وان الذين اختلفوا في الكتب لفي شقاق بعيد ۞ ليس البر ان تولوا وجوهكم قبل المشرق والمغرب

منزل

★ रु० २१ । ५ आ० ९ ● रुबअ १ । ४

लोगो ! ज़मीन में जो चीज़ें हलाल (भोग्य) और शुद्ध हैं, उनमें से खाओ और शैतान के रास्ते की पैरवी न करो, वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है।§(१६८) वह तो तुम्हें बदी और बेशर्मी ही का हुक्म देगा, और यह कि बे समझे-बूझे तुम अल्लाह पर झूठ बांधों।(१६९) जब उनसे कहा जाता है कि जो अल्लाह ने उतारा है, उस पर चलो तो जवाब देते हैं—नहीं जी, हम तो उसी पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है। भला अगर उनके बाप दादा कुछ भी नहीं समझते थे और न सच्चे मार्ग पर चलते थे, (तो भी ये उन्हीं की पैरवी किये चले जायँगे?)।@(१७०) और जो लोग काफ़िर हैं उनकी मिसाल उस शख़्स-जैसी है, जो ऐसे जानवर के पीछे पड़ा चिल्ला रहा है जो सिवा बुलाने-पुकारने के और कुछ नहीं सुनता। बहरे गूँगे अन्धे की तरह उनको भी समझ नहीं।(१७१) ऐ ईमानवालो ! मैंने जो तुमको रोज़ी और पाक चीज़ें दे रखी हैं, उनमें खाओ पिओ और अगर तुम अल्लाह की बन्दगी का दम भरते हो, तो उसका इहसान मानो। (१७२) उसने तो बस मरा हुआ (जानवर)† और ख़ून‡ और सुअर का गोश्त और वह जानवर जिसको अल्लाह के सिवाय किसी और के लिए भेंट किया जाय, तुम पर हराम किया है। फिर जो भूख से मजबूर हो परन्तु बेहुक्मी (अवज्ञा) करनेवाला और हद से बढ़ जानेवाला न हो, तो उस पर पाप नहीं।♦ बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला बेहद मेहरबान है।(१७३) जो लोग उन हुक्मों को जो अल्लाह ने अपनी किताब (तौरात) में उतारे, छुपाते हैं और उसके बदले थोड़ा सा बदला (लाभ) हासिल करते हैं, वह लोग बेशक और कुछ नहीं मगर अपने पेटों में अंगारे भरते हैं और क़ियामत के दिन अल्लाह उनसे बात भी तो नहीं करेगा और न उनको पाक करेगा और उनके लिए दुखदाई दण्ड है।(१७४) यही लोग हैं जिन्होंने (लोक में) सच्ची राह के बदले भटकना मोल लिया है और (परलोक में) माफ़ी के बदले सज़ा। तो यह लोग (जहन्नम की) आग को सहने के लिए कैसे जुर्रती हैं।(१७५) यह (सज़ा) इसलिए कि किताब (तौरात) को वास्तव में अल्लाह ने ठीक-ठीक उतारा और जिन लोगों ने उस किताब के हुक्मों में भेद डाला, वह ज़िद में बहुत भटक गये हैं।(१७६) ★

★ रु. २१/५ आ ६ रु. बू. १/४

§ शैतान हमेशा इन्सान को गुमराह करता है। जो चीज़ें भोग्य (हलाल) हैं वह हमें अभोग्य (हराम) लगने लगती हैं और जो हराम हैं वह हलाल। सत्-असत् (भले-बुरे) का ज्ञान (विवेक) हमें नहीं रहता। इस आयत में हमें उस शैतान के बहकावे से सदैव बचे रहने को सचेत किया गया है। @ बाप-दादा क़ाबिल ताज़ीम हैं। लेकिन जब उनकी सीख या उनका रास्ता अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ हो तब उनके रास्ते पर चलना नादानी है। अल्लाह के बताए रास्ते के अलावा किसी दूसरे रास्ते पर चलना कभी सही नहीं। लेकिन आदम की सन्तान शैतान के बहकावे में आकर ईश्वर की भेजी हुई आज्ञाओं और सच्चे रास्ते को भूल कर कहने लगते हैं कि नहीं बाप-दादों का जो रास्ता है वही धर्म है। भला कुछ लोगों के यहाँ मरे हुये जानवरों का मांस कई पुश्तों से खाया जाता हो तो क्या वह मुर्दे का मांस खाने का बुरा रवाज़ इसी लिए नहीं छोड़ेंगे की उनके बाप दादा भी मुर्दे का मांस खाते चले आये हैं। 'बाप दादा की चाल पर चलने को ही धर्म मानना' यह बद्अक़्ली दुनिया में हर तरफ़ देखने को मिले गी। † वह जानवर जो बिना वध किये गये अपनी मौत से ख़ुद मर जाय। उस मुर्दे जानवर का मांस खाना हराम है। ‡ वध करने के समय जो ख़ून बहता है। अरब में उस समय ख़ून को जमा कर व सुखा कर भी खाने के काम में लाया जाता था। बहरहाल ख़ून सब तौर पर हराम है। वह क़ुर्बानी जो अल्लाह के अलावा किसी और की पूजा में या मन्नत में की जाय या किसी के नाम पर मन्नत माने हुये जानवर की क़ुर्बानी किसी तरह इस्लाम में हलाल नहीं। ♦ अल्लाह की बेहुक्मी न करके, सिर्फ़ भूख से लाचार होकर जो महज़ जान बचाने के लिए थोड़ी सी यह निषिद्ध (हराम) चीज़ ले ले तो उस को गुनाह न होगा।

लैसल्बिर्र अन् तुवल्लू वुजूहकुम् क़िबलल्मश्रिक़ि वल्मग़्रिबि व लाकिन्नल्बिर्र मन् आमन बिल्लाहि वल्यौमिल्आख़िरि वल्मलाअिकति वल्किताबि वन्नबीयीन ज् व आतल्माल अ़ला हुब्बिही ज़विल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीन वब्नस्सबीलि ला वस्साअिलीन व फ़िर्रिक़ाबि ज् व अक़ामस्सलात व आतज़्ज़कात ज् वल्मूफ़ून बिअ़ह्दिहिम् अिज़ा आ़हदू ज् वस्साबिरीन फ़िल्-बअ्साअि वज़्ज़र्राअि व हीनल्बअ्सि त् अुलाअिकल्लजीन सदक़ू त् व अुलाअिक हुमुल्मुत्तक़ून (१७७) या अैयुहल्लजीन आमनू कुतिब अ़लैकुमुल्क़िसासु फ़िल्क़त्ला त् अल्हुर्रु बिल्हुर्रि वल्अ़ब्दु - बिल्अ़ब्दि वल्अुन्सा बिल्अुन्सा त् फ़मन् अुफ़िय लहू मिन् अख़ीहि शैअुन् फ़त्तिबाअुम् - बिल्मअ़रूफ़ि व अदाअुन् अिलैहि बिअिह्सानिन् त् ज़ालिक तख़्फ़ीफ़ुम् - मिर्रब्बिकुम् व रह्मतुन् त् फ़मनिअ्तदा बअ़्द ज़ालिक फ़लहू अ़ज़ाबुन् अलीमुन् (१७८) व लकुम् फ़िल्क़िसासि हयातुँय्या अुलिल्अल्बाबि लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून (१७९) कुतिब अ़लैकुम् अिज़ा हज़र अह़दकुमुल्मौतु अिन् तरक ख़ैरन् ज् स़ला निʼअ़ल्-वसीयतु लिल्वालिदैनि वल्अक़्रबीन बिल्मअ़रूफ़ि ज् हक़्क़न् अ़लल्मुत्तक़ीन त् (१८०) फ़मम्बद्दलहू बअ़्द मा समिअ़हू फ़अिन्नमा अिस्मुहू अ़लल्लजीन युबद्दिलूनहू त् अिन्नल्लाह समीअुन् अ़लीमुन् त् (१८१) फ़मन् ख़ाफ़ मिम्मूसिन् जनफ़न् औ अिस्मन् फ़अस्लह बैनहुम् फ़ला अिस्म अ़लैहि त् अिन्नल्लाह ग़फ़ूरुर्रहीमुन् (१८२) ★ या अैयुहल्लजीन आमनू कुतिब अ़लैकुमुस्सियामु कमा कुतिब अ़लल्लजीन मिन् क़ब्लिकुम् लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून ला (१८३)

وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ
وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَ
الْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِى الرِّقَابِ ۚ وَاَقَامَ
الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَ
الصّٰبِرِيْنَ فِى الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
صَدَقُوْا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ
عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِى الْقَتْلٰى ؕ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَ
الْاُنْثٰى بِالْاُنْثٰى ؕ فَمَنْ عُفِىَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ شَىْءٌ فَاتِّبَاعٌۢ
بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ؕ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ
وَرَحْمَةٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَلَكُمْ
فِى الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝ كُتِبَ
عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرًا ۖۚ اۨلْوَصِيَّةُ
لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ۝
فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا
فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ

ع ٢٢

रु. २२ ६ आ

भलाई यही नहीं कि तुम अपना मुँह पूर्व या पश्चिम की तरफ़ कर लो; बल्कि भलाई तो यह है× कि अल्लाह और क़ियामत और फ़रिश्तों और (आकाशी) किताबों और पैग़म्बरों पर ईमान लाये और माल अल्लाह की मुहब्बत में सम्बन्धियों और अनाथों और दुखिया लोगों (मुहताजों), मुसाफ़िरों और माँगनेवालों पर ख़र्च करे और (ग़ुलामी वग़ैरह की क़ैद से लोगों की) गर्दनों (के छुड़ाने) में दे और नमाज़ क़ायम रखे और ज़कात देता रहे और जब (किसी) बात का) इक़रार कर ले, तो अपनी प्रतिज्ञा पूरी करे और तंगी में और मुसीबत और लड़ाई के वक़्त दृढ़ रहे, यही लोग हैं जो सच्चे उतरे और यही परहेज़गार (संयमी) हैं।(१७७) ऐ ईमानवालो! जो लोग मारे जावें, उनमें तुमको क़िसास (जान के बदले जान) का हुक्म दिया जाता है। आज़ाद के बदले आज़ाद और ग़ुलाम के बदले ग़ुलाम, और औरत के बदले औरत। फिर जिस (हत्यारे) को (बध किये हुए की हत्या के बदले में) उसके भाई द्वारा कोई अंश क्षमा कर दिया जाय, तो हत्यारे को चाहिये कि क़त्ल किये प्राणी के वारिसों को ख़ून का बदला उचित तरीक़े पर ख़ूबी के साथ अदा कर दे।‡ यह (हुक्म ख़ूनबहा) तुम्हारे पालनेवाले की तरफ़ से तुम्हारे हक़ में आसानी और मेहरबानी है। फिर इसके बाद जो ज़ियादती करे, तो उसके लिए दुखदाई अज़ाब है।(१७८) और बुद्धिमानो! ख़ून के बदले के लेन-देन में तुम्हारे लिए बड़ी ज़िन्दगी है ताकि तुम (ख़ून बहाने से) बचे रहो।§(१७९) तुमको हुक्म दिया जाता है कि जब तुममें से किसी के सामने मौत आ पहुँचे और वह कुछ माल छोड़नेवाला हो तो माता-पिता और सम्बन्धियों के लिए वाजिबी तौर पर वसीयत करे। जो (अल्लाह से) डरते हैं, उन पर (उनके अपनों का यह एक) हक़ है।†(१८०) फिर जो वसीयत के सुने पीछे उसे कुछ का कुछ कर दें तो उसका पाप उन्हीं लोगों पर है, जो वसीयत को बदलें। बेशक अल्लाह (सब) सुनता जानता है।(१८१) और जिसको वसीयत करनेवाले की तरफ़ से (किसी ख़ास आदमी की) तरफ़दारी या (किसी की) हक़तलफ़ी का सन्देह हुआ हो और वह वारिसों में मेल करा दे, तो (ऐसी सूरत में वसीयत के बदलने का) उस पर कुछ पाप नहीं। बेशक अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला बेहद मेहरबान है।(१८२)★

★ रु. २२ | ६ आ ६

ईमानवालो! जिस तरह तुमसे पहले किताबवालों पर रोज़ः रखना फ़र्ज़ (अनिवार्य) था◎, तुम पर भी फ़र्ज़ किया गया, ताकि अजब नहीं तुम पर्हेज़गार बन जाओ।(१८३)

× नमाज़ के लिए किसी एक दिशा को ईश्वर की आज्ञा से क़ायम रखना ठीक है। लेकिन उस दिशा की ओर मुँह करना या ऐसी ही दूसरी रसमों (Formalities) पर चलना ही सिर्फ़ भलाई नहीं है। सच्ची भलाई तो तब है जब इस आ. १७७ की हिदायतों पर पूरा अमल किया जाय। ‡ जीवहत्या के दण्ड हैं—या तो हत्यारे को भी मार डाला जाय या उससे कुछ धन ले लिया जाय और उसकी जान न ली जाय; लेकिन धन उसी वक़्त लिया जा सकता है जब मरे प्राणी के वारिस ख़ुशी-ख़ुशी मंज़ूर करें। § जीवहत्या के लिए निर्धारित इस दण्ड विधान (क़िसास) में ईश्वर की ओर से तुम्हारे लिए बड़ी भलाई है। इस पर पूरी तौर पर अमल करने से ख़ून-ख़राबा और हत्या ख़त्म हो जायगी, और गुनहगार के बदले बेगुनाह को न भुगतना पड़ेगा। शहज़ोर-कमज़ोर को सज़ा मिलने में बराबर का मौक़ा है। हुक्म ख़ूनबहा के अनुसार ख़ून का बदला अदा हो जाने पर बध किए हुये प्राणी के वारिस और बधिक—ये दोनों फिर एक दूसरे से दुश्मनी न अपनावें। † वसीयत का यह हुक्म संपत्ति के बटवारे के हुक्म उतरने से पहले था। सूरतुन्निसाअ के दूसरे रुकूअ के उतरने पर जब लड़के लड़की व दूसरे वारिसों के हक़ों की शरीअत नाज़िल होगई तब मनमानी वसीयत करने की बाबत फिर इस हुक्म की ज़ुरूरत नहीं रही। हाँ झगड़ा बचाने को क़र्ज़ और लेन-देन की वसीयत अब भी मुनासिब है। ◎ इसके यह माने नहीं कि इस्लाम से पहले रोज़ों के दिन, वक़्त और तरीक़ा सब ऐसे ही थे। मतलब यह कि रोज़ः रखने का चलन पहले भी था।

अैयामम्मअ़्दूदातिन् त् फ़मन् कान मिन्कुम् मरीज़न् औ अ़ला सफ़रिन् फ़अ़िद्दतुम्मिन् अैयामिन् उख़र त् व अ़लल्लजीन युतीक़ूनहु फ़िद्यतुन् तआ़मु मिस्कीनिन् त् फ़मन् ततौवअ़ ख़ैरन् फ़हुव ख़ैरुल्लहु त् व अन् तसूमू ख़ैरुल्लकुम् अिन् कुन्तुम् तअ़्लमून (१८४) शह्रु रमज़ानल्लजी उन्ज़िल फ़ीहिल्क़ुर्आनु हुदल्लिन्नासि व बैयिनातिम् - मिनलहुदा वल्फ़ुर्क़ानि ज् फ़मन् शहिद मिन्कुमुश्शह्र फ़ल्यसुम्हु त् व मन् कान मरीज़न् औ अ़ला सफ़रिन् फ़अ़िद्दतुम्मिन् अैयामिन् उख़र त् युरीदुल्लाहु बिकुमुल्-युस्र व ला युरीदु बिकुमुल् - अ़ुस्र ज् व लितुक्मिलुल्अ़िद्दत व लितुकब्बिरुल्लाह अ़ला मा हदाकुम् व लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (१८५) व अिजा सअलक अ़िबादी अ़न्नी फ़अिन्नी क़रीबुन् त् उजीबु दअ़्वतद्दाअ़ि अिजा दआ़नि ला फ़ल्यस्तजीबूली वल्युअ्मिनू बी लअ़ल्लहुम् यर्शुदून (१८६) उहिल्ल लकुम् लैलतस्सियामिर्रफ़सु अिला निसा'अिकुम् त् हुन्न लिबासुल्लकुम् व अन्तुम् लिबासुल्लहुन्न त् अ़लिमल्लाहु अन्नकुम् कुन्तुम् तख़्तानून अन्फ़ुसकुम् फ़ताब अ़लैकुम् व अ़फ़ा अ़न्कुम् ज् फ़ल्आन बाशिरू हुन्न वब्तग़ू मा कतबल्लाहु लकुम् त् व कुलू वश्रबू हत्ता यतबैयन लकुमुल्ख़ैतुल् - अब्यज़ु मिनल्ख़ैतिल् - अस्वदि मिनल्फ़ज्रि स् सुम्म अतिम्मुस्सियाम अिलल्लैलि ज् व ला तुबाशिरू हुन्न व अन्तुम् आ़किफ़ून ला फ़िल्मसाजिदि त् तिल्क हुदूदुल्लाहि फ़ला तक़्रबूहा त् कजालिक युबैयिनुल्लाहु आयातिहं लिन्नासि लअ़ल्लहुम् यत्तक़ून (१८७)

سیقول ٢ ٢٢ البقرة ٢

من قبلكم لعلكم تتقون ۝ ايامًا معدودٰت فمن كان
منكم مريضًا او على سفرٍ فعدة من ايامٍ اخر وعلى الذين
يطيقونه فدية طعام مسكين فمن تطوع خيرًا فهو خير
له وان تصوموا خير لكم ان كنتم تعلمون ۝ شهر
رمضان الذى انزل فيه القرآن هدى للناس وبينٰت
من الهدى والفرقان فمن شهد منكم الشهر فليصمه
ومن كان مريضًا او على سفرٍ فعدة من ايامٍ اخر
يريد الله بكم اليسر ولا يريد بكم العسر ولتكملوا
العدة ولتكبروا الله على ما هدٰكم ولعلكم تشكرون ۝
واذا سالك عبادى عنى فانى قريب اجيب دعوة الداع
اذا دعان فليستجيبوا لى وليؤمنوا بى لعلهم يرشدون ۝
احل لكم ليلة الصيام الرفث الى نسائكم هن لباس
لكم وانتم لباس لهن علم الله انكم كنتم تختانون
انفسكم فتاب عليكم وعفا عنكم فالٰن باشروهن وابتغوا
ما كتب الله لكم وكلوا واشربوا حتى يتبين لكم الخيط
الابيض من الخيط الاسود من الفجر ثم اتموا الصيام
الى اليل ولا تباشروهن وانتم عٰكفون فى المسٰجد تلك

منزل ١

वह भी गिनती के चन्द रोज़ हैं। इस पर भी जो शख़्स तुममें से बीमार हो या सफ़र में हो, तो दूसरे दिनों में रोज़ें रख कर गिनती पूरी कर दे और जिनको रोज़: की बर्दाश्त मुश्किल है उनको इजाज़त है कि फ़िदय:@ दे दें और उन पर एक रोज़े का बदला एक दीन को भोजन देना है और जो शख़्स ख़ुशी से (ज़्याद:) नेकी करना चाहे, तो यह उसके हक़ में ज्यादा भलाई है और समझो तो रोज़: रखना ही तुम्हारे हक़ में भलाई है।(१८४) रमज़ान (रोज़ों) का महीना है जिसमें अल्लाह की तरफ़ से क़ुर्आन उतरा है और क़ुर्आन लोगों को राह दिखानेवाला है और (उसमें) हिदायत और बुराई और भलाई में अन्तर करने की तमीज़ के खुले (स्पष्ट) हुक्म मौजूद हैं, तो तुममें से जो शख़्स इस महीने में मौजूद हो,तो चाहिए कि इस महीने के रोज़े रखे और जो बीमार हो या यात्रा में हो☼ तो दूसरे दिनों में छूटे हुए रोज़े रख कर गिनती पूरी करना चाहिये। अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी करना चाहता है और तुम्हारे साथ सख़्ती नहीं करना चाहता। इसलिए कि तुम रोज़ों की गिनती पूरी कर लो और इसलिए कि तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो कि अल्लाह ने तुमको सच्ची राह दिखा दी है और अजब नहीं तुम (उसका) इहसान मानो।(१८५) (ऐ पैग़म्बर!) जब मेरे बन्दे तुमसे मेरे बारे में पूछें तो (उनको समझा दो कि) मैं तो पास ही हूँ।§ जब कभी कोई मुझे पुकारता है, तो मैं (प्रत्येक) पुकारनेवाले की प्रार्थना को क़बूल कर लेता हूँ। तो (उनको) चाहिए कि मेरा हुक्म मानें और मुझ पर ईमान लावें; अजब नहीं वह नेक राह पर आ जायँ।(१८६) (मुसलमानो!) रोज़ों की रातों में अपनी बीवियों के पास जाना तुम्हारे लिए जायज़ कर दिया गया है, वह तुम्हारी पोशाक‡ हैं और तुम उनकी पोशाक हो। अल्लाह ने देखा तुम (चोरी-चोरी) उनके पास जाने से अपना (दीनी) नुक़सान करते (दिल को गुनहगार बनाते) थे, तो उसने तुम पर दया की दृष्टि की और तुम्हारे अपराध दर गुज़र किये। पस, अब (रोज़ों में रात के वक़्त) उनके साथ मिलो और जो (नतीजा) अल्लाह ने तुम्हारे लिए ठहरा दिया है (यानी औलाद) उसकी चाहना करो और खाओ पियो जब तक कि (रात की) काली धारी से सुबह की सफ़ेद धारी† तुमको साफ़ दिखाई देने लगे। फिर रात तक रोज़: पूरा करो और जब तुम मसजिद में इअ़तिकाफ़※ की हालत में एकान्त में बैठे हो, तब अपनी बीवियों से प्रसंग मत करना—यह अल्लाह की (बाँधी हुई) हदें हैं—तो उनके पास भी न फटकना। इसी तरह अल्लाह अपने हुक्मों को लोगों के लिए खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि वह परहेज़गार बन जायँ।(१८७)

@ एक रोज़े का फ़िदय: एक दीन को दो वक़्तों का पेट भरकर भोजन देना है; चाहे इतने की क़ीमत दे दे—यह हुक्म बाक़ी नहीं रहा। पहले यह इजाज़त थी जब आरम्भ में लोगों की आदत लगातार महीने भर रोज़: रखने की न थी। ☼ रोज़: रखना अनिवार्य है। सफ़र में हो या बीमार हो. उसको चाहिए कि रमज़ान के बाद (जितने रोज़े उसने छोड़ दिये हैं) उतने रोज़े रख ले। रोज़ों के मामले में बीमारी या सफ़र जैसी मजबूरी से मतलब यह है कि वह सचमुच रोज़े की बर्दाश्त न कर सकता हो। मसलन हामला (गर्भिणी), एक जवान आदमी और एक कमज़ोर बूढ़े के लिए सफ़र या बीमारी में मजबूर होने का पैमाना अलग अलग होगा। सिर्फ़ बीमारी व सफ़र की आड़ में रोज़े के बदले फ़िदय: देकर बच निकलने की गुंजाइश नहीं है। रोज़: रूहानी और जिस्मानी दोनो सेहत देता है। § कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह (स०) से पूछा था कि अल्लाह हमारे समीप है या दूर? हम दुआ धीमी आवाज़ से करें या ज़ोर से? उसपर आयत उतरी कि ख़ुदा तो सब से क़रीबतर है। ‡ स्त्री और पुरुष एक दूसरे की बात ढके रहते हैं। या इस प्रकार एक दूसरे से मिलते हैं जैसे कपड़ा बदन के साथ मिलता है। † रात बीतने से पहले आकाश में पूर्व दिशा में जो सफ़ेद धारी सी लम्बान में प्रगट होती है, उसे सुबह काज़िब कहते हैं। और इस सुबह काज़िब के बाद पूर्व दिशा में आकाश में जो चौड़ान में प्रकाश विस्तृत होता है उसे सुबह सादिक़ कहते हैं। ※ मसजिद में जम कर रहने (एकान्तवास) को इअ़तिकाफ़ कहते हैं। रमज़ान के अन्तिम दिनों मसजिदों में अल्लाह की याद में एकान्तवास करने की हिदायत है।

व ला तअ्कुलू॑ अम्वालकुम् बैनकुम् बिल्बातिलि व तुद्लू बिहा॑ अिलल्हुक्कामि लितअ्कुलू फ़रीक़म्मिन् अम्वालिन्नासि बिल् अिस्मि व अन्तुम् तअ़्लमून (१८८)☆ यस्अलूनक अ़निल् - अहिल्लति त़् क़ुल् हिय मवाक़ीतु लिन्नासि वल्हज्जि त़् व लैसल्बिर्रु बिअन्तअ्तुल - बुयूत मिन् ज़ुहूरिहा व लाकिन्नल्बिर्र मनित्तक़ा ज् वअ्तुल्-बुयूत मिन् अब्वाबिहा स़् वत्तक़ुल्लाह लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (१८९) व क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहिल्लज़ीन युक़ातिलू नकुम् व ला तअ़्तदू त़् अिन्नल्लाह लायुहिब्बुल्-मुअ़्तदीन (१९०) वक़्तुलू हुम् ह़ैसु सक़िफ़्तुमू हुम् व अख़्रिजू हुम् मिन् ह़ैसु अख़्रजूकुम् वल्फ़ित्नतु अशद्दु मिनल्क़त्लि ज् व ला तुक़ातिलू हुम् अ़िन्दल् - मस्जिदिल्-ह़रामि ह़त्ता युक़ातिलू कुम् फ़ीहि ज् फ़अिन् क़ातलूकुम् फ़क़्तुलू हुम् त़् कज़ालिक जज़ा॑उल्काफ़िरीन (१९१) फ़अिनिन्तहौ फ़अिन्नल्लाह ग़फ़ूरुर्रह़ीमुन् (१९२) व क़ातिलू हुम् ह़त्ता ला तकून फ़ित्नतुँव यकूनद्दीनु लिल्लाहि त़् फ़अिनिन्तहौ फ़ला अ़ुद्वान अिल्ला अ़लज़्ज़ालिमीन (१९३) अश्शह्रुल्ह़रामु बिश्शह्रिल्ह़रामि वल्हुरुमातु क़िसासुन् त़् फ़मनिअ़्तदा अ़लैकुम् फ़अ़्तदू अ़लैहि बिमिस्लि मअ़्तदा अ़लैकुम् स़् वत्तक़ुल्लाह वअ़्लमू॑ अन्नल्लाह मअ़ल्मुत्तक़ीन (१९४) व अन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि व ला तुल्क़ू बिअैदीकुम् अिलत्तह्लुकति ज् स़ला ∴ व अह्सिनू ज् ∴ अिन्नल्लाह युहिब्बुल्मुह्सिनीन (१९५)

سيقول ٢ ٢٣ البقرة ٢

حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝ وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا
بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ۝ يَسْــَٔـلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ۭ قُلْ هِىَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ
وَالْحَجِّ ۭ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِاَنْ تَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا وَلٰكِنَّ
الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ۚ وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ۝ وَقَاتِلُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا
تَعْتَدُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ
ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ
مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ
فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ۭ كَذٰلِكَ جَزَاۗءُ الْكٰفِرِيْنَ ۝
فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ
فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ۭ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى
الظّٰلِمِيْنَ ۝ اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ۭ
فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ وَاَنْفِقُوْا فِىْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ڔ وَاَحْسِنُوْا ڔ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ

منزل ١

और आपस में नाहक़ एक दूसरे का माल मत खाओ उड़ाओ और न माल को हाकिमों के पास (रिश्वत के तौर पर) ले जाओ कि लोगों के माल में से जानते बूझते नाहक़ खा जाओ*। (१८८) ★

(ऐ पैग़म्बर !) लोग तुमसे नये चाँदों के बारे में पूछते हैं, तो कहो कि लोगों के लिए और हज के वास्ते यह नियमित समय-माप हैं। और यह कुछ नेकी नहीं है कि घरों में उनके पिछवाड़े की तरफ़ से आओ; बल्कि नेकी तो यह है कि परहेज़गारी करे और घरों में उनके दरवाज़ों से ही आओ† और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम कामयाबी को पहुँचो। (१८९) (मुसलमानो !) जो लोग तुमसे लड़ें तुम भी अल्लाह के रास्ते में उनसे लड़ो लेकिन ज़्यादती न करना। अल्लाह ज़्यादती करने (हद से बढ़ने) वालों को पसंद नहीं करता‡, (१९०) (जो लोग तुमसे लड़ते हैं) उनको जहाँ पाओ क़त्ल करो और जहाँ से उन्होंने तुमको निकाला है (यानी मक्का से) तुम भी उनको (वहाँ से) निकालो और फ़साद (का क़ायम रहना) ख़ून बहाने से भी बढ़कर (बुरा) है@ और जब तक काफ़िर मसजिद हराम (अदबवाली मसजिद) के पास तुमसे न लड़ें तुम भी उस जगह उनसे न लड़ो; लेकिन अगर वह लोग तुमसे लड़ें, तो (तुम भी) उनको क़त्ल करो। (ऐसे) काफ़िरों की यही सज़ा है। (१९१) फिर अगर वह मान जायँ तो बेशक अल्लाह बहुत क्षमा करनेवाला बेहद मेहरबान है। (१९२) और यहाँ तक उनसे लड़ो कि फ़साद बाक़ी न रहे और एक अल्लाह का हुक्म चले। फिर अगर (फ़साद) छोड़ दें, (तो) ज़ालिमों के सिवाय किसी पर ज़्यादती (जायज़) नहीं (१९३) अदब♦ (इज़्ज़त) वाले महीने का बदला अदब वाला महीना है और अदब की चीज़ों में भी बदला§ है, तो जो तुम पर ज़्यादती करे, तो जैसी ज़्यादती उसने तुम पर की वैसी ही ज़्यादती तुम भी उस पर करो। और (ज़्यादती करने में) अल्लाह से डरते रहो और जाने रहो कि अल्लाह परहेज़गारों का ही साथी है। (१९४) अल्लाह की राह में ख़र्च करो। अपने हाथों अपने तईं हत्या में मत डालो और नेकी करो, बेशक नेकी करनेवालों को अल्लाह दोस्त रखता है। (१९५)

---

* चोरी, दग़ाबाज़ी, ख़यानत, जुआ, धोखा, या घूस के ज़रिये किसी का माल हासिल कर दूसरे का माल नाहक़ खाना उड़ाना गुनाह में दाख़िल है। क़ाज़ी या अदालत का फ़ैसला चालाकी, रिश्वत, धोखा या कमअक़्ली के कारन ग़लत भी हो सकता है। उस फ़ैसले से हक़ नाहक़ में और नाहक़ हक़ में नहीं बदल सकता। इस लिये यह हिदायत है कि रुपया या असर के बल पर मुक़दमा जीत लेने पर वह अपने को गुनाह से बचा न समझें और ऐसा करने से बाज़ आयें। † हज के समय बीच में ज़रूरत पड़ने पर लोग घर के पिछले दरवाज़े से जाकर फिर वापस आ जाते थे। मानो घर गये ही नहीं। इस पाखंड से बचने के लिए हिदायत है। ‡ अपनी रक्षा और बदरजे मजबूरी ही लड़ाई की इजाज़त है। लेकित नौबत आने पर पूरी ताक़त से जंग करनी चाहिये दीन, ईमान और अमन को क़ायम करने के लिए। औरतों बच्चों बूढ़ों और अपाहिजों, फ़सल, दरख़्त व बदकिरदारियों से बाज़ आये हुये दुश्मन पर भी ज़ुल्म की इजाज़त इस्लाम नहीं देता। @ कोई शख़्स या गरोह समाज की भलाई के लिए ऐसा तरीक़ा या अल्लाह की हिदायत अख़्तियार करे जो मौजूदा चल रहे तरीक़े से बदला हुआ हो तो उस शख़्स या गरोह को ऐसा करने से रोकना या उन पर जब्र करना सरासर ज़ुल्म है। ऐसा ज़ुल्म करने वाले ही फ़ितनः हैं। उनको पनपने देना उनको क़त्ल करने से ज़्यादः ख़राब है। उनका नाश ही ज़रूरी है। क्योंकि उनके ख़ून को बचाने से आइन्दः और ज़्यादः ख़ून व फ़साद की नौबत आयेगी। इस हुक्म का संबंध अरब के मुशरिकों से है। उनके लिए या उन जैसे दूसरे ज़ालिमों के लिए दो ही रास्ते हैं। या तो इस्लाम क़ुबूल करें या क़त्ल हों। अलबत्ता दूसरे ग़ैर मुस्लिम जो अमन से रहते हैं और मुसलमानों की ज़िन्दगी व अिबादत में ख़लल नहीं डालते वे इस्लाम अपनावें तो बेहतर और न भी अपनावें तो उनको फ़ितनः मानना वा उनका नाश करना इस आयत का मंशा नहीं। ♦ ज़ीक़ाद, ज़िलहिज्ज, मुहर्रम, रजब, ये चार अदब वाले महीने हैं। § यदि फ़सादी पवित्र मास या पवित्र वस्तुओं की परवाह न करके फ़साद करें तो तुम भी उनका लिहाज़ न करो।

व अतिम्मुल्‌हूज्ज वल्‌अुम्‌रत्त लिल्लाहि त्‌ फ़अिन्‌ अुह्‌स़िर्‌तुम्‌ फ़मस्तैसर मिनल्‌हद्‌यि ज्‌ व ला तह्‌लिक़ू रुअूसकुम्‌ हूत्ता यब्लुग़ल्‌ - हद्‌यु मह़िल्लहू त्‌ फ़मन्‌ कान मिन्कुम्‌ मरीज़न्‌ औ बिहीी अजम्मिर्रअ्‌सिहीी फ़फ़िद्‌यतुम्‌ मिन्‌ स़ियामिन्‌ औ सदक़त्तिन्‌ औ नुसुकिन्‌ ज्‌ फ़अिजा आमिन्तुम्‌ वक़्फ़: फ़मन्‌ तमत्तअ़ बिल्‌अुम्‌रत्ति अिलल्‌हूज्जि फ़मस्तैसर मिनल्‌हद्‌यि ज्‌ फ़मल्लम्‌ यजिद्‌ फ़स़ियामु सलासत्ति अैयामिन्‌ फ़िल्‌हूज्जि व सब्‌अ़त्तिन्‌ अिजा रजअ़्तुम्‌ त्‌ तिल्क अ़शरत्तुन्‌ कामिलत्तुन्‌ त्‌ जालिक लिमल्लम्‌ यकुन्‌ अह्‌लुहू हाज़िरिल्‌ - मस्‌जिदिल्‌हूरामि त्‌ वत्तक़ुल्लाह वअ़्लमू अन्नल्लाह शदीदुल्‌अ़िक़ाबि (१९६) ★ अल्‌हूज्जु अश्‌हुरुम्मअ़्लूमातुन्‌ ज्‌ फ़मन्‌ फ़रज़ फ़ीहिन्नल्‌हूज्ज फ़ला रफ़स व ला फ़ुसूक़ ला व ला जिदाल फ़िल्‌हूज्जि त्‌ व मा तफ़्‌अ़लू मिन्‌ ख़ैरींयअ़्लम्‌हुल्लाहु त्‌ . ● व तज़ौवदू फ़अिन्न ख़ैरज़्ज़ादित्तक़्‌वा ज्‌ वत्तक़ूनि या अुलिल्‌अल्बाबि (१९७) लैस अ़लैकुम्‌ जुनाहुन्‌ अन्‌ तब्तग़ू फ़ज़्‌लम्मिर्रब्बिकुम्‌ त्‌ फ़अिजा अफ़ज़्‌तुम्‌ मिन्‌ अ़रफ़ातिन्‌ फ़ज्कुरुल्लाह अ़िन्दल्‌मश्‌अ़रिल्‌-हूरामि स्‌ वज्कुरूहु कमा हदाकुम्‌ ज्‌ व अिन्‌ कुन्तुम्‌ मिन्‌ क़ब्‌लिहीी लमिनज़्ज़ाल्लीन (१९८) सुम्म अफ़ीज़ू मिन्‌ हैसु अफ़ाज़न्नासु वस्तग़्‌फ़िरुल्लाह त्‌ अिन्नल्लाह ग़फ़ूरर्रहीमुन्‌ (१९९) फ़अिजा क़ज़ैतुम्‌ मनासिककुम्‌ फ़ज्कुरुल्लाह कजिक्‌रिकुम्‌ आबाअकुम्‌ औ अशद्द जिक्‌रन्‌ त्‌ फ़मिनन्नासि मैंयक़ूलु रब्बना आतिना फ़िद्दुन्‌या व मा लहू फ़िल्‌ - आख़िरत्ति मिन्‌ ख़लाक़िन्‌ (२००) व मिन्‌हुम्‌ मैंयक़ूलु रब्बना आतिना फ़िद्दुन्‌या हूसनत्तौंव फ़िल्‌ - आख़िरत्ति हूसनत्तौंव क़िना अ़जाबन्नारि (२०१) ●

سیقول ۲ ۳۴ البقرة ۲

الْمُحْسِنِينَ ۝ وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ ۚ فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ
مِنَ الْهَدْيِ ۖ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهُ ۚ
فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى مِنْ رَأْسِهِ فَفِدْيَةٌ مِنْ صِيَامٍ
أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ ۚ فَإِذَا أَمِنْتُمْ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَمَا
اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَ
سَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ ۗ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ۗ ذَٰلِكَ لِمَنْ لَمْ يَكُنْ أَهْلُهُ
حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ۝ الْحَجُّ أَشْهُرٌ مَعْلُومَاتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ
وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۗ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمْهُ اللَّهُ ۗ وَ
تَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَىٰ ۚ وَاتَّقُونِ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ ۝ لَيْسَ
عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِنْ رَبِّكُمْ ۚ فَإِذَا أَفَضْتُمْ مِنْ عَرَفَاتٍ
فَاذْكُرُوا اللَّهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۖ وَاذْكُرُوهُ كَمَا هَدَاكُمْ وَإِنْ كُنْتُمْ
مِنْ قَبْلِهِ لَمِنَ الضَّالِّينَ ۝ ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ
وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ فَإِذَا قَضَيْتُمْ مَنَاسِكَكُمْ
فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا ۗ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ
رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۝ وَمِنْهُمْ مَنْ
يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ

منزل ۱

★ रु २४ | ८ आ ८

● व. न बी स.

● नि. १/२

अल्लाह के लिए हज§ और उमरः@ पूरा करो। और अगर (राह में कहीं) रोक दिये जाओ तो क़ुर्बानी (करदो) जैसी कुछ हो सके और जब तक क़ुर्बानी अपनी ठिकाने न लग जाय अपने सिर न मुड़ाओ। और जो तुममें बीमार हो व सिर की तरफ़ से उसे दुख हो तो बाल उतरवा देने का बदला रोज़े या ख़ैरात या क़ुर्बानी से दो। फिर जब तुमको राहत हो जावे तो जो कोई उमरे को हज से मिलाकर फ़ायदा उठाना चाहे तो (उसको) क़ुर्बानी (करनी होगी) जैसी कुछ हो सके। और जिसको क़ुर्बानी सुलभ न हो तो तीन रोज़े हज के दिनों में (रख ले) और जब वापस आओ तो सात रोज़े रखो। यह पूरे दस रोज़े हुए। यह (हुक्म) उसके लिए है जिसका घरबार मक्के में न हो। अल्लाह से डरो और जाने रहो कि अल्लाह की सज़ा सख़्त है।(१९६) ☆

हज के कुछ महीने जाने हुयें हैं⚹ तो जो शख़्स इन महीनों में हज की ठान ले तो (अहराम‡ बाँधने से आख़िर तक) हज (के दिनों) में विषय-भोग की कोई बात न करे और न बेहुक्मी की और न झगड़े की। और भलाई का कोई सा काम करो, वह अल्लाह को मालूम हो जायगा। ◑ और (हज पर जाने से पहले) सफ़रख़र्च इकट्ठा कर लो। उत्तम (पर्याप्त) ज़ाद (राह ख़र्च) संयम† (और अल्लाह का डर) है और ऐ बुद्धिमानो! मुझसे ही डरते रहो।(१९७) (हज के समय) तुम अपने पालनेवाले की मेहरबानी खोजो तो कुछ पाप नहीं[]। फिर जब अरफ़ात (पहाड़) से लौटो× तो मशअरिल हराम के पास (जो मुक़ाम मुज़दलफ़ा में दो पहाड़ों के क़रीब है) अल्लाह की याद करो और उसकी याद करो उस तरीक़े पर जैसा तुमको अल्लाह ने बताया है और इससे पहले तुम निस्सन्देह भटके हुओं में से थे।(१९८) फिर जिस जगह से लोग चलें तुम भी वहीं से तवाफ़♦ (परिक्रमा) के लिए चलो और अल्लाह से माफ़ी चाहो। बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करनेवाला बेहद मेहरबान है।(१९९) फिर जब हज के कामों को कर चुको तो जिस तरह तुम अपने बाप-दादों की चर्चा में लग जाते थे उसी तरह बल्कि उससे भी बढ़कर अल्लाह की याद में लग जाओ। फिर लोगों में कुछ ऐसे हैं जो कहते हैं कि ऐ हमारे पालनेवाले! हमको (जो देना हो) दुनिया में दे और ऐसे शख़्स के लिए आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं है।(२००) और लोगों में से कुछ ऐसे हैं जो दुआएँ माँगते हैं कि ऐ हमारे पालनकर्त्ता! हमें दुनिया में भी भलाई दे और आख़िरत में भी भलाई दे और हमको आग (नरक) की सज़ा से बचाये रख(२०१) ●

☆ रु. २४ / ८ आ ८ ● व. न वी. स. ● नि. १/२

---

§ अपने स्थान से एहराम बाँधकर बक़रीद के महीने की नवीं तारीख़ को अरफ़ात पहुँच कर वहाँ से वापसी में रात में 'मुज़दलिफ़ा' ठहरना। फिर ईद की सुबह को 'मिना' में पहुँच कर कंकरियाँ फेंकना। फिर मूँडन कराके एहराम उतार देना। फिर काबा की तवाफ़ (परिक्रमा), सफ़ा-मर्वः के बीच दौड़ना, दुबारा 'मिना' में दो या तीन दिन रहना व रोज़ कंकरियाँ फेंकना, फिर काबा के फेरे—यही सब 'हज' का कार्यक्रम है। @ एहराम बाँध कर काबा की परिक्रमा, सफ़ा-मर्वः के बीच दौड़ना और सिर के बाल मुँडवा कर एहराम खोल देना—यह उमरः का कार्यक्रम है। इसमें हज की तरह दिन या महीने की पाबन्दी नहीं है। ⚹ शव्वाल, ज़ीक़ाद और दस दिन ज़िलहिज्ज के। ‡ अहराम—वह कपड़ा जो हज के दिनों में पहनते हैं। जब तक हज का कार्य समाप्त नहीं होता तब तक इसे पहने रहते हैं। † लोग घर से मुनासिब राह-ख़र्च न ले चलते और हज पर पहुँच कर लोगों से मांगते और तंग करते थे। यह बुरा है। [] याने (हज के समय भी) अपने रोज़ी-रोज़गार में बेहतरी के लिए अल्लाह से दुआ करो तो कोई गुनाह नहीं। × मक्कानिवासी पुरानी कुरीति के कारण अरफ़ात तक नहीं जाते थे और मक्के की एक निर्धारित सीमा तक ही रुक जाते थे। वे ग़ुरूर में कहते थे कि हम हरम के रहनेवाले हरम के बाहर क्यों जायँ। यह हज के तरीक़े के खिलाफ़ था। इस लिए हुक्म हुआ कि जहाँ से सब लोग जाकर लौटें वहीं से मक्कानिवासी भी लौटें। ♦ काबे के गिर्द नियमानुसार घूमने को तवाफ़ कहते हैं।

अुलाअिक लहुम् नसीबुम्मिम्मा कसबू त् वल्लाहु सरीअुल् - हिसाबि (२०२) वज़्कुरुल्लाह फ़ी अैयामिम्मअ्‌दूदातिन् त् फ़मन् तअज्जल फ़ी यौमैनि फ़ला अिस्‌म अलैहि ज् व मन् तअख़्ख़र फ़ला अिस्‌म अलैहि ला लिमनित्तक़ा त् वत्तक़ुल्लाह वअ्‌लमू अन्नकुम् अिलैहि तुह्‌शरून (२०३) व मिनन्नासि मैंयुअ्‌जिबुक क़ौलुहु फ़िल्-हयाविद्दुन्या व युश्‌हिदुल्लाह अला मा फ़ी क़ल्‌बिही ला व हुव अलद्दुल्‌ख़िसामि (२०४) व अिजा तवल्ला सआ फ़िल्‌अर्‌ज़ि लियुफ़्‌सिद फ़ीहा व युह्‌लिकल्‌हर्स वन्नस्‌ल त् वल्लाहु ला युहिब्बुल्‌फ़साद (२०५) व अिजा क़ील लहुत्तक़िल्लाह अख़जत्‌हुल्-अिज़्ज़तु बिल्‌अिस्‌मि फ़ह्‌स्बुहू जहन्नमु त् व लबिअ्‌सल्‌मिहादु (२०६) व मिनन्नासि मैंयश्‌री नफ़्‌सहुब्‌तिग़ाअ मर्ज़ातिल्लाहि त् वल्लाहु रअूफ़ुम्‌बिल्‌अिबादि (२०७) या अैयुहल्लजीन आमनुद् ख़ुलू फ़िस्सिल्‌मि काफ़्फ़तन् स् व ला तत्तबिअू ख़ुतुवातिश्शैतानि त् अिन्नहू लकुम् अदूवुम् - मुबीनुन् (२०८) फ़अिन् ज़लल्तुम् मिम्बअ्‌दि मा जाअत्‌कुमुल् - बैयिनातु फ़अ्‌लमू अन्नल्लाह अज़ीज़ुन् हकीमुन् (२०९) हल् यन्ज़ुरून अिल्ला मैंयअ्‌तिय हुमुल्लाहु फ़ी ज़ुललिम्मिनल्ग़मामि वल्मलाअिकतु व क़ुज़ियल्-अम्‌रु त् व अिलल्लाहि तुर्जअुल्अुमूरु (२१०) ★ सल् बनी अिस्‌राअील कम् आतैनाहुम् मिन् आयतिम् - बैयिनतिन् त् व मैंयुबद्दिल् निअ्‌मतल्लाहि मिम्बअ्‌दि मा जाअत्‌हु फ़अिन्नल्लाह शदीदुल्‌अिक़ाबि (२११) ज़ुय्यिन लिल्लजीन कफ़रुल्-हयावुद्दुन्या व यस्ख़रून मिनल्लजीन आमनू म् ● वल्लजीनत्तक़ौ फ़ौक़हुम् यौमल्क़ियामति त् वल्लाहु यर्‌ज़ुक़ु मैंयशाअु बिग़ैरि हिसाबिन् (२१२)

★ रु. २५ | ६ आ १४

● व. ला

النَّارِ ۝ أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا ۚ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ وَاذْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ مَّعْدُودَاتٍ ۚ فَمَن تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ وَمَن تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ لِمَنِ اتَّقَىٰ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَن يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللَّهَ عَلَىٰ مَا فِي قَلْبِهِ وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ ۝ وَإِذَا تَوَلَّىٰ سَعَىٰ فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ ۚ فَحَسْبُهُ جَهَنَّمُ ۚ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَافَّةً وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝ فَإِن زَلَلْتُم مِّن بَعْدِ مَا جَاءَتْكُمُ الْبَيِّنَاتُ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا أَن يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلَائِكَةُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝ سَلْ بَنِي إِسْرَائِيلَ كَمْ آتَيْنَاهُم مِّنْ آيَةٍ بَيِّنَةٍ ۗ وَمَن يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ مِن بَعْدِ مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُونَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا ۘ وَالَّذِينَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ

منزل ١

ऐसे लोगों को उनके किये का हिस्सा (यानी पुण्य) मिलेगा और अल्लाह तो जल्द (सबका) हिसाब करनेवाला है।(२०२) और गिनती के इन चन्द दिनों में अल्लाह की याद करते रहो। फिर जो शख़्स जल्दी करे दो दिन में (चल दे) उस पर (भी) कुछ पाप नहीं और जो ठहरा रहे उस पर (भी) कुछ पाप नहीं, (यह) उसके लिए जो परहेज़गारी करें‡ और अल्लाह से डरते रहो और जाने रहो कि तुम उसी के सामने हाज़िर किये जाओगे।(२०३) और (ऐ पैग़म्बर!) कोई आदमी ऐसा है जिसकी बातें तुमको दुनिया की ज़िन्दगी में भली मालूम होती हैं और वह अपनी दिली बातों पर अल्लाह को गवाह ठहराता है; (ईश्वर की साक्षी देता है कि जो मन में है वही ज़बान पर है) हालाँकि वह सख़्त झगड़ालू है।@(२०४) और जब लौटकर जाय तो मुल्क में इस दौड़ धूप में रहता है कि उसमें विद्रोह फैलावे और खेती-बारी को और जानों को बरबाद करे। और अल्लाह फ़साद नहीं चाहता।(२०५) जब उससे कहा जाय कि अल्लाह से डर, तो शेख़ी उसको पाप पर आमादा करती है। ऐसे को दोज़ख़ काफ़ी है और वह बेशक बुरा ठिकाना है।(२०६) लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह की ख़ुशी के लिए अपनी जान तक दे देते हैं और अल्लाह (ऐसे) बन्दों पर बड़ी ही ममता रखता है।(२०७) ऐ ईमानवालो! इस्लाम में पूरे-पूरे आ जाओ और शैतान के क़दमों पर मत चलो। बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।(२०८) फिर जब कि तुम्हारे पास साफ़ हुक्म पहुँच चुके और इस पर भी डगमगा जाओ तो जान रखो कि अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त और बड़ा हिकमत वाला है।(२०९) क्या यह लोग इसी की राह देखते हैं कि अल्लाह और फ़रिश्ते बादलों के सायबानों में उनके सामने आवें और जो कुछ होना है हो चुके और सब काम अल्लाह ही के हवाले हैं×।(२१०) ✪

★ रु. २५ ६ आ १४

(ऐ पैग़म्बर!) याक़ूब की सन्तान से पूछो कि हमने उनको कितनी खुली हुई निशानियाँ दे रखी थीं और जब कोई शख़्स अल्लाह की उस निअमत को बाद उसके पहुँचने के बदल डाले तो अल्लाह बड़ी सख़्त सज़ा देनेवाला है†।(२११) जो लोग इन्कारी हैं, दुनिया की ज़िन्दगी उनकी दृष्टि में भली दिखाई गई है और वे ईमानवालों की हँसी उड़ाते हैं; ● हालाँकि जो लोग परहेज़गार हैं उनके दर्जे क़ियामत के दिन उनसे बढ़-चढ़कर होंगे§ और अल्लाह जिसे चाहता है बे हिसाब रोज़ी देता है।(२१२)

● व. ला.

‡ यानी मिना में चाहे दो ही दिन ठहरें या तीन दिन, इसमें पाप नहीं; अलबत्ता हज के कामों में पाप से बचे रहना ज़रूरी है। @ यह ज़िक्र यों है—एक अख़नस बिन शरीफ़ नाम का मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) था। वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि व आलिही व सल्लम से इस्लाम धर्म और रसूलुल्लाह के पवित्र व्यक्तित्व के प्रति प्रेम का दावा करता और विश्वास दिलाया करता था। हालाँकि वह मन से इसके बिलकुल विपरीत था। वह मुसलमानों का पूरा दुश्मन था। × ईमान की कमी होने पर लोग तरह तरह के बहाने बनाते हैं। वे कहते हैं कि हम अल्लाह पर ईमान लाने को तैयार हैं बशर्ते वह अपने फ़रिश्तों के साथ हमारे सामने ज़ाहिर हो। गोया वे अल्लाह को अपने रास्ते चलाना चाहते हैं न कि अल्लाह के चलाये ख़ुद चलें। लेकिन यह असंभव है। अगर हमको ईश्वर पर भक्ति है तो हम उसके फ़ैसले पर भरोसा करें कि जब वह जो चाहे करे। † हज़रत मूसा अ० के ज़रिये यहूदियों को ईश्वरी ग्रंथ तौरात और खुले चमत्कार मिले। फिर भी वे अल्लाह के जलवे को भूल कर उसकी आज्ञाओं को अपने स्वार्थ के लिए मनमाना बदलने लगे। यहूदी क्या, समय पाकर दुनिया की हर क़ौम में यह कमज़ोरी दाखिल हो जाती है। लेकिन उन पर अल्लाह की ओर से तबाही बरपा होती है। § काफ़िरों की दुनियावी ज़िन्दगी भड़कीली शानदार होने से वे ग़रीब मुसलमानों पर हँसते थे। उन्हें मालूम नहीं कि आख़िरत के दिन मोमिनों का दर्जा उन काफ़िरों से कहीं ऊँचा होगा।

कानन्नासु उम्मतौंवाहि्दतन् क़िफ़ फ़बअसल्लाहुन्नबीयीन मुबश्शिरीन व मुन्ज़िरीन स़ व अन्ज़ल मअहुमुल्किताब बिल्हक़्क़ि लियह्कुम बैनन्नासि फ़ी मख़्तलफ़ू फ़ीहि त् व मख़्तलफ़ फ़ीहि इल्लल्लज़ीन ऊतूहु मिम्बअ्दि मा जा'अत्हुमुल् - बैयिनातु बग़्यम्बैनहुम् ज् फ़हदल्लाहुल्लज़ीन आमनू लिमख़्तलफ़ू फ़ीहि मिनल्हक़्क़ि बिइज़्निही त् वल्लाहु यह्दी मैंयशा'उ इला सिरातिम्मुस्तक़ीमिन् (२१३) अम् ह़सिब्तुम् अन् तद् ख़ुलुल्जन्नत व लम्मा यअ्तिकुम् मसलुल्लज़ीन ख़लौ मिन् क़ब्लिकुम् त् मस्सत् हुमुल्बअ्सा'उ वज़्ज़र्रा'उ व ज़ुल्ज़िलू हत्ता यक़ूलर्रसूलु वल्लज़ीन आमनू मअहू मता नस्रुल्लाहि त् अला' इन्न नस्रल्लाहि क़रीबुन् (२१४) यस्अलूनक मा ज़ा युन्फ़िक़ून ५ त् क़ुल् मा' अन्फ़क़्तुम्मिन् ख़ैरिन् फ़लिल् - वालिदैनि वल्अक़्रबीन वल्यतामा वल्मसाकीनि वब्निस्सबीलि त् व मा तफ़्अलू मिन् ख़ैरिन् फ़इन्नल्लाह बिही अलीमुन् (२१५) कुतिब अलैकुमुल् - क़ितालु व हुव कुर्हुल्लकुम् ज् व असा' अन्तक्रहू शैऔंव हुव ख़ैरुल्लकुम् ज् व असा' अन्तुहिब्बू शैऔंव हुव शर्रुल्लकुम् त् वल्लाहु यअ्लमु व अन्तुम् ला तअ्लमून (२१६) ★

وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۟ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۪ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ ۝ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۬ؕ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ۝ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ؕ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ؕ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ؕ

रु. २६/१० आ ६

(शुरू में सब)† लोग एक ही दीन रखते थे; फिर अल्लाह ने पैग़म्बर भेजे जो ख़ुशख़बरी देते थे और इन्कारियों को डराते थे और उनके साथ सच्ची किताबें भेजीं ताकि जिन बातों में लोगों में मतभेद था उन बातों का (वह किताब) फ़ैसला कर दे। और उन्हीं लोगों ने, आपस की ज़िद्द से किताब में भेद डाला, जिनको (किताब) मिली थी, बावजूद इसके कि उनको खुले-खुले हुक्म पहुँच चुके थे। तो वह सच्चा रास्ता जिसमें लोग भेद डाल रहे थे अल्लाह ने अपनी मेहरबानी से ईमानवालों को दिखला दिया, और अल्लाह जिसको चाहे सच्ची राह दिखलाये।§ (२१३) मुसलमानो! क्या तुम ऐसा ख़्याल करते हो कि (योंही) बिहिश्त में पहुँच जाओगे? और अभी तक तुम पर उन लोगों जैसी हालत नहीं पेश आई, जो तुमसे पहलों की हो चुकी है, कि उनको सख्तियाँ और तकलीफ़ें पहुँचीं और वह झकझोर डाले (यानी अच्छी तरह कसे) गये यहाँ तक कि पैग़म्बर और ईमानवाले जो उनमें साथ थे कह उठे कि (आख़िर) अल्लाह की मदद कब आवेगी? (ढारस दिया गया) जानो कि अल्लाह की मदद सचमुच क़रीब ही है।(२१४) (ऐ पैग़म्बर!) तुमसे पूछते हैं कि क्या ख़र्च करें?@ तो समझा दो जो माल ख़र्च करो (वह तुम्हारे) माता-पिता का और नज़दीक के रिश्तेदारों का और अनाथों (यतीमों) और दीन-दुखियों (मुहताजों) का और बटोहियों (मुसाफ़िरों) का हक़ है और तुम कोई भी भलाई करोगे, अल्लाह उसको पूरी तरह जानता है।(२१५) तुम पर जिहाद♦ (लड़ाई) फ़र्ज किया गया है और वह तुमको खल रहा है। और क्या आश्चर्य एक चीज़ तुमको बुरी लगे और वह तुम्हारे हक़ में भली हो और क्या अजब एक चीज़ तुमको भली लगे और वह तुम्हारे हक़ में बुरी हो। और अल्लाह को ही ज्ञान है और तुम पूरा ज्ञान नहीं रखते।(२१६)★

★ रु. २६ — १० आ ६

† हज़रत आदम और उनकी संतान। § अल्लाह ने कितने ही नबी और कितनी ही किताबें भेजीं। लेकिन इसलिए नहीं कि उससे जुदा उम्मतें क़ायम हों। बल्कि सब पैग़म्बरों ने एक ही रास्ता दिखलाया। जब एक उम्मत बहकती तो दूसरा नबी आता और जब एक किताब से बहकते तो दूसरी किताब आती। इसी तरह जब तौरात की हिदायतों की मनमाना तोड़मरोड़ यहूदी करने लगे तो अल्लाह ने रसूल (स०) के द्वारा क़ुर्आन भेज कर ईमान के चहीतों को हमेशा के लिए सच्ची राह दिखा दी। @ किस प्रकार से धन खर्च करें? इसका उत्तर यह दिया गया है कि जो चाहो खर्च करो पर उन लोगों पर जिनका वर्णन इस आयत में किया गया है। ♦ दीन के लिए काफ़िरों से लड़ना अर्थात् धर्मयुद्ध करना जिहाद कहलाता है। यह जिहाद मुसलमानों के लिए फ़र्ज़ किया गया है। इसमें धन-जन की हानि होने से भलेही यह बुरा लगता हो, लेकिन वह तुम्हारे लिए हितकर है। तुम्हारे लिए क्या हित है और क्या अहित है, यह सिर्फ़ अल्लाह ही जानता है।

यस्अलूनक अनिश्शह्‌रिल्‌हरामि क़ितालिन् फ़ीहि त् क़ुल् क़ितालुन् फ़ीहि कबीरुन् त् व सद्दुन् अन् सबीलिल्लाहि व कुफ़्‌रुम्बिही वल्मस्जिदिल्‌हरामि क् व अिख़्‌राजु अह्‌लिही मिन्‌हु अक्बरु अिन्दल्लाहि ज् वल्‌फ़ित्‌नतु अक्बरु मिनल्क़त्‌लि त् व ला यज़ालून युक़ातिलूनकुम् हत्ता यरुद्दूकुम् अन् दीनिकुम् अिनिस्तताअू त् व मैंयर्ततदिद् मिन्कुम् अन् दीनिही फ़यमुत् व हुव काफ़िरुन् फ़अुला'अिक हबितत् अअ्‌मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्‌-आख़िरति ज् व अुला'अिक अस्हाबुन्नारि ज् हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (२१७) अिन्नल्लज़ीन आमनू वल्लज़ीन हाजरू व जाहदू फ़ी सबीलिल्लाहि ला अुला'अिक यर्जून रह्‌मतल्लाहि त् वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीमुन् (२१८) यस्अलूनक अनिल्‌ख़म्‌रि वलमैसिरि त् क़ुल् फ़ीहिमा' अिस्मुन् कबीरुँव मनाफ़िअु लिन्नासि ज् व अिस्मुहुमा' अक्बरु मिन्नफ़्‌अिहिमा त् व यस्अलूनक मा ज़ा युन्‌फ़िक़ून ५ त् क़ुलिल्‌अफ़्‌व त् कज़ालिक युबैयिनुल्लाहु लकुमुल्‌-आयाति लअल्लकुम् ततफ़क्करून ला (२१९) फ़िद्दुन्या वल्‌आख़िरति त् व यस्अलूनक अनिल्‌-यतामा त् क़ुल् अिस्लाहुल्लहुम् ख़ैरुन् त् व अिन् तुख़ालितूहुम् फ़अिख़्‌वानुकुम् त् वल्लाहु यअ्‌लमुल्‌-मुफ़्‌सिद मिनल्मुस्लिहि त् व लौ शा'अल्लाहु लअअ्‌नतकुम् त् अिन्नल्लाह अज़ीज़ुन् हकीमुन् (२२०) व ला तन्किहुल्‌-मुश्‌रिकाति हत्ता युअ्‌मिन्न त् व लअमतुम्मुअ्‌मिनतुन् ख़ैरुम्मिम्मुश्‌रिकतिंव्व लौ अअ्‌जबत्कुम् ज् व ला तुन्किहुल्‌-मुश्‌रिकीन हत्ता युअ्‌मिनू त् व लअब्दुम्मुअ्‌मिनुन् ख़ैरुम्मिम्मुश्‌रिकिंव्व लौ अअ्‌जबकुम् त् अुला'अिक यद्‌अून अिलन्नारि ज् सला वल्लाहु यद्‌अू' अिलल्जन्नति वल्मग़्‌फ़िरति बिअिज़्‌निही ज् व युबैयिनु आयातिही लिन्नासि लअल्लहुम् यतज़क्करून (२२१) ★

سيقول ٢ ٢٧ البقرة ٢

وَلَا يَزَالُونَ يُقَاتِلُونَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوكُمْ عَنْ دِينِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوا
وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ
اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيهَا
خٰلِدُونَ ۝ اِنَّ الَّذِينَ اٰمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجٰهَدُوا فِى
سَبِيلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝
يَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۚ قُلْ فِيهِمَآ اِثْمٌ كَبِيرٌ وَّمَنَافِعُ
لِلنَّاسِ ۡ وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ۚ وَيَسْـَٔلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ ۬
قُلِ الْعَفْوَ ۚ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ۝
فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَيَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ۚ قُلْ اِصْلَاحٌ لَّهُمْ
خَيْرٌ ۚ وَاِنْ تُخَالِطُوهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ
الْمُصْلِحِ ۚ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَعْنَتَكُمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝
وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ۚ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ
مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتّٰى
يُؤْمِنُوا ۚ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ۚ
اُولٰٓئِكَ يَدْعُونَ اِلَى النَّارِ ۖ وَاللّٰهُ يَدْعُوٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ
بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ وَيَسْـَٔلُونَكَ
عَنِ الْمَحِيضِ ۚ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ فِى الْمَحِيضِ ۙ

ع ١١

منزل ١

रु० २७ ११ आ० ५

(ऐ पैग़म्बर ! मुसलमान तुमसे) अदबवाले महीनों में लड़ाई करने की बाबत पूछते हैं§ तो उनको समझा दो कि अदबवाले महीनों (पवित्र मासों) में लड़ना बड़ा पाप है। मगर अल्लाह की राह से रोकना और कुफ़्र करना और अदबवाली मसजिद में न जाने देना और उसके रहनेवालों को वहाँ से निकाल देना, अल्लाह के नज़दीक उससे भी बढ़कर पाप है और दीन में फ़ितनः† क़ायम रखना क़त्ल करने से भी बढ़ कर (बुरा) है।♦ और (काफ़िर) लोग तो सदा तुमसे लड़ते ही रहेंगे, यहाँ तक कि इनका वश चले तो तुमको तुम्हारे दीन से फेर ही दें। और जो तुममें अपने दीन से फिरेगा और इन्कारी की दशा में मर जायगा, तो ऐसे ही लोगों का किया-कराया दुनिया और आख़िरत में अकारथ गया ! और यह दोज़ख़ी हैं और हमेशा दोज़ख़ में ही रहेंगे।(२१७) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने देश त्याग किया और अल्लाह की राह में जिहाद भी किये, यही हैं जो अल्लाह की कृपा की आशा लगाये हैं और अल्लाह अत्यंत क्षमाशील अत्यंत दयावान है।(२१८) (ऐ पैग़म्बर! लोग) तुमसे शराब और जुए के बारे में पूछते हैं, तो कह दो कि इन दोनों में बड़ा पाप है। लोगों के लिए फ़ायदे भी हैं मगर इनके फ़ायदे से इनका पाप कहीं बढ़कर है। और तुमसे पूछते हैं (अल्लाह की राह में) क्या ख़र्च करें, तो समझा दो कि जो बचे अपने ख़र्च से (यह भी अर्थ है कि जितना आसान हो)। इसी तरह अल्लाह तुम लोगों से खोल-खोलकर हुक्म बयान करता है ताकि शायद तुम ध्यान दो।(२१९) दुनिया और आख़िरत की बातों में। और (ऐ पैग़म्बर ! यह लोग) तुमसे अनाथों के बारे में पूछते हैं, तो समझा दो कि उनके काम का सँवारना भलाई है और अगर (अपने) साथ उनका ख़र्च शामिल रखो तो वह तुम्हारे भाई ही तो हैं, और अल्लाह बिगाड़नेवालों और संवारनेवालों को पहचानता है। और अगर अल्लाह चाहता तो तुमको कठिनाई में डाल देता। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है, हिकमतवाला है।(२२०) और शिर्कवाली औरतें जब तक ईमान न लावें उनसे निकाह न करो। और मुसलमान लौंडी शिर्कवाली बीवी‡ से भली है, चाहे वह तुमको अच्छी ही लगती हो✡। और शिर्कवाले मर्दों से अपनी औरतों का निकाह न करो, जब तक वे ईमान न लावें। और शिर्कवाला तुमको कैसा ही भला लगे, उससे मुसलमान ग़ुलाम भला, और वे लोग (शिर्कवाले) दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते हैं। अल्लाह अपने हुक्म से बिहिश्त और क्षमा की तरफ़ बुलाता है और अपनी आज्ञाएँ लोगों से खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि वह नसीहत पर चलें।(२२१) ★

★ रु. २७/११ आ ५

---

§ अरब में चार महीनों मे लड़ाई को बहुत बुरा समझते थे। उनके नाम यह हैं (१) ज़ीक़ाद (२) ज़िलहिज्ज (३) मुहर्रम (४) रजब। काफ़िर इन महीनों में भी लड़ाई छेड़ देते थे। मुसलमान उन दिनों में लड़ते डरते थे। इस पर उनको हुक्म दिया गया कि तुमसे ये लोग लड़ें, तो तुम भी उन महीनों में जी खोलकर लड़ो। † फ़ितनः से मतलब उनसे है जो अपने रास्ते व विचारों के ख़िलाफ़ दूसरे विचारों को अपनानेवालों को शांति से नहीं रहने देते और उन पर ज़ुल्म ढाते हैं। ऐसे समाज के दुश्मनों को पनपने देना या ख़ूँरेजी के डर से बख़्श देना क़त्ल से भी बड़ा गुनाह है। उस ज़माने के अरब के मुशरिक व यहूदी इसी क़िस्म के फ़ितने कहे गये हैं। ♦ यह हवाला अरब के मुशरिकों के लिए है। ‡ शिर्कवाली—अल्लाह की ज़ात में और गुण में दूसरे को शरीक करनेवाली, दूसरों की पूजनेवाली। इसका संबंध हज़रत अब्दुल्लाह इब्न रवाहा (सहाबी) से भी है कि उन्होंने किसी बात पर नाराज़ होकर अपनी मुसलमान लौंडी के थप्पड़ मार दिया। लौंडी की फ़र्याद पर रसूलुल्लाह के फ़र्माने पर हज़रत अब्दुल्लाह ने उसे ग़ुलामी से आज़ाद करके उससे निकाह कर लिया। लोगों के एतराज़ पर आयत उतरी कि शिर्कवाली बीवी से मुसलमान लौंडी श्रेष्ठ है। ✡ हज़रत मुर्सद नाम के एक सहाबी को किसी काम से रसूलुल्लाह ने मदीने भेजा था। मुसलमान होने से पूर्व वहीं किसी स्त्री से उनका प्रेम था। इस बार उससे उन्होंने साफ़ कह दिया कि अब मैं बिला निकाह हुये तुमसे नहीं मिल सकता। वह राज़ी हो गई। तब यह आयत उतरी कि शिर्कवाली औरत से जब तक वह मुसलमान न हो जाय, निकाह सम्भव नहीं।

व यस्अलूनक अ़निल्महीज़ि त् क़ुल् हुव अज़न् ला फ़ऽतज़िलुन्निसा'अ फ़िल्महीज़ि ला व ला तक़्रबू हुन्न ह़त्ता यत्हुर्न ज् फ़अिज़ा ततह्हर्न फ़अ्तू हुन्न मिन् ह़ैसु अमरकुमुल्लाहु त् अिन्नल्लाह युह़िब्बुत्तौवाबीन व युह़िब्बुल्मुततह्हिरीन (२२२) निसा'अुकुम् ह़र्सुल्लकुम् स् फ़अ्तू ह़र्सकुम् अन्ना शिअ्तुम् ज् व क़द्दिमू लिअन्फ़ुसिकुम् त् वत्तक़ुल्लाह वऽलमू' अन्नकुम्मुलाक़ूहु त् व बश्शिरिल् - मुअ्मिनीन (२२३) व ला तज्अ़लुल्लाह अ़ुर्ज़तल्लि अैमानिकुम् अन् तबर्रू व तत्तक़ू व तुस्लिह़ू बैनन्नासि त् वल्लाहु समीअ़ुन् अ़लीमुन् (२२४) ला युआख़िज़ुकुमुल्लाहु बिल्लग़्वि फ़ी' अैमानिकुम् व लाकींयुआख़िज़ुकुम् बिमा कसबत् क़ुलूबुकुम् त् वल्लाहु ग़फ़ूरुन् ह़लीमुन् (२२५) लिल्लज़ीन युअ्लून मिन्निसा'अिहिम् तरब्बुसु अर्बअ़ति अश्हुरिन् ज् फ़अिन् फ़ा'अू फ़अिन्नल्लाह ग़फ़ूरुर्रह़ीमुन् (२२६) व अिन् अ़ज़मुत्तलाक़ फ़अिन्नल्लाह समीअ़ुन् अ़लीमुन् (२२७) वल्मुतल्लक़ातु यतरब्बस्न बिअन् फ़ुसिहिन्न सलासत क़ुरू'अिन् त् व ला यह़िल्लु लहुन्न अैंयक्तुम्न मा ख़लक़ल्लाहु फ़ी' अर्ह़ामिहिन्न अिन् कुन्न युअ्मिन्न बिल्लाहि वल्यौमिल् - आख़िरि त् व बुअ़ूलतुहुन्न अह़क़्क़ु बिरद्दिहिन्न फ़ी ज़ालिक अिन् अरादू' अिस्लाह़न् त् व लहुन्न मिस्लुल्लज़ी अ़लैहिन्न बिल्मऽरूफ़ि स् व लिर्रिजालि अ़लैहिन्न दरजतुन् त् वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् ह़कीमुन् (२२८) ★

سیقول ۲ — ۲۸ — البقرة ۲

ولا تقربوهن حتى يطهرن فاذا تطهرن فاتوهن من
حيث امركم الله ان الله يحب التوابين ويحب المتطهرين ۝
نساؤكم حرث لكم فاتوا حرثكم انى شئتم وقدموا
لانفسكم واتقوا الله واعلموا انكم ملقوه وبشر المؤمنين ۝
ولا تجعلوا الله عرضة لايمانكم ان تبروا وتتقوا وتصلحوا
بين الناس والله سميع عليم ۝ لا يؤاخذكم الله باللغو
في ايمانكم ولكن يؤاخذكم بما كسبت قلوبكم والله غفور
حليم ۝ للذين يؤلون من نسائهم تربص اربعة اشهر
فان فاءو فان الله غفور رحيم ۝ وان عزموا الطلاق فان
الله سميع عليم ۝ والمطلقت يتربصن بانفسهن ثلثة قروء
ولا يحل لهن ان يكتمن ما خلق الله في ارحامهن ان
كن يؤمن بالله واليوم الاخر وبعولتهن احق بردهن في
ذلك ان ارادوا اصلاحا ولهن مثل الذي عليهن بالمعروف
وللرجال عليهن درجة والله عزيز حكيم ۝ الطلاق مرتن
فامساك بمعروف او تسريح باحسان ولا يحل لكم ان
تاخذوا مما اتيتموهن شيئا الا ان يخافا الا يقيما حدود
الله فان خفتم الا يقيما حدود الله فلا جناح عليهما فيما

منزل

रु. २८ १२ आ

(ऐ पैग़म्बर ! लोग) तुमसे हैज़ (मासिक धर्म) के बारे में पूछते हैं तो समझा दो कि वह एक गन्दगी है। (हैज़) के दिनों में औरतों से अलग रहो और जब तक पाक न हो लें उनके पास न जाओ। फिर जब पाक हो (नहा धो) लें, तो जिस प्रकार अल्लाह ने तुमको बता दिया है, उनके पास जाओ। बेशक अल्लाह तौबः करनेवालों को प्यार करता है और सफ़ाई रखनेवालों से प्रेम रखता है।(२२२) तुम्हारी बीवियाँ (गोया) तुम्हारी खेतियाँ हैं। अपनी खेती में जिस तरह चाहो जाओ और अपने लिए आइन्दः का भी बन्दोबस्त करो, और अल्लाह से डरो और जाने रहो कि उसके सामने हाज़िर होना है। (ऐ पैग़म्बर !) ईमान-वालों को ख़ुशख़बरी सुना दो।(२२३) और सलूक करने और परहेज़गारी रखने और लोगों में मिलाप कराने से रुक जाने के लिए अल्लाह की क़सम को आड़ न बनाओ।† और अल्लाह सुनता और जानता है।(२२४) तुम्हारी फ़ुज़ूल§ क़समों पर अल्लाह तुमको नहीं पकड़ेगा। लेकिन उन (झूठी क़सम खाने) पर तुमको पकड़ेगा जो तुमने दिली इरादे से की हों और अल्लाह बख़शनेवाला (क्षमाशील) (और) बरदाश्त करनेवाला (सहनशील) है।(२२५) जो लोग अपनी बीवियों के पास जाने की क़सम खा बैठें, उनको चार महीने की मुहलत है; फिर (इस मुद्दत में) अगर मिल जावें, तो अल्लाह बख़शनेवाला मेहरबान है, (२२६) और अगर तलाक़ (ही) की ठान लें♦ तो अल्लाह (सब कुछ) सुनता जानता है।(२२७) और जिन औरतों को तलाक़ दी गई हो वह अपने आप को तीन दफ़े हैज़ पूरे होने तक (निकाह से) रोके रखें और अगर अल्लाह और क़ियामत का यक़ीन रखती हैं, तो जो कुछ भी (बच्चे की क़िस्म से) अल्लाह ने उनके पेट में छुपा कर रखा है, उसका छिपाना उनको मुनासिब नहीं और उनके पति उनको अच्छी तरह रखना चाहें तो वह इस बीच में उनको वापस लेने के ज़्यादा हक़दार है। और जैसे (मर्दों का हक़) औरतों पर, वैसे ही दस्तूर के मुताबिक़ औरतों का (हक़ मर्दों पर) है। हाँ, पुरुषों को स्त्रियों पर प्रधानता प्राप्त है@ और अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त और हिकमतवाला है।(२२८)★

★ रु. २८/१२ आ ७

† नेक काम के न करने की क़सम अगर मुँह से निकल गई हो तो भी उसका बहाना करके नेक काम से न हटना चाहिये। ईश्वर सबकुछ जानता है। वह नेक राह में ऐसी क़सम तोड़ने पर नाराज़ नहीं होता। § जो अपने आप मुँह से निकल जाय जैसे कुछ लोग बात बे बात कहते हैं 'वल्लाह'। कुछ लोग कहते हैं कि यह वह क़सम है जो मनुष्य क्रोध में लाता है। ऐसी क़सम को तोड़ने में कुछ पाप नहीं। लेकिन जो क़समें जानबूझ कर इरादा रख कर खाई जाती हैं उनको तोड़ने पर माफ़ी नहीं है। ♦ इस्लाम का मंशा शादी के सम्बन्ध को क़ायम रखना है न कि इन आयतों की आड़ में ज़्यादती करना और तलाक़ व ख़ुलअ़ का नाजायज़ फ़ायदा उठाना। इसी लिए बार बार मौक़ा दिया जाता है कि मियाँ-बीवी जल्दबाज़ी मे क़तःताल्लुक़ न कर बैठें और जहाँ तक मुमकिन हो मसालहत (Reconciliation) करलें। ख़ास तौर पर अगर बच्चे हैं तब तो और भी मसालहत मुनासिब है। लेकिन साथही अगर दोनों का जुड़े रहना नामुमकिन हो और समझौते की हर मुद्दत बेकार साबित हो तब फिर पति-पत्नी दोनों को अमन के साथ प्रेम और पारिवारिक जीवन के लिए पूरी आज़ादी दी गई है ताकि कोई किसी के ज़बर्दस्ती गले न बँधा रहे। @ स्त्री पर पुरुष को प्रधानता इस माने में है कि पुरुष परिवार की देखरेख व माला इन्तज़ाम का भी ज़्यादः ज़िम्मेदार है। पुरुष को क़ुदरत ने इस भार को निबाहने की ज़्यादः क़ुव्वत दी है। इस लिए उसका दर्जा बड़ा है। उसके अधिकार और कर्तव्य दोनों ही बड़े हैं।

अत्तलाक़ु मर्रतानि स़् फ़इम्साकुम् - बिमऽरूफ़िन् औ तस्रीहुम् - बिइह्सानिन् त़्
व ला यहिल्लु लकुम् अन् तअ्ख़ुज़ू मिम्मा आतैतुमूहुन्न शैअन् अिल्ला
अँयख़ाफ़ा अल्ला युक़ीमा हुदूदल्लाहि त़् फ़इन् ख़िफ़्तुम् अल्ला युक़ीमा
हुदूदल्लाहि ला फ़ला जुनाह़ अ़लैहिमा फ़ीमफ़्तदत् बिही त़् तिल्क हुदूदुल्लाहि
फ़ला तऽ्तदूहा ज़् व मैंयतअ़द्द हुदूदल्लाहि
फ़अुलाअिक हुमुज्ज़ालिमून (२२९) फ़इन्
तल्लक़हा फ़ला तहिल्लु लहू मिम्बऽदु हत्ता
तन्किह़ ज़ौजन् ग़ैरहू त़् फ़इन् तल्लक़हा
फ़ला जुनाह़ अ़लैहिमा अँयतराजआ अिन्
जन्ना अँयुक़ीमा हुदूदल्लाहि त़् व तिल्क
हुदूदुल्लाहि युबैयिनुहा लिक़ौमींयऽलमून (२३०)
व अिज़ा तल्लक़्तुमुन्निसाअ फ़बलग़्न
अजलहुन्न फ़अम्सिकू हुन्न बिमऽरूफ़िन् औ
सर्रिहूहुन्न बिमऽरूफ़िन् स़् व ला तुम्सिकू हुन्न
ज़िरारल्लितऽ्तदू ज़् व मैंयफ़्अ़ल् ज़ालिक

سيقول ۲ ۲۹ البقرة ۲

افتدت به تلك حدود الله فلا تعتدوها ومن يتعد حدود
الله فاولئك هم الظلمون ۝ فان طلقها فلا تحل له من بعد
حتى تنكح زوجا غيره فان طلقها فلا جناح عليهما ان يتراجعا
ان ظنا ان يقيما حدود الله وتلك حدود الله يبينها لقوم
يعلمون ۝ واذا طلقتم النساء فبلغن اجلهن فامسكوهن
بمعروف او سرحوهن بمعروف ولا تمسكوهن ضرارا لتعتدوا
ومن يفعل ذلك فقد ظلم نفسه ولا تتخذوا ايت الله هزوا
واذكروا نعمت الله عليكم وما انزل عليكم من الكتب والحكمة
يعظكم به واتقوا الله واعلموا ان الله بكل شيء عليم ۝ و
اذا طلقتم النساء فبلغن اجلهن فلا تعضلوهن ان ينكحن
ازواجهن اذا تراضوا بينهم بالمعروف ذلك يوعظ به من
كان منكم يؤمن بالله واليوم الاخر ذلكم ازكى لكم واطهر و
الله يعلم وانتم لا تعلمون ۝ والولدت يرضعن اولادهن
حولين كاملين لمن اراد ان يتم الرضاعة وعلى المولود له
رزقهن وكسوتهن بالمعروف لا تكلف نفس الا وسعها
لا تضار والدة بولدها ولا مولود له بولده وعلى الوارث
مثل ذلك فان ارادا فصالا عن تراض منهما وتشاور فلا

منزل ۱

फ़क़द् ज़लम नफ़्सहू त़् व ला तत्तख़िज़ू आयातिल्लाहि हुज़ुवन् ज़् वज़्कुरू
निऽमतल्लाहि अ़लैकुम् व मा अन्ज़ल अ़लैकुम्मिनल् - किताबि वल्हिक्मति
यअ़िज़ुकुम् बिही त़् वत्तक़ुल्लाह वऽलमू अन्नल्लाह बिकुल्लि शैअिन् अ़लीमुन्
(२३१) ★ ● व अिज़ा तल्लक़्तुमुन्निसाअ फ़बलग़्न अजलहुन्न फ़ला तऽज़ुलू
हुन्न अँयन्किह्न अज़्वाजहुन्न अिज़ा तराज़ौ बैनहुम् बिल्मऽरूफ़ि त़् ज़ालिक यूअ़ज़ु
बिही मन् कान मिन्कुम् युअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल्आख़िरि त़् ज़ालिकुम्
अज़्का लकुम् व अत्हरु त़् वल्लाहु यऽलमु व अन्तुम् ला तऽलमून (२३२)

★ रु. २९ / १३ आ ३ ● सु. २ / ४

तलाक़ तो दो ही बार की है। उसके बाद (या तो) फिर दस्तूर के मुताबिक़ रख लेना या अच्छे बर्ताव के साथ छोड़ देना है और जो तुम उनको दे चुके हो उसमें से तुमको कुछ भी वापस लेना जायज़ नहीं। मगर यह कि मियाँ बीवी को डर हो कि अल्लाह ने जो हदें ठहरा दी हैं, उन को क़ायम नहीं रख सकेंगे; सो अगर तुम लोगों को इस बात का डर हो कि मियाँ-बीवी अल्लाह की हदों को क़ायम नहीं रख सकेंगे और औरत† (अपना) पीछा छुड़ाने के बदले कुछ दे निकले तो इसमें दोनो पर कुछ पाप नहीं, यह अल्लाह की बाँधी हुई हदें हैं तो इनसे आगे मत बढ़ो और जो अल्लाह की बाँधी हुई हदों से आगे बढ़ जायँ, तो यही लोग (अन्यायी) हैं।(२२९) अब अगर औरत को (तीसरी बार) फिर तलाक़ दे दी तो इसके बाद जब तक औरत दूसरे पति के साथ निकाह न कर ले, उसके लिए जायज़ नहीं (हो सकती) हाँ, अगर (दूसरा पति उससे विषय भोग करके)उसको तलाक़ दे दे, तो दोनों (मियाँ-बीवी) पर कुछ पाप नहीं कि फिर एक दूसरे से (परस्पर) जुड़ जायँ बशर्ते कि दोनों को आशा हो कि अल्लाह की बाँधी हुई हदों को क़ायम रख सकेंगे। और यह अल्लाह की हदें हैं जिनको उन लोगों के लिए बयान फ़र्माता है जो समझ रखते हैं।(२३०) और जब तुमने औरतों को (दो बार) तलाक़ दे दी और उनकी मुद्दत पूरी होने को आई तो इज़्ज़त के साथ उनको रोक लो या उनको (तीसरी तलाक़ देकर) क़ायदे के मुताबिक़ रुख़सत कर दो और सताने के लिए उनको (अपनी स्त्री बना के) रोके न रखना कि उन पर ज़्यादती किया करो और जो ऐसा करेगा, तो अपना ही नुक़सान करेगा और अल्लाह के हुक्मों को कुछ हँसी-खेल न समझो और अल्लाह ने जो तुम पर इहसान किये हैं उनको याद करो और यह कि उसने तुम पर किताब और अक़्ल की बातें उतारीं जिससे वह तुमको शिक्षा देता है और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि अल्लाह सब कुछ जानता है।(२३१) ★ ●

और जब औरतों को तीन बार तलाक़ दे दो और वह अपनी इद्दत की मुद्दत‡ पूरी कर लें तो जायज़ तौर पर आपस में (किसी से) उनकी मर्ज़ी मिल जाय, तो उनको (दूसरे) शौहरों के साथ निकाह कर लेने से न रोको। यह नसीहत तुममें से उसको की जाती है, जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है। यह तुम्हारे लिए बड़ी पाकीज़गी और बड़ी सफ़ाई की बात है और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।(२३२)

★ रु. २९/१३ आ ३ ● मु. ३/४

---

† मर्द औरत को तलाक़ दे सकता है और औरत मर्द से ख़ुला ले सकती है। यानी एक दूसरे से न निभे तो अलग हो सकते हैं। तलाक़ देने का अच्छा तरीक़ः यह है कि जब कोई मुसलमान मर्द अपनी औरत को तलाक़ दे तो कम से कम दो आदमियों के सामने तलाक़ दे ताकि गवाही ढूँढने में झगड़ा न पड़े और एक हैज़ के बाद दूसरी पाकी के ज़माने में तलाक़ भी इसी तरह से दे। यहाँ तक तो मियाँ-बीवी में बिना दोबारः निकाह किये हुए पहला ही निकाह बाक़ी रहता है और अगर दोनों चाहें तो फिर मियाँ बीवी की तरह हो जायें। इसके एक हैज़ के बाद पाकी के ज़माने में अगर तीसरी तलाक़ भी दे दी तो फिर मर्द उस औरत के पास नहीं जा सकता। यह औरत तीन हैज़ पूरे हो चुकने के बाद किसी दूसरे आदमी के साथ निकाह (ब्याह) कर सकती है। दूसरे पति के साथ निकाह हो जाने पर अगर दूसरा पति तलाक़ दे दे या मर जाय तो सिर्फ़ इस हालत में कि वह दूसरे पति के साथ सम्भोग कर चुकी हो (हमबिस्तर हो चुकी हो)तो अपने पूर्व पति के साथ फिर इद्दत गुज़ार कर यानी तीन हैज़ पूरे हो चुकने पर निकाह कर सकती है। परन्तु जब तक किसी दूसरे के साथ निकाह करके विषय-भोग न कर ले (यानी हमबिस्तर न हो ले) कदापि पूर्व पति से निकाह नहीं कर सकती। ‡ इद्दत उस मुद्दत को कहते हैं जिसके अन्दर औरत तलाक़ देने के बाद या उसका शौहर मर जाने के बाद निकाह नहीं कर सकती। पति मर जाय तो इद्दत की मुद्दत चार महीने और दस दिन और यदि शौहर ने तलाक़ दी तो इद्दत की मुद्दत तीन हैज़ पूरे हो जाना है। और अगर गर्भवती है तो बच्चा पैदा होने तक।

वल्वालिदातु युर्ज़िअ़न औलाद हुन्न ह़ौलैनि कामिलैनि लिमन् अराद अँयुतिम्मर्रज़ाअ़त़
त् व अ़लल्मौलूदि लहू रिज़्क़ुहुन्न व किस्वतुहुन्न बिल्मअ़रूफ़ि त् ला तुकल्लफ़ु नफ़्सुन्
इल्ला वुस्अ़हा ज् ला तुज़ार्रवालिदतुम्-बिवलदिहा व ला मौलूदुल्लहू बिवलदिही क़्
व अ़लल्वारिसि मिस्लु ज़ालिक ज् फ़इन् अरादा फ़िसालन् अ़न्तराज़िम्मिन्हुमा व
तशावुरिन् फ़ला जुनाह़ अ़लैहिमा त् व इन्
अरत्तुम् अन् तस्तर्ज़िअ़ू औलादकुम् फ़ला जुनाह़
अ़लैकुम् इज़ा सल्लम्तुम् मा आतैतुम् बिल्मअ़रूफ़ि
त् वत्तक़ुल्लाह वअ़्लमू अन्नल्लाह बिमा तअ़्मलून
बसीरुन् (२३३) वल्लज़ीन युतवफ़्फ़ौन मिन्कुम्
व यज़रून अज़्वाजैंयतरब्बस्न बिअन्फ़ुसिहिन्न
अर्बअ़त अश्हुरिंव्व अ़श्रन् ज् फ़इज़ा बलग़्न
अजलहुन्न फ़ला जुनाह़ अ़लैकुम् फ़ीमा फ़अ़ल्न्
फ़ी अन्फ़ुसिहिन्न बिल्मअ़रूफ़ि त् वल्लाहु बिमा
तअ़्मलून ख़बीरुन् (२३४) व ला जुनाह़ अ़लैकुम्
फ़ीमा अ़र्रज़्तुम् बिही मिन् ख़ित़्बतिन्निसाइ औ
अक्नन्तुम् फ़ी अन्फ़ुसिकुम् त् अ़लिमल्लाहु
अन्नकुम् सतज़्कुरूनहुन्न व लाकिल्ला
तुवाअ़िदूहुन्न सिर्रन् इल्ला अन्तक़ूलू क़ौलम्मअ़रूफ़न् ۵ त् व ला तअ़्ज़िमू
अ़ुक़्दतन्निकाह़ि ह़त्ता यब्लुग़ल्किताबु अजलहू त् वअ़्लमू अन्नल्लाह
यअ़्लमु मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम् फ़ह़्ज़रूहु ज् वअ़्लमू अन्नल्लाह ग़फ़ूरुन्
ह़लीमुन् (२३५) ★ ला जुनाह़ अ़लैकुम् इन् तल्लक़्तुमुन्निसाअ मालम्
तमस्सूहुन्न औ तफ़्रिज़ूलहुन्न फ़रीज़तन् ज् सला ०व मत्तिअ़ू-हुन्न ज्
अ़लल्मूसिअ़ि क़दरुहू व अ़लल्मुक़्तिरि क़दरुहू ज् मताअ़म्-बिल्मअ़रूफ़ि ज् ह़क़्क़न्
अ़लल्मुह़्सिनीन (२३६) व इन्तल्लक़्तुमूहुन्न मिन् क़ब्लि अन् तमस्सूहुन्न
व क़द् फ़रज़्तुम् लहुन्न फ़रीज़तन् फ़निस्फ़ु मा फ़रज़्तुम् इल्ला अँयअ़्फ़ून औ
यअ़्फ़ुवल्लज़ी बियदिही अ़ुक़्दतुन्निकाह़ि त् व अन् तअ़्फ़ू अक़्रबु लित्तक़्वा त्
व ला तन्सवुल्फ़ज़्ल बैनकुम् त् इन्नल्लाह बिमा तअ़्मलून बसीरुन् (२३७)

★ रु. ३० १४ आ. ४

جناح عليهما ۗ وإن أردتم أن تسترضعوا أولادكم فلا جناح
عليكم إذا سلمتم ما آتيتم بالمعروف ۗ واتقوا الله واعلموا أن
الله بما تعملون بصير ۝ والذين يتوفون منكم ويذرون
أزواجا يتربصن بأنفسهن أربعة أشهر وعشرا ۖ فإذا بلغن
أجلهن فلا جناح عليكم فيما فعلن في أنفسهن بالمعروف ۗ
والله بما تعملون خبير ۝ ولا جناح عليكم فيما عرضتم به
من خطبة النساء أو أكننتم في أنفسكم ۚ علم الله أنكم
ستذكرونهن ولكن لا تواعدوهن سرا إلا أن تقولوا قولا
معروفا ۚ ولا تعزموا عقدة النكاح حتى يبلغ الكتاب أجله ۚ
واعلموا أن الله يعلم ما في أنفسكم فاحذروه ۚ واعلموا أن
الله غفور حليم ۝ لا جناح عليكم إن طلقتم النساء ما
لم تمسوهن أو تفرضوا لهن فريضة ۚ ومتعوهن على الموسع
قدره وعلى المقتر قدره متاعا بالمعروف ۖ حقا على المحسنين ۝
وإن طلقتموهن من قبل أن تمسوهن وقد فرضتم لهن
فريضة فنصف ما فرضتم إلا أن يعفون أو يعفو الذي بيده
عقدة النكاح ۚ وأن تعفوا أقرب للتقوى ۚ ولا تنسوا الفضل
بينكم ۚ إن الله بما تعملون بصير ۝ حافظوا على الصلوات و

और माताएँ अपनी औलाद को पूरे दो बरस दूध पिलाएँ अगर कोई शख़्स (तलाक़ देने के बाद अपने बच्चे को) दूध पिलाने की मुद्दत को पूरा करना चाहे तो (उस सूरत में) जिसका वह बच्चा है (यानी बाप) उस पर दस्तूर के मुताबिक़ माताओं को खाना-कपड़ा देना लाज़िम है। किसी को तकलीफ़ नहीं दी जाती मगर वहीं तक जहाँ तक उसकी सामर्थ्य हो। माता को उसके बच्चे की वजह से तकलीफ़ न पहुँचाई जाय और न उसको जिसका बच्चा है (यानी बाप को) उसके बच्चे की वजह से किसी तरह की तकलीफ़ पहुँचाई जाय और (दूध पिलाने का खाना-ख़ूराक जैसा बाप पर है) वैसा ही (उसके न होने पर उसके) वारिस पर भी है, फिर अगर (वक़्त से पहले माता-पिता) दोनो अपनी मर्ज़ी से और सलाह से (दूध) छुड़ाना चाहें तो उन पर कुछ पाप नहीं। और अगर तुम अपनी औलाद को किसी अन्ना (दायः) से दूध पिलवाना चाहो तो तुम पर कुछ पाप नहीं, बशर्ते कि जो तुमने दस्तूर के मुताबिक़ (उनको) देना तै किया था उनके हवाले करो। और अ लाह से डरते रहो और जाने रहो कि जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है@।(२३३) और तुममें जो लोग मर जायँ और बीवियाँ छोड़ मरें तो (औरतों को चाहिए कि) चार महीने दस दिन अपने को रोके रहें†, फिर जब अपनी (इद्दत की) मुद्दत पूरी कर लें तो जायज़ तौर पर जो कुछ अपने हक़ में करें उसका तुम (मरे के वारिसों) पर कुछ पाप नहीं. और तुम लोग जो कुछ करते हो अल्लाह को उसकी ख़बर है। (२३४) और अगर तुम किसी बात की आड़ में (प्रत्यक्ष और स्पष्ट रूप से नहीं बल्कि संकेत रूप से जैसे यह कहो कि मुझे किसी औरत से निकाह की ज़रूरत है) औरतों को निकाह का संदेशा भेजो या अपने दिलों में छिपाये रखो तो इसमें (भी) तुम पर कुछ पाप नहीं। अल्लाह को मालूम है कि तुम इसका विचार करोगे, मगर इनसे निकाह का ठहराव तो चुपके से भी न करना‡, हाँ जायज़ तौर पर (चाहो तो) बात कह दो यानी संकेत कर दो। और जब तक इद्दत (अवधि) समाप्त न हो जाय निकाह के बन्धन की बात पक्की न कर बैठना। और जाने रहो कि जो कुछ तुम्हारे जी में है अल्लाह जानता है, तो उससे डरते रहो और जाने रहो कि अल्लाह बख़्शनेवाला और बड़ा बर्दाश्त वाला है।(२३५)★

★ रु. ३०/१४ आ ४

अगर तुमने औरतों के साथ हमबिस्तरी न की हो और उनका मिह्र§ न ठहराया हो, इससे पहले उनको तलाक़ दे दो तो उसमें तुम पर कोई पाप नहीं। (हाँ ऐसी औरतों के साथ कुछ-कुछ सलूक करो) सामर्थ वाले अपनी हैसियत के लायक़ और बेसामर्थवाले अपनी हैसियत के लायक़ उनको ख़र्च दें जैसा ख़र्च का दस्तूर है। यह भले आदमियों पर लाजिम है।(२३६) और अगर हमबिस्तर होने से पहले और मिह्र ठहराने के बाद औरतों को तलाक़ दे दो तो जो कुछ तुमने ठहराया था उसका आधा देना चाहिए, मगर यह कि स्त्रियाँ आधा मिह्र भी ख़ुद छोड़ दें या (मर्द) जिसके हाथ में निकाह के सम्बन्ध की बातें हैं वह (अपना हक़) छोड़ दे, (यानी पूरा मिह्र देने पर राज़ी हो और अपना हक़ छोड़ दे) तो यह परहेज़गारी से ज़्यादा क़रीब है और अपने बीच इस परस्पर भलाई के विचार को मत भूलो। जो करते हो निश्चय अल्लाह उसको ख़ूब देख रहा है।(२३७)

@ आयत २३३-२३४ में बच्चों के हित का ध्यान रखा गया है। ज़ाहिर है कि तलाक़ के वक़्त मियाँ बीवी के सम्बन्ध मुहब्बत के न होंगे। इस खींच-तान में बच्चों के हक़ की हिफ़ाज़त बहुत ज़रूरी है। † यानी इतने दिन ब्याह (निकाह) न करें। इसका मंशा भी यही है कि अगर औरत के गर्भ है तो इतने दिन में ज़ाहिर हो जायगा और उस सूरत में दूसरे ब्याह में बच्चे का हित क़ायम रहेगा। ‡ यानी इद्दत भर उनके निकाह की बात न करो और न यह जी में ठानो कि मैं इनके साथ ब्याह करूँगा। § मिह्र उस इक़रार को कहते हैं जो निकाह के समय शौहर औरत के साथ जायदाद व नक़द रुपया देने का करता है।

ह़ाफ़िज़ू अ़लस्सलवाति वस्सलातिल् - वुस्ता क़् व क़ूमू लिल्लाहि क़ानितीन (२३८) फ़इन् ख़िफ़्तुम् फ़रिजालन् औ रुक्बानन् ज् फ़इजा अमिन्तुम् फ़ज्कुरुल्लाह कमा अ़ल्लमकुम्मालम् तकूनू तअ़्लमून (२३९) वल्लजीन युतवफ़्फ़ौन मिन्कुम् व यज़रून अज़्वाजन् ज् सला ०वसीयतल्-लिअज़्वाजिहिम् मताअ़न् इलल्ह़ौलि ग़ैर इख़्राजिन् ज् फ़इन् ख़रज्न फ़ला जुनाह़ अ़लैकुम् फ़ी मा फ़अ़ल्न फ़ी अन्फ़ुसिहिन्न मिम्मअ़्रूफ़िन् त् वल्लाहु अज़ीज़ुन् ह़कीमुन् (२४०) व लिल्मुतल्लक़ाति मताअ़ुम् - बिलमअ़्रूफ़ि त् ह़क़्क़न् अ़लल्मुत्तक़ीन (२४१) कज़ालिक युबैयिनुल्लाहु लकुम् आयातिही लअ़ल्लकुम् तअ़्क़िलून (२४२) ★ अलम् तर इलल्लजीन ख़रजू मिन् दियारि हिम् व हुम् उलूफ़ुन् ह़ज़रल्मौति स् फ़क़ाल लहुमुल्लाहु मूतू क़िफ़् सुम्म अह़्याहुम् त् इन्नल्लाह लज़ू फ़ज़्लिन् अ़लन्नासि व लाकिन्न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून (२४३) व क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहि वअ़्लमू अन्नल्लाह समीअ़ुन् अ़लीमुन् (२४४) मन् ज़ल्लज़ी युक़्रिज़ुल्लाह क़र्ज़न् ह़सनन् फ़युज़ाअ़िफ़हू लहू अज़्आ़फ़न् कसीरतन् त् वल्लाहु यक़्बिज़ु व यब्सुतु स् व इलैहि तुर्जअ़ून (२४५) अलम् तर इलल्मलइ मिम्बनी इस्राईल मिम्बअ़्दि मूसा म् ● इज़् क़ालू लिनबीयिल्लहुमुब्अ़स् लना मलिकन्नुक़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहि त् क़ाल हल् अ़सैतुम् इन् कुतिब अ़लैकुमुल्-क़ितालु अल्ला तुक़ातिलू त् क़ालू व मा लना अल्ला नुक़ातिल फ़ी सबीलिल्लाहि व क़द् उख़्रिज्ना मिन् दियारिना व अब्नाइना त् फ़लम्मा कुतिब अ़लैहिमुल्-क़ितालु तवल्लौ इल्ला क़लीलम्मिन्हुम् त् वल्लाहु अ़लीमुम्बिज़्ज़ालिमीन (२४६)

★ रु. ३१ / १५ आ ७

● व. ला

سیقول ٢ — ٣١ — البقرة ٢

الصلوٰة الوسطىٰ وقوموا لله قٰنتين ۝ فان خفتم فرجالا او ركبانا فاذا امنتم فاذكروا الله كما علمكم ما لم تكونوا تعلمون ۝ والذين يتوفون منكم ويذرون ازواجا وصية لازواجهم متاعا الى الحول غير اخراج فان خرجن فلا جناح عليكم في ما فعلن في انفسهن من معروف والله عزيز حكيم ۝ وللمطلقٰت متاع بالمعروف حقا على المتقين ۝ كذٰلك يبين الله لكم ايٰته لعلكم تعقلون ۝ الم تر الى الذين خرجوا من ديارهم وهم الوف حذر الموت فقال لهم الله موتوا ثم احياهم ان الله لذو فضل على الناس ولٰكن اكثر الناس لا يشكرون ۝ وقاتلوا في سبيل الله واعلموا ان الله سميع عليم ۝ من ذا الذي يقرض الله قرضا حسنا فيضٰعفه له اضعافا كثيرة والله يقبض ويبصط واليه ترجعون ۝ الم تر الى الملا من بني اسرآءيل من بعد موسىٰ اذ قالوا لنبي لهم ابعث لنا ملكا نقاتل في سبيل الله قال هل عسيتم ان كتب عليكم القتال الا تقاتلوا قالوا وما لنا الا نقاتل في سبيل الله وقد اخرجنا من ديارنا وابنآئنا فلما كتب عليهم القتال تولوا الا قليلا منهم والله عليم بالظٰلمين ۝ وقال لهم نبيهم ان الله قد بعث لكم طالوت

منزل ١

(और सभी) नमाज़ों की और बीच की नमाज़@ का पूरा ध्यान रखो और अल्लाह के आगे विनयपूर्वक (आजिज़ी से) खड़े रहा करो।(२३८) फिर अगर तुमको (दुश्मन का) डर हो तो पैदल या सवार(जैसी हालत हो)नमाज़ पढ़ लो। फिर जब तुम निश्चित हो जाओ तो जिस तरह अल्लाह ने तुमको (पैग़म्बर द्वारा नमाज़ का तरीक़ा) सिखाया है, जो तुम पहले नहीं जानते थे, उसी तरीक़े से अल्लाह को याद करो।(२३९) जो लोग तुममें से मर जायँ और बीवियाँ छोड़ मरें तो अपनी बीवियों के हक़ में एक बरस तक के बर्ताव (भोजन आदि का प्रबन्ध) और (घर से) न निकालने की वसीयत कर मरें§। फिर अगर औरतें (ख़ुद ही घर से निकल खड़ी हों तो जायज़ तौर पर जो कुछ अपने हक़ में (वे)करें, उनका तुम पर कुछ पाप नहीं। और अल्लाह ज़बरदस्त और हिकमतवाला है।(२४०) और जिन औरतों को तलाक़ दी जाय उनके साथ (मिह्र के अलावा भी) दस्तूर के मुताबिक़ (जोड़े वग़ैरह से कुछ) सलूक परहेज़गारों को मुनासिब है।(२४१) ऐसे ही अल्लाह तुम लोगों के लिए अपने हुक्मों को खोल-खोलकर बयान फ़र्माता है शायद तुम समझो।(२४२)★

★ रु. ३१/१५ आ ७

(ऐ पैग़म्बर !) क्या तुमने उन लोगों पर नज़र नहीं की, जो मौत से बचने के लिए अपने घरों से भाग खड़े हुए और वह हज़ारों ही थे फिर अल्लाह ने उनको हुक्म दिया कि मर जाओ फिर उनको जिलाकर उठाया† बेशक अल्लाह तो लोगों पर बड़ा कृपालु है। लेकिन अक्सर लोग शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) नहीं होते।(२४३) और (ऐ ईमानवालों !) अल्लाह की राह में लड़ो और जाने रहो कि अल्लाह सब सुनता और जानता है।(२४४) कोई है जो अल्लाह को ख़ुश दिल से क़र्ज़‡ दे कि उसके क़र्ज़ को (अल्लाह) उसके लिए कई गुना बढ़ा दे। अल्लाह ही ग़रीब और अमीर बनाता है और उसी की तरफ़ तुम (सब) को लौटकर जाना है।(२४५) (ऐ शख़्स) क्या तूने इसराईल की औलादों के एक गरोह पर नज़र नहीं की कि मूसा के बाद● एक समय उन्होंने अपने पैग़म्बर (अशमूयील) से दरख़्वास्त की थी कि हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर करो कि हम(उसके सहारे से)अल्लाह की राह में जिहाद करें। (पैग़म्बर ने)कहा अगर तुम पर जिहाद फ़र्ज़ किया जाय, तो तुमसे कुछ दूर नहीं(संभव है)कि तुम न लड़ो।[] बोले कि हम अपने घरों से तो निकाले और बाल-बच्चों से अलग किये जा चुके(हैं)तो हमारे लिए अब कौन-सा उज़्र है कि अल्लाह की राह में न लड़ें। फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया, तो उनमें से चन्द गिने हुओं के सिवाय बाक़ी सब फिर गए और अल्लाह तो अन्यायियों को ख़ूब जानता है।(२४६)

● व. ला.

@ बीच की नमाज़ याने अस्र की नमाज़ के वक़्त चूँकि इन्सान अपने दुनियावी कामों में ज़्यादा फँसा रहता है इसलिए इस नमाज़ की ओर ज़्याद: ध्यान दिलाया गया है। अस्र की नमाज़ के पहले फ़ज्र व ज़ुहर और बाद में मग़रिब व इशा की नमाज़ें होती हैं। § वसीयत का यह हुक्म सूरतुन्निसाअ के दूसरे रुकूअ के उतरने पर बाक़ी नहीं रहा। सूरतुन्निसाअ में औरत, मर्द व सारे वारिसों के हक़ बयान कर दिये गये हैं। और अब मनमानी वसीयत का सवाल पैदा नहीं रहता। † यह क़िस्स: बनी इसराईल का है जो जिहाद से जान बचाने के लिए भागे थे। अल्लाह ने उनकी कायरता के कारन उनको मौत दे दी; फिर वह अपने पैग़म्बर हज़रत हिज़क़ील की दुआ से ज़िन्द: हो गये थे। ‡ यानी जिहाद के लिए जो धन या साधन है उनका प्रबन्ध करे। [] सच बात यो यह है कि ये लोग बुज़दिली और आपस में नाइत्तिफ़ाक़ी के शिकार हो रहे थे। ख़ुद लड़ने का दम न था, इसलिए चाहते थे कि कोई बादशाह आकर उनको मुसीबत से छुटकारा दिला दे।

व क़ाल लहुम् नबीयुहुम् अिन्नल्लाह क़द् बअ़स लकुम् तालूत मलिकन् ृ क़ालू अन्ना यकूनु लहुल्मुल्कु अ़लैना व नह्नु अह़क़्क़ु बिल्मुल्कि मिन्हु व लम् युअ्त सअ़तम्मिनल्मालि ृ क़ाल अिन्नल्लाहस्तफ़ाहु अ़लैकुम् वज़ादहू बस्ततन् फ़िल्अ़िल्मि वल्जिस्मि ृ वल्लाहु युअ्ती मुल्कहू मैंयशाअु ृ वल्लाहु वासिअ़ुन् अ़लीमुन (२४७) व क़ाल लहुम् नबीयुहुम् अिन्न आयत मुल्किही अैंयअ्तियकुमुत्ताबूतु फ़ीहि सकीनतुम् मिर्रब्बिकुम् व बक़ीयतुम्मिम्मा तरक आलु मूसा व आलु हारून तह्मिलुहुल्मलाअिकतु ृ अिन्न फ़ी ज़ालिक लआयतल्लकुम् अिन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (२४८) ★ फ़लम्मा फ़सल तालूतु बिल्जुनूदि ला क़ाल अिन्नल्लाह मुब्तलीकुम् बिनहरिन् ज. फ़मन् शरिब मिन्हु फ़लैस मिन्नी ज व मल्लम् यत्अ़म्हु फ़अिन्नहू मिन्नी अिल्ला मनिग़्तरफ़ ग़ुर्फ़तम्बियदिही ज फ़शरिबू मिन्हु अिल्ला क़लीलम् - मिन्हुम् ृ फ़लम्मा जावज़हू हुव वल्लज़ीन आमनू मअ़हू ला क़ालू लाताक़त लनल्यौम बिजालूत व जुनूदिही ृ क़ालल्लज़ीन यज़ुन्नून अन्नहुम् मुलाक़ुल्लाहि ला कम्मिन् फ़िअतिन् क़लीलतिन् ग़लबत् फ़िअतन् कसीरतम्-बिअिज़्निल्लाहि ृ वल्लाहु मअ़स्साबिरीन (२४९) व लम्मा बरज़ू लिजालूत व जुनूदिही क़ालू रब्बना अफ़्रिग़् अ़लैना सब्रौंव सब्बित् अक़्दामना वन्सुर्ना अ़लल्क़ौमिल्काफ़िरीन ृ (२५०) फ़हज़मूहुम् बिअिज़्निल्लाहि क़िफ़् ला व क़तल दावूदु जालूत व आताहुल्लाहुल्मुल्क वल्हिक्मत व अ़ल्लमहू मिम्मा यशाअु ृ व लौला दफ़्अ़ुल्लाहिन्नास बअ़्ज़हुम् बिबअ़्ज़िन् ला ल्लफ़सदतिल्-अर्ज़ु व लाकिन्नल्लाह ज़ू फ़ज़्लिन् अ़लल्आलमीन (२५१) तिल्क आयातुल्लाहि नत्लू हा अ़लैक बिल्हक़्क़ि ृ व अिन्नक लमिनल्मुर्सलीन (२५२)

रु. ३२ १६ आ ६

مَلِكًا ۚ قَالُوٓا اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ اَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ
يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ۚ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهٗ بَسْطَةً
فِى الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ۚ وَاللّٰهُ يُؤْتِىْ مُلْكَهٗ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝
وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖٓ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ التَّابُوْتُ فِيْهِ سَكِيْنَةٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَاٰلُ هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ۚ
اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ
بِالْجُنُوْدِ ۙ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِيْكُمْ بِنَهَرٍ ۚ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّىْ ۚ
وَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّىْٓ اِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً ۢ بِيَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا
مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ۚ فَلَمَّا جَاوَزَهٗ هُوَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ قَالُوْا
لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ ۚ قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا
اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةً ۢ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ مَعَ
الصّٰبِرِيْنَ ۝ وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا
صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ فَهَزَمُوْهُمْ
بِاِذْنِ اللّٰهِ ۙ وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَ
عَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ۚ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ ۙ
لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝
تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝

منزل

॥ इति दूसरा पारः ॥

और उनके पैग़म्बर ने उनसे कहा कि अल्लाह ने तालूत‡ को तुम्हारा बादशाह मुक़र्रर किया है। (उस पर) कहने लगे कि उसको हम पर कैसे हुकूमत मिल सकती है। हालाँकि इससे तो हुकूमत के हम ही ज़्यादा हक़दार हैं कि उसको तो माल से भी कुछ ऐसी अमीरी नसीब नहीं। (पैग़म्बर ने) कहा कि अल्लाह ने तुम पर उसी को पसन्द फ़र्माया है कि इल्म और जिस्म में उसको बढ़ती दी है और अल्लाह अपना मुल्क जिसको चाहे दे और अल्लाह बड़ी गुंजाइशवाला (समाईवाला) और बड़ा जानकार है।(२४७) पैग़म्बर ने उनसे कहा कि तालूत के बादशाह होने की यह निशानी है कि यह सन्दूक़ जिसमें तुम्हारे पालनेवाले की तरफ़ से तसल्ली की चीज़ है यानी तौरात है और मूसा और हारून जो छोड़ मरे हैं, उनमें की बची हुई चीज़ें हैं, तुम्हारे पास आ जायँगी, फ़रिश्ते उनको उड़ा लायेंगे†। बेशक अगर ईमान रखते हो तो यही एक बात तुम्हारे लिए निशानी है।(२४८)★

रु. ३२/१६ आ ६

फिर जब (तालूत) फ़ौज सहित चला तो कहा कि (रास्ते में एक नदी पड़ेगी) अल्लाह उस नदी से तुम्हारी जाँच करनेवाला है, तो जो (अघाकर) उसका पानी पी लेगा, वह हमारा नहीं और जो उसको नहीं पियेगा, वह हमारा है; मगर (हाँ) अपने हाथ से कोई एक चुल्लू भर ले ले। लेकिन उन लोगों में से गिने हुए चन्द के सिवाय सभी ने उस (नदी) में से अघाकर पी लिया। फिर जब तालूत और ईमानवाले जो उसके साथ थे नदी के पार हो गये, तो (जिन लोगों ने तालूत का हुक्म न माना था) कहने लगे कि हममें तो जालूत और उसके लश्कर से मुक़ाबिला करने की आज ताक़त नहीं है। (उस पर) वह लोग जिनको यक़ीन था कि उनको अल्लाह के सामने हाज़िर होना है, बोल उठे अक्सर अल्लाह के हुक्म से थोड़े समूह ने बड़े समूह पर जीत पाई है। और अल्लाह तो संतोषियों का साथी है।(२४९) और वे जालूत और उसकी फ़ौजों के मुक़ाबिले में आये तो दुआ की कि ऐ हमारे पालनेवाले! हमको पूरा संतोष दे और हमारे पाँव जमाये रख और काफ़िरों के गरोह पर हमको जीत दे।(२५०) उसमें फिर उन लोगों ने अल्लाह के हुक्म से दुश्मनों को भगा दिया और जालूत को दाऊद§ ने क़त्ल किया और (आगे चलकर) उनको अल्लाह ने राज्य दिया और अक़्ल दी ओर जो चाहा उनको सिखा दिया। अगर अल्लाह कुछ लोगों द्वारा कुछ लोगों को न हटाता रहे तो पृथ्वी फ़साद से भर जाय। लेकिन अल्लाह तो संसार के लोगों पर बड़ा दयालु है।(२५१) (ऐ पैग़म्बर।) यह अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुमको ठीक-ठीक पढ़कर सुनाते हैं और (ऐ मुहम्मद!) बेशक तुम भेजे हुओं (यानी पैग़म्बरों) में से हो।(२५२)

॥ इति दूसरा पारः ॥

---

‡(आयत २४६ व उसके फ़ुटनोट का ही यह सिलसिला है(हज़रत मूसा के बाद कुछ समय तक बनी इसराईल का काम बना रहा। फिर उनके पापों के कारण उन पर एक काफ़िर बादशाह (जालूत) ने अपना अधिकार जमा लिया। इसने उनको अनेक कष्ट दिये तो इन्होंने अपने नबी हज़रत शैमूईल से प्रार्थना की कि हमारे लिए कोई बादशाह ठहरा दीजिये जिसके आधीन हम जालूत से युद्ध कर सकें। हज़रत शैमूईल ने कहा अल्लाह ने तालूत को तुम्हारा बादशाह नियत किया है। † बरकत का सन्दूक़ अधिकार में आ जाना तालूत की बादशाहत का ईश्वरीय प्रमाण है। इस सन्दूक़ में तौरात की पट्टियाँ व हज़रत मूसा अ० व हारून की कुछ और निशानियाँ थीं। यहूदी बरकत के तौर पर जंग में इसे लेकर चलते थे। उनका ख्याल था कि उसके रहते उनकी हार न होगी। हालाँकि कोई पाक निशानी महज़ आप की हिफ़ाज़त नहीं कर सकती जब तक आप अपने में धर्म पर क़ुर्बान होजाने की भावना न रखें। चुनांचे हुआ भी यही और फ़िलस्तीन के काफ़िरों ने यहूदियों को तबाह कर यह बरकत का सन्दूक़ छीन लिया। § तालूत के ३१३ साथियों में हज़रत दाऊद भी थे। तालूत ने एलान किया था कि जालूत का सर काट लाने वाले को मैं अपनी लड़की ब्याह दूँगा और आधा राज्य दूँगा। हज़रत दाऊद इसमें कामयाब हुये। नादान लोग कहते हैं कि लड़ाई करना नबियों का काम नहीं है। इस क़िस्से से मालूम हुआ कि जिहाद हमेशा रहा है और जिहाद न हो तो फ़सादी लोग मुल्क को वीरान कर दें।

⊛⊛ तीसरा पारः तिल्कर्रुसुलु ⊛⊛

⊛⊛ सूरतुल् बक़रः आयात २५३ से २८६ ⊛⊛

व. ला

तिल्कर्रुसुलु फ़ज़्ज़लना बअ़्ज़हुम् अ़ला बअ़्ज़िन् म ● मिन्हुम् मन् कल्लमल्लाहु व रफ़अ़ बअ़्ज़हुम् दरजातिन् त् व आतैना ईसब्न मर्यमल् - बैयिनाति व अैयद्नाहु बिरूहिल्क़ुदुसि त् व लौ शा'अल्लाहु मक़्ततलल्लज़ीन मिम्बअ़्दि हिम् मिम्बअ़्दि मा जा'अत् हुमुल्बैयिनातु व ला'किनिख़्तलफ़ू फ़मिन् हुम्मन् आमन व मिन्हुम् मन् कफ़र त् व लौ शा' अल्लाहु मक़्ततलू क़िफ़् व ला'किन्नल्लाह यफ़अ़लु मा युरीदु (२५३) ★ या' अैयुहल्लज़ीन आमनू' अन्फ़िक़ू मिम्मा रज़क़्नाकुम् मिन्क़ब्लि अैंयअ्तिय यौमुल्ला बैअ़ुन् फ़ीहि व ला ख़ुल्लतुंव ला शफ़ाअ़तुन् त् वल्काफ़िरून हुमुज़्ज़ालिमून (२५४) अल्लाहु ला' अिलाह अिल्ला हुव ज् अल्हैयुल्क़ैयूमु ५ ज् ला तअ्ख़ुज़ुहू सिनतुंव ला नौमुन् त् लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि त् मन् ज़ल्लज़ी यश्फ़अ़ु अ़िन्दहू' अिल्ला बिअिज़्निही' त् यअ़्लमु मा बैन अैदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् ज् व ला युहीतून बिशैअिम्मिन् अ़िल्मिही' अिल्ला बिमा शा'अ ज् वसिअ़ कुर्सीयुहुस्समावाति वल्अर्ज़ ज् व लायऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा ज् व हुवल्-अ़लीयुल्-अ़ज़ीमु (२५५) ला' अिक्राह फ़िद्दीनि क़िफ़् ला क़त्तबैयनर्रुश्दु मिनल्ग़ैयि ज् फ़मैंयक्फ़ुर् बित्ताग़ूति व युअ्मिम्-बिल्लाहि फ़क़दिस्तम्सक बिल्-अ़ुर्वतिल्-वुस्क़ा क़् लन्फ़िसाम लहा त् वल्लाहु समीअ़ुन् अ़लीमुन् (२५६)

★ रु. ३३/१ आ. ५

البقرة ٢ ٣٣ تلك الرسل ٣

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ
اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ
الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ
الَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ
اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
مَا اقْتَتَلُوْا ۟ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا
بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝
اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا
نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِیْ
يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ
وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِيْمُ ۝
لَاۤ اِكْرَاهَ فِی الدِّيْنِ ۙ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَیِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ
بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى
لَا انْفِصَامَ لَهَا ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ اَللّٰهُ وَلِیُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ

منزل

तीसरा पारः तिल्करुसुलु

सूरतुल् बक़रः आयत् २५३ से २८६

इन पैग़म्बरों (जिनको हम समय समय पर भेजते रहे हैं) में से हमने किसी पर किसी को श्रेष्ठता दी है।● (मसलन) इनमें से कोई तो ऐसे हैं जिनके साथ अल्लाह ने बातचीत की और किन्हीं के दर्जे (और तरह पर) ऊँचे किये और मरियम के बेटे ई़सा को हमने खुली-खुली निशानियाँ दीं और पाक रूह (जिब्रील) के द्वारा हमने उनका समर्थन किया और अगर अल्लाह चाहता तो जो लोग उनके (पैग़म्बरों के) बाद हुए उनके पास खुले हुए निशान आने के बाद (वे) एक दूसरे से न लड़ते; लेकिन (लोग) आपस में झगड़े। तो इनमें से बाज़ वह थे जो ईमान लाये और बाज़ वह थे जिन्होंने कुफ़्र अपनाया और अगर अल्लाह चाहता (तो यह लोग) आपस में न लड़ते; मगर अल्लाह जो चाहता है करता है।(२५३)★

● व. ला.

★ रु. ३३/१ आ ५

ऐ ईमानवालो! हमारे दिये हुए में से ख़र्च कर लो उस दिन (प्रलय) के आने से पहले जिसमें न तो (अपने कर्मों का) सौदा (ख़रीद-फ़रोख़्त) होगा, न दोस्ती होगी और न (बिला रज़ा इलाही) सिफ़ारिश हो सकेगी और इन्कारी ही तो ज़ालिम हैं।(२५४) अल्लाह (वह ज़ात पाक है कि) उसके सिवा कोई अिबादत के योग्य नहीं। वह ज़िन्दः (परम चैतन्य)§ (जगत् का) सँभालनेवाला है,@ न उसको झपकी आती है और न नींद। जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (सब) उसी का है। कौन है जो उसकी इजाज़त के बग़ैर उससे (किसी की) सिफ़ारिश कर सके? जो कुछ भी लोगों के सामने और पीछे है (दृष्ट और अदृष्ट) उसको (सब) मालूम है और लोग उसकी मालूमात में से किसी चीज़ को घेर नहीं सकते (क़ाबू नहीं पा सकते) सिवाय उसके कि जितनी वह अल्लाह चाहे। उसका राज्य आकाश और ज़मीन (सब) पर है और इन दोनों की रक्षा उस पर (कुछ भी कठिन) नहीं और वह महान् और महामहिमावान है।(२५५) दीन में ज़बरदस्ती नहीं है☉, (सुधार के लिए) हिदायत गुमराही से अलग हो चुकी है तो जो झूठी (शैतान की) अिबादत को न माने और अल्लाह पर ईमान लावे, उसने मज़बूत रस्सी पकड़ रखी है, जो टूटने वाली नहीं और अल्लाह बड़ा सुननेवाला बड़ा जाननेवाला है।(२५६)

---

§ ज़िन्दः याने अविनाशी है। कभी नाश उसका मुमकिन नहीं। अजर अमर है। @ अल्लाह ही सारे जगत का संभालनेवाला है। पैदा करना, क़ायम रखना और फिर क़ियामत बरपा करना—सब उसी के बस का है। जन्म, पालन और संहार सब का वही स्वामी है। ☉ दीन में ज़ोर-जब्र की गुंजाइश नहीं। अल्लाह की महानता और अल्लाह की ओर से सही रास्ता रोशनी में आगया। जिसको वह पसंद हो वह अपनाए और जिसको अधर्म की अँधियारी में भटकना पसंद हो वह भटका करे।

अल्लाहु वलीयुल्लज़ीन आमनू ला युख़्रिजुहुम् मिनज़्ज़ुलुमाति अिलन्नूरि ५ त् वल्लज़ीन कफ़रू औलियाअुहुमुत्ताग़ूतु ला युख़्रिजूनहुम् मिनन्नूरि अिलज़्ज़ुलुमाति त् अुलाअिक अस्हाबुन्नारि ज् हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (२५७) ★ अलम् तर अिलल्लज़ी हाज्ज अिब्राहीम फ़ी रब्बिही अन् आताहुल्लाहुल्मुल्क म् ● अिज् क़ाल अिब्राहीमु रब्बियल्लज़ी युह्यी व युमीतु ला क़ाल अना अुह्यी व अुमीतु त् क़ाल अिब्राहीमु फ़अिन्नल्लाह यअ्ती बिश्शम्सि मिनल्मश्रिक़ि फ़अ्ति बिहा मिनल्मग़्रिबि फ़बुहितल्लज़ी कफ़र त् वल्लाहु ला यह्दिल्क़ौमज़्ज़ालिमीन ज् (२५८) औकल्लज़ी मर्र अला क़र्यतिंव्व हिय ख़ावियतुन् अला अुरूशिहा ज् क़ाल अन्ना युह्यी हाज़िहिल्लाहु बअ्द मौतिहा ज् फ़अमातहुल्लाहु मिअत आमिन् सुम्म बअसहू त् क़ाल कम् लबिस्त त् क़ाल लबिस्तु यौमन् औ बअ्ज़ यौमिन् त् क़ाल बल्लबिस्त मिअत आमिन् फ़न्ज़ुर् अिला तआमिक व शराबिक लम् यतसन्नह् ज् वन्ज़ुर् अिला हिमारिक व लिनज्अलक आयतल्लिन्नासि वन्ज़ुर् अिलल्अिज़ामि कैफ़ नुन्शिज़ुहा सुम्म नक्सूहा लह्मन् त् फ़लम्मा तबैयन लहू ला क़ाल अअ्लमु अन्नल्लाह अला कुल्लि शैअिन् क़दीरुन् (२५९) व अिज् क़ाल अिब्राहीमु रब्बि अरिनी कैफ़ तुह्यिल्मौता त् क़ाल अवलम् तुअ्मिन् त् क़ाल बला व लाकिल्लियत्मअिन्न क़ल्बी त् क़ाल फ़ख़ुज् अर्बअतम्-मिनत्तैरि फ़सुर्हुन्न अिलैक सुम्मज्अल् अला कुल्लि जबलिम्-मिन् हुन्न ज़ुज़्अन् सुम्मद्अुहुन्न यअ्तीनक सअ्यन् त् वअ्लम् अन्नल्लाह अज़ीज़ुन् हकीमुन् (२६०) ★

البقرة ٢ ٣٤ تلك الرسل ٣

الطاغوت يخرجونهم من النور الى الظلمت اولئك اصحب النار هم فيها خلدون ﴿٢٥٧﴾ الم تر الى الذى حاج ابرهم فى ربه ان اتىه الله الملك اذ قال ابرهم ربى الذى يحى و يميت قال انا احى و اميت قال ابرهم فان الله يأتى بالشمس من المشرق فات بها من المغرب فبهت الذى كفر و الله لا يهدى القوم الظلمين ﴿٢٥٨﴾ او كالذى مر على قرية و هى خاوية على عروشها قال انى يحى هذه الله بعد موتها فاماته الله مائة عام ثم بعثه قال كم لبثت قال لبثت يوما او بعض يوم قال بل لبثت مائة عام فانظر الى طعامك و شرابك لم يتسنه و انظر الى حمارك و لنجعلك اية للناس و انظر الى العظام كيف ننشزها ثم نكسوها لحما فلما تبين له قال اعلم ان الله على كل شىء قدير ﴿٢٥٩﴾ و اذ قال ابرهم رب ارنى كيف تحى الموتى قال اولم تؤمن قال بلى و لكن ليطمئن قلبى قال فخذ اربعة من الطير فصرهن اليك ثم اجعل على كل جبل منهن جزءا ثم ادعهن يأتينك سعيا و اعلم ان الله عزيز حكيم ﴿٢٦٠﴾ مثل الذين ينفقون اموالهم فى سبيل الله كمثل حبة انبتت سبع

منزل

रु. ३४ / २ आ ४ ● व. ला

रु. ३५ / ३ आ ३

ईमानवालों का मददगार अल्लाह है कि उनको अँधेरे से निकालकर रोशनी में लाता है और जो काफ़िर हैं, उनके साथी शैतान हैं कि उनको रोशनी से निकालकर अँधेरे में ढकेलते हैं। यही लोग नारकीय हैं (और) वह हमेशा दोज़ख़ ही में रहेंगे।(२५७)★

(ऐ मुख़ातिब !) क्या तुमने उस शख़्स के हाल पर ध्यान नहीं दिया जो इब्राहीम से उनके परवरदिगार के (वजूद के) बारे में बहस करने लगा† । सिर्फ़ (इस ग़ुरूर में) कि अल्लाह ने उसको राज्य दे रखा था,● जब इब्राहीम ने (उससे) कहा कि मेरा पालनेवाला तो वह है जो जिलाता और मारता है, (इस पर) वह कहने लगा कि मैं (भी) तो जिलाता और मारता हूँ। इब्राहीम ने कहा कि अल्लाह तो सूर्य को (नित्य) पूर्व से निकालता है, तू उसको (एक ही दिन) पश्चिम से निकाल, (इस पर वह) काफ़िर हैरान रह गया। और अल्लाह (ऐसे) अन्यायियों को हिदायत की राह (सुपथ) नहीं दिखाता।(२५८) या जैसे उस शख़्स का हाल जानते हो§ जो ऐसी बस्ती से होकर गुज़रा, जो अपनी छतों के बल ढही हुई थी; उसे देखकर (तअज्जुब से) कहने लगा कि अल्लाह इस बस्ती (के मुर्दों) को इसके मरने के बाद कैसे (दुबारा) ज़िन्दा करेगा? इस पर अल्लाह ने उस शख़्स को सौ वर्ष तक मुर्दा रखा फिर उसको जिला उठाया (और) पूछा तुम इस हालत में कितनी (मुद्दत) रहे? उसने कहा एक दिन रहा हूँगा या एक दिन से भी कम। अल्लाह ने फ़र्माया नहीं, बल्कि तुम सौ वर्ष (इसी हालत में) रहे। (अब) अपने खाने और पीने (की चीज़ों) को देखो कि (इतनी मुद्दत में भी) कोई सड़ी गली नहीं और अपने गधे की तरफ़ (भी) नज़र करो (जिस पर तुम सवार थे) और तुम्हारे (इतने दिनों मुर्दा रखने और फिर जिला उठाने) से मक़सद यह है कि हम तुम को लोगों के लिए (अपनी क़ुदरत का) एक नमूना बनावें और (गधे की) हड्डियों की तरफ़ नज़र करो कि हम कैसे उनको क़ायदे से लगाते (ढाँचा बना देते) हैं, फिर उन पर मांस चढ़ाते हैं, फिर जब उस शख़्स पर (अल्लाह की शक्ति का यह चमत्कार) ज़ाहिर हुआ तो बोल उठा कि मैं यक़ीन करता हूँ कि अल्लाह को हर चीज़ पर क़ाबू (सामर्थ्य) है।(२५९) और (वह भी याद करो) जब इब्राहीम ने (ख़ुदा से) निवेदन किया कि ऐ मेरे परवरदिगार! मुझको दिखा कि तू मुर्दों को कैसे जिलाता है। ख़ुदा ने फ़र्माया क्या तुमको (इसका) यक़ीन नहीं। उन्होंने अर्ज़ किया, क्यों नहीं। मगर मैं (एक नज़र देखकर भी) अपने दिल की तसल्ली चाहता हूँ। अल्लाह ने फ़र्माया तो (अच्छा) चार पक्षी लो और उनको अपने पास हिला-मिला लो फिर एक-एक पहाड़ी पर उनका एक-एक भाग रख दो,छ फिर उनको (अपनी तरफ़) बुलाओ तो वह तुम्हारे पास दौड़े चले आयेंगे। और जान लो कि अल्लाह ग़ालिब और साहिबे हिकमत (सर्वप्रबल और सर्वविद्) है (२६०)★

रु. ३४ / २ आ ४ ● व ला । जि म

रु. ३५ / ३ आ ३

† यह कथा बाबुल के बादशाह नमरूद की है। वह अल्लाह को न मानकर स्वयं अपने को ही पूज्य
कहता था। ह० इब्राहीम अ० के वालिद उसके यहाँ बड़े रुतबे पर थे। जब हज़रत इब्राहीम अ० ने मन्दिर
की मूर्तियाँ तोड़ डालीं तब उनके वालिद ने उनको ख़ुद बादशाह के रूबरू पेश कर दिया। उस वक़्त का वाक़्या
है। हज़रत इब्राहीम अ० ने बादशाह का सज्दः न किया और कहा कि मैं तो उस एक की पूजा करता हूँ जो जीवन-मरण
का मालिक है यानी अल्लाह की। नमरूद उनकी बात का तत्व न समझा और तुरन्त दो क़ैदियों को बुलवा कर
उनमें क़ातिल को तो छोड़ दिया और निर्दोष को मरवा डाला और कहा कि मैं भी तो मौत ज़िन्दगी का मालिक
हूँ। इस पर हज़रत इब्राहीम अ० ने सूर्य को उदय और अस्त करने की फ़र्माइश की। नमरूद अब कुछ न बोल
सका। § आयत २५६ में किन साहब का ज़िक्र है, क़ुर्आन में इसकी चरचा नहीं है। लोगों ने दूसरी किताबों
व हवालों से हज़रत उज़ैर अ० का तज़किरः किया है लेकिन इन नामों की अटकल सही हो या ग़लत उससे कोई फ़र्क़
नहीं पड़ता। इन्सानी दिलों में अल्लाह की क़ुदरत और [पेज ११५ पर] छ तज़किरः यों है कि जब इन्सान के
पाले और हिले हुये पक्षी दूर-दराज़ पहाड़ों से उसके पास भागे चले आते हैं तो क्या अल्लाह अपने पैदा किये हुये
इंसानों को आख़िरत के दिन अपने तक नहीं बुला सकता? ज़रूर बुला सकता है। वह सर्वशक्तिमान है।

मसलुल्लजीन युन्फ़िक़ून अम्वालहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि कमसलि हूब्बतिन् अम्बतत् सब्अ़ सनाबिल फ़ी कुल्लि सुम्बुलतिम्मिअतु हूब्बतिन् तृ वल्लाहु युज़ाअ़िफ़ु लिमैंयशा'अु तृ वल्लाहु वासिअ़ुन् अ़लीमुन् (२६१) अल्लजीन युन्फ़िक़ून अम्वालहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि सुम्म ला युत्बिअ़ून मा' अन्फ़क़ू मन्नौंवला' अजन् ला ल्'लहुम् अज्रुहुम् अ़िन्द रब्बिहिम् ज् व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (२६२) क़ौलुम्मऽरूफ़ूँव मग़्फ़िरतुन् ख़ैरुम्मिन् सदक़तींयत्बअ़ुहा' अजन् तृ वल्लाहु ग़नीयुन् हूलीमुन् (२६३) या' अैयुहल्लजीन आमनू ला तुब्तिलू सदक़ातिकुम् बिलमन्नि वल्अजा ला कल्लजी युन्फ़िक़ु मालहू रिआ'अन्नासि व ला युअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल्आख़िरि तृ फ़मसलुहू कमसलि सफ़्वानिन् अ़लैहि तुराबुन् फ़असाबहू वाबिलुन् फ़तरकहू सल्दन् तृ ला यक़्दिरून अ़ला शैअिम्मिम्मा कसबू तृ वल्लाहु ला यह्दिल्क़ौमल्काफ़िरीन (२६४) व मसलुल्लजीन युन्फ़िक़ून अम्वालहुमुब्तिग़ा'अ मर्ज़ातिल्लाहि व तस्बीतम्मिन् अन्फ़ुसिहिम् कमसलि जन्नतिम् - बिरब्वतिन् असा बहा वाबिलुन् फ़आतत् अुकुलहा ज़िअ़्फ़ैनि ज् फ़अिल्लम् युसिब्हा वाबिलुन् फ़तल्लुन् तृ वल्लाहु बिमा तअ़्मलून बसीरुन् (२६५) अयवद्दु अहूदुकुम् अन् तकून लहू जन्नतुम्-मिन्नख़ीलिंव्व अअ़्नाबिन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारु ला लहू फ़ीहा मिन् कुल्लिस्समराति ला व असाबहुल्किबरु व लहू ज़ुर्रीयतुन् ज़ुअ़फ़ा'अु स़ सला फ़असाबहा' अिअ़्सारुन् फ़ीहि नारुन् फ़हूतरक़त् तृ कजालिक युबैयिनुल्लाहु लकुमुल्आयाति लअ़ल्लकुम् ततफ़क्करून (२६६) ★

البقرة ٢ ٣٥ تلك الرسل ٣

سنابل في كل سنبلة مائة حبة ۗ والله يضعف لمن يشاء ۗ
والله واسع عليم ۝ الذين ينفقون اموالهم في سبيل الله
ثم لا يتبعون ما انفقوا منا ولا اذى لهم اجرهم عند ربهم
ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون ۝ قول معروف ومغفرة
خير من صدقة يتبعها اذى ۗ والله غني حليم ۝ يايها الذين
امنوا لا تبطلوا صدقتكم بالمن والاذى كالذي ينفق ماله
رئاء الناس ولا يؤمن بالله واليوم الاخر ۗ فمثله كمثل
صفوان عليه تراب فاصابه وابل فتركه صلدا ۗ لا يقدرون
على شيء مما كسبوا ۗ والله لا يهدي القوم الكفرين ۝ ومثل
الذين ينفقون اموالهم ابتغاء مرضات الله وتثبيتا من
انفسهم كمثل جنة بربوة اصابها وابل فاتت اكلها ضعفين
فان لم يصبها وابل فطل ۗ والله بما تعملون بصير ۝ ايود
احدكم ان تكون له جنة من نخيل واعناب تجري من
تحتها الانهر له فيها من كل الثمرت واصابه الكبر وله ذرية
ضعفاء ۖ فاصابها اعصار فيه نار فاحترقت ۗ كذلك يبين
الله لكم الايت لعلكم تتفكرون ۝ يايها الذين امنوا انفقوا
من طيبت ما كسبتم ومما اخرجنا لكم من الارض ولا تيمموا

منزل

★ रु. ३६/४ आ ६

जो लोग अपना माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते रहते हैं उनके माल (के फलने-फूलने) की मिसाल उस दाने-जैसी है, जिससे सात बालें उगती हैं, हर बाली में सौ दाने, और अल्लाह जिसको चाहता है बढ़ती देता है और अल्लाह (बड़ी) गुंजाइशवाला (और) सब कुछ जाननेवाला है। (२६१) जो लोग अपना माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं फिर ख़र्च करने के बाद न (किसी तरह का किसी पर) इहसान जताते हैं और न (बर्ताव से) उसको चोट पहुँचाते हैं, उनको उसका सिला (बदला) उनके पालनकर्त्ता के पास है, और (क़ियामत के दिन) न तो उन पर भय होगा और न वह उदास होंगे। (२६२) नर्मी से जवाब दे देना और (मांगने वाला मांगते समय अगर दुराग्रह करे तो) दरगुज़र कर देना उस ख़ैरात से कहीं बढ़कर है जिसके बाद (पानेवाले को) दुःख हो और अल्लाह ग़नी और हलीम (निश्चिन्त और सहनशील) है। (२६३) ऐ ईमानवालो! इहसान जताने और चोट पहुँचाने से अपनी ख़ैरात को उस शख़्स की तरह अकारथ मत करो जो अपना माल (लोगों के दिखावे के लिए) ख़र्च करता है और अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखता, तो उसकी (ख़ैरात की) मिसाल ऐसी है कि एक चट्टान हो जिस पर (कुछ) मिट्टी (पड़ी) हो, फिर उस पर ज़ोर का मेह बरसे और उस (पत्थर) को साफ़ चिकना करदे, ऐसे लोगों को अपनी कमाई कुछ हाथ नहीं† लगेगी। और अल्लाह काफ़िरों को हिदायत (पथप्रदर्शन) नहीं दिया करता। (२६४) और जो लोग अल्लाह की ख़ुशी (प्राप्तकरने) के लिए और अपनी नीयत साबित रखकर अपना माल ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल एक बाग़-जैसी है जो ऊँचे पर है, उस पर (ज़ोर का) मेह पड़े तो दूना फल लाये और अगर उस पर (ज़ोर का) मेह न भी पड़ा, तो (उसकी) हलकी फ़ुहार (भी काफ़ी है), और तुम लोग जो कुछ भी करते हो, अल्लाह उसे ख़ूब देख रहा है। §(२६५) भला तुममें से कोई भी इस बात को पसन्द करेगा कि खजूरों और अंगूरों का अपना एक बाग़ हो, उसके नीचे नहरें बह रही हों, हर तरह के मेवे उसको वहाँ (बाग़ में) हासिल हों और वह बुड्ढा हो जावे और उसके (छोटे-छोटे) कमज़ोर बच्चे हों; अब उस बाग़ पर एक बवंडर चले, जिसमें आग (भरी) हो, जो उस बाग़ को जला (कर ख़ाक कर) दे। [] इस तरह अल्लाह अपनी आयतों को खोल-खोलकर तुम लोगों से बयान करता है, ताकि तुम सोच-समझ से काम लो। (२६६) ★

★ रु. ३६ / ४ आ ६

† लोगों को दिखाने या इहसान लादने के लिए दान-पुण्य करने से कुछ लाभ न होगा। चट्टान पर थोड़ी सी मिट्टी के नीचे बीज बोने से नहीं उगते। जबकि मन से दिये दान का एक बीज भी सात बालें और हज़ारों बीज देता है। इस तरह दिखावे की नेकी बेकार है। § ऊँची जगह जो बाग़ होता है वहाँ बहुत पानी बरसता है तो बहुत फल देता है और कम पानी भी पेड़ों के काम आता है। इसी तरह सच्चे दिल से जो दान किया जाता है वह थोड़ा हो या बहुत, लाभदायक होता है; अल्लाह की राह में की गई ख़ैरात कभी बेकार नहीं जाती। [] कोई भी यह नहीं चाहता कि उसकी कमाई बर्बाद हो, पर जो लोग दिखाने के लिए अच्छे काम करते हैं वह मानो ऐसा बाग़ लगाते हैं जिसका फल न वह स्वयं खायेंगे, न उनके बच्चों को मिलेगा। इहसान जताने या ख़ैरात लेनेवाले को शर्मिन्दा करने या उसका दिल दुखाने से ख़ैरात का फल इसी तरह मटियामेट हो जाता है। उसको अपनी की गई नेकी के बदले इस बाग़ के मालिक जैसी निराशा मिलती है। [पेज ६३ से] ख़राब, जो अपने को भी पसंद नहीं हैं, ऐसी चीज़ों को अल्लाह की राह में देना ख़ैरात का मज़ाक़ उड़ाना है। क्योंकि जो नेक राह में ख़र्च करते हो वह सब तुम्हारे लिए ही है; तुमको ही उसका बदला ईश्वर की ओर से मिलेगा। अल्लाह तुम्हारी ख़ैरात का मुहताज नहीं। वह तो बेपरवाह और सारी निअ्मतों का भण्डार है। [पेज १०१ से] ※ पड़ते थे ताकि मुसलमान अपने को कम समझ कर जंग से भय न खावें और काफ़िरों के हौसले पस्त रहें। इस लड़ाई में विजय मुसलमानों को प्राप्त हुई थी। [पेज १०१ से] ♦ चुराते हैं। इस लिए रसूल स० से हुकुम है कि उन लोगों को बतावें कि इनसे कहीं श्रेष्ठ तो अल्लाह की क़ुर्बत (समीपता) है जहाँ पहुँच कर वे संसारी सुख भी सब सुलभ हैं और साथ ही अल्लाह की नेक नज़र भी उन पर रहती है।

या अैयुहल्लजीन आमनू अन्फ़िक़ू मिन् तैयिबाति मा कसब्तुम् व मिम्मा अख़्रज्ना लकुम्मिनल्अर्ज़ि स्॒ व ला तयम्ममुल्ख़बीस मिन्हु तुन्फ़िक़ून व लस्तुम् बिआख़िजीहि अिल्ला अन् तुग़्मिज़ू फ़ीहि त्॒ वअ्लमू अन्नल्लाह ग़नीयुन् हमीदुन् (२६७) अश्शैतानु यअिदु कुमुल्फ़क़्र व यअ्मुरुकुम् बिल्फ़ह्शाअि ज्॒ वल्लाहु यअिदु-कुम् मग़्फ़िरतम्मिन्हु व फ़ज़्लन् त्॒ वल्लाहु वासिअुन् अलीमुन् सला ला (२६८) य'युअ्तिल्-हिक्मत मैंयशाअु ज्॒ व मैंयुअ्तल्-हिक्मत फ़क़द् ऊतिय ख़ैरन् कसीरन् त्॒ व मा यज्जक्करु अिल्ला अुलुल्अल्बाबि (२६९) व मा अन्फ़क़्तुम् मिन् नफ़क़तिन् औ नजर्तुम् मिन्नज्रिन् फ़अिन्नल्लाह यअ्लमुहू त्॒ व मा लिज़्ज़ालिमीन मिन् अन्सारिन् (२७०) अिन् तुब्दुस्सदक़ाति फ़निअिम्मा हिय ज्॒ व अिन् तुख़्फ़ूहा व तुअ्तूहल्फ़ुक़राअ फ़हुव ख़ैरुल्लकुम् त्॒ व युकफ़्फ़िरु अन्कुम् मिन् सैयिआतिकुम् त्॒ वल्लाहु बिमा तअ्मलून ख़बीरुन् (२७१) लैस अलैक हुदाहुम् व लाकिन्नल्लाह यह्दी मैंयशाअु त्॒ व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिन् फ़लिअन्फ़ुसिकुम् त्॒ व मा तुन्फ़िक़ून अिल्लब्तिग़ाअ वज्हिल्लाहि त्॒ व मा तुन्फिक़ू मिन् ख़ैरींयुवफ़्फ़ अिलैकुम् व अन्तुम् ला तुज़्लमून (२७२) लिल्फ़ुक़राअिल्लजीन अुह्सिरू फ़ी सबीलिल्लाहि ला यस्ततीअून ज़र्बन् फ़िल्अर्ज़ि ज्॒ यह्सबुहुमुल्जाहिलु अग़्नियाअ मिनत्तअफ़्फ़ुफ़ि ज्॒ तअ्रिफ़ुहुम् बिसीमाहुम् ज्॒ ला यस्अलूनन्नास अिल्हाफ़न् त्॒ व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिन् फ़अिन्नल्लाह बिही अलीमुन् (२७३) ★ ●
अल्लजीन युन्फ़िक़ून अम्वालहुम् बिल्लैलि वन्नहारि सिर्रौंव अलानियतन् फ़लहुम् अज्रुहुम् अिन्द रब्बिहिम् ज्॒ व ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (२७४) ●

الْخَبِيثَ مِنْهُ تُنْفِقُونَ وَلَسْتُمْ بِآخِذِيهِ إِلَّا أَنْ تُغْمِضُوا فِيهِ
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝ الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَ
يَأْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَاءِ وَاللَّهُ يَعِدُكُمْ مَغْفِرَةً مِنْهُ وَفَضْلًا وَاللَّهُ
وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ
أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ۝ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ
نَفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُمْ مِنْ نَذْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُهُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ
أَنْصَارٍ ۝ إِنْ تُبْدُوا الصَّدَقَاتِ فَنِعِمَّا هِيَ وَإِنْ تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا
الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِنْ سَيِّئَاتِكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ
خَبِيرٌ ۝ لَيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَمَا
تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَلِأَنْفُسِكُمْ وَمَا تُنْفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ
وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ۝ لِلْفُقَرَاءِ
الَّذِينَ أُحْصِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا فِي الْأَرْضِ
يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ تَعْرِفُهُمْ بِسِيمَاهُمْ لَا
يَسْأَلُونَ النَّاسَ إِلْحَافًا وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ۝
الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ
أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝
الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ

★ रु. ३७/५ आ ७ ● रु ब्र. १/४ ● ब. मं.

ऐ ईमानवालो ! जो तुमने कमाई हों उनमें से अच्छी चीज़ें (अल्लाह की राह में) ख़र्च करो । और जो हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से पैदा की हैं उसमें से (भी) अल्लाह की राह में ख़र्च करो और ख़राब (और नापाक) चीज़ों के देने का इरादा भी न करना। तुम ख़ुद भी (दिये जाने पर) उनको न लोगे, यह दूसरी बात है कि (जानते बूझते हुये मुरौवत में) आखें बन्द कर लो । और अल्लाह बेपरवा (निस्पृह)× और सराहना के योग्य है ।(२६७) (नेक ख़र्च करते समय) शैतान तुमको मुहताजी से डराता और बेशर्मी की तरफ़ लगता है ⅏ और अल्लाह अपनी तरफ़ से क्षमा और दया का तुमको वचन देता है और अल्लाह बड़ो गुंजाइशवाला और ख़ूब जानकार है ।(२६८) जिसको चाहता है समझ देता है और (सच तो यह है) जिसको समझ मिली, बेशक उसने बड़ी दौलत पाई और शिक्षा भी वही मानते हैं जो समझदार हैं । (२६९) और जो ख़र्च भी तुम (अल्लाह की राह में) करते हो या (उसके नाम की) कोई नज़र (मन्नत) @ मानते हो वह सब अल्लाह को मालूम है और ज़ालिमों (अन्याय करनेवालों) का कोई सहायक न होगा ।(२७०) अगर ख़ैरात ज़ाहिर (प्रकट) में दो, तो वह भी अच्छा‡ और अगर इसको छिपाओ और ज़रूरतवालों (या फ़क़ीरों) को दो, तो यह तुम्हारे हक़ में और भी अच्छा है और (ऐसा देना) तुम्हारे कितने ही पापों का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित्त भी) ♦ करेगा और जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह उससे पूरा ख़बरदार है।(२७१) (ऐ पैग़म्बर!) इन लोगों को सीधे मार्ग पर लाना तुम्हारे ज़िम्मे नहीं, बल्कि अल्लाह जिसको चाहता है सीधे मार्ग पर लाता है और (मोमिनो !) तुम लोग माल में से जो कुछ भी ख़र्च करते हो, सो तुम्हारे (फ़ायदे के) लिए है और तुम तो अल्लाह ही को ख़ुश करने के लिए ख़र्च करो और माल में से जो कुछ भी (ख़ैरात के तौर पर) ख़र्च करोगे, इसका सवाब तुमको पूरा-पूरा मिल जायगा और तुम्हारा हक़ ज़रा भी न मारा जायगा ।(२७२) (दान तो) उन दीनों को देना चाहिए, जो अल्लाह की राह में घिरे (ध्यान लगाये) बैठे हैं (और इस वजह से रोज़ी के लिए) मुल्क में किसी तरफ़ को जा नहीं सकते । (जो शख़्स इनके हाल से) बेख़बर है, इनके न माँगने से, इनको मालदार समझता है; लेकिन तुम इनकी सूरत से इनको साफ़ पहचान लोगे कि (यह ज़रूरतमंद और मुहताज हैं भले ही) वह लिपटकर लोगों से नहीं माँगते†, जो कुछ तुम लोग माल में से (ख़ैरात के तौर पर) ख़र्च करोगे, बेशक अल्लाह उसको ख़ूब जानता है ।(२७३) ★ ●

जो लोग रात और दिन, छिपे और ज़ाहिर, अपने माल (अल्लाह की राह में) ख़र्च करते हैं, तो उनको पालनकर्त्ता के यहाँ से इसका बदला मिलेगा और (क़ियामत के दिन) उनको न डर होगा और न वह उदास होंगे ● ।(२७४)

★ रु. ३७/५ आ ७ ● रु बू. १/४ ● ब. मं.

× ऐ ईमानवालो ! जो कुछ अपनी मेहनत से हासिल करो और जो कुछ हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से अन्न, फल, मेवा वग़ैरः पैदा किया है उसमें से अल्लाह की राह में उम्दः चीज़ें ही देने योग्य हैं । [पे०६१ पर]

⅏ शैतान तुम्हारे मन में ऐसे ख़याल पैदा करता है कि 'तुम्हारे पास धन ही नहीं है. कहाँ से ख़ैरात करो' और यों कंजूसी पर आमादा करता है । यह ग़लत है; अल्लाह की राह में दान करने से कभी कंगाली नहीं आती, बल्कि उसकी कृपा से ख़ुशहाली बढ़ती है । @ मन्नत—काम पूरा होने के लिए दान-पुण्य करने की मन में मानता मानना या संकल्प लेना । अल्लाह के अलावा किसी दूसरे के नाम पर मन्नत मानना अन्याय है । ‡ दान देना हर प्रकार अच्छा; चाहे छिपा कर दिया जाय चाहे सब के सामने दिया जाय । परन्तु गुप्त दान अधिक सुन्दर है क्योंकि इस प्रकार जिसकी सहायता की जाती है उसे दूसरे लोगों के आगे शर्मिन्दः नहीं होना पड़ता। ♦ कफ़्फ़ारा—पापों का नाश करनेवाला (प्रायश्चित्त) † कुछ लोग रसूल से धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए उनके घर के पास बैठे रहते थे । ये किसी से कुछ मांगते न थे, पर इनकी आमदनी का कोई ज़रियः न था । इसलिए उनकी सहायता का ख़ास तौर पर हुक्म दिया गया है ।

अल्लज़ीन यअ्कुलूनर्रिबा ला यक़ूमून अिल्ला कमा यक़ूमुल्लज़ी यतख़ब्बतुहुश्-शैतानु मिनल्मस्सि त् ज़ालिक बिअन्नहुम् क़ालू अिन्नमल्बैअ़ु मिस्लुर्रिबा ● म् व अहूल्लल्लाहुल्बैअ़ व हूर्रमर्रिबा त् फ़मन् जाअहू मौअ़िज़तुम् - मिर्रब्बिही फ़न्तहा फ़लहू मा सलफ़ त् व अम्रुहू अिलल्लाहि त् व मन् अ़ाद फ़उला‍अिक अस्हाबुन्नारि ज् हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (२७५) यम्हक़ुल्लाहुर्रिबा व युर्बिस्सदक़ाति त् वल्लाहु ला युहि़ब्बु कुल्ल कफ़्फ़ारिन् असीमिन् (२७६) अिन्नल्लज़ीन आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति व अक़ामुस्सलात व आतवुज़्ज़कात लहुम् अज्रुहुम् अ़िन्द रब्बिहिम् ज् व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (२७७) या अैयुहल्लज़ीन आमनुत्तक़ुल्लाह वज़रू मा बक़िय मिनर्रिबा अिन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (२७८) फ़अिल्लम् तफ़्अ़लू फ़अ्ज़नू बिहूर्बिम्मिनल्लाहि व रसूलिही ज् व अिन् तुब्तुम् फ़लकुम् रुअूसु अम्वालिकुम् ज् ला तज़्लिमून व ला तुज़्लमून (२७९) व अिन् कान ज़ू अ़ुस्रतिन् फ़नज़िरतुन् अिला मैसरतिन् त् व अन् तसद्दक़ू ख़ैरुल्लकुम् अिन् कुन्तुम् तअ़्लमून् (२८०) वत्तक़ू यौमन् तुर्जअ़ून फ़ीहि अिलल्लाहि क् क़िफ़् सुम्म तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम्-मा कसबत् व हुम् ला युज़्लमून (२८१) ★

व. ला जि म

★ रु. ३८ | ६ आ.

تلك الرسل ٣ — ٣٧ — البقرة ٢

الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا م
وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ
رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ وَاَمْرُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي
الصَّدَقٰتِ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ
عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝
فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاِنْ تُبْتُمْ
فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ۝ وَاِنْ كَانَ
ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ۝ وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ
نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا
تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ
كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ وَلَا يَاْبَ كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ
فَلْيَكْتُبْ وَلْيُمْلِلِ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا
يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْئًا فَاِنْ كَانَ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا اَوْ

منزل ١

जो लोग ब्याज खाते हैं (क़ियामत के दिन क़ब्रों से) इस तरह बेहवास उठेंगे जैसे किसी को शैतान ने (अपनी) चपेट से पागल कर दिया हो, यह उनके इस कहने की सज़ा है कि (लाभ की दृष्टि से) जैसा सौदा बेचने का मामला है वैसा ही ब्याज का मामला§ । हालाँकि बेचने (व्यापार) को तो अल्लाह ने हलाल (पाक) किया है और (ब्याज) सूद को हराम (नापाक), तो जिसके पास उसके परवरदिगार की तरफ़ से नसीहत पहुँची और उसने (ब्याज खाना) छोड़ दिया तो जो (सूद) पहले (ले चुका है) वह उसका हुआ और (क़ियामत में) उसका मामला अल्लाह के हवाले, और जो फिर वही काम करेगा तो ऐसे ही लोग नारकी हैं और वह हमेशा नरक (दोज़ख़) ही में पड़े रहेंगे।(२७५) अल्लाह ब्याज (की बरकत) को मिटाता और ख़ैरात (की बरकत) को बढ़ाता है। अल्लाह ऐसे कुफ़्र करनेवाले गुनहगार को दोस्त नहीं रखता। (२७६) बेशक जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये और नमाज़ क़ायम करते और ज़कात देते रहे, उनको उनके कामों का बदला उनके पालनकर्त्ता के यहाँ से मिलेगा। और उन पर न डर होगा और न वह उदास होंगे।(२७७) ऐ ईमानवालो! अल्लाह से डरो, और अगर तुम ईमान रखते हो तो जो सूद बाक़ी है छोड़ बैठो।(२७८) और अगर (ऐसा) न करो तो अल्लाह और उसके रसूल से लड़ने के लिए आगाह हो रहो (यानी तुम्हारे ख़िलाफ़ जिहाद होगा) और अगर तौबः करते हो (और सूद छोड़ देते हो) तो तुम्हारी असल रक़म तुम्हारी ही होगी और न तुम (किसी पर) ज़ुल्म करने पाओगे और न तुम पर कोई ज़ुल्म करने पायेगा†।(२७९) और अगर (कोई तुम्हारा क़र्ज़दार) तंगदस्त हो तो अच्छी हालत (में आने) तक की मुहलत (दो) और अगर (तुमको) समझ आसके तो तुम्हारे हक़ में यह अधिक अच्छा है कि उसका (असल क़र्ज़ भी) छोड़ दो।(२८०) और उस दिन से डरो जब कि तुम (सब) अल्लाह की पेशी में लौटाये जाओगे। फिर हर शख़्स को उसके किये का पूरा-पूरा बदला दिया जायगा और उन पर किसी तरह का अन्याय न होगा।(२८१) ★

● व. लाज़िम

★ रु. ३८/६ आ ८

§ यह कहना कि ब्याज भी दूसरे रोज़गारों की तरह एक धन्धा है, बिलकुल ग़लत है। ब्याज लेने वाला ज़रूतमंद की मजबूरी और मुसीबत का फ़ायदा उठाता है। वह धन के पीछे मुहब्बत, हमदर्दी, नरमी जैसी इन्सानी भावनाओं से दिवालिया होकर शैतान के रास्ते पर जाता है। इसलिए सूदख़ोरी रोज़गार नहीं कुफ़्र है। अगर किसी के पास रुपया-पैसा अपनी ज़ुरूरत से ज़्यादः है तो दूसरों की ज़ुरूरत पर अगर ख़ैरात न कर सकता हो तो बिला सूद उधार तो देना ही चाहिये। वह ज़ुरूरतमंद तुम्हारी नेक नज़र और हमदर्दी का तालिब है। † जिन मुसलमानों ने रुपया ब्याज पर दे रखा था, उनसे कहा गया कि तुम मूल धन ले लो और ब्याज छोड़ दो और अगर ब्याज पर अड़ोगे, तो तुमको अल्लाह और रसूल के विरोध (जिहाद) का सामना करना पड़ेगा।

[पेज ८६ से]♦ लिए आसान नहीं। दिल में उठने वाले विचार भी पकड़ के योग्य ठहराये गये, तब तो बड़ी कठिनाई होगी। इस पर आयत २८५ में रसूलुल्लाह ने फ़र्माया कि अिसाअील (यहूदियों) की जैसी हुज्जत इख़्तियार करना ठीक नहीं। जो हुक्म अल्लाह दे उस सब को बख़ुशी स्वीकार करो और फिर आज्ञा करनेवाले से प्रार्थना करो कि वह तुमको आज्ञा पर अमल करने की शक्ति दे। इस पर सहाबा फ़ौरन कह उठे—हमने हुक्म सुना और तस्लीम किया। ऐ अल्लाह! हमें आज्ञापालन करने की शक्ति दे। हम तेरी कृपा के भिखारी हैं।

[पेज ८६ से]❋ की शरण में जाने की हिदायत है। प्रार्थना है कि हे अल्लाह आपकी हिदायतों पर चलने की पूरी नियत और कोशिश के बावजूद इन्सान जाने-अनजाने अपने फ़र्ज़ से फिसल सकता है। इस लिए हम तेरी ही शरण में हैं। हम पर क्षमा की नज़र रख। अपना अज़ाब या हमारे लिए कसौटी रखने में रहम रख। बन्दा लाचार है और तू सबका मालिक और पूरी सामर्थ्यवाला है।

या' अैयुहल्लजीन आमनू' अिजा तदा यन्तुम् बिदैनिन् अिला' अजलिम्मुसम्मन् फ़क्तुबूहु त् वल्यक्तुब् बैनकुम् कातिबुम्-बिल्अ़द्लि त् व ला यअ्ब कातिबुन् अैंयक्तुब कमा अ़ल्लमहुल्लाहु फ़ल्यक्तुब् ज् वल्युम्लिलिल्लजी अ़लैहिल्हक़्क़ु वल्यत्तक़िल्लाह रब्बहू व ला यब्ख़स् मिन्हु शैअन् त् फ़अिन् कानल्लजी अ़लैहिल्हक़्क़ु सफ़ीहन् औ ज़अ़ीफ़न् औ ला यस्ततीअ़ु अैंयुमिल्ल हुव फ़ल्युम्लिल्-वलीयुहू बिल्अ़द्लि त् वस्तश्हिदू शहीदैनि मिर्रिजालिकुम् ज् फ़अिल्लम् यकूना रजुलैनि फ़रजुलूँवम्रअतानि मिम्मन् तर्ज़ौन मिनश्शुहदा'अि अन् तज़िल्ल अिह्दाहुमा फ़तुजक्किर अिह्दाहुमल्अुख्रा त् व ला यअ्बश्शुहदा'अु अिजा मा दुअ़ू त् व ला तस्अमू' अन् तक्तुबूहु सग़ीरन् औ कबीरन् अिला' अजलिही त् जालिकुम् अक़्सतु अ़िन्दल्लाहि व अक़्वमु लिश्शहादति व अद्ना' अल्ला तर्ताबू' अिल्ला' अन् तकून तिजारतन् हाज़िरतन् तुदीरूनहा बैनकुम् फ़लैस अ़लैकुम् जुनाहुन् अल्ला तक्तुबूहा त् व अश्हिदू' अिजा तबायअ़्तुम् स् व ला युज़ा'र्र कातिबूँव ला शहीदुन् ५ त् व अिन् तफ़्अ़लू फ़अिन्नहू फ़ुसूक़ुम्बिकुम् त् वत्तक़ुल्लाह त् व युअ़ल्लिमुकुमुल्लाहु त् वल्लाहु बिकुल्लि शैअिन् अ़लीमुन् (२८२) व अिन् कुन्तुम् अ़ला सफ़रिंव्वलम् तजिदू कातिबन् फ़रिहानुम्मक़्बूज़तुन् त् फ़अिन् अमिन बअ़्ज़ुकुम् बअ़्ज़न् फ़ल्युअद्दिल्लजिअ्-तुमिन अमानतहू वल्यत्तक़िल्लाह रब्बहू त् व ला तक्तुमुश्शहादत त् व मैंयक्तुम्हा फ़अिन्नहू' आसिमुन् क़ल्बुहू त् वल्लाहु बिमा तअ़्मलून अ़लीमुन् (२८३) ★ लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि त् व अिन् तुब्दू मा फ़ी' अन्फ़ुसिकुम् औ तुख़्फ़ूहु युहासिब्कुम् बिहिल्लाहु त् फ़यग़्फ़िरु लिमैंयशा'अु व युअ़ज्जिबु मैंयशा'अु त् वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैअिन् क़दीरुन् (२८४)

★ रु. ३६/७ आ. २८४

تلك الرسل ٣ ۳۸ البقرة ٢

ضَعِيفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ۭ وَ
اسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ
فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاۗءِ اَنْ تَضِلَّ
اِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ۭ وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَاۗءُ اِذَا مَا
دُعُوْا ۭ وَلَا تَسْــَٔـمُوْٓا اَنْ تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًا اَوْ كَبِيْرًا اِلٰٓى اَجَلِهٖ ۭ ذٰلِكُمْ
اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَاَدْنٰٓى اَلَّا تَرْتَابُوْٓا اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ
تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَلَّا
تَكْتُبُوْهَا ۭ وَاَشْهِدُوْٓا اِذَا تَبَايَعْتُمْ ۠ وَلَا يُضَاۗرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ڛ
وَاِنْ تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰي سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِھٰنٌ
مَّقْبُوْضَةٌ ۭ فَاِنْ اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ
وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ ۭ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ۭ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗٓ اٰثِمٌ
قَلْبُهٗ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝ ع لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ ۭ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ۭ
فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ۝ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۭ
كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰۗىِٕكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۣ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ

منزل ١

ऐ ईमानवालो ! जब तुम एक मियाद मुक़र्रर तक (के लिए) उधार का लेन-देन करो तो उसको लिख लिया करो और (अगर तुमको लिखना न आता हो तो) तुम्हारे बीच में कोई लिखनेवाला इंसाफ़ से (सही सही) लिख दे@ और वह लिखनेवाला लिखने से इन्कार न करे; जिस तरह अल्लाह ने उसको सिखाया है (उसी तरह) उसको भी चाहिए कि (बेउज़्र) लिख दे। और जो शख़्स क़र्ज़ ले (वही दस्तावेज़ का) मतलब बोल कर लिखवाए। और अल्लाह से, जो उसका परवरदिगार है, डरता रहे। और हक़ (क़र्ज़ की रक़म) में किसी क़िस्म की (बतलाने में) कमी न करे। जिसके ज़िम्मे क़र्ज़ आयद है और वह नासमझ हो या कमज़ोर हो और ख़ुद मतलब खुलासा न कर सकता हो तो उसका मुख़्तार इंसाफ़ के साथ (दस्तावेज़ का मतलब) बोलता जाय और अपने लोगों में से दो मर्दों को (ऐसे मुआमले के) गवाह कर लिया करो। फिर अगर दो मर्द न मिल सकें तो एक मर्द और दो औरतों को (गवाह बना लेना) पसंद करो कि उनमें से कोई एक भूल जायगी तो एक दूसरी को याद दिलायेगी और जब गवाह तलब किये जायँ तो इन्कार न करें और मुआमला छोटा हो या बड़ा उसकी मियाद तक उसके लिखने-लिखाने में सुस्ती न करो, यह बात अल्लाह के नज़दीक बहुत ही मुन्सिफ़ाना (न्यायोचित) है। और गवाही के लिए भी यही तरीक़ा बहुत ही ठीक है और इससे तुम्हें किसी तरह का शक और शुबहा न पड़ेगा। हाँ, अगर सौदा दस्त-बदस्त हो जिसको तुम हाथों-हाथ आपस में लिया-दिया करते हो तो (उसके) न लिखने में तुम पर कुछ अपराध नहीं। और जबकि ख़रीद-फ़रोख़्त करो तो (भी एहतियातन) गवाह कर लिया करो और कातिब (लिखनेवाले) को किसी तरह का नुक़सान न पहुँचाया जाय और न गवाह को। और अगर तुम ऐसा करो तो यह तुम्हरे हक़ में गुनाह है, और अल्लाह से डरो; अल्लाह तुमको (यों मुआमले को सफ़ाई) सिखाता है, और अल्लाह सब कुछ जानता है।(२८२) और अगर सफ़र में हो और (वहाँ) तुमको कोई लिखनेवाला न मिले तो (कोई चीज़) रेहन बाक़ब्ज़ा (रखकर क़र्ज़ ले लो।) पस अगर तुममें से एक का एक एतबार करे (यानी बिला गिरवीं रखे क़र्ज़ दे दे) तो जिस पर विश्वास किया गया है (यानी क़र्ज़ लेनेवाला) उसको चाहिए क़र्ज़ देनेवाले की अमानत (यानी क़र्ज़) को (पूरा-पूरा) अदा कर दे और ख़ुदा से जो उसका परवरदिगार है, डरे। और (देखो !) गवाही को न छिपाना, और जो उसको छिपायेगा तो उसका दिल अपराधी होगा§ और जो कुछ (भी) तुम लोग करते हो, अल्लाह को सब मालूम है।(२८३)★

★ रु. ३६/७ आ २

जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है (सब) अल्लाह ही का है और (लोगो !) जो तुम्हारे दिल में है अगर उसको ज़ाहिर करो या उसको छिपाओ अल्लाह तुमसे उसका हिसाब लेगा, फिर वह जिसको चाहे बख़्शे और जिसको चाहे सज़ा दे और अल्लाह हर चीज़ पर क़ाबू रखता (समर्थ) है।(२८४)

@ उधार का लेन-देन हो तो भूल चूक न होने के लिये दो हुक्म हैं; (अ) उसको लिख लेना और (ब) गवाही एक मर्द और दो औरतों की या दो मर्दों की लेना। § आज कल के रायज क़ानून के मुताबिक़ लेना-पावना की मिआद तीन बरस में ख़त्म हो जाती है। और प्रोनोट मौजूद रहने पर भी क़र्ज़दार क़र्ज़ की अदायगी से छुटकारा पा जाता है। इसी तरह गवाह के मर जाने या किसी और मजबूरी का नाजायज़ फ़ायदा उठाना गुनाह में दाख़िल है। भले ही दुनिया के सामने हम पाक-साफ़ बन जाँय, लेकिन हमारे दिलों में उन गुनाहों की अमिट छाप रहती है और अल्लाह के सामने हमारे खोटे दिल ही हमारे खिलाफ़ गवाही देंगे।

आमनर्रसूलु बिमा' अुन्ज़िल अिलैहि मिर्रब्बिहि वल्मुअ्मिनून त़् कुल्लुन् आमन बिल्लाहि व मला'अिकतिहि व कुतुबिहि व रुसुलिहि क़िफ़् ला नुफ़र्रिक़ु बैन अहूदिम्-मिर्रुसुलिहि क़िफ़् व क़ालू समिअ्ना व अतअ्ना क़् ज़् ग़ुफ़्रानक रब्बना व अिलैकल्मसीरु (२८५) ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन् अिल्ला वुस्अहा त़्

लहा मा कसबत् व अलैहा मक्तसबत् त़् रब्बना ला तुआख़िज़्ना' अिन्नसीना' औ अख़्तअ्ना ज़् रब्बना व ला तह्मिल् अलैना' अिस्रन् कमा हमल्तहु अलल्लजीन मिन् क़ब्लिना ज़् रब्बना व ला तुहम्मिल्ना मा ला ताक़त लना बिहि ज़् वअ्फ़ु अन्ना वक़्फ़ः वग़्फ़िर्लना वक़्फ़ः वर्हम्ना वक़्फ़ः अन्त मौलाना फ़न्सुर्ना अलल्क़ौमिल्काफ़िरीन (२८६) ★

★ रु. ४० । ८ आ ३

تلك الرسل ٣ — ٣٩ — آل عمران ٣

أحد من رسله وقالوا سمعنا وأطعنا غفرانك ربنا وإليك المصير ۝ لا يكلف الله نفسا إلا وسعها لها ما كسبت وعليها ما اكتسبت ربنا لا تؤاخذنا إن نسينا أو أخطأنا ربنا ولا تحمل علينا إصرا كما حملته على الذين من قبلنا ربنا ولا تحملنا ما لا طاقة لنا به واعف عنا واغفر لنا وارحمنا أنت مولنا فانصرنا على القوم الكفرين ۝

سورة آل عمران مدنية وهي مائتا آية وعشرون ركوعا

بسم الله الرحمن الرحيم

الم ۝ الله لا إله إلا هو الحي القيوم ۝ نزل عليك الكتب بالحق مصدقا لما بين يديه وأنزل التورىة والإنجيل ۝ من قبل هدى للناس وأنزل الفرقان إن الذين كفروا بآيت الله لهم عذاب شديد والله عزيز ذو انتقام ۝ إن الله لا يخفى عليه شيء في الأرض ولا في السماء ۝ هو الذي يصوركم في الأرحام كيف يشاء لا إله إلا هو العزيز الحكيم ۝ هو الذي أنزل عليك الكتب منه آيت محكمت هن أم الكتب وأخر متشبهت فأما الذين في قلوبهم زيغ فيتبعون ما تشابه منه ابتغاء الفتنة وابتغاء تأويله وما يعلم تأويله

منزل

☪ ३ सूरः आलि अिम्रान ८९ ☪

(मदनी) इसमें अ्रबी में १५३२६ हुरूफ़, ३५४२ कलिमात (शब्द), २०० आयतें, और २० रुकूअ् हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीमि ●

अलिफ़् ला'म् मी'म ला (१) अ्ल्लाहु ला' अिलाह अिल्ला हुव ला अ्ल्हैयुल्क़ैयूमु त़् (२) नज़्ज़ल अलैकल्किताब बिल्हक़्क़ि मुसद्दिक़ल्लिमा बैन यदैहि व अन्ज़लत्तौरात व्ल्अिन्जील ला (३) मिन् क़ब्लु हुदल्लिन्नासि व अन्ज़लल्फ़ुर्क़ान ० त़् अिन्नल्लजीन कफ़रू बिआयातिल्लाहि लहुम् अज़ाबुन् शदीदुन् त़् वल्लाहु अज़ीज़ुन् ज़ुन्तिक़ामिन् (४) अिन्नल्लाह ला यख़्फ़ा अलैहि शैअुन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समा'अि त़् (५) हुवल्लज़ी युसौविरुकुम् फ़िल्अर्हामि कैफ़ यशा'अु त़् ला' अिलाह अिल्ला हुवल्अज़ीज़ुल्हकीमु (६)

रसूल (मुहम्मद स०) उस (किताब) पर ईमान लाये जो उनके परवरदिगार की तरफ़ से उन पर उतरी है, और मोमिन (ईमानवाले) भी सब, अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके पैग़म्बरों पर ईमान रखते हैं (और कहते हैं कि) हम अल्लाह के पैग़म्बरों में से किसी में कुछ अन्तर नहीं समझते† और बोल उठे कि हमने तेरा हुक्म सुना और हुक्म माना§। ऐ हमारे परवरदिगार! हमें तेरी बख़्शीश चाहिए और तेरी ही तरफ़ (हम सबको) लौटकर जाना है।(२८५) अल्लाह किसी शख़्स पर उसकी शक्ति से ज़्यादा बोझ नहीं डालता। उसे मिलेगा वही जो उसने कमाया है और वह भुगतेगा (भी) वही जो उसने किया है। ऐ हमारे परवरदिगार! अगर हमसे अनजान में भूल हो या चूक हो जाय तो हमको न पकड़ (याने बख़्श दे), (और) ऐं हमारे परवरदिगार! जो लोग हमसे पहले गुज़रे हैं, उन पर तूने जैसा (बोझ) डाला था वैसा भारी बोझ(कसौटी)हम पर न डाल। ऐ हमारे पालनकर्त्ता! जितना बोझ उठाने की हममें ताक़त नहीं है, उसे हमसे न उठवा और हमारे अपराधों पर ध्यान न दे और हमारे गुनाहों को माफ़ कर और हम पर रहम कर। तू ही हमारा सवाँरनेवाला है सो हमें काफ़िरों पर ग़ालिब (प्रबल) कर‡।(२८६)★

★ रु. ४० / ८ आ ३

☪ ३ सूरः आलि अिम्रान ८९ ☪

(मदनी) इसमें १५३२६ अरबी के हुरूफ़, ३५४२ शब्द, २०० आयतें और २० रुकूअ़ हैं।⁂

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीमि। ●

(शुरूअ़) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहमवाला बेहद मेहरबान (है)।

अलिफ़्, लाम्, मीम् (१) अल्लाह के सिवाय कोई इलाह (पूजित) नहीं। ज़िन्दः (चैतन्य और अविनाशी व जगत् का) सँभालनेवाला है।(२) (ऐ पैग़म्बर!) उसने तुम पर सच्ची किताब उतारी, जो उन (आसमानी किताबों) की तसदीक़ (समर्थन) करती है, जो उससे पहले (उतर चुकी) हैं और (इसी तरह) उसने पहले लोगों को हिदायत के लिए तौरात और इन्जील उतारी थीं, उसी ने (और चीज़ों को भी) नाज़िल किया जिनसे (सच-झूठ का) भेद (ज़ाहिर) होता है।(३) बेशक जो लोग अल्लाह की आयतों को (सुनकर) इन्कारी हैं, उनके लिए सख़्त सज़ा है, और अल्लाह ज़बरदस्त है (और) बदला लेने वाला है।(४) बेशक अल्लाह ऐसा (सर्वदृष्टा) है कि उससे कोई चीज़ ज़मीन में और आसमान में छिपी नहीं।(५) वही है जो मा के पेट में जैसी चाहता है, तुम लोगों की सूरतें बनाता है। उसके सिवाय कोई अिबादत के क़ाबिल नहीं। वह बड़ा ज़बरदस्त है (और) बड़ा हिकमतवाला है।(६)

† अल्लाह ने समय समय पर हर जगह नबी भेज कर जब जो मुनासिब समझा आज्ञाएँ भेजीं। हम उन सब की देश-जाति की परवाह न कर ताज़ीम करते हैं। अल्लाह के काम में हम फ़र्क़ डालने के हक़दार या लायक़ नहीं। § २८४ आयत का हवाला यों है कि सहाबा ने रसूलुल्लाह से अर्ज़ की कि इस आयत का असर तो हमारे दिल में उठने वाली वासनाओं और विचारों तक पहुँचता है। दिल पर पूरा क़ाबू रखना इन्सान के ◆ [पेज ६५ पर देखें]
‡ आयत २८६में सूरे बक़र की समाप्ति है। सारी आज्ञाओं के बाद फिर ईमानवाले को अल्लाह ❋ [पेज६५पर देखें]

⁂ इस सूरः में हज़रत मूसा अ० के पिता अिम्रान और उनके लोगों का ज़िक्र है। इस लिए सूरः का नाम उन्हीं के नाम पर रख दिया गया। सूरः आलि अिम्रान सूरः बक़र के ही एक ततिम्मा (परिशिष्ट) के समान है। फ़र्क़ यह है कि सूरः बक़र में यहूदियों को मुख़ातिब किया गया है और सूरः आलि अिम्रान में इसाइयों से इस्लाम पर ईमान लाने को ज़्यादः दावत दी गई है। यह सूरत जंग बदर और जंग ऊहद दो और तीन [पेज११७पर देखें]

व. न. स. ● व. मं. व. ला

हुवल्लजी अन्ज़ल अलैकल्किताब मिन्हु आयातुम्मुह्कमातुन् हुन्न अुम्मुल्-किताबि व अुख़रु मुतशाबिहातुन् तृ फ़अम्मल्लजीन फ़ी क़ुलूबिहिम् ज़ैग़ुन् फ़यत्तबिअून मा तशाबह मिन्हुब्तिग़ा अल्-फ़ित्नति वब्तिग़ा अ तअ्वीलिही ज् ● व मा यअ्लमु तअ्वीलहू अिल्लल्लाहु म् ● वर्रासिख़ून फ़िल्अिल्मि यक़ूलून आमन्ना बिही ला कुल्लुम्मिन् अिन्दि रब्बिना ज् व मा यज्जक्करु अिल्ला अुलुल्-अल्बाबि (७) रब्बना ला तुज़िग़् क़ुलूबना बअ्द अिज् हदैतना व हब् लना मिल्लदुन्क रह्मतन् ज् अिन्नक अन्तल्वह्हाबु (८) रब्बना अिन्नक जामिअुन्नासि लियौमिल्ला रैब फ़ीहि तृ अिन्नल्लाह ला युख़्लिफ़ुल्मीआद (९) ★ अिन्नल्लजीन कफ़रू लन् तुग़्निय अन्हुम् अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन् तृ व अुला अिक हुम् व क़ूदुन्नारि ला (१०) कदअ्बि आलि फ़िर्औन ला वल्लजीन मिन् क़ब्लिहिम् तृ कज्जबू बिआयातिना ज् फ़अख़जहुमुल्लाहु बिज़ुनूबिहिम् तृ वल्लाहु शदीदुल्अिक़ाबि (११) क़ुलिल्लल्लजीन क़फ़रू सतुग़्लबून व

تلك الرسل ٣ — ٣٠ — آل عمران ٣

اِلَّا اللّٰهُ ۘ وَالرّٰسِخُوْنَ فِی الْعِلْمِ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ
وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا
وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝ رَبَّنَاۤ اِنَّكَ جَامِعُ
النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِیَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَ
اُولٰٓئِكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ۝ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝
قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ
الْمِهَادُ ۝ قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِیْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ؕ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِیْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْیَ الْعَيْنِ ؕ وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ
بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِی الْاَبْصَارِ ۝ زُيِّنَ لِلنَّاسِ
حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ
وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ۝ قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ
لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا
وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۝ اَلَّذِيْنَ
يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اِنَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

منزل

रु. १ | ६ आ ६

तुह्शरून अिला जहन्नम तृ व बिअ्सल्मिहादु (१२) क़द् कान लकुम् आयतुन् फ़ी फ़िअतैनिल्तक़ता तृ फ़िअतुन् तुक़ातिलु फ़ी सबीलिल्लाहि व अुख़्रा काफ़िरतुंय्यरौनहुम् मिस्लैहिम् रअ्यल्अैनि तृ वल्लाहु युअैयिदु बिनस्रिही मैंयशा अु तृ अिन्न फ़ी जालिक लअिब्रतल्लिअुलिल् - अब्सारि (१३) जुय्यिन लिन्नासि हुब्बुश्शहवाति मिनन्निसा अि वल्बनीन वल्क़ना तीरिल्मुक़न्तरति मिनज्जहबि वल्फ़िज़्ज़ति वल्ख़ैलिल्मुसौवमति वल्अन्आमि वल्हर्सि तृ जालिक मताअुल्ह्याविद्दुन्या ज् वल्लाहु अिन्दहू हुस्नुल्मआबि (१४) क़ुल् अअुनब्बिअुकुम् बिख़ैरिम्मिन् जालिकुम् तृ लिल्लजीनत्तक़ौ अिन्द रब्बिहिम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्अन्हारु ख़ालिदीन फ़ीहा व अज़्वाजुम् - मुतह्हरतुंव रिज़्वानुम्मिनल्लाहि तृ वल्लाहु बसीरुम्बिल्अिबादि ज् (१५) अल्लजीन यक़ूलून रब्बना अिन्नना आमन्ना फ़ग़्फ़िर्लना ज़ुनूबना व क़िना अज़ाबन्नारि ज् (१६)

(ऐ पैग़म्बर !) वही है जिसने तुम पर (यह) किताब उतारी जिसमें से बाज़ आयतें मुहकम (पक्की)† हैं (और) वही किताब का आधार हैं और बाज़ (आयतें) मुतशाबिह हैं‡ तो जिन लोगों के दिलों में कजी (कुटिलता) है वह क़ुर्आन की उन्हीं मुतशाबिह आयतों के पीछे हो लेते हैं, ताकि उनकी (मनचाही) कल बिठायें और विरोध पैदा करें ● हालाँकि अल्लाह के सिवाय उनका (असली) मतलब किसी को मालूम नहीं‡ ● और जो लोग इल्म में बड़ी पैठ रखते हैं वह तो इतना ही कहते हैं कि इन पर हमारा ईमान है। (यह) सब हमारे परवरदिगार की तरफ़ से हैं और शिक्षा उन्हीं के पल्ले पड़ती है जिनको बुद्धि है। (७) (वे बुद्धिवाले कहते हैं) ऐ परवरदिगार ! हमको सीधी राह दिखाने के बाद हमारे दिलों को डावाँडोल न कर और अपनी सरकार से हम पर रहमत (कृपा प्रदान) कर, कोई शक नहीं तूही बड़ा देनेवाला है (८) ऐ पालनहार ! तू उस दिन जिस (के आने) में कुछ भी शक नहीं सब लोगों को (अपने दरबार में) जमा करेगा। बेशक अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं जाता। (९) ★

बेशक जो लोग काफ़िर हैं, (उस दिन) अल्लाह के सामने न तो उनके माल ही कुछ काम आयेंगे और न उनकी औलाद ही (उन्हें सज़ा से बचा सकेगी) और यही (नरक की) आग के ईंधन होंगे। (१०) (इनकी भी) फ़िरऔनवालों और उनसे पहले के लोगों जैसी गति होनी है कि जिन्होंने आयतों को झुठलाया, तो अल्लाह ने उनको उनके गुनाहों के बदले धर पकड़ा, और अल्लाह की मार बड़ी सख़्त है (११) (ऐ पैग़म्बर !) जो लोग इन्कारी हैं, उनसे कह दो कि कोई दिन (जल्दी ही) आता है कि तुम (मुसलमानों के हाथों) परास्त होओगे और (आख़िरत में) जहन्नम (नरक) की तरफ़ हँकाये जाओगे (और) वह (जहन्नम) कैसा बुरा ठिकाना है। (१२) अभी उन दो गिरोहों में तुम्हारे लिए (ख़ुदाई-क़ुदरत) की निशानी (प्रमाण) हो चुकी है, जो एक-दूसरे से (बदर के युद्ध में) लड़ गये। एक गिरोह (मुसलमानों का) तो अल्लाह की राह पर लड़ता था और दूसरा (गिरोह) काफ़िरों का था, जिनको अपनी आँखों से (मुसलमानों का गिरोह) अपने से दूना दिखलाई दे रहा था और अल्लाह अपनी मदद से जिसको चाहता है बल देता है@। (इसमें संदेह नहीं कि) जो लोग सूझ रखते हैं, उनके लिए इन (घटनाओं) में नसीहत है। (१३) (अक्सर) लोगों को (उनकी) दिलपसन्द चीज़ें (मसलन) बीवियों और बेटों और सोने चाँदी के बड़े-बड़े ढेरों और नम्बर पड़े हुये (अच्छे पालतू) घोड़ों और चौपायों और खेती के साथ प्रेम मालूम होता है (लेकिन) यह (तो) दुनिया की ज़िन्दगी के (क्षणिक) सामान हैं और अच्छा ठिकाना☸ तो उसी अल्लाह के यहाँ है। (१४) (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि मैं तुमको इन (चीज़ों से) कहीं अच्छी चीज़ बताऊँ, (वह यह) कि जो लोग अल्लाह से डरते हैं उनके लिए उनके परवरदिगार के यहाँ (बहिश्त में) बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं (और वह) उनमें हमेशा रहेंगे। और पाक-साफ़ औरतें[] हैं और (सब से बढ़कर) अल्लाह की ख़ुशी (मिलती) है और अल्लाह (अपने नेक) बन्दों को देख रहा है। (१५) (यही लोग हैं) जो कहते हैं कि ऐ हमारे पालनकर्त्ता ! हम बेशक ईमान ले आये हैं, सो तू हमारे गुनाह माफ़ कर और हमको (नरक की) आग के अज़ाब से बचा। (१६)

† क़ुर्आन में दो तरह की आयतें हैं—एक मुहकम, दूसरी मुतशाबिह। मुहकम (पक्की) वह [पेज १०३ पर]
‡ यहाँ ज० शिया मुफ़स्सिरीन (भाष्यकार) वक़्फ़ लाज़िम को न मान कर यूँ पढ़ते हैं—"हालाँकि उनका (असली) मतलब किसी को मालूम नहीं सिवा अल्लाह के और उनके जिनकी इल्म में बड़ी पैठ है"
@ इन आयतों में बदर के युद्ध की ओर संकेत किया गया है। इसमें मुसलमानों की संख्या काफ़िरों से तिहाई केवल ३१३ थी; लेकिन अल्लाह की कृपा से मुसलमान, काफ़िरों को अपने से दूने लगभग दो हज़ार दिखाई [पेज ९१ पर]
☸ अक्सर लोगों को धन-परिवार और संसार के सुख से इतना मोह होता है कि वे इनके बिछोह के भय से अपने दीनी फ़र्ज़ से जान [पेज ९१ पर]
[] 'औरतें' से मतलब यहाँ जीवन-संगी है। स्त्रियों के लिए पुरुष और पुरुषों के लिए स्त्री।

व. न. स. ● व. ग. व. ला ★ रु. १ | ६ आ ६

अस्साबिरीन वस्सादिक़ीन वल्क़ानितीन वल्मुन्फ़िक़ीन वल्मुस्तग़्फ़िरीन बिल्अस्हारि (१७) शहिदल्लाहु अन्नहू ला अिलाह अिल्ला हुव ला वल्मला अिकतु व अुलुल्अिल्मि क़ा अिमम्-बिल्क़िस्ति त़् ला अिलाह अिल्ला हुवल् - अज़ीज़ुल्-हकीमु त़् (१८) ● अिन्नद्दीन अिन्दल्लाहिल् - अिस्लामु क़िफ़् व मख़्तलफ़ल्लज़ीन अूतुल्किताब अिल्ला मिम्बअ़्दि मा जा अ हुमुल्अिल्मु बग़्यम्बैनहुम् त़् व मैंयक्फ़ुर् बिआयातिल्लाहि फ़अिन्नल्लाह सरीअुल्हिसाबि (१९) फ़अिन् हा ज्जूक फ़क़ुल् अस्लम्तु वज्हिय लिल्लाहि व मनित्तबअ़नि त़् व क़ुल्लिल्लज़ीन अूतुल्किताब वल्अुम्मीयीन अअस्लम्तुम् त़् फ़अिन् अस्लमू फ़क़दिह्तदौ ज् व अिन् तवल्लौ फ़अिन्नमा अलैकल्बलाग़ु त़् वल्लाहु बसीरुम्-बिल्अिबादि (२०) ★ अिन्नल्लज़ीन यक्फ़ुरून बिआयातिल्लाहि व यक़्तुलूनन्नबीयीन बिग़ैरि हक़्क़िन् ला व यक़्तुलूनल्लज़ीन यअ्मुरून बिल्क़िस्ति मिनन्नासि ला फ़बश्शिर्हुम् बिअ़ज़ाबिन् अलीमिन् (२१) अुला अिकल्लज़ीन हबितत् अअ़्मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति ज् व मा लहुम्मिन्नासिरीन (२२) अलम् तर अिलल्लज़ीन अूतू नसीबम्मिनल्किताबि युद्अौन अिला किताबिल्लाहि लियह्कुम बैनहुम् सुम्म यतवल्ला फ़रीक़ुम्मिन्हुम् व हुम्मुअ़्रिज़ून (२३) ज़ालिक बिअन्नहुम् क़ालू लन् तमस्सनन्नारु अिल्ला अैयामम्मअ़्दूदातिन् स़् व ग़र्रहुम् फ़ी दीनिहिम् मा कानू यफ़्तरून (२४) फ़कैफ़ अिज़ा जमअ़्नाहुम् लियौमिल्ला रैब फ़ीहि क़िफ़् व वुफ़्फ़ियत् कुल्लु नफ़्सिम्मा कसबत् व हुम् ला युज़्लमून (२५)

الصبرين والصدقين والقنتين والمنفقين والمستغفرين
بالاسحار ۝ شهد الله انه لا اله الا هو والملئكة واولوا العلم قائما
بالقسط لا اله الا هو العزيز الحكيم ۝ ان الدين عند الله
الاسلام وما اختلف الذين اوتوا الكتب الا من بعد ما جاءهم
العلم بغيا بينهم ومن يكفر بايت الله فان الله سريع الحساب ۝
فان حاجوك فقل اسلمت وجهي لله ومن اتبعن وقل للذين
اوتوا الكتب والامين ءاسلمتم فان اسلموا فقد اهتدوا وان
تولوا فانما عليك البلغ والله بصير بالعباد ۝ ان الذين يكفرون
بايت الله ويقتلون النبين بغير حق ويقتلون الذين يامرون
بالقسط من الناس فبشرهم بعذاب اليم ۝ اولئك الذين
حبطت اعمالهم في الدنيا والاخرة وما لهم من نصرين ۝
الم تر الى الذين اوتوا نصيبا من الكتب يدعون الى كتب الله
ليحكم بينهم ثم يتولى فريق منهم وهم معرضون ۝ ذلك بانهم
قالوا لن تمسنا النار الا اياما معدودت وغرهم في دينهم
ما كانوا يفترون ۝ فكيف اذا جمعنهم ليوم لا ريب فيه و
وفيت كل نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ۝ قل اللهم ملك
الملك تؤتي الملك من تشاء وتنزع الملك ممن تشاء وتعز

(और ये लोग) सब्र करनेवाले हैं और सच्चे और (अल्लाह की) बन्दगी में लगे और (अल्लाह की राह में) ख़र्च करनेवाले और रात के अंतिम समय में (उठ-उठकर) गुनाहों की माफ़ी चाहनेवाले हैं। (१७) अल्लाह इस बात की गवाही देता है कि उसके (एक अल्लाह के) सिवाय कोई भी पूज्य नहीं। और फ़रिश्ते और इल्मवाले भी (गवाही देते हैं) कि वही इन्साफ़ के साथ (सब कुछ) सँभालनेवाला है। उस ज़बरदस्त और हिकमतवाले (सर्वशक्तिमान और ज्ञानमय) के सिवाय और कोई इलाह (पूज्य) नहीं। (१८) बेशक दीन (धर्म) तो अल्लाह के नज़दीक (यही) इस्लाम है, और किताबवालों (यानी यहूदी और नसरानियों) ने प्रमाण पाने के बाद भी [इस्लाम से इख़्तिलाफ़ (वैमनस्य) किया तो यह सिर्फ़] बढ़ा-चढ़ी (आपस की ज़िद्) से विरोध किया, और जान लो जो शख़्स अल्लाह की आयतों से इन्कारी हुआ, तो अल्लाह को हिसाब लेते कुछ देर नहीं लगती। (१९) (पस ऐ पैग़म्बर!) अगर इस पर भी ये लोग तुमसे हुज्जत किये जाँय, तो कह दो कि (ख़ैर) मैंने और मेरे पैरो (अनुयायियों) ने तो अल्लाह के आगे अपना सिर झुका दिया है। और (ऐ पैग़म्बर!) किताबवालों और जाहिलों (अरब के मुशरिकों) से पूछो कि तुम भी इस्लाम पर ईमान लाते हो (या नहीं)। अगर इस्लाम ले आयें, तो (बेशक वे) सच्चे रास्ते पर आ गये और अगर मुँह मोड़ें, तो तुम्हारा ज़िम्मा† (सिर्फ़ अल्लाह का पैग़ाम) पहुँचा देना (ही) है और अल्लाह (अपने) बन्दों को ख़ूब देख रहा है। (२०)

नि. १/२ रु. २/१० आ ११

(बेशक) जो लोग अल्लाह की आयतों से इन्कार करते हैं और बेमतलब पैग़म्बरों को क़त्ल करते और उन लोगों को (भी) क़त्ल करते जो इन्साफ़ (करने) को कहते हैं, तो ऐसे लोगों को (अल्लाह की ओर से) दर्दनाक सज़ा की ख़ुशख़बरी सुना दो§। (२१) यही हैं जिनका सब किया-कराया दुनिया और आख़िरत (दोनों) में अकारथ है और कोई उनका मददगार नहीं (होगा)। (२२) (ऐ पैग़म्बर!) क्या तुमने उन पर निगाह नहीं डाली, जिनको किताब में से एक हिस्सा (तौरात) मिला था। उनको (अल्लाह की इस) किताब की तरफ़ बुलाया जाता है, ताकि (वह किताब) उनमें फ़ैसला कर (विरोध मिटा) दे। इस पर भी उनमें का एक गिरोह बेरुख़ी से मुँह फेर लेता है (कुटिलता से मनमाने अर्थ गढ़ता है) @। (२३) यह इसलिए कि उनका दावा है कि हमको नरक की आग छुएगी भी तो बस गिनती के थोड़े ही दिन, और जो मनगढ़ंत वे दीन की बाबत कहते रहे हैं, उन्हीं बातों ने इनको इनके दीन के बारे में धोखा (भ्रम) दे रखा है। (२४) सो उस (क़ियामत के) दिन जिसके आने में कुछ भी शक नहीं, कैसी गत बनेगी जबकि हम उनको जमा करेंगे और हर शख़्स को जैसा उसने (दुनिया में) क़माया है, पूरा-पूरा भर दिया जायगा और लोगों पर (ज़रा भी) ज़ुल्म (अन्याय) नहीं होगा। (२५)

[पेज १०१ से] वाक्य हैं जिनका अर्थ बिल्कुल साफ़ है और इसलिए उनका समझना सहज है। मुतशाबिह वे हैं जिनकी शब्द-रचना ऐसी है कि उनसे कई अर्थ निकल सकते हैं। हालाँकि अर्थ तो सही एक ही होता है। इसलिए इनमें माने निकालने की धुन में न पड़ना चाहिये। इससे अपने व दूसरों को भरमावेंगे। कुछ का ख़याल हुरूफ़ मुक़त्तआत से है यानी वे अक्षर जिनका मतलब सिवा अल्लाह के कोई नहीं जानता, जैसे अलिफ़् लाम् मीम्। मुसलमान मुहकम आयतों पर अमल और मुतशाबिह पर यक़ीन रखते हैं। उनके मतलब के पीछे नहीं पड़ते।

† नबी का काम यही है कि जो आदेश या ज्ञान ईश्वर की ओर से उसको मिले उसे लोगों को पहुँचा दे। मानना या न मानना सुननेवालों का काम है। § कहते हैं कि एक एतवार की सुबह को यहूदियों ने ४३ पैग़म्बरों का वध किया फिर उनको धिक्कारने व समझाने वाले ११२ लोगों को भी उसी दिन शाम को क़त्ल कर दिया। ऐसे नाहक़ ज़ुल्म करने वालों को दर्दनाक सज़ा मिलनी है। @ आकाशी ग्रंथ तौरात के अर्थों का स्वार्थी विद्वान अनर्थ करने लगे थे। इस प्रकार अपने मान्य धर्मग्रन्थ से भी विमुख थे। ‡ देखें नोट † सफ़ा ४१ पारा पहला में।

क़ुलिल्लाहुम्म मालिकल्मुल्कि तुअ्तिलमुल्क मन् तशा'अु व तन्ज़िअुलमुल्क मिम्मन् तशा'अु ज् व तुअिज़्ज़ु मन् तशा'अु व तुजिल्लु मन् तशा'अु त् बियदिकल्ख़ैरु त् अिन्नक अला कुल्लि शैअिन् क़दीरुन् (२६) तूलिजुल्लैल फ़िन्नहारि व तूलिजुन्नहार फ़िल्लैलि ज् व तुख़्रिजुल् - हैय मिनल्मैयिति व तुख़्रिजुल् - मैयित मिनल्हैयि ज् व तर्ज़ुक़ु मन् तशा'अु बिग़ैरि हिसाबिन् (२७) ला यत्तख़िज़िल् - मुअ्मिनूनल् - काफ़िरीन औलिया'अ मिन्दूनिल्-मुअ्मिनीन ज् व मैंयफ़्अल् जालिक फ़लैस मिनल्लाहि फ़ी शैअिन् अिल्ला' अन् तत्तक़ू मिन्हुम् तुक़ातन् त् व युहज़्ज़िरुकुमुल्लाहु नफ़्सहू त् व अिलल्लाहिल्मसीरु (२८) क़ुल् अिन् तुख़्फ़ू मा फ़ी सुदूरिकुम् औ तुब्दूहु यअ़्लम्हुल्लाहु त् व यअ़्लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िलअर्ज़ि त् वल्लाहु अला कुल्लि शैअिन् क़दीरुन् (२९) यौम तजिदु कुल्लु नफ़्सिम्मा अमिलत् मिन् ख़ैरिम्मुह्ज़रन् ज् सला ∴ ०'व मा अमिलत् मिन्सू'अिन् ज् ∴ तवद्दुलौ अन्न बैनहा व बैनहू' अमदम्बअीदन् त् व युहज़्ज़िरुकुमुल्लाहु नफ़्सहू त् वल्लाहु रअूफ़ुम्-बिल्अिबादि (३०) ★ क़ुल् अिन् कुन्तुम् तुहिब्बूनल्लाह फ़त्तबिअूनी युह्बिब्कुमुल्लाहु व यग़्फ़िर्लकुम् ज़ुनूबकुम् त् वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीमुन् (३१) क़ुल् अतीअुल्लाह वर्रसूल ज् फ़अिन् तवल्लौ फ़अिन्नल्लाह ला युहिब्बुलकाफ़िरीन (३२) अिन्नल्लाहस्तफ़ा' आदम व नूहौंव आल अिब्राहीम व आल अिम्रान अलल्आलमीन ला (३३) ज़ुर्रीयतम्बअ़्ज़ुहा मिम्बअ़्ज़िन् त् वल्लाहु समीअुन् अलीमुन् ज् (३४) अिज़् क़ालतिम्रअतु अिम्रान रब्बि अिन्नी नज़र्तु लक मा फ़ी बत़्नी मुहर्ररन फ़तक़ब्बल् मिन्नी ज् अिन्नक अन्तस्समीअुल्अलीमु (३५)

تلك الرسل ٣ ٣٢ آل عمران

مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ؕ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ
قَدِيْرٌ ۝ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ ۫ وَتُخْرِجُ
الْحَیَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَیِّ ۫ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ
دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِىْ
شَیْءٍ اِلَّاۤ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰىةً ؕ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ؕ
وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝ قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِىْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ
يَعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ وَيَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى
كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ۝ يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ
مُّحْضَرًا ۚ وَمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْٓءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗۤ
اَمَدًا بَعِيْدًا ؕ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ بِالْعِبَادِ ۝ قُلْ
اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِىْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ
اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰۤى اٰدَمَ وَنُوْحًا وَّاٰلَ
اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ ذُرِّيَّةًۢ بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ ؕ
وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّىْ نَذَرْتُ
لَكَ مَا فِىْ بَطْنِىْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّىْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

منزل

मु. अि. मु. ता. ४ ★ रु. ३ | ११ आ. १०

(ऐ पैग़म्बर !) कहो कि (ऐ अल्लाह !) ऐ तमाम मुल्क के मालिक ! तू जिसको चाहे राज्य दे और जिससे चाहे राज्य छीन ले। और तू जिसको चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे। (हर तरह की) ख़ूबी तेरे ही हाथ में है। बेशक तू हर चीज़ पर समर्थ है।(२६) तू (ही) रात को दिन में दाख़िल करता है और तू (ही) दिन को रात में दाख़िल करता है। और तू बेजान से जानदार (जैसे अण्डे से बच्चे) और जानदार से बेजान (जैसे पक्षियों से अण्डे) पैदा करता है। और जिसको चाहे तूही बेहिसाब रोज़ी दे।(२७) मुसलमानों को चाहिए कि मुसलमानों को छोड़ कर काफ़िरों को (अपना) दोस्त न बनावें और जो वैसा करेगा, तो उससे और अल्लाह से कुछ (सरोकार) नहीं@; हाँ, अगर किसी तरह पर उनसे (अपना) बचाव करना चाहो (मसलहतन तो नाजायज़ नहीं)। और अल्लाह तुमको अपने (ग़ज़ब) से डराता है और (अन्त में) अल्लाह की ही तरफ़ (लौट कर) जाना है।(२८) (ऐ पैग़म्बर ! लोगों से) कह दो कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, उसे छिपाओ या उसे ज़ाहिर कर दो, वह (सब) अल्लाह को मालूम है और जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, अल्लाह सब जानता है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर (शक्तिशाली) है।(२९) (लोगो उस ! दिन को ध्यान में रखो) जब कि हर शख़्स अपनी की हुई भलाई और अपनी की हुई बुराई (के फल) को सामने देखेगा और इच्छा करेगा कि उसमें और उसके (कुकर्मों के फल) में यदि बड़ी दूरी होती (अर्थात् यदि वह आमाल उसे न भुगतने पड़ते) और अल्लाह तुमको अपने (ग़ज़ब) से डराता है और अल्लाह (अपने) बन्दों पर बड़ा मेहरबान है।(३०)★

★ रु. ३ ११ आ १०

(ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कह दो कि अगर तुम अल्लाह से प्रेम रखते हो, तो मेरी पैरवी करो ताकि अल्लाह (भी) तुमसे प्रेम रखे। और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दे, और अल्लाह बड़ा माफ़ करनेवाला (और) बड़ा मेहरबान है।(३१) (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कह दो कि अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा पालन करो। फिर अगर यह (लोग) न मानें तो (जान लें कि) अल्लाह हुक्म न माननेवालों (अवज्ञाकारियों) को पसन्द नहीं करता।(३२) अल्लाह ने दुनिया जहान के लोगों पर आदम और नूह और इब्राहीम के वंश और इमरान के ख़ानदान को (श्रेष्ठ) चुन लिया।(३३) इनमें से बाज़, बाज़ की औलाद थे और अल्लाह सुननेवाला (और) जानने वाला है।(३४) (वह समय याद करो) कि (मरियम के पिता) इमरान की बीवी ने अर्ज़ किया कि ऐ (मेरे) परवरदिगार ! मेरे पेट में जो (बच्चा) है उसको मैं (दुनिया के कामों से) आज़ाद करके तेरी भेंट करती हूँ, तू उसे मेरी तरफ़ से क़बूल कर, तू (सब कुछ) सुननेवाला (और) (सब कुछ) जाननेवाला है।(३५)

@ जब कभी कोई मुअम्मा या ग़ौरतलब वाक़िया दरपेश होता तब अल्लाह का संदेश नाज़िल होता था। उस मौक़े को मद्दे नज़र रखकर ही उस आयत के सही मंशा पर पहुँचा जा सकता है। हर मुक़ाम पर उस आयत को चस्पा करने से ग़लतफ़हमी का अन्देशा रहता है। शुरू में, रसूलल्लाह स० व मुसलमानों को ग़ैरमुस्लिमों और ख़ास तौर पर क़ुरैश मुशरिकों के कारन जान के लाले पड़े थे। घरों से उजाड़े गये। अल्लाह की अिबादत व अपने तरीक़े की नमाज़ भी खुले आम न पढ़ सकते थे। इन्हीं या इन जैसे ग़ैरमुस्लिमों की तरफ़ इशारा करते हुये यह हुक्म क़ुआंन में बार बार आया है कि ऐसों के साथ कभी दोस्ती न करो, उन्हें मारो, क़त्ल करो जब तक वे बाज़ न आयें। मुसलमान व ग़ैरमुस्लिम कभी इस ग़लतफ़हमी में न पड़ें कि यह हुक्म अमनपसंद तमाम ग़ैरमुस्लिमों के लिए है। जनाब मौलाना मुहम्मद ओवैस साहब नदवी, शेख़ुलतफ़सीर, दारुल अुलूम नदवतुल अुलमा, लखनऊ की तहरीर है—"क़ुआंन मजीद में मुसलमानों को जिन ग़ैरमुस्लिमों से बेतअल्लुक़ रहने का हुक्म दिया गया है उनसे मुराद वे लोग हैं जो इस्लाम और मुसलमानों की दुश्मनी कर रहे हैं। लेकिन जो लोग न मुसलमानों से लड़ते हैं, न उनको घरों से निकालने की फ़िक्र करते हैं, उनके साथ हमदर्दी और मुहब्बत से नहीं रोका है। जैसा कि पारा २८ में सूरे मुम्तहना के दूसरे रुकूअ आयात ८-९ में इसकी तफ़सील मौजूद है।

फ़लम्मा वज़अ़त्हा क़ालत् रब्बि अिन्नी वज़ऽतुहा अुन्सा त् वल्लाहु अ़ऽलमु बिमा वज़अ़त् त् व लैसज़्ज़करु कल्अुन्सा ज् व अिन्नी सम्मैतुहा मर्यम व अिन्नी अुअ़ीज़ुहा बिक व ज़ुर्रीयतहा मिनश्शैतानिर्रजीमि (३६) फ़तक़ब्बलहा रब्बुहा बिक़बूलिन् ह़सनिंव्व अम्बतहा नबातन् ह़सनन् ला व्व कफ़्फ़लहा ज़करीया ज् त् कुल्लमा दख़ल अ़लैहा ज़करीयल्मिह़्राब ला वजद अ़िन्दहा रिज़्क़न् ज् क़ाल या मर्यमु अन्ना लकिहाजा त् क़ालत् हुव मिन् अ़िन्दिल्लाहि त् अिन्नल्लाह यर्ज़ुक़ु मैंयशाअु बिग़ैरि ह़िसाबिन् (३७) हुनालिक दअ़ा ज़करीया रब्बहू ज् क़ाल रब्बि हब्ली मिल्लदुन्क ज़ुर्रीयतन् तैयिबतन् ज् अिन्नक समीअ़ुद्दुआ़अि (३८) फ़नादत्हुल्-मलाअिकतु व हुव क़ाअिमुंय्युसल्ली फ़िल्मिह़्राबि ला अन्नल्लाह युबश्शिरुक बियह़्या मुसद्दिक़म्-बिकलिमतिम् - मिनल्लाहि व सैयिदौंव ह़सूरौंव नबीयम्मिनस्सालिह़ीन (३९) क़ाल रब्बि अन्ना यकूनु ली ग़ुलामूंव क़द् बलग़नियल्किबरु वम्रअती आ़क़िरुन् त् क़ाल कज़ालिकल्लाहु यफ़्अ़लु मा यशाअु (४०) क़ाल रब्बिज्अ़ल्ली आयतन् त् क़ाल आयतुक अल्ला तुकल्लिमन्नास सलासत अैयामिन् अिल्ला रम्ज़न् त् वज़्कुर्रब्बक कसीरौंव सब्बिह़् बिल्अ़शीयि वल्अिब्कारि (४१) ★ व अिज़् क़ालतिल्-मलाअिकतु या मर्यमु अिन्नल्लाहस्तफ़ाकि व तह़्हरकि वस्तफ़ाकि अ़ला निसाअिल्आ़लमीन (४२) या मर्यमुक़्नुती लिरब्बिकि वस्जुदी वर्कअ़ी मअ़र्राकिअ़ीन (४३) ज़ालिक मिन् अम्बाअिल्ग़ैबि नूह़ीहि अिलैक त् व मा कुन्त लदैहिम् अिज़् युल्क़ून अक़्लामहुम् अैयुहुम् यक्फ़ुलु मर्यम त् व मा कुन्त लदैहिम् अिज़् यख़्तसिमून (४४)

★ रु. ४ / १२ आ. ११

तلك الرسل ٣ — ٤٢ — آل عمران ٣

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَى وَاللهُ أَعْلَمُ بِمَا
وَضَعَتْ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنْثَى وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّي
أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ ۝ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا
بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنْبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا كُلَّمَا
دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا قَالَ يٰمَرْيَمُ أَنّٰى
لَكِ هٰذَا قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللهِ إِنَّ اللهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ
حِسَابٍ ۝ هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً
طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ۝ فَنَادَتْهُ الْمَلٰئِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي
الْمِحْرَابِ أَنَّ اللهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِنَ اللهِ وَ
سَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِنَ الصّٰلِحِينَ ۝ قَالَ رَبِّ أَنّٰى يَكُونُ
لِي غُلٰمٌ وَقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِي عَاقِرٌ قَالَ كَذٰلِكَ اللهُ
يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۝ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِي آيَةً قَالَ آيَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ
النَّاسَ ثَلٰثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا رَمْزًا وَاذْكُرْ رَبَّكَ كَثِيرًا وَسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ
وَالْإِبْكَارِ ۝ وَإِذْ قَالَتِ الْمَلٰئِكَةُ يٰمَرْيَمُ إِنَّ اللهَ اصْطَفٰكِ وَطَهَّرَكِ
وَاصْطَفٰكِ عَلٰى نِسَاءِ الْعٰلَمِينَ ۝ يٰمَرْيَمُ اقْنُتِي لِرَبِّكِ وَ
اسْجُدِي وَارْكَعِي مَعَ الرّٰكِعِينَ ۝ ذٰلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ
إِلَيْكَ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يُلْقُونَ أَقْلَامَهُمْ أَيُّهُمْ يَكْفُلُ

منزل

फिर जब उन्होंने बेटी जनी, तो कहने लगीं कि ऐ मेरे परवरदिगार ! मैंने तो यह लड़की जनी है और अल्लाह को ख़ूब मालूम था कि उन्होंने (किस रुतबे की बेटी) जनी है और लड़का लड़की की तरह नहीं होता@ और मैंने इसका नाम मरियम रखा है और मैं इसको और इसकी औलाद को शैतान मरदूद से (अलग रखने के लिए) तेरी पनाह (शरण) में देती हूँ।(३६) फिर उसके पालनकर्त्ता ने मरियम को ख़ूबी से क़बूल फ़र्मा लिया और उसको ख़ूब ऊँचा उठाया और ज़करिया को इसका संरक्षक बना दिया। जब-जब ज़करिया मरियम के पास उसकी इबादतगाह में जाते, तो मरियम के पास खाने की चीज़ मौजूद पाते। (यह हाल देखकर एक दिन ज़करिया ने) पूछा कि ऐ मरियम ! यह खाना तुम्हारे पास कहाँ से आता है? (मरियम ने) कहा यह अल्लाह के यहाँ से (आता है,); अल्लाह बेशक जिसको चाहता है, बेहिसाब रोज़ी देता है।(३७) (अल्लाह के इस चमत्कार से प्रभावित होकर) उसी दम ज़करिया ने अपने पालनकर्त्ता से दुआ की (और) कहा कि ऐ परवरदिगार ! अपनी जनाब से मुझको (भी) पाक औलाद इनायत कर कि तू (सबकी) दुआएँ सुनता है।(३८) अभी ज़करिया इबादतगाह में खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे कि उनको फ़रिश्तों ने आवाज़ दी कि (ज़करिया !) अल्लाह तुमको (एक पुत्र) यहिया (के पैदा होने) की ख़ुशख़बरी देता है और वह अल्लाह के फ़ैज़ (यानी अल्लाह की देन ओसा अ०) की तसदीक़ करेंगे और पेशवा होंगे और औरतों की संगत से अलग रहेंगे और नेकों (बन्दों) में से वे पैग़म्बर होंगे।(३९) (ज़करिया ने) कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार ! मेरे कैसे लड़का पैदा हो सकता है जबकि मुझ पर बुढ़ापा आ चुका है, और मेरी बीवी बाँझ है‡। फ़र्माया (गया) कि इसी तरह अल्लाह जो चाहता है, कर देता है।(४०) (ज़करिया ने) अर्ज़ किया कि ऐ मेरे परवरदिगार ! (मेरे इत्मीनान के लिए) कोई निशानी दे। (अल्लाह ने) फ़र्माया कि निशानी यह है कि तुम तीन दिन तक लोगों से बात§ न कर सकोगे। सिर्फ़ इशारा करोगे और अपने परवरदिगार की कसरत से याद (भजन) करते रहो और (उसी की) सुबह और शाम तसबीह (माला फेरते रहा) करो।(४१) ★

★ रु. ४/१२ आ ११

(और वह समय याद कर) जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरियम ! तुमको अल्लाह ने पसन्द फ़र्माया और तुमको पाक-साफ़ रखा और तुमको दुनिया जहान की औरतों पर चुना।(४२) ऐ मरियम ! अपने परवरदिगार की बन्दगी (भक्ति) करती रहो, और सज्दः (सिर झुकाया) करो और रुकूअ करनेवालों (नमाज़ में झुकनेवालों) के साथ रुकूअ करती रहो।(४३) (ऐ पैग़म्बर !) यह ग़ैब की (छिपी हुई) ख़बरों में से हैं जो हम तुमको वही (संदेश) के द्वारा पहुँचाते हैं। (और ऐ पैग़म्बर!) न तो तुम उनके पास उस वक़्त थे, जब वह लोग अपने क़लम (नदी में) डाल रहे थे꩜ कि कौन मरियम का संरक्षक हो ? और न तुम उनके पास मौजूद थे, जबकि वह आपस में झगड़ रहे थे (कि जिसका क़लम चढ़ाव की तरफ़ बहे, वही मरियम का संरक्षक होगा)♦।(४४)

@मूसायी क़ानून के मुताबिक़ लड़की अल्लाह की अिबादतगाह में पुजारिन नहीं हो सकती थी। [पेज १०६ पर]
‡ हज़रत ज़करिया अ० की उम्र १०० वर्ष की थी और उनकी बीवी ९८ वर्ष की थीं, जब यहिया (पुत्र) का※ [पेज १०६ पर]
§ जब यहिया मां के पेट में आए, तो ज़करिया की ज़बान फूल गई और तीन दिन तक वह किसी से बातचीत न कर सके। ꩜ मरियम को कौन पाले, इस बात का फ़ैसला यूँ हुआ कि दावेदारों ने अपने तौरात लिखने के क़लम बहते पानी में डाले कि जिसका क़लम चढ़ाव की तरफ़ बहे वही संरक्षक हो। आखिर मरियम के मौसा ज़करिया की क़लम उल्टी चढ़ाव की तरफ़ बही और वही उसके संरक्षक बने। ♦ हज़रत ज़करिया, मर्यम और यहिया अ० के जिन वाक़्यों का ज़िक्र है, उस वक़्त रसूल (मुहम्मद स०) वहाँ मौजूद न थे, न वह ख़ुद देख रहे थे। फिर इन ग़ैब की बातों को बयान करना बिला अल्लाह के संदेसे के कैसे मुमकिन है। यह रसूल की रिसालत का सुबूत है।

अिज् क़ालतिल्मला'अिकतु या मर्यमु अिन्नल्लाह युबश्शिरुकि बिकलिमतिम्-मिन्हु क् सला अिस्मुहुल्मसीहु अीसब्नु मर्यम वजीहन् फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति व मिनल्मुक़र्रबीन ला (४५) व युकल्लिमुन्नास फ़िल्महृदि व कह्लौंव मिनस्सालिहीन (४६) क़ालत् रब्बि अन्ना यकूनु ली वलदूँव लम् यम्सस्नी बशरुन् त् क़ाल कजालिकिल्लाहु यख़्लुक़ु मा यशा'अु त् अिजा क़ज़ा' अम्रन् फ़अिन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़यकूनु (४७) व युअ़ल्लिमुहुल् - किताब वल्हिक्मत व्वत्तौरात वल्अिन्जील ज् (४८) व रसूलन् अिला बनी' अिस्रा'अील ० ला अिन्नी क़द् जिअ्तुकुम् बिआयतिम्मिर्रब्बिकुम् ला अन्नी' अख़्लुक़ु लकुम् मिनत्तीनि कहैअतित्तैरि फ़अन्फ़ुख़ु फ़ीहि फ़यकूनु तैरम्बिअिज्निल्लाहि ज् व अुब्रिअुल्-अक्मह वल्अब्रस व अुहृयिल्मौता बिअिज्निल्लाहि ज् व अुनब्बिअुकुम् बिमा तअ्कुलून व मा तद्दख़िरून ला फ़ी बुयूतिकुम् त् अिन्न फ़ी जालिक लआयतल्लकुम् अिन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन ज् (४९) व मुसद्दिक़ल्लिमा बैन यदैय मिनत्तौराति व लिअुहिल्ल लकुम् बअ्ज़ल्लजी हुर्रिम अलैकुम् व जिअ्तुकुम् बिआयतिम् - मिर्रब्बिकुम् क़िफ़ फ़त्तक़ुल्लाह व अतीअूनि (५०) अिन्नल्लाह रब्बी व रब्बुकुम् फ़अ्बुदूहु त् हाजा सिरातुम्मुस्तक़ीमुन् (५१) फ़लम्मा' अहृस्स अीसा मिन्हुमुल्कुफ़्र क़ाल मन् अन्सारी' अिलल्लाहि त् क़ालल्हृवारीयून नहृनु अन्सारुल्लाहि ज् आमन्ना बिल्लाहि ज् वश्हद् बिअन्ना मुस्लिमून (५२) रब्बना' आमन्ना बिमा' अन्ज़ल्त वत्तबअ़्नर्रसूल फ़क्तुब्ना मअ़श्शाहिदीन (५३)

تلک الرسل ٣ — ٣٣ — آل عمران

مريم وما كنت لديهم اذ يختصمون ۝ اذ قالت الملٰئكة
يٰمريم ان الله يبشرك بكلمة منه اسمه المسيح عيسى
ابن مريم وجيها فى الدنيا والاخرة ومن المقربين ۝ ويكلم
الناس فى المهد وكهلا ومن الصٰلحين ۝ قالت رب انى
يكون لى ولد ولم يمسسنى بشر قال كذٰلك الله يخلق ما
يشاء اذا قضى امرا فانما يقول له كن فيكون ۝ ويعلمه
الكتٰب والحكمة والتورٰىة والانجيل ۝ ورسولا الى بنى
اسراءيل انى قد جئتكم باٰية من ربكم انى اخلق لكم
من الطين كهيئة الطير فانفخ فيه فيكون طيرا باذن الله
وابرئ الاكمه والابرص واحى الموتٰى باذن الله وانبئكم
بما تاكلون وما تدخرون فى بيوتكم ان فى ذٰلك لاٰية
لكم ان كنتم مؤمنين ۝ ومصدقا لما بين يدى من التورٰىة
ولاحل لكم بعض الذى حرم عليكم وجئتكم باٰية من
ربكم فاتقوا الله واطيعون ۝ ان الله ربى وربكم فاعبدوه
هٰذا صراط مستقيم ۝ فلما احس عيسى منهم الكفر قال
من انصارى الى الله قال الحواريون نحن انصار الله
اٰمنا بالله واشهد بانا مسلمون ۝ ربنا اٰمنا بما انزلت

منزل ١

(वह समय भी याद करो) जब फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ मरियम ! अल्लाह तुमको अपनी एक कृपा की ख़ुशख़बरी देता है (यानी तुम्हारे पुत्र होगा), जिसका नाम अीसा मसीह मरियम का बेटा—दुनिया और आख़िरत (लोक और परलोक दोनों) में इज़्ज़तवाला और (अल्लाह के) नज़दीकी बन्दों में से (होगा)।(४५) माँ की गोद में रहने के समय और बड़ी उम्र का होकर (एक ही समान) लोगों के साथ बातचीत करेगा और नेक बन्दों में से होगा।(४६) वह (मरियम) कहने लगी कि ऐ परवरदिगार ! मेरे कैसे लड़का हो सकता है, जब कि मुझको किसी मर्द ने छुआ तक नहीं। फ़र्माया इसी तरह अल्लाह जो चाहता है पैदा कर देता है। जब वह किसी काम को करना चाहता है तो बस उसे फ़र्मा देता है कि हो (कुन) और वह हो जाता है†।(४७) और अल्लाह उसे (अीसा अ० को) किताब, हिकमत और तौरात और इन्जील का ज्ञान देगा।(४८) और (अीसा अ०) इसराईल के वंश की तरफ़ पैग़म्बर होंगे! (कहेंगे कि) मैं तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से तुम्हारे पास निशानियाँ लेकर आया हूँ कि मैं तुम्हारे सामने मिट्टी से पक्षी की शक्ल बनाकर फिर उसमें फूँक मारता हूँ तो अल्लाह के हुक्म से (सचमुच) पक्षी हो जाता है। और अल्लाह ही के हुक्म से जन्म के अन्धों और कोढ़ियों को भला चंगा और मुर्दों को ज़िन्दः करता हूँ और जो कुछ तुम खाकर आओ वह और जो कुछ अपने घरों में जमा कर रखा है, सब तुमको बता दूँ। अगर तुममें ईमान है तो बेशक इन बातों में तुम्हारे लिए (अल्लाह की क़ुदरत की) निशानी@ हैं।(४९) (और) तौरात जो मेरे समय से पहले (उतरी) उसकी तसदीक़ करता हूँ और मैं इस ग़रज़ से भी (आया हूँ) कि जो कुछ चीज़ें जो तुम पर हराम (निषिद्ध) हैं‡ तुम्हारे लिए उनमें से कुछ हलाल (जायज़) कर दूँ और मैं तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से (कुछ) निशानी लेकर (तुम्हारे पास) आया हूँ, तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो (५०) बेशक अल्लाह मेरा परवरदिगार है और तुम्हारा भी परवरदिगार है, तो उसी की इबादत (उपासना) करो, बस यही सीधी राह है।(५१) तो जब अीसा ने उन यहूदी लोगों का कुफ़्र (और अपने क़त्ल करने की उनकी नियत) देखी तो पुकार उठे कि कोई है जो अल्लाह की तरफ़ होकर मेरी मदद करे। हवारी[] बोले कि हम अल्लाह के (तरफ़दार और आपके) मददगार हैं, हम अल्लाह पर ईमान लाये और आप गवाह रहेंगे कि हम मुस्लिम (फ़र्माबरदार) हैं।(५२) ऐ परवरदिगार ! (इन्जील) जो तूने उतारी है, हम उस पर ईमान लाये और हमने पैग़म्बर (यानी अीसा अ०) की पैरवी कर ली। तू हमको भी माननेवालों के साथ में लिख ले।(५३)

[पेज१०७से]‡इसलिए मरियम की मा को लड़की पैदा होने का पछतावा था। लेकिन अल्लाह ने लड़के से कहीं ज़्यादा मरियम का रुतबा बुलन्द किया और ह० ईसा अ० जैसी औलाद देकर दुनिया जहान की औरतों पर उसे ऊँचा उठाया। [पेज१०७से]※जन्म हुआ। यह सब जानते हैं कि इस अवस्था में आदमी लड़का या लड़की की आशा नहीं रखता।

† मरियम का किसी के साथ ब्याह नहीं हुआ और वह मर्दों से दूर भी रहीं, फिर भी उनके लड़का हुआ, जिसका नाम ईसामसीह अ० था। जब फ़रिश्तों ने इस घटना की भविष्यवाणी मरियम को पहले ही की तो उनका हैरत में पड़ जाना तअज्जुब न था। @ मुर्दों को जिलाना, बीमारों को अच्छा करना, और अंधों को आँखवाला बनाना यह सब हज़रत अीसा अ० के चमत्कारों में से थे। ‡ यहूदियों पर चर्बी गाय की और बकरी की हराम थी यानी अपने धर्मानुसार वह इन वस्तुओं का प्रयोग नहीं कर सकते थे। [] हवारी लोग वह कहलाते हैं जो हज़रत अीसा अलैहिस्सलाम के पैरोकार थे। हवारी के अर्थ 'धोबी' हैं और 'साथी' भी। वह दो धोबी थे जो हज़रत अीसा अलैहिस्सलाम पर सबसे पहले ईमान लाये थे। फिर दस आदमी और आये। यह धोबी न थे पर यह सब बारह हवारी कहलाये।

रु. ५ १२ आ १३ सु. ३ ४

व मकरू व मकरल्लाहु ृ वल्लाहु ख़ैरुल्माकिरीन (५४) ★ ● अिज़् क़ालल्लाहु या अीसा अिन्नी मुतवफ़्फ़ीक व राफ़िअुक अिलैय व मुतह्हिरुक मिनल्लजीन कफ़रू व जाअिलुल्लजीनत्तबअूक फ़ौक़ल्लजीन कफ़रू अिला यौमिल्क़ियामति ज् सुम्म अिलैय मर्जिअुकुम् फ़अह्कुमु बैनकुम् फ़ी मा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून (५५) फ़अम्मल्लजीन कफ़रू फ़अुअ़ज्जिबुहुम् अज़ाबन् शदीदन् फ़िद्दुन्या वलआख़िरति ज् व मा लहुम् मिन्नासिरीन (५६) व अम्मल्लजीन आमनू व अमिलुस्सालिहाति फ़युवफ़्फ़ीहिम् अुजूरहुम् ृ वल्लाहु ला युह्बिबुज्ज़ालिमीन (५७) जालिक नत्लूहु अलैक मिनलआयाति वज्जिक्रिल् - हकीमि (५८) अिन्न मसल अीसा अिन्दल्लाहि कमसलि आदम ृ ख़लक़हू मिन् तुराबिन् सुम्म क़ाल लहू कुन् फ़यकूनु (५९) अल्हक़्क़ु मिर्रब्बिक फ़ला तकुम्मिनल्-मुम्तरीन (६०) फ़मन् हाज्जक फ़ीहि मिम्बअ़्दि मा जाअक मिनल्अिल्मि फ़क़ुल् तआलौ नद्अु अब्नाअना व अब्नाअकुम् वनिसाअना व निसाअकुम् व अन्फ़ुसना व अन्फ़ुसकुम् क़िफ़् सुम्म नब्तहिल् फ़नज्अल् लअ़्नतल्लाहि अलल्काजिबीन (६१) अिन्न हाजा लहुवल्-क़ससुल्-हक़्क़ु ज् व मा मिन् अिलाहिन् अिल्लल्लाहु ृ व अिन्नल्लाह लहुवल् - अज़ीज़ुल् - हकीमु (६२) फ़अिन् तवल्लौ फ़अिन्नल्लाह अलीमुम्-बिल्मुफ़्सिदीन (६३) ★ क़ुल् या अह्लल्किताबि तआलौ अिला कलिमतिन् सवाअिम् - बैनना व बैनकुम् अल्ला नअ़्बुद अिल्लल्लाह व ला नुश्रिक बिही शैऔंव ला यत्तख़िज बअ़्ज़ुना बअ़्ज़न् अर्बाबम्मिन् दूनिल्लाहि ृ फ़अिन् तवल्लौ फ़क़ूलुश्हदू बिअन्ना मुस्लिमून (६४)

★ रु. ६ १४ आ ६

تلك الرسل ٣ ٤٥ ال عمرٰن ٣

وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ۞ وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ
وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ۞ اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَ
رَافِعُكَ اِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ
فَاَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۞ فَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَمَا لَهُمْ مِّنْ
نّٰصِرِيْنَ ۞ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ
وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۞ ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ
الْحَكِيْمِ ۞ اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ۚ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ
ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۞ اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ
الْمُمْتَرِيْنَ ۞ فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ
فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَ
اَنْفُسَكُمْ ۣ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ۞ اِنَّ
هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ
لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۞ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِالْمُفْسِدِيْنَ ۞
قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ
اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْـًٔا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ

منزل

और यहूद ने (अ़ीसा अ़० के क़त्ल के लिए) चाल (साज़िश) की और अल्लाह ने भी (यहूद से अ़ीसा अ़० को बचाने के लिए) चाल की और अल्लाह चाल करने वालों में सबसे अच्छा चाल करने वाला है‡ ।(५४) ★ ●

(और वह भी याद करो जब) अल्लाह ने कहा ऐ अ़ीसा! (दुनिया में तुम्हारे रहने की मुद्दत पूरी करके) मैं तुमको वफ़ात दूंगा और तुमको (अभी) अपनी तरफ़ उठा लूंगा और काफ़िरों (की सोहबत) से तुमको पाक कर दूंगा, और जिन लोगों ने तुम्हारी पैरवी की है उनको क़ियामत के दिन तक काफ़िरों पर ग़ालिब (प्रबल) रखूंगा, फिर तुम (सबको) मेरी तरफ़ लौटकर आना है । फिर जिन बातों में तुम्हारे बीच मतभेद रहा है उसके बारे में तुम्हारे बीच (उस दिन) फ़ैसला कर दूंगा । (५५) यानी जिन्होंने (तुम्हारी पैग़म्बरी से) इन्कार किया, तो उनको दुनिया और आख़िरत (दोनों) में बड़ी सख़्त मार दूंगा और कोई उनका सहायक न होगा ।(५६) और जो लोग ईमान लाये और जिन्होंने नेक काम किये तो अल्लाह उनको पूरा पूरा बदला देगा और अल्लाह अधर्मियों (अन्यायियों) को पसंद नहीं करता ।(५७) (ऐ पैग़म्बर !) यह आयतें और हिकमत (ज्ञान) भरी नसीहतें हम तुमको पढ़ पढ़कर सुना रहे हैं ।(५८) बेशक अल्लाह के नज़दीक अ़ीसा की मिसाल आदम की जैसी है (कि अल्लाह ने) मिट्टी से आदम के शरीर को बनाकर फिर उसको@ हुक्म दिया कि हो और वह हो गया ।(५९) (ऐ पैग़म्बर!) यह तो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से सत्य (प्रकट) है तो (कहीं) तुम (भी) शक करनेवालों में से न हो जाना ।(६०) फिर जब तुमको (अ़ीसा अ़० की बाबत) सच्चाई मालूम हो चुकी, उसके बाद भी तुमसे उनके बारे में कोई हुज्जत करने लगे, तो कहो कि आओ हम अपने बेटों को बुलावें (और) तुम अपने बेटों को (बुलाओ) और हम अपनी औरतों को (बुलायें) और तुम भी अपनी औरतों को (बुलाओ) और हम अपने तईं और तुम अपने तईं (भी शरीक) करो, फिर हम (सब मिलकर) अल्लाह के सामने दिल से दुआ करें और झूठों पर अल्लाह की लानत भेजें । (६१) (ऐ पैग़म्बर !) बेशक यही बयान सच्चा है और अल्लाह के सिवाय कोई बन्दगी के क़ाबिल नहीं और बेशक अल्लाह ही ज़बरदस्त (और) हिकमतवाला है ।(६२) इस पर (भी) अगर (ये लोग) न मानें, तो बेशक अल्लाह फ़सादियों से ख़ूब जानकार है ।(६३) ★

कहो कि ऐ किताबवालो ! आओ ऐसी बात की तरफ़ जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान में एकसाँ (तसलीम) है कि अल्लाह के सिवाय (हम) किसी दूसरे की पूजा न करें और किसी चीज़ को उसका शरीक न ठहरावें और हममें से कोई अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे को परवरदिगार न ठहरायें । फिर अगर (इस सीधी सच्ची बात से भी) मुँह मोड़ें तो (मुसलमानों! तुम) कह दो कि तुम (हमारे) इस बात के गवाह रहो कि हम तो (एक ही अल्लाह के) आज्ञाकारी हैं । (६४)

---

‡ यहूदियों ने उस समय के बादशाह को बहका कर उससे हज़रत अ़ीसा अ़०के क़त्ल के लिए सूली का हुक्म तो लिया, मगर अल्लाह तऽला ने ऐसी तजवीज़ की कि हज़रत अ़ीसा अ़०जैसी शक्ल एक दूसरे आदमी की बना दी । वह क़त्ल कर दिया गया और हज़रत अ़ीसा अ़०को अल्लाह ने आसमान पर उठा लिया । ज़ालिम अपनी बन्दिशें बाँधते रहते हैं, लेकिन अल्लाह उन्हें नाकाम कर देता है । @ अ़ीसा अ़. के बिना बाप के जन्म लेने से उनका अल्लाह का बेटा होना नहीं सिद्ध होता । देखो अ़ीसा अ़. के केवल बाप न थे, परन्तु उनकी माता अवश्य थीं; लेकिन हज़रत आदम अ़०के तो मां-बाप दोनो ही न थे । ईसाई ह० आदम अ़०को अल्लाह का बेटा नहीं कहते, तब हज़रत अ़ीसा अ़०को ऐसा क्यों कहते हैं ? अल्लाह ने जैसे ह० आदम अ़. को बिना माँ बाप के पैदा कर दिया वैसे ही हज़रत अ़ीसा अ़० को भी ।

या॑ अह्लल्किताबि लिम तुहा॑ज्जून फ़ी॑ अिब्राहीम व मा॑ अुन्ज़िलतित्तौरातु वल्अिन्जीलु अिल्ला मिम्बअ़्दिही॑ त़् अफ़ला तअ़्क़िलून (६५) हा॑ अन्तुम् हा॑ अुला॑अि हाजज्तुम् फ़ीमा लकुम् बिही॑ अिल्मुन् फ़लिम तुहा॑ज्जून फ़ी मा लैस लकुम् बिही॑ अिल्मुन् त़् वल्लाहु यअ़्लमु व अन्तुम् ला तअ़्लमून (६६) मा कान अिब्राहीमु यहूदीयौंव ला नस्रानीयौंव लाकिन् कान हनीफ़म्मुस्लिमन् त़् व मा कान मिनल्मुश्रिकीन (६७) अिन्न औलन्नासि बिअिब्राहीम लल्लजीनत्तबअ़ूहु व हाजन्नबीयु वल्लजीन आमनू त़् वल्लाहु वलीयुल्मुअ्मिनीन (६८) वद्दत्ता॑अिफ़तुम्-मिन् अह्लिल्किताबि लौ युज़िल्लूनकुम् त़् व मा युज़िल्लून अिल्ला॑ अन्फ़ुसहुम् व मा यश्अ़ुरून (६९) या॑ अह्लल्किताबि लिम तक्फ़ुरून बिआयातिल्लाहि व अन्तुम् तश्हदून (७०) या॑ अह्लल्किताबि लिम तल्बिसूनल्हक़्क़ बिल्बातिलि व तक्तुमूनल्हक़्क़ व अन्तुम् तअ़्लमून (७१) ★ व कालत्ता॑अिफ़तुम्-मिन् अह्लिल्किताबि आमिनू बिल्लज़ी॑ अुन्ज़िल अ़लल्लजीन आमनू वज्हन्नहारि वक्फ़ुरू॑ आख़िरहू लअ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून ज् सला (७२) व ला तुअ्मिनू॑ अिल्ला लिमन् तबिअ़ दीनकुम् त़् क़ुल् अिन्नल्हुदा हुदल्लाहि ला अँयुअ्ता॑ अहदुम्मिस्ल मा॑ अूतीतुम् औ युहा॑ज्जू कुम् अ़िन्द रब्बिकुम् त़् क़ुल् अिन्नल्फ़ज़्ल बियदिल्लाहि ज् युअ्तीहि मैंयशा॑अु त़् वल्लाहु वासिअ़ुन् अ़लीमुन् ज् ला (७३) यख़्तस्सु बिरह्मतिही॑ मैंयशा॑अु त़् वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल्अ़ज़ीमि (७४)

रु. ७ / १५ आ ८

تلك الرسل ٣ ٣٦ آل عمران ٣

دُوْنِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ۝ يٰۤاَهْلَ
الْكِتٰبِ لِمَ تُحَآجُّوْنَ فِیْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَمَاۤ اُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ وَالْاِنْجِيْلُ
اِلَّا مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ حَاجَجْتُمْ فِيْمَا
لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ يَهُوْدِيًّا وَّلَا نَصْرَانِيًّا وَّ
لٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ اِنَّ اَوْلَى
النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا النَّبِیُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ
وَاللّٰهُ وَلِیُّ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَدَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ
يُضِلُّوْنَكُمْ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝ يٰۤاَهْلَ
الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ۝ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ
لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝
وَقَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِیْۤ اُنْزِلَ عَلَى
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْۤا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝
وَلَا تُؤْمِنُوْۤا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ ۙ
اَنْ يُّؤْتٰۤى اَحَدٌ مِّثْلَ مَاۤ اُوْتِيْتُمْ اَوْ يُحَآجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ قُلْ
اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝
يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝ وَمِنْ

منزل ١

ऐ किताबवालो ! इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो (कि वह यहूदी थे या नसरानी)। तौरात और इन्जील तो उनके बाद उतरी हैं। तुम समझ से क्यों नहीं काम लेते ? (६५) (देखो, तुम लोगों ने) ऐसी बातों में झगड़ा तो किया ही था जिनकी बाबत तुमको जानकारी थी। मगर जिसकी बाबत तुमको (कुछ भी) इल्म नहीं, उसमें तुम क्यों झगड़ा करते हो, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते§। (६६) इब्राहीम न यहूदी थे और न नसरानी; बल्कि (हमारे) एक आज्ञाकारी सेवक थे और मुशरिकों में से (भी) न थे☫। (६७) बेशक इब्राहीम के ज़्यादा नज़दीकी तो वह लोग हैं जिन्होंने उनकी पैरवी की (एक ईश्वर को माना), और यह पैग़म्बर (मुहम्मद स०) और (मुसलमान) जो ईमान लाये हैं; और अल्लाह तो ईमान लाने वालों का दोस्त है (६८) (ऐ मुसलमानो !) किताबवालों में से एक गिरोह तो यही चाहता है कि किसी तरह तुमको भटका दे; हालाँकि वह ख़ुद ही भटकते हैं और समझते नहीं हैं। (६९) (ऐ किताबवालो !) अल्लाह की आयतों से क्यों इन्कार करते हो हालाँकि तुम गवाह (तौरात के क़ायल) हो। (७०) ऐ किताबवालो ! क्यों सच में झूठ को मिलाते हो और सच को जानबूझ कर छिपाते हो। (७१) ★

★ रु० ७/१५ आ० ८

और किताबवालों में से एक गिरोह (अपने लोगों को) समझाता है—मुसलमानों पर जो किताब उतरी है, उस पर ईमान शुरू दिन (पहले तो) लाओ और आख़िर दिन (बाद) में उससे इन्कार कर दिया करो। शायद (यह मुसलमान भी) फिर जायँ‡। (७२) और जो तुम्हारे दीन की पैरवी करे, उसके सिवाय दूसरे का एतबार न करो। (ऐ पैग़म्बर) कह दो कि हिदायत (निर्देश) तो वही है, जो हिदायत अल्लाह की तरफ़ से है, (लेकिन डाह से तुम ऐसी बातें) इस लिये (करते हो) कि जो चीज़ तुमको मिली थी वैसी ही चीज़ (किताब) किसी और (याने मुसलमानों) को मिल गई या वह लोग तुम्हारे परवरदिगार के यहाँ तुम पर ग़ालिब (प्रबल) हो जायँ। कह दो कि बड़ाई तो अल्लाह ही के हाथ में है; जिसको चाहे दे और अल्लाह बड़ा गुन्जाइशवाला (सर्वव्यापी) है और (सब कुछ) जानता है। (७३) जिसको चाहे अपनी कृपा के लिए ख़ास चुन ले और अल्लाह की दया अपरम्पार है, (७४)

§ यहूदियों और ईसाइयों से कहा जाता है कि तौरात और इन्जील जिनकी बाबत तुमको कुछ-कुछ ज्ञान था, तुम लोग तो उनकी बाबत भी आपस में झगड़ते रहे हो। लेकिन जिन बातों का तुमको कुछ भी ज्ञान नहीं मसलन हज़रत इब्राहीम अ० की बाबत, जिनके समय तुम्हारा वजूद भी न था, तो यह कहाँ तक मुनासिब है ? ☫ हज़रत इब्राहीम अ० को सब अरब वाले अपना पेशवा मानते थे। यहूदी कहते थे—वह यहूदी थे। इसी तरह मुशरिक उनको अपने धर्मवाला मानते थे। ईसाई उनको ईसाई। लेकिन रसूलुल्लाह कहते थे कि न तो वह यहूदी थे, न ईसाई और न मुशरिक। वह तो एक अल्लाह के मानने वाले थे। इस पर ईसाई और यहूदी मुहम्मद स० से झगड़ते थे। ‡ ख़ैबर के कुछ यहूदियों का षड़यंत्र था कि पहले तो इस्लाम मान कर मुसलमानों में घुलमिल जाओ और फिर उसे बदनाम करके छोड़ दो और साथ में मुसलमानों को भी डगमगा दो। पहले बनावटी तौर पर मुसलमान बन जाओ और फिर ऐब निकाल कर किनारा कर लो कि रसूल को तौरात के मुताबिक़ नहीं पाया।

व मिन् अह्लिल्किताबि मन् अिन् तअ्मन्हु बिक़िन्तारींयुअद्दिही
अिलैक ज् व मिन्हुम् मन् अिन् तअ्मन्हु बिदीनारिल्ला युअद्दिही
अिलैक अिल्ला मा दुम्त अ़लैहि क़ाअिमन् त् जालिक बिअन्नहुम् क़ालू
लैस अ़लैना फ़िल्उम्मीयीन सबीलुन् ज् व यक़ूलून अ़लल्लाहिल्-कजिब व
हुम् यअ़्लमून (७५) बला मन् औफ़ा
बिअ़ह्दिही वत्तक़ा फ़अिन्नल्लाह युहिब्बुल्-
मुत्तक़ीन (७६) अिन्नल्लजीन यश्तरून
बिअ़ह्दिल्लाहि व अैमानिहिम् समनन्
क़लीलन् उलाअिक ला ख़लाक़ लहुम्
फ़िल्आख़िरति व ला युकल्लिमुहुमुल्लाहु व
ला यन्ज़ुरु अिलैहिम् यौमल्क़ियामति व
ला युज़क्कीहिम् स् व लहुम् अ़जाबुन्
अलीमुन् (७७) व अिन्न मिन्हुम्
लफ़रीक़ैंयल्वून अल्सिनतहुम् बिल्किताबि
लितह्सबूहु मिनल्किताबि व मा हुव
मिनल्किताबि ज् व यक़ूलून हुव मिन्
अ़िन्दिल्लाहि व मा हुव मिन् अ़िन्दिल्लाहि ज्
व यक़ूलून अ़लल्लाहिल्कजिब व हुम् यअ़्लमून (७८) मा कान लिबशरिन्
अैंयुअ्तियहुल्लाहुल् - किताब वल्हुक्म वन्नुबूवत सुम्म यक़ूल लिन्नासि कूनू
अ़िबादल्ली मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् कूनू रब्बानीयीन बिमा कुन्तुम्
तुअ़ल्लिमूनल्किताब व बिमा कुन्तुम् तद्रुसून ला (७९) व ला यअ्मुरकुम्
अन् तत्तख़िज़ुल्-मलाअिकत वन्नबीयीन अर्बाबन् त् अयअ्मुरुकुम् बिल्कुफ़्रि
बअ़्द अिज् अन्तुम् मुस्लिमून (८०) ★ व अिज् अख़जल्लाहु
मीसाक़न्नबीयीन लमा आतैतुकुम् मिन् किताबिंव हिक्मतिन् सुम्म
जाअकुम् रसूलुम्-मुसद्दिक़ुल्लिमा मअ़कुम् लतुअ्मिनुन्न बिही व लतन्सुरुन्नहू त्
क़ाल अअक़्रर्तुम् व अख़ज्तुम् अ़ला जालिकुम् असरी त्
क़ालू अक़्रर्ना त् क़ाल फ़श्हदू व अना मअ़कुम् मिनश्शाहिदीन (८१)

★ रु. ८ / १६ / आ ६

اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ
اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ۗ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ
اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَاَيْمَانِهِمْ
ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ
وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۠ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝
وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ
الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا
هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝
مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ
لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا
كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ۝ وَلَا يَاْمُرَكُمْ
اَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا ۗ اَيَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ
اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝ وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ
مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ
لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ۗ قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ

और किताबवालों में से कोई तो ऐसे हैं कि अगर उनके पास नक़द (रुपये) का ढेर अमानत रखवा दो तो (जब मांगो) तुम्हारे हवाले करें और उनमें से कोई ऐसे हैं कि एक अशर्फ़ी उनके पास अमानत रखवा दो, तो वह तुमको वापिस न दें, जब तक (हर वक़्त तक़ाज़े के लिए) उनके सर पर खड़े न रहो। यह इस लिए कि वह कहते हैं कि जाहिलों के हक़ (मार लेने) की हमसे पूछ-ताछ नहीं होगी♦ और (इस तरह) जान-बूझकर अल्लाह पर झूठ मढ़ते हैं।(७५) हाँ, जो शख़्स अपना इक़रार पूरा करे और अल्लाह से डरे तो अल्लाह (बुराई से) बचनेवालों को दोस्त रखता है।(७६) बेशक जो लोग अल्लाह से किये गये इक़रारों और अपनी क़समों को थोड़ी क़ीमत (लाभ) के लिए त्याग देते हैं तो यही लोग हैं जिनका आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं और क़ियामत के दिन अल्लाह इनसे न तो बात करेगा और न इनकी तरफ़ देखेगा और न इनको सवाँरेगा। इनके लिए तो दुखदायी अज़ाब (दण्ड) है।(७७) और इन्हीं (किताबवालों) में कोई ऐसे हैं जो किताब (तौरात) को पढ़ते वक़्त अपनी ज़बान ऐंठते हैं ताकि तुम समझो कि वह भी किताब का अंश है हालाँकि वह (असल) किताब का हिस्सा नहीं और कहते हैं कि यह अल्लाह के यहाँ से (उतरा) है, हालाँकि वह अल्लाह के यहाँ से नहीं उतरा है, और ये जान-बूझकर अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं।(७८) किसी मनुष्य को शोभा नहीं देता कि अल्लाह तो उसको किताब और हुक्म और पैग़म्बरी दे—और वह लोगों से कहने लगे कि अल्लाह को छोड़कर मेरे बन्दे बनो@ बल्कि (वह कहेगा कि ऐ किताबवालो!) तुम अल्लाह वाले बन जाओ इस लिए कि तुम लोग (दूसरों को) किताब पढ़ाते रहे हो और तुम (ख़ुद भी) पढ़ते हो। (७९) और वह तुमसे यह भी नहीं कहेगा कि तुम फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को परवरदिगार मानो—तुम तो इस्लाम मान चुके हो और वह इसके बाद क्या तुम्हें कुफ़्र करने को कहेगा।(८०)★

★ रु. ८/१६ आ ६

और (ऐ पैग़म्बर! याद दिलाओ) जबकि अल्लाह ने पैग़म्बरों से वादा लिया कि मैं तुमको जो किताब और इल्म दूँ फिर कोई (और) पैग़म्बर तुम्हारे पास आये (और) जो तुम्हारे पास (किताबें) हैं उनकी तसदीक़ करे, तो देखो, ज़रूर उस पर ईमान लाना और ज़रूर उसकी मदद करना। (और वादा लेने के बाद अल्लाह ने) पूछा क्या तुमने इक़रार किया? और इन बातों में मेरी डाली ज़िम्मेदारी का बोझ क़ुबूल किया? तो वे बोले हम इक़रार करते हैं। (अल्लाह ने) फ़र्माया अच्छा तो गवाह रहना और गवाहों में मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ‡।(८१)

[पेज ८९ से] ताक़त के बारे में अक्सर इसी तरह के शक पैदा होते रहे हैं, और कभी कभी ग़ुरूर या लाइल्मी उनको अज्ञान में डाल देती है। और ऐसे मौक़ों पर नबी ऐसी ही नज़ीरों से इन्सानों का अज्ञान या अहंकार दूर करते आये हैं। वैसे बाज़ आलिमों के मत से यह ज़िक्र हज़रत उज़ैर अ०का है। पहले उनकी समझ में न आता था कि अल्लाह मरनेवालों को कैसे जिला सकता है। जब वह स्वयं मर कर फिर जी उठे तो उनको विश्वास हुआ।

♦ यहूदी कहते थे कि मूर्खों का या अन्य धर्म के माननेवालों का धन जिस प्रकार मिले, हड़प लो। ख़ुदा के यहाँ इसकी कोई पूछ-ताछ न होगी। यह ऐब हर क़ौम के लोगों में अक्सर दाख़िल हो जाता है। वे आपस में पूरे ईमानदार होते हुये भी अपने से ग़ैर फ़िरक़े या क़ौम को धोखा देकर या उनका माल ज़ब्त कर लेने में ऐब नहीं समझते। इस्लाम इसकी निन्दा करता है। @ यहूदी कहते थे कि ईसा अ. ने अल्लाह के अलावा अपनी भी बन्दगी करने के लिए फ़र्माया, इसलिए हम उनको बुरा समझते हैं। इसका जवाब दिया गया है कि वह तो रसूल थे; वह ऐसी ग़लत बात कैसे कह सकते थे? ‡ इस आयत का ख़ुलासा यह है कि अल्लाह ने पिछले नबियों से यह वचन लिया था कि जो किताब व ज्ञान मैंने तुमको दिया है उसका यदि फिर कोई रसूल आकर समर्थन करे तो तुम सब भी उस पर ईमान लाना और उसकी मदद करना। नबियों ने अल्लाह से इसका वचन दिया। इसपर अल्लाह ने इन नबियों को व ख़ुद अपने को इस प्रतिज्ञा का गवाह (साक्षी) बनाया। अर्थात् इस वचन को, अल्लाह व नबियों को साक्षी मानकर, उनके पैरोकार भी मानें। लेकिन अब यहूदी रसूलुल्लाह (मुहम्मद स०) को पैग़म्बर व क़ुर्आन को ईश्वराज्ञा माननेसे हट रहे थे जिनकी पेशींगोई तौरात में पहले से मौजूद है।

फ़मन् तवल्ला बअ्द जालिक फ़अुलाअिक हुमुल्फ़ासिक़ून (८२) अफ़ग़ैर दीनिल्लाहि यब्ग़ून व लहू अस्लम मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि तौअौंव कर्हौंव अिलैहि युर्जअून (८३) क़ुल् आमन्ना बिल्लाहि व मा अुन्ज़िल अलैना व मा अुन्ज़िल अला अिब्राहीम व अिस्माअील व अिस्हाक़ व यअ्क़ूब वल्अस्बाति व मा अूतिय मूसा व अीसा वन्नबीयून मिर्रब्बिहिम् स़् ला नुफ़र्रिक़ु बैन अहदिम्मिन्हुम् ज् व नह्नु लहू मुस्लिमून (८४) व मैंयब्तग़ि ग़ैरल्अिस्लामि दीनन् फ़लैंयुक़्बल मिन्हु ज् व हुव फ़िल्आख़िरति मिनल्ख़ासिरीन (८५) कैफ़ यह्दिल्लाहु क़ौमन् कफ़रू बअ्द अीमानिहिम् व शहिदू अन्नर्रसूल हक़्क़ूंव जाअ हुमुल्बैयिनातु त् वल्लाहु ला यह्दिल्क़ौमज्ज़ालिमीन (८६) अुलाअिक जज़ाअुहुम् अन्न अलैहिम् लअ्नतल्लाहि वल्मलाअिकति वन्नासि अज्मअीन ला (८७) ख़ालिदीन फ़ीहा ज् ला युख़फ़्फ़फ़ु अन्हुमुल्अज़ाबु व ला हुम् युन्ज़रून ला (८८) अिल्लल्लजीन ताबू मिम्बअ्दि जालिक व अस्लहू क़िफ़् फ़अिन्नल्लाह ग़फ़ूरुर्रहीमुन् (८९) अिन्नल्लजीन कफ़रू बअ्द अीमानिहिम् सुम्मज़्दादू कुफ़्रल्लन् तुक़्बल तौबतुहुम् ज् व अुलाअिक हुमुज़्ज़ाल्लून (९०) अिन्नल्लजीन कफ़रू व मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् फ़लैंयुक़्बल मिन् अहदि हिम्मिल्अुल्अर्ज़ि ज़हबौंव लविफ़्तदा बिही त् अुलाअिक लहुम् अज़ाबुन् अलीमूंव मा लहुम् मिन्नासिरीन (९१) ★

تلك الرسل ۳ ۴۸ آل عمرٰن ۳

اِصْرِیْ ؕ قَالُوْٓا اَقْرَرْنَا ؕ قَالَ فَاشْهَدُوْا وَاَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِیْنَ ﴿۸۱﴾ فَمَنْ تَوَلّٰی بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۸۲﴾ اَفَغَیْرَ دِیْنِ اللّٰهِ یَبْغُوْنَ وَلَهٗٓ اَسْلَمَ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّاِلَیْهِ یُرْجَعُوْنَ ﴿۸۳﴾ قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَیْنَا وَمَآ اُنْزِلَ عَلٰٓی اِبْرٰهِیْمَ وَاِسْمٰعِیْلَ وَاِسْحٰقَ وَیَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِیَ مُوْسٰی وَعِیْسٰی وَالنَّبِیُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۪ لَا نُفَرِّقُ بَیْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۫ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۸۴﴾ وَمَنْ یَّبْتَغِ غَیْرَ الْاِسْلَامِ دِیْنًا فَلَنْ یُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِی الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۸۵﴾ كَیْفَ یَهْدِی اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِیْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ الْبَیِّنٰتُ ؕ وَاللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۸۶﴾ اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَیْهِمْ لَعْنَةَ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِیْنَ ﴿۸۷﴾ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ۚ لَا یُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ یُنْظَرُوْنَ ﴿۸۸﴾ اِلَّا الَّذِیْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۫ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۸۹﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِیْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ ﴿۹۰﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ یُّقْبَلَ مِنْ اَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰی بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِیْنَ ﴿۹۱﴾

منزل

★ रु. ९ | १७ आ ११

॥ इति तीसरा पारः ॥

तो इसके बाद भी जो कोई (वादे से) फिर जावे तो वही लोग बेहुक्म (अवज्ञाकारी) हैं।(८२) (तो) क्या यह लोग अल्लाह के दीन के सिवाय किसी और दीन की तलाश में हैं ? हालांकि जो (भी लोग) आसमानों और ज़मीन में हैं खुशी से या लाचारी से अल्लाह के फ़र्मांबर्दार हैं और उसी की तरफ़ सबको लौटकर जाना है।(८३) (ऐ पैग़म्बर !) कहो हम अल्लाह पर ईमान लाये और जो किताब हम पर उतरी है उस पर और जो सहीफ़े (किताबें) इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याक़ूब और याक़ूब की औलाद पर उतरे उन पर और मूसा और ओसा और दूसरे पैग़म्बरों को जो (किताबें) उनके पालनकर्त्ता की तरफ़ से मिलीं हम उनमें से किसी को जुदा नहीं करते और हम तो उसी एक अल्लाह के हुक्म पर हैं।(८४) और जो शख़्स अल्लाह के दीन के सिवा किसी और दीन को तलाश करेगा तो (अल्लाह के यहाँ) उसका वह दीन हरगिज़ क़बूल नहीं और वह आख़िरत में नुक़सान उठानेवालों में से होगा।(८५) अल्लाह ऐसे लोगों को क्यों हिदायत देने लगा जो ईमान लाने के बाद इन्कार करने लगे और (जबकि) वह इक़रार कर चुके थे कि पैग़म्बर (आख़िरी नबी यानी मुहम्मद स०) सच्चा है और उनके पास खुले सुबूत भी आ चुके और अल्लाह (ऐसे) ज़ालिमों को हिदायत नहीं दिया करता।(८६) ऐसे लोगों की सज़ा यह है कि इन पर अल्लाह की और फ़रिश्तों की और लोगों की सबकी लानत (हो) (८७) कि उसी (लानत) में हमेशा रहेंगे, न तो इनकी सज़ा ही हल्की की जायगी और न उनको मुहलत ही दी जायगी।(८८) हाँ, जिन लोगों ने इसके बाद तौबः की और (अपना) सुधार कर लिया, तो अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बड़ा मेहरबान है।(८९) बेशक जो लोग ईमान लाने के बाद फिर बैठे, फिर उनकी इन्कारी बढ़ती (ही) गई तो ऐसों की तौबः किसी तरह क़ुबूल नहीं होगी और यही लोग भटके हुए हैं।(९०) बेशक जो लोग काफ़िर (इन्कारी) हुए और इन्कारी ही की हालत में मर गये तो उनमें का कोई शख़्स ज़मीन के बराबर भी सोना बदले में देना चाहे तो हरगिज़ क़ुबूल नहीं किया जायगा। यही लोग हैं जिनको दुखदाई सज़ा होगी और उनका कोई भी मददगार नहीं होगा।(९१)☆

★ रु. ९/१७ आ ११

॥ इति तीसरा पारः ॥

[पेज ९९ से] हिजरी के इर्द गिर्द नाज़िल होती रही। आयात १-२० में पिछली किताबों की तसदीक़ करते हुये क़ुर्आन का प्रकाश, उसको समझने और एक महज़ अल्लाह की भक्ति और सच्चे दीन पर ईमान लाने के रास्ते में रुकावटों को उखाड़ फेंकने की हिदायत है। आ. २१-३० में जिनके पास किताब का कुछ इल्म है, वे अगर पूरी किताब याने क़ुर्आन को मानने से इन्कार करते हैं तो मुसलमानों को ऐसे किताबवालों से बिलकुल क़तातअल्लुक़ कर लेने की हिदायत है। आ. ३१-६३ में इम्रान के खान्दान (यहूदियों) से लेकर हज़रत ईसा अ० व उनके चमत्कारों का बयान है। आ. ६४-१२० में कहा गया है कि ईश्वरीय ज्ञान नबियों के ज़रिये हमेशा उतरता रहा है और क़ुर्आन में आकर उस ज्ञान की पूर्णता हुई है और सारे मतभेद ख़त्म हो गये हैं। मुसलमानों को आपस में प्रेम और संगठन से रहने और काफ़िरों की दोस्ती से बाज़ रहने की हिदायत और अल्लाह की ओर से दुश्मनों के मुक़ाबिल उनकी हमेशा सरसब्ज़ी का इत्मीनान दिया गया है। आ. १२१-१४८ में बदर की लड़ाई में सब्र, ईमान, क़ुर्बानी और साबितक़दमी पर क़ायम रहना अल्लाह की मदद का नमूना है। उसके बरक्स ऊहद की लड़ाई में मुसलमानों को अपनी अन्दरूनी कमज़ोरियों को दूर करने की नसीहत मिलती है। अल्लाह पर भरोसा रख कर जिहाद करने वालों को दुनिया और आख़िरत दोनों में ईनाम (पुरस्कार) है। आ. १४९-१८० में मुसलमानों के नुक़सान के ज़िम्मेदार उनमें के ही कुछ मुनाफ़िक़ ख़ुदग़रज़, बुज़दिल और ढुलमुलयक़ीन लोगों का ज़िक्र है, लेकिन उनके बावजूद अल्लाह के रास्ते पर चलने वालों का कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता आ. १८१-२०० में दुश्मनों की फ़िक़राकशी की परवाह न करते हुये अल्लाह की इबादत की हिदायत है जिससे कामयाबी और बहबूदी में फिर कोई शक नहीं रहता।

चौथा पारः लन्तना

☪ सूरः आलि अ़िम्रान आयात ९२ से २०० ☪

लन्तना लुल्बिर्र हत्ता तुन्फ़िक़ू मिम्मा तुहिब्बून ۵ त् व मा तुन्फ़िक़ू मिन् शैअिन् फ़अिन्नल्लाह बिहि अ़लीमुन् (९२) कुल्लुत्तआ़मि कान हिल्ललिबनी अिस्राअील अिल्ला मा हर्रम अिस्राअीलु अ़ला नफ़्सिहि मिन् क़ब्लि अन्तुनज़्ज़लत्तौरातु त् क़ुल् फ़अ्तूबित्तौराति फ़त्लूहा अिन् कुन्तुम् सादिक़ीन (९३) फ़मनिफ़्तरा अ़लल्लाहिल्कज़िब मिम्बअ़्दि ज़ालिक फ़अुलाअिक हुमुज़्ज़ालिमून ● (९४) क़ुल् सदक़ल्लाहु क़िफ़् फ़त्तबिअ़ू मिल्लत अिब्राहीम हनीफ़न् त् व मा कान मिनल्मुश्रिकीन (९५) अिन्न औवल बैतिंव्वुज़िअ़ लिन्नासि लल्लज़ी बिबक्कत मुबारकौंव हुदल्लिल्आ़लमीन ज (९६) फ़ीहि आयातुम् बैयिनातुम्-मक़ामु अिब्राहीम ۵ ज् व मन् दख़लहू कान आमिनन् त् व लिल्लाहि अ़लन्नासि हिज्जुल्बैति मनिस्तताअ़ अिलैहि सबीलन् त् व मन् कफ़र फ़अिन्नल्लाह ग़नीयुन् अ़निल्आ़लमीन (९७) क़ुल् या अह्लल्किताबि लिम तक्फ़ुरून बिआयातिल्लाहि क़् सला वल्लाहु शहीदुन् अ़ला मा तअ़्मलून (९८) क़ुल् या अह्लल्किताबि लिम तसुद्दून अ़न् सबीलिल्लाहि मन् आमन तब्ग़ूनहा अ़िवजौंव अन्तुम् शुहदाअु त् व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ़्मलून (९९) या अैयुहल्लज़ीन आमनू अिन् तुत़ीअ़ू फ़रीक़म्मिनल्लज़ीन अूतुल्किताब यरुद्दूकुम् बअ़्द ईमानिकुम् काफ़िरीन (१००) व कैफ़ तक्फ़ुरून व अन्तुम् तुत्ला अ़लैकुम् आयातुल्लाहि व फ़ीकुम् रसूलुहू त् व मैंयअ़्तसिम् बिल्लाहि फ़क़द् हुदिय अिला सिरातिम्-मुस्तक़ीमिन् (१०१) ★

व. जिब्. अ.

★ रु. १०/१ आ. १०

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ
شَيْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ۝٩٢ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِيْلُ عَلٰى نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ
تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ۭ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَآ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ۝٩٣ فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٩٤ قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۣ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ
حَنِيْفًا ۭ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝٩٥ اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ
لِلنَّاسِ لَلَّذِيْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝٩٦ فِيْهِ اٰيٰتٌۢ
بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ڬ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ۭ وَلِلّٰهِ عَلَى
النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ۭ وَمَنْ كَفَرَ
فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝٩٧ قُلْ يٰٓاَھْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ڰ وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰي مَا تَعْمَلُوْنَ ۝٩٨ قُلْ يٰٓاَھْلَ الْكِتٰبِ
لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ
شُهَدَاۗءُ ۭ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝٩٩ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا
اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ
كٰفِرِيْنَ ۝١٠٠ وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ
رَسُوْلُهٗ ۭ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝١٠١

منزل ۱

चौथा पारः लन्तना

सूरः आलि अिम्रान आयात ९२ से २००

जब तक तुम अपनी प्यारी चीज़ों में से (राहे अल्लाह में) ख़र्च न करोगे, हरगिज़ भलाई हासिल न कर सकोगे। और जो तुम ख़र्च करते (रहते हो) अल्लाह को ख़ूब मालूम है। (९२) कुछ चीज़ें याक़ूब ने (सिर्फ़) अपने ऊपर (बजरूरत इलाज) हराम§ कर ली थीं। इस (बात) के अलावा तौरात के उतरने से पहले खाने की सब चीज़ें याक़ूब की सन्तान के लिए हलाल थीं। (ऐ पैग़म्बर) कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो तौरात ले आओ और ख़ुद उसको पढ़ो देखो। (९३) फिर इसके बाद भी जो कोई अल्लाह पर झूठ बातें मढ़े तो ऐसे ही लोग अन्यायी हैं ● । (९४) कहो कि अल्लाह ने सच फ़र्मा दिया सो इब्राहीम के तरीक़े की पैरवी करो जो एक अल्लाह के हो रहे थे और मुशरिकों (बहुदेव पूजकों) में से न थे। (९५) लोगों के लिए जो (अिबादत का) घर सबसे पहले ठहराया गया वह यही है जो मक्के में है। बरकत (बढ़ती) वाला और दुनिया जहान के लोगों के लिए राह दिखानेवाला है। (९६) इसमें खुली हुई निशानियाँ हैं (जिनमें से एक) इब्राहीम के खड़े होने की जगह (इबादतगाह) है और जो इस घर में आ दाख़िल हुआ, चैन में आ गया♦। और लोगों पर अल्लाह के प्रति कर्त्तव्य है कि जिनको उस तक पहुँचने की शक्ति हो, काबे के घर की हज्ज करें और जो उससे मुन्किर (विमुख) हो तो (जानलो) अल्लाह जहान के लोगों की ओर से बेपरवाह (निरपेक्ष) है। (९७) (पैग़म्बर!) कहो कि ऐ किताबवालो! अल्लाह के कलाम से क्यों इन्कार करते हो और तुम्हारी करतूतों को अल्लाह ख़ूब देखता है। (९८) कहो कि ऐ किताबवालो! ईमान ले आनेवालों को नुक़्स निकाल-निकालकर अल्लाह की राह से क्यों रोकते हो? (जबकि सच यह है) कि तुम ख़ुद उसके गवाह हो और अल्लाह तुम्हारी करतूतों से बेख़बर नहीं है (९९) ऐ ईमानवालो! अगर तुम बाज़ किताबवालों का कहा मान लोगे तो वह तुमको ईमान लाने के बाद फिर काफ़िर बना छोड़ेंगे†। (१००) और तुम कैसे कुफ़्र (इन्कारी) अपनाओगे जबकि अल्लाह की आयतें तुमको पढ़-पढ़कर सुनाई जाती हैं और उसके रसूल तुममें मौजूद हैं। और जिसने अल्लाह (की हिदायत) को मज़बूती से पकड़ लिया, तो वह ज़रूर सीधे रास्ते लग गया। (१०१) ★

● व. जि ब. अ.

★ रु. १० — १ आ १०

---

§ यहूदी कहते थे कि ऐ मुहम्मद! तुम इब्राहीम अ० के धर्म पर चलने का दावा करते हो, तो वह चीज़ें क्यों खाते हो जो याक़ूब नहीं खाते थे, जैसे ऊँट का मांस। इसका जवाब दिया गया है कि तौरात उतरने से पूर्व सब चीज़ें इब्राहीम अ० की संतान के लिए हलाल थीं यानी उनको किसी चीज़ का खाना मना न था। याक़ूब अ. भी हर चीज़ खा सकते थे, पर वह एक बीमारी के कारण ऊँट का गोश्त न खाते थे। तौरात में कहीं नहीं लिखा है कि ऊँट का मांस खाना मना है। ♦ क़ुर्आन उतरने से पहले ज़माना जाहिलियत में भी काबा की इतनी इज्ज़त थी कि कोई अपने ख़ूनी दुश्मन को भी वहाँ मौजूद पा कर उस पर हाथ न उठा सकता था। काबा में दाख़िल हो गया, मानो ख़तरों से बच कर अमन में आगया। † किताबवाले मुसलमानों को बहकाने के लिए अपनी तरफ़ से जोड़-जोड़कर बातें बनाते थे और कहते थे, ये बातें तौरात में लिखी हैं और चूँकि तुम्हारे रसूल तौरात की भी ताईद करते हैं तो इन बातों को तुम क्यों नहीं मानते। इस लिए मुसलमानों को हिदायत दी गई कि शुबहा वाले लोगों या विरोधियों की बात ही न सुनो।

या अैयुहल्लजीन आमनुत्तक़ुल्लाह हक़्क़ तुक़ातिही व ला तमूतुन्न अिल्ला व अन्तुम् मुस्लिमून (१०२) वऽतसिमू बिहब्लिल्लाहि जमीअौंव ला तफ़र्रक़ू त़ वज्कुरू निऽमतल्लाहि अलैकुम् अिज् कुन्तुम् अऽदाअन् फ़अल्लफ़ बैन क़ुलूबिकुम् फ़अस्बहतुम् बिनिऽमतिही अिख़्वानन् ज व कुन्तुम् अला शफ़ा हुफ़्रतिम् मिनन्नारि फ़अन्क़जकुम् मिन्हा त़ कजालिक युबैयिनुल्लाहु लकुम् आयातिही लअल्लकुम् तह्तदून (१०३) वल्तकुम्-मिन्कुम् अुम्मतुँय्यद्अून अिलल्ख़ैरि व यअ्मुरून बिलमऽरूफ़ि व यन्हौन अनिल्मुन्करि त़ व अुलाअिक हुमुल्मुफ़्लिहून (१०४) व ला तकूनू कल्लजीन तफ़र्रक़ू वख़्तलफ़ू मिम्बऽदि मा जाअ हुमुलबैयिनातु त़ व अुलाअिक लहुम् अजाबुन् अजीमुन् ला (१०५) य्यौम तब्यज़्ज़ु वुजूहुँव तस्वद्दु वुजूहुन् ज फ़अम्मल्-लजीनस्-वद्दत् वुजूहुहुम् क़िफ़ अकफ़र्तुम् बऽद ईमानिकुम् फ़ज़ूक़ुल्अजाब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून (१०६) व अम्मल्लजीनब्यज़्ज़त् वुजूहुहुम् फ़फ़ी रह्मतिल्लाहि त़ हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (१०७) तिल्क आयातुल्लाहि नत्लूहा अलैक बिल्हक़्क़ि त़ व मल्लाहु युरीदु ज़ुल्मल्लिल्-आलमीन (१०८) व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि त़ व अिलल्लाहि तुर्जअुल्अुमूरु (१०९) ★ कुन्तुम् ख़ैर अुम्मतिन् अुख़्रिजत् लिन्नासि तअ्मुरून बिलमऽरूफ़ि व तन्हौन अनिल्मुन्करि व तुअ्मिनून बिल्लाहि त़ व लौ आमन अह्लुल्-किताबि लकान ख़ैरल्लहुम् त़ मिन्हुमुल्मुअ्मिनून व अक्सरु हुमुल्फ़ासिक़ून (११०)

لن تنالوا ٤ — ٥٠ — ال عمران ٣

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝ وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۠ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖٓ اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝ وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۣ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝ وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّآ اَذًى ؕ وَ

منزل ١

★ रु. ११ । २ आ. ८

ऐ ईमानवालो ! अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरने का हक़ है और मुसलमान रह कर ही मरना। (१०२) और तुम सब मज़बूती से अल्लाह की रस्सी पकड़े रहो और आपस में फूट न पैदा करना और अपने ऊपर अल्लाह का वह एहसान याद रखो कि जब तुम आपस में दुश्मन थे, फिर अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में मुहब्बत पैदा कर दी और तुम उसकी कृपा से (परस्पर) भाई-भाई हो गये, और तुम आग के गढ़े (नरक) के किनारे खड़े थे§ फिर उसने तुमको उससे बचा लिया। इसी तरह अल्लाह अपने हुक्म (तुमसे) खोल-खोलकर बयान करता है ताकि तुम सच्चे मार्ग पर रहो। (१०३) और तुममें से एक ऐसी जमात भी होना चाहिए जो नेक कामों की तरफ़ बुलाये और अच्छे काम करने की शिक्षा देता रहे और बुरे कामों से मना करे और ऐसे ही लोग (अपनी) मुराद को पहुँचेंगे। (१०४) और उन जैसे न होना जो अपने पास खुले-खुले हुक्म आने के बाद भी आपस में भेद डालने लगे और अलग-अलग बट गये। और यही हैं जिनको (आख़िरत में) बड़ी सज़ा होगी। (१०५) उस दिन (कुछ के) चेहरे सफ़ेद और (कुछ के) चेहरे काले होंगे, तो जिनके चेहरे काले होंगे उनसे कहा जायगा कि क्या तुम ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गये थे? तो अपने कुफ़्र की सज़ा में अज़ाब (दण्ड) भोगो। (१०६) और जिनके चेहरे उजले (चमक रहे होंगे) वह अल्लाह की रहमत (कृपा) में होंगे, और उसी में हमेशा रहेंगे। (१०७) (ऐ पैग़म्बर !) यह अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुमको सही-सही पढ़कर सुनाते हैं और अल्लाह दुनिया जहान के लोगों पर ज़ुल्म नहीं चाहता। (१०८) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है और (सब) मुआमलों को अल्लाह ही के समाने पेश होना है। (१०९)★

★ रु. ११/२ आ ८

तुम लोग सब से श्रेष्ठ उम्मत (संगत) हो जो लोगों के लिए पैदा की गई है, कि भली बात का हुक्म देते हो और बुरी बातों को मना करते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो, और अगर किताबवाले (यहूदी) भी ईमान ले आते तो उनके हक़ में बहुत भला होता। उनमें से थोड़े ईमान वाले भी हैं लेकिन उनमें ज़्यादातर इन्कारी (अवज्ञाकारी) हैं ! (११०)

§ इस्लाम से पहले अरब के लोगों की हालत की तरफ़ इशारा है। क़बीले आपस में लड़ कर मर मिट रहे थे (देखिये फुटनोट § पेज ४३)। आज वह इस्लाम के झण्डे के नीचे एक रूह हो रहे थे।

लैयज़ुर्रूकुम् अिल्ला अज़न् त़् व ओंयुक़ातिलूकुम् युवल्लू कुमुल्अद्बार क़िफ़ सुम्म ला युन्सरून (१११) ज़ुरिबत् अलैहिमुज्जिल्लतु अैनमा सुक़िफ़ू अिल्ला बिह्ब्लिम्-मिनल्लाहि वह्ब्लिम्-मिनन्नासि व बाऊ बिग़ज़बिम्-मिनल्लाहि व ज़ुरिबत् अलैहिमुल् - मस्कनतु त़् ज़ालिक बिअन्नहुम् कानू यक्फ़ुरून बिआयातिल्लाहि व यक़्तुलूनल् - अम्बियाअ बिग़ैरि हक़्क़िन् त़् ज़ालिक बिमा असौ व्व कानू यअ्तदून क (११२) लैसू सवाअन् त़् मिन् अह्लिल् - किताबि अुम्मतुन् क़ाअिमतुंय्यत्लून आयातिल्लाहि आनाअल्लैलि व हुम् यस्जुदून (११३) युअ्मिनून बिल्लाहि वल्-यौमिल् - आख़िरि व यअ्मुरून बिलमअ्रूफ़ि व यन्हौन अनिलमुन्करि व युसारिअून फ़िल्ख़ैराति त़् व अुलाअिक मिनस्सालिहीन (११४) व मा यफ़्अलू मिन् ख़ैरिन् फ़लैंयुक्फ़रूहु त़् वल्लाहु अलीमुम् - बिलमुत्तक़ीन (११५) अिन्नल्लजीन कफ़रू लन् तुग़्निय अन्हुम्

إِنْ يُقَاتِلُوكُمْ يُوَلُّوكُمُ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُونَ ﴿١١١﴾ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ أَيْنَ مَا ثُقِفُوا إِلَّا بِحَبْلٍ مِنَ اللَّهِ وَحَبْلٍ مِنَ النَّاسِ وَبَاءُوا بِغَضَبٍ مِنَ اللَّهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿١١٢﴾ لَيْسُوا سَوَاءً مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أُمَّةٌ قَائِمَةٌ يَتْلُونَ آيَاتِ اللَّهِ آنَاءَ اللَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُونَ ﴿١١٣﴾ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَأُولَٰئِكَ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١١٤﴾ وَمَا يَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُكْفَرُوهُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ﴿١١٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١١٦﴾ مَثَلُ مَا يُنْفِقُونَ فِي هَٰذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِنْ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا بِطَانَةً مِنْ دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا وَدُّوا مَا عَنِتُّمْ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٨﴾ هَا أَنْتُمْ أُولَاءِ تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ

अम्वालुहुम् वला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन् त़् व अुलाअिक अस्हाबुन्नारि ज हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (११६) मसलु मा युन्फ़िक़ून फ़ी हाजिहिल् - हयातिद्दुन्या कमसलि रीहिन् फ़ीहा सिर्रुन् असाबत् हर्स क़ौमिन् ज़लमू अन्फ़ुसहुम् फ़अह्लकतहु त़् व मा ज़लमहुमुल्लाहु वलाकिन् अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (११७) या अैयुहल्लजीन आमनू ला तत्तख़िज़ू बितानतम्-मिन् दूनिकुम् ला यअ्लूनकुम् ख़बालन् त़् वद्दू मा अनित्तुम् ज क़द् बदतिल् - बग़्ज़ाअु मिन् अफ़्वाहिहिम् ज सला व मा तुख़्फ़ी सुदूरुहुम् अक्बरु त़् क़द् बैयन्ना लकुमुल् - आयाति अिन् कुन्तुम् तअ्क़िलून (११८)

और (साधारण सा) सताने के सिवाय वह हरगिज़ तुमको किसी तरह का नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे और अगर तुमसे लड़ेंगे तो उनको तुमसे पीठ फेरते ही बन पड़ेगी, फिर उनको (कहीं से) मदद नहीं मिलेगी।(१११) जहाँ देखो ज़िल्लत उन पर सवार है सिवा इसके कि अल्लाह की तरफ़ से या लोगों (मुसलमानों) की तरफ़ से कोई अहद हो (पनाह पा जाँय) और वह अल्लाह के ग़ज़ब (कोप) में गिरिफ़्तार हैं और मुहताजी व पस्तगी उनके पीछे पड़ी है। यह उसकी सज़ा है कि वह अल्लाह की आयतों से इन्कार करते थे, और पैग़म्बरों को व्यर्थ मार डालते थे और यह (सब) इस कारन हुआ कि उन्होने अल्लाह का हुक्म नहीं माना और हद से बढ़ जाते थे।(११२) यह किताब वाले भी सब एक से नहीं हैं, कुछ लोग ऐसे हैं जो (अल्लाह के हुक्म पर) क़ायम हैं और रातों को खड़े रहकर अल्लाह की आयतें पढ़ते और सिजदः करते (सिर झुकाते) हैं। (११३) यह अल्लाह और क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हैं और अच्छे (काम) करने को कहते और बुरे से मना करते हैं और अच्छे कामों की तरफ़ दौड़ पड़ते हैं और यही नेक लोगों में से हैं।(११४) और भलाई किसी तरह की भी करें ऐसा हरगिज़ न होगा कि (उनकी) उस नेकी का फल (उनको) न मिले और अल्लाह परहेज़गारों से ख़ूब जानकार है।(११५) वेशक जो लोग काफ़िर हैं उनके माल और उनकी सन्तान अल्लाह के (कोप के) सामने हरगिज़ उनके कुछ भी काम न आयेगी और यही लोग नारकी हैं और यह (हमेशा) दोज़ख़ ही में रहेंगे।(११६) दुनिया की इस ज़िन्दगी में जो कुछ भी यह लोग ख़र्च करते हैं उसकी मिसाल उस हवा जैसी है जिसमें पाला (कड़ी सर्दी) हो, वह उन लोगों के खेत को जा लगे जो अपने ही लिए ज़ुल्म करते थे। फिर वह (हवा) उस (खेतो) को बरबाद कर दे तो अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह अपने ऊपर आप ही ज़ुल्म किया करते हैं।(११७) ऐ ईमानवालो! अपने लोगों को छोड़कर (किसी ग़ैर को) अपना भेदी मत बनाओ कि यह लोग तुम्हारे साथ लड़ने में (और बुराई करने में) कुछ उठा नहीं रखते हैं और चाहते हैं कि तुमको तकलीफ़ पहुँचे☸। दुश्मनी तो इनकी बातों से ज़ाहिर हो पड़ती है और जो (कीना) इनके दिलों में छिपा है वह (उससे भी) बढ़कर है। हमने तुमको पते की बातें बता दी हैं अगर तुमको बुद्धि हो।(११८)

☸ इस्लाम क़ुबूल करने के पहले औस और ख़ज़रज के क़बीलों की यहूदियों से बड़ी दोस्ती थी, और बाद भी वह दोस्ती क़ायम रखनी चाही। लेकिन यहूदी देखने में तो उनके दोस्त बने हुये थे और दिल में उनसे उनके मुसलमान होजाने के सबब पूरी दुश्मनी रखते थे। उनको ही सामने रख कर यह आयत नाज़िल हुई।

हा'अन्तुम् अुला'अि तुहि़ब्बूनहुम् व ला युहि़ब्बूनकुम् व तुअ्मिनून बिल्किताबि कुल्लिही ज् व अिज़ा लक़ूकुम् क़ालू' आमन्ना ज् क् सला व अिज़ा ख़लौ अ़ज़्ज़ू अ़लैकुमुल् - अनामिल मिनल्ग़ैज़ि त् क़ुल् मूतू बिग़ैज़िकुम् त् अिन्नल्लाह अ़लीमुम्-बिज़ातिस्सुदूरि (११९) अिन् तम्सस्कुम् ह़सनतुन् तसुअ्हुम् ज् व अिन् तुसिब्कुम् सैयिअतुंय्यफ़्रहू बिहा त् व अिन् तस्बिरू व तत्तक़ू ला यज़ुर्रुकुम् कैदुहुम् शैअन् त् अिन्नल्लाह बिमा यअ़्मलून मुही़तुन् (१२०) ★ व अिज़् ग़दौत मिन् अह्लिक तुबौविअुल् - मुअ्मिनीन मक़ाअ़िद लिल्क़िताल त् वल्लाहु समीअुन् अ़लीमुन् ला (१२१) अिज़् हम्मत्ता'अिफ़तानि मिन्कुम् अन् तफ़्शला ला वल्लाहु वलीयुहुमा त् व अ़लल्लाहि फ़ल्यतवक्कलिल्-मुअ्मिनून (१२२) व लक़द् नसरकुमुल्लाहु बिबद्रिंव्व अन्तुम् अज़िल्लतुन् ज् फ़त्तक़ुल्लाह लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (१२३) अिज़् तक़ूलु लिल्मुअ्मिनीन अलैंयक्फ़ियकुम् अँयुमिद्दकुम् रब्बुकुम् बिसलासति आलाफ़िम् - मिनल्-मला'अिकति मुन्ज़लीन त् (१२४) बला' ला अिन् तस्बिरू व तत्तक़ू व यअ्तूकुम् मिन् फ़ौरिहिम् हाज़ा युम्दिद् कुम् रब्बुकुम् बिख़म्सति आलाफ़िम्-मिनल्मला'अिकति मुसव्विमीन (१२५) ● व मा जअ़लहुल्लाहु अिल्ला बुश्रा लकुम् व लितत्मअिन्न क़ुलूबुकुम् बिही त् व मन्नस्रु अिल्ला मिन् अ़िन्-दिल्लाहिल् - अ़ज़ीज़िल् - ह़कीमि ला (१२६) लियक़्तअ़ तरफ़म् - मिनल्लज़ीन कफ़रू' औ यक्बितहुम् फ़यन्क़लिबू ख़ा'अिबीन (१२७) लैस लक मिनल्अम्रि शैअुन् औ यतूब अ़लैहिम् औ युअ़ज़्ज़िबहुम् फ़अिन्नहुम् ज़ालिमून (१२८) व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि त् यग़्फ़िरु लिमैंयशा'अु व युअ़ज़्ज़िबु मैंयशा'अु त् वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रह़ीमुन् (१२९) ★

रु. १२/३ आ ११

रु ब अ १/४

रु. १३/४ आ

لن تنالوا ٤ — ٥٢ — آل عمرٰن ٣

كله ۚ وإذا لقوكم قالوا آمنا ۖ وإذا خلوا عضوا عليكم الأنامل
من الغيظ ۚ قل موتوا بغيظكم ۗ إن الله عليم بذات
الصدور ۞ إن تمسسكم حسنة تسؤهم وإن تصبكم سيئة
يفرحوا بها ۖ وإن تصبروا وتتقوا لا يضركم كيدهم شيئا ۗ
إن الله بما يعملون محيط ۞ وإذ غدوت من أهلك تبوئ
المؤمنين مقاعد للقتال ۗ والله سميع عليم ۞ إذ همت
طائفتان منكم أن تفشلا والله وليهما ۗ وعلى الله فليتوكل
المؤمنون ۞ ولقد نصركم الله ببدر وأنتم أذلة ۖ فاتقوا الله
لعلكم تشكرون ۞ إذ تقول للمؤمنين ألن يكفيكم أن
يمدكم ربكم بثلاثة آلاف من الملائكة منزلين ۞ بلى ۚ إن
تصبروا وتتقوا ويأتوكم من فورهم هذا يمددكم ربكم
بخمسة آلاف من الملائكة مسومين ۞ وما جعله الله إلا
بشرى لكم ولتطمئن قلوبكم به ۗ وما النصر إلا من عند
الله العزيز الحكيم ۞ ليقطع طرفا من الذين كفروا أو
يكبتهم فينقلبوا خائبين ۞ ليس لك من الأمر شيء أو يتوب
عليهم أو يعذبهم فإنهم ظالمون ۞ ولله ما في السماوات
وما في الأرض ۚ يغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء ۚ والله

منزل

तुम तो ऐसे हो† कि उनसे प्यार रखते हो और वह तुमसे मुहब्बत नहीं रखते और तुम (अल्लाह की) सब किताबों पर पूरी तरह ईमान रखते हो, (और वह तुम्हारे क़ुर्आन से इन्कार करते हैं) और जब वह तुमसे मिलते हैं तो कह देते हैं कि हम ईमान ले आये हैं और जब अलग होते हैं तो मारे गुस्से के तुम पर अपनी उँगलियाँ काटते हैं, (ऐ पैग़म्बर ! उनसे) कह दो कि अपने गुस्से में (जल) मरो। जो (कपट तुम्हारे) दिलों में है बेशक अल्लाह को ख़ूब मालूम है। (११९) अगर तुमको कोई फ़ायदा पहुँचे तो उनको दुख होता है, और अगर तुमको कोई नुक़सान पहुँचे तो उससे खुश होते हैं। और अगर तुम सब्र करो और (कठिनाइयों का मज़बूती से सामना करते हुये) उनसे बचे रहो तो उनके फ़रेब-दग़ा से तुम्हारा कुछ भी बिगड़ने का नहीं, क्योंकि जो कुछ भी यह कर रहे हैं अल्लाह के वश में है।(१२०) ★

★ रु. १२ । ३ आ ११

और (ऐ पैग़म्बर ! वह समय भी) याद करो कि तुम सुबह अपने घर से चले, मुसलमानों को लड़ाई के मोर्चों पर बैठाने लगे और अल्लाह (सब) सुनता जानता है। (१२१) उस वक़्त का वाक़या है कि तुममें से दो§ गिरोहों ने साहस तोड़ देना चाहा मगर अल्लाह उनका सहायक था। और ईमानवालों को चाहिए कि अल्लाह पर ही भरोसा रखें। (१२२) और बदर के युद्ध में अल्लाह ने तुम्हारी मदद की हालाँकि (उस समय) तुम पस्त (शिथिल) थे तो अल्लाह से डरो, ताकि तुम शुक्रगुज़ार बन जाओ (१२३) (और वह भी याद करो) जबकि तुम मुसलमानों को समझा रहे थे कि क्या तुमको इतना काफ़ी नहीं कि तुम्हारा पालनकर्त्ता तीन हज़ार फ़रिश्ते भेजकर तुम्हारी मदद करे। (१२४) बल्कि अगर तुम मज़बूत बने रहो और (अल्लाह की नाखुशी से) बचो और (दुश्मन) अभी इसी दम तुम पर चढ़ आयें तो तुम्हारा परवरदिगार (तीन क्या) पाँच हज़ार निशानवाले फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा।(१२५)● और यह (मदद) तो अल्लाह ने सिर्फ़ तुम्हारे खुश करने को का और इसलिए कि तुम्हारे दिल इससे सब्र पावें वरना सहायता तो अल्लाह ही की तरफ़ से है जो बड़ा ज़बरदस्त और बड़ा हिकमतवाला है॥।(१२६) और (यह मदद) इसलिए थी कि काफ़िरों की एक जमात को नष्ट करे या ज़लील व पस्पा करे ताकि वे असफल वापिस चले जावें। (१२७) (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा तो कुछ भी दख़ल नहीं चाहे (अल्लाह) उनकी तौबा क़बूल करे या उनकी ज़्यादतियों पर नज़र करके उनको सज़ा दे+।(१२८) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है, जिसको चाहे माफ़ करे जिसको चाहे सज़ा दे और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बेहद मेहरबान है। (१२९) ★

● रु. ब्र. अ १ । ४

★ रु. १३ । ४ आ ६

† मुसलमान उन लोगों को भी अपना मित्र जानते थे जो वास्तव में उनके शत्रु थे पर प्रगट में अपने को ईमानवाला कहते थे। ऐसे मुनाफ़िक़ लोग उल्टी राय देते थे। और यदि मुसलमानों को किसी प्रकार का कष्ट होता था तो बहुत प्रसन्न होते थे। इनका सरदार अब्दुल्लाह-बिन-उबैयी था। उसने ऊहद की लड़ाई में पहले तो ग़लत राय दी, फिर लड़ाई के मैदान से अपने साथियों को लेकर चला गया और दूसरों को भी भागने को उत्साहित किया। § इनके नाम थे औस और खज़रज का क़बीला। यह दोनो क़बीले ऊहद के युद्ध में बड़ी वीरता से लड़े; लेकिन उनको बहकाने की भरसक कोशिश भी मुनाफ़िक़ों की ओर से हुई थी और इनकी हिम्मत भी थोड़ी देर के लिए टूट गई थी। ये दोनो क़बीले पहले आपस में घोर शत्रु थे। लेकिन अब इस्लाम की बदौलत बतौर दोस्त एक ही हक़ के लिए लड़ रहे थे। ॥ बदर के युद्ध में आकाश से कई हज़ार फ़रिश्ते मुसलमानों की सहायता के लिए उतरे थे। यहाँ कहा गया है कि अल्लाह ही की मर्ज़ी से विजय होती है। फ़रिश्तों का उतरना कुछ ज़रूरी नहीं है। + जंग में नबी स० के घायल हो जाने और हज़रत हमज़ः जैसे शहीदों की लाशों पर काफ़िरों के बुरे बरताव के सबब तकलीफ़ में उनके मुँह से काफ़िरों के लिए बद्दुआ निकल गई कि वह क़ौम कैसे सफल हो सकती है जो अपने नबी ही को ज़ख़मी करे। इस पर यह आयत उतरी कि यह हक़ अल्लाह ही को है कि जिसको चाहे इनाम दे या अज़ाब दे।

या अैयुहल्लजीन आमनू ला तअ्कुलुर्रिबा अज़्आफ़म् मुज़ाअफ़तन् स़् वत्तक़ुल्लाह लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून ज् (१३०) वत्तक़ुन्नारल्लती अुअिद्दत् लिल्काफ़िरीन ज् (१३१) व अतीअ़ुल्लाह वर्रसूल लअ़ल्लकुम् तुर्हमून ज् (१३२) व सारिअ़ू अिला मग़्फ़िरतिम्-मिर्रब्बिकुम् व जन्नतिन् अ़र्ज़ुहस्-समावातु वल्अर्ज़ु ला अुअिद्दत् लिलमुत्तक़ीन ला (१३३) अ्ल्लजीन युन्फ़िक़ून फ़िस्सर्राअि वज़्ज़र्राअि वल्काज़िमीनलग़ैज वल्आफ़ीन अ़निन्नासि त़् वल्लाहु युहिब्बुल्मुह्सिनीन ज् (१३४) वल्लजीन अिजा फ़अ़लू फ़ाहिशतन् औ ज़लमू अन्फ़ुसहुम् जकरुल्लाह फ़स्तग़्फ़रू लिजुनूबिहिम् स़् व मैंयग़्फ़िरुज्जुनूब अिल्लल्लाहु स़् क़िफ़् व लम् युसिर्रू अ़ला मा फ़अ़लू व हुम् यअ़्लमून (१३५) अुलाअिक जज़ाअुहुम् मग़्फ़िरतुम्-मिर्रब्बिहिम् व जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदीन फ़ीहा त़् व निअ़्म अज्रुल्-आमिलीन त़् (१३६) क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिकुम् सुननुन् ला फ़सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कैफ़ कान आक़िबतुल्-मुकज्जिबीन (१३७) हाजा बयानुल्लिन्नासि व हुदौंव मौअ़िज़तुल्-लिल्मुत्तक़ीन (१३८) व ला तहिनू व ला तह्ज़नू व अन्तुमुल्-अअ़्लौन अिन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (१३९) अींयम्सस्कुम् क़र्हुन् फ़क़द् मस्सल्क़ौम क़र्हुम्-मिस्लुहु त़् व तिल्कल्-अैयामु नुदाविलुहा बैनन्नासि ज् व लियअ़्लमल्लाहुल्लजीन आमनू व यत्तख़िज मिन्कुम् शुहदाअ त़् वल्लाहु ला युहिब्बुज्ज़ालिमीन ला (१४०) व लियुमह्हिसल्लाहुल्लजीन आमनू व यम्हक़ल्-काफ़िरीन (१४१)

آل عمران ٣ — ٥٣ — لن تنالوا ٤

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰوٓا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً
وَّاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ۝
وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝
الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ
عَنِ النَّاسِ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً
اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ وَمَنْ يَّغْفِرُ
الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝
اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝ قَدْ خَلَتْ مِنْ
قَبْلِكُمْ سُنَنٌ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُكَذِّبِيْنَ ۝ هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝
وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝
اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ
نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ
شُهَدَآءَ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا

ऐ ईमानवालो ! (मूल रकम को) दुगना चौगुना (बढ़ाने के लिए) ब्याज मत खाओ और अल्लाह से डरो। अजब नहीं तुम कामयाब (सफल) होओॅछ।(१३०) और (नरक की) उस आग से डरते रहो जो काफ़िरों के लिए तैयार है। (१३१) और अल्लाह और रसूल के हुक्म पर चलो अजब नहीं तुम पर दया की जाय। (१३२) और अपने पालनकर्त्ता की बख़्शीश और जन्नत की तरफ़ लपको जिसका विस्तार सारी ज़मीन और आसमान है, और जो परहेज़गारों (संयमी लोगों) के लिए तैयार की गई है। (१३३) यह वह लोग हैं जो ख़ुशहाली और तंगदस्ती में (दोनों हालतों में अल्लाह की राह पर) ख़र्च करते और क्रोध को रोकते और लोगों को क्षमा करते हैं, और भलाई करनेवालों से अल्लाह प्रेम करता है।(१३४) और ये लोग जब कोई बेजा हरकत कर बैठते या अपने ही तईं कोई अन्याय कर लेते हैं तो अल्लाह को याद करके अपने पापों की माफ़ी माँगने लगते हैं—क्योंकि अल्लाह के सिवा माफ़ी देने वाला है भी कौन—और (ये लोग) अपनी (बुरी)करनी पर जानने समझने के बाद (ज़िद से) अड़े नहीं रहते(१३५) तो यही लोग हैं जिनका बदला उनके पालनकर्त्ता की तरफ़ से बख़्शीश(क्षमा) है और (बहिश्त के) बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी उनमें वे हमेशा रहेंगे और(नेक)काम करने वालों के लिए क्या ही अच्छा बदला है! (१३६) तुमसे पहले भी(अनेक)तरीक़े हो गुज़रे हैं तो मुल्क में चलो-फिरो और देखो कि जिन लोगों ने झुठलाया उनको कैसा नतीजा मिला।(१३७) यह (क़ुर्आन) लोगों(को समझाने)के लिए पूरा बयान (विवरण) है और (अल्लाह से) डरनेवालों के लिए हिदायत और नसीहत है† ।(१३८) और हिम्मत न हारो और उदास मत होओ, अगर तुम ईमानवाले बने रहे तो तुम्हारी ही जीत रहेगी।(१३९) अगर तुमको (जंगे ऊहद में) चोट पहुँची है तो उनको भी इसी तरह की चोट (जंगे बदर में) पहुँच चुकी है और हम यह दिनों के फेर लोगों में अदलते बदलते रहते हैं और वह इसलिए कि अल्लाह ईमानवालों को मालूम करे और तुममें से कुछ को शहीद(या गवाह)बनाये। और अल्लाह अन्यायियों को नहीं पसंद करता।(१४०) और यह इस लिए कि अल्लाह ईमानवालों को निखार दे§ और काफ़िरों का ज़ोर तोड़ दे। (१४१) क्या तुम इस ख़याल में हो कि (बिना आज़माइश के) जन्नत में जा दाख़िल होगे हालाँकि अभी तक अल्लाह ने न तो उन लोगों को जाँचा जो तुममें से जिहाद करनेवाले हैं और न उन लोगों को जाँचा जो (अल्लाह की राह में) साबित क़दम (डटे) रहनेवाले हैं।(१४२)

छ ऊहद की लड़ाई में रसूलुल्लाह स० ने अब्दुल्लाह बिना ज़ुबैर को एक घाटी में मोर्चे पर तैनात कर हुक्म दिया था कि हार हो या जीत यहाँ से बिला हुक्म हटना नहीं। लेकिन फ़तह होते ही लोग लूट के माल में लग गये और ह० अब्दुल्लाह व चन्द आदमियों के सिवा घाटी में कोई बाक़ी न रहा। यह मौक़ा देख दुश्मन फिर पलट पड़े और इस जंग में ह० अब्दुल्ला व रसूल स० के चचा ह० हमज़ः वग़ैरः के प्राण गये। आयत से मुराद यह कि सूद खाना लालच का स्वभाव बढ़ाता है और लालच में फँस कर ही यह नुक़सान हुआ। इसलिए यहाँ जंग के मसले से हटकर सूद की तम्बीह की गई। † क़ुर्आन सारी दुनिया के लिए एलान है। लेकिन उनसे लाभ उठाने के लिए अल्लाह का डर होना बहुत ज़रूरी है। § "शुद्ध कर दे" से दो इशारे हैं। एक तो यह कि मुनाफ़िक़ों (कपटियों) से अलाहदा करके मोमिनों (ईमानवालों) को ज़ाहिर कर दे। दूसरा यह कि डगमगानेवाले कमज़ोरदिलों को मज़बूत कर पक्का मोमिन बना दे।

रु. १४/५ आ. १४

अम् हसिब्तुम् अन् तद्ख़ुलुल्-जन्नत व लम्मा यअ्लमिल्लाहुल्लजीन जाहदू मिन्कुम् व यअ्लमस्साबिरीन (१४२) व लक़द् कुन्तुम् तमन्नौनल्मौत मिन् क़ब्लि अन् तल्क़ौहु फ़क़द् रऐतुमूहु व अन्तुम् तन्ज़ुरून (१४३) ★ व मा मुहम्मदुन् अिल्ला रसूलुन् क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिहिर्रुसुलु अफ़अिम्मात औ क़ुतिलन्-क़लब्तुम् अला अअ्क़ाबिकुम् व मैंयन्क़लिब् अला अक़िबैहि फ़लैयज़ुर्रल्लाह शैअन् व सयज्ज़िल्लाहुश्-शाकिरीन (१४४) व मा कान लिनफ़्सिन् अन् तमूत अिल्ला बिअिज्निल्लाहि किताबम्-मुअज्जलन् व मैंयुरिद् सवाबद्दुन्या नुअ्तिही मिन्हा व मैंयुरिद् सवाबल्-आख़िरति नुअ्तिही मिन्हा व सनज्ज़िश्-शाकिरीन (१४५) व कअैयिम्-मिन् नबीयिन् क़ातल मअ़हु रिब्बीयून कसीरुन् फ़मा वहनू लिमा असाबहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि व मा ज़अ़ुफ़ू व मस्तकानू वल्लाहु युहिब्बुस्साबिरीन (१४६)

يعلم الله الذين جهدوا منكم ويعلم الصبرين ۝ ولقد كنتم تمنون الموت من قبل ان تلقوه فقد رايتموه وانتم تنظرون ۝ وما محمد الا رسول قد خلت من قبله الرسل افاين مات او قتل انقلبتم على اعقابكم ومن ينقلب على عقبيه فلن يضر الله شيئا وسيجزي الله الشكرين ۝ وما كان لنفس ان تموت الا باذن الله كتبا مؤجلا ومن يرد ثواب الدنيا نؤته منها ومن يرد ثواب الاخرة نؤته منها وسنجزي الشكرين ۝ وكاين من نبي قتل معه ربيون كثير فما وهنوا لما اصابهم في سبيل الله وما ضعفوا وما استكانوا والله يحب الصبرين ۝ وما كان قولهم الا ان قالوا ربنا اغفر لنا ذنوبنا واسرافنا في امرنا وثبت اقدامنا وانصرنا على القوم الكفرين ۝ فاتىهم الله ثواب الدنيا وحسن ثواب الاخرة والله يحب المحسنين ۝ يايها الذين امنوا ان تطيعوا الذين كفروا يردوكم على اعقابكم فتنقلبوا خسرين ۝ بل الله مولىكم وهو خير النصرين ۝ سنلقي في قلوب الذين كفروا الرعب بما اشركوا بالله ما لم ينزل به سلطنا ومأوىهم النار وبئس مثوى الظلمين ۝

व मा कान क़ौलहुम् अिल्ला अन् क़ालू रब्बनग़्फ़िर्लना ज़ुनूबना व अिस्राफ़ना फ़ी अम्रिना व सब्बित् अक़्दामना वन्सुर्ना अलल्क़ौमिल्-काफ़िरीन (१४७) फ़आताहुमुल्लाहु सवाबद्दुन्या व हुस्न सवाबिल्-आख़िरति वल्लाहु युहिब्बुल्-मुह्सिनीन (१४८) ★ या अैयुहल्लजीन आमनू अिन् तुतीअुल्लजीन कफ़रू यरुद्दूकुम् अला अअ्क़ाबिकुम् फ़तन्क़लिबू ख़ासिरीन (१४९) बलिल्लाहु मौलाकुम् व हुव ख़ैरुन्नासिरीन (१५०) सनुल्क़ी फ़ी क़ुलूबिल्लजीन कफ़रुर्रुअ्ब बिमा अश्रकू बिल्लाहि मालम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानन् व मअ्वाहुमुन्नारु व बिअ्स मस्वज्ज़ालिमीन (१५१)

रु. १५/६ आ. ५

और तुम तो मौत के आने से पहले शहीद होने‡ की दुआएँ किया करते थे सो अब तो तुमने उसको अपनी आँखों देख लिया (तो अब शहीद होने में आगापीछा क्यों हैं।) (१४३) ★

रु. १४ / ५ आ १४

और मुहम्मद तो और कुछ नहीं सिर्फ़ एक पैग़म्बर हैं। और इनसे पहले और भी (बहुत से) रसूल हो गुज़रे हैं, सो अगर उनकी मौत हो जाय या वे शहीद हो जाँय तो क्या तुम लोग उलटे फिर जाओगे†। और जो उल्टे पैरों (कुफ़्र की ओर) लौट जायगा तो वह अल्लाह का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा। और शुक्रगुज़ारों को अल्लाह बड़ा सवाब देगा। (१४४) और कोई शख़्स बिला हुक्म अल्लाह के मर नहीं सकता,§ ज़िन्दगी (मुक़र्रर) लिखी हुई है। और जो शख़्स दुनिया में (अपने कर्मों का) बदला चाहता है हम उसका बदला यहीं दे देते हैं और जो आख़िरत में बदला चाहता है हम उसको उसका हक़ वहीं देंगे और जो लोग शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) हैं उनको (हम जल्दी ही) बदला देंगे।(१४५) और बहुत से नबी हो गुज़रे हैं जिनके साथ होकर बहुत से अल्लाह वाले (दुश्मनों से) लड़े, तो जो तकलीफ़ (बसबब कम तादाद में होने के) उनको अल्लाह के रास्ते में पहुँची उसकी वजह से न तो उन्होंने हिम्मत हारी और न बुज़दिली दिखाई और न कुफ़्र के आगे झुके और अल्लाह ऐसे जमे रहनेवालों को दोस्त रखता है। (१४६) और सिवाय इसके उनके मुँह से एक बात भी तो नहीं निकली कि ऐ हमारे पालनकर्त्ता! हमारे पाप क्षमा कर और हमारे कामों में जो हमसे अन्याय हो गये हैं, उनको (माफ़ कर) और हमारे पाँव जमाये रख और काफ़िरों के गिरोह पर हमको जीत दे। (१४७) तो अल्लाह ने उनको दुनिया (लोक) में भी सवाब दिया और आख़िरत (परलोक) में भी अच्छा सवाब दिया और अल्लाह भलाई करनेवालों को पसंद करता है।(१४८) ★

रु. १५ / ६ आ ५

ऐ ईमानवालो! अगर तुम काफ़िरों के कहे में आ जाओगे तो वे तुमको उल्टे पैरों (फिर कुफ़्र की ओर) लौटा ले जायँगे, फिर तुम ही (उल्टे) घाटे में आ जाओगे×।(१४९) बल्कि तुम्हारा मददगार अल्लाह है और वह सबसे अच्छा मददगार है।(१५०) हम जल्दी तुम्हारा डर काफ़िरों के दिलों में बिठा देंगे क्योंकि उन्होंने उन चीज़ों को अल्लाह का शरीक बनाया (अर्थात् पूजा) है जिनकी अल्लाह ने (कोई भी) सनद नहीं भेजी और उन (लोगों) का ठिकाना आग (नरक) है और ज़ालिमों के लिए वह कैसा बुरा ठिकाना है? (१५१)

‡ मुसलमान शहादत (वीर गति पाने) की तमन्ना (इच्छा) रखते थे। जब ऊहद में बहुत-से मुसलमान मारे गये तो उन्होंने अपनी आँखों से देख लिया कि शहादत के क्या मानी हैं। † ऊहद की लड़ाई में मुहम्मद साहब स० घायल होकर एक गढ़े में गिर पड़े थे और यह खबर उड़ गई थी कि उनका स्वर्गवास हो गया। इसलिए कुछ लोग मैदान छोड़कर चले गये थे। कुछ मुनाफ़िक़ तो यहाँ तक कहने लगे कि मुशरिकों के लीडर अबू सुफ़यान की पनाह में लौट चला जाय और फिर पुराने दीन को तसलीम कर लिया जाय। इस पर कहा गया है कि मुसलमान तो अल्लाह के लिए लड़ते हैं। नबी की मृत्यु भी हो जाय तो उनको अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए। § याने हर शख़्स की मौत का वक़्त अल्लाह की ओर से मुक़र्रर है और मौत आना भी ज़रूर है। फिर मौत का ख़ौफ़ बेकार है। उसे छोड़ कर अल्लाह के दीन की पैरवी करना चाहिये। × ऊहद की लड़ाई से काफ़िरों की हिम्मत बढ़ गई। वह मुसलमानों से कहने लगे कि अब तुम फिर से हमारे दीन में आ जाओ। मुसलमानों में मिले हुये मुनाफ़िक़ भी ऐसा ही सुझाने लगे। इस पर कहा गया कि जिस कुफ़्र से निकल कर सच्चे दीन में आये हो क्या फिर इन लोगों के झाँसे में फँस कर उसी कुफ़्र में जा फँसोगे।

व लक़द् सदक़कुमुल्लाहु वअ़्दहू अिज् तहुस्सूनहुम् बिअिज्निही ज् हत्ता अिजा फ़शिल्तुम् व तनाज़अ़्तुम् फ़िल्अम्रि व अ़सैतुम् मिम्बअ़्दि मा अराकुम् मा तुहिब्बून त् मिन्कुम् मैंयुरीदुद्दुन्या व मिन्कुम् मैंयुरीदुल्-आख़िरत ज् सुम्म सरफ़कुम् अ़न्हुम् लियब्तलियकुम् ज् व लक़द् अ़फ़ा अ़न्कुम् त् वल्लाहु ज़ू फ़ज़्लिन् अ़लल् - मुअ्मिनीन (१५२) अिज् तुस्अिदून व ला तल्वून अ़ला अहदिंव्वर्रसूलु यद्अ़ू कुम् फ़ी अुख़्राकुम् फ़असाबकुम् ग़म्मम् - बिग़म्मिल्-लिकैला तह्ज़नू अ़ला मा फ़ातकुम् व ला मा असाबकुम् त् वल्लाहु ख़बीरुम्-बिमा तअ़्मलून (१५३) सुम्म अन्ज़ल अ़लैकुम् मिम्बअ़्दिल्ग़म्मि अमनतन्नुआ़सैंयग़्शा ताअिफ़तम् - मिन्कुम् ला व ताअिफ़तुन् क़द् अहम्मत्हुम् अन्फ़ुसुहुम् यज़ुन्नून बिल्लाहि ग़ैरल्हक़्क़ि ज़न्नल्-जाहिलीयति त् यक़ूलून हल्लना मिनल्अम्रि मिन् शैअिन् त् क़ुल् अिन्नल्-अम्र कुल्लहू लिल्लाहि त् युख़्फ़ून फ़ी अन्फ़ुसिहिम् मा ला युब्दून लक त् यक़ूलून लौ कान लना मिनल्-अम्रि शैअुम्मा क़ुतिल्ना हाहुना त् क़ुल् लौ कुन्तुम् फ़ी बुयूतिकुम् लबरज़ल्लज़ीन कुतिब अ़लैहिमुल्क़त्लु अिला मज़ाजिअिहिम् ज् व लियब्तलियल्लाहु मा फ़ी सुदूरिकुम् व लियुमह्हिस मा फ़ी क़ुलूबिकुम् त् वल्लाहु अ़लीमुम् - बिज़ातिस्सुदूरि (१५४) अिन्नल्लज़ीन तवल्लौ मिन्कुम् यौमल्-तक़ल्-जम्अ़ानि ला अिन्नमस्-तज़ल्ल-हुमुश्शैतानु बिबअ़्ज़ि मा कसबू ज् व लक़द् अ़फ़ल्लाहु अ़न्हुम् त् अिन्नल्लाह ग़फ़ूरुन् हलीमुन् (१५५) ★

★ रु. १६/७ आ

ولقد صدقكم الله وعده اذ تحسونهم باذنه حتى اذا
فشلتم وتنازعتم في الامر وعصيتم من بعد ما اركم ما
تحبون منكم من يريد الدنيا ومنكم من يريد الاخرة ثم
صرفكم عنهم ليبتليكم ولقد عفا عنكم والله ذو فضل على
المؤمنين ۝ اذ تصعدون ولا تلون على احد والرسول يدعوكم
في اخركم فاثابكم غما بغم لكيلا تحزنوا على ما فاتكم ولا
ما اصابكم والله خبير بما تعملون ۝ ثم انزل عليكم من
بعد الغم امنة نعاسا يغشى طائفة منكم وطائفة قد
اهمتهم انفسهم يظنون بالله غير الحق ظن الجاهلية يقولون
هل لنا من الامر من شيء قل ان الامر كله لله يخفون
في انفسهم ما لا يبدون لك يقولون لو كان لنا من الامر
شيء ما قتلنا ههنا قل لو كنتم في بيوتكم لبرز الذين
كتب عليهم القتل الى مضاجعهم وليبتلي الله ما في
صدوركم وليمحص ما في قلوبكم والله عليم بذات
الصدور ۝ ان الذين تولوا منكم يوم التقى الجمعن انما
استزلهم الشيطن ببعض ما كسبوا ولقد عفا الله عنهم
ان الله غفور حليم ۝ يايها الذين امنوا لا تكونوا كالذين

और जिस वक़्त तुम अल्लाह के हुक्म से काफ़िरों को तलवार के घाट उतार रहे थे (उस वक़्त) अल्लाह ने तुमको अपना (फ़तह का) वादा सच्चा कर दिखाया। तो इसके बाद जबकि अल्लाह ने तुम्हारी इच्छा पूरी कर (जीत) दिखा दी, (फिर भी) यहाँ तक कि जब तुम (खुद ही) हिम्मत हार गये और (रसूल स० की) आज्ञा के बारे में आपस में झगड़ने लगे और उसकी नाफ़र्मानी (बेहुक्मी) की§। कुछ तो तुममें से दुनिया (का माल लूटने) के पीछे पड़ गये और कुछ आख़िरत की फ़िक्र में लगे (याने मोर्चे पर डटे रह कर शहीद हो गये) तब तो अल्लाह ने तुमको उन (दुश्मनों) से फेर (कर भगा) दिया क्योंकि अल्लाह को तुम्हारी जाँच मंज़ूर थी और (फिर भी) अल्लाह ने तुम्हारा क़ुसूर माफ़ कर दिया और ईमानवालों पर अल्लाह की बड़ी कृपा है। (१५२) (वह समय भी याद करो) जब तुम† चढ़े (भागे) चले जाते थे और (बावजूदे कि) पैग़म्बर तुम्हारे पीछे तुमको बुला रहे थे तुम मुड़कर किसी की तरफ़ नहीं देखते थे। तो (रसूल स० के) रंज के बदले (अल्लाह ने) तुमको रंज पहुँचाया ताकि जब कभी तुम्हारे हाथ से कोई चीज़ निकल जाय या तुम पर कोई मुसीबत आ पड़े तो तुम उसका रंज न करो (याने सब्र से काम लो) और तुम कुछ भी करो अल्लाह को उसकी पूरी ख़बर है। (१५३) फिर तंगी के बाद अल्लाह ने तुम पर आराम के लिए औंघ उतारी कि तुममें से कुछ को (याने ईमान वालों को) नींद ने आ घेरा और कुछ (याने मुनाफ़िक़ों) को अपनी जानों की पड़ी थी, अल्लाह के बारे में झूठे जाहिलियत जैसे ख़्याल बाँध रहे थे। कहते थे कि हमारे वश की क्या बात है—कह दो कि (बेशक) सब काम अल्लाह ही के इख़्तियार में है। (ऐ पैग़म्बर! ज़बानी शिकायतों के अलावा) इनके दिलों में (ऐसी) और बातें भी छिपी हुई हैं जिनको तुम पर ज़ाहिर नहीं करते। कहते हैं कि हमारा कुछ भी वश चलता होता तो हम यहाँ मारे ही न जाते। कह दो कि तुम अपने घरों में भी होते तो जिनके भाग्य में मारा जाना लिखा था निकलकर अपने क़त्ल⁕ की जगह आ मौजूद होते। और अल्लाह को मंज़ूर था कि तुम्हारी दिली मंशाओं को जाँचे और तुम्हारे दिली (खोटे) ख़्यालात को साफ़ कर दे और अल्लाह तो (सबके) जी की बात जानता है। (१५४) जिस दिन दो जमातों[] की मुटभेड़ हुई थी तुम में से कुछ लोग भाग खड़े हुए थे तो सिर्फ़ इसलिए कि उनके कुछ पापों की वजह से शैतान ने उनके पाँव उखाड़ दिये थे और बेशक अल्लाह ने उनको माफ़ कर दिया। और अल्लाह बड़ा माफ़ करनेवाला बड़ा सहनेवाला है। (१५५) ★

★ रु. १६ ७ आ ७

§ पीछे आयत १३० में दिये फ़ुटनोट का हवाला है जब जंगे ऊहद में अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के साथी शुरू में फ़तह होते ही मोर्चे से हट कर लूट में लग गये और उनकी इस लालच और रसूल की बेहुक्मी याने मोर्चा छोड़ भागने के कारन उनको आगे शिकस्त देखना पड़ी। † यह भी ऊहद की लड़ाई का हाल है। मुहम्मद साहब स० ने कुछ लोगों को एक जगह तैनात कर दिया था और कहा था कि तुम लोग यहाँ से न हटना। उन लोगों ने जब मुसलमानों की खुली विजय देखी और काफ़िरों को भागते देखा तो अपनी जगह छोड़कर काफ़िरों के पीछे दौड़ पड़े। हालाँकि रसूल स० गिनती के आदमियों के साथ वहीं जमे उनको पुकार रहे थे कि यहीं जमे रहो। इस हुक्मउदूली का नतीजा यह हुआ कि पीछे से मुशरिक खालिद-बिन-वलीद ने उन पर दुबारा हमला कर दिया और लड़ाई का रंग मुसलमानों के खिलाफ़ बदल गया। ⁕ यानी यदि भाग्य में मरना ही लिखा है तो जहाँ भी होते वहीं से चलकर अपने मरने के स्थान पर आ जाते। [] काफ़िरों के मुक़ाबिले ऊहद की लड़ाई में कुछ लोग भाग खड़े हुए थे। लड़ाई के मैदान से भागना बड़ा पाप है पर अल्लाह ने उनके इस पाप को भी क्षमा कर दिया।

या॑ अैयुहल्लजीन आमनू ला तकूनू कल्लजीन कफ़रू व क़ालू लिअिख़्वानिहिम् अिजा ज़रबू फ़िल्अर्ज़ि औ कानू ग़ुज़्ज़ल्लौ कानू अिन्दना मा मातू व मा क़ुतिलू ज् लियज्अलल्लाहु जालिक हस्रतन् फ़ी क़ुलूबिहिम् त् वल्लाहु युह्यी व युमीतु त् वल्लाहु बिमा तअ्मलून बसीरुन् (१५६) व लअिन् क़ुतिल्तुम् फ़ी सबीलिल्लाहि औ मुत्तुम् लमग़्फ़िरतुम् मिनल्लाहि व रह्मतुन् ख़ैरुम्मिम्मा यज्मअून (१५७) व लअिम्-मुत्तुम् औ क़ुतिल्तुम् लअिलल्लाहि तुह्शरून (१५८) फ़बिमा रह्मतिम्-मिनल्लाहि लिन्त लहुम् ज् व लौ कुन्त फ़ज़्ज़न् ग़लीज़लक़ल्बि लन्फ़ज़्ज़ू मिन् हौलिक स् फ़अ्फ़ु अन्हुम् वस्तग़्फ़िर्लहुम् व शाविर्हुम् फ़िल्अम्रि ज् फ़अिजा अज़म्त फ़तवक्कल् अलल्लाहि त् अिन्नल्लाह युहिब्बुल्-मुतवक्किलीन (१५९) अींयन्सुर्-कुमुल्लाहु फ़ला ग़ालिब लकुम् ज् व अींयख़्ज़ुल्कुम् फ़मन् जल्लजी यन्सुरुकुम् मिम्बअ्दिही त् व अलल्लाहि फ़ल्यतवक्कलिल् - मुअ्मिनून (१६०) व मा कान लिनबीयिन् अैंयग़ुल्ल त् व मैंयग़्लुल् यअ्ति बिमा ग़ल्ल यौमल्क़ियामति ज् सुम्म तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम्मा कसबत् व हुम् ला युज़्लमून (१६१) अफ़मनित्तबअ रिज़्वानल्लाहि कमम्बा॑अ बिसख़तिम्-मिनल्लाहि व मअ्वाहु जहन्नमु त् व बिअ्सल्मसीरु (१६२) हुम् दरजातुन् अिन्दल्लाहि त् वल्लाहु बसीरुम् - बिमा यअ्मलून (१६३) लक़द् मन्नल्लाहु अलल्मुअ्मिनीन अिज् बअस फ़ीहिम् रसूलम्मिन् अन्फ़ुसिहिम् यत्लू अलैहिम् आयातिही व युज़क्कीहिम् व युअल्लिमुहुमुल् - किताब वल्हिक्मत ज् व अिन् कानू मिन् क़ब्लु लफ़ी ज़लालिम् - मुबीनिन् (१६४)

كَفَرُوْا وَقَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِي الْاَرْضِ اَوْ كَانُوْا غُزًّى لَّوْ
كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَمَا قُتِلُوْا ۚ لِيَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً فِيْ
قُلُوْبِهِمْ ۗ وَاللّٰهُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَلَئِنْ
قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ
مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝ وَلَئِنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِلَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ۝
فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ
لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ
فِي الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ۝
اِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ
يَنْصُرُكُمْ مِّنْ بَعْدِهٖ ۗ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ وَمَا
كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ ۚ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ
ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ اَفَمَنِ
اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ۚ
وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا
يَعْمَلُوْنَ ۝ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا
مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ
وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ اَوَلَمَّا

منزل ۱

नि. १/२

ऐ ईमानवालो ! उन लोगों (मुनाफ़िक़ों) जैसे न बनो जो काफ़िर हो रहे हैं और अपने भाई-बन्धुओं के बारे में, जो परदेश निकले हों या जिहाद करने गये हों (और वहाँ शहीद हो गये हों), कहा करते हैं कि अगर हमारे पास होते तो न मरते और न मारे जाते। अल्लाह ने उन लोगों के ऐसे ख़याल इसलिए कर दिये हैं कि उनके दिलों में हसरत (संताप) रहे और (वैसे तो) अल्लाह ही जिलाता और मारता है और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह उसको देख रहा है।(१५६) और अल्लाह की राह में अगर तुम मारे जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की माफ़ी और कृपा उससे कहीं बढ़कर है जो यह लोग (संसार में) जमा कर रहे हैं।(१५७) और तुम मर गये या मारे गये तो ज़रूर अल्लाह ही के सामने सबको जमा होना है।(१५८) फिर अल्लाह की यह बड़ी मेहरबानी ही है कि तुम§ इनको मुलायम दिल मिले हो और अगर तुम ज़बान के सख़्त और कड़े दिल के हो। तो यह लोग तुम्हारे पास से तितर-बितर हो जाते। तो तुम इनके क़सूरों पर ध्यान न दो और इनके गुनाहों की (अल्लाह से) माफ़ी चाहो और कामों में इनकी सलाह ले लिया करो†, लेकिन जब तुम्हारे दिल में एक बात ठन जाय तो भरोसा अल्लाह ही पर रखना। जो लोग (अल्लाह पर) भरोसा रखते हैं बेशक अल्लाह उनसे प्रेम करता है।(१५९) अगर अल्लाह तुम्हारी मदद पर है तो फिर कोई भी तुमको जीतनेवाला नहीं और अगर वह तुमको छोड़ बैठे तो उसके सिवा कौन है जो तुम्हारी मदद को खड़ा हो और ईमानवालों को तो चाहिए कि अल्लाह ही का भरोसा रखें।(१६०) और किसी नबी की शान के बईद है कि कुछ भी ख़यानत करे* और जो कोई ख़यानत का अपराधी होगा वह क़ियामत के दिन उसको लेकर (स्वयं अल्लाह के सामने) हाज़िर करेगा, फिर जिसने जैसा किया है उसको उसका पूरा-पूरा बदला दिया जायगा और किसी पर ज़ुल्म नहीं होगा। (१६१) भला जो शख़्स अल्लाह की मर्ज़ी पर चलने वाला हो वह उस शख़्स-जैसा कैसे हो सकता है जो अल्लाह के अज़ाब (प्रकोप) के लायक़ हो और उसका ठिकाना दोज़ख़ है और वह (कैसा) बुरा ठिकाना है। (१६२) अल्लाह के यहाँ लोगों के (उनकी करनी के मुताबिक़) अलग अलग दर्जे हैं और (वह लोग) जो कुछ कर कर रहे हैं अल्लाह उसको ख़ूब देख रहा है।(१६३) अल्लाह ने ईमानवालों पर इहसान किया कि उनमें उन्हीं में का एक पैग़म्बर भेजा जो उनको अल्लाह की आयतें पढ़-पढ़कर सुनाता है और उनका सुधार करता है और किताब और समझ की बातें उनको सिखाता है वर्ना यह लोग तो पहले से ज़ाहिरा भटके हुओं में से थे। (१६४)

नि. १/२

§ 'तुम' से यहाँ रसूलुल्लाह स० मुराद हैं। वह दिल के नर्म और ज़बान के मीठे थे। यदि क्रोधी और कड़े स्वभाव के होते तो मुसलमान क्या करते ? नबी होने की हैसियत से तो उनका हुक्म मानना ही पड़ता, परन्तु वे भागे-भागे अवश्य फिरते। † पैग़म्बर को हुक्म अल्लाह है कि इनके गुनाहों को तो माफ़ कर दो लेकिन गुनहगार होते हुये भी, मुआमलात में इनकी राय लेने में न बाज़ आओ। अल्लाह की रहमत का यह नमूना है कि गुनहगार को भी यह दर्जा हासिल है। * आयत १६१-१६२ का नज़ूल उस 'मौक़े' पर हुआ जब जंगे ऊहद के बाद लूट के माल में किन्हीं मुनाफ़िक़ों की शरारत या कमसमझ नवमुस्लिमों की नासमझी से यह इज़्हार हुआ कि लूट के माल में कोई क़ीमती चीज़ ग़ायब है और उसके ग़ायब होने का शक रसूल स० के निज़ाम पर था। मतलब यह है कि साधारन आदमी जैसे अपराध का नबी की शान में थोपना बुरा है। नबी से भला ऐसे अन्याय कैसे हो सकते हैं। साधारण आदमी भी अगर ख़यानत का मुजरिम होगा तो उसको उस अपराध के साथ अल्लाह के सामने हाज़िर होना पड़ेगा।

अव लम्मा असाबत्कुम् मुसीबतुन् क़द् असब्तुम् मिस्लैहा ला क़ुल्तुम् अन्ना हाज़ा त् क़ुल् हुव मिन् अिन्दि अन्फ़ुसिकुम् त् अिन्नल्लाह अला कुल्लि शैअिन् क़दीरुन् (१६५) व मा असाबकुम् यौमल्-तक़ल्-जम्आनि फ़बिअिज्-निल्लाहि व लियअ़्लमल् - मुअ्मिनीन ला (१६६) व लियअ़्लमल्लजीन नाफ़क़ू ज् सला वक़ील लहुम् तआलौ क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहि अविद् फ़अू त् क़ालू लौ नअ़्लमु क़ितालल्-लत्तबअ़्नाकुम् त् हुम् लिल्कुफ़्रि यौमअिजिन् अक़्रबु मिन्हुम् लिल्ओमानि ज् यक़ूलून बिअफ़्वाहिहिम् मा लैस फ़ी क़ुलूबिहिम् त् वल्लाहु अअ़्लमु बिमा यक्तुमून ज् (१६७) अल्लजीन क़ालू लिअिख़्वानिहिम् व क़अदू लौ अताअूना मा क़ुतिलू त् क़ुल् फ़द्रअू अन् अन्फ़ुसिकुमुल्मौत अिन् कुन्तुम् सादिक़ीन (१६८) व ला तह्सबन्नल्लजीन क़ुतिलू फ़ी सबीलिल्लाहि अम्वातन् त् बल् अह्यांअुन् अिन्द रब्बिहिम् युर्ज़क़ून ला (१६९) फ़रिहीन बिमा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही ला व यस्तब्शिरून बिल्लजीन लम् यल्हक़ू बिहिम् मिन् ख़ल्फ़िहिम् ला अल्ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून ● म् (१७०) यस्तब्शिरून बिनिअ़्मतिम्-मिनल्लाहि व फ़ज़्लिन् ला ॅव अन्नल्लाह ला युज़ीअु अज्रल्-मुअ्मिनीन ज् ∴ (१७१) ★ अल्लजीनस्तजाबू लिल्लाहि वर्रसूलि मिम्बअ़्दि मा असाबहुमुल्क़र्हु त् ∴ लिल्लजीन अह्सनू मिन्हुम् वत्तक़ौ अज्रुन् अज़ीमुन् ज् (१७२) अल्लजीन क़ाल लहुमुन्नासु अिन्नन्नास क़द् जमअू लकुम् फ़ख़्शौ हुम् फ़ज़ादहुम् ओमानन् क़् सला ॅव क़ालू हस्बुनल्लाहु व निअ़्मल्-वकीलु (१७३)

آل عمران ٣ ٥٨ لن تنالوا ٤

اصابتكم مصيبة قد اصبتم مثليها قلتم انى هذا قل هو
من عند انفسكم ان الله على كل شيء قدير ﴿١٦٥﴾ وما اصابكم
يوم التقى الجمعن فباذن الله وليعلم المؤمنين ﴿١٦٦﴾ وليعلم
الذين نافقوا وقيل لهم تعالوا قاتلوا في سبيل الله او ادفعوا
قالوا لو نعلم قتالا لا اتبعنكم هم للكفر يومئذ اقرب منهم
للايمان يقولون بافواههم ما ليس في قلوبهم والله اعلم
بما يكتمون ﴿١٦٧﴾ الذين قالوا لاخوانهم وقعدوا لو اطاعونا
ما قتلوا قل فادرءوا عن انفسكم الموت ان كنتم صدقين ﴿١٦٨﴾
ولا تحسبن الذين قتلوا في سبيل الله امواتا بل احياء
عند ربهم يرزقون ﴿١٦٩﴾ فرحين بما اتهم الله من فضله
ويستبشرون بالذين لم يلحقوا بهم من خلفهم الا خوف
عليهم ولا هم يحزنون ﴿١٧٠﴾ يستبشرون بنعمة من الله و
فضل وان الله لا يضيع اجر المؤمنين ﴿١٧١﴾ الذين استجابوا
لله والرسول من بعد ما اصابهم القرح للذين احسنوا
منهم واتقوا اجر عظيم ﴿١٧٢﴾ الذين قال لهم الناس ان الناس
قد جمعوا لكم فاخشوهم فزادهم ايمانا وقالوا حسبنا الله
ونعم الوكيل ﴿١٧٣﴾ فانقلبوا بنعمة من الله وفضل لم يمسسهم

منزل ١

व. ला ★ रु. १७ — ८ आ १६ ∴ मु. अि मु त क़ २

और क्या जब तुम पर (काफ़िरों की तरफ़ से जंगे ऊहद में) आफ़त आ पड़ी हालाँकि तुम इससे दूनी (आफ़त जंगे बद्र में अपने दुश्मनों पर पहले) डाल चुके हो, (फिर भी) तुम कहने लगे कि कहाँ से (आफ़त) आई। (ऐ पैग़म्बर!) कहो कि तुम्हारे ही कर्मों (रसूल का हुक्म न मानने) का यह नतीजा है। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर समर्थ है।(१६५) और जिस दिन (जंगे ऊहद में) दोनो जमातें भिड़ गईं तो जो मुसीबत तुम को पहुँची (वह) अल्लाह के हुक्म से थी और यह भी ग़रज़ थी कि अल्लाह ईमानवालों को मालूम करे।(१६६) और मुनाफ़िक़ों (आगे कुछ पीछे कुछ कहनेवालों) को भी जान ले। और (जब) मुनाफ़िक़ों से कहा गया आओ अल्लाह के रास्ते में लड़ो, या दुश्मनों को दफ़ा (निवारण) करो तो कहने लगे कि अगर हम (ढंग की) लड़ाई समझते तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ हो लेते। यह लोग उस रोज़ ईमान की बनिस्बत कुफ़्र से ज़ियादा नज़दीक थे। मुँह से ऐसी बात कहते हैं जो इनके दिलों में नहीं और जिसको छिपाते हैं अल्लाह उसे खूब जानता है।(१६७) जो (जिहाद से जी चुरा कर घर में) बैठे रहे और अपने भाइयों के सम्बन्ध में कहने लगे कि हमारा कहा मानते (याने जंग में न जाते)§ तो मारे न जाते, कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो (अब) अपने ऊपर से मौत को हटा दो।(१६८) और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गये हैं उनको मरा हुआ ख़्याल न करना बल्कि (वे लोग) अपने परवरदिगार के पास जीते हैं और इनको रोज़ी मिलती है। (१६९) जो (निआमतें) अल्लाह ने अपनी कृपा से इनको दे रखी हैं उनसे खुश हैं, और जो लोग इनके बाद अभी इनमें आकर (शहीद हो कर) शामिल नहीं हो सके हैं वह भी खुशियाँ मनाते हैं, क्योंकि (क़ियामत के दिन) इन पर न डर होगा और न यह उदास होंगे ●।(१७०) अल्लाह (की निआमतों व फ़ज़ल पर) खुशियाँ मना रहे हैं और इसकी कि अल्लाह ईमानवालों के अज्र (फल) को अकारथ नहीं होने देता।(१७१) ★

जिन लोगों ने घायल होने के बाद भी अल्लाह और पैग़म्बर का हुक्म माना× (ख़ासकर) उनमें जो नेक और परहेज़गार हैं उनके लिए बड़ा फल है।(१७२) वह लोग जिनको लोगों ने ख़बर दी कि काफ़िरों ने तुम्हारे लिए बड़ी फ़ौज जमा की है उनसे डरते रहना तो इससे उनका ईमान (जोश) और अधिक हो गया और (वह) बोल उठे कि हमको अल्लाह काफ़ी है और वही सर्वोपरि काम सँभालनेवाला है‡।(१७३) ग़रज़ यह लोग अल्लाह की निआमतों और करम से लदे हुए वापस आये@ और उनको कुछ बुराई भी नहीं पहुँची और (वह) अल्लाह की मर्ज़ी पर क़ायम रहे और अल्लाह की दया अपरम्पार है।(१७४)

● व. ला जि म ★ रु. १७/८ आ १६

---

§ कुछ लोगों ने अपने मुसलमान रिश्तेदारों को ऊहद की लड़ाई में भाग लेने से रोका था। उनकी राय न मानकर जब वे जंग में शरीक होकर शहीद हो गये तो अपनी बड़ाई जताने लगे कि हमने तो पहले ही रोका था। अगर हमारी राय मान कर घर न छोड़ते तो जान से हाथ न धोते। इसके जवाब में ये आयतें उतरीं। × जंगे ऊहद से काफ़िरों की वापसी पर रसूलुल्लाह स० ने, इस ख़याल से कि कहीं काफ़िर मदीने पर दुबारा हमला न बोल दें, मुसलमानों को उनका पीछा करने के लिए हुक्म दिया। ईमानवाले, बावजूद कि ताज़ी लड़ाई में सख्त घायल थे, फिर भी फ़ौरन तैयार हो गये और उन्होंने मदीने से ८ मील तक काफ़िरों का पीछा किया। ऐसे त्यागी सत्कर्मियों के अज़्र (प्रतिफल) का क्या बयान किया जाय! ‡ ऊहद की लड़ाई के बाद क़ुरैश, मुसलमानों को भयभीत रखने के विचार से दुबारा उन पर चढ़ाई करने की झूठी ख़बरें भेजते थे। इसको सुनकर मुसलमान दहलते न थे बल्कि दुगने हौसले से कहते थे, 'हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है'। @ जंगे ऊहद के बाद काफ़िरों के बड़े दलबल से दुबारा हमले की धमकी की परवाह न कर जब [पेज १४१ पर ❋

फ़न्क़लबू बिनिअ्मतिम् - मिनल्लाहि व फ़ज़्लिल्लम् यम्सस्हुम् सूअुन् ला व्वत्तबअू रिज़्वानल्लाहि त् वल्लाहु ज़ूफ़ज़्लिन् अ़ज़ीमिन् (१७४) अिन्नमा ज़ालिकुमुश्शैतानु युख़ौविफ़ु औलिया अहू स् फ़ला तख़ाफ़ूहुम् व ख़ाफ़ूनि अिन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (१७५) व ला यहज़ुन्कल्लज़ीन युसारिअ़ून फ़िल्कुफ़्रि ज अिन्नहुम् लैंयज़ुर्रुल्लाह शैअन् त् युरीदुल्लाहु अल्ला यज्अ़ल लहुम् हज़्ज़न् फ़िल्आख़िरति ज व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीमुन् (१७६) अिन्नल्लज़ीनश् - तरवुल् - कुफ़्र बिल्ईमानि लैंयज़ुर्रुल्लाह शैअन् ज् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीमुन् (१७७) व ला यहसबन्नल्लज़ीन कफ़रू अन्नमा नुम्ली लहुम् ख़ैरुल्लिअन्फ़ुसिहिम् त् अिन्नमा नुम्ली लहुम् लियज़्दादू अिस्मन् ज् व लहुम् अ़ज़ाबुम्-मुहीनुन् (१७८) मा कानल्लाहु लियज़रल्-मुअ्मिनीन अ़ला मा अन्तुम् अ़लहि हत्ता यमीज़ल्ख़बीस मिनत्तैयिबि त् व मा कानल्लाहु लियुत्लिअ़कुम् अ़लल्ग़ैबि व लाकिन्नल्लाह यज्तबी मिर्रुसुलिही मैंयशाअु स् फ़आमिनू बिल्लाहि व रुसुलिही ज् व अिन् तुअ्मिनू व तत्तक़ू फ़लकुम् अज्रुन् अ़ज़ीमुन् (१७९) व ला यहसबन्नल्लज़ीन यब्ख़लून बिमा आता-हुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही हुव ख़ैरल्लहुम् त् बल् हुव शर्रुल्लहुम् त् सयुतौवक़ून मा बख़िलू बिही यौमल्क़ियामति त् व लिल्लाहि मीरासुस्समावाति वल्अर्ज़ि त् वल्लाहु बिमा तअ्मलून ख़बीरुन् (१८०) ★ लक़द् समिअ़ल्लाहु क़ौलल्लज़ीन क़ालू अिन्नल्लाह फ़क़ीरुँव नह्नु अग़्नियाअु ● म् सनक्तुबु मा क़ालू व क़त्लहुमुल्-अम्बियाअ बिग़ैरि हक़्क़िन् ला व्व नक़ूलु ज़ूक़ू अ़ज़ाबल्-हरीक़ि (१८१)

الِ عمران ٣ ٥٨ لن تنالوا ٤

سُوْٓءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ۞ اِنَّمَا
ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۪ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ
كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۞ وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ ۚ
اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْئًا ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِى الْاٰخِرَةِ ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۞ اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ
يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْئًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۞ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا
اَنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ خَيْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ اِنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۞ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى
مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ
لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۪
فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۞
وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ
خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
خَبِيْرٌ ۞ لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّ
نَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ
وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۞ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَ

منزل ١

★ रु. १८ | ६ आ. ६ ● व. ला

वह तो शैतान ही है जो अपने दोस्तों के द्वारा भयभीत करता है§। तो अगर ईमान रखते हो तो तुम उनसे न डरना और मेरा ही डर रखना (१७५). और जो लोग कुफ़्र में जल्दी से जा फँसते हैं, (ऐ पैग़म्बर) तुम (इन लोगों की वजह से) उदास न होना, यह लोग अल्लाह का तो हरगिज़ कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, अल्लाह चाहता है कि आख़िरत में इनको कुछ भाग न दे और इनको बड़ा अज़ाब मिलना है। (१७६) · जिन लोगो ने ईमान देकर कुफ़्र मोल लिया वे अल्लाह को तो हरगिज़ किसी तरह का नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे बल्कि इन्हीं को दुखदाई सज़ा होगी। (१७७) और जो लोग कुफ़्र (इन्कार) कर रहे हैं, इस ख़्याल में न रहें कि हम जो उनको ढील दे रहे हैं, यह कुछ इनके हक़ में भला है। हम तो इनको सिर्फ़ इसलिए ढील दे रहे हैं ताकि (ग़फ़लत में रहकर) और गुनाह समेट लें और इनके लिए ज़िल्लत की मार है। (१७८) अल्लाह ऐसा नहीं है कि जिस हाल में तुम हो (याने) अच्छे-बुरे की जाँच किये बग़ैर इसी हाल पर ईमानवालों को रहने दे और अल्लाह ऐसा भी नहीं कि तुमको ग़ैब की बातें बतादे; हाँ अल्लाह (इसके लिए) अपने पैग़म्बरों में से जिसको चाहता है चुन लेता है, तो (तुम) अल्लाह और उसके पैग़म्बरों पर ईमान लाओ और अगर तुम ईमान लाओगे और परहेज़गारी से रहोगे तो तुमको बड़ा अज्र (प्रतिफल) मिलेगा। (१७९) और जिन लोगों को अल्लाह ने अपनी कृपा से दिया है और वह उसमें (ज़कात न देकर) कंजूसी करते हैं वह इसको अपने हक़ में हरगिज़ भला न समझें बल्कि वह उनके हक़ में बहुत बुरा है। जिस (माल) की कंजूसी करते हैं क़ियामत के दिन उसकी तौक़ (हँसली) बनकर उनके गले में लटकेगी और आसमान व ज़मीन का वारिस (अभिभावक) अल्लाह ही है और जो कर रहे हो अल्लाह को उसकी पूरी ख़बर है। (१८०) ★

जो लोग अल्लाह को मुहताज† और अपने को मालदार बताते हैं उनकी बकवास अल्लाह ने सुनली है●। और यह लोग जो नाहक़ पैग़म्बरों को क़त्ल करते चले आये हैं उसके साथ हम इनकी इस बकवास को भी लिखे रखते हैं और इनका जवाब (हमारी तरफ़ से आख़िरत के दिन) यह होगा कि (दोज़ख़ की) आग का मज़ा चखो। (१८१) यह उन्हीं कामों का बदला है जिनको तुमने (पहले से) अपने हाथों (कमा कर) भेजा है और अल्लाह अपने बन्दों पर किसी तरह का ज़ुल्म करनेवाला नहीं। (१८२)

★ रु. १८ — ६ आ ६ ● व. लाज़िम

§ शैतान खुद जिस्म रख कर तो आता नहीं। वह तो शैतानी खसलत के इंसानों के ज़रिये ही गुमराह करता व तंग करता है। यही अबू सुफ़ियान जैसे इंसान शैतान के दोस्त कहे गये हैं। † जब अल्लाह की राह में क़र्ज़ देने का हुक्म आया तो यहूदी मज़ाक़ उड़ाने लगे कि अल्लाह मुहताज है, इसलिए क़र्ज़ माँगता है।

जालिक बिमा क़द्दमत् अैदीकुम् व अन्नल्लाह लैस बिजल्लामिल्लिल्-अबीदि ज् (१८२) अल्लजीन क़ालू अिन्नल्लाह अहिद अिलैना अल्ला नुअ्मिन लिरसूलिन् हत्ता यअ्तियना बिक़ुर्बानिन् तअ्कुलुहुन्नारु त् कुल् क़द् जा'अकुम् रुसुलुम्मिन् क़ब्ली बिल्बैयिनाति व बिल्लजी क़ुल्तुम् फ़लिम क़तल्तुमूहुम् अिन् कुन्तुम् सादिक़ीन (१८३) फ़अिन् कज्जबूक फ़क़द् कुज्जिब रुसुलुम्मिन् क़ब्लिक जा'अू बिल्बैयिनाति वज़्ज़ुबुरि वल्किताबिल्मुनीरि (१८४) कुल्लु नफ़्सिन् जा'अिक़तुल्मौति त् व अिन्नमा तुवफ़्फ़ौन अुजूरकुम् यौमल्क़ियामति त् फ़मन् ज़ुहज़िह अनिन्नारि व अुद्ख़िलल्-जन्नत फ़क़द् फ़ाज़ त् व मल्हयातुद्दुन्या अिल्ला मताअुलग़ुरूरि (१८५) लतुब्लवुन्न फ़ी अम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम् क़िफ़ व लतस्मअुन्न मिनल्लजीन अूतुल्किताब मिन् क़ब्लिकुम् व मिनल्लजीन अश्रकू अजन् कसीरन् त् व अिन् तस्बिरू व तत्तक़ू फ़अिन्न जालिक मिन् अज़्मिल्अुमूरि (१८६) व अिज् अख़जल्लाहु मीसाक़ल्लजीन अूतुल्किताब लतुबैयिनुन्नहू लिन्नासि व ला तक्तुमूनहू ज् फ़नबजूहु वरा'अ ज़ुहूरिहिम् वश्तरौ बिही समनन् क़लीलन् त् फ़बिअ्स मा यश्तरून (१८७) ला तह्सबन्नल्लजीन यफ़्रहून बिमा अतौव्व युहिब्बून अैयुह्मदू बिमा लम् यफ़्अलू फ़ला तह्सबन्नहुम् बिमफ़ाज़तिम् - मिनल्अज़ाबि ज् व लहुम् अज़ाबुन् अलीमुन् (१८८) व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि त् वल्लाहु अला कुल्लि शैअिन् क़दीरुन् (१८९) ★ अिन्न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि लआयातिल् - लिअुलिल् - अल्बाबि ज् ला (१९०)

آل عمران ٥٩ لن تنالوا ٤

اَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝ اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ؕ قُلْ قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِىْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالَّذِىْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَآءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ۝ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝ لَتُبْلَوُنَّ فِىْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۗ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى كَثِيْرًا ؕ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝ وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ ؗ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ۝ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اِنَّ فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى الْاَلْبَابِ ۝

★ रु. १९ १० आ

वह जो कहते हैं कि अल्लाह ने हमसे कह रखा है कि जब तक कोई पैग़म्बर हमको ऐसी क़ुर्बानी (भेंट) न दिखावे कि उसको (आसमानी) आग चट कर जाय§ तब तक हम उस पर ईमान न लावें। (तो ऐ पैग़म्बर!) कहो कि मुझसे पहले कितने पैग़म्बर (तुम्हारे पास) खुली-खुली निशानियां लाये और वह (चमत्कार) भी लाये जिसको तुम माँगते हो, तो अगर तुम सच्चे हो तो फिर तुमने उनको किसलिए क़त्ल किया। (१८३) (और ऐ पैग़म्बर!) इस पर भी अगर वह तुमको झुठलावें तो तुमसे पहले (भी) बहुत से पैग़म्बर खुले चमत्कार लाये और सहीफ़े† और रोशन (खुली) किताबें भी लाये, फिर भी लोगों ने उनको झुठलाया। (१८४) हर किसी को मौत का मज़ा चखना है और पूरा-पूरा बदला तो तुमको क़ियामत ही के दिन दिया जायगा, तो (उस दिन) जो शख़्स आग (नरक) से दूर हटा दिया गया और जिसको बहिश्त में जगह दी गई तो वही सफल हुआ और दुनिया की ज़िन्दगी तो सिर्फ़ धोखे की पूँजी (मायाजाल) है। (१८५) (ऐ ईमानवालो!) बेशक तुम्हारे मालों और तुम्हारी जानों (की हानि) से ज़रूर तुम्हारी परीक्षा की जायेगी और बेशक जिन लोगों को तुमसे पहले किताब दी जा चुकी है उनसे और मुशरिकों से तुम बहुत-सी दिल तोड़नेवाली बातें ज़रूर सुनोगे और (इस हालत में भी) अगर सब्र से काम लो और परहेज़गारी करो तो बेशक ये (बड़ी) हिम्मत के काम हैं (और तुमको ज़रूर करना चाहिये)। (१८६) और (याद करो) जब अल्लाह ने किताब वालों से वचन लिया कि लोगों से इसका मतलब (साफ़-साफ़) बयान कर देना और इसको (किसी बात को) छिपाना नहीं, तो उन्होंने उस वचन को अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया और उसके बदले थोड़े-से दाम हासिल किये और जो कुछ हासिल किया वह कैसी बुरी चीज़ है‡। (१८७) और जो लोग अपनी (ऐसी) करतूतों पर खुश होते हैं और जो किया नहीं उस पर भी अपनी तारीफ़ चाहते हैं तो (ऐ मुहम्मद! ऐसे लोगों की निस्बत हरगिज़) ख़्याल न करना कि वे अज़ाब से बचे रहेंगे बल्कि उनके लिये दुखदाई सज़ा है♦। (१८८) आसमान व ज़मीन का राज्य अल्लाह ही का है और अल्लाह हर चीज़ पर समर्थ है। (१८९) ★

★ रु. १९/१७ आ

बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाइश (उत्पत्ति) और रात और दिन की अदल-बदल में बुद्धिमानों के लिये (बड़ी) निशानियाँ हैं। (१९०)

---

§ किसी ज़माने में क़ुर्बानी को आग में जलाने (हवन करने) का रवाज़ था। बाइबिल में ऐसा ज़िक्र आया है कि ग़ैबी (अदृष्ट) आग इस क़ुर्बानी को चट (भस्म) कर जाती थी। ऐसे नबी भी, मसलन हज़रत इल्यास, हुये हैं जिन्होंने ग़ैबी आग में भस्म होने वाली क़ुर्बानी का चमत्कार दिखलाया। लेकिन न तो यह कहीं लिखा है कि हर नबी के लिए ऐसा चमत्कार दिखलाना लाज़िमी है वरना वह नबी न तस्लीम होगा और न यही नौबत आई कि ऐसे चमत्कार दिखलाने वाले नबियों को फिर क़त्ल न किया गया हो। अधर्मी लोग तो किसी न किसी बहाने से पैग़म्बरों से इन्कार और उनको तंग करते ही आये हैं। और उसी तरह वह मुहम्मद रसूलुल्लाह स० से भी इन्कार कर रहे हैं। † धार्मिक छोटे-छोटे ग्रंथ सहीफ़े कहलाते हैं। यह भी आसमानी (दैवी) किताबें हैं। ‡ अल्लाह के हुक्म को और अल्लाह से दिये हुये वचनों को आगे चल कर धर्म के महन्त या सरग़ना अपने स्वार्थ के लिए अल्लाह के नाम पर नया जामा पहनाने लगते हैं। यह हर ज़माने और हर मज़हब के नाम लेने वालों पर लागू है। इस आयत में एलान है कि ऐसे पीर-महन्तों को आख़िरत में यह स्वार्थ का सौदा महँगा पड़ेगा और उन्हें दोज़ख़ ही में ठिकाना मिलेगा। अवाम से भी इशारा है कि हुक्म अल्लाह पर ही चलें। ऐसे सरग़नाओं के फेर में पड़ कर अपनी आख़िरत न बिगाड़ें। ♦ जो लोग ख़ुदाई किताबों के हुक्मों में काट-छाँट करते या बढ़ाते घटाते हैं और अपनी करनी पर ख़ुश होते हैं और समझते हैं लोग उनके फ़रेब को पकड़ न सकेंगे और उनको पूजेंगे, उनको आख़िरत में दुखदाई सज़ा होनी है इसमें ज़रा भी शक नहीं। यहूदी विद्वान अपनी ओर से बातें बनाते और बेपढ़े लोगों से कहते कि ये बातें तौरात में लिखी हैं और जी में ख़ुश होते कि उनका झूठ किसी पर नहीं खुल सकता।

अल्लज़ीन यज़्कुरूनल्लाह क़ियामौंव क़ुअूदौंव अला जुनूबिहिम् व यतफ़क्करून फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ज् रब्बना मा ख़लक़्त हाज़ा बातिलन् ज् सुब्हानक फ़क़िना अज़ाबन्नारि (१९१) रब्बना अिन्नक मन् तुद्ख़िलिन्नार फ़क़द् अख़्ज़ैतहू त् व मा लिज़्ज़ालिमीन मिन् अन्सारिन् (१९२) रब्बना अिन्नना समिअ्ना मुनादियैंयुनादी लिल्अीमानि अन् आमिनू बिरब्बिकुम् फ़आमन्ना क़् सला रब्बना फ़ग़्फ़िर्लना ज़ुनूबना व कफ़्फ़िर् अन्ना सैयिआतिना व तवफ़्फ़ना मअल्अब्रारि ज् (१९३) रब्बना व आतिना मा व अत्तना अला रुसुलिक व ला तुख़्ज़िना यौमल्-क़ियामति त् अिन्नक ला तुख़्लिफ़ुलमीआद (१९४) फ़स्तजाब लहुम् रब्बुहुम् अन्नी ला अुज़ीअु अमल आमिलिम्-मिन्कुम् मिन् ज़करिन् औ अुन्सा ज् बअ्ज़ुकुम् मिम्बअ्ज़िन् ज् फ़ल्लज़ीन हाजरू व अुख़्रिजू मिन् दियारिहिम् व अूज़ू फ़ी सबीली व क़ातलू व क़ुतिलू लअुकफ़्फ़िरन्न अन्हुम् सैयिआतिहिम् व लअुद्-ख़िलन्नहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ज् सवाबम्-मिन् अिन्दिल्लाहि त् वल्लाहु अिन्दहू हुस्नुस्सवाबि (१९५) ला यग़ुर्रन्नक तक़ल्लुबुल्लज़ीन कफ़रू फ़िल्बिलादि त् (१९६) मताअुन् क़लीलुन् क़िफ़् सुम्म मअ्वाहुम् जहन्नमु त् व बिअ्सल्मिहादु (१९७) लाकिनिल्-लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम् लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदीन फ़ीहा नुज़ुलम्मिन् अिन्दिल्लाहि त् व मा अिन्दल्लाहि ख़ैरुल्लिल् - अब्रारि (१९८) ● व अिन्न मिन् अह्लिल्किताबि लमैंयुअ्मिनु बिल्लाहि व मा अुन्ज़िल अिलैकुम् व मा अुन्ज़िल अिलैहिम् ख़ाशिअीन लिल्लाहि ला ला यश्तरून बिआयातिल्लाहि समनन् क़लीलन् त् अुलाअिक लहुम् अज्रुहुम् अिन्द रब्बिहिम् त् अिन्नल्लाह सरीअुल्हिसाबि (१९९)

● मु. ३ | ४

آل عمران ٣ — ٦٠ — لن تنالوا ٤

الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَ يَتَفَكَّرُوْنَ
فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا سُبْحٰنَكَ
فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ رَبَّنَاۤ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ
وَ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ۝ رَبَّنَاۤ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ
لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ
كَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَ تَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ۝ رَبَّنَا وَ اٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا
عَلٰى رُسُلِكَ وَ لَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝
فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّيْ لَاۤ اُضِيْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ
ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَ اُخْرِجُوْا
مِنْ دِيَارِهِمْ وَ اُوْذُوْا فِيْ سَبِيْلِيْ وَ قٰتَلُوْا وَ قُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ
سَيِّاٰتِهِمْ وَ لَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ثَوَابًا
مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَ اللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ۝ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِي الْبِلَادِ ۝ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ
وَ بِئْسَ الْمِهَادُ ۝ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَ مَا عِنْدَ
اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ۝ وَ اِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ
مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ

منزل

जो खड़े और बैठे और लेटे (हर हाल में) अल्लाह को याद करते रहते हैं और आसमान और ज़मीन की उत्पत्ति पर ध्यान करते रहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! तूने यह सब बेफ़ायदा नहीं बनाया। तेरी ज़ात ऐब से पाक है। हमको (दोज़ख़ के) अज़ाब से बचाये रखना।(१९१) ऐ हमारे परवरदिगार! जिसको तूने दोज़ख़ में डाला उसको तूने ख़्वार (तुच्छ) कर दिया और ज़ालिमों का कोई भी मददगार नहीं होगा।(१९२) (और कहते हैं कि) ऐ हमारे परवरदिगार! हमने एक मनादी करनेवाले (मुहम्मद स०) को सुना, तो (वह) ईमान की पुकार कर रहे थे कि अपने परवरदिगार पर ईमान लाओ तो हम ईमान ले आये। पस ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे क़सूरों को माफ़ कर और हमसे हमारी बुराइयों को मिटा दे और (दुनिया में) नेक बन्दों के साथ हमको मौत दे।(१९३) ऐ हमारे परवरदिगार! तूने जिन (निअ़मतों) की प्रतिज्ञा अपने पैग़म्बरों के द्वारा हमसे की है वह हमें दे और क़ियामत के दिन हमको ज़लील न करना (बेशक) तू वादाख़िलाफ़ी तो किया ही नहीं करता। (१९४) सो उनके पालनकर्त्ता ने उनकी दुआ सुन ली (और कहा) कि मैं तुममें से किसी के आमाल (कर्म) को बेकार नहीं जाते देता, (चाहे वह) मर्द हो या औरत तुम सब एक दूसरे के अंग हो, तो जिन लोगों ने (हमारे लिए अपने) देश छोड़े और अपने शहरों से निकाले गये और मेरी राह में (और तरह भी) सताये गये और वह लड़े और मारे गये, मैं उनके अपराधों को उनसे (ज़रूर) मिटा दूँगा। और (मैं ज़रूर) उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। (यह) अल्लाह के यहाँ से (उनके किये का) फल है और अच्छा फल तो (बस) अल्लाह ही के (यहाँ सुलभ) है।(१९५) (ऐ पैग़म्बर!) शहरों में काफ़िरों का चलना-फिरना कहीं तुमको धोखे में न डाले (१९६) यह (दुनिया की) कुछ दिन की बहार है फिर तो इनका ठिकाना दोज़ख़ है और वह कैसा बुरा ठिकाना है।(१९७) लेकिन जो लोग अपने परवरदिगार से डरते रहे उनके लिए बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वह उनमें हमेशा रहेंगे, (उनकी) यह मेहमानी अल्लाह की ओर से है और जो अल्लाह के यहाँ है सो नेकी करनेवालों के लिए कहीं भला है।(१९८)

सु ३ | ४

[पेज १३५ से] ये दीन पर दीवाने मुसलमान, काफ़िरों के सरग़नः अबू सुफ़यान के चैलेंज पर जंग के लिए तैयार होकर जमा हुये तो अल्लाह के फ़ज़ल से अबू सुफ़यान मक्का में क़हत का आलम होने से अपना इरादा बदल कर बीच रास्ते से ही वापस चला गया और मुसलमान बिला जंग का नुक़सान उठाये भी अल्लाह के फ़ज़ल के पूरे हक़दार होकर ख़ुशी-ख़ुशी घर वापस आये।

रु. २० ११ आ ११

या' अैयुहल्लजीन आमनुस्बिरू व साबिरू व राबितू क़िफ़् वत्तक़ुल्लाह लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (२००) ★

☪ ४ सूरतुन्निसा'अि ९२ ☪

(मदनी) इसमें १६६६७ हुरूफ़ ३७२० कलिमात (शब्द) १७६ आयतें और २४ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीमि ●

या' अैयुहन्नासुत्तक़ू रब्बकुमुल्लजी ख़लक़कुम् मिन् नफ़्सिंव्वाहिदतिंव्व ख़लक़ मिन्हा ज़ौजहा व बस्स मिन्हुमा रिजालन् कसीरौंव निसा'अन् ज् वत्तक़ुल्लाहल्लजी तसा'अलून बिही वल्अर्हाम त् अिन्नल्लाह कान अ़लैकुम् रक़ीबन् (१) व आतुल्यतामा' अम्वालहुम् व ला ततबद्दलुल्ख़बीस बित्तैयिबि स् व ला तअ्कुलू' अम्वालहुम् अिला' अम्वालिकुम् त् अिन्नहु कान हूबन् कबीरन् (२) व अिन् ख़िफ़्तुम् अल्ला तुक़्सितू फ़िल्यतामा फ़न्किहू मा ताब लकुम् मिनन्निसा'अि मस्ना व सुलास व रुबाअ़ ज् फ़अिन् ख़िफ़्तुम् अल्ला तअ़्दिलू फ़वाहिदतन् औ मा मलकत् अैमानुकुम् त् जालिक अद्ना' अल्ला तअ़ूलू त् (३) व आतुन्निसा'अ सदुक़ातिहिन्न निहूलतन् त् फ़अिन् तिब्न लकुम् अ़न् शैअिम्-मिन्हु नफ़्सन् फ़कुलूहु हनी'अम्-मरी'अन् (४) व ला तुअ्तुस्सुफ़हा'अ अम्वालकुमुल्लती जअ़ल्लाहु लकुम् क़ियामौं-वर्ज़ुक़ू हुम् फ़ीहा वक्सूहुम् व क़ूलू लहुम् क़ौलम्मअ़रूफ़न् (५)

النساء ٤ — ٦١ — لن تنالوا ٤

الله ثمنا قليلا اولئك لهم اجرهم عند ربهم ان الله سريع الحساب ﴿۲۰۰﴾ يايها الذين امنوا اصبروا و صابروا و رابطوا و اتقوا الله لعلكم تفلحون ﴿۲۰۰﴾

سورة النساء مدنية وهى مائة وسبع وسبعون آية واربع وعشرون ركوعا

بسم الله الرحمن الرحيم

يايها الناس اتقوا ربكم الذى خلقكم من نفس واحدة وخلق منها زوجها وبث منهما رجالا كثيرا ونساء واتقوا الله الذى تساءلون به والارحام ان الله كان عليكم رقيبا ﴿۱﴾ واتوا اليتمى اموالهم ولا تتبدلوا الخبيث بالطيب ولا تاكلوا اموالهم الى اموالكم انه كان حوبا كبيرا ﴿۲﴾ وان خفتم الا تقسطوا فى اليتمى فانكحوا ما طاب لكم من النساء مثنى وثلث وربع فان خفتم الا تعدلوا فواحدة او ما ملكت ايمانكم ذلك ادنى الا تعولوا ﴿۳﴾ واتوا النساء صدقتهن نحلة فان طبن لكم عن شىء منه نفسا فكلوه هنيئا مريئا ﴿۴﴾ ولا تؤتوا السفهاء اموالكم التى جعل الله لكم قيما وارزقوهم فيها واكسوهم وقولوا لهم قولا معروفا ﴿۵﴾ وابتلوا اليتمى حتى اذا بلغوا

منزل

और किताबवालों में से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं और जो किताब तुम पर उतरी है और जो उन पर उतरी है (सबपर ईमान रखते हैं और हर समय) अल्लाह से डरने वाले हैं। अल्लाह की आयतों को थोड़ी सी क़ीमत (लाभ) पर बेच नहीं देते, यही वह लोग हैं जिनको परवरदिगार के यहाँ इसका बदला (सुफल) ज़रूर तैयार है। बेशक अल्लाह हिसाब बहुत जल्द ले लेता है।(१९९) ऐ ईमानवालो ! (अल्लाह की राह में आई तकलीफ़ों के मुक़ाबले में) सब्र से§ काम लो, (आपस में) एक दूसरे को सब्र की तालीम दो और (काफ़िरों के) मुक़ाबले पर मुस्तैद रहो व मज़बूती से जमे रहो और अल्लाह से डरते रहो ताकि (आख़िरकार) तुम अपनी मुराद पर पहुँचो (२००) ★

★ रु. २० — ११ आ ११

☪ ४ सूरतुल् निसा'अि ९२ ☪

(स्त्रियों का अध्याय)

(मदनी) इसमें अरबी के १६६६७ हुरूफ़, ३७२० शब्द, १७६ आयतें और २४ रुकूअ़ हैं। ❀

शुरूअ़ अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला बेहद मेहरबान है।

ऐ लोगों ! अपने परवरदिगार से डरो जिसने तुम सब को एक ही जान (ह० आदम अ०) से पैदा किया और उससे उसका जोड़ा (हौवा को) पैदा किया और उन दो से यह तमाम मर्द और औरत फैला दिये और जिस अल्लाह का लगाव दे-देकर तुम अपने कितने काम (एक दूसरे से) निकालते हो उसका डर रखो और सगे-सम्बन्धियों (के साथ सलूक) का लिहाज़ रखो, बेशक अल्लाह तुम्हारी ख़बर रखता है†।(१) और अनाथों‡ का माल (जो तुम्हारी सुरक्षा में है) उसको (बालिग होने पर) दे दो और उनके अच्छे माल को निकाल कर अपने घटिया माल न रख दो और उनके माल अपने मालों में मिला जुला कर खा-पी मत डालो। यह बहुत बड़ा पाप है।(२) और अगर तुमको इस बात का डर हो कि बेसहारा लड़कियों में इन्साफ़ क़ायम न रख सकोगे तो जो औरतें तुम्हें पसन्द हों उनसे निकाह कर लो; दो-दो या तीन-तीन या चार-चार से। लेकिन अगर तुमको इस बात का भय हो कि (उनके साथ) बराबरी (का बर्ताव) न कर सकोगे तो एक ही (बीवी से निकाह काफ़ी है)। या (लौंडी) जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हो (उस पर संतोष करना। यह तदबीर मुनासिब है क्योंकि) उसमें अन्याय न होने की ज़्यादः उम्मीद है।(३) और औरतों को उनके मिहर ख़ुशदिली से दे दिया करो फिर अगर ख़ुशदिली के साथ उसमें से वे कुछ तुमको छोड़ दें तो उसको ख़ुशी और शौक़ से खा सकते हो।(४) और माल जिसको अल्लाह ने तुम्हारे (याने इन्सानों के) लिए सहारा बनाया है कमअक़्लों (नादानों) के हवाले न कर दो और उसमें से उनके खाने पहनने में ख़र्च करते रहो और उन्हें भलाई की बात समझाते रहो।(५)

❀ जंगे ऊहद के बाद पैदा हुई सूरतों में मुसलमानों के लिए आइन्दः इख़्तियार की जाने वाली [पेज १४५ पर]

§ अरबी शब्द सब्र (संतोष) के मफ़हूम (आशय) में रोज़मर्रः की बोल-चाल में फ़र्क़ पड़ गया है। सब्र के माने लोग 'लाचारी से मन मार लेने' को समझ लेते हैं। ऐसा नहीं है। निकम्मापन डर, बुज़दिली, लाचारी या पछताव के बिना धीरज, मज़बूती और अंजाम में ग़म न रख कर अपने फ़र्ज़ पर अटल बने रहने की हालत को सब्र कहते हैं। † अब चूँकि सूरः निसा में इन्सानों के हक़ और फ़र्ज़ ■ अज़ीज़ों के हक़-जायदाद का बयान करना है, इस लिए एक ओर तो यह दिखलाया गया है कि सारे इन्सान एक ह० आदम अ० से ही पैदा और एक ही खून मास हैं तो दूसरी ओर अल्लाह से डरते रहने की हिदायत है ताकि कोई अपने अपने फ़र्ज़ से न हटे और किसी का हक़ मारा न जाय। ‡ जिस लड़के का बाप मर जाय तो मरे हुये के वारिसों को चाहिए कि लड़के का हक़ मार न लें। जब वह जवान हो जाय तो उसको उसके बाप का छोड़ा माल ज़रूर वापस कर दें।

वब्तलुल् - यतामा हत्ता' अिजा बलग़ुन्निकाह ज् फ़अिन् आनस्तुम् मिन्हुम् रुश्दन् फ़द्फ़अू' अिलैहिम् अम्वालहुम् ज् व ला तअ्कुलूहा' अिस्राफ़ौंव बिदारन् अँयक्बरू त् व मन् कान ग़नीयन् फ़ल्यस्तअ्फ़िफ़् ज् व मन् कान फ़क़ीरन् फ़ल्यअ्कुल् बिलमअ्रूफ़ि त् फ़अिजा दफ़अ्तुम् अिलैहिम् अम्वालहुम् फ़अश्हिदू अलैहिम् त् व कफ़ा बिल्लाहि हसीबन् (६) लिर्रिजालि नसीबुम्-मिम्मा तरकल्वालिदानि वल्अक़्रबून स् व लिन्निसा'अि नसीबुम्मिम्मा तरकल्वालिदानि वल्अक़्रबून मिम्मा क़ल्ल मिन्हु औ कसुर त् नसीबम्-मफ़्रूज़न् (७) व अिजा हज़रल्-क़िस्मत अुलुल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनु फ़र्ज़ुक़ूहुम् मिन्हु व क़ूलू लहुम् क़ौलम्-मअ्रूफ़न् (८) वल्यख़्शल्लजीन लौ तरकू मिन् ख़ल्फ़िहिम् जुर्रीयतन् ज़िआफ़न् ख़ाफ़ू अलैहिम् स् फ़ल्यत्तक़ुल्लाह वल्यक़ूलू क़ौलन् सदीदन् (९) अिन्नल्लजीन यअ्कुलून अम्वालल्-यतामा ज़ुल्मन् अिन्नमा यअ्कुलून फ़ी बुतूनिहिम् नारन् त् व सयस्लौन सअीरन् (१०) ★ यूसी - कुमुल्लाहु फ़ी' औलादिकुम् क़् लिज्जकरि मिस्लु हज़्ज़िल्-अुन्सयैनि ज् फ़अिन् कुन्न निसा'अन् फ़ौक़स्नतैनि फ़लहुन्न सुलुसा मा तरक ज् व अिन् कानत् वाहिदतन् फ़लहन्निस्फ़ु त् वलिअ बवैहि लिकुल्लि वाहिदिम्मिन् - हुमस्सुदुसु मिम्मा तरक अिन् कान लहु वलदुन् ज् फ़अिल्लम् यकुल्लहू वलदुँव वरिसहू' अबवाहु फ़लिअुम्-मिहिस्सुलुसु ज् फ़अिन् कान लहू अिख़्वतुन् फ़लिअुम्-मिहिस्सुदुसु मिम्बअ्दि वसीयतींयूसी बिहा' औदैनिन् त् आबा'अु कुम् व अब्ना'अु कुम् ला तद्रून अैयुहुम् अक़्रबु लकुम् नफ़्अन् त् फ़रीज़तम्-मिनल्लाहि त् अिन्नल्लाह कान अलीमन् हकीमन् (११)

★ रु. १ | १२ आ १०

لن تنالوا ٤ — ٦٣ — النساء ٤

النِّكَاحَ ۚ فَإِنْ آنَسْتُمْ مِنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ
وَلَا تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَنْ يَكْبَرُوا ۚ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا
فَلْيَسْتَعْفِفْ ۖ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِذَا
دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهِدُوا عَلَيْهِمْ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ۝
لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ
مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ ۚ نَصِيبًا
مَفْرُوضًا ۝ وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينُ
فَارْزُقُوهُمْ مِنْهُ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝ وَلْيَخْشَ الَّذِينَ
لَوْ تَرَكُوا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعَافًا خَافُوا عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ
وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ
ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۖ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ۝ يُوصِيكُمُ
اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ ۖ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنْثَيَيْنِ ۚ فَإِنْ كُنَّ نِسَاءً
فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۖ وَإِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۚ
وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ إِنْ كَانَ لَهُ
وَلَدٌ ۚ فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ وَلَدٌ وَوَرِثَهُ أَبَوَاهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَإِنْ
كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ السُّدُسُ ۚ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِي بِهَا
أَوْ دَيْنٍ ۗ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ لَا تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ۚ

ع

منزل ١

और अनाथों को आजमा लिया करो जब तक कि वे निकाह (ब्याह) के लायक़ हो जाएँ। तो उस वक़्त अगर उनमें समझदारी देखो तो उनके माल उनके हवाले कर दो और ऐसा न करना कि उनके बड़े होने के भय से जल्दी-जल्दी उनका माल खा डालो बल्कि जो (सरपस्त) ख़ुशहाल हो उसे (ऐसे माल से) बचा रहना चाहिए और जो ज़रूरतमन्द हो वह मुनासिब हद तक खा सकता है। और जब उनके माल उनके हवाले करने लगो तो उसके गवाह कर लो, वर्ना हिसाब लेने को तो अल्लाह काफ़ी है।(६) मा, बाप और रिश्तेदारों की छोड़ी हुई जायदाद (तरका) थोड़ी या बहुत (उसमें) मर्दों का हिस्सा है, और (वैसेही) मा-बाप और सम्बन्धियों के छोड़े हुए में§ स्त्रियों का भी भाग है और यह भाग थोड़ा हो या बहुत बहरहाल (अल्लाह की ओर से) ठहराया हुआ (है)।(७) और जब बाँट के वक़्त सम्बन्धी, अनाथ बच्चे और मुहताज आ मौजूद हों तो (भलेही तरके में उनका हक़ न हो फिर भी) उसमें से उनको भी (कुछ) दे दिया करो और उनसे हमदर्दी से बात करो।(८) और उन लोगों को डरना चाहिए कि अगर अपने पीछे कमज़ोर औलाद छोड़ जाते तो उन पर उनको कैसा तरस आता। तो चाहिए कि अल्लाह से डरें और पक्की बात कहें।(९) बेशक जो लोग नाहक़ अनाथों के माल (अन्याय से) खा डालते हैं वह अपने पेट में बस अंगारे भरते हैं और जल्दी ही दहकती हुई आग में पड़ेंगे।(१०) ★

★ रु. १ / १२ आ १०

तुम्हारी संतान (के बारे में) अल्लाह तुमसे कहे रखता है कि लड़के को दो लड़कियों के बराबर हिस्सा (मिलेगा) फिर अगर लड़कियाँ (दो या) दो से ज़्यादा हों तो छोड़ी हुई जायदाद में उनका (हिस्सा) दो तिहाई और अगर अकेली हो तो उसको आधा और मरे हुए के माता-पिता में दोनो में हरएक को छोड़ी हुई जायदाद का छठवाँ भाग उस सूरत में कि मरे की संतान (मौजूद) हो और अगर उसके संतान न हों और उसके वारिस मा-बाप ही हों तो उसकी माता का एक तिहाई भाग (बाक़ी बाप का), लेकिन (मा-बाप के अलावा) मरे के भाई (बहिन भी) हों तो माता का छठवाँ भाग (लेकिन) मरे की वसीयत और क़र्ज़ (अदा होने) के बाद ये हिस्से निकाले जायँ। तुम अपने बाप और बेटों में से नहीं जान सकते कि मुनाफ़ा पहुँचने के इतमीनान से उनमें कौन-सा तुमसे अधिक नज़दीक है (यानै तुमको इनमें से किससे ज़्यादा फ़ायदा पहुँचना है।) यह सब (हिस्सों का बटवारा) अल्लाह का ठहराया हुआ है†, निस्संदेह अल्लाह बड़ा जानकार बड़ी समझ वाला है।(११)

---

§ अरब में इस्लाम से पहले लड़कियों को अपने मा-बाप की जायदाद में से कुछ न मिलता था। † तरका या मरे हुये की छोड़ी हुई जायदाद के वारिसों की हदें क़ुआंन में बयान की गई हैं। उनसे व दीगर सहाबाओं व राविओं की बुनियाद पर बनें मुस्लिम ताज़ीरात क़ानून में वह मुफ़स्सिल तौर पर बयान है। लेकिन मोटे तौर पर ये बातें तयशुदा हैं।(१) मरनेवाला अपनी जायदाद की एक तिहाई की वसीअत करने का हक़दार है ताकि जिनका क़ानूनन हक़ नहीं पहुँचता है और वह क़ाबिल मदद हैं तो उनको भी कुछ मिलने की गुंजाइश रहे। बाक़ी दो तिहाई हक़दार वारिसों में तक़सीम होगी।(२) वसीअत का असर किसी वारिस के हक़ पर क़तई नहीं पड़ सकता।(३) तरके का बटवारा, वसीअत के पूरा हो जाने और मरे हुये के क़र्ज़ व ख़र्च मौता की अदायगी पर ही होगा।(४) हमेशा तो नहीं लेकिन अक्सर मर्द का हिस्सा औरत के मुक़ाबले दूना है।

[पेज १४३ से] बातों की हिदायत इस सूरत में है। लड़ाइयों में जब सहाबा व अन्सार शहीद होने लगे तब उनकी बेवा, बच्चों व वारिसों के जायज़ हक़ों का एलहाम हुआ। दूसरी बात यह कि ग़ैर मुस्लिमों के अलावा अपने में ही शामिल शरीक मुनाफ़िक़ों (कपटाचारियों) से उत्पन्न स्थिति का कैसे सामना किया जाय। [पेज १४७ पर]

व लकुम् निस्फ़ु मा तरक अज़्वाजुकुम् अिल्लम् यकुल्लहुन्न वलदुन् ज् फ़अिन् कान लहुन्न वलदुन् फ़लकुमुर्रुबुअु मिम्मा तरक्न मिम्बअ़्दि वसीयतींयूसीन बिहा औ दैनिन् त् व लहुन्नर्रुबुअु मिम्मा तरक्तुम् अिल्लम् यकुल्लकुम् व लदुन् ज् फ़अिन् कान लकुम् वलदुन् फ़लहुन्नस्सुमुनु मिम्मा तरक्तुम् मिम्बअ़्दि वसीयतिन् तूसून बिहा औदैनिन् त् व अिन्कान रजुलुंय्यूरसु कलालतन् अविम्रअतूँव लहू अखुन् औ अुख़्तुन् फ़लिकुल्लि वाहिदिम् - मिन्हुमस्सुदुसु ज् फ़अिन् कानू अक्सर मिन् जालिक फ़हुम् शुरकाअु फ़िस्सुलुसि मिम्बअ़्दि वसीयतींयूसा बिहा औदैनिन् ला ग़ैर मुज़ार्रिन् ज् वसीयतम् - मिनल्लाहि त् वल्लाहु अलीमुन् हलीमुन् त् (१२) तिल्क हुदूदुल्लाहि त् व मैंयुतिअिल्लाह व रसूलहू युद्खिल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् - अन्हारु ख़ालिदीन फ़ीहा त् व जालिकल् - फ़ौज़ुल्- अज़ीमु (१३) व मैंयअ़्सिल्लाह व रसूलहू व यतअद्द हुदूदहू युद्खिल्हु नारन् ख़ालिदन् फ़ीहा स् वलहू अजाबुम्- मुहीनुन् (१४) ★ वल्लाती यअ्तीनल्-फ़ाहिशत मिन्-निसाअिकुम् फ़स्तश्हिदू अलैहिन्न अर्बअतम्-मिन्कुम् ज् फ़अिन् शहिदू फ़अम्सिकू हुन्न फ़िल्बुयूति हत्ता यतवफ़्फ़ा - हुन्नल्मौतु औ यज्अलल्लाहु लहुन्न सबीलन् (१५) वल्लजानि यअ्तियानिहा मिन्कुम् फ़आजूहुमा ज् फ़अिन् ताबा व अस्लहा फ़अअ़्रिज़ू अन्हुमा त् अिन्नल्लाह कान तौवाबर्रहीमन् (१६) अिन्नमत्तौबतु अलल्लाहि लिल्लजीन यअ़्मलूनस्सूअ बिजहालतिन् सुम्म यतूबून मिन् क़रीबिन् फ़अुलाअिक यतूबुल्लाहु अलैहिम् त् व कानल्लाहु अलीमन् हकीमन् (१७)

فَرِيضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ اَزْوَاجُكُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ؕ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوْصُوْنَ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ؕ وَاِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ كَلٰلَةً اَوِ امْرَاَةٌ وَّلَهٗۤ اَخٌ اَوْ اُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَاِنْ كَانُوْۤا اَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَآءُ فِى الثُّلُثِ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ مُضَآرٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ۝ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۖ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝ وَالّٰتِىْ يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَآئِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ فِى الْبُيُوْتِ حَتّٰى يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا ۝ وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ۝ اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ

منزل

★ रु. २/१३ आ ४

और जो (तरका) तुम्हारी बीवियाँ छोड़ मरें अगर उनके संतान नहीं है तो उनके तर्के§ में तुम्हारा आधा; अगर उनके संतान है तो बीवियों के तर्के में तुम्हारा चौथियाई है लेकिन उनकी (जायज़) वसीअ़त (निकालने) और क़र्ज़ के देने के बाद, और तुम कुछ छोड़ मरो और तुम्हारे कुछ औलाद न हो तो बीवियों को चौथियाई; और अगर तुम्हारे संतान हो तो तुम्हारे तरके में से बीवियों को आठवाँ हिस्सा, (लेकिन) तुम्हारी वसीअ़त पूरी और क़र्ज़ के अदा होने के बाद। और अगर किसी मर्द या औरत के न औलाद हो और न मा-बाप (ज़िन्दः) हों और उसके एक भाई या एक बहन हो तो उनमें से हरएक को छठवाँ हिस्सा है और अगर एक से ज़्यादा हों तो (वे) एक तिहाई में सब शरीक हों मगर मरे की वसीअ़त और क़र्ज़ के निकालने के बाद, बशर्ते कि मरे हुए ने औरों (में किसी) का नुक़सान न किया हो। (यह) अल्लाह का हुक्म है और अल्लाह बड़ा जाननेवाला बड़ा बर्दाश्त करने वाला है। (१२) यह अल्लाह की (बाँधी हुई) हदें हैं और जो अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर चलेगा उसको अल्लाह बहिश्त के बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, और वह उनमें हमेशा रहेंगे और यह बड़ी सफलता है। (१३) और जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म न माने और अल्लाह की हदों से हट कर चले (तो अल्लाह) उसको नरक में दाख़िल करेगा (और वह) उसमें हमेशा रहेगा और उसको ज़िल्लत की मार दी जायगी। (१४) ★

रु. २ — १३ आ ४

और तुम्हारी औरतों में से जो औरतें बदकारी की अपराधिन हों तो उन पर अपने (लोगों) में से चार की गवाही लो, अगर गवाह तसदीक़ करें तो उन (औरतों) को घरों में बन्द रखो यहाँ तक कि मौत उनका काम तमाम कर दे या अल्लाह उनके लिए कोई रास्ता निकाले†। (१५) और जो दो आदमी तुम लोगों में से बदकारी के अपराधी हों तो उनको मारो-पीटो फिर अगर तौबा करें और अपनी दशा को सुधार लें तो उनका पीछा छोड़ दो, बेशक अल्लाह बड़ा तौबा क़बूल करनेवाला बेहद मेहरबान है। (१६) अल्लाह तौबा क़बूल करता है उन्हीं लोगों की जो नादानी से कोई बुरी हरकत कर बैठते, फिर जल्दी ही तौबा कर लेते हैं तो अल्लाह भी ऐसों की तौबा क़बूल कर लेता है और अल्लाह बड़ा जाननेवाला और बड़ा हिकमत वाला है। (१७)

---

§ मरे की छोड़ी हुई जायदाद। † ज़िना के लिए सज़ा का यह शुरू का हुक्म है। इशारा है कि अल्लाह उनके लिये कोई रास्ता निकाले। तो आगे चल कर सूरः नूर में ज़िना की सज़ा मर्द या औरत दोनो को १००-१०० कोड़ों की एलान हुई।

[पेज १४५ से] आयात १-१४ में सारे इंसानों के भाईचारे की चरचा व स्त्रियों, बच्चों अनाथों या वारिसों के हुक़ूक़ व तरका का बयान है। आ० १५-४२ में औरतों के ग़लत चलन पर तम्बीह करते हुये भी उनको और समाज में छोटे-बड़े सभी के लिए पूरी इज़्ज़त व पूरे हुक़ूक़ का हुक्म है। आ० ४३-७० में मदीना के ग़ैर मुस्लिमों को झूठे ख़ुदाओं के पीछे न दौड़ कर अल्लाह के हुक्म पर ईमान लाने की दावत है। उस रास्ते पर चलने में ही सवाब है वरना उनके लिए सख़्त अज़ाब है। आ० ७१-९१ में दुश्मनों के ख़िलाफ़ आत्मरक्षा के लिए, मुनाफ़िक़ों की चालों व हरकतों से बचने के लिए और उन मुनाफ़िक़ों से कैसा बर्ताव किया जाय, इसका ज़िक्र है। आ० ९२-१०४ में बिला पूरी जाँच किये दुश्मन को भी क़त्ल न किया जाय, शहीदों का पूरा बदला लेना, इस्लाम के मुख़ालिफ़ मुक़ामों को छोड़ देने और दौरान जंग नमाज़-प्रार्थना को कैसे निबाहा जाय, इनकी हिदायत है। आ० १०५-१२६— मुनाफ़िक़ों व छल करने वालों के धोखे में न आओ और न शैतान के रास्ते की जगमगाहट में फँसो, अल्लाह पर ईमान रखने से इनसे बच जाओ गे। आ० १२७-१५२ में औरतों व यतीमों से इन्साफ़ाना बर्ताव, अल्लाह का ख़ौफ़ रखकर सब के साथ इंसाफ़, सगे से सगे के साथ भी पक्षपात नहीं और शैतानियत व मुनाफ़िक़त [पेज १४९ पर]

व लैसतित्तौबतु लिल्लज़ीन यअ़्मलूनस्सैयिआति ज् हत्ता' अिज़ा हज़र अहदहुमुल्मौतु क़ाल अिन्नी तुब्तुल्आन व लल्लज़ीन यमूतून व हुम् कुफ़्फ़ारुन् त़ अुला'अिक अअ़्तद्ना लहुम् अ़ज़ाबन् अलीमन् (१८) या' अैयुहल्लज़ीन आमनू ला यहिल्लु लकुम् अन् तरिसुन्निसा'अ करहन् त़ व ला तअ़्ज़ुलूहुन्न लितज़्हबू बिबअ़्ज़ि मा' आतैतुमूहुन्न अिल्ला' अैंयअ्तीन बिफ़ाहिशतिम् - मुबैयिनतिन् ज् व आशिरू हुन्न बिल्मअ़्रूफ़ि ज् फ़अिन् करिहतुमूहुन्न फ़अ़सा' अन् तक्रहू शैऔंव यज्अ़लल्लाहु फ़ीहि ख़ैरन् कसीरन् (१९) व अिन् अरत्तुमुस्तिब्दाल ज़ौजिम्मकान ज़ौजिन् ला व आतैतुम् अिह्दा-हुन्न क़िन्तारन् फ़ला तअ्ख़ुज़ू मिन्हु शैअन् त़ अतअ्ख़ुज़ूनहू बुह्तानौंव अिस्मम् - मुबीनन् (२०) व कैफ़ तअ्ख़ुज़ूनहू व क़द् अफ़्ज़ा बअ़्ज़ुकुम् अिला बअ़्ज़िंव्व अख़ज़्न मिन्कुम् मीसाक़न् ग़लीज़न् (२१) व ला तन्किहू मा नकह आबा'अुकुम् मिनन्निसा'अि अिल्ला मा क़द्सलफ़ त़ अिन्नहू कान फ़ाहिशतौंव मक़्तन् त़ व सा'अ सबीलन् (२२) ★ हुर्रिमत् अलैकुम् अुम्महातुकुम् व बनातुकुम् व अख़वातुकुम् व अ़म्मातुकुम् व ख़ालातुकुम् व बनातुल्अख़ि व बनातुल् - अुख़्ति व अुम्महातु - कुमुल्लाती' अर्ज़अ़्नकुम् व अख़वातुकुम् मिनर्रज़ाअ़ति व अुम्महातु निसा'अिकुम् व रबा'अिबुकुमुल्लाती फ़ी हुजूरिकुम् मिन्-निसा'अिकुमुल्लाती दख़ल्तुम् बिहिन्न ज् फ़अिल्लम् तकूनू दख़ल्तुम् बिहिन्न फ़ला जुनाह अलैकुम् ज् व हला'अिलु अब्ना'अि-कुमुल्लज़ीन मिन् अस्लाबिकुम् ला व अन् तज्मअ़ू बैनल् - अुख़्तैनि अिल्ला मा क़द् सलफ़ त़ अिन्नल्लाह कान ग़फ़ूरर्रहीमन् ला (२३)

★ रु. ३ | १४ आ ८

٦٢

فاولئك يتوب الله عليهم وكان الله عليما حكيما ۝ وليست التوبة
للذين يعملون السيات حتى اذا حضر احدهم الموت قال اني
تبت الئن ولا الذين يموتون وهم كفار اولئك اعتدنا لهم
عذابا اليما ۝ يايها الذين امنوا لا يحل لكم ان ترثوا النساء
كرها ولا تعضلوهن لتذهبوا ببعض ما اتيتموهن الا ان
ياتين بفاحشة مبينة وعاشروهن بالمعروف فان كرهتموهن
فعسى ان تكرهوا شيئا ويجعل الله فيه خيرا كثيرا ۝ وان اردتم
استبدال زوج مكان زوج واتيتم احدىهن قنطارا فلا تاخذوا
منه شيئا اتاخذونه بهتانا واثما مبينا ۝ وكيف تاخذونه و
قد افضى بعضكم الى بعض واخذن منكم ميثاقا غليظا ۝ و
لا تنكحوا ما نكح اباؤكم من النساء الا ما قد سلف انه كان فاحشة
ومقتا وساء سبيلا ۝ حرمت عليكم امهتكم وبنتكم واخوتكم و
عمتكم وخلتكم وبنت الاخ وبنت الاخت وامهتكم التي ارضعنكم
واخوتكم من الرضاعة وامهت نسائكم وربائبكم التي في حجوركم
من نسائكم التي دخلتم بهن فان لم تكونوا دخلتم بهن فلا
جناح عليكم وحلائل ابنائكم الذين من اصلابكم وان
تجمعوا بين الاختين الا ما قد سلف ان الله كان غفورا رحيما ۝

ع

منزل

और उन लोगों की तौबा (क़ुबूल) नहीं जो (बराबर) बुरे काम करते रहे यहाँ तक कि उनमें से जब किसी के सामने मौत आ खड़ी हो तो कहने लगें कि अब मैंने तौबा की, और उनकी (भी तौबा) नहीं जो मरते समय तक काफ़िर ही रहते हैं। यही हैं जिनके लिए हमने दुखदाई अज़ाब तैयार कर रखा है।(१८) ऐ ईमानवालो! तुमको जायज़ नहीं कि औरतों को मीरास (बपौती) मानकर ज़बरदस्ती उन पर क़ब्ज़ा कर लो§। और जो कुछ तुमने उनको दिया है उसमें से कुछ ले लेने की नीयत से उनको क़ैद में न रखो (कि दूसरे से निकाह न करने पावें) सिवा इसके कि अगर उनसे कोई खुली हुई बदकारी ज़ाहिर हो (न कि उनका माल उड़ाने के लिए।) और बीवियों के साथ नेक सलूक से रहो-सहो, और तुमको वे नापसन्द हों तो ताज्जुब नहीं कि तुमको एक चीज़ नापसन्द हो और अल्लाह उसमें बहुत ख़ैर बरकत दे।(१९) और अगर तुम्हारा इरादा एक बीवी को बदलकर उसकी जगह दूसरी बीवी करने का हो तो गो तुमने पहली बीवी को बहुत सा माल दे भी दिया हो तो भी उसमें से कुछ वापस न लेना। क्या किसी क़िस्म की (झूठी) तोहमत लगाकर खुला गुनाह करके अपना दिया हुआ ले लोगे? (२०) और वह (दिया हुआ) कैसे ले लोगे जब कि तुम एक दूसरे के साथ सुहबत (संगत) कर चुके हो और वह (बीवियाँ) तुमसे पक्का वायदा ले चुकी हैं†।(२१) और जिन औरतों के साथ तुम्हारे बाप ने निकाह किया हो तुम उनके साथ निकाह न करना मगर जो अबतक हो चुका (सो हो चुका।) बेशक यह बड़ी शर्म और ग़ज़ब की बात थी और (यह बहुत ही) बुरा दस्तूर था।(२२)★

★ रु. ३/१४ आ ८

तुम्हारी माताएँ, बेटियाँ और तुम्हारी बहनें और तुम्हारी बुआएँ और तुम्हारी मौसियाँ और भतीजियाँ, भाञ्जियाँ और तुम्हारी वे माताएँ जिन्होंने तुमको दूध पिलाया और दूध शरीकी बहनें और तुम्हारी सासें तुम पर हराम हैं। और तुम्हारी उन बीवियों की (पूर्व पति की) बेटियाँ जिन (बीवियों) के साथ तुम संगत (सुहबत) कर चुके हो और (वह बेटियां) जो तुम्हारी गोदों में परवरिश पाती हैं (हराम हैं)। लेकिन (अगर इन बीवियों के साथ) तुमने संगत न की हो तो (उनकी पूर्वपति से पैदा लड़कियों से निकाह करने में) तुम पर कुछ गुनाह नहीं और तुम्हारे औरत से पैदा बेटों की स्त्रियाँ (बहुएँ) और दो बहनों का एक साथ (निकाह में) रखना× (भी तुम पर हराम है) मगर अब तक जो हो चुका (सो हो चुका,) बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला बेहद मेहरबान है।(२३)

॥ इति चौथा पारः ॥

उसकी जायदाद के साथ उसकी बेवाओं को भी
§ अरब में इस्लाम से पहले चलन था कि किसी के मरने पर इज़्ज़त से
क़ब्ज़े में ले लेते थे। यह ग़लत था। उन्हें अब पूरी आज़ादी है कि जिससे चाहें निकाह करें और
जैसे चाहें रहें। † पक्का वायदा के माने निकाह का अहद है जिसके भरोसे पर औरत अपने को मर्द के हवाले
करती है। वह भरोसा किसी फ़रेब, लालच या मक्कारी से तोड़ना गुनाह है। निकाह के बाद अगर मर्द
तलाक़ देना चाहे तो दो बातें हो सकती हैं—या तो उसने उस औरत के साथ संगत की होगी या न की होगी।
यदि वह कर चुका है तो उसको पूरा मेहर देना होगा वरना आधा। × दो सगी बहनें एक ही पुरुष की पत्नियाँ
साथ-साथ नहीं हो सकतीं।

[पेज १४७ से] (कपट और पाखण्ड) से बचना व किसी के दिल को न दुखाना, मीठा बोलना व अल्लाह के नबिओं
में फ़र्क़ न मानना, इसका वर्णन है। आ० १५३-१७६ याने सूरत की समाप्ति तक उन मौक़ों की याद दिलाई
है जब जब किताबवाले अल्लाह के हुक्म से फिर बैठे और उन्होंने ज़ुल्म व कुफ़्र अपनाया। इस सूरः निसा के
नाज़िल होने के बाद से वसीअत करने का लाज़िमी हुक्म बाक़ी नहीं रहता।

✪✪ पाँचवाँ पार: ✪✪

✪✪ वल्मुह्‌सनातु ✪✪

✪ सूरतुन्निसाअि आयात २४ से १४७ ✪

०'वल्मुह्‌सनातु मिनन्निसा᾽अि अिल्ला मा मलकत् अैमानुकुम् ज् किता᾽बल्लाहि अ़लैकुम् ज् व अुहि़ल्ल लकुम् मा वरा᾽अ ज़ालिकुम् अन् तब्तग़ू बिअम्वालिकुम् मुह्‌सिनीन ग़ैर मुसाफ़िह़ीन त् फ़मस्तम्तअ़्तुम् बिही मिन्हुन्न फ़आतूहुन्न अुजूरहुन्न फ़रीज़तन् त् व ला जुनाह़ अ़लैकुम् फ़ी मा तराज़ैतुम् बिही मिम्बअ़्दिल्फ़रीज़ति त् अिन्नल्लाह कान अ़लीमन् ह़कीमन् (२४) व मल्लम् यस्ततिअ़् मिन्कुम् तौलन् अैंयन्किह़ल्-मुह्‌सनातिल् - मुअ्‌मिनाति फ़मिम्मा मलकत् अैमानुकुम् मिन् फ़तयातिकुमुल्-मुअ्‌मिनाति त् वल्लाहु अअ़्लमु बिअीमानिकुम् त् बअ़्ज़ुकुम् मिम्बअ़्ज़िन् ज् फ़न्किह़ूहुन्न बिअिज़्नि अह्‌लिहिन्न व आतू हुन्न अुजूरहुन्न बिल्मअ़्रूफ़ि मुह्‌सनातिन् ग़ैर मुसाफ़िह़ातिंव्वला मुत्तख़िज़ाति अख़्दा᾽निन् ज् फ़अिज़ा᾽ अुह्‌सिन्न फ़अिन् अतैन बिफ़ाहि़शतिन् फ़अ़लैहिन्न निस्फ़ु मा अ़लल्-मुह्‌सनाति मिनल्अ़ज़ाबि त् ज़ालिक लिमन् ख़शियल्-अ़नत मिन्कुम् त् व अन् तस्‌बिरू ख़ैरुल्लकुम त् वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीमुन् (२५) ★ युरीदुल्लाहु लियुबैयिन लकुम् व यह्‌दियकुम् सुननल्लज़ीन मिन् क़ब्‌लिकुम् व यतूब अ़लैकुम् त् वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीमुन् (२६) वल्लाहु युरीदु अैंयतूब अ़लैकुम् क़िफ़् व युरीदुल्लज़ीन यत्तबिअ़ूनश्-शहवाति अन् तमीलू मैलन् अ़ज़ीमन् (२७) युरीदुल्लाहु अैंयुख़फ़्फ़िफ़ अ़न्कुम् ज् व ख़ुलिक़ल् - अिन्सानु ज़अ़ीफ़न् (२८)

★ रु. ४/१ आ. ३

النساء ٦٥ والمحصنت ٥

وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ
غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ۗ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ
فَرِيْضَةً ۗ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ۗ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ
يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ
الْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ۗ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ
فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ
مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَآ اُحْصِنَّ
فَاِنْ اَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ
الْعَذَابِ ۗ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۗ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ
لَّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ
سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝
وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۗ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ
اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ۝ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ
الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ
بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۗ وَ

منزل

सूरतुल् निसा'अि आयात २४ से १४७

और औरतें जो (किसी के) निकाह में हैं (वे भी तुम पर हराम हैं) सिवाय उनके जो (क़ैद होकर) तुम्हारे अधिकार में आई हों। अल्लाह के ये हुक्म तुम पर (फ़र्ज़) हैं। और इनके सिवाय दूसरी (सब औरतें) तुमको हलाल हैं जिनको तुम माल (मिहर) देकर क़ैद (निकाह) में लाना चाहो न कि मस्ती निकालने को। फिर जिस तरह तुमने इनसे (पति-पत्नी का) सुख उठाया है तो उनसे जो मिहर ठहरा था उनके हवाले करो, और (मेहर) तै होने के बाद अगर आपस में समझौते से जो और (कमी बेशी) ठहरा लो तो तुम पर इसमें कुछ पाप नहीं। बेशक अल्लाह बड़ा जानकार और बड़ा हिकमतवाला है।(२४) और तुममें से जिसको (आज़ाद) मुसलमान औरतों से निकाह करने की ताक़त (मिहर आदि के कारण) न हो तो ख़ैर ईमानवाली बाँदियां ही सही जो (जंग में क़ैद होकर) तुम्हारे आपस में क़ब्जे में हों और अल्लाह तुम्हारे ईमान को ख़ूब जानता है। तुम (सब) आपस में एक जैसे (ही ईमान रखनेवाले) हो पस उन (बांदियों) के मालिकों की इजाज़त से तुम उनके साथ निकाह कर लो और दस्तूर के बमूजिब उनके मिहर उनके हवाले कर दो बशर्ते कि क़ैद (निकाह) में लाई जायँ, (बाज़ारी औरतों-जैसी) बदकारी करनेवाली न हों और न चोरी-छिपे आशनाई करनेवाली हों। फिर अगर क़ैद (निकाह) में आने के बाद कोई बेहयाई करें तो जो सज़ा आज़ाद बीबी को उसकी आधी लौंडी को। (लौंडी से निकाह करने की) यह इजाज़त उसी को है जिसको तुम में से बदकारी (में फँस जाने) का डर है और अगर (उसके बिना) सब्र से रह सको तो तुम्हारे हक़ में कहीं भला है और अल्लाह बड़ा माफ़ करनेवाला बड़ा मेहरबान है।(२५)★

★ रु. ४/१ आ ३

अल्लाह चाहता है कि तुमसे (आयतें) खोल-खोल कर बयान करे और जो तुमसे पहले नबी व ईमानवाले हो गुज़रे हैं उनके तरीक़े तुमको बतलाये और तुम पर दया की नज़र करे (जाहिलियत से निकाल कर ईमान का रास्ता दिखाये) और अल्लाह बड़ा जाननेवाला है बड़ा हिकमतवाला है।(२६) और अल्लाह चाहता है कि तुम पर दया करे और जो लोग ख़्वाहिशों के बन्दे (वासनाओं के दास) हैं उनकी मंशा यह है कि तुम सही राह से दूर (भटककर कुराह में) फँस जाओ।(२७) अल्लाह चाहता है कि तुम्हारा बोझ हलका करे (याने नरमी बरते) और मनुष्य तो कमज़ोर पैदा ही किया गया है।(२८)

या' अैयुहल्लजीन आमनू ला तअ्कुलू' अम्वालकुम् बैनकुम् बिल्बातिलि अिल्ला' अन् तकून तिजारतन् अन् तराज़िम्-मिन्कुम् क़िफ़ व ला तक़्तुलू' अन्फ़ुसकुम् त् अिन्नल्लाह कान बिकुम् रहीमन् (२९) व मैंयफ़्अल् जालिक अुद्वानौंव जुल्मन् फ़सौफ़ नुस्लीहि नारन् त् व कान जालिक अलल्लाहि यसीरन् (३०) अिन् तज्तनिबू कबा'अिर मा तुन्हौन अन्हु नुकफ़्फ़िर् अन्कुम् सैयिआतिकुम् व नुद्ख़िल्कुम् मुद्ख़लन् करीमन् (३१) व ला ततमन्नौ मा फ़ज़्ज़लल्लाहु बिही बअ्ज़कुम् अला बअ्ज़िन् त् लिर्रिजालि नसीबुम् - मिम्मक्तसबू त् व लिन्निसा'अि नसीबुम्-मिम्मक्तसब्न त् वस्अलुल्लाह मिन् फ़ज़्लिही त् अिन्नल्लाह कान बिकुल्लि शैअिन् अलीमन् (३२) व लिकुल्लिन् जअल्ना मवालिय मिम्मा तरकल् - वालिदानि वल्-अक़्रबून त् वल्लजीन अक़दत् अैमानुकुम् फ़आतूहुम् नसीबहुम् त् अिन्नल्लाह कान अला कुल्लि शैअिन् शहीदन् (३३) ★ अर्रिजालु क़ौवामून अलन्निसा'अि बिमा फ़ज़्ज़लल्लाहु बअ्ज़हुम् अला बअ्ज़िंव्व बिमा' अन्फ़क़ू मिन् अम्वालिहिम् त् फ़स्सालिहातु क़ानितातुन् हाफ़िज़ातुल् - लिल्ग़ैबि बिमा हफ़िज़ल्लाहु त् वल्लाती तख़ाफ़ून नुशूज़हुन्न फ़अिज़ूहुन्न वह्जुरूहुन्न फ़िल्मज़ाजिअि वज़्रिबूहुन्न ज् फ़अिन् अतअ्नकुम् फ़ला तब्ग़ू अलैहिन्न सबीलन् त् अिन्नल्लाह कान अलीयन् कबीरन् (३४) व अिन् ख़िफ़्तुम् शिक़ाक़ बैनिहिमा फ़ब्अस़ू हकमम्-मिन् अह्लिही व हकमम्-मिन् अह्लिहा ज् अींयुरीदा' अिस्लाहैंयुवफ़्-फ़िक़िल्लाहु बैनहुमा त् अिन्नल्लाह कान अलीमन् ख़बीरन् (३५) वअ्बुदुल्लाह व ला तुश्रिकू बिही शैऔंव बिल्-वालिदैनि अिह्सानौंव बिजिल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि वल्-जारिजिल्-क़ुर्बा वल्जारिल् - जुनुबि वस्साहिबि बिल्जम्बि वब्निस्सबीलि ला व मा मलकत् अैमानुकुम् त् अिन्नल्लाह ला युहिब्बु मन् कान मुख़्तालन् फ़ख़ूरन् ला (३६)

★ रु. ५/२ आ ८

والمحصنت ٥ — ٦٦ — النسآء ٤

لَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ۝ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ
عُدْوَانًا وَّظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ
يَسِيْرًا ۝ اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ
وَنُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ۝ وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ
بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ؕ وَلِلنِّسَآءِ
نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ؕ وَسْئَلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝ وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَ
الْاَقْرَبُوْنَ ؕ وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ۝ اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ
بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ؕ
فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ؕ وَالّٰتِيْ
تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَاهْجُرُوْهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ
وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ
كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ۝ وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا
مِّنْ اَهْلِهٖ وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ
بَيْنَهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ۝ وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا
بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ

ऐ ईमानवालो ! (आपस में) एक दूसरे का माल बेजा मत खाओ, हाँ ! आपस में रज़ामन्दी से तिजारत करो (उसमें नफ़ा हो जाय तो बेजा नहीं) और (आपस में) एक दूसरे को क़त्ल मत करो*। बेशक अल्लाह तुम पर बड़ा मेहरबान है। (२९) और जो ज़ोर-ज़ुल्म से ऐसा करेगा हम उसको जल्दी ही आग में झोंकेंगे और यह अल्लाह के लिए साधारण बात है। (३०) अगर तुम उनमें से बड़े-बड़े पापों से, जिनसे तुमको मना किया जाता है, बचते रहोगे तो हम तुम्हारी (छोटी) बुराइयाँ दूर कर देंगे और तुमको इज़्ज़त की जगह (बहिश्त) में दाख़िल करेंगे। (३१) और अल्लाह ने जो तुममें से एक को दूसरे पर बढ़ती दे रखी है उसकी हवस न किया करो। मर्दों ने जैसे कर्म किये हैं उनको उनका भाग और औरतों ने जैसे कर्म किये हैं उनको उनका भाग मिलेगा और अल्लाह से उसकी दया माँगते रहो§। अल्लाह बेशक हर चीज़ से जानकार है। (३२) और मा-बाप और रिश्तेदार जो माल (तर्का) छोड़कर मरें तो हमने उस (सब माल) के लिए हक़दार ठहरा दिये हैं और जिन लोगों के साथ तुम्हारा वादा† है तो उनका भाग उनको दो। बेशक हर चीज़ अल्लाह के सामने है। (३३) ★

★ रु. ५/२ आ ८

मर्द औरतों के सिरधरा हैं। कारण यह कि अल्लाह ने (इनमें से) एक को एक पर प्रधानता दी है और इसलिए भी कि मर्द अपने माल में से (उन पर) ख़र्च करते हैं। तो जो भली हैं वे (अपने पतियों के) हुक्म पर चलती हैं और उनके पीठ पीछे अल्लाह के साये में (माल व आबरू की) हिफ़ाज़त करती हैं। और तुमको जिन बीवियों से सरकशी का खटका हो उनको समझा दो, फिर उनके साथ सोना छोड़ दो और उन्हें मारो, फिर अगर वे तुम्हारी बात मानने लगें तो उन पर तोहमत न लगाओ, क्योंकि अल्लाह सर्वोपरि है और अति महान है। (३४) और अगर तुमको मियाँ-बीवी में बिगाड़ का अन्देशा हो तो (बजाय अदालत या मुआमला तूल पकड़ने से पहले ही) मर्द की तरफ़ से एक पंच और एक पंच स्त्री की तरफ़ से ठहराओ। अगर दोनो की नियत सलाह की ठहरी तो अल्लाह दोनो में मिलाप करा देगा, बेशक अल्लाह बड़ा जानकार हर तरह ख़बरदार है। (३५) अल्लाह ही की अ़िबादत करो और उसके साथ किसी और को मत शरीक करो। और मा-बाप रिश्तेदार और अनाथों और मुहताजों और क़रीबी पड़ोसियों और दूर वाले पड़ोसियों और (रोज़ के) पास बैठनेवालों और मुसाफ़िरों और जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों (यानी ग़ुलाम व बाँदियाँ तक) इन सब के साथ भला बर्ताव रखो। बेशक अल्लाह उन लोगों से खुश नहीं होता जो इतरायें, बड़ाई मारते फिरें। (३६)

---

* इसकी तफ़सीर तीन तरीक़ों पर है और तीनों हक़ हैं। (१) दूसरे का माल बेजा हक़ खा जाना उड़ाना अपनी ही ज़िन्दगी और आख़िरत को मिटाना है। (२) मुसलमान आपस में ही मार-काट न करें। (३) खुदकशी (आत्म-हत्या) गुनाह है। § दुनिया में जिस्म, दौलत, ताक़त, इज़्ज़त या अ़िल्म के लिहाज़ से एक से एक बढ़ कर हैं लेकिन इसमें किसी को किसी पर डाह करना या अपने लिए उसकी हवस करना बुरा है। अगर अपनी किसी कमी को पूरा करने की ख़्वाहिश हो भी तो बजाय अल्लाह की क़ुदरत से उलाहना देने या दूसरे लोगों से हिर्स करने के अल्लाह से दुआ मांगना चाहिये। एक समय कुछ औरतों ने आदमियों के मुक़ाबले अपने को कम समझ कर रश्क किया। इस पर यह आयत उतरी। † वादे का अर्थ है दीनी भाई मानना। ऐसे लोगों के लिए तर्का (उत्तराधिकार) नहीं है। अरब में इस्लामी क़ानून से पहले यह क़ायदा था कि दोस्ती का अहद हो जाने पर दोस्त या मुँहबोला बेटा वग़ैरा भी मरे हुये की जायदाद पर हक़दार हो जाते थे। वह क़ायदा इस्लाम ने मंसूख कर दिया। हाँ यदि मरने से पहले अपनी जायदाद का कोई भाग कोई शख़्स अपने दीनी भाई को देना चाहे तो दे सकता है।

अ़ल्लजीन यब्ख़लून व यअ्मुरूनन्नास बिल्बुख़्लि व यक्तुमून मा' आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिहि‍ ‍त् व अअ्तद्ना लिल्काफ़िरीन अ़जाबम्मुहीनन् ज (३७) वल्लजीन युन्फ़िक़ून अम्वालहुम् रिआ'अन्नासि व ला युअ्मिनून बिल्लाहि व ला बिल्-यौमिल्-आख़िरि त् व मैंयकुनिश्-शैतानु लहू क़रीनन् फ़सा'अ क़रीनन् (३८) व मा जा अ़लैहिम् लौ आमनू बिल्लाहि वल-यौमिल्-आख़िरि व अन्फ़क़ू मिम्मा रज़क़हुमुल्लाहु त् व कानल्लाहु बिहिम् अ़लीमन् (३९) अिन्नल्लाह ला यज़्लिमु मिस्क़ाल जर्रतिन् ज् व अिन्तकु ह़सनतैंयुज़ा-अ़िफ़्हा व युअ्ति मिल्लदुन्हु अज्रन् अ़ज़ीमन् (४०) फ़कैफ़ अिजा जिअ्ना मिन् कुल्लि अुम्मतिम्-बिशहीदिंव्व जिअ्ना बिक अ़ला हा'अुला'अि शहीदन् त् ● (४१) यौमअिजीं-यवद्दुल्-लजीन कफ़रू व अ़सवुर्रसूल लौ तुसौवा बिहिमुल्अर्ज़ु त् व ला यक्तुमूनल्लाह ह़दीसन् (४२) ★ या' अैयुहल्लजीन आमनू ला तक़्रबुस्सलात व अन्तुम् सुकारा ह़त्ता तअ्लमू मा तक़ूलून व ला जुनुबन् अिल्ला अ़ाबिरी सबीलिन् ह़त्ता तग़्तसिलू त् व अिन् कुन्तुम् मर्ज़ा' औ अ़ला सफ़रिन् औ जा'अ अह़दुम्-मिन्कुम् मिनल्ग़ा'अिति औ लामस्तुमुन्निसा'अ फ़लम् तजिदू मा'अन् फ़तयम्ममू सअ़ीदन् तैयिबन् फ़म्सहू बिवुजूहिकुम् व अैदीकुम् त् अिन्नल्लाह कान अ़फ़ूवन् ग़फ़ूरन् (४३)

● व. न बी स. ★ रु. ६ ३ आ. ६

والمحصنت ٥ ٦٧ النساء ٤

وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ
السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا
فَخُوْرَا ۙ۝ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ
مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝
وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ
وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ۝
وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ
اللّٰهُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ۝ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ
وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝
فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۢ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ
شَهِيْدًا ۝ؕ يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى
بِهِمُ الْاَرْضُ ؕ وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ۝ۧ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ وَ
لَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِيْ سَبِيْلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى
اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ
فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَ
اَيْدِيْكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُوْرًا ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا

منزل

(न उन लोगों से) जो कंजूसी करें और लोगों को भी कंजूसी करने की सलाह दें और अल्लाह ने जो अपनी कृपा से उनको दिया है उसको छिपाएँ और हमने (ऐसे) काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है।(३७) (और अल्लाह उनको भी पसंद नहीं करता) जो लोगों के दिखाने को माल ख़र्च करते हैं (जब कि सच तो यह है कि वे) अल्लाह और आख़िरत (अन्तिम न्याय के दिन) पर ईमान (ही) नहीं रखते और शैतान जिसका साथी हो तो वह (कैसा) बुरा साथी है।(३८) और अगर अल्लाह और आख़िरत पर ईमान लाते और जो कुछ अल्लाह ने इनको दे रखा था उसमें से ख़र्च करते तो उनका क्या बिगड़ जाता और अल्लाह तो इनसे ख़ूब जानकार है।(३९) बेशक अल्लाह रत्ती भर ज़ुल्म नहीं करता बल्कि नेकी के बदले कई गुना फल देता है और अपने पास से बड़ा बदला देता है।(४०) (सोंचो उस समय इनका) क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत (गिरोह) से एक गवाह (नबी) को बुलाएँगे और (ऐ मुहम्मद!) हम तुमको इन पर गवाह तलब करेंगे ●।(४१) जिन लोगों ने इनकार किया और पैग़म्बर का हुक्म न माना (वे) उस दिन इच्छा करेंगे कि किसी तरह ज़मीन (फट जाती और वे उस) में समा जाते। और वे अल्लाह से कोई बात भी (तो) नहीं छिपा सकेंगे।(४२)★

ऐ ईमानवालो जब तुम नशे में हो§ तो जब तक यह समझने के लायक़ न हो कि क्या कह रहे हो, नमाज़ के क़रीब न जाओ और न जनाबत (अपवित्रता) की हालत में बिना स्नान किये, सिवा उस हालत के कि तुम सफ़र में हो। और अगर तुम बीमार हो या यात्रा में हो या तुममें से कोई इस्तिन्जा (शौचादि) से आवे या तुम अपनी बीवियों के पास गये हो और तुमको पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मुम† (शुद्ध) कर लिया करो यानी अपने चेहरों और हाथों पर मल लिया करो। बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला बड़ा बख़्शनेवाला है।(४३)

● व. न बी. स. ★ रु. ६/३ आ ६

§ सूरे बक़र आयत २१६ में शराब को बुरा कहा गया है। कुछ लोगों ने तो उसी समय शराब को त्याग दिया था। बचे-खुचे लोगों को नमाज़ के मौक़ों पर उस हालत में देख कर यह दूसरा हुक्म नाज़िल हुआ। इसके बाद सूरे मायदः आयत ९० में शराब बिलकुल हराम कर दी गई। † तयम्मुम याने अंग पवित्र करने के लिए शुद्ध मिट्टी का इस्तेमाल उसी समय के लिए है जब कि पानी मयस्सर न हो या बीमारी, जंग, सफ़र के सबब न इस्तेमाल हो सकता हो।

अलम् तर अिलल्लजीन अूतू नसीबम्मिनल् - किताबि यश्तरूनज़्ज़लालत व युरीदून अन् तज़िल्लुस्सबील त़् (४४) वल्लाहु अअ्लमु बिअअ्दाअिकुम् त़् व कफ़ा बिल्लाहि वलीयन् क़् ज़् ँव कफ़ा बिल्लाहि नसीरन् (४५) मिनल्लजीन हादू युहर्रिफ़ूनल् - कलिम अम्मवाज़िअिही व यक़ूलून समिअ्ना व असैना वस्मअ् ग़ैर मुस्मअिंव्व राअिना लैयम् - बि-अल्सिनति-हिम् व तअ्नन् फ़िद्दीनि त़् व लौ अन्नहुम् क़ालू समिअ्ना व अतअ्ना वस्मअ् वन्जुर्ना लकान ख़ैरल्लहुम् व अक़्वम ला व लाकिल्लअन - हुमुल्लाहु बिकुफ़्रिहिम् फ़ला युअ्मिनून अिल्ला क़लीलन् (४६) या अैयुहल्लजीन अूतुल्किताब आमिनू बिमा नज़्ज़ल्ना मुसद्दिक़लिलमा मअकुम् मिन् क़ब्लि अन्नत्मिस वुजूहन् फ़नरुद्दहा अला अद्बारिहा औनल् - अनहुम् कमा लअन्ना अस्हाबस्सब्ति त़् व कान अम्रुल्लाहि मफ़्अूलन् (४७) अिन्नल्लाह ला यग़्फ़िरु अैंयुश्रक बिही व यग़्फ़िरु मा दून जालिक लिमैंयशाअु ज़् व मैंयुश्रिक् बिल्लाहि फ़क़दिफ़्तरा अिस्मन् अजीमन् (४८) अलम् तर अिलल्लजीन युज़क्कून अन्फ़ुसहुम् त़् बलिल्लाहु युज़क्की मैंयशाअु व ला युज़्लमून फ़तीलन् (४९) अुन्जुर् कैफ़ यफ़्तरून अलल्लाहिल् - कजिब त़् व कफ़ा बिही अिस्मम्मुबीनन् (५०) ★ अलम् तर अिलल्लजीन अूतू नसीबम्मिनल् - किताबि युअ्मिनून बिल्जिब्ति वत्तागूति व यक़ूलून लिल्लजीन कफ़रू हाअुलाअि अह्दा मिनल्लजीन आमनू सबीलन् (५१) अुलाअिकल्लजीन लअनहुमुल्लाहु त़् व मैंयल् - अनिल्लाहु फ़लन् तजिद लहू नसीरन् त़् (५२)

والمحصنت ٥ — ٧٨ — النساء ٤

نصيبا من الكتب يشترون الضللة ويريدون ان تضلوا السبيل ۞ والله اعلم باعدائكم وكفى بالله وليا وكفى بالله نصيرا ۞ من الذين هادوا يحرفون الكلم عن مواضعه ويقولون سمعنا وعصينا واسمع غير مسمع وراعنا ليا بالسنتهم وطعنا في الدين ولو انهم قالوا سمعنا واطعنا واسمع وانظرنا لكان خيرا لهم واقوم ولكن لعنهم الله بكفرهم فلا يؤمنون الا قليلا ۞ يايها الذين اوتوا الكتب امنوا بما نزلنا مصدقا لما معكم من قبل ان نطمس وجوها فنردها على ادبارها او نلعنهم كما لعنا اصحب السبت وكان امر الله مفعولا ۞ ان الله لا يغفر ان يشرك به ويغفر ما دون ذلك لمن يشاء ومن يشرك بالله فقد افترى اثما عظيما ۞ الم تر الى الذين يزكون انفسهم بل الله يزكي من يشاء ولا يظلمون فتيلا ۞ انظر كيف يفترون على الله الكذب وكفى به اثما مبينا ۞ الم تر الى الذين اوتوا نصيبا من الكتب يؤمنون بالجبت والطاغوت ويقولون للذين كفروا هؤلاء اهدى من الذين امنوا سبيلا ۞ اولئك الذين لعنهم الله ومن يلعن الله فلن تجد له نصيرا ۞ ام لهم نصيب

ع

منزل

★ रु. ७/४ आ. ८

क्या तुमने (उन लोगों पर) नज़र नहीं की जिनको किताब (अिल्म) का कुछ हिस्सा दिया गया था, वह अब भटकना मोल ले रहे हैं और चाहते हैं कि तुम भी राह से भटक जाओ।(४४) और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानता है। और अल्लाह का तरफ़दार और मददगार होना (तुम्हारे लिए) काफ़ी है।(४५) जो यहूदी हो गये हैं उनमें कुछ (ऐसे भी) हैं जो बातों को (उनके) ठिकाने से फेरते§ (माने बदलते) हैं और ज़बान मरोड़-मरोड़ कर दीन (इस्लाम) पर ताने की राह से 'समिअ़ना व असैना' और 'अिस्मअ़् ग़ैर मुस्मअिन्' और 'राइना' कह कर (तुम से) सम्बोधन करते हैं और अगर वह (इन शब्दों के बजाय) 'समिअना व अतअ़ना' और (सिर्फ़) अिस्मअ़् और 'उन्ज़ुर्ना' कह कर ख़िताब करते तो उनके लिए भला होता और बात भी मुनासिब होती৪ लेकिन उन पर तो उनके कुफ़्र की वजह से अल्लाह की लानत है। पस उनमें से थोड़े ही ईमान लायें गे।(४६) ऐ किताबवालो! (तुम) उस (किताब) पर जो हमने उतारी है और जो उस किताब की (भी) जो तुम्हारे पास है तसदीक़ करती है, ईमान ले आओ इसके पहले कि हम (उनके) चेहरों को बिगाड़ डालें और (चेहरों को उनके) पीछे की ओर उलट दें; या जिस तरह हमने सब्त (शनीचर) वालों× को फटकार दिया था उसी तरह उनको भी फटकार दें और जो अल्लाह को मंज़ूर है वह तो होकर रहेगा।(४७) बेशक अल्लाह के शरीक ठहरानेवाले को अल्लाह माफ़ नहीं करता, इसके अलावा जिसको चाहे क्षमा करे और जिसने अल्लाह का शरीक ठहराया (किसी और को पूजा) उसने बेशक एक बड़ा तूफ़ान समेटा।(४८) क्या तुमने उन लोगों (यानी यहूद) पर नज़र नहीं की जो आप बड़े पाक बनते हैं हालाँकि अल्लाह ही जिसको चाहता पाक बनाता है और (अल्लाह के यहाँ) जुल्म तो किसी पर रत्ती के बराबर भी न किया जायेगा।(४९) और देखो (यह लोग) अल्लाह पर कैसे झूठ (तूफ़ान) बाँध रहे हैं और यही सरिहन (खुला) गुनाह काफ़ी है।(५०) ★

★ रु. ७ | ४ आ ८

क्या तुमने इन लोगों (यहूदियों के हाल) पर नज़र नहीं की जिनको किताब से हिस्सा दिया गया, और वह जिब्त (जादू टोना, सगुन असगुन, रमल याने Superstition के मातहत बातें) और ताग़ूत (शैतान) को लगे मानने और काफ़िरों की बाबत कहते हैं कि मुसलमानों से तो यही लोग ज़्यादा सीधे रास्ते पर हैं।(५१) ऐ पैग़म्बर! यही लोग हैं जिनको अल्लाह ने फटकार दिया है और जिसको अल्लाह फटकारे मुमकिन नहीं कि तुम (उसका) कोई मददगार पा सको।(५२)

---

§ जो कुछ तौरात में है उसको छिपाते हैं और शब्दों को उलट-पलट कर कुछ का कुछ अर्थ कर देते हैं। इसी को तहरीफ़ कहते हैं। ৪ दीन व रसूल स० का मज़ाक़ बनाने के लिए यहूदी मजलिस में रसुलुल्लाह स० से ऐसे शब्द इस्तेमाल करते जिनमें ज़रा सी तोड़-मरोड़ कर देने से उनके माने दूसरे के दूसरे हो जाते। मसलन 'समिअ़ना व असैना' के अर्थ हैं 'हमने सुना और माना नहीं।' वे असैना का उच्चारण इस तौर पर करते मानों 'अतअ़ना' कह रहे हैं जिसका अर्थ है हमने मान लिया। या जैसे रसुलुल्लाह स० से जब कुछ प्रार्थना करना होती तो कहते 'अिस्मअ़्' (सुनो) ग़ैर मुस्मअिन् (न सुनाया जाय), 'न सुना जाय' याने तुमको कोई 'बुरे बचन न सुनना पड़ें।' लेकिन इनका एक बुरा अर्थ भी है कि 'तुम बहरे हो जाओ।' यहूदी 'ग़ैर मुस्मअ़्' का प्रयोग तो बुरी मंशा से करते थे लेकिन धोखा देते थे पिछले याने अच्छे अर्थ का। इसी तरह 'राअिना' और 'राअीना' का भी शरारत से इस्तेमाल करते थे। देखिये फ़ुटनोट § सूरे बक़र आयत १०४ सफ़ा ४७ पर। उनकी इन दोमानी शब्दों के कहने में मंशा यह थी कि वे रसूल स० का मज़ाक़ भी बना लें और पकड़ में भी न आवें। इन ग़लतियों में मुसलमानों को गुमराही से बचाने के लिए यह हिदायतें उतरीं। उन्ज़ुर्ना वग़ैरः के इस्तेमाल में फिर इस धोखे की गुंजाइश नहीं रहती। × पृष्ठ ३६ पर सूरे बक़र आयत ६५ व उसका फ़ुटनोट § देखिये।

अम् लहुम् नसीबुम्मिनल्मुल्कि फ़अिजल्ला युअ्तूनन्नास नक़ीरन् ला (५३) अम् यह्सुदूनन्नास अला मा' आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही ज फ़क़द् आतैना' आल अिब्राहीमल्किताब वल्-हिक्मत व आतैनाहुम् मुल्कन् अज़ीमन् (५४) फ़मिन्हुम् मन् आमन बिही व मिन्हुम् मन् सद्द अन्हु त् व कफ़ा बिजहन्नम सअीरन् (५५) अिन्नल्लजीन कफ़रू बिआयातिना सौफ़ नुस्लीहिम् नारन् त् कुल्लमा नज़िजत् जुलूदुहुम् बद्दल्ना-हुम् जुलूदन् ग़ैरहा लियज़ूक़ुल्-अज़ाब त् अिन्नल्लाह कान अज़ीज़न् हकीमन् (५६) वल्लजीन आमनू व अमिलुस्-सालिहाति सनुद्ख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदीन फ़ीहा' अबदन् त् लहुम् फ़ीहा' अज़्वाजुम्-मुतह्हरतुन् ज व नुद्ख़िलुहुम् ज़िल्लन् ज़लीलन् (५७) अिन्नल्लाह यअ्मुरुकुम् अन् तुअद्दुल्-अमानाति अिला' अह्लिहा ला व अिजा हकम्तुम् बैनन्नासि अन् तह्कुमू बिल्-अद्लि त् अिन्नल्लाह निअिम्मा यअिज़ुकुम् बिही त् अिन्नल्लाह कान समीअम्-बसीरन् (५८) या' अैयुहल्लजीन आमनू' अतीअुल्लाह व अतीअुर्रसूल व अुलिल्-अम्रि मिन्कुम् ज फ़अिन् तनाज़अ्तुम् फ़ी शैअिन् फ़रुद्दूहु अिलल्लाहि वर्रसूलि अिन् कुन्तुम् तुअ्मिनून बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि त् ज़ालिक ख़ैरुंव अह्सनु तअ्वीलन् (५९) ★ अलम् तर अिलल्लजीन यज़्अुमून अन्नहुम् आमनू बिमा' अुन्ज़िल अिलैक व मा' अुन्ज़िल मिन् क़ब्लिक युरीदून अैयतहाकमू' अिलत्ताग़ूति व क़द् अुमिरू' अैयक्फ़ुरू बिही त् व युरीदुश्शैतानु अैयुज़िल्लहुम् ज़लालम्-बअीदन् (६०)

والمحصنت ٥ — ٦٩ — النساء ٤

من الملك فإذا لا يؤتون الناس نقيرا ۝ أم يحسدون الناس
على ما آتاهم الله من فضله فقد آتينا آل إبراهيم الكتب
والحكمة وآتينهم ملكا عظيما ۝ ٥٤ فمنهم من آمن به ومنهم
من صد عنه وكفى بجهنم سعيرا ۝ إن الذين كفروا
بآيتنا سوف نصليهم نارا كلما نضجت جلودهم بدلنهم
جلودا غيرها ليذوقوا العذاب إن الله كان عزيزا حكيما ۝
والذين آمنوا وعملوا الصلحت سندخلهم جنت تجري من
تحتها الأنهر خلدين فيها أبدا لهم فيها أزواج مطهرة
وندخلهم ظلا ظليلا ۝ إن الله يأمركم أن تؤدوا الأمنت
إلى أهلها وإذا حكمتم بين الناس أن تحكموا بالعدل إن
الله نعما يعظكم به إن الله كان سميعا بصيرا ۝ يأيها الذين
آمنوا أطيعوا الله وأطيعوا الرسول وأولي الأمر منكم فإن
تنازعتم في شيء فردوه إلى الله والرسول إن كنتم تؤمنون
بالله واليوم الآخر ذلك خير وأحسن تأويلا ۝ ألم تر إلى
الذين يزعمون أنهم آمنوا بما أنزل إليك وما أنزل من
قبلك يريدون أن يتحاكموا إلى الطاغوت وقد أمروا أن
يكفروا به ويريد الشيطن أن يضلهم ضللا بعيدا ۝ و

منزل

आया इनके पास राज्य का कोई भाग है अगर ऐसा होता तब तो वे लोगों को तिल बराबर भी न देते।(५३) या अल्लाह ने जो लोगों (इस्माईल की संतान) को अपनी मेहरबानी से निअमत (क़ुर्आन) दी है उस पर जलते हैं, सो इब्राहीम के वंश को हमने (पहले भी) किताब और इल्म और (इनको) बड़ा भारी राज्य दिया।(५४) फिर उन लोगों में से कोई तो उस पर ईमान लाये और किसी ने उससे मुँह मोड़ा और (उनके लिए तो) दहकता हुआ दोज़ख़ काफ़ी है। (५५) यक़ीनन जिन लोगों ने हमारी आयतों से इनकार किया हम उनको जल्दी ही (दोज़ख़ की) आग में झोंकेंगे। जब उनकी खालें जल (कर पक) जावेंगी हम उनको दूसरी खाल बदल देंगे ताकि (वह बराबर) अज़ाब का मज़ा चखते रहें*। बेशक अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त बड़ा हिकमतवाला है।(५६) ● जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये हम उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी जहाँ वे हमेशा रहेंगे। उनमें उनके लिये बीवियाँ साफ़ सुथरी होंगी और हम उनको घनी छाहों में ले जाकर रखेंगे।(५७) अल्लाह तुमको हुक्म देता है कि अमानत वालों की अमानत उनके हवाले कर दिया करो और जब लोगों के आपस के झगड़े चुकाओ (तो) इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करो, अल्लाह तुमको कैसी अच्छी शिक्षा देता है बेशक अल्लाह सब कुछ सुनता और देखता है।(५८) ऐ ईमानवालो! अल्लाह की और पैग़म्बर की और तुममें से (जो) हाकिम हैं उनकी आज्ञा मानो फिर अगर किसी बात में तुम्हारे बीच में झगड़ा हो पड़े तो अगर तुम अल्लाह पर और क़ियामत पर ईमान रखते हो (तो) अल्लाह और पैग़म्बर की तरफ़ ले जाओ (उनकी आज्ञाओं के अनुसार करो)। यही (तुम्हारे हक़ में) भला है और इसका फल (अंजाम) भी अच्छा है।(५९) ★

(और ऐ पैग़म्बर!) क्या तुमने उन (मुनाफ़िक़ों) की तरफ़ नहीं देखा जो दावा (तो) करते हैं कि वह उस किताब को जो तुम पर उतरा (याने क़ुर्आन) और उस किताब को जो तुमसे पहले उतरा (याने तौरात) को मानते हैं लेकिन चाहते हैं कि झगड़ा शैतान§ के पास ले जावें हालाँकि उनको हुक्म दिया जा चुका है कि उसकी बात न मानें और शैतान चाहता है कि उनको भटका कर बड़ी दूर ले जावे।(६०)

● रु. ७ आ १४ | ★ रु. ८ आ ५

---

* मतलब यह कि काफ़िरों के लिए अज़ाब कभी ख़त्म होने वाला नहीं। मौ० दरयाबादी साहब की तफ़सीर के बमूजिब दोज़ख़ में इस दुनिया जैसी खाल न समझना चाहिये। मंशा यह कि दोज़ख़ में खाल जल जाने पर भी यह महसूस होगा कि खाल मौजूद है और वह झुलस रही है। § मुनाफ़िक़ जानते थे कि मुहम्मद साहब स० न्याय के समय किसी का पक्ष नहीं ले सकते, इसलिये अपने झगड़ों को यहूदी विद्वानों के पास ले जाते थे जो घूस खाते थे।

व अिजा क़ील लहुम् तआलौ अिला मा अन्ज़लल्लाहु व अिलर्रसूलि रअैतल्-मुनाफ़िक़ीन यसुद्दून अन्क सुदूदन् ज (६१) फ़कैफ़ अिजा असाबत्हुम् मुसीबतुम् - बिमा क़द्दमत् अैदीहिम् सुम्म जाअूक यह्लिफ़ून क़ सला बिल्लाहि अिन् अरद्ना अिल्ला अिह्सानौंव तौफ़ीक़न् (६२) अुलाअिकल्लजीन यअ्लमुल्लाहु मा फ़ी क़ुलूबिहिम् क़ फ़अअ्रिज़् अन्हुम् व अिज़्हुम् व क़ुल्लहुम् फ़ी अन्फ़ुसिहिम् क़ौलम् - बलीग़न् (६३) व मा अर्सल्ना मिर्रसूलिन् अिल्ला लियुताअ बिअिज्निल्लाहि त् व लौ अन्नहुम् अिज़्ज़लमू अन्फ़ुसहुम् जाअूक फ़स्तग़्फ़रुल्लाह वस्तग़्फ़र लहुमुर्रसूलु लवजदुल्लाह तौवाबर्रह़ीमन् (६४) फ़ला व रब्बिक ला युअ्मिनून हत्ता युहक्किमूक फ़ी मा शजर बैनहुम् सुम्म ला यजिदू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् हरजम्मिम्मा क़ज़ैत व युसल्लिमू तस्लीमन् (६५) व लौ अन्ना कतब्ना अलैहिम् अनिक़्तुलू अन्फ़ुसकुम्

إِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ رَأَيْتَ الْمُنَافِقِينَ
يَصُدُّونَ عَنكَ صُدُودًا ۞ فَكَيْفَ إِذَا أَصَابَتْهُم مُّصِيبَةٌ بِمَا
قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ثُمَّ جَاءُوكَ يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا إِحْسَانًا
وَتَوْفِيقًا ۞ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ
عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُل لَّهُمْ فِي أَنفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا ۞ وَمَا
أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذ ظَّلَمُوا
أَنفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا
اللَّهَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ۞ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا
شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا
تَسْلِيمًا ۞ وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنِ اقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ أَوِ اخْرُجُوا
مِن دِيَارِكُم مَّا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِّنْهُمْ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا
يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيتًا ۞ وَإِذًا لَّآتَيْنَاهُم
مِّن لَّدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ۞ وَلَهَدَيْنَاهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ۞ وَمَن
يُطِعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِم مِّنَ
النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ ۚ وَحَسُنَ أُولَٰئِكَ
رَفِيقًا ۞ ذَٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ عَلِيمًا ۞ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا خُذُوا حِذْرَكُمْ فَانفِرُوا ثُبَاتٍ أَوِ انفِرُوا جَمِيعًا ۞ وَإِنَّ

अविख्रुजू मिन् दियारिकुम् मा फ़अलूहु अिल्ला क़लीलुम्मिन्हुम् त् व लौ अन्नहुम् फ़अलू मा यूअज़ून बिह्री लकान ख़ैरल्लहुम् व अशद्द तस्बीतन् ला (६६) ०व अिजल्ल आतैनाहुम् मिल्लदुन्ना अज्रन् अज़ीमन् ला (६७) ०व लहदैनाहुम् सिरातम्मुस्तक़ीमन् (६८) व मैंयुतिअिल्लाह वर्रसूल फ़अुलाअिक मअल्लजीन अन्अमल्लाहु अलैहिम् मिनन्नबीयीन वस्सिद्दीक़ीन वश्शुहदाअि वस्सालिहीन ज् व हसुन अुलाअिक रफ़ीक़न् त् (६९) जालिकल्-फ़ज़्लु मिनल्लाहि त् व कफ़ा बिल्लाहि अलीमन् (७०) ★ या अैयुहल्लजीन आमनू ख़ुज़ू हिज़्रकुम् फ़न्फ़िरू सुबातिन् अविन्फ़िरू जमीअन् (७१)

★ रु. ९ ९ आ ११

और जब उनसे कहा जाता है कि जो अल्लाह ने उतारा है उसकी तरफ़ और पैग़म्बर की तरफ़ (आओ) तो तुम (उन) मुनाफ़िक़ों को देखते हो कि वह तुम्हारी तरफ़ आने से कतराते हैं।(६१) तौ कैसी (शर्म की बात उनके लिए होगी) कि जब इन्हीं कर्मों के कारण इन पर कोई मुसीबत आपड़ेगी तब तुम्हारे पास अल्लाह की सौगन्ध खाते हुए दौड़े आयें गे कि हमारी ग़रज़ तो भलाई और मेल मिलाप† की थी।(६२) यह ऐसे हैं कि जो इनके दिल में है अल्लाह को मालूम है तो उनकी बातों का कुछ ख़्याल न करो। और इनको समझा दो और इनके दिल पर असर करने वाली बातें कहो।(६३) और जो पैग़म्बर हमने भेजा उसके भेजने से हमारा मतलब यही रहा है कि अल्लाह के हुक्म से उसकी आज्ञायें मानी जावें और जब इन लोगों ने अपने ऊपर आप ज़ुल्म किया था, अगर तुम्हारे पास आ जाते और अल्लाह से माफ़ी माँगते और पैग़म्बर (भी) उनकी माफ़ी की दुआ करते तो अल्लाह को बड़ा ही माफ़ी देनेवाला और बड़ा ही मेहरबान पाते*।(६४) सो तुम्हारे परवरदिगार की क़सम कि जब तक वह लोग अपने आपसी झगड़ों में तुमको मुन्सिफ़ न जानें और फिर तुम्हारे फ़ैसले से दिल तंग न हों बल्कि (ख़ुशी से उसको) मान न लें तब तक (वे) ईमानवाले न होंगे।(६५) और अगर हम इनको (मुनाफ़िक़ों को) हुक्म देते कि अपने आप को क़त्ल करो या घरबार छोड़ निकल जाओ तो इनमें से थोड़े (लोग) ही इसको करते और जो कुछ इनको नसीहत दी जाती है अगर उसका पालन करते तो उनके हक़ में ज़्यादः भला होता और उनके दीन को ज़्यादः मज़बूत करता।(६६) और इस सूरत में हम इनको अपनी तरफ़ से बड़ा बदला देते, (६७) और इनको सीधे मार्ग पर (भी) लगा देते।(६८) और जो लोग अल्लाह और रसूल का हुक्म मानें तो ऐसे ही लोग उनके साथ होंगे, जिन पर अल्लाह ने एहसान किये यानी नबी और सिद्दीक़ (सत्यनिष्ठ) और शहीद और (दूसरे) नेक बन्दे और यह लोग (कैसे) अच्छे साथी हैं।(६९) यह अल्लाह की मेहरबानी है और अल्लाह का ही ख़बर रखना काफ़ी है।(७०) ★

★ रु० ९/६ आ ११

ऐ ईमानवालो! (हर वक़्त) अपना बचाव रखो और फिर (जैसा मौक़ा हो, चाहे) अलग - अलग गिरोह बाँधकर निकलो या इकट्ठे होकर निकलो§।(७१)

† एक मुनाफ़िक़ (ज़ाहिर में मुसलमान दिल से काफ़िर) और यहूदी में झगड़ा हुआ। दोनो रसूल स० के पास आये। आँ हज़रत ने यहूदी के पक्ष में अपना निर्णय दिया। मुनाफ़िक़ हज़रत उमर के पास इस विचार से गया कि वह मुझको मुसलमान समझकर मेरी-जैसी कहेंगे। उमर इस समय मदीने में जज थे। जब यहूदी ने उनको बताया कि रसूल स० उसके पक्ष में फ़ैसला कर चुके हैं तो ह० उमर ने मुनाफ़िक़ को क़त्ल कर डाला। उसके वारिस मुहम्मद साहब के पास हज़रत उमर के ख़िलाफ़ मुक़दमा ले कर आये कि हम तो समझौते के लिए उमर के पास गये थे, आपके फ़ैसले की अपील के लिये नहीं। उसी सम्बन्ध में यह आयत उतरी। * लेकिन अब रसूल स० की आज्ञा को न मानने के बाद मुसीबत पड़ने पर झूठी क़समें खाकर बचना चाहते हैं तो यह कैसे मुमकिन है। § यहाँ से जिहाद की सरगर्मियों का ज़िक्र चलता है। जंग ऊहद की हार के बाद दुश्मनों का ज़ोर और ख़तरा ज़्यादः बढ़ गया था। उस पर यह हुक्म हुआ।

व अिन्न मिन्कुम् लमल्-लयुबत्तिअन्न ज् फ़अिन् अस़ाबत्कुम् मुस़ीबतुन् क़ाल क़द् अन्अमल्लाहु अलैय अिज् लम् अकुम्मअहुम् शहीदन् (७२) व लअिन् अस़ाबकुम् फ़ज़्लुम्मिनल्लाहि लयक़ूलन्न कअल्लम् तकुम्बैनकुम् व बैनहू मवद्दवुँय्यालैतनी कुन्तु मअहुम् फ़अफ़ूज़ फ़ौज़न् अज़ीमन् (७३) फ़ल्युक़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहिल्लज़ीन यश्रूनल् - हयातद्दुन्या बिल्आख़िरति त् व मैंयुक़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहि फ़युक़्तल् औ यग़्लिब् फ़सौफ़ नुअ्तीहि अज्रन् अज़ीमन् (७४) व मा लकुम् ला तुक़ातिलून फ़ी सबीलिल्लाहि वल्-मुस्तज़्अफ़ीन मिनर्रिजालि वन्निसाअि वल्-विल्दानिल्लज़ीन यक़ूलून रब्बना अख़्रिज्ना मिन् हाज़िहिल् - क़र्यतिज़्ज़ालिमि अह्लुहा ज् वज्अल्लना मिल्लदुन्क वलीयन् ज् ला व वज्अल्लना मिल्लदुन्क नस़ीरन् त् (७५) अल्लज़ीन आमनू युक़ातिलून फ़ी सबीलिल्लाहि ज् वल्लज़ीन कफ़रू युक़ातिलून फ़ी सबीलित्ताग़ूति फ़क़ातिलू औलियाअश्शैतानि ज् अिन्न कैदश्शैतानि कान ज़अीफ़न् (७६) ★ अलम् तर अिलल्लज़ीन क़ील लहुम् कुफ़्फ़ू अैदियकुम् व अक़ीमुस़्स़लात व आतुज़्ज़कात ज् फ़लम्मा कुतिब अलैहिमुल् - क़ितालु अिज़ा फ़रीक़ुम्मिन्हुम् यख़्शौनन्नास कख़श्यतिल्लाहि औ अशद्द ख़श्यतन् ज् व क़ालू रब्बना लिम कतब्त अलैनल्क़िताल ज् लौ ला अख़्ख़र्तना अिला अजलिन् क़रीबिन् त् क़ुल् मताअुद्दुन्या क़लीलुन् ज् वल् - आख़िरतु ख़ैरुल्लिमनित्तक़ा क़िफ़् व ला तुज़्लमून फ़तीलन् (७७)

النساء ٤ — والمحصنت ٥

مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ
اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا ۝ وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ
مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ
مَعَهُمْ فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝ فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ
يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ وَمَا لَكُمْ لَا
تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ
وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ
اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۚ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ
نَصِيْرًا ۝ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا اَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ
كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا
اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ
اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ
وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ
قَرِيْبٍ ۗ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۟ وَ
لَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ

منزل ١

★ रु. १० | ७ आ ६

और तुममें कोई-कोई ऐसा भी है जो कि देर लगाकर (लड़ाई से) बचता रहेगा, फिर अगर तुम पर मुसीबत आ पड़े तो कहेगा कि अल्लाह ने मुझ पर एहसान किया कि मैं उनके साथ मौजूद न था। (७२) और अगर अल्लाह से तुम्हें मेहरबानी मिली तो (हसद से) इस तरह कहने लगेगा गोया उसमें और तुममें किसी तरह की दोस्ती (या सरोकार ही) न था। (पछता कर कहेंगे कि) क्या अच्छा होता जो मैं भी इनके साथ होता तो बड़ी मुराद पाता§।(७३) सो जो लोग आख़िरत के बदले संसार का जीवन (यानी जान तक) बेचना चाहते हैं उनको चाहिए कि अल्लाह की राह में लड़ें और जो अल्लाह की राह में लड़ें और फिर मारे जायँ या ग़लबा (फ़तह) पाएँ तो हम उनको बड़ा सवाब देंगे।(७४) तुमको क्या हो गया है कि अल्लाह की राह में और उन बेबस मनुष्यों, स्त्रियों और बालकों के लिए दुश्मनों से नहीं लड़ते जो दुआएँ माँग रहे हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! इस बस्ती से हमको निकाल जहाँ के रहनेवाले ज़ालिम हैं, और अपनी तरफ़ से किसी को हमारा हिमायती (तरफ़दार) बना और अपनी तरफ़ से किसी को हमारा मददगार बना ꣸।(७५) जो ईमानवाले हैं वह तो अल्लाह की राह में लड़ते हैं और जो काफ़िर हैं वह शैतान की राह में (लड़ते हैं), सो तुम शैतान के तरफ़दारों से लड़ो, बेशक शैतान की (सारी) तदबीरें बोदी हैं।(७६) ★

★ रु. १०/७ आ ६

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा कि जिनको (पहले) हुक्म दिया गया कि अपने हाथों को (लड़ाई से) रोके रहो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात देते रहो। फिर जब इन पर जिहाद फ़र्ज़ हुआ तो एक जमात उनमें से लोगों से (ऐसा) डरने लगी जैसे कोई अल्लाह से डरता है, बल्कि उससे भी बढ़कर, और शिकायत करने लगी के ऐ हमारे परवरदिगार! तूने हम पर जिहाद (धर्मयुद्ध) क्यों फ़र्ज़ कर दिया, हमको थोड़े दिनों की (ज़िन्दगी की) मुहलत और क्यों न दी। तो (ऐ पैग़म्बर!) कहो कि दुनिया के लाभ थोड़े हैं और जो शख़्स (अल्लाह का) डर रखे उसके लिए आख़िरत बेहतर है और तुम पर धागे बराबर भी ज़ुल्म न किया जायेगा।(७७)

---

§ यह तस्वीर मुनाफ़िक़ की है। वह अल्लाह के हुक्म पर नहीं दौड़ता बल्कि नफ़े पर नज़र रखता है। अगर राहे अल्लाह में लोगों को तकलीफ़ हुई तो अलग रहने पर ख़ुश होता है और अगर राहे अल्लाह में चलने पर लोगों को फ़ायदा पहुँचा तो पछताता है और दुश्मनों जैसी हसद करता है। ꣸ यहाँ जिहाद से दो मक़सद हैं। एक तो अल्लाह के दीन को ऊँचा करना दूसरे ज़ालिमों के ज़ुल्मों से उन फँसे हुओं को बचाना जो मुसलमान हो जाने के बाद भी न तो मदीना हिजरत ही कर सके थे और न इतनी सामर्थ्य रखते थे कि मक्का में रह कर अपनी जान-माल की हिफ़ाज़त कर सकें।

अैन मा तकूनू युद्रिक्कुमुल्मौतु व लौ कुन्तुम् फ़ी बुरूजिम् - मुशैयदतिन् त् व अिन् तुसिब्हुम् हुसनतुँय्यक़ूलू हाजिही मिन् अिन्दिल्लाहि म व अिन् तुसिब्हुम् सैयिअतुँय्यक़ूलू हाजिही मिन् अिन्दिक त् क़ुल् कुल्लुम्-मिन् अिन्दिल्लाहि त् फ़मालि हा'अुला'अिल्क़ौमि ला यकादून यफ़्क़हून हदीसन् (७८) मा' असाबक मिन् हसनतिन् फ़मिनल्लाहि ज् व मा' असाबक मिन् सैयिअतिन् फ़मिन्नफ़्सिक त् व अर्सल्नाक लिन्नासि रसूलन् त् व कफ़ा बिल्लाहि शहीदन् (७९) मैंयुतिअिर्रसूल फ़क़द् अताअल्लाह ज् व मन् तवल्ला फ़मा' अर्सल्नाक अलैहिम् हफ़ीजन् त् (८०) व यक़ूलून ताअतुन् ज् फ़अिजा बरज़ू मिन् अिन्दिक बैयत ता'अिफ़तुम्मिन्हुम् ग़ैरल्लजी तक़ूलु त् वल्लाहु यक्तुबु मा युबैयितून ज् फ़अ‍ऽरिज़् अन्हुम् व तवक्कल् अलल्लाहि त् व कफ़ा बिल्लाहि वकीलन् (८१) अफ़ला यतदब्बरूनल्-क़ुर्आन त् व लौ कान मिन् अिन्दि ग़ैरिल्लाहि लवजदू फ़ीहिख़्तिलाफ़न् कसीरन् (८२) व अिजा जा'अहुम् अम्रुम्मिनल् - अम्नि अविल्ख़ौफ़ि अजाअू बिही त् व लौ रद्दूहु अिलर्रसूलि व अिला' अुलिल् - अम्रि मिन्हुम् लअलिमहुल्लजीन यस्तम्बितूनहू मिन्हुम् त् व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अलैकुम् व रह्मतुहू लत्तबअ‍्तुमुश्शैतान अिल्ला क़लीलन् (८३) फ़क़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहि ज् ला तुकल्लफ़ु अिल्ला नफ़्सक व हर्रिज़िल्मुअ्मिनीन ज् असल्लाहु अैंयकुफ़्फ़ बअ्सल्लजीन कफ़रू त् वल्लाहु अशद्दु बअ्सौंव अशद्दु तन्कीलन् (८४) मैंयश्फ़ऽ शफ़ा-अतन् हसनतैंयकुल्लहू नसीबुम्मिन्हा ज् व मैंयश्फ़ऽ शफ़ाअतन् सैयिअतैंयकुल्लहू किफ़्लुम्मिन्हा त् व कानल्लाहु अला कुल्लि शैअिम्मुक़ीतन् (८५)

والمحصنت ٥ ٨٢ النساء ٤

في بروج مشيدة وان تصبهم حسنة يقولوا هذه من عند الله وان تصبهم سيئة يقولوا هذه من عندك قل كل من عند الله فمال هؤلاء القوم لا يكادون يفقهون حديثا ۝ ما اصابك من حسنة فمن الله وما اصابك من سيئة فمن نفسك وارسلنك للناس رسولا وكفى بالله شهيدا ۝ من يطع الرسول فقد اطاع الله ومن تولى فما ارسلنك عليهم حفيظا ۝ ويقولون طاعة فاذا برزوا من عندك بيت طائفة منهم غير الذي تقول والله يكتب ما يبيتون فاعرض عنهم وتوكل على الله وكفى بالله وكيلا ۝ افلا يتدبرون القران ولو كان من عند غير الله لوجدوا فيه اختلافا كثيرا ۝ واذا جاءهم امر من الامن او الخوف اذاعوا به ولو ردوه الى الرسول والى اولي الامر منهم لعلمه الذين يستنبطونه منهم ولولا فضل الله عليكم ورحمته لاتبعتم الشيطن الا قليلا ۝ فقاتل في سبيل الله لا تكلف الا نفسك وحرض المؤمنين عسى الله ان يكف باس الذين كفروا والله اشد باسا واشد تنكيلا ۝ من يشفع شفاعة حسنة يكن له نصيب منها ومن يشفع شفاعة سيئة يكن له كفل منها وكان الله على كل

منزل ١

तुम कहीं भी हो मौत तुमको आ पकड़े गी अगर्चे तुम पक्के गुम्मदों में (ही क्यों न) हो। और (ऐ पैग़म्बर !) इनको कुछ फ़ायदा पहुँच जाता है तो कहने लगते हैं कि यह अल्लाह की तरफ़ से है और अगर इनको कुछ नुक़सान पहुँच जाता है तो (ऐ मुहम्मद ! तुमसे) कहने लगते हैं कि यह तुम्हारी तरफ़ से है। सो (ऐ पैग़म्बर! तुम) इनसे कह दो कि सब कुछ अल्लाह की तरफ़ से है, तो इन लोगों का क्या हाल है कि कोई बात समझते नहीं मालूम होते।(७८) तुमको कोई भलाई पहुँचे तो अल्लाह की तरफ़ से है और तुमको कोई बुराई पहुँचे तो तेरी रूह (या करतूतों) की तरफ़ से है, और (ऐ पैग़म्बर!) हमने तुम को लोगों की तरफ़ पैग़ाम पहुँचानेवाला बनाकर भेजा है और (इस पर) अल्लाह की गवाही काफ़ी है।(७९) जिसने पैग़म्बर का हुक्म माना उसने अल्लाह (ही) का हुक्म माना और जो (हुक्म से) फिर बैठा तो हमने तुमको कुछ इन लोगों का निगहबान (बनाकर) नहीं भेजा।(८०) और यह (लोग) (मुँह से तो) कह देते हैं कि हम (बात) मानते हैं लेकिन जब तुम्हारे पास से (हटकर) बाहर जाते हैं तो इनमें से कुछ लोग रातों को (तुम्हारे) कहे के ख़िलाफ़ सलाहें करते हैं और जैसी-जैसी सलाहें रातों को करते हैं अल्लाह लिखता जाता है तो इनकी ओर ध्यान न दो और अल्लाह पर भरोसा रखो और अल्लाह काम सम्भालनेवाला काफ़ी है।(८१) भला यह लोग क़ुर्आन पर ग़ौर क्यों नहीं करते, कि अगर अल्लाह के सिवाय (किसी और) के पास से (वह आया) होता तो ज़रूर उसमें बहुत से भेद-विभेद पाते।(८२) और जब इनके पास अमन (शान्ति) या डर की कोई ख़बर आती है तो उसको (सब पर) मशहूर कर देते हैं और अगर उस ख़बर को पैग़म्बर तक और अपने अख़्तियार वालों तक पहुँचाते तो जो लोग इनमें से उसका राज़ (भेद) निकाल लेने वाले हैं उस (की सच्चाई) को मालूम कर लेते (और ख़बरों की ग़लतफ़हमी का अन्देशा न रहता) और अगर तुम पर अल्लाह की मेहरबानी और उसकी रहमत न होती तो कुछ लोगों के सिवाय (सब) शैतान के पीछे चल दिये होते†।(८३) तो (ऐ पैग़म्बर!) तुम अल्लाह की राह में लड़ो, अपने सिवा तुम पर किसी और की ज़िम्मेदारी नहीं। (हाँ) ईमान-वालों को (लड़ाई के लिए) उभारो, ताज्जुब नहीं कि अल्लाह काफ़िरों के ज़ोर को तोड़ दे और अल्लाह का ज़ोर ज़्यादा ताक़तवर और उसकी सज़ा ज़्यादा सख़्त है।(८४) और जो कोई नेक बात में सिफ़ारिश करे उसमें से ही उसको हिस्सा मिलेगा और जो बुरी बात में सिफ़ारिश करे उसमें ही से एक बोझ उस पर होगा। और अल्लाह हर चीज़ पर शक्ति रखनेवाला है।(८५)

---

† शुरू में हर उम्मत (गरोह) में अक्सर ऐसे लोग भी ज़रूर होते हैं जो किसी भी अच्छी-बुरी अफ़वाह को सुनते ही बजाय उस पर ग़ौर करने या उसको अपने अफ़सरों तक पहुँचाने के, अवाम में उन ख़बरों को ले दौड़ते हैं। इसका बुरा असर पड़ता है। ऐसा करने से बाज़ आने की हिदायत मुसलमानों को दी गई है कि वह ख़बरों को फैलाने के बजाय रसूल स० या और हाकिमों तक पहुँचा दें। वह सही बात समझ लेंगे।

व अिजा हुय्यीतुम् बितह़ीयतिन् फ़ह़ैयू बिअह़सन मिन्हाʼ औरुद्दूहा त् अिन्नल्लाह कान अ़ला कुल्लि शैअिन् ह़सीबन् (८६) ● अल्लाहु लाʼ अिलाह अिल्ला हुव त् लयजमअ़न्नकुम् अिला यौमिल्क़ियामति ला रैब फ़ीहि त् व मन् अस्दक़ु मिनल्लाहि ह़दीसन् (८७) ★ फ़मालकुम् फ़िल्मुनाफ़िक़ीन फ़िअतैनि वल्लाहु अर्कसहुम् बिमा कसबू त् अतुरीदून अन् तह्दू मन् अज़ललल्लाहु त् व मैंयुज़्लिलिल्लाहु फ़लन् तजिद लहु सबीलन् (८८) वद्दू लौ तक्फ़ुरून कमा कफ़रू फ़तकूनून सवाʼअन् फ़ला तत्तख़िज़ू मिन्हुम् औलियाʼअ ह़त्ता युहाजिरू फ़ी सबीलिल्लाहि त् फ़अिन् तवल्लौ फ़ख़ुज़ूहुम् वक़्तुलूहुम् ह़ैसु व जत्तुमूहुम् स् व ला तत्तख़िज़ू मिन्हुम् वलीयौंव ला नसीरन् ला (८९) अिल्लल्लजीन यसिलून अिला क़ौमिम्बैनकुम् व बैनहुम् मीसाक़ुन् औ जाʼअूकुम् ह़सिरत् सुदूरुहुम् अैंयुक़ातिलू कुम् औ युक़ातिलू क़ौमहुम् त् व लौ शाʼअल्लाहु लसल्लतहुम् अ़लैकुम् फ़लक़ातलूकुम् ज् फ़अिनिअ़्तज़लूकुम् फ़लम् युक़ातिलूकुम् व अल्क़ौ अिलैकुमुस्सलम ला फ़मा जअ़लल्लाहु लकुम् अ़लैहिम् सबीलन् (९०) सतजिदून आख़रीन युरीदून अैंयअ्मनूकुम् व यअ्मनू क़ौमहुम् त् कुल्लमा रुद्दूʼ अिलल्फ़ित्नति अुर्किसू फ़ीहा ज् फ़अिल्लम् यअ़्तज़िलूकुम् व युल्क़ूʼ अिलैकुमुस्सलम व यकुफ़्फ़ूʼ अैदियहुम् फ़ख़ुज़ूहुम् वक़्तुलूहुम् ह़ैसु सक़िफ़्तुमूहुम् त् व अुलाʼअिकुम् जअ़ल्ना लकुम् अ़लैहिम् सुल्तानम्मुबीनन् (९१) ★

والمحصنٰت ٥ — ٧٢ — النسآء ٤

شَیْءٍ مُّقِیْتًا ۝ وَاِذَا حُیِّیْتُمْ بِتَحِیَّةٍ فَحَیُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَاۤ اَوْ رُدُّوْهَا
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ حَسِیْبًا ۝ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ لَیَجْمَعَنَّكُمْ
اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَةِ لَا رَیْبَ فِیْهِ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِیْثًا ۝
فَمَا لَكُمْ فِی الْمُنٰفِقِیْنَ فِئَتَیْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا اَتُرِیْدُوْنَ
اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ وَمَنْ یُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِیْلًا ۝
وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ
اَوْلِیَآءَ حَتّٰی یُهَاجِرُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَ
اقْتُلُوْهُمْ حَیْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِیًّا وَّلَا
نَصِیْرًا ۝ اِلَّا الَّذِیْنَ یَصِلُوْنَ اِلٰی قَوْمٍ بَیْنَكُمْ وَبَیْنَهُمْ مِّیْثَاقٌ
اَوْ جَآءُوْكُمْ حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ یُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ یُقَاتِلُوْا قَوْمَهُمْ
وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَیْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ فَاِنِ اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ
یُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا اِلَیْكُمُ السَّلَمَ فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَیْهِمْ سَبِیْلًا ۝
سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِیْنَ یُرِیْدُوْنَ اَنْ یَّاْمَنُوْكُمْ وَیَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ كُلَّمَا
رُدُّوْۤا اِلَی الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا فِیْهَا فَاِنْ لَّمْ یَعْتَزِلُوْكُمْ وَیُلْقُوْۤا اِلَیْكُمُ السَّلَمَ وَ
یَكُفُّوْۤا اَیْدِیَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَیْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا
لَكُمْ عَلَیْهِمْ سُلْطٰنًا مُّبِیْنًا ۝ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ یَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا
خَطَـًٔا وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا فَتَحْرِیْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِیَةٌ مُّسَلَّمَةٌ

منزل

नि १/२ ★ रु. ११/८ आ ११ ★ रु. १२/६ आ ४

और तुमको जब कोई दुआ (सलाम) करे तो तुम उससे बढ़कर दुआ करो या वैसा ही जवाब दो, अल्लाह हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है।(८६) ● अल्लाह के सिवाय कोई बन्दगी के क़ाबिल नहीं, और क़ियामत के दिन जिसके आने में कोई शक नहीं, वह तुमको (ज़रूर) जमा करेगा और अल्लाह से बढ़कर किसकी बात सच्ची है।(८७) ★

सो तुमको क्या पड़ी है कि मुनाफ़िक़ों के वास्ते तुम दो पक्ष (फ़रीक़) हो रहे हो† हालाँकि अल्लाह ने उनकी करतूतों के सबब उनको उलट दिया है, क्या तुम (यह) चाहते हो कि जिसको अल्लाह ने गुमराह कर दिया उसको (सीधे) रास्ते में ले आओ और जिसको अल्लाह भटकावे सम्भव नहीं कि तुम उसके लिए रास्ता निकाल सको।(८८) इन (मुनाफ़िक़ों) की तबियत यह है कि जिस तरह खुद काफ़िर हो गये हैं (उसी तरह) तुम (याने सच्चे मुसलमान भी काफ़िर) हो जाओ ताकि सब बराबर हो जाओ। तो जब तक अल्लाह की राह में देश-त्याग (हिजरत) न कर जायँ, इनमें से (किसी को) मित्र न बनाना। फिर अगर (हिजरत से) मुँह मोड़ें तो उनको पकड़ो और जहाँ पाओ उनको क़त्ल करो, उनमें से (किसी को अपना) मित्र और सहायक न बनाना।(८९) मगर जो लोग ऐसी क़ौम से जा मिले हैं कि जिनमें और तुममें (सुलह की) प्रतिज्ञा है (या) तुम्हारे लड़ने से या अपनी क़ौम के लड़ने से (जो) तंगदिल होकर तुम्हारे पास आवें (तो उनसे मेलमिलाप करने में हर्ज नहीं) और अगर अल्लाह चाहता तो इनको तुम पर ग़ालिब (प्रबल) करता तो यह तुमसे (ज़रूर) लड़ते। पस यदि तुमसे किनारा खींच जावें और (तुमसे) न लड़ें और तुम्हारी तरफ़ सुलह (का पैग़ाम) दें तो ऐसे लोगों पर तुम्हारे लिए अल्लाह ने कोई राह नहीं दी (कि उन्हें लूटो या मारो)। (९०) कुछ और लोग तुम ऐसे भी पाओगे जो तुमसे शान्ति में रहना चाहते हैं और अपनी क़ौम से भी शान्ति में रहना चाहते हैं। (याने अपने को हर तरफ़ से बचाये रखना चाहते हैं) लेकिन (हाल उनका यह है कि) जब कोई उनको शरारत की तरफ़ ले जावे तो उस समय उसमें औंधे मुँह गिर जाते हैं (याने लड़ाई में शरीक हो जाते हैं) तो (ऐसे लोग) अगर तुमसे किनारा खींचे न रहें और न सुलह करें और न (तुम्हारे ख़िलाफ़ जंग से) अपने हाथ रोकें तो उनको पकड़ो और जहाँ पाओ उनको क़त्ल करो और यही लोग हैं जिन पर हमने तुमको (सनदे सरीह याने) खुला अधिकार दे रखा है।(९१) ★

नि. १/२ ★ रु. ११/८ आ ११ ★ रु. १२/६ आ ४

---

† आँ हज़रत स० के मदीना हिजरत कर आने के बाद जब क़ुरैशों की ज़्यादती मुसलमानों पर हद दरजे बढ़ी तब यह हुक्म हुआ कि मुसलमान उन बस्तियों को छोड़ कर मदीना या दूसरे इस्लामी मरकज़ों को हिजरत (देश त्याग) कर जायँ ताकि आज़ादी से अपने दीन पर चल सकें और अपने फ़र्ज़ पूरे कर सकें। लेकिन इस हुक्म के बाद भी घर-गृहस्थी, रोज़ी या किसी दुनिया की ग़रज़ से कुछ मुसलमान बजाय मदीना हिजरत कर जाने के अपने कबीलों के साथ ही अपनी पुरानी बस्तियों में काफ़िरों के साथ ही रहते-बसते रहे। मजबूरन उनको मुसलमानों के ख़िलाफ़ कार्रवाइयों में कभी मन और कभी बेमन शरीक होना पड़ता था। ऐसे लोगों की निस्बत मुसलमानों में दो रायें थीं। एक कहते थे कि जैसे भी हों, आख़िर हैं तो मुसलमान ही; क़ुर्आन पढ़ते हैं, कलिमा, नमाज़, रोज़ः के पाबन्द हैं, इनके साथ लिहाज़ बरता जाय। दूसरे लोग उनको हुक्म न माननेवाले व दुश्मन की मदद और मुसलमानों के नुक़सान का बाएस मानते थे, इसलिए इनके साथ मुनाफ़िक़ों वाला बर्ताव करना चाहते थे। यह आयतें ऐसों ही की निस्बत उतरी हैं।

व मा कान लिमुअ्मिनिन् अँयक़्तुल मुअ्मिनन् इल्ला ख़तअन् ज व मन् क़तल मुअ्मिनन् ख़तअन् फ़तह्रीरु रक़बतिम् - मुअ्मिनतिंव्व दियतुम् - मुसल्लमतुन् इला अह्लिही इल्ला अँयस्सद्दक़ू त फ़इन् कान मिन् क़ौमिन् अदूविल्लकुम् व हुव मुअ्मिनुन् फ़तह्रीरु रक़बतिम् - मुअ्मिनतिन् त व इन् कान मिन् क़ौमिम्बैनकुम् व बैनहुम् मीसाक़ुन् फ़दियतुम्-मुसल्लमतुन् इला अह्लिही व तह्रीरु रक़बतिम् - मुअ्मिनतिन् ज फ़मल्लम् यजिद् फ़सियामु शह्रैनि मुततताबिअ़ैनि ज तौबतम्मिनल्लाहि त व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमन् (९२) व मैंयक़्तुल् मुअ्मिनम्-मुतअ़म्मिदन् फ़जज़ाउहू जहन्नमु ख़ालिदन् फ़ीहा व ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहि व लअ़नहू व अअ़द्दलहू अ़ज़ाबन् अ़ज़ीमन् (९३) या अैयुहल्लज़ीन आमनू इज़ा ज़रब्तुम् फ़ी सबीलिल्लाहि फ़तबैयनू व ला तक़ूलू लिमन् अल्क़ा इलैकुमुस्सलाम लस्त मुअ्मिनन् ज तब्तग़ून अ़रज़ल्हयातिद्दुन्या ज फ़इन्दल्लाहि मग़ानिमु

المحصنت ٥   ٢٠   النساء ٤

إِلَىٰ أَهْلِهِ إِلَّا أَنْ يَصَّدَّقُوا ۚ فَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَكُمْ وَهُوَ
مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ ۖ وَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ
مِيثَاقٌ فَدِيَةٌ مُسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ ۖ فَمَنْ لَمْ
يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِنَ اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا
حَكِيمًا ۝ وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا
وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْقَىٰ
إِلَيْكُمُ السَّلَامَ لَسْتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ
مَغَانِمُ كَثِيرَةٌ ۚ كَذَٰلِكَ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا ۚ
إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝ لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ
غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۚ
فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقَاعِدِينَ دَرَجَةً ۚ
وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَاعِدِينَ
أَجْرًا عَظِيمًا ۝ دَرَجَاتٍ مِنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا
رَحِيمًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ قَالُوا فِيمَ
كُنْتُمْ ۖ قَالُوا كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ أَرْضُ
اللَّهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوا فِيهَا ۚ فَأُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَسَاءَتْ

منزل

कसीरतुन् त कज़ालिक कुन्तुम्मिन् क़ब्लु फ़मन्नल्लाहु अ़लैकुम् फ़तबैयनू त इन्नल्लाह कान बिमा तअ्मलून ख़बीरन् (९४) ला यस्तविल्क़ाअ़िदून मिनल्मुअ्मिनीन ग़ैरु उलिज़्ज़ररि वल्मुजाहिदून फ़ी सबीलिल्लाहि बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् त फ़ज़्ज़लल्लाहुल् - मुजाहिदीन बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् अ़लल्क़ाअ़िदीन दरजतन् त व कुल्लौंव अ़दल्लाहुल् - हुस्ना त व फ़ज़्ज़लल्लाहुल् - मुजाहिदीन अ़लल्क़ाअ़िदीन अज्रन् अ़ज़ीमन् ला (९५) दरजातिम्मिन्हु व मग़्फ़िरतौंव रह्मतन् त व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्रहीमन् (९६) ★ इन्नल्लज़ीन तवफ़्फ़ाहुमुल्-मलाइकतु ज़ालिमी अन्फ़ुसिहिम् क़ालू फ़ीम कुन्तुम् त क़ालू कुन्ना मुस्तज़्-अ़फ़ीन फ़िल्अर्ज़ि त क़ालू अलम् तकुन् अर्ज़ुल्लाहि वासिअ़तन् फ़तुहाजिरू फ़ीहा त फ़उलाइक मअ्वाहुम् जहन्नमु त व साअत् मसीरन् ला (९७)

★ रु. १३ १० आ ५

किसी ईमानवाले को ज़ेबा नहीं कि ईमानवाले को मार डाले सिवा ग़लती के, और जो ईमानवाले को ग़लती से मार डाले तो एक ईमानवाला ग़ुलाम आज़ाद कर दे और क़त्ल हुए के वारिसों को ख़ून की क़ीमत‡ दे मगर यह कि उसके वारिस माफ़ कर दें। फिर अगर क़त्ल किया हुआ उन आदमियों में का हो जो तुम मुसलमानों के दुश्मन हैं, और वह (क़त्ल हुआ शख़्स) ख़ुद मुसलमान हो तो एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद करना होगा (ख़ून की क़ीमत न देनी होगी)। और अगर (वह क़त्ल हुआ शख़्स) उन लोगों में का हो जिनमें और तुममें (सुलह का) अहद है तो क़त्ल हुए के वारिसों को ख़ून की क़ीमत पहुँचावे और एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद करे और जिस (हत्यारे) को यह ताक़त न हो तो लगातार दो महीने के रोज़े रखे कि तौबा का यह तरीक़ा अल्लाह का ठहराया हुआ है और अल्लाह बड़ा जानकार और बड़ा हिकमतवाला है। (९२) और जो मुसलमान को जान-बूझकर मार डाले तो उसकी सज़ा दोज़ख़ है जिसमें वह हमेशा रहेगा और उस पर अल्लाह का ग़ज़ब (प्रकोप) होगा और उस पर अल्लाह की लानत और अल्लाह ने उसके लिए बड़ा अज़ाब तैयार कर रखा है। (९३) ऐ ईमानवालो ! जब तुम अल्लाह की राह (जेहाद) में बाहर निकलो तो अच्छी तरह दोस्त दुश्मन की जाँच कर लिया करो और जो शख़्स तुमसे सलाम करे उससे यह न कहो कि तू मुसलमान नहीं§ और यह कहने में तुम्हारी (असल) ग़रज़ यह हो कि दुनिया की ज़िन्दगी का नफ़ा हासिल करो (याने उसको दुश्मन ठहराकर उसका मालमता हथियाओ) तो (जान लो कि) अल्लाह के यहाँ बहुत-सी ग़नीमतें (तुम्हारे लिए मौजूद) हैं। पहले (याने ख़ुद मुसलमान होने से पहले) तुम भी तो ऐसे ही थे (यानी माल बचाने के लिये तुमने भी कलमा पढ़ लिया था) फिर अल्लाह ने तुम पर अपनी मेहरबानी की तो आइन्दा अच्छी तरह जाँच कर लिया करो। अल्लाह तुम्हारे कामों से (पूरा) जानकार है। (९४) जिन मुसलमानों को कोई उज्र (मजबूरी) नहीं और वह (जिहाद से जी चुराकर घरों में) बैठ रहे, यह लोग उन लोगों के बराबर नहीं जो अपने माल और जान से अल्लाह की राह में जिहाद कर रहे हैं। अल्लाह ने माल और जान से जिहाद करनेवालों को बैठ रहने वालों पर बड़ी बड़ाई दी और (वैसे तो) अल्लाह ने सबको ख़ूबी का वादा दिया है लेकिन अल्लाह ने अजरे अज़ीम (बड़े सवाब) की वजह से जिहाद करने वालों को बैठ रहनेवालों पर कहीं अधिक प्रधानता दी है† । (९५) (इस तरह) अल्लाह के यहाँ दर्जे हैं और उसकी क्षमा और कृपा है और अल्लाह ही बख़्शनेवाला मेहरबान है। (९६) ★

★ रु. १३ / १० आ ५

जो लोग अपने ऊपर आप ज़ुल्म कर रहे हैं (गुनाह में मुबतिला हैं) फ़रिश्ते उनकी जान क़ब्ज़ करते (निकालते) समय उनसे पूछते हैं कि तुम क्या करते रहे, तो वह जवाब देते हैं कि हम तो वहाँ (मुशरिकों की बस्ती में) बेबस थे, (इस पर फ़रिश्ते उनसे) कहते हैं कि क्या अल्लाह की ज़मीन गुंजायश नहीं रखती थी कि तुम वहाँ हिजरत (देश त्याग) करके चले जाते☸। ग़रज़ यह वह लोग हैं जिनका ठिकाना दोज़ख़ है और वह लौटकर जाने के लिये बुरी जगह है। (९७)

---

‡ देखो फुटनोट ‡§ सफ़ा ६३ 'हुक्म ख़ूनबहा'। § 'सलाम अलैक' मुसलमानों का एक क़ौमी सलाम था। जब कभी मुसलमान किसी मुल्क में जंग करते और उस मुल्क में कोई मुसलमान ❋ [पेज १७१ पर]
† मुसलमानों में जो राहे अल्लाह में जान की बाज़ी लगा देते हैं। वह दूसरे कामों में लगे हुए मुसलमानों से अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) हैं। उनका दर्जा और उन पर अल्लाह का फ़ज़ल बहुत बड़ा है। ☸ वे लोग जो मुसलमान तो हो गये थे लेकिन मदीना में मुसलमानों के मरकज़ क़ायम हो जाने और वहाँ हिजरत कर जाने का हुक्म हो जाने के बाद भी बिला किसी लाचारी अपनी सुहूलियत को देख कर काफ़िरों के बीच ही में बने रहे और उन्होंने हिजरत न की और इस तरह कुफ़्र और इस्लाम की मिलीजुली ज़िन्दगी बसर करते हुये अपने ‡ [पेज १७१ पर]

अिल्लल् - मुस्तज़्अफ़ीन मिनर्रिजालि वन्निसा'अि वल्विल्दानि ला यस्ततीअून
हीलतौंव ला यह्तदून सबीलन् ला (९८) फ़अुला'अिक अ़सल्लाहु अैंयअ़्फ़ुव
अ़न्हुम् त् व कानल्लाहु अ़फ़ूवन् ग़फ़ूरन् (९९) व मैंयुहाजिर् फ़ी
सबीलिल्लाहि यजिद् फ़िल्अर्ज़ि मुराग़मन् कसीरौंव सअ़तन् त् व मैंयख़्रुज्
मिम्बैतिही मुहाजिरन् अिलल्लाहि व
रसूलिही सुम्म युद्रिक्हुल्मौतु फ़क़द् वक़अ़
अज्रुहू अ़लल्लाहि त् व कानल्लाहु
ग़फ़ूरर्रहीमन् (१००) ★ व अिज़ा
ज़रब्तुम् फ़िल्अर्ज़ि फ़लैस अ़लैकुम् जुनाहुन्
अन् तक़्सुरू मिनस्सलाति क़् सला अिन्
ख़िफ़्तुम् अैंयफ़्तिन - कुमुल्लज़ीन कफ़रू त्
अिन्नल्काफ़िरीन कानू लकुम् अ़दूवम्मुबीनन्
(१०१) व अिज़ा कुन्त फ़ीहिम्
फ़अक़म्त लहुमुस्सलात फ़ल्तक़ुम् ता'अिफ़तुम्-
मिन्हुम् मअ़क वल्यअ्ख़ुज़ू' अस्लिहतहुम् क़िफ़
फ़अिज़ा सजदू फ़ल्यकूनू मिव्वरा'अिकुम् स्
वल्तअ्ति ता'अिफ़तुन् उख़्रा लम् युसल्लू फ़ल्युसल्लू मअ़क वल्-
यअ्ख़ुज़ू हिज़्रहुम् व अस्लिहतहुम् ज् वद्दल्लज़ीन कफ़रू लौ तग़्फ़ुलून
अ़न् अस्लिहतिकुम् व अम्तिअ़तिकुम् फ़यमीलून अ़लैकुम् मैलतौंवाहिदतन् त्
व ला जुनाह अ़लैकुम् अिन् कान बिकुम् अज़म् - मिम् - मतरिन् औ
कुन्तुम् मर्ज़ा' अन् तज़अ़ू' अस्लिहतकुम् ज् व ख़ुज़ू हिज़्रकुम् त्
अिन्नल्लाह अअ़द्द लिल्काफ़िरीन अ़ज़ाबम्मुहीनन् (१०२) फ़अिज़ा क़ज़ैतुमुस्सलात
फ़ज़्कुरुल्लाह क़ियामौंव क़ुअ़ूदौंव अ़ला जुनूबिकुम् ज् फ़अिज़त्मअ्नन्तुम्
फ़अक़ीमुस्सलात ज् अिन्नस्सलात कानत् अ़लल्मुअ्मिनीन किताबम्मौक़ूतन् (१०३)

रु. १४ / ११ आ ४

والمحصنت ٥ النساء ٤

مَصِيرًا ﴿٩٧﴾ إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ لَا
يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ﴿٩٨﴾ فَأُولَٰئِكَ عَسَى اللَّهُ
أَنْ يَعْفُوَ عَنْهُمْ وَكَانَ اللَّهُ عَفُوًّا غَفُورًا ﴿٩٩﴾ وَمَنْ يُهَاجِرْ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرَاغَمًا كَثِيرًا وَسَعَةً وَمَنْ يَخْرُجْ
مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ
وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿١٠٠﴾ وَإِذَا ضَرَبْتُمْ
فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَوٰةِ إِنْ
خِفْتُمْ أَنْ يَفْتِنَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ الْكَافِرِينَ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا
مُبِينًا ﴿١٠١﴾ وَإِذَا كُنْتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَوٰةَ فَلْتَقُمْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ
مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا أَسْلِحَتَهُمْ فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا مِنْ وَرَائِكُمْ
وَلْتَأْتِ طَائِفَةٌ أُخْرَىٰ لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا
حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ وَدَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ تَغْفُلُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ
وَأَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيلُونَ عَلَيْكُمْ مَيْلَةً وَاحِدَةً وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ
إِنْ كَانَ بِكُمْ أَذًى مِنْ مَطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَنْ تَضَعُوا أَسْلِحَتَكُمْ
وَخُذُوا حِذْرَكُمْ إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا ﴿١٠٢﴾ فَإِذَا
قَضَيْتُمُ الصَّلَوٰةَ فَاذْكُرُوا اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ فَإِذَا
اطْمَأْنَنْتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَوٰةَ إِنَّ الصَّلَوٰةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا

منزل ١

मगर (हाँ) जो मर्द और औरतें और बच्चे (इस क़दर) बेबस हैं कि उनसे कोई चारा नहीं बन पड़ता और न उनको कोई रास्ता सूझ पड़ता है, (९८) तो उम्मीद है कि अल्लाह ऐसे लोगों को माफ़ी दे और अल्लाह माफ़ करनेवाला बख़्शनेवाला है। (९९) और जो शख़्स अल्लाह की राह में (अपना) देश त्याग करेगा तो ज़मीन में उसको (वतन के मुक़ाबले में गुज़र करने को कहीं) ज़्यादा जगह और (बसर औक़ात के लिए) बड़ी गुन्जाइश मिलेगी और जो शख़्स अपने घर से अल्लाह और उसके पैग़म्बर की तरफ़ हिजरत के लिए निकले, फिर (रास्ते में ही) उसकी मौत आ जाये, तो अल्लाह के ज़िम्मे उसका सवाब सिद्ध हो चुका और अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है। (१००) ★

★ रु. १४/११ आ ४

और जब तुम सफ़र को जाओ और तुमको डर हो कि काफ़िर तुम को सतावें गे तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि नमाज़ में से (कुछ) घटा दिया करो बेशक काफ़िर तो तुम्हारे खुले दुश्मन हैं। (१०१) और (ऐ पैग़म्बर!) जब तुम मुसलमानों (के लश्कर) में हो और उनको नमाज़ पढ़ाओ तो मुसलमानों की एक जमात (चौकसी के लिए) तुम्हारे साथ खड़ी हो और अपने हथियार लिये रहें। फिर जब (वे) सिजदा कर चुकें तो पीछे हट जायँ और दूसरी जमात जो (अब तक) नमाज़ में शरीक नहीं हुई थी आकर तुम्हारे साथ नमाज़ में शरीक हो और बचाव रखें और अपने हथियार लिये रहें। काफ़िरों की तो यह इच्छा है कि अगर तुम अपने हथियारों और (जंग के) साज़ और सामान से बेख़बर हो जाओ तो एक बारगी तुम पर टूट पड़ें। अगर तुम लोगों को मेह की वजह से कुछ तकलीफ़ पहुँचे या तुम बीमार हो तो अपने हथियार उतार रखने में (भी) तुम पर कोई गुनाह नहीं, हाँ बेशक अपना बचाव रखो। अल्लाह ने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत की मार तैयार कर रखी है। (१०२) फिर जब तुम (यह वक़्ती ख़ौफ़ की) नमाज़ पूरी कर चुको तो खड़े, बैठे और लेटे अल्लाह की यादगारी में लगे रहो। फिर जब तुम (बेखटके) इत्मीनान में हो जाओ तो (पूरी) नमाज़ अदा करो (क्योंकि) मुसलमानों पर नियत समय में (मुक़र्रर) नमाज़ फ़र्ज़ है। (१०३)

[पेज १६६ से] ❋ होता तो वह 'सलाम अलैक' कह कर परिचय देता जिससे ग़रज़ यह होती कि उसको अपना ही आदमी समझ कर जान व माल का नुक़सान न पहुँचाया जाय लेकिन हमलावर अक्सर उसके इस काम को जान-माल बचाने के लिए मक्कारी समझते और उसको लूट-मार लेते। इस पेचीदगी को हल करने के लिए यह आयतें उतरीं। मंशा यह कि बिना पूरी जाँच कर लिये ऐसे शख़्स को मारना ठीक नहीं। अगर वह मक्कार है तो यह ज़रूर है कि फ़रेब से एक काफ़िर की जान बच जायगी लेकिन दूसरी ओर अगर वह सही बयान करता है तो एक मोमिन की बेगुनाह हत्या उससे कहीं ज़्यादः बुराई है।

[पेज १६६ से] ‡ ऊपर दीनी अन्याय कर रहे थे, उनसे यह सवाल है। क्यों न वे हिजरत करके मदीना चले गये जहाँ वे इस्लामी अक़ीदे से पूरे तौर पर सही ज़िन्दगी बसर कर सकते थे। दुनियावी फ़ायदों के पीछे पड़ कर दीनी नुक़सान करने वाले ऐसे मुनाफ़िक़ या ख़ुदग़रज़ मुसलमानों का भी ठिकाना दोज़ख़ है।

व ला तहिनू फ़िब्तिग़ा'अिल् - क़ौमि त़ अिन् तकूनू तअ्लमून फ़अिन्नहुम् यअ्लमून कमा तअ्लमून ज् व तर्जून मिनल्लाहि मा ला यर्जून त़ व कानल्लाहु अ़लीमन् ह़कीमन् (१०४) ★ अिन्ना' अन्ज़ल्ना' अिलैकल् - किताब बिल्ह़क़्क़ि लितह़्कुम बैनन्नासि बिमा' अराकल्लाहु त़ व ला तकुल्लिल्ख़ा'अिनीन ख़सीमन् ला (१०५) व्वस्तग़्फ़िरिल्लाह त़ अिन्नल्लाह कान ग़फ़ूरर्रह़ीमन् ज् (१०६) व ला तुजादिल् अ़निल्लजीन यख़्तानून अन्फ़ुसहुम् त़ अिन्नल्लाह ला युह़िब्बु मन् कान ख़ौवानन् असीमन् ज् ला (१०७) य्यस्तख़्फ़ून मिनन्नासि व ला यस्तख़्फ़ून मिनल्लाहि व हुव मअ़हुम् अिज् युबैयितून मा ला यर्ज़ा मिनल्क़ौलि त़ व कानल्लाहु बिमा यअ़्मलून मुह़ीतन् (१०८) हा'अन्तुम् हा'अुला'अि जादल्तुम् अ़न्हुम् फ़िल् - ह़यातिद् - दुन्या क़िफ़् फ़मैंयुजादिलुल्लाह अ़न्हुम् यौमल् - क़ियामति अम्मैंयकूनु अ़लैहिम् वकीलन् (१०९) व मैंयअ़्मल् सू'अन् औ यज़्लिम् नफ़्सहू सुम्म यस्तग़्फ़िरिल्लाह यजिदिल्लाह ग़फ़ूरर्रह़ीमन् (११०) व मैंयक्सिब् अिस्मन् फ़अिन्नमा यक्सिबुहू अ़ला नफ़्सिही त़ व कानल्लाहु अ़लीमन् ह़कीमन् (१११) व मैंयक्सिब् ख़ती'अतन् औ अिस्मन् सुम्म यर्मि बिही बरी'अन् फ़क़दिह़्तमल बुह्तानौंव अिस्मम्-मुबीनन् (११२) ★ व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैक व रह़्मतुहू लहम्मत्ता'अि-फ़तुम् - मिन्हुम् अैंयुज़िल्लूक त़ व मा युज़िल्लून अिल्ला' अन्फ़ुसहुम् व मा यज़ुर्रूनक मिन् शैअिन् त़ व अन्ज़लल्लाहु अ़लैकल् - किताब वल्ह़िक्मत व अ़ल्लमक मा लम् तकुन् तअ़्लमु त़ व कान फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैक अ़ज़ीमन् (११३) ●

रु. १५ | १२ आ ४

रु. १६ | १३ आ ८

सु. ३ | ४

النساء ٤ — والمحصنٰت ٥

موقوتا ۞ ولا تهنوا في ابتغاء القوم ط ان تكونوا تالمون فانهم يالمون كما تالمون ج وترجون من الله ما لا يرجون ط وكان الله عليما حكيما ۞ انا انزلنا اليك الكتب بالحق لتحكم بين الناس بما ارىك الله ط ولا تكن للخائنين خصيما ۞ واستغفر الله ط ان الله كان غفورا رحيما ۞ ولا تجادل عن الذين يختانون انفسهم ط ان الله لا يحب من كان خوانا اثيما ۞ يستخفون من الناس ولا يستخفون من الله وهو معهم اذ يبيتون ما لا يرضى من القول ط وكان الله بما يعملون محيطا ۞ هانتم هؤلاء جدلتم عنهم في الحيوة الدنيا فمن يجادل الله عنهم يوم القيمة ام من يكون عليهم وكيلا ۞ ومن يعمل سوءا او يظلم نفسه ثم يستغفر الله يجد الله غفورا رحيما ۞ ومن يكسب اثما فانما يكسبه على نفسه ط وكان الله عليما حكيما ۞ ومن يكسب خطيئة او اثما ثم يرم به بريئا فقد احتمل بهتانا واثما مبينا ۞ ولولا فضل الله عليك ورحمته لهمت طائفة منهم ان يضلوك ط وما يضلون الا انفسهم وما يضرونك من شيء ط وانزل الله عليك الكتب والحكمة وعلمك ما لم تكن تعلم ط وكان فضل الله عليك عظيما ۞ لا خير في كثير من نجوىهم

منزل

और इन लोगों (विरोधियों) का पीछा करने में हिम्मत न हारो, अगर तुमको तकलीफ़ पहुँचती है तो जैसे तुमको तकलीफ़ पहुँचती है वैसे ही उनको भी तकलीफ़ पहुँचती है और (तुम्हारी जीत यह है कि) तुमको अल्लाह से वह उम्मीदें हैं जो उनको नहीं (हो सकतीं) और अल्लाह बड़ा जानकार और बड़ा हिकमतवाला है।(१०४) ★

(ऐ मुहम्मद !) हमने सच्ची किताब तुम पर उतारी है कि जैसा तुमको अल्लाह ने राह दिखाई है उसके बमूजिब लोगों के आपसी झगड़े चुका दिया करो और दग़ाबाजों के तरफ़दार मत बनो।(१०५) और अल्लाह से माफ़ी चाहो बेशक अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है§। (१०६) और जो (दूसरे को दग़ा देकर उसके बुरे अंजाम के कारन) अपने ही साथ दग़ा करते हैं ऐसों की तरफ़ से बहस मत करो क्योंकि दग़ाबाज़ क़सूरवार अल्लाह को पसन्द नहीं हैं।(१०७) भले ही ये लोग इन्सानों से अपनी करतूतों को छिपा लेते हैं (लेकिन) अल्लाह से नहीं छिपा सकते। हालांकि जब रातों को (बैठ बैठकर) उन बातों की सलाहें बाँधते हैं जो अल्लाह को पसन्द नहीं तो अल्लाह उनके साथ (मौजूद) होता है और जो कुछ (ये) करते हैं (वह सब) अल्लाह के एहाते (घेरे) में है।(१०८) सुनो! तुमने दुनिया की जिन्दगी में (तो) उनकी तरफ़ होकर झगड़ा कर लिया तो क़ियामत के दिन उनकी तरफ़ से अल्लाह के साथ कौन झगड़ेगा और (वहाँ) कौन उनका वकील बनेगा।(१०९) और जो कोई बुरा काम करे या आप अपने हक़ में ज़ुल्म करे, फिर अल्लाह से माफ़ी माँगे तो अल्लाह को बख़्शने वाला मेहरबान पावेगा।(११०) और जो शख़्स बुराई कमाता है तो वह अपने ही हक़ में ख़राबी करता है और अल्लाह बड़ा जानकार और बड़ा हिकमतवाला है।(१११) और जो शख़्स किसी क़सूर व गुनाह का करनेवाला हो फिर वह (बजाय खुद शर्मिन्दा होने के) अपने क़सूर को किसी बेक़सूर पर थोप दे तो उसने अपने ऊपर तूफ़ान और खुला गुनाह लाद लिया।(११२) ★

अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी मेहरबानी न होती तो उनमें से एक गिरोह तुमको बहका देने का इरादा कर ही चुका था और (इस नाकिस इरादे से) यह लोग बस अपने ही को गुमराह कर रहे हैं और तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते और अल्लाह ने तुम पर किताब (क़ुरान) उतारी और समझ दी और तुमको ऐसी बातें सिखाई हैं जो तुमको मालूम न थीं और तुम पर अल्लाह की बड़ी कृपा है।(११३) ●

★ रु. १५/१२ आ ४

★ रु. १६/१३ आ ८

● सु. ३/४

---

§ आयत १०५-१०६ में हवाला है कि एक शख्स तआमा बिन अबीरक ने एक अंसार की ज़िरह की चोरी की और उसने ऐसा फ़रेब किया कि चोरी का अपराध एक यहूदी पर लग गया। थोड़े ही अरसे के बाद अल्लाह की रहनुमाई से रसूल स० ने सही चोर को पा लिया और उसे सज़ा दी और यहूदी बच गया। लेकिन कुछ समय के लिए चूँकि रसूल स० भी उस धोखेबाज़ की बातों के कारन संदेह में पड़ गये थे, इस भूल के कारन अल्लाह से माफ़ी मांगने का हुक्म हुआ।

ला ख़ैर फ़ी कसीरिम्मिन्नज्वाहुम् अिल्ला मन् अमर बिसदक़तिन् औ मअ़रूफ़िन् औ अिस्लाहिम् - बैनन्नासि त् व मैंयफ़्अल् जालिकब्तिग़ा'अ मर्ज़ातिल्लाहि फ़सौफ़ नुअ्तीहि अज्रन् अ़ज़ीमन् (११४) व मैंयुशाक़िक़िर्रसूल मिम्बअ़्दि मा तबैयन लहुल्हुदा व यत्तबिअ़् ग़ैर सबीलिल्-मुअ्मिनीन नुवल्लिही मा तवल्ला व नुस्लिही जहन्नम त् व सा'अत् मसीरन् (११५) ★ अिन्नल्लाह ला यग़्फ़िरु अँयुश्रक बिही व यग़्फ़िरु मा दून जालिक लिमैंयशा'अु त् व मैंयुश्रिक् बिल्लाहि फ़क़द् ज़ल्ल ज़लालम्बअ़ीदन् (११६) अींयद्अ़ून मिन्दूनिही' अिल्ला' अिनासन् ज् व अींयद्अ़ून अिल्ला शैतानम्मरीदन् ला (११७) ल्लअ़नहुल्लाहु • म् व क़ाल लअत्तख़िजन्न मिन् अ़िबादिक नसीबम्मफ़्रूज़न् ला (११८) ्व लअुज़िल्लन्नहुम् व लअुमन्नियन्नहुम् व ला मुरन्नहुम् फ़लयुबत्तिकुन्न आजानल् - अन्अ़ामि व लआमुरन्नहुम् फ़लयुग़ैयिरुन्न ख़ल्क़ल्लाहि त् व मैंयत्तख़िजिश्-शैतान वलीयम् - मिन् दूनिल्लाहि फ़क़द् ख़सिर ख़ुस्रानम् - मुबीनन् त् (११९) यअ़िदुहुम् व युमन्नीहिम् त् व मा यअ़िदुहुमुश्शैतानु अिल्ला ग़ुरूरन् (१२०) अुला'अिक मअ्वाहुम् जहन्नमु ज् व ला यजिदून अ़न्हा महीसन् (१२१) वल्लजीन आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति सनुद्ख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदीन फ़ीहा' अबदन् त् वअ़्दल्लाहि हक़्क़न् त् व मन् अस्दक़ु मिनल्लाहि क़ीलन् (१२२) लैस बिअमानीयिकुम् व ला' अमानीयि अह्लिल् - किताबि त् मैंयअ़्मल् सू'अैंयुज्ज़ बिही ला व ला यजिद् लहू मिन् दूनिल्लाहि वलीयौंव ला नसीरन् (१२३) व मैंयअ़्मल् मिनस्सालिहाति मिन् जकरिन् औ अुन्सा व हुव मुअ्मिनुन् फ़अुला'अिक यद्ख़ुलूनल् - जन्नत व ला युज़्लमून नक़ीरन् (१२४)

रु. १७/१४ आ ३

व. ला जि म

النساء ٤ · والمحصنت ٥

إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ وَمَن
يَفْعَلْ ذَٰلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١١٤﴾
وَمَن يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ
سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿١١٥﴾
إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَاءُ
وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١١٦﴾ إِن يَدْعُونَ مِن
دُونِهِ إِلَّا إِنَاثًا وَإِن يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَّرِيدًا ﴿١١٧﴾ لَّعَنَهُ اللَّهُ
وَقَالَ لَأَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ﴿١١٨﴾ وَلَأُضِلَّنَّهُمْ وَ
لَأُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ آذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَآمُرَنَّهُمْ
فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللَّهِ وَمَن يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِّن دُونِ اللَّهِ
فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِينًا ﴿١١٩﴾ يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ وَمَا يَعِدُهُمُ
الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴿١٢٠﴾ أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا
مَحِيصًا ﴿١٢١﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا وَ
مَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا ﴿١٢٢﴾ لَّيْسَ بِأَمَانِيِّكُمْ وَلَا أَمَانِيِّ أَهْلِ الْكِتَابِ
مَن يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ وَلَا يَجِدْ لَهُ مِن دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا
نَصِيرًا ﴿١٢٣﴾ وَمَن يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ

منزل ١

इन लोगों की अक्सर कानाफ़ूसियों में§ ख़ैर नहीं, मगर (हाँ) जो ख़ैरात में या अच्छे काम में या लोगों में मेल-मिलाप की सलाह दे और जो अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने के लिए ऐसे काम करेगा तो हम उसका बड़ा बदला देंगे।(११४) और जो शख़्स सीधी राह के ज़ाहिर होने के बाद (भी) पैग़म्बर का विरोध करे और ईमानवालों के रास्ते के सिवाय किसी और राह पर चले तो जो (राह) उसने पकड़ी है हम उसको उसी रास्ते चलाये जायेंगे और उसको दोज़ख़ में दाख़िल करेंगे और वह बहुत बुरी जाने की जगह है।(११५)★

★रु. १७/१४ आ ३

यह गुनाह तो अल्लाह माफ़ नहीं करता कि उसके साथ कोई शरीक ठहराया जाये और उसके सिवाय (दूसरा गुनाह वह) जिसको चाहे माफ़ करे और जिसने अल्लाह का साझी ठहराया वह (सीधी राह से) दूर भटक गया।(११६) (यह मुश्रिक) तो अल्लाह के सिवाय बस औरतों† ही को पूजते हैं। और अल्लाह के सिवाय सरकश उस शैतान को ही पुकारते हैं।(११७) (जिसको) अल्लाह ने फटकार दिया है⊗। और उसने कहा कि मैं तेरे बन्दों से (अलावा अल्लाह की नज़र-नियाज़ अपना भी) एक मुक़र्रर हिस्सा ज़रूर लिया करूँगा।(११८) और उनको ज़रूर ही बहकाऊँगा और उनको (अनेक झूठी) उम्मीदें भी ज़रूर दिलाऊँगा और उनको सिखाऊँगा कि (बुतों के नाम पर छोड़े हुये) जानवरों के कान ज़रूर चीरा करें और उनको समझाऊँगा कि अल्लाह की बनाई हुई सूरतों को बदला करें‡ और जो शख़्स अल्लाह के सिवाय शैतान को दोस्त बनाये तो वह ज़ाहिरा नुक़सान में डूब गया (११९) और (शैतान) उनको वादे देता और उनको उम्मीदें बँधवाता है और शैतान उनसे जो वादा करता है निरा धोखा है।(१२०) ऐसों का ठिकाना नरक है और वहाँ से (वे) कहीं भागने को जगह न पायेंगे।(१२१) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये हम उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें हमेशा रहेंगे, (और उनके साथ यह) अल्लाह का वादा सच्चा है और अल्लाह से बढ़कर बात किसकी सच्ची है।(१२२) (ऐ मुसलमानो!) अंजाम न तुम्हारी आरज़ू पर निर्भर है और न किताब वालों (याने यहूदियों-ईसाइयों) की आरज़ू पर (बल्कि अमल पर निर्भर है), जो शख़्स बुरा काम करेगा उसकी सज़ा पायेगा और अल्लाह के सिवाय उसको कोई साथी और मददगार न मिलेगा।(१२३) और जो शख़्स कोई नेक काम करे—मर्द हो या औरत और वह ईमान रखता हो तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और ज़रा भी उनका हक़ न मारा जायगा।(१२४)

● व. लाज़िम

§ मुनाफ़िक़ लोग मुहम्मद साहब स० से कान में बात करते थे ताकि दूसरे लोग यह समझें कि ये नबी के बड़े मित्र हैं। ये लोग अधिकतर दूसरे मुसलमानों की बुराई करते थे। इस पर यह आयत उतरी कि इन लोगों की सलाह अच्छी नहीं होती बल्कि दग़ा से भरी होती है। † मूर्तियाँ स्त्रियों के रूप की होती हैं। अरब के मूर्ति पूजने वाले उनको अपने-अपने क़बीले की देवी कहते थे। मसलन उज़्ज़ा, नाइला, मनात वग़ैरह। ‡ ग़ैर क़ुदरती काम—मसलन बाँझ बनाना, खोजे बनाना, और आदमी-आदमी की बदकारी वग़ैरः।

व मन् अह्सनु दीनम्मिम्मन् अस्लम वज्हहू लिल्लाहि व हुव मुह्सिनूँ-वत्तबअ़ मिल्लत अब्राहीम हनीफ़न् त़् वत्तख़जल्लाहु अब्राहीम ख़लीलन् (१२५) व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि त़् व कानल्लाहु बिकुल्लि शैअिम्मुहीतन् (१२६) ★ व यस्तफ़्तूनक फ़िन्निसा'अि त़् क़ुलिल्लाहु युफ़्तीकुम् फ़ीहिन्न ला व मा युत्ला अ़लैकुम् फ़िल्किताबि फ़ी यतामन्निसा'अिल्लाती ला तुअ्तूनहुन्न मा कुतिब लहुन्न व तर्ग़बून अन् तन्किहूहुन्न वल्मुस्तज़्अ़फ़ीन मिनल्-विल्दानि ला व अन् तक़ूमू लिल्यतामा बिल्क़िस्ति त़् व मा तफ़्अ़लू मिन् ख़ैरिन् फ़अिन्नल्लाह कान बिही अ़लीमन् (१२७) व अिनिम्रअतुन् ख़ाफ़त् मिम्बअ़्लिहा नुशूज़न् औ अिअ़्राज़न् फ़ला जुनाह अ़लैहिमा' अँयुस्लिहा बैनहुमा सुल्हन् त़् वस्सुल्हु ख़ैरुन् त़् व अुह्ज़िरतिल्-अन्फ़ुसुश्शुह्ह त़् व अिन् तुह्सिनू व तत्तक़ू फ़अिन्नल्लाह कान बिमा तअ़्मलून ख़बीरन् (१२८) व लन् तस्ततीअ़ू' अन् तअ़्दिलू बैनन्निसा'अि व लौ हरस्तुम् फ़ला तमीलू कुल्लल्मैलि फ़तज़रूहा कल्मुअ़ल्लक़ति त़् व अिन् तुस्लिहू व तत्तक़ू फ़अिन्नल्लाह कान ग़फ़ूरर्रहीमन् (१२९) व अींयतफ़र्रक़ा युग़्निल्लाहु कुल्लम्मिन् सअ़तिही त़् व कानल्लाहु वासिअ़न् हकीमन् (१३०) व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि त़् व लक़द् वस्सैनल्लज़ीन अूतुल्किताब मिन् क़ब्लिकुम् व अीयाकुम् अनित्तक़ुल्लाह त़् व अिन् तक्फ़ुरू फ़अिन्न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि त़् व कानल्लाहु ग़नीयन् हमीदन् (१३१)

रु. १८ | १५ आ ११

النسآء ٤ — ٩٨ — والمحصنت ٥

فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ۝ وَمَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۗ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ۝ وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ ۗ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ ۗ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ۝ وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ۗ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ۗ وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ۗ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝ وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ۗ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ۗ وَاِنْ

منزل

और उस शख़्स से ज़्यादा किसकी राह अच्छी है, जिसने अल्लाह के आगे अपना सिर झुका दिया और वह नेककार भी है और इब्राहीम के दीन पर चलता है, जो एक (अल्लाह) ही के हो रहे थे और इब्राहीम को अल्लाह ने अपना दोस्त ठहराया था§(१२५) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह ही का है, और सब चीज़ें अल्लाह (ही) के क़ाबू में हैं।(१२६)★

★रु. १८/१५ आ ११

और (ऐ पैग़म्बर!) तुमसे (अनाथ) स्त्रियों के साथ (निकाह करने का) हुक्म मांगते हैं तो (उनको) समझा दो कि अल्लाह तुमको उनके (निकाह के) बारे में आज्ञा देता है@ और क़ुर्आन में जो (हुक्म) तुमको (पहले) सुनाया जा चुका है सो (वह) उन अनाथ औरतों के सम्बन्ध में है जिनको तुम (उनका) हक़ जो उनके लिए ठहरा दिया गया है नहीं देते और (इसके बावजूद) उनके साथ निकाह करने की इच्छा करते हो और बेबस बच्चों के बारे में (भी वही हुक्म याद दिलाया जाता है) और यह कि यतीमों के हक़ में इन्साफ़ का ख़याल रखो और जो कुछ भलाई करोगे अल्लाह उसको जानता है। (१२७) अगर किसी औरत को अपने पति की तरफ़ से ज़्यादती या दिल फिर जाने का सन्देह हो तो दोनों पर कुछ गुनाह नहीं कि आपस में (समझौते से) मेल कर लें और मेल (सब से) अच्छा है और (कंजूसी की) कमज़ोरी तो सभी की तबियत में (थोड़ी बहुत) होती है और अगर (तुम दोनो एक दूसरे के साथ) भलाई करो और (कठोरता से) बचे रहो तो अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है।(१२८) और तुम बहुतेरा चाहो लेकिन यह तो तुमसे हो नहीं सकेगा कि बीवियों में एकसा बर्ताव कर सको तो बिल्कुल (एक ही तरफ़) झुक भी न पड़ो कि दूसरी को छोड़ बैठो गोया वह कहीं की न रहे और अगर मेल कर लो और (एक दूसरे पर ज़्यादती से) बचे रहो तो अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।(१२९) और अगर दोनों जुदा हो जायँ तो अल्लाह अपने ख़जाने से दोनों को पूरा कर देगा और अल्लाह हिकमतवाला गुँजाइश वाला है। (१३०) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह ही का है और (मुसलमानो!) जिन लोगों को तुमसे पहले किताब मिली थी उनसे और तुमसे हमने कह रखा है कि अल्लाह से डरते रहो और अगर नहीं मानोगे तो जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह ही का है, और अल्लाह बेपरवाह है और (अल्लाह ही) सब ख़ूबियोंवाला (और) सराहने के क़ाबिल है।(१३१)

---

§ आयत १२३ से १२६ तक का ख़ुलासा है कि यहूदी, ईसाई यह समझने लगे थे कि वे अमल कुछ भी करें उनको बहिश्त में जगह लाज़िमी है। मुसलमान भी बाज़ मौक़ों पर इसी भ्रम के शिकार होते हैं। लेकिन हक़ीक़त यही है कि यहूदी, ईसाई हों या मुसलमान, अगर अल्लाह की हिदायतों पर अमल नहीं है तब उनको ठिकाना नहीं है। @ अनाथ स्त्रियों के साथ ब्याह किया जा सकता है पर उनका हक़ उनको अवश्य देना चाहिए।

व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि त् व कफ़ा बिल्लाहि वकीलन् (१३२) ओंयशअ् - युज्हिब्कुम् अैयुहन्नासु व यअ्ति बिआख़रीन त् व कानल्लाहु अ़ला ज़ालिक क़दीरन् (१३३) मन् कान युरीदु सवाबद्दुन्या फ़अ़िन्दल्लाहि सवाबुद्दुन्या वल्आख़िरति त् व कानल्लाहु समीअ़म् - बसीरन् (१३४) ★

★ रु. १९/१६ आ ८

या। अैयुहल्लज़ीन आमनू कूनू क़ौवामीन बिल्क़िस्ति शुहदा।अ लिल्लाहि व लौ अ़ला। अन्फ़ुसिकुम् अविल् - वालिदैनि वल्अक़्रबीन ज् ओंयकुन् ग़नीयन् औ फ़क़ीरन् फ़ल्लाहु औला बिहिमा क़िफ़् फ़ला तत्तबिअ़ुल्-हवा। अन् तअ़्दिलू ज् व अिन् तल्वू। औ तुअ़्रिज़ू फ़अिन्नल्लाह कान बिमा तअ़्मलून ख़बीरन् (१३५) या। अैयुहल्लज़ीन आमनू। आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही वल् - किताबिल्लज़ी नज़्ज़ल अ़ला रसूलिही वल्-किताबिल्लज़ी। अन्ज़ल मिन् क़ब्लु त्

تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ
غَنِيًّا حَمِيْدًا ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى
بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ۝ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا
فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ۝
يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ
وَلَوْ عَلٰى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا
اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۟ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰٓى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ
وَاِنْ تَلْوٗٓا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝
يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ
نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ
يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ
ضَلَّ ضَلٰلًا بَعِيْدًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ
اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ
وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ۝ بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا
اَلِيْمًا ۝ الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ
اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۝ وَقَدْ نَزَّلَ

व मैंयक्फ़ुर् बिल्लाहि व मला।अिकतिही व कुतुबिही व रुसुलिही वल्-यौमिल् - आख़िरि फ़क़द् ज़ल्ल ज़लालम् - बअ़ीदन् (१३६) अिन्नल्लज़ीन आमनू सुम्म कफ़रू सुम्म आमनू सुम्म कफ़रू सुम्मज़दादू कुफ़्रल्लम् यकुनिल्लाहु लियग़्फ़िर लहुम् व ला लियह्दियहुम् सबीलन् त् (१३७) बश्शिरिल् - मुनाफ़िक़ीन बिअन्न लहुम् अ़ज़ाबन् अलीमन् नि ला (१३८) अ़ल्लज़ीन यत्तख़िज़ूनल् - काफ़िरीन औलिया।अ मिन् दूनिल्-मुअ्मिनीन त् अयब्तग़ून अ़िन्दहुमुल्-अ़िज़्ज़त फ़अिन्नल्-अ़िज़्ज़त लिल्लाहि जमीअ़न् त् (१३९)

अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और जो कुछ ज़मीन में है और अल्लाह ही काम सवाँरनेवाला काफ़ी है।(१३२) ऐ लोगो! अगर वह चाहे तुमको मेट दे और दूसरों को ला बसाये और अल्लाह ऐसा करने पर समरथ है।(१३३) जिसको (अपने आमाल का) बदला दुनिया में दरकार हो तो अल्लाह के पास दुनिया और आख़िरत (दोनो) के अज्र (फल मौजूद) हैं (तो क्यों न अल्लाह का डर रखते हुये नेक अमली से दोनों हासिल करो) और अल्लाह (सब कुछ) सुनता देखता है।(१३४)★

★ रु. १९/१६ आ ८

ऐ ईमानवालो! मज़बूती के साथ इन्साफ़ पर क़ायम रहो और अगर्चे तुम्हारे या तुम्हारे माता-पिता और सम्बन्धियों के ख़िलाफ़ ही हो अल्लाह लगती गवाही दो, अगर कोई मालदार है या मुहताज है तो अल्लाह तुमसे बढ़कर उनकी रक्षा करने वाला है। तो तुम ख़्वाहिश के अधीन न हो जाओ कि न्याय से मुँह फेरने लगो§ और अगर दबी ज़बान से (गोलमोल) गवाही दोगे या (गवाही से) बचना चाहो गे तो जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे ख़बर रखता है।(१३५) ऐ ईमानवालो! अल्लाह पर और उसके पैग़म्बर पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी है और उन किताबों पर जो पहले (दूसरे पैग़म्बरों पर) उतारीं ईमान लाओ और जो कोई अल्लाह का और उसके फ़रिश्तों का और उसकी किताबों और पैग़म्बरों का और आख़िरत के दिन का इन्कारी हुआ, वह (सच्ची राह से) दूर भटक गया।(१३६) जो लोग ईमान लाये फिर काफ़िर हुए फिर ईमान लाये फिर काफ़िर हुए फिर कुफ़्र में बढ़ते गये तो अल्लाह न तो उनको माफ़ करेगा और न उनको राह (रास्ते) ही दिखायेगा।(१३७) (ऐ पैग़म्बर!) मुनाफ़िक़ों (ज़ाहिरा कुछ भीतरी कुछ वालों) को खुशख़बरी@ सुना दो कि उनके लिये दुखदाई अज़ाब तैयार है।(१३८) वे (मुनाफ़िक़ कि) जो मुसलमानों को छोड़कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं क्या काफ़िरों के यहाँ (अपनी) इज़्ज़त (बढ़ाना) चाहते हैं, सो इज़्ज़त तो सारी अल्लाह ही की है। (१३९)

---

§ यानी धनवानों के डर से और निर्धनों की दुर्दशा पर तरस खा कर अथवा रिश्तेदारों के प्रेम में फँसकर सच बात को न छिपाओ न झूठी गवाही दो। @ 'खुशखबरी' का लफ़्ज़ लाना ताने के ढंग पर है। ये मुनाफ़िक़ अपने को ही बड़ा होशियार समझते थे कि हम मुसलमानों और काफ़िरों दोनो के भले बन कर हमेशा फ़ायदः उठायेंगे और कभी नुक़सान में न रहेंगे। लेकिन सच यह है कि उनकी यह मनमौजी खुशखयाली ही अल्लाह के अज़ाब की शकल में उनके सामने आवेगी और यह सज़ा उनकी ही कमाई होगी जो उन्होंने बड़े खुश हो कर हासिल की है। इसलिए उसको 'खुशखबरी' कहा गया है।

व क़द् नज़्ज़ल अ़लैकुम् फ़िल्किताबि अन् अिजा समिअ्तुम् आयातिल्लाहि युक्फ़रु बिहा व युस्तह्ज़अु बिहा फ़ला तक़्अुदू मअ़हुम् हत्ता यख़ूज़ू फ़ी हदीसिन् ग़ैरिहीॅ ज़् सला अिन्नकुम् अिजम्मिस्लुहुम् त् अिन्नल्लाह जामिअुलमुनाफ़िक़ीन वल्-काफ़िरीन फ़ी जहन्नम जमीअन् ला (१४०) अ़ल्लजीन यतरब्बसून बिकुम् ज् फ़अिन् कान लकुम् फ़त्हुम्मिनल्लाहि क़ालूॅ अलम् नकुम्मअ़कुम् ज़् सला व अिन् कान लिल्काफ़िरीन नसीबुन् ला क़ालूॅ अलम् नस्तह्विज् अ़लैकुम् व नम्नअ्कुम् मिनल्-मुअ्मिनीन त् फ़ल्लाहु यह्कुमु बैनकुम् यौमल् - क़ियामति त् वलैंयज्अ़लल्लाहु लिल्-काफ़िरीन अ़लल्मुअ्मिनीन सबीलन् (१४१) ★ अिन्नल्मुनाफ़िक़ीन युख़ादिअ़ूनल्लाह व हुव ख़ादिअ़ुहुम् ज् व अिजा क़ामूॅ अिलस्सलाति क़ामू कुसाला ला युराॅअूनन्नास व ला यज्कुरूनल्लाह अिल्ला क़लीलन् ज़् ला (१४२) म्मुजब्ज़बीन बैन जालिक क़् सला लाॅ अिला हाॅअुलाॅअि व लाॅ अिलाहाॅअुलाॅअि त् व मैंयुज़्लिलिल्लाहु फ़लन् तजिद लहु सबीलन् (१४३) याॅ अैयुहल्लजीन आमनू ला तत्तख़िजुल्काफ़िरीन औलियाॅअ मिन् दूनिल् - मुअ्मिनीन त् अतुरीदून अन् तज्अ़लू लिल्लाहि अ़लैकुम् सुल्तानम् - मुबीनन् (१४४) अिन्नल्मुनाफ़िक़ीन फ़िद्दर्किल्-अस्फ़लि मिनन्नारि ज् व लन् तजिद लहुम् नसीरन् ला (१४५) अिल्लल्लजीन ताबू व अस्लहू वअ्तसमू बिल्लाहि व अख़्लसू दीनहुम् लिल्लाहि फ़अुलाॅअिक मअ़ल्मुअ्मिनीन त् व सौफ़ युअ्तिल्लाहुल् - मुअ्मिनीन अज्रन् अ़ज़ीमन् (१४६) मा यफ़्अ़लुल्लाहु बिअ़जाबिकुम् अिन् शकर्तुम् व आमन्तुम् त् व कानल्लाहु शाकिरन् अ़लीमन् (१४७)

रु. २० / १७ आ ७

النساء ٤ — ٨٠ — والمحصنت ٥

عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖٓ اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعًا ۝ الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْٓا اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ قَالُوْٓا اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ۝ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَاِذَا قَامُوْٓا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى يُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَلَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ۝ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَاَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ۝

منزل ١

॥ इति पाँचवाँ पारः ॥

और तुम पर अल्लाह किताब में यह हुक्म उतार चुका है कि जब तुम सुनलो कि अल्लाह की आयतों से इन्कार किया जा रहा है और उनकी हँसी उड़ाई जाती है तो ऐसे लोगों के साथ मत बैठो†, जब तक कि (आयतों का उपहास या इन्कारी छोड़ कर वे लोग) किसी दूसरी बात में (न) लगें। वर्ना तुम भी उन्हीं जैसे हो जाओगे। बेशक अल्लाह मुनाफ़िक़ों§ और काफ़िरों को दोज़ख़ में एक जगह जमा करेगा।(१४०) वह इन्कारी तुम्हें तकते हैं; तो अगर अल्लाह की तरफ़से तुमको फ़तेह मिल गई तो कहने लगते हैं क्या हम तुम्हारे साथ न थे और अगर काफ़िरों को (फ़तेह) नसीब हुई तो कहने लगते हैं कि क्या हम तुम पर ग़ालिब नहीं थे और क्या तुमको मुसलमानों से हमने बचा नहीं लिया ? तो अल्लाह तुममें (और मुनाफ़िक़ों में) क़ियामत के दिन फ़ैसला कर देगा और अल्लाह काफ़िरों को मुसलमानों पर हरगिज ग़ालिब (प्रबल) होने का मौक़ा न देगा।(१४१) ★

★ रु. २० / १७ आ ७

मुनाफ़िक़ (मानो इन बातों से) अल्लाह को धोखा देते हैं हालाँकि अल्लाह उन्हीं को धोखा दे रहा है और जब नमाज़ के लिये खड़े होते हैं तो अलसाये हुए खड़े होते हैं (सिर्फ़) लोगों को दिखावे के लिए और (दिल से) अल्लाह को याद नहीं करते मगर (योंहीं) थोड़ा सा।(१४२) इनकार और ईमान के बीच अधर में पड़े झूल रहे हैं न इनकी (मुसलमानों की) तरफ़ और न उनकी (काफ़िरों के) तरफ़ और (ऐ पैग़म्बर!) जिसको अल्लाह भटकाये तो उसके लिए तू कोई राह न पायेगा।(१४३) ऐ ईमानवालो ! ईमानवालों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त मत बनाओ। क्या तुम अल्लाह का खुला अपराध अपने ऊपर लेना चाहते हो ? (१४४) कुछ सन्देह नहीं कि मुनाफ़िक़ आग (नरक) के सबसे नीचे दर्जे में होंगे और (ऐ पैग़म्बर !) वहाँ तुम किसी को भी इनका साथी न पाओगे।(१४५) मगर जिन लोगों ने तौबा की और अपनी दशा सुधार ली और अल्लाह का मज़बूत सहारा पकड़ा और अल्लाह के आज्ञाकारी हो गये तो यह लोग ईमान वालों के साथ होंगे और अल्लाह ईमानवालों को (आख़िरत में) बड़ा सवाब देगा। (१४६) अगर तुम (अल्लाह के) शुक्रगुज़ार हो और (उस पर) ईमान रखो तो अल्लाह को तुम्हें अज़ाब देने से क्या ? और अल्लाह क़दरदान (और सब कुछ) जाननेवाला है।(१४७)

॥ इति पाँचवाँ पारः ॥

† जो शख्स किसी मजलिस में दीन पर ताना और ऐब सुने और फिर उसमें जमा बैठा रहे भलेही वह खुद वैसी बात न कहे तो भी वह मुनाफ़िक़ और गुनहगार है। § ज़ाहिरा कुछ और भीतरी कुछ रखनेवाले पाखण्डी कपटाचारी।

छठा पारः लायुहिब्बुल्लाहु

सूरतुन्निसा'अि आयात १४८ से १७६

लायुहिब्बुल्लाहुल् - जह्र बिस्सू'अि मिनल्क़ौलि अिल्ला मन् ज़ुलिम त् व कानल्लाहु समीअ़न् अ़लीमन् (१४८) अिन् तुब्दू ख़ैरन् औ तुख़्फ़ूहु औ तअ़्फ़ूअ़न् सू'अिन् फ़अिन्नल्लाह कान अ़फ़ूवन् क़दीरन् (१४९) अिन्नल्लज़ीन यक्फ़ुरून बिल्लाहि व रुसुलिही व युरीदून अँयुफ़र्रिक़ू बैनल्लाहि व रुसुलिही व यक़ूलून नुअ्मिनु बिबअ़्ज़िंव्व नक्फ़ुरु बिबअ़्ज़िन् ला ०व युरीदून अँयत्तख़िज़ू बैन ज़ालिक सबीलन् ला (१५०) अुला'अिक हुमुल्काफ़िरून हक़्क़न् ज् व अअ़्तद्ना लिल्काफ़िरीन अ़ज़ाबम्मुहीनन् (१५१) वल्लज़ीन आमनू बिल्लाहि व रुसुलिही वलम् युफ़र्रिक़ू बैन अहृदिम्मिन्हुम् अुला'अिक सौफ़ युअ्तीहिम् अुजूरहुम् त् व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्रहीमन् (१५२) ★

★ रु. २१/१ आ ११

यस्अलुक अह्लुल्किताबि अन् तुनज़्ज़िल अ़लैहिम् किताबम् - मिनस्समा'अि फ़क़द् सअलू मूसा' अक्बर मिन् ज़ालिक फ़क़ालू' अरिनल्लाह जह्रतन् फ़अख़ज़त्-हुमुस्साअ़िक़तु बिज़ुल्मिहिम् ज् सुम्मत्तख़ज़ुल् - अ़िज्ल मिम्बअ़्दि मा जा'अत्-हुमुल्बैयिनातु फ़अ़फ़ौना अ़न् ज़ालिक ज् व आतैना मूसा सुल्तानम्मुबीनन् (१५३) व रफ़अ़्ना फ़ौक़हुमुत्तूर बिमीसाक़िहिम् व क़ुल्ना लहुमुद् ख़ुलुल्बाब सुज्जदौंव क़ुल्ना लहुम् ला तअ़्दू फ़िस्सब्ति व अख़ज़्ना मिन्हुम् मीसाक़न् ग़लीज़न् (१५४) फ़बिमा नक़्ज़िहिम् मीसाक़हुम् व कुफ़्रिहिम् बिआयातिल्लाहि व क़त्लिहिमुल्-अम्बिया'अ बिग़ैरि हक़्क़िंव्व क़ौलिहिम् क़ुलूबुना ग़ुल्फ़ुन् त् बल् तबअ़ल्लाहु अ़लैहा बिकुफ़्रिहिम् फ़ला युअ्मिनून अिल्ला क़लीलन् स् (१५५) ०व बिकुफ़्रिहिम् व क़ौलिहिम् अ़ला मर्यम बुह्तानन् अ़ज़ीमन् ला (१५६)

لا يحب الله ٨١ النساء ٤

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَكَانَ
اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ۝ اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ
سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ
وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ
نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ
ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ
عَذَابًا مُّهِيْنًا ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ
اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ۝ يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ
فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ
الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ
الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ۝ وَ
رَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا
وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِى السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۝
فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ
بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ
فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝ وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا

منزل ١

छठा पारः लायुहिब्बुल्लाहु

सूरतुन्निसा'अि आयात १४८ से १७६

अल्लाह को पसन्द नहीं कि कोई मुंह फोड़कर (किसी की) निन्दा करे मगर जिस पर जुल्म हुआ हो (वह मुँह फोड़कर ज़ालिम को बुरा कह बैठे तो लाचार है) और अल्लाह सुनता-जानता है (वही किसी को बुराई-भलाई व सुधार-बिगाड़ देने का मालिक है)।(१४८) अगर (किसी के साथ) भलाई खुल्लमखुल्ला करो या छिपाकर करो या (किसी की की हुई) बुराई को माफ़ करो तो (यह अल्लाह ही का तरीक़ा है और) अल्लाह (बड़ी) क़ुदरत वाला और बड़ा माफ़ करनेवाला है।(१४९) जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बरों का इन्कार करते हैं और अल्लाह और उसके पैग़म्बरों में फ़र्क़ डालना चाहते हैं और कहते हैं कि हम किसी को मानते हैं किसी को नहीं मानते हैं। और (इस तरह) चाहते हैं कि (इन्कार और ईमान) के बीच की कोई (दूसरी) राह निकालें।(१५०) तो ऐसे लोग (ही) बेशक काफ़िर हैं और काफ़िरों के लिए हमने ज़िल्लत की मार तैयार कर रखी है।(१५१) और जो लोग अल्लाह और उसके सब पैग़म्बरों पर ईमान लाये और उनमें से किसी एक को दूसरे से जुदा नहीं समझा (याने सब पर ईमान लाये) तो ऐसे ही लोग हैं जिनको अल्लाह (आख़िरत में) उनके अज्र (फल) देगा और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला है, बड़ा मेहरबान है।(१५२) ★

★ रु. २१/१ आ ११

किताबवाले (याने यहूद) तुम से माँगते हैं कि तुम उन पर कोई किताब आसमान से उतारो तो (अपने पूर्वज) मूसा से (ये लोग) इससे भी बड़ी चीज़ माँग चुके हैं, (यानी उन्होंने) माँगा कि (हमें) अल्लाह को सामने प्रत्यक्ष दिखलाओ। फिर उनको उनके (इस) गुनाह के कारन बिजली ने आ दबोचा, फिर इसके बाद भी अगर्चे उनके पास (खुली) निशानियाँ आ चुकी थीं तो भी बछड़े को (पूजने के लिए) बना बैठे, फ़िर हमने वह (क़ुसूर भी) माफ़ किया। और मूसा को हमने खुला हुआ ग़लबा (प्रभाव) दिया।(१५३) और उनसे क़ौल (प्रतिज्ञा) लेने के लिए हमने तूर (पहाड़) को उन पर ला लटकाया और हमने उनको आज्ञा दी कि दरवाज़े में सज्दः करते हुए दाख़िल होना§ और हमने उनको कहा था कि हफ़्ते के बारे में ज़्यादती न करना§ और हमने (इनसे इन बातों का) पक्का वादा लिया।(१५४) पस उनके (यहूदियों के) बचन तोड़ने और अल्लाह की आयतों से इन्कारी होने और पैग़म्बरों को नाहक़ क़त्ल करने के कारण और उनके इस कहने के कारण कि हमारे दिलों पर ग़िलाफ़ चढ़ा है, (हालाँकि ग़िलाफ़) नहीं बल्कि अल्लाह ने उनकी इन्कारी की वजह से उन पर मुहर कर दी है, सो (ये योग) (बहुत) कम (ही) ईमान लाते हैं।(१५५) और उनकी इन्कारी की वजह से और मरियम के सम्बन्ध में झूठे कलंक बकने की वजह से (१५६)

§ आयत सूरः बक़र ४९-६५ में यहाँ दी हुई १५० से १५४ तक आयतों की घटनाओं का ज़िक्र देखिये।

ॅव क़ौलिहिम् अिन्ना क़तल्नल्मसीह़ अीसब्न मर्यम रसूलल्लाहि ज् व मा क़तलूहु व मा सलबूहु व लाकिन् शुब्बिह लहुम् त् व अिन्नल्लज़ीनख़्तलफ़ू फ़ीहि लफ़ी शक्किम्मिन्हु मा लहुम् बिही मिन् अिल्मिन् अिल्लत्तिबाअज़्ज़न्नि ज् व
म्'
मा क़तलूहु यक़ीनन् ला (१५७) बर्रफ़अहुल्लाहु अिलैहि त् व कानल्लाहु अज़ीज़न् हकीमन् (१५८) व अिम्मिन् अह्लिल्किताबि अिल्ला लयुअ्मिनन्न बिही क़ब्ल मौतिही ज् व यौमल्-क़ियामति यकूनु अलैहिम् शहीदन् ज् (१५९) फ़बिज़ुल्मिम्-मिनल्लज़ीन हादू हर्रम्ना अलैहिम् तैयिबातिन् अुहिल्लत् लहुम् व बिसद्दिहिम् अन् सबीलिल्लाहि कसीरन् ला (१६०) ॅव अख़्ज़ि-हिमुर्रिबा वक़द्नुहू अन्हु व अक्लिहिम् अम्वालन्नासि बिल्बातिलि त् व अअ्तद्ना लिल्काफ़िरीन मिन्हुम् अज़ाबन् अलीमन् (१६१) लाकिनिर्रासिख़ून फ़िल्-अिल्मि मिन्हुम् वल्मुअ्मिनून युअ्मिनून बिमा अुन्ज़िल अिलैक व मा अुन्ज़िल मिन् क़ब्लिक वल्मुक़ीमीनस्सलात वल्मुअ्तूनज़्ज़कात वल्मुअ्मिनून बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि त् अुलाअिक सनुअ्तीहिम् अज्रन् अज़ीमन् (१६२) ★ अिन्ना औहैना अिलैक कमा औहैना अिला नूहिंव्वन्नबीयीन मिम्बअ्दिही ज् व औहैना अिला अिब्राहीम व अिस्माअील व अिस्हाक़ व यअ्क़ूब वल्-अस्बाति व अीसा व अैयूब व यूनुस व हारून व सुलैमान ज् व आतैना दावूद ज़बूरन् ज् (१६३) व रुसुलन् क़द् क़सस्नाहुम् अलैक मिन् क़ब्लु व रुसुलल्लम् नक़्सुस्हुम् अलैक त् व कल्लमल्लाहु मूसा तक्लीमन् ज् (१६४) रुसुलम्मुबश्शिरीन व मुन्ज़िरीन लिअल्ला यकून लिन्नासि अलल्लाहि हुज्जतुम्-बअ्दर्रुसुलि त् व कानल्लाहु अज़ीज़न् हकीमन् (१६५)

لا يحب الله ٦ ٨٢ النساء ٤

عظيما ﴿١٥٦﴾ وقولهم انا قتلنا المسيح عيسى ابن مريم رسول الله
وما قتلوه وما صلبوه ولكن شبه لهم وان الذين
اختلفوا فيه لفي شك منه ما لهم به من علم الا اتباع
الظن وما قتلوه يقينا ﴿١٥٧﴾ بل رفعه الله اليه وكان الله
عزيزا حكيما ﴿١٥٨﴾ وان من اهل الكتب الا ليؤمنن به قبل
موته ويوم القيمة يكون عليهم شهيدا ﴿١٥٩﴾ فبظلم من
الذين هادوا حرمنا عليهم طيبت احلت لهم وبصدهم
عن سبيل الله كثيرا ﴿١٦٠﴾ واخذهم الربوا وقد نهوا عنه و
اكلهم اموال الناس بالباطل واعتدنا للكفرين منهم
عذابا اليما ﴿١٦١﴾ لكن الراسخون في العلم منهم والمؤمنون يؤمنون
بما انزل اليك وما انزل من قبلك والمقيمين الصلوة و
المؤتون الزكوة والمؤمنون بالله واليوم الاخر اولئك
سنؤتيهم اجرا عظيما ﴿١٦٢﴾ انا اوحينا اليك كما اوحينا الى نوح
والنبين من بعده واوحينا الى ابرهيم واسمعيل واسحق
ويعقوب والاسباط وعيسى وايوب ويونس وهرون وسليمن
واتينا داود زبورا ﴿١٦٣﴾ ورسلا قد قصصنهم عليك من قبل
ورسلا لم نقصصهم عليك وكلم الله موسى تكليما ﴿١٦٤﴾ رسلا

منزل

★ रु. २२/२ आ १०

और (उनके बड़े गर्व से) इस कहने की वजह से कि हमने मरियम के बेटे ओसा मसीह को, जो अल्लाह के रसूल थे, क़त्ल कर डाला। और न (तो उन्होंने) उनको क़त्ल किया और न उनको सूली पर चढ़ा सके मगर उनको उनकी (सूरत जैसा) धोखा मालूम हुआ§ और जो लोग इस बारे में (तरह तरह की) कई बातें निकालते हैं‡ तो वे इस मामले में भ्रम में पड़े हैं। इनको इसकी (सही) ख़बर तो है नहीं मगर सिर्फ़ अटकल के पीछे दौड़े चले जा रहे हैं और यक़ीनन ओसा को (लोगों ने) क़त्ल नहीं किया।(१५७) बल्कि उनको अल्लाह ने अपनी तरफ़ उठा लिया और अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है।(१५८) और जितने किताब वाले हैं ज़रूर उनके मरने से पहले (सबके सब) उन पर ईमान लावेंगे और क़ियामत के दिन (ओसा) उनका गवाह होगा†।(१५९) सो यहूदियों के गुनाह के सबब हमने कितनी पाक चीज़ें जो उनके लिए (पहले) हलाल थीं उन पर हराम कर दीं@ और इस वजह से (भी ऐसा किया कि) अक्सर अल्लाह की राह से (लोगों को) बहुत रोकते थे।(१६०) और (इस वजह से भी कि बार बार) उनको ब्याज लेने की मनाई कर दी गई थी इस पर भी ब्याज लेते थे और (इस कारण से भी कि) लोगों के माल नाहक़ खा डालते थे और इनमें जो लोग (अल्लाह के हुक्म से) इन्कार करते हैं उनके लिए हमने दुखदाई अज़ाब तैयार कर रखा है।(१६१) लेकिन उन (किताबवालों) में से जो इल्म में पक्के हैं और ईमानवाले हैं वे जो तुम पर उतरी है और जो तुमसे पहले उतरी हैं उनको मानते हैं और (यही लोग) नमाज़ पर क़ायम रहते और ज़कात देते और अल्लाह और क़ियामत पर यक़ीन रखते हैं। हम ऐसों को बड़ा सवाब देंगे।(१६२)★

★ रु. २२/२ आ १०

हमने तुम्हारी तरफ़ वही (संदेश) भेजा है जैसे हमने नूह और उनके बाद दूसरे पैग़म्बरों की तरफ़ भेजा था और (जैसे हमने) इब्राहीम और इस्माईल, इसहाक़ और याक़ूब और याक़ूब की सन्तान, ओसा, अयूब यूनिस, हारूँ और सुलेमान की तरफ़ खुदाई सन्देश भेजा था और हमने दाऊद को ज़बूर (किताब) दी थी।(१६३) और कितने पैग़म्बर हैं जिनका हाल हम पहले तुमसे बयान कर चुके हैं और कितने पैग़म्बर हैं जिनका हाल हमने तुमसे बयान नहीं किया और अल्लाह ने मूसा से प्रत्यक्ष बातें कीं।(१६४) और कितने पैग़म्बर खुशख़बरी देने वाले और डरानेवाले आचुके हैं ताकि पैग़म्बरों के आये बाद अल्लाह के सामने कोई भी उज़्र बाक़ी न रहे (कि उनको हिदायत ही न दी गई) अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त और बड़ा हिकमतवाला है (१६५)

---

§ हज़रत ओसा अ० को सूली नहीं हुई। अल्लाह का ऐसा चमत्कार हुआ कि उनकी जगह ऐसे शख्स को सूली पर चढ़ा दिया गया जिसको यहूदियों ने ओसा अ० समझने का धोखा खाया। ‡ ईसाई हज़रत ओसा अ० की सूली की बाबत तरह तरह की रवायतें रखते हैं। कोई कहते हैं, उनको सूली ही नहीं हुई; कोई कहते हैं सूली तो हुई लेकिन बाद को वे ज़िन्दः होकर आसमान पर चले गये; और बाज़ का कहना है कि जिस्म सूली पर चढ़ा लेकिन रूह अल्लाह तऽला के पास गई, वग़ैरः वग़ैरः। लेकिन ये सब अटकलें हैं। क़ुरआन हक़ीक़त बयान करता है कि वे क़त्ल नहीं हुए और अल्लाह ने उन्हें अपने पास उठा लिया। † हज़रत ओसा अ० अभी आसमान पर ज़िन्दः हैं। जब यहूद में दज्जाल पैदा होगा तब इस जहान में आकर उसको मारेंगे और यहूदी व ओसाई सब उन पर ईमान लावेंगे कि वे सूली पर नहीं चढ़े थे; और क़ियामत के दिन वह इन लोगों की करनी पर अल्लाह के सामने गवाह होंगे—तफ्सीर शाह अब्दुल क़ादिर साहब। @ इन हराम की हुई चीज़ों का ज़िक्र सूरः अनआम आयत १४६ में है।

लाकिनिल्लाहु यश्हदु बिमा अन्ज़ल अिलैक अन्ज़लहू बिअिल्मिही ज् वल्-मलाअिकतु यश्हदून त् व कफ़ा बिल्लाहि शहीदन् त् (१६६) अिन्नल्लज़ीन कफ़रू व सद्दू अन् सबीलिल्लाहि क़द् ज़ल्लू ज़लालम्बअीदन् (१६७) अिन्नल्लज़ीन कफ़रू व ज़लमू लम् यकुनिल्लाहु लियग़्फ़िर लहुम् व ला लियह्दियहुम् तरीक़न् ला (१६८) अिल्ला तरीक़ जहन्नम ख़ालिदीन फ़ीहा अबदन् त् व कान ज़ालिक अलल्लाहि यसीरन् (१६९) या अैयुहन्नासु क़द् जाअ कुमुर्रसूलु बिल्हक़्क़ि मिर्रब्बिकुम् फ़आमिनू ख़ैरल्लकुम् त् व अिन् तक्फ़ुरू फ़अिन्न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्-अर्ज़ि त् व कानल्लाहु अलीमन् हकीमन् (१७०) या अह्लल्किताबि ला तग़्लू फ़ी दीनिकुम् व ला तक़ूलू अलल्लाहि अिल्लल्-हक़्क़ त् अिन्नमल्-मसीहु अीसब्नु मर्यम रसूलुल्लाहि व कलिमतुहू ज् अल्क़ाहा अिला मर्यम वरूहुम्मिन्हु ज् फ़आमिनू बिल्लाहि व रुसुलिही ज् क़िफ़् व ला तक़ूलू सलासतुन् त् अिन्तहू ख़ैरल्लकुम् त् अिन्नमल्लाहु अिलाहुँ-वाहिदुन् त् सुब्हानहू अैंयकून लहू वलदुन् म ● लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि त् व कफ़ा बिल्लाहि वकीलन् (१७१) ★ लैंयस्तन्किफ़ल्-मसीहु अैंयकून अब्दल्लिल्लाहि व लल्-मलाअिकतुल्-मुक़र्रबून त् व मैंयस्तन्किफ़् अन् अिबादतिही व यस्तक्बिर् फ़सयह्शुरुहुम् अिलैहि जमीअन् (१७२) फ़अम्मल्लज़ीन आमनू व अमिलुस्सालिहाति फ़युवफ़्फ़ीहिम् अुजूरहुम् व यज़ीदुहुम् मिन् फ़ज़्लिही ज् व अम्मल्लज़ीनस्तन्कफ़ू वस्तक्बरू फ़युअज़्ज़िबुहुम् अज़ाबन् अलीमन् ७ ला ० व ला यजिदून लहुम् मिन् दूनिल्लाहि वलीयौंव्व ला नसीरन् (१७३)

النساء ٤ — ٨٣ — لا يحب الله ٦

مبشرين ومنذرين لئلا يكون للناس على الله حجة بعد
الرسل وكان الله عزيزا حكيما ۝ لكن الله يشهد بما انزل
اليك انزله بعلمه والملئكة يشهدون وكفى بالله شهيدا ۝
ان الذين كفروا وصدوا عن سبيل الله قد ضلوا ضللا
بعيدا ۝ ان الذين كفروا وظلموا لم يكن الله ليغفر لهم
ولا ليهديهم طريقا ۝ الا طريق جهنم خلدين فيها ابدا
وكان ذلك على الله يسيرا ۝ يايها الناس قد جاءكم الرسول
بالحق من ربكم فامنوا خيرا لكم وان تكفروا فان لله ما
في السموت والارض وكان الله عليما حكيما ۝ يااهل الكتب
لا تغلوا في دينكم ولا تقولوا على الله الا الحق انما المسيح
عيسى ابن مريم رسول الله وكلمته القها الى مريم و
روح منه فامنوا بالله ورسله ولا تقولوا ثلثة انتهوا خيرا
لكم انما الله اله واحد سبحنه ان يكون له ولد له ما
في السموت وما في الارض وكفى بالله وكيلا ۝ لن
يستنكف المسيح ان يكون عبدا لله ولا الملئكة المقربون
ومن يستنكف عن عبادته ويستكبر فسيحشرهم اليه جميعا ۝
فاما الذين امنوا وعملوا الصلحت فيوفيهم اجورهم و

منزل ١

● व. लाज़िम ★ रु. २३/३ आ ६

(ऐ नबी ! लोग भले ही न भी मानें) लेकिन जो कुछ अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ उतारा है अल्लाह (उसके ज़रिये) गवाही देता है कि अपने (कमाल) इल्म से उसको उतारा है और फ़रिश्ते (भी इसकी) गवाही देते हैं और (वैसे तो) अल्लाह (ही) की गवाही काफ़ी है। (१६६) जो लोग इन्कारी हुए और अल्लाह की राह से (दूसरों को) रोका वह बड़ी दूर भटक गये। (१६७) जो लोग काफ़िर हुए और (साथ ही) ज़ुल्म (भी) करते रहे उनको अल्लाह न तो हरगिज़ बख़्शेगा और न उनको राह ही दिखलायेगा। (१६८) सिवाय दोज़ख़ की राह जिसमें हमेशा रहेंगे और अल्लाह के लिए यह सहल है। (१६९) ऐ लोगो ! पैग़म्बर तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से ठीक बात लेकर आ चुके हैं। पस ईमान लाओ, तुम्हारा भला होगा, और अगर न मानोगे तो जो कुछ आसमान और ज़मीन में है अल्लाह ही का है और अल्लाह बड़ा जानने वाला बड़ा हिकमत वाला है। (१७०) ऐ किताबवालो! अपने दीन की बात में (अपनी तरफ़ से) न बढ़ाओ और अल्लाह की बाबत सच बात के सिवा (एक शब्द भी) न कहो। मरियम के बेटे अ़ीसामसीह बस अल्लाह के पैग़म्बर हैं और हैं अल्लाह का हुक्म जो उसने मरियम की तरफ़ भेज दिया और रूह है ख़ास अल्लाह की तरफ़ से, पस अल्लाह और उसके पैग़म्बरों पर ईमान लाओ और न कहो कि (अल्लाह) तीन§ हैं। यह (विचार) छोड़ दो; तुम्हारा भला होगा। अल्लाह एक मात्र इलाह (पूज्य) है, व इससे पाक है कि उसके सन्तान† हो ●। (सब) उसी का है जो कुछ आसमानों में और ज़मीन में है और अल्लाह काम का सम्भालने वाला काफ़ी है। (१७१)★

● व. ला ज़ि म ★ रु. २३/३ आ ६

मसीह को अल्लाह का बंदा होने में कदापि लज्जा नहीं और न अल्लाह के क़रीबी फ़रिश्तों को (ही लज्जा है) और जो अल्लाह की बंदगी से किनारा करे और घमण्ड करे तो अल्लाह जल्द अपने पास सबको खींच बुलायेगा। (१७२) फिर जो लोग ईमानवाले हैं और नेक काम किये अल्लाह उनको उनका पूरा बदला देगा और अपनी रहमत से (और) ज़्यादा (भी) देगा और जो लोग (अल्लाह का बन्दा बनने में) लजाते और घमण्ड करते हैं अल्लाह उनको दुखदायी सज़ा देगा। और अल्लाह के अलावा उनको न कोई साथी मिलेगा और न मददगार। (१७३)

---

§ ईसाई अल्लाह, अ़ीसा अ० और मरियम, तीनों को अल्लाह जैसा पूजते थे। यहाँ यह इशारा है कि ऐसी झूठी बात अल्लाह की शान में मत गढ़ो। † अल्लाह को आदमी जैसा न समझो। उसके लिए बेटी-बेटा रखना शोभा नहीं देता। इसलिए हज़रत अ़ीसा अ० ईश्वर-पुत्र नहीं, पैग़म्बर थे।

या ऐयुहन्नासु क़द् जा'अ कुम् बुर्हानुम्-मिर्रब्बिकुम् व अन्ज़ल्ना इलैकुम् नूरम्मुबीनन् (१७४) फ़अम्मल्लज़ीन आमनू बिल्लाहि वअ्तसमू बिही फ़सयुद्ख़िलुहुम् फ़ी रह्मतिम्-मिन्हु व फ़ज़्लिन् ला व यह्दीहिम् इलैहि सिरातम्-मुस्तक़ीमन् त् (१७५) यस्तफ़्तूनक त् क़ुलिल्लाहु युफ़्तीकुम् फ़िल्कलालति त् इनिम्रुउन् हलक लैस लहू वलदुँवलहू उख़्तुन् फ़लहा निस्फ़ु मा तरक ज् व हुव यरिसुहा इल्लम् यकुल्लहा वलदुन् त् फ़इन् कानतस्नतैनि फ़लहुमस्सुलुसानि मिम्मा तरक त् व इन् कानू इख़्वतर्रिजालौंव निसा'अन् फ़लिज़्ज़करि मिस्लु हज़्ज़िल्-उन्सयैनि त् युबैयिनुल्लाहु लकुम् अन् तज़िल्लू त् वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अलीमुन् (१७६) ★

॥ इति मंज़िल १ ॥

يَزِيدُهُم مِّن فَضْلِهِ ۖ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنكَفُوا وَاسْتَكْبَرُوا فَيُعَذِّبُهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا وَلَا يَجِدُونَ لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿١٧٣﴾
يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُم بُرْهَانٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَأَنزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا
مُّبِينًا ﴿١٧٤﴾ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَاعْتَصَمُوا بِهِ فَسَيُدْخِلُهُمْ
فِي رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ وَيَهْدِيهِمْ إِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ﴿١٧٥﴾
يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ ۚ إِنِ امْرُؤٌ هَلَكَ لَيْسَ
لَهُ وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَا إِن لَّمْ يَكُن
لَّهَا وَلَدٌ ۚ فَإِن كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثَانِ مِمَّا تَرَكَ ۚ وَإِن كَانُوا
إِخْوَةً رِّجَالًا وَنِسَاءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ ۗ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ
أَن تَضِلُّوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٧٦﴾

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْفُوا بِالْعُقُودِ ۚ أُحِلَّتْ لَكُم بَهِيمَةُ الْأَنْعَامِ
إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَأَنتُمْ حُرُمٌ ۗ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ
مَا يُرِيدُ ﴿١﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحِلُّوا شَعَائِرَ اللَّهِ وَلَا الشَّهْرَ
الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَائِدَ وَلَا آمِّينَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُونَ
فَضْلًا مِّن رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ۚ وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوا ۚ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ

☪ ५ सूरतुलमाइदः ११२ ☪

(मदनी) इसमें अरबी के १२४६४ हुरूफ़ २८४२ शब्द, १२० आयतें और १६ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीमि •

या ऐयुहल्लज़ीन आमनू औफ़ू बिल्उक़ूदि ۵ त् उहिल्लत् लकुम् बहीमतुल्-अन्आमि इल्ला मा युत्ला अलैकुम् ग़ैर मुहिल्लिस्सैदि व अन्तुम् हुरुमुन् त् इन्नल्लाह यह्कुमु मा युरीदु (१) या ऐयुहल्लज़ीन आमनू ला तुहिल्लू शआ'इरल्लाहि व लश्शह्रल्-हराम व लल्हद्य व लल्क़ला'इद व ला आ'म्मीनल्-बैतल्-हराम यब्तग़ून फ़ज़्लम्-मिर्रब्बिहिम् व रिज़्वानन् त् व इज़ा हलल्तुम् फ़स्तादू त् व ला यज्रिमन्नकुम् शनआनु क़ौमिन् अन् सद्दूकुम् अनिल्-मस्जिदिल्-हरामि अन् तअ्तदू म् • व तआवनू अलल्बिर्रि वत्तक़्वा स् व ला तआवनू अलल्-इस्मि वल्उद्वानि स् वत्तक़ुल्लाह त् इन्नल्लाह शदीदुल्-इक़ाबि (२) ●

रु. २४/४ आ ५

व. लाज़िम्

रु. ब. अ. १/४

ऐ लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनकर्ता की तरफ़ से हुज्जत§ आ चुकी और हमने तुम पर जगमगाती हुई रोशनी (क़ुर्आन) उतार दी (१७४) सो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाये और उन्होने उसी का मज़बूत (सहारा) पकड़ा तो अल्लाह उनको ज़ल्द अपनी कृपा और दया में ले लेगा, और उनको अपनी तरफ़ की सीधी राह पर पहुँचा देगा (१७५) (ऐ पैग़म्बर !) तुमसे हुक्म मांगते हैं; कह दो कि अल्लाह कलाला (जिसके संतान और बाप दादा न मौज़ूद हों उसे कलाला कहते हैं) के बारे में तुमको हुक्म देता है कि अगर कोई ऐसा मर्द मर जावे जिसके संतान न हो (न माँ-बाप ही हों) और उसके बहन हो तो बहन को उसके तर्के का आधा और अगर बहनों के संतान और माँ बाप न हों तो उसका वारिस वही भाई फिर अगर बहनें दो (या दो से ज़्यादः) हों तो उनको उसके तर्के में से दो तिहाई और अगर भाई-बहन (कई) हों तो दो औरतों के हिस्से के बराबर एक मर्द का हिस्सा होगा। तुम लोगों को भटकने से बचाने के ख़्याल से अल्लाह तुमसे (खोल-खोल कर हुक्म) बयान करता है और अल्लाह सब कुछ जानता है। (१७६)‡ ★

★ रु. २४ ४ आ ५

॥ इति मंज़िल १ ॥

५ सूरतुल्मा'अिदः ११२

(मदनी)*इसमें १२४६४ हुरूफ़, २८४२ कलिमात (शब्द), १२० आयतें और १६ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीमि

शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरबान है।

ऐ ईमानवालो ! (जब तुम ईमान ला चुके हो तो तुमको चाहिये कि अल्लाह के तमाम हुक्मों पर चलने का) क़रार पूरा करो। तुमको हलाल हैं (चरने वाले) चौपाये मवेशी सिवाय उनके जो (आगे) तुम्हें बताये जाते हैं। लेकिन जब तुम एहराम की हालत में हो तब शिकार को हलाल न समझना। बेशक अल्लाह जो चाहता है हुक्म देता है। (१) ऐ ईमानवालो! अल्लाह की निशानियों की बेहुरमुती (अनादर) न करना और न अदबवाले महीनों की और न क़ुर्बानी के जानवर जो मक्के को (क़ुर्बानी के लिए) जायँ और न उनको जिनके गलों में पट्टे◎ बाँध दिये गये हों, न उनको जो इज़्ज़तवाले घर को अपने परवरदिगार की रहमत और ख़ुशी ढूढ़ने जाते हों और जब एहराम❋ से निकलो तो शिकार करो। कुछ लोगों ने तुमको इज़्ज़तवाली मसजिद से रोका था; (उनकी) यह दुश्मनी तुमको (उनके ख़िलाफ़) ज़्यादती करने का सबब न हो • और नेकी और परहेज़गारी में एक दूसरे के मददगार हो। और गुनाह और ज़्यादती में एक दूसरे के मददगार न बनो♦ और अल्लाह से डरो क्योंकि अल्लाह का अज़ाब (दण्ड) सख़्त है। (२) ●

• व. ला ज़िम ● रु. ब्/ आ. १/४

§ खुली हुई दलील या निशानी ऐसी निशानी जिससे सत्य और असत्य में भेद किया जा सके। ‡ सूरे निसा में विरासत और तर्कः का खास हुक्म हुआ है। इसलिए यह आखिरी आयत भी उसी संबंध में नाज़िल होकर इस सूरः की समाप्ति की है। अदब वाले महीनों में लड़ाई न करो। ◎ एक काफ़िर कुछ ऊँट चुरा ले गया था। मुसलमानों ने देखा कि वह उनके गले में पट्टे डाले हुए काबे की ओर क़ुर्बानी के विचार से लिए जा रहा है। उन्होंने उन ऊँटों को उस दग़ाबाज़ से छीन लेना चाहा। इस पर यह आयत उतरी कि अल्लाह की क़ुर्बानी के नाम पर जाने वाले जानवर, भले ही काफ़िरों के हों, उनका छीनना हलाल नहीं। ❋ एहराम—मुसलमान हज्ज (यात्रा) के प्रारम्भ से समाप्ति तक एक कपड़ा पहनते हैं, उसे एहराम कहते हैं। उसके उतार देने के बाद शिकार करना न करना तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है। ♦ किसी वक़्त मक्का के मुशरिकों ने मुसलमानों के काबः का हज करने पर रोक लगा दी थी। आयत-२ में उसकी याद दिलाते हुए हुक्म हुआ है कि [पेज १६१ पर]

* इस सूरः की ११२ और ११४ वीं आयत में "अल्मा'अिदः (ख़्वान निअ़्मत)—खाने [पेज १६१ पर]

हुर्रिमत् अलैकुमुलमैततु वद्दमु व लह़्मुल् - ख़िन्ज़ीरि व मा' उहिल्ल लिग़ैरिल्लाहि बिहदी वल्मुन्ख़निक़तु वल्मौक़ूज़तु वल्मुतरद्दियतु वन्नतीहतु व मा' अकलस्सबुअ़ु अिल्ला मा ज़क्कैतुम् क़िफ़ व मा ज़ुबिह़ अ़लन्नुसुबि व अन् तस्तक़्सिमू बिल्-अज़्लामि तृ ज़ालिकुम् फ़िस्क़ुन् तृ अल्यौम यअिसल्लज़ीन कफ़रू मिन् दीनिकुम् फ़ला तख़शौहुम् वख़शौनि तृ अल्यौम अक्मल्तु लकुम् दीनकुम् व अत्मम्तु अ़लैकुम् निअ़्मती व रज़ीतु लकुमुल्-अिस्लाम दीनन् तृ फ़मनिज़्तुर्र फ़ी मख़्मसतिन् ग़ैर मुतजानिफ़िल् - लिअिस्मिन् ला फ़अिन्नल्लाह ग़फ़ूरुर्रह़ीमुन् (३) यस्अलूनक मा ज़ा' उह़िल्ल लहुम् तृ क़ुल् उह़िल्ल लकुमुत्-तैयिबातु ला व मा अ़ल्लम्तुम् मिनल्-जवारिहि मुकल्लिबीन तुअ़ल्लिमूनहुन्न मिम्मा अ़ल्लमकुमुल्लाहु ज़् फ़कुलू मिम्मा' अम्सक्न अ़लैकुम् वज़्कुरुस्मल्लाहि अ़लैहि स़् वत्तक़ुल्लाह तृ अिन्नल्लाह सरीअ़ुल्ह़िसाबि (४) अल्यौम उहिल्ल लकुमुत्तैयिबातु तृ व तआ़मुल्लज़ीन ऊतुल् - किताब हिल्लुल्लकुम् स़् व तआ़मुकुम् हिल्लुल्लहुम् ज़् वल्मुह़्सनातु मिनल् - मुअ्मिनाति वल्मुह़्सनातु मिनल्लज़ीन ऊतुल्-किताब मिन् क़ब्लिकुम् अिज़ा' आतैतुमूहुन्न अुजूरहुन्न मुह़्सिनीन ग़ैर मुसाफ़िह़ीन व ला मुत्तख़िज़ी' अख़्दानिन् तृ व मैंयक्फ़ुर् बिल्अीमानि फ़क़द् ह़बित्त अ़मलुहु ज़् व हुव फ़िल्-आख़िरति मिनल्-ख़ासिरीन (५) ★

لا يحب الله ٦ ٨٥ المآئدة ٥

شنان قوم ان صدوكم عن المسجد الحرام ان تعتدوا ۘ وتعاونوا
على البر والتقوى ۖ ولا تعاونوا على الاثم والعدوان ۖ واتقوا الله
ان الله شديد العقاب ۝ حرمت عليكم الميتة والدم ولحم
الخنزير وما اهل لغير الله به والمنخنقة والموقوذة والمتردية
والنطيحة وما اكل السبع الا ما ذكيتم وما ذبح على النصب
وان تستقسموا بالازلام ذلكم فسق ۗ اليوم يئس الذين
كفروا من دينكم فلا تخشوهم واخشون ۚ اليوم اكملت لكم
دينكم واتممت عليكم نعمتي ورضيت لكم الاسلام دينا ۚ
فمن اضطر في مخمصة غير متجانف لاثم ۙ فان الله غفور
رحيم ۝ يسئلونك ماذا احل لهم ۖ قل احل لكم الطيبت ۙ و
ما علمتم من الجوارح مكلبين تعلمونهن مما علمكم الله فكلوا
مما امسكن عليكم واذكروا اسم الله عليه ۖ واتقوا الله ۚ ان
الله سريع الحساب ۝ اليوم احل لكم الطيبت ۖ وطعام الذين
اوتوا الكتب حل لكم ۖ وطعامكم حل لهم ۖ والمحصنت من
المؤمنت والمحصنت من الذين اوتوا الكتب من قبلكم اذا
اتيتموهن اجورهن محصنين غير مسفحين ولا متخذي
اخدان ۗ ومن يكفر بالايمان فقد حبط عمله ۫ وهو في

منزل

रु. १ / ५ आ ५

मरा हुआ, लोहू और सुअर का मांस और जो अल्लाह के सिवाय किसी और के नाम पर चढ़ाया गया हो और जो गला घुटने से या चोट से या गिर कर मरा हो या सींगों से मारा जाने से यह सब चीजें तुम पर हराम कर दी गईं और जिसको दरिन्दों ने फ़ाड़ खाया हो (वह भी हराम है) सिवाय जिसको तुम (उसके मरने के पहले ही) हलाल कर लो। और जो (अल्लाह के अलावा) किसी स्थान पर (चढ़ाकर) ज़िबह (बलि) किया गया हो, (हराम हैं) और यह कि पाँसे डालकर क़िस्मत मालूम करना, यह सब गुनाह है। आज काफ़िर तुम्हारे दीन की तरफ़ से नाउम्मीद हो गये; तो उनसे न डरो बल्कि मुझ ही से डरो। आज मैंने तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिए पूरा कर दिया और तुम पर अपना एहसान पूरा कर दिया और मैंने तुम्हारे लिए दीन इस्लाम को पसन्द किया। फिर जो भूख से लाचार हो लेकिन गुनाह की तरफ़ उसकी चाह न हो, तो (ऐसी सूरत में हराम चीज़ से जान बचा लेना गुनाह नहीं) अल्लाह बख़्नेवाला मेहरबान है। (३) तुमसे पूछते हैं कि कौन-कौन सी चीजें उनके लिए हलाल की गई हैं, सो तुम उनको समझा दो कि पाक चीज़ें तुम्हारे लिए (सब) हलाल हैं और शिकारी जानवर जो तुमने शिकार के लिए (वैसे ही) सधा रखे हों, और जैसा तुमको अल्लाह ने सिखला रखा है वैसा ही तुमने उनको सिखला रखा है, तो जो तुम्हारे लिए वे पकड़ रखें तो उसको खाओ, मगर (शिकारी जानवर के छोड़ते वक़्त) उस पर अल्लाह का नाम ले लिया करो। और अल्लाह से डरते रहो क्योंकि अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (४) आज पाक चीजें तुम्हारे लिए सब हलाल कर दी गईं और किताबवालों का खाना तुम्हारे लिए हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिए हलाल है, और मुसलमान (पार्सा) बीवियाँ और जिन लोगों को तुमसे पहले किताब दी जा चुकी है उनमें को पार्सा बीवियाँ (तुम्हारे लिए हलाल हैं) बशर्ते कि उनके मिहर उनके हवाले करो (और) तुम्हारा इरादा क़ैद (निकाह) में लाने का हो न कि मस्ती निकालने का और न चोरी-छिपे आशनाई करने का और जो ईमान (की इन बातों) को न माने तो उसका (सारा) किया-धरा अकारथ होगा। आख़िरत में वह नुक़सान उठाने वालों में होगा। (५) ★

★ रु. १ — ५ अ. ५

[पेज १८६ से] उसका बदला लेने की ग़रज़ से मुसलमान काफ़िरों को काबः जाते समय न तंग करें न उनके जानवर जो क़ुर्बानी के लिए काबे को जा रहे हों उनको ही छीनें, भले ही वे दुश्मनों के हों। दुश्मनों के भी नेक कामों में बाधा डालना अल्लाह के हुक्मों का अनादर करना है।

[पेज १८६से] से भरा दस्तरख़वान" शब्द से सूरः का नामकरण है। सूरः के नाज़िल होने का समय छठी हिजरी का अन्त या सातवीं हिजरी का शुरू है जबकि 'हुदैबिया की सन्धि' के बाद मुसलमानों की स्थिति अब काफ़ी मज़बूत और फैलाव में हो चुकी थी। मदीना के यहूदियों का ज़ोर समाप्त हो चुका था। 'जंग खन्दक़' के बाद मक्का के क़ुरैशों का बल भी टूट चुका था। आस पास के और भी तमाम क़बीले या तो मुसलमान हो चले थे या मुसलमानों के ज़ोर से दब चुके थे। इस्लाम एक अक़ीदा मात्र न होकर उसकी धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक बुनियाद मज़बूत और प्रसिद्ध हो चुकी थी। अब धार्मिक शिक्षाओं पर एक हुकूमत को चलाना था, दूर दूर तक क़ौमों को उसी साँचे में ढालना था।

आयत १—५ में समाज और अल्लाह के लिए अपने फ़र्ज़ पूरी तौर पर पालना, हराम और हलाल भोजन और बिना तरफ़दारी व नफ़रत इन्साफ़ पर अमल और अहलकिताब यानें यहूदी व ईसाई औरतों से निकाह करने की इजाज़त का बयान है। आ० ६—११ में शरीर की पवित्रता के साथ-साथ इन्साफ़ और नेक अमली ही को अल्लाह की ख़ुशी का ज़रिया बताया है। आ० १२ से २८ में यहूदी व ईसाई [पेज १६५ पर]

या ऐयुहल्लजीन आमनू इजा क़ुम्तुम् इलस्सलाति फ़ग़्सिलू वुजूहकुम् व ऐदियकुम् इललमराफ़िक़ि वम्सहू बिरुऊसिकुम् व अर्जुलकुम् इलल्कअ्बैनि ṭ व इन् कुन्तुम् जुनुबन् फ़त्तहहरू ṭ व इन् कुन्तुम्-मर्ज़ा औ अला सफ़रिन् औ जाअ अहदुम् - मिन्कुम् - मिनलग़ाइति औ लामस्तुमुन्निसाअ फ़लम् तजिदू माअन् फ़तयम्ममू सईदन् तैयिबन् फ़म्सहू बिवुजूहिकुम् व ऐदीकुम् मिन्हु ṭ मा युरीदुल्लाहु लियज्अल अलैकुम् मिन् हरजिंव्व लाकिंयुरीदु लियुतह्हिरकुम् व लियुतिम्म निअ़्मतहू अलैकुम् लअल्लकुम् तश्कुरून (६) वज़्कुरू निअ़्मतल्लाहि अलैकुम् व मीसाक़हुल्लजी वासक़कुम् बिही ला इज् क़ुल्तुम् समिअ़्ना व अतअ़्ना ज़् वत्तक़ुल्लाह ṭ इन्नल्लाह अलीमुम् - बिज़ातिस्सुदूरि (७) या ऐयुहल्लजीन आमनू कूनू क़ौवामीन लिल्लाहि शुहदाअ बिल्क़िस्ति ज़् व ला यज्रिमन्नकुम् शनआनु क़ौमिन् अला अल्ला तअ़्दिलू ṭ इअ़्दिलू क़िफ़ हुव अक़्रबु लित्तक़्वा ज़् वत्तक़ुल्लाह ṭ इन्नल्लाह ख़बीरुम् - बिमा तअ़्मलून (८) व अदल्लाहुल्लजीन आमनू व अमिलुस्सालिहाति ला लहुम् मग़्फ़िरतुंव अज्रुन् अज़ीमुन् (९) वल्लजीन कफ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइक अस्हाबुल्-जहीमि (१०) या ऐयुहल्लजीन आमनुज़्कुरू निअ़्मतल्लाहि अलैकुम् इज् हम्म क़ौमुन् अंयब्सुतू इलैकुम् ऐदियहुम् फ़कफ़्फ़ ऐदियहुम् अन्कुम् ज़् वत्तक़ुल्लाह ṭ व अलल्लाहि फ़ल्यतवक्कलिल्-मुअ्मिनून (११)

المآئدة ٥ — ٨٦ — لا يحب الله ٦

الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ؕ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٦ وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖۤ ۙ اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ؗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٧ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ؗ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰۤى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۫ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ؗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝٨ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝٩ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝١٠ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْۤا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١١ وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۚ وَبَعَثْنَا

منزل ٢

रु. २ | ६ आ ६

ऐ ईमानवालो ! जब तुम नमाज़ के लिए तैयार हो तो अपने मुँह और कुहनियों तक हाथ धो लिया करो और अपने सिर पर मसह् कर (गीला हाथ फेर) लिया करो और अपने पैरों को मुखों तक धो लिया करो और अगर नापाक हो तो (नहाकर) पाक हो लिया करो, और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुममें से कोई जायेज़रूर (शौच) से आया हो या तुमने स्त्रियों से सुहबत की हो और तुमको पानी न मिल सके तो साफ़ मिट्टी लेकर उससे (तयम्मुम यानी) अपने मुँह और हाथों को मल लिया करो। अल्लाह तुम को किसी तरह की तंगी में नहीं डालना चाहता बल्कि तुमको पाक साफ़ रखना चाहता है और यह कि तुम पर अपना एहसान पूरा करे ताक़ि तुम शुक्र करो। (६) और अल्लाह ने जो तुम पर एहसान किया है उसको याद करो और उसका अहद (वचन) जिस (के पूरा करने) की वह तुमसे प्रतिज्ञा ले चुका है जबकि तुमने कहा कि हमने (तेरा हुक्म) सुना और (तेरा हुक्म) माना और अल्लाह (की अवज्ञा) से डरते रहो क्योंकि अल्लाह दिलों की बातें जानता (याने अन्तर्यामी) है। (७) ऐ ईमानवालो ! अल्लाह के वास्ते इन्साफ़ के साथ गवाही देने को तैय्यार रहा करो और एक गरोह की दुश्मनी के सबब इन्साफ़ न छोड़ो (बल्कि दोस्त-दुश्मन हर मामले में) इन्साफ़ पर क़ायम रहो, यही परहेज़गारी से ज्यादह नज़दीक है और अल्लाह से डरते रहो, अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है। (८) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये, अल्लाह से उनका अहद है कि (आख़िरत में) उनके लिए बख़शीश (क्षमा) है और बड़ा बदला है। (९) और जिन लोगों ने (दीन से) इन्कार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वह दोज़ख़ी हैं। (१०) ऐ ईमानवालो ! अल्लाह ने तुम पर जो एहसान किये हैं उनको याद करो कि जब (कुछ) लोगों (क़ुरेश जाति) ने तुम पर हाथ छोड़ने का इरादा किया था तो अल्लाह ने तुम (पर चलने) से उनके हाथों को रोक दिया॰ और अल्लाह से डरते रहो और ईमानवालों को चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा रखें। (११)★

★ रु. २ | ६ आ ६

॰ तज़किरा है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ जंग 'ज़ातुल रक़ाअ' में जाते वक़्त एक जंगल में पेड़ों की छाया में ठहरे और तमाम लोगों की आँख लग गई। हज़रत मुहम्मद स॰ की तलवार जो दरख़्त में लटक रही थी 'ग़ौरस बिन हारिस' ने चुपके से आकर उतार ली और तलवार को म्यान से खींचकर हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ की तरफ़ झपका और वार करना चाहा। हज़रत मुहम्मद स॰ से कहाः—अब तुम को मुझसे कौन बचा सकता है ? आप ने फ़र्माया 'अल्लाह'। इतने में हज़रत जिब्राईल अलैहि. स्सलाम ने आकर ग़ौरस के सीने में एक थपकी मारी जिससे तलवार उसके हाथ से गिर गई। तलवार को फ़ौरन हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ ने उठा लिया और फ़रमाया 'बता अब तुझको मुझसे कौन बचा सकता है ?' उसने कहा-'आप'। आप ने क्षमा करते हुए फ़र्मायाः— 'जा अपना रास्ता पकड़।' दूसरा तज़किरः है कि एक बार यहूदियों के एक गरोह ने नबी स॰ व उनके चुनीदाँ सहाबाओं को दावत दी इस इरादे से कि उस दावत के मौक़े पर यकबारगी उन पर टूट पड़ा जाय व उनका ख़ात्मा कर दिया जाय। अल्लाह की क़ुदरत से ऐन मौक़े पर रसूल स॰ को उनके इरादे का पता चल गया और वे उस दावत में फिर शरीक न हुये, और उस शुदनी से बाल-बाल बचे।

व लक़द् अख़ज़ल्लाहु मीसाक़ बनी' अिस्रा'ईल ज व बअस्ना मिन्हुमुस्नै अशर
नक़ीबन् त़ व क़ालल्लाहु अिन्नी मअकुम् त़ लअिन् अक़म्तुमुस्सलात व आतैतुमुज्-
ज़कात व आमन्तुम् बिरुसुली व अ़ज़्ज़र्तुमूहुम् व अक़्रज़्तुमुल्लाह क़र्ज़न हसनल्लअु-
कफ़्फ़िरन्न अन्कुम् सैयिआतिकुम् व लअुद् ख़िलन्नकुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-
अन्हारु ज् फ़मन् कफ़र बअ्द ज़ालिक मिन्कुम्
फ़क़द् ज़ल्ल सवा'अस्सबीलि (१२) फ़बिमा
नक़्ज़िहिम् मीसाक़हुम् लअन्नाहुम् व जअल्ना
क़ुलूबहुम् क़ासियतन् ज युहर्रिफ़ूनल्कलिम
अम्मवाज़ि - अिही ला व नसू हज़्ज़म्मिम्मा
ज़ुक्किरू बिही ज् व ला तज़ालु तत्तलिअु अला
ख़ा'अिनतिम्-मिन्हुम् अिल्ला क़लीलम्-मिन्हुम्
फ़अ्फ़ु अन्हुम् वस्फ़ह् त़ अिन्नल्लाह युहिब्बुल्-
मुह्सिनीन (१३) व मिनल्लज़ीन क़ालू' अिन्ना
नसारा' अख़ज़्ना मीसाक़हुम् फ़नसू हज़्ज़म्मिम्मा
ज़ुक्किरू बिही स़ फ़अग़्रैना बैनहुमुल्-अदावत
वल्बग़्ज़ा'अ अिला यौमिल्-क़ियामति त़ व

منهم اثني عشر نقيبا وقال الله اني معكم لئن اقمتم
الصلوة واتيتم الزكوة وامنتم برسلي وعزرتموهم و
اقرضتم الله قرضا حسنا لاكفرن عنكم سياتكم ولادخلنكم
جنت تجري من تحتها الانهر فمن كفر بعد ذلك منكم
فقد ضل سواء السبيل ۝ فبما نقضهم ميثاقهم لعنهم و
جعلنا قلوبهم قسية يحرفون الكلم عن مواضعه ونسوا
حظا مما ذكروا به ولا تزال تطلع على خائنة منهم الا
قليلا منهم فاعف عنهم واصفح ان الله يحب المحسنين ۝
ومن الذين قالوا انا نصرى اخذنا ميثاقهم فنسوا حظا مما
ذكروا به فاغرينا بينهم العداوة والبغضاء الى يوم القيمة
وسوف ينبئهم الله بما كانوا يصنعون ۝ يا هل الكتب قد
جاءكم رسولنا يبين لكم كثيرا مما كنتم تخفون من الكتب
ويعفوا عن كثير قد جاءكم من الله نور وكتب مبين ۝
يهدي به الله من اتبع رضوانه سبل السلم ويخرجهم من
الظلمت الى النور باذنه ويهديهم الى صراط مستقيم ۝ لقد
كفر الذين قالوا ان الله هو المسيح ابن مريم قل فمن يملك
من الله شيئا ان اراد ان يهلك المسيح ابن مريم وامه و

सौफ़ युनब्बिअु-हुमुल्लाहु बिमा कानू यस्नअून (१४) या' अहलल्किताबि क़द्
जा'अकुम् रसूलुना युबैयिनु लकुम् कसीरम्मिम्मा कुन्तुम् तुख़्फ़ून मिनल्किताबि व
यअ्फ़ू अन् कसीरिन् ५ त़ क़द् जा'अकुम् मिनल्लाहि नूरूँव किताबुम्मुबीनुन् ला
(१५) य्यह्दी बिहिल्लाहु मनित्तबअ रिज़्वानहु सुबुलस्सलामि व युख़्रिजुहुम्
मिनज़्ज़ुलुमाति अिलन्नूरि बिअिज़्निही व यह्दीहिम् अिला सिरातिम्-मुस्तक़ीमिन्
(१६) लक़द् कफ़रल्लज़ीन क़ालू' अिन्नल्लाह हुवल्मसीहुब्नु मर्यम त़ क़ुल्
फ़मैंयम्लिकु मिनल्लाहि शैअन् अिन् अराद अैंयुह्लिकल्-मसीहब्न मर्यम व
अुम्महु व मन् फ़िल्अर्ज़ि जमीअन् त़ व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा
बैनहुमा त़ यख़्लुक़ु मा यशा'अु त़ वल्लाहु अला कुल्लि शैअिन् क़दीरुन् (१७)

और अल्लाह इसराईल के बेटों से वचन ले चुका है और हमने उन्हीं में के बारह सरदार मुक़र्रर किये। और अल्लाह ने (बनी इसराईल से यह भी) कहा कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, अगर (तुम) नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात देते रहोगे और मेरे पैग़म्बरों को मानोगे और उनकी मदद करोगे और अच्छे तौर से अल्लाह को क़र्ज़ देते रहोगे तो मैं ज़रूर तुम्हारे गुनाह तुमसे दूर करूँगा और (ज़रूर) तुमको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, फिर इसके बाद (भी) जो तुममें से फिरेगा तो बेशक वह सीधी राह से भटक गया। (१२) पस उन्हीं लोगों के अपना अहद तोड़ने के कारण हमने उनको फटकार दिया और उनके दिलों को सख़्त कर दिया कि वह (अल्लाह के) कलाम को उनके ठिकानों (आशय) से बदलते हैं और उनको जो शिक्षा दी गई थी उसमें से (एक बड़ा) हिस्सा भुला बैठे@ और उनमें से चन्द लोगों के सिवाय उनकी दग़ा की ख़बर तुमको होती ही रहती है, तो उन लोगों के गुनाह माफ़ करो और दर-गुज़र करो क्योंकि अल्लाह नेककारों को पसन्द करता है। (१३) और जो लोग अपने को ईसाई कहते हैं, हमने (इसी तरह) उनसे (भी) वचन लिया था, तो वह भी जो कुछ उनको शिक्षा दी गई थी उसका एक (बड़ा) हिस्सा भूल गये। फिर हमने उनमें दुश्मनी और ईर्षा क़ियामत के दिन तक के लिये लगा दी और जल्द ही अल्लाह उनको बतला देगा जो कुछ वह करते रहे (१४) ऐ किताबवालो! तुम्हारे पास हमारा पैग़म्बर (मुहम्मद स०) आ चुका है और किताब (तौरात) में से जो कुछ तुम छिपाते रहे हो वह उसमें से बहुत कुछ तुम्हारे सामने साफ़-साफ़ बयान कर रहा है और बहुतेरी बातों को दर गुज़र करता है। अल्लाह की तरफ़ से तुम्हारे पास रोशनी और वाजेह किताब (क़ुर्आन) आ चुका है। (१५) जो अल्लाह की मरज़ी पर चलते हैं उनको अल्लाह उस (क़ुर्आन) के ज़रिये सलामती की राह दिखलाता है और अपने हुक्म से उनको अँधेरे से निकालकर रोशनी में लाता है और उनको सीधी राह पर चलाता है। (१६) जो लोग मरियम के बेटे मसीह को ही अल्लाह कहते हैं, वह बेशक काफ़िर हैं। (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि अगर मरियम के बेटे मसीह को और उसकी माता को और जितने लोग ज़मीन में हैं सबको अल्लाह मार डालना चाहे तो उसके आगे किसका बस है। और आसमान और ज़मीन और जो कुछ दोनों (आसमान और ज़मीन) के बीच में है अल्लाह ही का है। जो चाहता है पैदा करता है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर (सर्वशक्तिमान) है। (१७)

[पेज १६१ से] जिन्होंने सच्ची राह से अपने को भटका लिया था, उनको फिर चेतावनी दी गई है। आ० २६ से ४५ में हसद करने वालों के हाथ ईमानवालों को पहुँची हानि का दुख न करने की उनको हिदायत है। अल्लाह ज़ालिमों को ज़रूर उनकी सज़ा देकर रहेगा। आ० ४६ से ८५ में बिला पक्षपात इन्साफ़ पर क़ायम रहकर अपनी क़ौम और दीन की रक्षा करने व ईसाइयों के भी अच्छे गुणों की क़दर करने की हिदायत है। आ० ८६ से १०६ भलाई और इन्साफ़ का शुक्रगुज़ारी से बसर करते हुये ज्यादती से बचे रहने की शिक्षा और ग़लत क़सम, नशा, जुआँ. पाक जगह की बेहुरमती बिला असलियत की बातों को मज़हब मान कर उन पर अमल, और ग़लत गवाही की निन्दा है। आ० ११० से अन्त तक हज़रत ईसा अ० के चमत्कार और उनके माननेवालों द्वारा आगे चलकर उनका बेजा इस्तेमाल की चर्चा है।

@ इसी बड़े हिस्से में मुहम्मद स० की पैग़म्बरी की तसदीक़ भी है।

व क़ालतिल्-यहूदु वन्नसारा नह्नु अब्नाअुल्लाहि व अहिब्बाअुहू त़् क़ुल् फ़लिम युअ़ज्ज़िबुकुम् बिज़ुनूबिकुम् त़् बल् अन्तुम् बशरुम्मिम्मन् ख़लक़ त़् यग़्फ़िरु लिमैंयशाअु व युअ़ज्ज़िबु मैंयशाअु त़् व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा ज़् व अिलैहिल्-मसीरु (१८) याअहलल् - किताबि क़द् जाअकुम् रसूलुना युबैयिनु लकुम् अ़ला फ़त्रतिम्-मिनर्रुसुलि अन् तक़ूलू मा जाअना मिम्बशीरिंव्व ला नज़ीरिन् ज़् फ़क़द् जाअकुम् बशीरूंव नज़ीरुन् त़् वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैअिन् क़दीरुन् (१९) ★ व अिज़् क़ाल मूसा लिक़ौमिही याक़ौमिज़्कुरू निअ़मतल्लाहि अ़लैकुम् अिज़् जअ़ल फ़ीकुम् अम्बियाअ व जअ़लकुम् मुलूकन् क़् सला ०व आताकुम् मालम् युअ़्ति अहदम्मिनल्-आ़लमीन (२०) या क़ौमिद्ख़ुलुल्-अर्ज़ल्-मुक़द्दसतल्-लती कतबल्लाहु लकुम् व ला तर्तद्दू अ़ला अद्बारिकुम् फ़तन्क़लिबू ख़ासिरीन (२१) क़ालू या मूसा अिन्न फ़ीहा क़ौमन् जब्बारीन क़् सला व अिन्ना लन् नद्ख़ुलहा हत्ता यख़्रुजू मिन्हा ज़् फ़अिंयख़्रुजू मिन्हा फ़अिन्ना दाख़िलून (२२) क़ाल रजुलानि मिनल्लज़ीन यख़ाफ़ून अन्अ़मल्लाहु अ़लैहिमद्ख़ुलू अ़लैहिमुल्बाब ज़् फ़अिज़ा दख़ल्तुमूहु फ़अिन्नकुम् ग़ालिबून ० ज़् व अ़लल्लाहि फ़तवक्कलू अिन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (२३) क़ालू या मूसा अिन्ना लन्नद्ख़ुलहा अबदम् - मा दामू फ़ीहा फ़ज़्हब् अन्त वरब्बुक फ़क़ातिला अिन्ना - हाहुना क़ाअिदून (२४)

★ रु. ३ । ७ आ ८

لايحب الله ٦ ٨٨ المائدة ٥

مَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ۗ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٧﴾ وَ
قَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ أَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَأَحِبّٰٓؤُهُ ۚ قُلْ فَلِمَ
يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوبِكُمْ ۖ بَلْ أَنْتُمْ بَشَرٌ مِمَّنْ خَلَقَ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ
وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ
وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ﴿١٨﴾ يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ
عَلٰى فَتْرَةٍ مِنَ الرُّسُلِ أَنْ تَقُولُوا مَا جَاءَنَا مِنْ بَشِيرٍ وَلَا
نَذِيرٍ ۖ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ﴿١٩﴾ وَإِذْ قَالَ مُوسٰى لِقَوْمِهِ يٰقَوْمِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ
إِذْ جَعَلَ فِيكُمْ أَنْبِيَاءَ وَجَعَلَكُمْ مُلُوكًا ۖ وَآتٰىكُمْ مَا لَمْ يُؤْتِ
أَحَدًا مِنَ الْعٰلَمِينَ ﴿٢٠﴾ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي
كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوا عَلٰٓى أَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خٰسِرِينَ ﴿٢١﴾
قَالُوا يٰمُوسٰٓى إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَّارِينَ ۖ وَإِنَّا لَنْ نَدْخُلَهَا حَتّٰى
يَخْرُجُوا مِنْهَا ۖ فَإِنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِنَّا دٰخِلُونَ ﴿٢٢﴾ قَالَ رَجُلَانِ مِنَ
الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَإِذَا
دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُمْ غٰلِبُونَ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٢٣﴾
قَالُوا يٰمُوسٰٓى إِنَّا لَنْ نَدْخُلَهَا أَبَدًا مَا دَامُوا فِيهَا فَاذْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ

ع

منزل ٢

और यहूदी व ईसाई दावा करते हैं कि हम अल्लाह के बेटे और उसके प्यारे हैं (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कहो (कि अगर यह सही है तो) वह तुम्हारे गुनाहों के बदले में तुमको सज़ा (ही) क्यों दिया करता है (तो तुम्हारा यह कहना ठीक नहीं) बल्कि अल्लाह ने जो पैदा किये हैं उन्हीं में के इन्सान तुम भी हो। (अल्लाह) जिसको चाहे माफ़ करे और जिसको चाहे सज़ा दे और आसमान और ज़मीन और जो कुछ दोनों के बीच में है सब अल्लाह ही के अख़्तियार में है और (सबको) उसी की तरफ़ लौटकर जाना है। (१८) ऐ किताबवालो ! (एक अरसे तक) पैग़म्बरों का तोड़ा (सिलसिला बन्द) रहने के बाद‡ हमारा पैग़म्बर (मुहम्मद स०) तुम्हारे पास आया है जो तुमसे साफ़-साफ़ बयान करता है। ताकि तुमको कहने की गुन्जाइश न रहे कि हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी सुनानेवाला और डराने वाला नहीं आया। पस ख़ुशख़बरी सुनानेवाला और डराने वाला तुम्हारे पास आ चुका और अल्लाह हर चीज़ पर समर्थ है। (१९) ★

★ रु. ३/७ आ ८

और (ऐ पैग़म्बर ! वह भी याद दिलाओ) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि ऐ भाइयो ! अल्लाह ने जो तुम पर एहसान किये हैं उनको याद करो कि उसने तुममें (बहुतेरे) पैग़म्बर पैदा किये और तुमको बादशाह (भी) बनाया और तुमको वह (नियामतें) दीं जो दुनिया जहान के लोगों में से किसी को नहीं दीं। (२०) भाइयो ! (मुल्क शाम की) पाक ज़मीन जो अल्लाह ने तुम्हारे भाग्य में लिख दी है उसमें दाख़िल हो और (काफ़िरों के मुक़ाबिले में) पीठ न फेरना नहीं तो उलटे घाटे में (नाकाम) लौटोगे। (२१) वह कहने लगे कि ऐ मूसा ! उस मुल्क में तो बड़े ज़बरदस्त लोग (रहते) हैं और जब तक वह वहाँ से न निकलें हम उस (मुल्क) में पैर न रखेंगे। हाँ (वह लोग) उसमें से निकल जावें तो हम ज़रूर (जा) दाख़िल होंगे। (२२) डर मानने वालों में से दो आदमी (यूशा और क़ालिब) थे कि उन पर अल्लाह की कृपा थी और (उनको हिम्मत हुई कि) वह बोल उठे उन पर (चढ़ाई करके बैतुल मुक़द्दस के) दरवाजे में घुस पड़ो और जब दरवाज़े में घुस पड़ोगे तो बेशक तुम्हारी जीत है और अगर तुम ईमान रखते हो तो अल्लाह ही पर भरोसा रखो। (२३) वह (लोग फिर) बोले ऐ मूसा! जब तक उसमें वह लोग हैं, हम उसमें कभी न जावेंगे। हाँ तुम और तुम्हारा अल्लाह दोनों जाओ और (उनसे) लड़ो, हम यहीं बैठे हैं। (२४)

‡ ह० ईसा अ० के बाद और मुहम्मद साहब स० से पहले कोई नबी नहीं आया था। इस लिए फ़रमाया कि तुममें अब अरसे के बाद रसूल हमने भेज दिया है ताकि तुमको पछताव न रहे कि तुम्हारे समय में तो कोई समझाने वाला आया ही नहीं। लेकिन याद रखो ! अगर नबी के व किताब के आने के बाद भी तुमने सही अमल न किया और उन ईमान से भटके हुए यहूदियों व ईसाइयों की तरह ही नेक अमल को गवाँ कर नाम के ही मुसलमान रह गये तो हम फिर तुम्हारी जगह कोई दूसरी जमात को सरसब्ज़ कर देंगे। इसलिए अल्लाह की हिदायत को सही माने में मज़बूती से पकड़ो।

क़ाल रब्बि इन्नी ला अम्लिकु इल्ला नफ़्सी व अख़ी फ़फ़्रुक़् बैनना व बैनल्-क़ौमिल्-फ़ासिक़ीन (२५) क़ाल फ़इन्नहा मुहर्रमतुन् अ़लैहिम् अर्बअ़ीन सनतन् ज् यतीहून फ़िल्अर्ज़ि त् फ़ला तअ्स अ़लल्-क़ौमिल्-फ़ासिक़ीन (२६) ★ वत्लु अ़लैहिम् नबअब्नै आदम बिल्हक़्क़ि म् ● इज़् क़र्रबा क़ुर्बानन् फ़तुक़ुब्बिल मिन् अहदिहिमा व लम् युतक़ब्बल् मिनल्-आख़रि त् क़ाल लअक़्तुलन्नक त् क़ाल इन्नमा यतक़ब्ब-लुल्लाहु मिनल्मुत्तक़ीन (२७) ● लइम् बसत्त इलैय यदक लितक़्तुलनी मा अना बिबासितीं-यदिय इलैक लिअक़्तुलक ज् इन्नी अख़ाफ़ुल्लाह रब्बल्-आलमीन (२८) इन्नी उरीदु अन् तबूअ बिइस्मी व इस्मिक फ़तकून मिन् अस्हाबिन्नारि ज् व ज़ालिक जज़ाउज़्-ज़ालिमीन ज् (२९) फ़तौवअ़त् लहू नफ़्सुहू क़त्ल अख़ीहि फ़क़तलहू फ़अस्बह मिनल्ख़ासिरीन (३०) फ़बअ़सल्लाहु ग़ुराबैंयब्हसु फ़िल्अर्ज़ि लियुरियहू कैफ़ युवारी सौअत अख़ीहि त् क़ाल यावैलता अअ़जज़्तु अन् अकून मिस्ल हाज़ल्ग़ुराबि फ़उवारिय सौअत अख़ी ज् फ़अस्बह मिनन्नादिमीन ज् ला ∴ (३१) मिन् अज्लि ज़ालिक ज् ∴ ● कतब्ना अ़ला बनी इस्राईल अन्नहू मन् क़तल नफ़्सम्-बिग़ैरि नफ़्सिन् औ फ़सादिन् फ़िल्अर्ज़ि फ़कअन्नमा क़तलन्नास जमीअ़न् त् व मन् अह्याहा फ़कअन्नमा अह्यन्नास जमीअ़न् त् व लक़द् जाअतहुम् रुसुलुना बिल्बैयिनाति ज् सुम्म इन्न कसीरम्-मिन्हुम् बअ़्द ज़ालिक फ़िल्अर्ज़ि लमुस्रिफ़ून (३२) इन्नमा जज़ाउल्लज़ीन युहारिबूनल्लाह व रसूलहू व यस्औन फ़िल्अर्ज़ि फ़सादन् अँयुक़त्तलू औ युसल्लबू औ तुक़त्तअ़ ऐदीहिम् व अर्-जुलुहुम् मिन् ख़िलाफ़िन् औ युन्फ़ौ मिनल्अर्ज़ि त् ज़ालिक लहुम् ख़िज़्युन् फ़िद्दुन्या व लहुम् फ़िल्आख़िरति अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीमुन् ला (३३)

قَالَ رَبِّ إِنِّي لَآ أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِينَ ۝ قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً يَتِيهُونَ فِي الْأَرْضِ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِينَ ۝ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ۝ لَئِنْ بَسَطْتَ إِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسِطٍ يَدِيَ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَكَ إِنِّي أَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِينَ ۝ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ تَبُوْٓأَ بِإِثْمِي وَإِثْمِكَ فَتَكُونَ مِنْ أَصْحٰبِ النَّارِ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِينَ ۝ فَطَوَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِينَ ۝ فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ كَيْفَ يُوَارِي سَوْءَةَ أَخِيهِ قَالَ يٰوَيْلَتٰٓى أَعَجَزْتُ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَأُوَارِيَ سَوْءَةَ أَخِي فَأَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِينَ ۝ مِنْ أَجْلِ ذٰلِكَ كَتَبْنَا عَلٰى بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ أَنَّهُ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَآ أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي الْأَرْضِ لَمُسْرِفُونَ ۝ إِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ

रु. ४ ८ आ ७ ● व. ला ज़िम ● नि. १/२ ● मु. अ़ि मु. आ ५ ● व. न बी स.

(इस पर मूसा ने) कहा (कि) ऐ मेरे परवरदिगार ! अपनी जान और अपने भाई (हारून) के सिवाय कोई मेरे बस का नहीं। सो तू हममें और इन हुक्म न मानने वाले लोगों में फ़ैसला कर दे। (२५) (इस पर) अल्लाह ने कहा (कि) तो वह (मुल्क) चालीस वर्ष तक इनको नसीब न होगा। ज़मीन में (ये) मारे मारे फिरेंगे। तू (इन) बे हुक्म लोगों पर अफ़सोस न कर§। (२६) ★

और (ऐ पैग़म्बर!) इन लोगों को आदम के दो बेटे (हाबील और क़ाबील) के सच्चे हालात पढ़ कर सुनाओ ● कि जब दोनों ने (अल्लाह के लिए) भेंट♦ चढ़ाई फिर उनमें से एक (यानी हाबील) की क़बूल हुई और दूसरे (यानी क़ाबील) की क़बूल न हुई। तो (क़ाबील) कहने लगा मैं तुझको ज़रूर मार डालूँगा। दूसरे ने जबाब दिया अल्लाह तो सिर्फ़ परहेज़गारों की (ही क़ुर्बानी) क़बूल करता है। (२७) ● अगर मेरे मार डालने के इरादे से तू मुझ पर अपना हाथ बढ़ायेगा (तो भी) मैं तुझे क़त्ल करने के लिए तुझ पर अपना हाथ न बढ़ाऊँगा (क्योंकि) मैं तो अल्लाह से डरता हूँ जो सारे संसार का पालनहार है। (२८) मैं यह चाहता हूँ कि तू मेरा और अपना पाप समेट ले और आग (दोज़ख़) वालों में से हो जावे और ज़ालिमों की यही सज़ा है। (२९) इस पर भी उसके दिल ने उसको अपने भाई के मार डालने पर आमादा किया और (आख़िरकार) उसको मार डाला और (यों) घाटा उठाने वालों में आ गया। (३०) इसके बाद अल्लाह ने एक कौवा भेजा। वह ज़मीन को कुरेदने लगा ताकि उसको (क़ाबील को) दिखाये कि वह अपने भाई की लाश को क्योंकर छिपाये। (चुनाँचे वह कौवे को ज़मीन कुरेदते देखकर) बोल उठा, हाय ! मैं इस कौवे के बराबर भी (बुद्धिमान) नहीं हुआ कि अपने भाई की लाश को छिपा लेता। (यह सोचकर) वह पछताने वालों में से हुआ। (३१) इस वजह से ● हमने इसराईल के बेटों को लिख (हुक्म) दिया कि किसी का क़त्ल कर डालने या मुल्क में फ़साद फैलाने के जुर्म के बग़ैर किसी शख़्स को कोई अगर मार डाले तो गोया उसने तमाम आदमियों को मार डाला और जिसने एक मरते को बचा लिया तो गोया उसने तमाम आदमियों को बचा लिया और उन (इसराईल के बेटों) के पास हमारे रसूल खुली-खुली निशानियाँ लेकर आ (भी) चुके हैं। फिर इसके बाद (भी) इनमें से बहुतेरे (लोग) मुल्क में ज़्यादतियाँ करते फिरते हैं। (३२) जो लोग अल्लाह और उसके पैग़म्बर से लड़ते और फ़साद फैलाने की ग़रज़ से मुल्क में दौड़े फिरते हैं, उनकी सज़ा तो यही है कि मार डाले जाँय या उनको सूली दी जाय या उनके हाथ पाँव ख़िलाफ़ जानिब से काट दिये जायँ (यानी सीधा हाथ काटा जाय तो बायाँ पैर काटा जावे या बायाँ हाथ तो सीधा पैर) या उनको देश निकाला दिया जाय। यह तो दुनिया में उनकी दुर्दशा हुई और आख़िरत में बड़ी कड़ी सज़ा (तैयार) है। (३३)

रु. ४/८ आ ७ ● व. ला जि म ● नि. १/२ ● न. न बी. स.

---

§ आयत २१-२४ में इशारा इस वाक़या पर है कि मिस्र से निकलने के क़रीब दो साल बाद अपनी क़ौम को लिए हज़रत मूसा अ० फ़िलस्तीन के दक्खिन में जंगलों में पड़े थे। उन्होंने बारह यहूदी सरदारों को फ़िलस्तीन का दौरा करने भेजा कि वहाँ के हाल मालूम करें। इन लोगों ने वहाँ से वापस होने पर वहाँ के लोगों की ताक़त का इतना ज़ोरदार बयान किया कि यहूदियों के छक्के छूट गये और उन्होंने वहाँ जाकर लड़ने से साफ़ इन्कार कर दिया। तब १२ सरदारों में से दो (यूशा और कालिब) ने उनकी हिम्मत बढ़ाई लेकिन बेकार। इस पर अल्लाह का कोप हुआ और चालीस साल तक जब तक मौजूदा लोग मर खप न गये और नई नस्ल तैयार न हुई तब तक फ़िलस्तीन पर यहूदियों का क़ब्ज़ः न हो सका। ♦ हज़रत आदम अ० ने अपने आज्ञाकारी बेटे हाबील के साथ एक लड़की का ब्याह कराना चाहा। इस पर काबील ने अपने ब्याह के लिए ज़िद की। ह० आदम अ० ने फ़र्माया कि जिसकी क़ुर्बानी अल्लाह क़बूल कर लेगा उसी के साथ उस लड़की का ब्याह होगा। ह० आदम अ० से एक-एक गर्भ से एक लड़का व एक लड़की होती थी। एक गर्भ की लड़की दूसरे गर्भ के लड़के को ब्याह दी जाती थी। यों इन्सानी नस्ल का सिलसिला चला।

★ अिल्लल्लजीन ताबू मिन् क़ब्लि अन् तक़्दिरू अलैहिम् ज् फ़अ्लमू' अन्नल्लाह ग़फ़ूरुर्रहीमुन् (३४) ★ या' अैयुहल्लजीन आमनुत्तक़ुल्लाह वब्तग़ू' अिलैहिल्-वसीलत व जाहिदू फ़ी सबीलिही लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (३५) अिन्नल्लजीन कफ़रू लौ अन्न लहुम् मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़ौंव मिस्लहु मअ़हु लियफ़्तदू बिही मिन् अ़जाबि यौमिल् - क़ियामति मा तुक़ुब्बिल मिन्हुम् ज् व लहुम् अ़जाबुन् अलीमुन् (३६) युरीदून अैयख़्रुजू मिनन्नारि व मा हुम् बिख़ारिजीन मिन्हा ज् व लहुम् अ़जाबुम्मुक़ीमुन् (३७) वस्सारिक़ु वस्सारिक़तु फ़क़्तअ़ू' अैदियहुमा जज़ा'अम्-बिमा कसबा नकालम्-मिनल्लाहि त् वल्लाहु अ़जीज़ुन् हकीमुन् (३८) फ़मन् ताब मिम्बअ़्दि ज़ुल्मिही व अस्लह फ़अिन्नल्लाह यतूबु अ़लैहि त् अिन्नल्लाह ग़फ़ूरुर्रहीमुन् (३९) अलम् तअ़्लम् अन्नल्लाह लहु मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि त् युअ़ज़्ज़िबु मैंयशा'अु व यग़्फ़िरु लिमैंयशा'अु त् वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैअिन् क़दीरुन् (४०) या' अैयुहर्रसूलु ला यहज़ुन्कल्लजीन युसारिअ़ून फ़िल्कुफ़्रि मिनल्लजीन क़ालू' आमन्ना बिअफ़्वाहिहिम् व लम् तुअ्मिन् क़ुलूबुहुम् ज् ∴ व मिनल्लजीन हादू ज् ∴ सम्माअ़ून लिलकजिबि सम्माअ़ून लिक़ौमिन् आख़रीन ला लम् यअ्तूक त् युहर्रिफ़ूनल्-कलिम मिम्बअ़्दि मवाज़िअ़िही ज् यक़ूलून अिन् ऊतीतुम् हाजा फ़ख़ुज़ूहु व अिल्लम् तुअ्तौहु फ़हज़रू त् व मैंयुरिदिल्लाहु फ़ित्नतहु फ़लन् तम्लिक लहु मिनल्लाहि शैअन् त् उला'अिकल्लजीन लम् युरिदिल्लाहु अैंयुतह्हिर क़ुलूबहुम् त् लहुम् फ़िद्दुन्या ख़िज़्युन् ज् सला ०व लहुम् फ़िल् - आख़िरति अ़जाबुन् अ़ज़ीमुन् (४१)

يُقَتَّلُوٓا أَوْ يُصَلَّبُوٓا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُم مِّنْ خِلَٰفٍ أَوْ يُنفَوْا
مِنَ الْأَرْضِ ذَٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ
عَظِيمٌ ۝ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن قَبْلِ أَن تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ فَاعْلَمُوٓا أَنَّ
اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوٓا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَ
جَٰهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ
مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَٰمَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝
يُرِيدُونَ أَن يَخْرُجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُم بِخَٰرِجِينَ مِنْهَا وَلَهُمْ
عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۝ وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوٓا أَيْدِيَهُمَا جَزَآءً
بِمَا كَسَبَا نَكَٰلًا مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ فَمَن تَابَ مِنۢ
بَعْدِ ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ
أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ يُعَذِّبُ مَن
يَشَآءُ وَيَغْفِرُ لِمَن يَشَآءُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يَٰٓأَيُّهَا
الرَّسُولُ لَا يَحْزُنكَ الَّذِينَ يُسَٰرِعُونَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِينَ قَالُوٓا
آمَنَّا بِأَفْوَٰهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِن قُلُوبُهُمْ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا
سَمَّٰعُونَ لِلْكَذِبِ سَمَّٰعُونَ لِقَوْمٍ آخَرِينَ لَمْ يَأْتُوكَ يُحَرِّفُونَ
الْكَلِمَ مِنۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهِۦ يَقُولُونَ إِنْ أُوتِيتُمْ هَٰذَا فَخُذُوهُ وَ

मगर (ऐ ईमानवालो !) जो लोग तुम्हारे क़ाबू में आने से पहले तौबा कर लें तो जाने रहो कि अल्लाह माफ़ करने वाला मेहरबान है। (३४)★

ऐ ईमानवालो ! अल्लाह से डरो और उस तक (पहुँचने) के ज़रिये तलाश करते रहो और उसकी राह में जिहाद करो, शायद तुम्हारा भला हो। (३५) यक़ीनन जिन लोगों ने इन्कार किया अगर उनके पास वह सब हो जो ज़मीन में है और उतना ही उसके साथ और भी हो ताकि क़ियामत के रोज़ अज़ाब के बदले में उसको दे कर छूट जाये, (तो भी) उनसे क़बूल नहीं किया जायगा और उनके लिए दुखदाई सज़ा है। (३६) वे चाहेंगे कि (नरक की) आग से निकल भागें मगर वह वहाँ से नहीं निकलने पायेंगे और उनके लिए हमेशा की सज़ा है। (३७) और अगर मर्द चोरी करे (तो) या औरत (चोरी करे) तो उनकी करतूत के बदले में दोनों के हाथ काट डालो। (यह) सज़ा अल्लाह की ओर से है और अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त व जानकार है। (३८) तो जो अपने अपराध के बाद तौबा कर ले और अपने को सम्भाल ले तो अल्लाह उसकी तौबा क़बूल कर लेता है; बेशक अल्लाह बख़्शनेवाला मेहरबान है (३९) क्या तुमको मालूम नहीं कि आसमान और ज़मीन में अल्लाह ही की हुकूमत है, जिसको चाहे सज़ा दे और जिसको चाहे क्षमा करे, और अल्लाह हर चीज़ पर ताक़तवर है। (४०) (ऐ पैग़म्बर !) तू उन लोगों पर अफ़सोस न कर जो कुफ़्र में दौड़ दौड़ कर पड़ते हैं ख़्वाह वह (मुनाफ़िक़) हों जो अपने मुँह से तो कह देते हैं कि हम ईमान लाये और उनके दिल ईमान नहीं लाये या यहूदी हों जो झूठी बातें बनाने के लिए जासूसी करते फिरते हैं और या वह दूसरे लोगों के वास्ते जासूसी करते हैं जो तुम्हारे पास (तक) नहीं आये; बातों को ठिकाने से बेठिकाने कर देते हैं, (और लोगों से) कहते हैं कि अगर तुमको (मुहम्मद की तरफ़ से) यही (हुक्म) दिया जाय तो उसको मानना और अगर तुमको यह (हुक्म) न मिले तो बचे रहना* और जिनको अल्लाह गुमराह रखना चाहे तो उसके लिए अल्लाह पर तुम्हारा कुछ भी बस नहीं। यह वह लोग हैं कि अल्लाह इनके दिलों को पाक करना नहीं चाहता। इन लोगों की दुनिया में (भी) ज़िल्लत है और आख़िरत में (भी) (इनके लिए) बड़ी सख़्त सज़ा है। (४१)

★ रु. ५/६ आ ८

* तौरात में बदकारी (व्यभिचार) की सज़ा संगसारी (पत्थरों से मार मार कर ख़त्म करने) की है। हिजरत के बाद जनाब स० के सामने एक यहूदी की बदकारी का फ़ैसला लाया गया। हज़रत ने दर्याफ़्त किया कि तौरात में क्या हुक्म है ? यहूदियों ने उस प्रतिष्ठित यहूदी की जान बचा लेने के लिए झूठ गढ़ा कि हम तो कोड़े मारते और फ़ज़ीहत करते हैं। जब तौरात पढ़ी जाने लगी तो पढ़ने वाला उस मुक़ाम पर जहाँ संगसारी लिखा था हाथ रख कर इधर उधर की पढ़ने लगा। अब्दुल्लाह बिन सलाम ने जो तौरात के माहिर थे, इस चालाकी को खोल दिया। यहूदी इस तौर पर तौरात के हुक्मों में मनमानी तब्दीलियाँ कर देते थे। इस आयत में ऐसों का हवाला है।

सम्माअून लिल्कजिबि अक्कालून लिस्सुहति ṭ फ़अिन् जा'अूक फ़ह्कुम् बैनहुम् औ अअ्रिज़् अन्हुम् ज् व अिन् तुअ्रिज़् अन्हुम् फ़लैंयज़ुर्रूक शैअन् ṭ व अिन् हकम्त फ़ह्कुम् बैनहुम् बिल्क़िस्ति ṭ अिन्नल्लाह युहिब्बुल-मुक़्सितीन (४२) व कैफ़ युहक्किमूनक व अिन्दहुमुत्तौरातु फ़ीहा हुक्मुल्लाहि सुम्म यतवल्लौन मिम्बअ्दि जालिक ṭ व मा' अुला'अिक बिल्-मुअ्मिनीन (४३) ★ अिन्ना' अन्ज़ल्नत्तौरात फ़ीहा हुदौंव नूरुन् ज् यह्कुमु बिहन्नबीयूनल्लज़ीन अस्लमू लिल्लज़ीन हादू वर्रब्बानीयून वल् - अह्बारु बिमस्-तुह्फ़िज़ू मिन् किताबिल्लाहि व कानू अलैहि शुहदा'अ ज् फ़ला तख़्शवुन्नास वख़्शौनि व ला तश्तरू बिआयाती समनन् क़लीलन् ṭ व मल्लम् यह्कुम् बिमा' अन्ज़लल्लाहु फ़अुला'अिक हुमुल्काफ़िरून (४४) व कतब्ना अलैहिम् फ़ीहा' अन्नन्नफ़्स बिन्नफ़्सि ला वल्अैन बिल्अैनि वल् - अन्फ़ बिल्-अन्फ़ि वल्-अुज़ुन बिल्-अुज़ुनि वस्सिन्न बिस्सिन्नि ला वल्जुरूह क़िसासुन् ṭ फ़मन् तसद्दक़ बिही फ़हुव कफ़्फ़ारतुल्लहु ṭ व मल्लम् यह्कुम् बिमा' अन्ज़लल्लाहु फ़अुला'अिक हुमुज्ज़ालिमून (४५) व क़फ़्फ़ैना अला' आसारिहिम् बिअीसब्नि मर्यम मुसद्दिक़ल्लिमा बैन यदैहि मिनत्तौराति ṭ व आतैनाहुल्-अिन्जील फ़ीहि हुदौंव नूरुन् ला ०व मुसद्दिक़ल्लिमा बैन यदैहि मिनत्तौराति व हुदौंव मौअिज़तल्लिल् - मुत्तक़ीन ṭ (४६)

रु. ६/१० आ ६

لايحب الله ٦ ٩١ المآئدة ٥

إِنْ لَمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوا ۚ وَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ فِتْنَتَهُ فَلَنْ تَمْلِكَ
لَهُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يُطَهِّرَ قُلُوبَهُمْ ۚ
لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۖ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٤١﴾
سَمَّاعُونَ لِلْكَذِبِ أَكَّالُونَ لِلسُّحْتِ ۚ فَإِنْ جَاءُوكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ
أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۖ وَإِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَضُرُّوكَ شَيْئًا ۖ وَ
إِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ﴿٤٢﴾
وَكَيْفَ يُحَكِّمُونَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرَاةُ فِيهَا حُكْمُ اللَّهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ
مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٣﴾ إِنَّا أَنْزَلْنَا التَّوْرَاةَ
فِيهَا هُدًى وَنُورٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا
لِلَّذِينَ هَادُوا وَالرَّبَّانِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوا مِنْ
كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَ
اخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ
بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ ﴿٤٤﴾ وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ
فِيهَا أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ
وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ ۚ فَمَنْ
تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ ۚ وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٤٥﴾ وَقَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِمْ بِعِيسَى ابْنِ

منزل ٢

(ऐ पैग़म्बर !) (यह) झूठी बातों को बनाने के लिए जासूसी करने वाले हैं, हराम का खाते हैं, तो अगर यह तुम्हारे पास (कोई मुक़द्दमा फ़ैसले के लिए) लावें तो तुम (को इख़्तियार है कि) इनमें फ़ैसला करो या इनसे किनारा कर जाओ, और अगर तुम इनसे किनारा करोगे तो वे तुमको किसी तरह का भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे और अगर फ़ैसला करो तो (भय या दबाव न मानकर) इनमें इन्साफ़ (ही) के साथ फ़ैसला करना, क्योंकि अल्लाह इन्साफ़ करनेवालों को दोस्त रखता है। (४२) और (यह लोग) क्यों तुम्हारे पास झगड़े तै करने को लाते हैं जब कि खुद इनके पास तौरात है, उसमें अल्लाह की आज्ञा मौजूद है, लेकिन इसके बाद (भी हुक्म अल्लाह से) वह मुकर जाते हैं और वे (हरगिज़) मानने वाले नहीं। (४३)★

★ रु. ६/१० आ ६

(बेशक) हमने तौरात उतारी जिसमें हिदायत और रोशनी है। (अल्लाह के) हुक्म मानने वाले (बन्दे) पैग़म्बर उसी के मुताबिक़ यहूदियों को हुक्म दिया करते थे और (इन नबियों के अलावा) दरवेश (सन्त) और उलमा (ज्ञानी) भी (उसी के मुताबिक़ यहूदियों को आज्ञा देते चले आये) क्योंकि वे सब अल्लाह की किताब के संरक्षक और गवाह ठहराये गये थे। पस ऐ यहूदियों ! तुम लोगों से न डरो और मेरा ही डर मानो और मेरी आयतों को नाचीज़ (दुनियावी) फ़ायदे के लिए मत बेच डालो और जो अल्लाह की उतारी हुई (किताब) के मुताबिक़ हुक्म न दें तो यही लोग काफ़िर हैं। (४४) और हमने तौरात में यहूद को तहरीरी हुक्म दिया था कि जान के बदले जान और आँख के बदले आँख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दाँत के बदले दाँत और (सब) ज़ख़्मों का बदला (वैसे ही ज़ख़्मों के) बराबर, फिर जो (सताया हुआ शख़्स) बदला क्षमा कर दे तो वह उसका कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) होगा और जो अल्लाह की उतारी हुई (किताब) के मुताबिक़ हुक्म न दे तो वही लोग बे इन्साफ़ हैं। § (४५) और बाद को इन्हीं (नबियों) के क़दमों (पदचिह्नों) पर हमने मरियम के बेटे ईसा को भेजा कि वह तौरात कि जो उनके (समय में) पहले से (ही मौजूद) थी की तसदीक़ करते थे और उनको हमने इन्जील दी जिसमें हिदायत और रोशनी है और तौरात जो उसके पहले से (मौजूद) थी उसकी तसदीक़ (पुष्टि भी) करती है और (खुद भी) परहेज़गारों को राह दिखानेवाली और सीख देनेवाली है। (४६)

---

§ यहाँ तक तो यहूदियों की शरारत का ज़िक्र है, जैसा कि आयत ४१ के फ़ुटनोट में बयान है। अब आयत ४६ से ईसाइयों के तौरात और इन्जील के हुक्मों से हट जाने की चरचा है।

वल्-यह्‌कुम् अह्‌लुल्-इन्जीलि बिमा' अन्ज़लल्लाहु फ़ीहि ꣲ व मल्लम् यह्‌कुम् बिमा' अन्ज़लल्लाहु फ़अुला'इक हुमुल्फ़ासिक़ून (४७) व अन्ज़ल्ना' इलैकल्-किताब बिल्‌हक़्क़ि मुसद्दिक़ल्लिमा बैन यदैहि मिनल् - किताबि व मुहैमिनन् अलैहि फ़ह्‌कुम् बैनहुम् बिमा' अन्ज़लल्लाहु व ला तत्तबिअ् अह्‌वाअहुम् अम्मा जा'अक मिनल्-हक़्क़ि ꣲ लिकुल्लिन् जअल्ना मिन्कुम् शिर्अवौँव मिन्हाजन् ꣲ व लौ शा'अल्लाहु लजअलकुम् उम्मतौँवाहिदवौँ व लाकिल्-लियब्लुव-कुम् फ़ी मा' आताकुम् फ़स्तबिक़ुल्-ख़ैराति ꣲ इलल्लाहि मर्जिअुकुम् जमीअन् फ़युनब्बिअुकुम् बिमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून ला (४८) व अनिह्‌कुम् बैनहुम् बिमा' अन्ज़लल्लाहु व ला तत्तबिअ् अह्‌वा'अहुम् वह्‌ज़र्हुम् अँयफ़्तिनूक अम्बअ्ज़ि मा' अन्ज़लल्लाहु इलैक ꣲ फ़इन् तवल्लौ फ़अ्लम् अन्नमा युरीदुल्लाहु अँयुसीबहुम् बिबअ्ज़ि ज़ुनूबिहिम् ꣲ व इन्न कसीरम्-मिनन्नासि लफ़ासिक़ून (४९) अफ़हुक्मल्-जाहिलीयति यब्ग़ून ꣲ व मन् अह्‌सनु मिनल्लाहि हुक्मल्लिक़ौमीं-यूक़िनून (५०) ★ या' अैयुहल्लज़ीन आमनू ला तत्तख़िज़ुल्-यहूद वन्नसारा' औलिया'अ म् ● बअ्ज़ुहुम् औलिया'उ बअ्ज़िन् ꣲ व मैंयतवल्लहुम् मिन्कुम् फ़इन्नहू मिन्हुम् ꣲ इन्नल्लाह ला यह्‌दिल् - क़ौमज़्ज़ालिमीन (५१)

مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ
فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ
هُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ
اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْفٰسِقُوْنَ ۝ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ
يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۚ لِكُلٍّ جَعَلْنَا
مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ۚ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّ
لٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۚ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ
جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝ وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ
بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْ
بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ
يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ۚ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ۝
اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ
يُّوْقِنُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى
اَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ۚ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَتَرَى الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ

★ रु. ७ ११ आ. ७ ● व. लाज़िम व. गु. व. म.

और इन्जील वालों को चाहिए कि जो अल्लाह ने उसमें (हुक्म) उतारे हैं उसी के मुताबिक़ हुक्म दिया करें और जो अल्लाह के उतारे (इन्जील) के मुताबिक़ हुक्म न दें तो यही लोग बेहुक्म (अवज्ञाकारी) हैं। (४७) और (ऐ पैग़म्बर!) हमने तुम्हारी तरफ़ (भी) सच्ची किताब उतारी कि जो किताबें इसके पहले से (मौजूद) हैं उनका समर्थन करती और उनकी (मूल शिक्षाओं को अपने में शामिल रखकर) हिफ़ाजत करती है, तो जो कुछ अल्लाह ने तुम पर उतारा है तुम भी उसी के मुताबिक़ इन लोगों में हुक्म दो और जो कुछ बात सच्ची तुमको पहुँची है उसे (याने इंसाफ़ को) छोड़कर इनकी (मनचाही) ख़्वाहिशों की पैरवी (पूर्ति) मत करो। हमने (समय-समय पर) तुममें से हर एक (फ़िर्क़े) के लिए एक शरीयत (धर्मशास्त्र) और तरीक़: दिया और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही दीन पर कर देता। लेकिन (अलग-अलग शरीअत व तरीक़: देने में) यह मक़सद (लक्ष्य) रहा है कि (समय-समय पर) जो हुक्म तुमको दिये जाते रहे हैं उन (ही) में तुमको आज़माये, सो (ऐ ईमानवालो!) तुम नेक कामों की तरफ़ एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो। तुम सबको अल्लाह की तरफ़ लौटकर जाना है, तो (अल्लाह ही) जिन-जिन बातों में तुम लोगों में मतभेद रहा है, (सही बात) बता देगा। (४८) और (ऐ पैग़म्बर!) जो किताब अल्लाह ने (तुम पर) उतारी है उसी के मुताबिक़ इन लोगों को हुक्म दो और उनकी इच्छाओं की पैरवी न करो, और इन (यहूदियों के दाँवघात) से बचते रहो कि जो (किताब) अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ उतारी है उसके किसी हुक्म से यह लोग कहीं तुमको भटका न दें, फिर अगर (ये तुम्हारा कहा) न मानें तो जाने रहो कि अल्लाह को इनके बाज़ गुनाहों के कारण इनको सज़ा पहुँचाना मंज़ूर है और (बेशक) लोगों में बहुत से बेहुक्म (अवज्ञाकारी) (ही) हैं।♦(४९) क्या वक़्त जाहिलियत (अज्ञान काल) की आज्ञा चाहते हैं? और जो लोग यक़ीन करने वाले हैं उनके लिए अल्लाह से बेहतर आज्ञा देने वाला कौन (हो सकता) है। (५०)★

★ रु. ७/११ आ ७

ऐ ईमानवालो! यहूद और ईसाई को मित्र न बनाओ● (तुम्हारे मुक़ाबिले में) यह एक दूसरे के मित्र हैं और तुममें जो कोई इनको दोस्त बनायेगा तो बेशक (वह भी) इन्हीं में से है, क्योंकि अल्लाह ज़ालिम लोगों को सीधा रास्ता नहीं दिखलाया करता।† (५१)

● व. ला./व. ग़ु./न. म.

♦ आयत ४६ से ४६ में खुलासा है कि अल्लाह ने समय समय पर जिन गरोहों में जैसी सूरत हाल हुई उनमें नबी भेजे और उनकी मारफ़त कुछ दस्तूर व तरीक़े भेजे ताकि उस उम्मत के लोग उन्हीं हुक्मों पर अमल करते हुए राह अल्लाह पर चलें जो उनके लिए नाज़िल हुये हैं और अल्लाह उनकी जाँच भी उसी दस्तूर की बुनियाद पर करेगा। असली मक़सद राहे अल्लाह पर चलना है न कि महज़ वह ज़वाबित (दस्तूर-क़ायदे)। सब उम्मतों को आख़िरकार अल्लाह के सामने ही तो पेश होना है। अगर आपकी नीयत और अमल राहे-ख़ुदा पर चलने की है तो आपको बताये रास्ते पर चलने से वह हासिल होगी। तौर-तरीक़े के फ़र्क़ का फ़ैसला अल्लाह करेगा। आप हुक्म अल्लाह और इन्साफ़ पर क़ायम रहें। दूसरों के दबाव में आकर उनकी जैसी न करें। और न आपको मिले हुये अल्लाह के हुक्मों में अपने किसी मतलब से आप फेरफार करें—जैसा कि यहूदी और ईसाई आगे चलकर तौरात व इन्जील में उलट फेर करने लगे थे। हर इन्सान इस कमज़ोरी का शिकार हो सकता है। इस लिए ईमानवालों और अल्लाह से डरने वालों को इन आयतों में आगाह किया गया है। † यहूदियों और ईसाइयों के बाद अब यहाँ से ज़िक्र मुनाफ़िक़ों की करतूत का है जो ज़ाहिरा मुसलमानों में शरीक होते और इन विरोधियों से दिली हमदर्दी रखते थे।

फ़तरल्लजीन फ़ी क़ुलूबिहिम् मरज़ुँय्युसारिअ़ून फ़ीहिम् यक़ूलून नख़्शा' अन् तुसीबना दा'अिरतुन् त् फ़अ़सल्लाहु अँयअ्तिय बिलफ़त्हि औ अम्‌रिम्-मिन् अ़िन्दिहि फ़युस्बिहू अ़ला मा' असरू फ़ी' अन्फ़ुसिहिम् नादिमीन त् (५२) व यक़ूलुल्लजीन आमनू' अ हा'अुला'अिल्लजीन अक़्समू बिल्लाहि जह्द अैमानिहिम् ला अिन्नहुम् लमअ़कुम् त् हबितत् अ़अ्मालुहुम् फ़अस्बहू ख़ासिरीन (५३) ● या' अैयुहल्लजीन आमनू मैंयर्तद्द मिन्कुम् अ़न् दीनिही फ़सौफ़ यअ्तिल्लाहु बिक़ौमीं-युहिब्बुहुम् व युहिब्बूनहू' ला अजिल्लतिन् अ़लल्-मुअ्मिनीन अअ़िज़्ज़तिन् अ़लल्काफ़िरीन ज़् युजाहिदून फ़ी सबीलिल्लाहि व ला यख़ाफ़ून लौमत लाअिमिन् त् जालिक फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मैंयशा'अु त् वल्लाहु वासिअ़ुन् अ़लीमुन् (५४) अिन्नमा वलीयुकुमुल्लाहु व रसूलुहू वल्लजीन आमनुल्लजीन युक़ीमूनस्सलात व युअ्तूनज़्ज़कात व हुम् राकिअ़ून (५५) व मैंयतवल्लल्लाह व रसूलहू वल्लजीन आमनू फ़अिन्न हिज़्बल्लाहि हुमुलग़ालिबून (५६) ★

या' अैयुहल्लजीन आमनू ला तत्तख़िजुल्-लजीनत्तख़जू दीनकुम् हुज़ुवौंव लअ़िबम्-मिनल्लजीन अूतुल्-किताब मिन् क़ब्‌लिकुम् वल्कुफ़्फ़ार औलिया'अ ज् वत्तक़ुल्लाह अिन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (५७) व अिजा नादैतुम् अिलस्सलाति-तख़जूहा हुज़ुवौंव लअ़िबन् त् जालिक बिअन्नहुम् क़ौमुल्ला यअ़्क़िलून (५८) क़ुल् या' अह्‌लल्‌किताबि हल् तन्क़िमून मिन्ना' अिल्ला' अन् आमन्ना बिल्लाहि व मा' अुन्ज़िल अिलैना व मा' अुन्ज़िल मिन् क़ब्लु ला व अन्न अक्सरकुम् फ़ासिक़ून (५९)

لا يحب الله ٦ — ٩٢ — المآئدة ٥

مرض يسارعون فيهم يقولون نخشى ان تصيبنا دآئرة ؕ
فعسى الله ان يأتي بالفتح او امر من عنده فيصبحوا على
مآ اسروا في انفسهم ندمين ﴿٥٢﴾ ويقول الذين امنوآ
اهؤلآء الذين اقسموا بالله جهد ايمانهم ۙ انهم لمعكم ؕ
حبطت اعمالهم فاصبحوا خسرين ﴿٥٣﴾ يايها الذين امنوا من
يرتد منكم عن دينه فسوف يأتي الله بقوم يحبهم و
يحبونه ۙ اذلة على المؤمنين اعزة على الكفرين يجاهدون
في سبيل الله ولا يخافون لومة لآئم ؕ ذلك فضل الله
يؤتيه من يشآء ؕ والله واسع عليم ﴿٥٤﴾ انما وليكم الله ورسوله
والذين امنوا الذين يقيمون الصلوة ويؤتون الزكوة و
هم ركعون ﴿٥٥﴾ ومن يتول الله ورسوله والذين امنوا فان
حزب الله هم الغلبون ﴿٥٦﴾ يايها الذين امنوا لا تتخذوا الذين
اتخذوا دينكم هزوا ولعبا من الذين اوتوا الكتب من
قبلكم والكفار اوليآء ؕ واتقوا الله ان كنتم مؤمنين ﴿٥٧﴾
واذا ناديتم الى الصلوة اتخذوها هزوا ولعبا ؕ ذلك بانهم
قوم لا يعقلون ﴿٥٨﴾ قل يآهل الكتب هل تنقمون منآ الآ
ان امنا بالله ومآ انزل الينا ومآ انزل من قبل وان اكثركم

منزل ٢

तो जिन लोगों के दिलों में (कपट का) रोग है तुम उनको देखोगे कि यहूदियों में दौड़कर जा मिलते हैं। कहते हैं कि हमको तो इस बात का डर लग रहा है कि (कहीं) हम पर आफ़त न आ जावे। सो हो सकता है जल्दी ही अल्लाह (ईमानवालों को) जीत दे या और कुछ प्रकट करे।† तो (ये मुनाफ़िक़) जो अपने दिलों में छिपाये थे उस (कपट) पर पछताने लगें। (५२) और (इनका कपट खुल जाने पर) ईमानवाले कहेंगे कि क्या यह वही लोग हैं जो (प्रकट में) बड़े ज़ोर से अल्लाह की क़समें खाते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं। इनका सब किया अकारथ हुआ और (सरासर) नुक़सान में आ गये। (५३) ● ऐ ईमानवालो! तुममें से कोई अपने दीन से फिरेगा तो अल्लाह (और) ऐसे लोग (ला) मौजूद करेगा जिनको वह दोस्त रखता होगा और वह उसको दोस्त रखते होंगे, (वे ईमानवाले) मुसलमानों के साथ नरम, काफ़िरों के साथ कड़े होंगे। अल्लाह की राह में अपनी जानें लड़ावेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत का डर नहीं रखेंगे। यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसको चाहे दे, और अल्लाह बड़ा वसी (व्यापक) और (सब के हाल का) जानने वाला है। (५४) बस तुम्हारे तो यही मित्र हैं अल्लाह और अल्लाह का पैग़म्बर और मुसलमान जो नमाज़ पर क़ायम हैं और ज़कात देते और (अल्लाह के आगे) झुके रहते हैं। (५५) और जो अल्लाह और अल्लाह के पैग़म्बर और मुसलमानों का दोस्त होकर रहेगा तो (उन) अल्लाह वालों ही की जय (निश्चित) है। (५६) ★

सु. २/४

★ रु. ८/१२ आ ६

ऐ ईमानवालो! जिन्होंने तुम्हारे दीन को हँसी और खेल ठहरा रखा है यानी (यहूद व नसारा) जिनको तुमसे पहले किताब (भी) दी जा चुकी है (उनको) और काफ़िरों को दोस्त मत बनाओ और अल्लाह से डरते रहो अगर तुम ईमान रखते हो (५७) और जब तुम नमाज़ के लिए (अज़ान देकर) बुलाते हो तो यह लोग नमाज़ को हँसी और खेल ठहराते हैं, (और) यह (हरकत) इसलिए कि यह लोग अज्ञानी हैं।§ (५८) (ऐ पैग़म्बर! यहूद से) कहो कि ऐ किताबवालो! हमसे तुमको क्या दुश्मनी है सिवाय इसके कि हम अल्लाह पर और जो (क़ुर्आन) हमारी तरफ़ उतरा है उस पर और जो पहले उतर चुकी है उस पर ईमान ले आये हैं और यह कि तुममें के अक्सर (अल्लाह के हुक्म से) इन्कारी हैं? (५९)

† अल्लाह की ओर से वह चमत्कार ज़ाहिर होकर रहा। मदीने के यहूदियों को देश निकाला की नौबत आई और मक्का के मुशरिकों पर मुसलमानों की फ़तह हुई। उस वक़्त मुनाफ़िक़ों को अजब परेशानी थी क्योंकि इनकी दिली हमदर्दी इन यहूदियों व मुशरिकों से थी जिनका अब हाल ख़स्ता हो रहा था। § नमाज़ के लिए अज़ान (पुकार) होने पर बाज़ यहूदी और मुशरिक उस आवाज़ पर मज़ाक़ बनाते थे। अल्लाह की बड़ाई हर तौर पर और हर दीन में बेहतर है। महज़ अपने से जुदा तरीक़ः देखकर हँसना यह उनकी बेअक़्ली और जिहालत थी।

क़ुल् हल् अुनब्बिअुकुम् बिशर्रिम्मिन् जालिक मसूबतन् अिन्दल्लाहि त् मल्लअनहुल्लाहु व ग़ज़िब अलैहि व जअल मिन्हुमुल् - क़िरदत वल्ख़नाज़ीर व अबदत्तागूत त् अुला'अिक शर्रुम्मकानौंव अज़ल्लु अन् सवा'अिस्सबीलि (६०) व अिजा जा'अूकुम् क़ालू' आमन्ना व क़द्दख़लू बिल्कुफ़्रि व हुम् क़द् ख़रजू बिही त् वल्लाहु अअ्लमु बिमा कानू यक्तुमून (६१) व तरा कसीरम्-मिन्हुम् युसारिअून फ़िल्अिस्मि वल्अुद्वानि व अक्लिहिमुस्सुह्त त् लबिअ्स मा कानू यअ्मलून (६२) लौला यन्हाहुमुर्-रब्बानीयून वल् - अह्बारु अन् क़ौलि-हिमुल्-अिस्म व अक्लि-हिमुस्सुह्त त् लबिअ्स मा कानू यस्नअून (६३) व क़ालतिल्-यहूदु यदुल्लाहि मग़्लूलतुन् त् गुल्लत् अैदीहिम् व लुअिनू बिमा क़ालू म् ● बल् यदाहु मब्सूततानि ला युन्फ़िक़ु कैफ़ यशा'अु त् वलयज़ीदन्न कसीरम् - मिन्हुम् मा' अुन्ज़िल अिलैक मिर्रब्बिक तुग़्यानौंव कुफ़्रन् त् व अल्क़ैना बैनहुमुल्-अदावत वल्बग़्ज़ा'अ अिला यौमिल् - क़ियामति त् कुल्लमा' औक़दू नारल्-लिल्हर्बि अत्फ़अहल्लाहु ला व यस्अौन फ़िल्अर्ज़ि फ़सादन् त् वल्लाहु ला युहिब्बुल् - मुफ़्सिदीन (६४) व लौ अन्न अह्लल्-किताबि आमनू वत्तक़ौ लकफ़्फ़र्ना अन्हुम् सैयिआतिहिम् व लअद् ख़ल्नाहुम् जन्नातिन्नअीमि (६५) व लौ अन्नहुम् अक़ामुत्तौरात वल्-अिन्जील व मा' अुन्ज़िल अिलैहिम् मिर्रब्बिहिम् लअकलू मिन् फ़ौक़िहिम् व मिन् तह्ति अर्जुलिहिम् त् मिन्हुम् अुम्मतुम्-मुक़्तसिदतुन् त् व क़सीरुम्-मिन्हुम् सा'अ मा यअ्मलून (६६) ★

فٰسِقُوْنَ ۝ قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ
مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ
وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ۭ اُولٰۗىِٕكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَاۗءِ السَّبِيْلِ ۝
وَاِذَا جَاۗءُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا
بِهٖ ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ ۝ وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ
يُسَارِعُوْنَ فِي الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۭ لَبِئْسَ مَا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ لَوْلَا يَنْهٰىهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ
الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۭ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ۝ وَقَالَتِ
الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ۭ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ بَلْ
يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَاۗءُ ۭ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ
مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۭ وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاۗءَ اِلٰي يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۭ كُلَّمَآ اَوْقَدُوْا نَارًا
لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا ۭ وَاللّٰهُ لَا
يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا
عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ وَلَوْ اَنَّهُمْ
اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ
لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ۭ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ

व. ला जि म

रु. ६ १३ आ १०

(ऐ पैग़म्बर !) कहो कि मैं तुमको बताऊँ कि अल्लाह के नज़दीक कौन (ज़्यादा बुरे) बदले के लायक़ हैं, (यानी) वह जिन पर अल्लाह ने लानत की और उन पर (अपना) कोप उतारा और उनमें से किन्हीं को बन्दर और सुअर बना दिया, और (अल्लाह को छोड़कर) शैतान को पूजने लगे थे, तो यही लोग दर्जे में (हमसे कहीं) ख़राब ठहरे और सीधी राह से बहुत दूर भटक गये। (६०) और (मुसलमानो !) जब यह लोग तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं हम ईमान लाये हालाँकि इन्कारी ही को साथ लेकर आये थे और (इन्कारी को साथ लिये) इसी तरह चले (भी) गये और जो (कपट दिल में) छिपाये हुए हैं अल्लाह उसको ख़ूब जानता है ♦। (६१) और तुम इनमें से बहुतेरों को देखोगे कि गुनाह की बात और ज़ुल्म और हराम का माल खाने पर गिरे पड़ते हैं। क्या बुरे काम हैं जो वे करते हैं। (६२) इनके रब्बानी (धर्मगुरु) और उलमा इनको गुनाह की बात बोलने और हराम का माल खाने से क्यों नहीं मना करते ? क्या बुरे काम हैं जो वह कर रहे हैं। (६३) और यहूद कहते हैं कि अल्लाह का हाथ (इन दिनों) तंग है। इन्हीं के हाथ तंग हो जायँ और इनके ऐसा कहने पर इनको लानत है§ ● । बल्कि अल्लाह के दोनों हाथ खुले हुए हैं जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है, और (ऐ पैग़म्बर !) यह क़ुर्आन जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर उतरा है, (ज़रूर उनमें डाह होने के कारन बजाय सीख देने के उलटे) उनमें नटखटी और इन्कारी के ज़्यादा बढ़ने का सबब होगा और (इसी डाह की सज़ा में) हमने इनके आपस में दुश्मनी और ईर्षा क़ियामत तक (के लिए) डाल दी है। (याने ये लोग आपस में मिलकर मुसलमानों के ख़िलाफ़) जब-जब लड़ाई की आग सुलगाते हैं अल्लाह (उनमें फूट पैदा करके) उसको बुझा देता है और मुल्क में फ़साद फैलाते फिरते हैं और अल्लाह फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता। (६४) और अगर किताबवाले ईमान लाते और (अल्लाह से) डरते तो हम (इनसे) इनकी बुराइयाँ (ज़रूर) दूर कर देते और इनको निआमतों से भरे (बहिश्त के) बाग़ों में (भी ज़रूर) दाख़िल करते। (६५) और अगर यह (लोग) तौरात और इन्जील और उन सहीफ़ों को जो उन पर उनके परवरदिगार की तरफ़ से उतरे हैं क़ायम रखते (याने उन पर अमल करते) तो (ज़रूर उन पर अल्लाह की नियामतें बरसतीं) वे ऊपर से और पाँव के तले से खाते। इनमें से कुछ लोग सीधे (रास्ते पर) हैं और इनमें ज़्यादातर तो बुरा ही कर रहे हैं। (६६) ★

● त्र. ता जि म्

★ रु. ६ १३ आ १०

♦मुशरिकों की तरह बाज़ अह्‌लकिताब याने यहूदी भी मुनाफ़िक़्क़त (कपट) का आचरन करते थे। जब मुसलमानों से मिलते तो कहते हम इस्लाम पर ईमान लाये और जब दूसरों से मिलते तो कहते कि हम तो बतौर मज़ाक़ जाते हैं। भला हम कहीं इस्लाम क़बूल कर सकते हैं ! § यहूदी जब धनवान होते तो अल्लाह को फ़क़ीर कहते थे और जब फ़क़ीर हो जाते तो कहते अल्लाह बड़ा कंजूस है, उसने अपनी दया का हाथ इसीलिये रोक लिया है। उस पर यह आयत उतरी कि अल्लाह के दोनों हाथ खुले हैं। वह जब चाहे और जिसको जितना चाहे उतना दे, लेने वाले में नेक अमली होना चाहिये।

या॑ अैयुहर्रसूलु बल्लिग़् मा॑ अुन्ज़िल अिलैक मिर्रब्बिक त़् व अिल्लम् तफ़्अल् फ़मा बल्लग़्त रिसालतहू त़् वल्लाहु यअ़सिमुक मिनन्नासि त़् अिन्नल्लाह ला यह्दिल् - क़ौमल् - काफ़िरीन (६७) क़ुल् या॑ अह्लल् - क़िताबि लस्तुम् अला शैअिन् हत्ता तुक़ीमुत्तौराव वल् - अिन्जील व मा॑ अुन्ज़िल अिलैकुम्-मिर्रब्बिकुम् त़् वलयज़ीदन्न कसीरम्-मिन्हुम् मा॑ अुन्ज़िल अिलैक मिर्रब्बिक तुग़्यानौंव कुफ़्रन् ज् फ़ला तअ्स अलल्-क़ौमिल्काफ़िरीन (६८) अिन्नल्लजीन आमनू वल्लजीन हादू वस्साबिअून वन्नसारा मन् आमन बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि व अमिल सालिहन् फ़ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (६९) लक़द् अख़ज्ना मीसाक़ बनी॑ अिस्रा॑ईल व अर्सल्ना॑ अिलैहिम् रुसुलन् त़् कुल्लमा जा॑अहुम् रसूलुम्-बिमा ला तह्वा॑ अन्फ़ुसुहुम् ला फ़रीक़न् कज्जबू व फ़रीक़ैंयक़्तुलून क़ (७०) व हसिबू॑ अल्ला तकून फ़ित्नतुन् फ़अमू व सम्मू सुम्म ताबल्लाहु अलैहिम् सुम्म अमू व सम्मू कसीरुम्-मिन्हुम् त़् वल्लाहु बसीरुम् - बिमा यअ़मलून (७१) लक़द् कफ़रल्लजीन क़ालू॑ अिन्नल्लाह हुवल्-मसीहुब्नु मर्यम त़् व क़ालल्मसीहु या बनी॑ अिस्रा॑ई-लअ़्बुदुल्लाह रब्बी व रब्बकुम् त़् अिन्नहू मैंयुश्रिक् बिल्लाहि फ़क़द् हर्रमल्लाहु अलैहिल् - जन्नव व मअ्वाहुन्नारु त़् व मा लिज्जालिमीन मिन् अन्सारिन् (७२) लक़द् कफ़रल्लजीन क़ालू॑ अिन्नल्लाह सालिसु सलासविन् म व मा मिन् अिलाहिन् अिल्ला॑ अिलाहूँवाहिदुन् त़् व अिल्लम् यन्तहू अम्मा यक़ूलून लयमस्सन्नल्लजीन कफ़रू मिन्हुम् अज़ाबुन् अलीमुन् (७३)

व. ला जि म

وكثير منهم ساء ما يعملون ۝ يا أيها الرسول بلغ ما أنزل
إليك من ربك وإن لم تفعل فما بلغت رسالته والله
يعصمك من الناس إن الله لا يهدي القوم الكفرين ۝
قل يا أهل الكتب لستم على شيء حتى تقيموا التورىة و
الإنجيل وما أنزل إليكم من ربكم وليزيدن كثيرا منهم
ما أنزل إليك من ربك طغيانا وكفرا فلا تأس على القوم
الكفرين ۝ إن الذين آمنوا والذين هادوا والصبئون و
النصرى من آمن بالله واليوم الآخر وعمل صالحا فلا
خوف عليهم ولا هم يحزنون ۝ لقد أخذنا ميثاق بني
إسراءيل وأرسلنا إليهم رسلا كلما جاءهم رسول بما
لا تهوى أنفسهم فريقا كذبوا وفريقا يقتلون ۝ وحسبوا
ألا تكون فتنة فعموا وصموا ثم تاب الله عليهم ثم عموا
وصموا كثير منهم والله بصير بما يعملون ۝ لقد كفر
الذين قالوا إن الله هو المسيح ابن مريم وقال المسيح
يبني إسراءيل اعبدوا الله ربي وربكم إنه من يشرك
بالله فقد حرم الله عليه الجنة ومأوىه النار وما للظلمين
من أنصار ۝ لقد كفر الذين قالوا إن الله ثالث ثلثة وما

ऐ पैग़म्बर ! जो तुम पर तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से (क़ुर्आन के ज़रिये पैग़ाम) उतरा है (उसे लोगों तक) पहुँचा दो और अगर तुमने ऐसा न किया तो तुमने अल्लाह का पैग़ाम कुछ नहीं पहुँचाया और अल्लाह तुमको लोगों (की शरारत) से बचायेगा क्योंकि अल्लाह काफ़िरों की क़ौम को राह नहीं देता ।(६७) (ऐ पैग़म्बर ! यहूद व ईसाइयों से) कहो कि ऐ किताबवालो ! जब तक तुम तौरात और इन्जील और जो (सहीफ़े) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर उतारे गये हैं उन्हें क़ायम न रखो (मानो) गे, तब तक तुम कुछ भी राह पर नहीं हो। और (ऐ पैग़म्बर !) जो तुम पर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से (क़ुर्आन) उतरा है उससे (इन लोगों में डाह होने के कारन) उनमें से बहुतेरों की सरकशी (उद्दण्डता) और इन्कारी बढ़ेगी सो तू इस काफ़िरों की क़ौम (के हाल) पर अफ़सोस न कर ।(६८) इसमें कुछ सन्देह नहीं कि जो मुसलमान हैं और यहूदी हैं और सायबी और ईसाई हैं, (इनमें से) जो कोई अल्लाह और आख़िरत पर ईमान लाये और नेक काम करता रहे तो ऐसे लोगों पर (क़ियामत के दिन) न भय होगा और न वह उदास रहेंगे§ ।(६९) हम (इन) बनी इस्राईल से (पहले भी) अहद ले चुके हैं (कि तौरात पर क़ायम रहना) और हमने इनकी तरफ़ (बहुत से) पैग़म्बर भी भेजे, (लेकिन) जब कभी कोई पैग़म्बर इनके पास ऐसे हुक्म लेकर आया जिनको उनके दिल नहीं चाहते थे तो कितनों को झुठलाया और कितनों को (उन्होंने) क़त्ल किया ।(७०) और (वे) समझे (कि ऐसा करने पर) कोई विपत्ति नहीं आयेगी सो (इस कुफ़्र के कारन) अंधे और बहरे हो गये (न सही राह देखी न सच्ची बात सुनी) फिर (भी) अल्लाह उन पर मेहरबान हुआ और फिर इनमें से बहुतेरे अंधे और बहरे हुये, और (मौजूदा समय में भी) जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह (ख़ूब) देख रहा है ।(७१) बेशक जो लोग कहते हैं कि अल्लाह तो यही मरियम के बेटे मसीह हैं यह लोग काफ़िर हो गये और मसीह (तो यूँ) समझाया करते थे कि ऐ याक़ूब के बेटो ! अल्लाह (ही) की अिबादत करो कि वह मेरा (भी) और तुम्हारा (भी) परवरदिगार है (और शक नहीं कि) जिसने (किसी को) अल्लाह का साझी ठहराया (तो) बहिश्त उस पर अल्लाह ने हराम की और उसका ठिकाना दोज़ख़ है और ज़ालिमों का कोई भी सहायक नहीं ।(७२) बेशक वह लोग भी काफ़िर हो गये जो कहते हैं कि अल्लाह तआला तो इन्हीं तीन में का एक है ℵ ● हालाँकि एक अल्लाह के अलावा और कोई माबूद (बन्दनीय) नहीं और जैसी-जैसी बातें यह लोग (अल्लाह के बारे में) कहते हैं अगर उनसे बाज़ नहीं आयेंगे तो जो लोग इनमें से कुफ़्र करते रहेंगे उन्हें दुखदाई अज़ाब होगा ।(७३)

● व. ला जि म

‡ ऐ पैग़म्बर ! अल्लाह काफ़िरों को यह मौक़ा न नसीब होने देगा कि वे तुम तक पहुँच कर तुम्हारे क़त्ल का अपना ज़लील मन्सूबा पूरा कर सकें । § इसी तौर पर सूरे बक़र रुकूअ ८ आयत ६२ में भी हुक्म है । यहाँ भी इसी बात की तसदीक़ (पुष्टि) है कि दुनिया में जिस गरोह को जिस नबी या किताब के ज़रिये जो दस्तूर अमल हासिल हुआ है, उस पर क़ायम रह कर नेककारी करने में ही कामयाबी और अल्लाह की ख़ुशी हासिल है । लेकिन अगर वह गरोह अपनी हासिल किताब के हुक्मों से जाने-अनजाने बहक या भटक जाते हैं या दूसरे नबियों और अल्लाह की ओर से नाज़िल किताबों में फ़र्क़ मानते या डालते हैं तो फिर उनको नजात नहीं है, ख़्वाह वह किसी भी गरोह, नबी या किताब के नामलेवा हों । ℵ तीन ! याने एक अल्लाह, एक मसीह और एक रूहुल्क़ुदुसि (पवित्रात्मा या जिब्रील फ़रिश्ता) यह ईसाइयों की मान्यता है । किसी एक पर दृढ़ निश्चय नहीं है ।

अफ़ला यतूबून अिलल्लाहि व यस्तग़्फ़िरूनहु ॒ वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीमुन् (७४) मल्मसीहुब्नु मर्यम अिल्ला रसूलुन् ॒ क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिहिर्रुसुलु ॒ व अुम्मुहू सिद्दीक़तुन् ॒ काना यअ्कुलानित्तआम ॒ अुन्ज़ुर् कैफ़ नुबैयिनु लहुमुल्आयाति सुम्मन्ज़ुर् अन्ना युअ्फ़कून (७५) क़ुल् अतअ्बुदून मिन् दूनिल्लाहि मा ला यम्लिकु लकुम् ज़र्रौंव ला नफ़्अन् ॒ वल्लाहु हुवस्समीअुल्-अलीमु (७६) क़ुल् या' अह्लल्-किताबि ला तग़्लू फ़ी दीनिकुम् ग़ैरल् - हक़्क़ि व ला तत्तबिअू' अह्वा'अ क़ौमिन् क़द् ज़ल्लू मिन् क़ब्लु व अज़ल्लू कसीरौंव ज़ल्लू अन् सवा'अिस्सबीलि (७७) ★

★ रु. १०/१४ आ ११

लुअिनल्लजीन कफ़रू मिम्-बनी' अिस्रा'ईल अला लिसानि दावूद व अीसब्नि मर्यम ॒ जालिक बिमा असौव्व कानू यअ्तदून (७८) कानू ला यतनाहौन अम्मुन्करिन् फ़अलूहु ॒

مِنْ اِلٰهٍ اِلَّآ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ وَاِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۞ اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۞ مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۗ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ۗ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ۗ اُنْظُرْ
كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۞ قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ۗ وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ ۞ قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا
تَتَّبِعُوْٓا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَاَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا
عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ۞ لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى
لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۗ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۞
كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ۗ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۞
تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۗ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ
اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ۞ وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا
مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۞ لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَ
الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا
نَصٰرٰى ۗ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۞

लबिअ्स मा कानू यफ़्अलून (७९) तरा कसीरम्-मिन्हुम् यतवल्लौनल्लजीन कफ़रू ॒ लबिअ्स मा क़द्दमत् लहुम् अन्फ़ुसुहुम् अन् सख़ितल्लाहु अलैहिम् व फ़िल्अजाबि हुम् ख़ालिदून (८०) व लौ कानू युअ्मिनून बिल्लाहि वन्नबीयि व मा' अुन्ज़िल अिलैहि मत्तख़ज़ूहुम् औलिया'अ व लाकिन्न कसीरम् - मिन्हुम् फ़ासिक़ून (८१) लतजिदन्न अशद्दन्नासि अदावतल्लिल्लजीन आमनुल् - यहूद वल्लजीन अश्रकू ॒ व लतजिदन्न अक़्रबहुम् मवद्दतल्-लिल्लजीन आमनुल्लजीन क़ालू' अिन्ना नसारा ॒ जालिक बिअन्न मिन्हुम् क़िस्सीसीन व रुह्बानौंव अन्नहुम् ला यस्तक्बिरून (८२)

॥ इति छठा पारः ॥

(तो इतना जानकर भी) वह क्यों नहीं अल्लाह के आगे तौबा करते और गुनाह माफ़ करवाते हालांकि अल्लाह (बड़ा) माफ़ करने वाला (बेहद) मेहरबान है।(७४) मरियम के बेटे मसीह तो सिर्फ़ एक पैग़म्बर हैं, इनसे पहले (भी बहुतेरे) पैग़म्बर हो चुके हैं और इनकी माता (मर्यम भी अल्लाह की एक) सच्ची बन्दी थीं। (सारे इंसानों की तरह ये) दोनों (मा-बेटे भी) खाना खाते थे, (तो ऐ रसूल !) देखो तो सही, हम दलीलें किस तरह खोल-खोलकर इन लोगों से बयान करते हैं (और) फिर देखो कि यह लोग किधर उलटे भटकते चले जा रहे हैं।(७५) (ऐ नबी ! इन लोगों से) कहो क्या तुम अल्लाह के सिवाय ऐसी चीज़ों की अ़िबादत करते हो जिनके हाथ में न तुम्हारा नफ़ा है न नुक़सान और अल्लाह ही (सब की) सुनता और (सब कुछ) जानता है।(७६) कहो कि ऐ किताबवालो ! अपने दीन (की बात) में नाहक़ मुबालग़ा (अतिशयोक्ति) मत करो और न उन लोगों की ख़्वाहिशों (के ढंग) पर चलो जो (तुम से) पहले (खुद) बहक चुके हैं और बहुतेरों को बहका गये हैं और (आप) सीधी राह से भटक गये हैं (७७) ★

★ रु. १०/१४ आ ११

याक़ूब की सन्तान में से जिन लोगों ने कुफ़्र (इन्कारी) किया उन पर दाऊद और मरियम के बेटे ईसा की तरफ़ से लानत पड़ी। और(यह लानत इसलिए) कि वे गुनहगार थे और हद से बढ़ गये थे।(७८) जो बुरा काम कर रहे थे (उसके लिए)आपस में किसी को मना न करते थे, अलबत्ता (बहुत ही) बुरे काम थे जो (वे लोग) किया करते थे।(७९) (ऐ पैग़म्बर !)तुम उनमें से बहुतेरों को देखोगे कि काफ़िरों से दोस्ती रखते हैं। उन्होने अपने (आख़िरत के) लिए बुरी तैयारी भेजी है कि अल्लाह का ग़ज़ब हुआ उन पर और वह हमेशा अ़ज़ाब में रहेंगे।(८०) और अगर (ये लोग) अल्लाह पर और (अपने) पैग़म्बर (यानी मूसा अ़०) पर और जो किताब उन पर उतरी (उस पर) ईमान रखते होते तो काफ़िरों को मित्र न बनाते, लेकिन इनमें से बहुतेरे बेहुक्म (अवज्ञाकारी) हैं। (८१) (ऐ पैग़म्बर ! ईमानवालों के साथ) दुश्मनी (करने) में यहूदियों और मुशरिकों को तुम सब लोगों से बढ़कर सख़्त पाओगे और ईमानवालों के साथ दोस्ती के बारे में सब लोगों में उनको नज़दीक पाओगे जो कहते हैं कि हम नसारा (ईसाई) हैं। यह इस सबब से है कि इनमें (बहुत से) आलिम (ज्ञानी) और दरवेश (सन्त) हैं और यह (इस सबब से कि) वे लोग घमण्ड नहीं करते। (८२)

॥ इति छठा पारः ॥

सातवाँ पार: वअिजा समिअू

सूरतुल्मा'अिद: आयात ८३ से १२० तक

व अिजा समिअू मा' अुन्ज़िल अिलर्रसूलि तरा' अअ्युनहुम् तफ़ीज़ु मिनद्दम्अ़ि मिम्मा अ़रफ़ू मिनल्हक़्क़ि ज् यक़ूलून रब्बना' आमन्ना फ़क्तुब्ना मअ़श्शाहिदीन (८३) व मा लना ला नुअ्मिनु बिल्लाहि व मा जा'अना मिनल्हक़्क़ि ला व नत्मअ़ु अँयुद्ख़िलना रब्बुना मअ़ल्-क़ौमिस्सालिहीन (८४) फ़असाबहुमुल्लाहु बिमा क़ालू जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् - अन्हारु ख़ालिदीन फ़ीहा त् व जालिक जज़ा'अुल् मुह्सिनीन (८५) वल्लजीन कफ़रू व कज्जबू बिआयातिना' अुला'अिक अस्हाबुल्-जह़ीमि (८६) ★ या' अँयुहल्लजीन आमनू ला तुह़र्रिमू तैयिबाति मा' अह़ल्लल्लाहु लकुम् व ला तअ़्तदू त् अिन्नल्लाह ला युह़िब्बुल्-मुअ़्तदीन (८७) व कुलू मिम्मा रज़क़कुमुल्लाहु ह़लालन् तैयिबन् स् व'वत्तक़ुल्लाहल्लजी' अन्तुम् बिही मुअ्मिनून (८८) ला युआख़िज़ु-कुमुल्लाहु बिल्लग़्वि फ़ी' अैमानिकुम् व लाकीं-युआख़िज़ु-कुम् बिमा अ़क़्क़त्तुमुल्-अैमान ज् फ़कफ़्फ़ारतुहू' अित्आमु अ़शरति मसाकीन मिन् औसति मा तुत्अ़िमून अह्लीकुम् औ किस्वतुहुम् औ तह्रीरु रक़बविन् त् फ़मल्लम् यजिद् फ़सियामु सलासवि अैयामिन् त् जालिक कफ़्फ़ारवु अैमानिकुम् अिजा ह़लफ़्तुम् त् वह्फ़ज़ू' अैमानकुम् त् कजालिक युबैयिनुल्लाहु लकुम् आयातिही' लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (८९) या' अँयुहल्-लजीन आमनू' अिन्नमल्ख़म्रु वल्मैसिरु वल्अन्साबु वल्अज़्लामु रिज्सुम्मिन् अ़मलिश्शैतानि फ़ज्तनिबूहु लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (९०)

★ रु० ११/१ आ ६

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَىٰ أَعْيُنَهُمْ تَفِيضُ مِنَ
الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ
الشَّاهِدِينَ ۝ وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَ
نَطْمَعُ أَن يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ۝ فَأَثَابَهُمُ اللَّهُ
بِمَا قَالُوا جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَٰلِكَ
جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا
أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَ
كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنتُم بِهِ
مُؤْمِنُونَ ۝ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَٰكِن يُؤَاخِذُكُم
بِمَا عَقَّدتُّمُ الْأَيْمَانَ فَكَفَّارَتُهُ إِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسَاكِينَ مِنْ
أَوْسَطِ مَا تُطْعِمُونَ أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَحْرِيرُ رَقَبَةٍ فَمَن
لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ ذَٰلِكَ كَفَّارَةُ أَيْمَانِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمْ
وَاحْفَظُوا أَيْمَانَكُمْ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنصَابُ وَالْأَزْلَامُ
رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ إِنَّمَا
يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَن يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ

सातवाँ पारः वअिज़ासमिअ़

सूरतुल्मा'अिदः आयत ८३ से १२०

और जो पैग़म्बर पर उतरा है (उस कलाम को) जब सुनते हैं तो (ऐ मुख़ातिब !) देखो ! उनकी आखों से आँसू जारी हैं‡ इसलिए कि उन्होंने सच बात को पहचान लिया है। (वे) कह उठते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हम तो ईमान ले आये सो तू हमको गवाही (मानने-वालों) में लिख ले।(८३) और हमको क्या हुआ है कि हम अल्लाह पर और सच्ची बात जो हमारे पास आई है उस पर विश्वास न करें और हमको उम्मीद है कि हमारा परवरदिगार हमको नेक बन्दों में दाख़िल करेगा।(८४) तो इनकी इस बात के बदले में अल्लाह ने इनको ऐसे (बहिश्त के) बाग़ दिये जिनके नीचे नहरें बह रही हैं (और) वे उनमें (सदैव) रहेंगे (और) भलाई करनेवालों का यही बदला है।(८५) और जिन लोगों ने न माना और हमारी आयतों को झुठलाया यही दोज़ख़ी (नरकगामी) हैं।(८६) ★

★ रु. ११/१ आ ६

ऐ ईमानवालो ! अल्लाह ने जो सुथरी चीज़ें तुम्हारे लिए हलाल कर दी हैं उनको (अपने ऊपर) हराम मत करो और हद से न बढ़ो; क्योंकि अल्लाह हद से बढ़नेवालों को नहीं चाहता। (८७) और अल्लाह ने जो तुमको सुथरी चीज़ें हलाल की हैं उनको खाओ और अल्लाह जिस पर तुम ईमान रखते हो उससे डरते रहो।(८८) तुम्हारी फिज़ूल (बिना सोचे समझे खाई हुई) क़समों पर अल्लाह तुमको नहीं पकड़ेगा, हाँ पक्की क़सम खा लो (और फिर उसे तोड़ दो) तो अल्लाह (तुमको ज़रूर) पकड़ेगा, तो इस गुनाह के कफ़्फ़ारा (शांति) में दस मुहताजों को औसत दर्जे का (वैसा ही) खाना खिला देना है जैसा अपने घर वालों को खिलाते हो या उनको कपड़े बनवा देना है या एक ग़ुलाम आज़ाद कर देना है। फिर जिसको (इसकी) ताक़त न हो तो (उसके लिए) तीन दिन के रोज़े हैं। यह तुम्हारी क़समों की शांति (कफ़्फ़ारा) है जबकि तुम क़सम खा बैठो (और उन पर पूरे न उतरो) और अपनी क़समों पर क़ायम रहो। इस तरह अल्लाह अपने हुक्म तुमको (खोल-खोलकर) सुनाता है शायद तुम एहसान मानो (८९)

‡ मक्का में जब काफ़िरों ने मुसलमानों पर ज़ुल्म ढाना शुरू किये तो आँ हज़रत (स०) ने मुसलमानों को हुक्म दिया कि वे किसी और मुक़ाम को चले जाँय, चुनांचे मुसलमान मुल्क हब्श को हिजरत कर गये जहाँ का बादशाह नजाशी ईसाई था। काफ़िरों ने उसको भी बहकाने की कोशिश की कि ये मुसलमान ह० ईसा (अ०) की बेहुरमती करते हैं इसलिए इनको पनाह न दो। इस पर बादशाह ने मुसलमानों से बुलाकर कैफ़ियत पूछी और क़ुर्आन को पढ़वा कर सुना। वह और उसके दरबारी विद्वान आयतों को सुनकर दीनी जज़्बे में रो पड़े और उन्होंने काफ़िरों की बात को ठुकरा दिया।

अिन्नमा युरीदुश्शैतानु अैंयूक़िअ़ बैनकुमुल्अ़दावत वल्बग़्ज़ा'अ फ़िल्ख़म्रि वल्मैसिरि व यसुद्दकुम् अ़न् जिक्‌रिल्लाहि व अ़निस्सलाति ज् फ़हल् अन्तुम् मुन्तहून (९१) व अतीअ़ुल्लाह व अतीअ़ुर्रसूल वह्‌जरू ज् फ़अिन् तवल्लैतुम् फ़अ़्लमू' अन्नमा अ़ला रसूलिनल्-बलाग़ुल्-मुबीनु (९२) लैस अ़लल्लजीन आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति जुनाहुन् फ़ीमा तअ़िमू' अिजा मत्तक़ौव्व आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति सुम्मत्तक़ौव्व आमनू सुम्मतक़ौव्व अह्‌सनू त् वल्लाहु युहिब्बुल्-मुह्‌सिनीन (९३) ★ या' अैयुहल्-लजीन आमनू लयब्‌लुवन्न - कुमुल्लाहु बिशैअिम् - मिनस्सैदि तनालुहू' अैदीकुम् व रिमाहुकुम् लियअ़्लमल्लाहु मैंयख़ाफ़ुहू बिल्‌ग़ैबि ज् फ़मनिअ़्तदा बअ़्द जालिक फ़लहू अ़जाबुन् अलीमुन् (९४) या' अैयुहल्लजीन आमनू ला तक़्तुलुस्सैद व अन्तुम् हुरुमुन् त् व मन् क़तलहू मिन्कुम् मुतअ़म्मिदन् फ़जज़ा'अुम् - मिस्‌लु मा क़तल मिनन्नअ़मि यह्‌कुमु बिही जवाअ़द्‌लिम् - मिन्कुम् हद्‌यम्-बालिग़ल्-कअ़्बति औ कफ़्फ़ारतुन् तअ़ामु मसाकीन औ अ़द्‌लु जालिक सियामल् - लियजूक़ वबाल अम्‌रिही त् अ़फ़ल्लाहु अ़म्मा सलफ़ त् व मन् अ़ाद फ़यन्तक़िमुल्लाहु मिन्‌हु त् वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् ज़ुन्‌तिक़ामिन् (९५) अुहिल्ल लकुम् सैदुल्बह्‌रि व तअ़ामुहू मताअ़ल्लकुम् व लिस्सैयारति ज् व हुर्रिम अ़लैकुम् सैदुल्बर्रि मा दुम्तुम् हुरुमन् त् वत्तक़ुल्लाहल्लजी' अिलैहि तुह्‌शरून (९६) जअ़लल्लाहुल् - कअ़्बतल् - बैतल् - हराम क़ियामल्लिन्नासि वश्शह्‌रल्-हराम वल्हद्‌य वल्क़ला'अिद त् जालिक लितअ़्लमू' अन्नल्लाह यअ़्लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्‌अर्ज़ि व अन्नल्लाह बिकुल्लि शैअिन् अ़लीमुन् (९७)

★ रु. १२/२ आ ७

المائدة ٥ — ٩٨ — واذا سمعوا ٧

ويصدكم عن ذكر الله وعن الصلوة فهل انتم منتهون ﴿٩١﴾ واطيعوا
الله واطيعوا الرسول واحذروا فان توليتم فاعلموا انما على
رسولنا البلغ المبين ﴿٩٢﴾ ليس على الذين امنوا وعملوا الصلحت
جناح فيما طعموا اذا ما اتقوا وامنوا وعملوا الصلحت ثم اتقوا
وامنوا ثم اتقوا واحسنوا والله يحب المحسنين ﴿٩٣﴾ يايها الذين
امنوا ليبلونكم الله بشيء من الصيد تناله ايديكم ورماحكم
ليعلم الله من يخافه بالغيب فمن اعتدى بعد ذلك فله عذاب
اليم ﴿٩٤﴾ يايها الذين امنوا لا تقتلوا الصيد وانتم حرم ومن
قتله منكم متعمدا فجزاء مثل ما قتل من النعم يحكم به
ذوا عدل منكم هديا بلغ الكعبة او كفارة طعام مسكين او عدل
ذلك صياما ليذوق وبال امره عفا الله عما سلف ومن عاد
فينتقم الله منه والله عزيز ذو انتقام ﴿٩٥﴾ احل لكم صيد البحر
وطعامه متاعا لكم وللسيارة وحرم عليكم صيد البر ما
دمتم حرما واتقوا الله الذي اليه تحشرون ﴿٩٦﴾ جعل الله الكعبة
البيت الحرام قيما للناس والشهر الحرام والهدي والقلائد
ذلك لتعلموا ان الله يعلم ما في السموت وما في الارض وان الله
بكل شيء عليم ﴿٩٧﴾ اعلموا ان الله شديد العقاب وان الله غفور

منزل ٢

ऐ ईमानवालो ! शराब और जुआ और बुत और पाँसे यह (सब) गन्दे शैतानी काम हैं। सो इनसे बचो, शायद तुम्हारा भला हो। (९०) शैतान (तो) यही चाहता है कि शराब और जुए के ज़रिये तुम्हारे आपस में दुश्मनी और द्वेष डलवा दे और तुमको अल्लाह की याद से और नमाज़ से रोके, तो क्या (यह समझ कर भी) तुम बचना चाहते हो (या नहीं) ? (९१) और अल्लाह का हुक्म मानो और पैग़म्बर का हुक्म मानो और (बेहुक्मी से) बचते रहो, इस पर (भी) अगर तुम (हुक्म अल्लाह से) फिर बैठोगे तो जाने रहो कि हमारे पैग़म्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ़ (हमारे हुक्मों को) साफ़-साफ़ (तुम तक) पहुँचा देना था। (९२) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये तो (इस मनाही से पहले) जो कुछ खा-पी चुके उसमें उन पर गुनाह नहीं रहा जबकि उन्होंने आगे परहेज़गारी की और ईमान लाये और नेक काम किये (और) फिर (अल्लाह से) डरते रहे और (यों ही) यक़ीन करते रहे और डरते रहे और नेकी करते रहे और अल्लाह नेक काम करने वालों को चाहता है। (९३) ★

★ रु. १२ / २ आ ७

ऐ ईमानवालो ! एक ज़रा (सी बात) शिकार से जिस तक तुम्हारे हाथ और भाले (आसानी से) पहुँच सकें (एहराम की हालत में) अल्लाह ज़रूर तुम्हारी जाँच करेगा ताकि मालूम करे कि कौन उस अनदेखे से डरता है,† फिर इसके बाद जो ज़्यादती करे तो उसको दुखदाई अज़ाब है। (९४) ऐ ईमानवालो ! जबकि तुम एहराम की हालत में हो तो शिकार मत मारो और जो कोई तुममें से जान-बूझकर शिकार मारेगा तो जैसे जानवर को मारा है उसके बदले में वैसा ही पशु जो तुममें के दो इंसाफ करने वाले आदमी ठहरा दें क़ुर्बानी करे और यह क़ुर्बानी काबे में भेजे या कफ़्फ़ारा (दे और) उसके बदले में मुहताजों को खाना या उसके बराबर रोज़े (रखना) ताकि अपने किये की सज़ा चक्खे। जो (पहले) हो चुका उसे अल्लाह ने माफ़ किया और जो ऐसा फिर करेगा तो अल्लाह उससे बदला लेगा और अल्लाह ज़बर्दस्त और बदला लेने में बड़ा समर्थ है। (९५) दरियाई शिकार और खाने की दरियाई चीज़ें (जो हाथ लगें) तुम्हारे लिए (एहराम की हालत में) हलाल की जाती हैं ताकि तुमको और मुसाफ़िरों को लाभ पहुँचे, और जंगल का शिकार जब तक एहराम में रहो (बेशक) तुम पर हराम है, और अल्लाह से डरते रहो जिसके पास तुम (सबको) लौटकर जाना है। (९६) अल्लाह ने इज़्ज़त के घर काबे को लोगों की शाँति व सुरक्षा के लिए क़ायम किया है और अदब वाले (पाक) महीनों को और (हजकी) क़ुरबानी (के जानवरों) को और जो पट्टे उनके गले में (क़ुर्बानी की निशानी के बतौर) लटक रहे हैं ठहराया है; यह इसलिए कि तुमको मालूम रहे कि जो कुछ आसमानों और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह जानता है और बेशक अल्लाह हर चीज़ से जानकार है। (९७)

---

† हाथ या भाले की पहुंच में आसानी से हासिल हो सकने वाले शिकार को भी (एहराम की हालत में) हाथ लगाने से तुम बाज़ रहो और तुम्हारा मन न डोले, यह तुम्हारी एक बड़ी जाँच होगी कि तुम उस अनदेखे अल्लाह के हुक्म पर कितना ईमान रखते हो। एहराम एक 'तहमत व चादर' वह सादा लिबास है जो हज करने वाले शुरू से आख़ीर तक हज के पूरे कार्यक्रम में पहने रहते हैं।

अ़ि'लमू' अन्नल्लाह शदीदुल्अ़िक़ाबि व अन्नल्लाह ग़फ़ूरुर्रहीमुन् त़् (९८) मा अ़लर्रसूलि इल्लल्-बलाग़ु त़् वल्लाहु यअ़्लमु मा तुब्दून व मा तक्तुमून (९९) क़ुल् ला यस्तविल्ख़बीसु वत्तैयिबु व लौ अअ़्जबक कस्रतुल्ख़बीसि ज् फ़त्तक़ुल्लाह या' उलिल्अल्बाबि लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (१००) ★ या' अैयुहल्लज़ीन आमनू ला तस्अलू अ़न् अश्या'अ इन् तुब्द लकुम् तसुअ्कुम् ज् व इन् तस्अलू अ़न्हा हीन युनज़्ज़लुल्-क़ुर्आनु तुब्द लकुम् त़् अ़फ़ल्लाहु अ़न्हा त़् वल्लाहु ग़फ़ूरुन् हलीमुन् (१०१) क़द् सअलहा क़ौमुम्मिन् क़ब्लिकुम् सुम्म अस्बहू बिहा काफ़िरीन (१०२) मा जअ़लल्लाहु मिम्बहीरतिंव्व ला सा'इबतिंव्व ला वसीलतिंव्व ला हामिन् ला ०व लाकिन्नल्लज़ीन कफ़रू यफ़्तरून अ़लल्लाहिल्-कज़िब त़् व अक्सरुहुम् ला यअ़्क़िलून (१०३) व इज़ा क़ील लहुम् तआ़लौ इला मा' अन्ज़लल्लाहु व इलर्रसूलि क़ालू हस्बुना मा व जद्ना अ़लैहि आबा'अना त़् अव लौ कान आबा'उहुम् ला यअ़्लमून शैऔंव ला यह्तदून (१०४) या' अैयुहल्लज़ीन आमनू अ़लैकुम् अन्फ़ुसकुम् ज् ला यज़ुर्रुकुम् मन् ज़ल्ल इज़ह्तदैतुम् त़् इलल्लाहि मर्जिअ़ुकुम् जमीअ़न् फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ़्मलून (१०५) या' अैयुहल्लज़ीन आमनू शहादतु बैनिकुम् इज़ा हज़र अहदकुमुल्मौतु हीनल् - वसीयतिस्नानि ज़वा अ़द्लिम्-मिन्कुम् औ आख़रानि मिन् ग़ैरिकुम् इन् अन्तुम् ज़रब्तुम् फ़िल्अर्ज़ि फ़असाबत्कुम् मुसीबतुल्मौति त़् तह्बिसूनहुमा मिम्बअ़्दिस्सलाति फ़युक़्सिमानि बिल्लाहि इनिर्तब्तुम् ला नश्तरी बिही समनौंव लौ कान ज़ाक़ुर्बा ला व ला नक्तुमु शहादतल्ला अल्लाहि इन्ना' इज़ल्लमिनल्-आसिमीन (१०६)

रु. १३/३ आ ७

رحيم ﴿٩٨﴾ ما على الرسول الا البلغ والله يعلم ما تبدون وما تكتمون ﴿٩٩﴾
قل لا يستوي الخبيث والطيب ولو اعجبك كثرة الخبيث فاتقوا
الله يا ولي الالباب لعلكم تفلحون ﴿١٠٠﴾ يايها الذين امنوا لا تسلوا
عن اشياء ان تبد لكم تسؤكم وان تسلوا عنها حين ينزل القران
تبد لكم عفا الله عنها والله غفور حليم ﴿١٠١﴾ قد سالها قوم من
قبلكم ثم اصبحوا بها كفرين ﴿١٠٢﴾ ما جعل الله من بحيرة ولا سائبة
ولا وصيلة ولا حام ولكن الذين كفروا يفترون على الله الكذب
واكثرهم لا يعقلون ﴿١٠٣﴾ واذا قيل لهم تعالوا الى ما انزل الله و
الى الرسول قالوا حسبنا ما وجدنا عليه اباءنا اولو كان اباؤهم
لا يعلمون شيئا ولا يهتدون ﴿١٠٤﴾ يايها الذين امنوا عليكم انفسكم
لا يضركم من ضل اذا اهتديتم الى الله مرجعكم جميعا
فينبئكم بما كنتم تعملون ﴿١٠٥﴾ يايها الذين امنوا شهادة بينكم
اذا حضر احدكم الموت حين الوصية اثنن ذوا عدل منكم او
اخرن من غيركم ان انتم ضربتم في الارض فاصابتكم مصيبة
الموت تحبسونهما من بعد الصلوة فيقسمن بالله ان ارتبتم
لا نشتري به ثمنا ولو كان ذا قربى ولا نكتم شهادة الله انا
اذا لمن الاثمين ﴿١٠٦﴾ فان عثر على انهما استحقا اثما فاخرن يقومن

منزل

जाने रहो कि अल्लाह की मार सख़्त है और यह कि अल्लाह क्षमा करनेवाला रहीम (भी) है। (९८) पैग़म्बर के ज़िम्मे सिर्फ़ (अल्लाह का हुक्म) पहुँचा देना है और (बाक़ी तो) जो तुम लोग ज़ाहिर में करते और जो छिपा कर करते हो, अल्लाह सब कुछ जानता है। (९९) (ऐ पैग़म्बर!) कहो कि नापाक और पाक (चीज़ें) बराबर नहीं हो सकतीं, अगर्चे नापाक चीज़ की बहुतायत तुम को अच्छी (ही क्यों न) लगे। तो हे बुद्धिमानो! अल्लाह से डरते रहो, शायद तुम्हारा भला हो। (१००) ★

★ रु. १३/३ आ ७

ऐ ईमानवालो! बहुत बातें मत पूछा करो कि अगर वे तुम पर खोलकर कह दी जायँ तो तुमको बुरी लगें। और ऐसे वक़्त में जबकि क़ुर्आन उतर रहा है उन बातों की (बहुत) पूछताछ करोगे तो तुम पर ज़ाहिर (भी) कर दी जायँगी (तब तुमको वह बुरा लगेगा।)§ अल्लाह ने इन (अब तक के तुम्हारे ऐसे सवालों) को माफ़ किया (आगे के लिए सावधान रहो) और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला सहन करने वाला है। (१०१) तुमसे पहले भी लोगों ने ऐसी ही बातें (अपने पैग़म्बरों से) पूछी थीं फिर (बताई जाने पर) उनसे इनकार करने लगे। (१०२) अल्लाह ने न बहीरः† और न साइबः‡‡ और न वसीलः‡ और न हामी[] इनके बारे में कुछ नहीं◉ ठहराया, बल्कि काफ़िर अल्लाह पर झूट लगाते हैं। और इनमें बहुतेरे बे समझ हैं (१०३) और जब इनसे कहा जाता है जो अल्लाह ने (क़ुर्आन) उतारा है उसकी और पैग़म्बर की तरफ़ चलो (उनका हुक्म मानो) तो कहते हैं कि जिस (तरीक़े) पर हमने अपने बापों (बड़ों) को (चलते हुये) पाया है, (वही रास्ता) हमारे लिए काफ़ी है। भला अगर इनके बाप (बड़े) कुछ न जानते और सीधी राह पर न रहे हों तो भी (क्या उन्हीं की राह चलेंगे)? (१०४) ऐ ईमानवालो! तुम अपनी जान की ख़बर रखो। जब तुम सीधी राह पर हो तो कोई भी गुमराह (हुआ करे वह) तुमको नुक़सान नहीं पहुँचा सकता। तुम सबको अल्लाह की तरफ़ लौटकर जाना है तो (उसी समय), जो कुछ (दुनिया में) करते रहे हो तुमको (नेक-बद) बतादेगा। (१०५) ऐ ईमानवालो! जब तुममें से किसी के सामने मौत आ खड़ी हो तो वसीयत करते वक़्त तुममें के दो विश्वासी (गवाह) हों या अगर तुम कहीं का सफ़र करो और (सफ़र में ही) मौत की मुसीबत आ जाय तो (मुसलमान गवाह मातबर न मिलने पर) ग़ैर (मज़हब के) ही दो (गवाह) हों, अगर तुमको (उनकी सच्चाई पर) सन्देह हो तो उन दोनों को नमाज़ के बाद रोक लो। फिर वह (दोनों) अल्लाह की क़सम खायँ और कहें कि हम किसी मोल पर क़सम नहीं बेचते अगर्चे कोई खास शख़्स (हमारा) रिश्तेदार ही क्यों न हो (हम उसके लिए भी झूठी गवाही देने वाले नहीं) और हम अल्लाह की गवाही को नहीं छिपाते और अगर ऐसा करें तो हम (बेशक) गुनहगार हैं। (१०६)

§ क़ुर्आन उतर रहा है। इस समय दीन की बातें सुनो और उन पर ग़ौर करो। जो [पेज २२१ पर]

† बहीरः—वह ऊँटनी जिसके दस बच्चे हों और उनमें आख़िरी बच्चा नर हो। इसका कान चीरकर छुट्टा साँड की तरह छोड़ दिया जाता और उससे कोई काम न लिया जाता। न उसका दूध ही दुहते थे। ‡‡ साइबः—यह ऊँटनी जिसे किसी देवता के नाम पर आज़ाद छोड़ देते। फिर उससे कोई काम न लेते। ‡ वसीलः—यह भी ऊँटनी है जो मादा बच्चे ही जनमती है और उसे देवताओं के नाम पर आज़ाद छोड़ दिया जाता था। [] हामी—यह भी आज़ाद छोड़ी जाने वाली ऊँट की क़िस्म जिससे कुछ बच्चे हासिल कर, फिर उससे सवारी वग़ैरः का कोई भी काम न लेते। ◉ काफ़िर इन चीज़ों की मन्नत मानकर उन्हें देवी-देवताओं के नाम छुट्टा छोड़ देना अल्लाह की ख़ुशी का सामान समझते थे। मुसलमानों को बताया गया कि ये बातें इन मुशरिकों की मनमानी गढ़ंत हैं। अल्लाह ने उनको ऐसा करने का हुक्म कभी नहीं दिया।

फ़अिन् अुसिर अला अन्नहुमस्तहक़्क़ा अिस्मन् फ़आख़रानि यक़ूमानि मक़ामहुमा मिनल्लजीनस्-तहक़्क़ अलैहिमुल्-औलयानि फ़युक़्सिमानि बिल्लाहि लशहादतुना अह़क़्क़ु मिन् शहादति-हिमा व मअ़्तदैना ज् सला अिन्ना अिज़ल्लमिनज़्-ज़ालिमीन (१०७) ज़ालिक अद्ना अैयअ्तू बिश्शहादति अला वज्हिहा औ यख़ाफ़ू अन् तुरद्द अैमानुम्बअ़्द अैमानिहिम् त् वत्तक़ुल्लाह वस्मअू त् वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमल्-फ़ासिक़ीन (१०८) ★ यौम यज्मअुल्लाहुर्-रुसुल फ़यक़ूलु मा जा अुजिब्तुम् त् क़ालू ला अिल्म लना त् अिन्नक अन्त अल्लामुल्ग़ुयूबि (१०९) अिज् क़ालल्लाहु या अीसब्न मर्यमज़्कुर् निअ़्मती अलैक व अला वालिदतिक ● म् अिज् अैयत्तुक बिरूहिल्क़ुदुसि क़िफ़ तुकल्लिमुन्नास फ़िल्मह्दि व कह्लन् ज् व अिज् अल्लम्तुकल्-किताब वल्हिक्मत वत्तौरात वल्अिन्जील ज् व अिज् तख़्लुक़ु मिनत्तीनि कहैअतित्तैरि बिअिज्नी फ़तन्फ़ुख़ु फ़ीहा फ़तकूनु तैरम्-बिअिज्नी व तुब्रिअुल् - अक्मह वल्-अब्रस बिअिज्नी ज् व अिज् तुख़्रिजुल्मौता बिअिज्नी ज् व अिज् कफ़फ़्तु बनी अिस्राअील अन्क अिज् जिअ्तहुम् बिल्बैयिनाति फ़क़ालल्लजीन कफ़रू मिन्हुम् अिन् हाज़ा अिल्ला सिह्रुम्-मुबीनुन् (११०) व अिज् औहैतु अिलल्-हवारीयीन अन् आमिनू बी व बिरसूली ज् क़ालू आमन्ना वश्हद् बिअन्नना मुस्लिमून (१११) अिज् क़ालल्-हवारीयून या अीसब्न मर्यम हल् यस्ततीअु रब्बुक अैयुनज़्ज़िल अलैना माअिदतम्-मिनस्समाअि त् क़ालत्तक़ुल्लाह अिन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (११२) क़ालू नुरीदु अन् नअ्कुल मिन्हा व तत्मअिन्न क़ुलूबुना व नअ़्लम अन् क़द् सदक़्तना व नकून अलैहा मिनश्शाहिदीन (११३)

مقامهما من الذين استحق عليهم الاوليان فيقسمان بالله
لشهادتنا احق من شهادتهما وما اعتدينا انا اذا لمن
الظلمين ۝ ذلك ادنى ان ياتوا بالشهادة على وجهها او يخافوا
ان ترد ايمان بعد ايمانهم واتقوا الله واسمعوا والله لا يهدي
القوم الفسقين ۝ يوم يجمع الله الرسل فيقول ماذا اجبتم
قالوا لا علم لنا انك انت علام الغيوب ۝ اذ قال الله يعيسى
ابن مريم اذكر نعمتي عليك وعلى والدتك اذ ايدتك بروح
القدس تكلم الناس في المهد وكهلا واذ علمتك الكتب و
الحكمة والتورىة والانجيل واذ تخلق من الطين كهيئة الطير
باذني فتنفخ فيها فتكون طيرا باذني وتبرئ الاكمه والابرص
باذني واذ تخرج الموتى باذني واذ كففت بني اسراءيل عنك
اذ جئتهم بالبينت فقال الذين كفروا منهم ان هذا الا سحر
مبين ۝ واذ اوحيت الى الحواريين ان امنوا بي وبرسولي
قالوا امنا واشهد باننا مسلمون ۝ اذ قال الحواريون
يعيسى ابن مريم هل يستطيع ربك ان ينزل علينا مائدة
من السماء قال اتقوا الله ان كنتم مؤمنين ۝ قالوا نريد ان
ناكل منها وتطمئن قلوبنا ونعلم ان قد صدقتنا ونكون

फिर अगर (गवाही देने के बाद) मालूम हो जाय कि उन दोनों ने (झूठ बोलकर) गुनाह किया तो इनकी जगह दो और (गवाह) उन लोगों में से खड़े हों जिनका हक़ इन्होंने झुठा ठहराया हो और जो (नुक़सान उठाने वाले फ़रीक़ के) नज़दीकी हों फिर वह (नये गवाह) अल्लाह की क़सम खायँ कि पहले दो गवाहों की गवाही से हमारी गवाही ज़्यादा भरोसे वाली है और हमने (गवाही देने में किसी तरह की) ज़्यादती नहीं की, ऐसा किया हो तो हम (बेशक) ज़ालिम हैं। (१०७) इस तरह की क़सम से यह बात ज़्यादा समझ में आती है कि लोग ठीक तौर पर गवाही दें या (इस बदनामी से) डरें कि हमारी क़सम दूसरे गवाहों की क़सम के बाद रद्द न कर दी जाय और (ऐ ईमानवालो!) अल्लाह (की अवज्ञा) से डरते रहो और सुन रखो! अल्लाह हुक्म न मानने वालों को राह नहीं देता। (१०८) ★

जबकि अल्लाह पैग़म्बरों को (आख़िरत में) जमा करके पूछेगा कि तुमको (अपने समय के लोगों से) क्या उत्तर मिला, (तो) वह कहेंगे कि हमको (प्रकट छोड़कर उनके अमल) कुछ मालूम नहीं, ग़ैब (अदृष्ट) की बातें तो तू ही ख़ूब जानता है। (१०९) उस दिन अल्लाह (यह भी) कहेगा कि ऐ मरियम के बेटे ओ़सा! मैंने तुम पर और तुम्हारी माता पर जो-जो एहसान किये हैं (उनको) याद करो ●। जबकि मैंने पाक रूह के ज़रिये तुम्हारी सहायता की। तुम पालने में (भी) और बड़े होकर (भी) लोगों से (एक साँ) बातचीत करते थे, और जबकि मैंने तुमको किताब और हिकमत और तौरात और इन्जील सिखलाई और जबकि तुम मेरे हुक्म से चिड़िया की सूरत मिट्टी से बनाते फिर उसमें फूंक मार देते तो वह, मेरे हुक्म से जानदार पक्षी बन जाता और (जबकि) तुम जन्म के अन्धे और कोढ़ी को मेरे हुक्म से चंगा कर देते और (जबकि) तुम मेरे हुक्म से मुर्दों को (ज़िन्दः कर क़ब्रों से) निकाल खड़ा करते और जबकि मैंने याक़ूब के बेटों (बनी इसराईल) को (तुमको मार डालने से) रोका कि जिस वक़्त तुम उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आये तो उनमें से जो काफ़िर (मुन्किर) थे, कहने लगे कि यह तो सिर्फ़ खुला जादू है। (११०) और जब मैंने हवारियों§ के दिलों में डाला कि मुझ पर और मेरे पैग़म्बर (ओ़सा) पर ईमान लाओ तो उन्होंने कहा हम ईमान लाये और (ऐ अल्लाह) तू इस बात का गवाह रहा कि हम आज्ञाकारी हैं (१११) (ऐ पैग़म्बर! यह भी याद दिलाओ) जब हवारियों ने दरख़्वास्त की कि ऐ मरियम के बेटे ओ़सा क्या तुम्हारे पालनकर्त्ता से (यह) हो सकेगा कि हम पर आसमान से एक 'खाने से भरा थाल' उतारे। (ओ़सा ने) कहा अगर तुम ईमान रखते हो तो अल्लाह से डरो (और ऐसी ऊल-जलूल जाँच शोभा नहीं देती) (११२) (इस पर) वह बोले हम (इम्तिहान के लिए नहीं बल्कि सिर्फ़ बरकत के लिए) चाहते हैं कि उसमें से (कुछ) खायँ और हमारे दिलों में (पूरा-पूरा आपकी पैग़म्बरी का) इत्मीनान हो जाय और हम मालूम कर लें कि (बेशक) आपने हमसे सच कहा और हम इसकी गवाही देने वालों में से होजायें। (११३) ●

★ रु. १४/४ आ ८ ● व. लाज़िम ● रु व् अ् १/४

[पिज २१६ से] हुक्म हुआ उस पर अमल करो; जो हुक्म नहीं हुआ, समझो कि तुमको उसमें माफ़ी दी गई। अगर छोटी छोटी बातों के करने न करने की बात पूछोगे तो जवाब मिलने पर तुमको ही उन सब पर लाज़िमी अमल करने में दिक़्क़त होगी। दीन का अमल मुश्किल होता जायगा। अल्लाह तुमको आसानी देना चाहता है। और फ़ज़ूल के भी सवाल न करो। अल्लाह सब जानता है। कहीं जवाब मिलने पर तुम्हारी ही कोई ऐसी बात न खुल जाय कि बग़लें झाँकने लगो और फिर दीन ही से दूर भागने लगो।

§ हवारी—हज़रत ओ़सा (अ़०) के साथी। देखें नोट [] पेज १०६ सूरः ३ आयत ५२।

क़ाल अीसब्नु मर्यमल्लाहुम्म रब्बना। अन्ज़िल् अलैना मा।अिदतम्-मिनस्समा।अि तकूनु लना अीदल्लि-औवलिना व आख़िरिना व आयतम्-मिन्क ज् वर्ज़ुक़्ना व अन्त ख़ैरुर्राज़िक़ीन (११४) क़ालल्लाहु अिन्नी मुनज़्ज़िलुहा अलैकुम् ज् फ़मैंयक्फ़ुर् बअ्दु मिन्कुम् फ़अिन्नी। अुअ़ज़्ज़िबुहू अज़ाबल्ला। अुअ़ज़्ज़िबुहू। अहृदम्मिनल्-आलमीन (११५) ★

रु. १५/५ आ ७

व अिज़् क़ालल्लाहु या अीसब्न मर्यम अअन्त क़ुल्त लिन्नासित्-तख़िज़ूनी व अुम्मिय अिलाहैनि मिन् दूनिल्लाहि त् क़ाल सुब्हानक मा यकूनु ली। अन् अक़ूल मा लैस ली क़् बिहक़्क़िन् त् ● अिन् कुन्तु क़ुल्तुहू फ़क़द् अलिम्तहू त् तअ्लमु मा फ़ी नफ़्सी व ला। अअ्लमु मा फ़ी नफ़्सिक त् अिन्नक अन्त अल्लामुल्-ग़ुयूबि (११६) मा क़ुल्तु लहुम् अिल्ला मा। अमर्तनी बिही। अनिअ्बुदुल्लाह रब्बी व रब्बकुम् ज् व कुन्तु अलैहिम् शहीदम्मा दुम्तु फ़ीहिम् ज् फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी कुन्त अन्तर्रक़ीब अलैहिम् त् व अन्त अला कुल्लि शैअिन् शहीदुन् (११७) अिन् तुअ़ज़्ज़िबहुम् फ़अिन्नहुम् अिबादुक ज् व अिन् तग़्फ़िर्लहुम् फ़अिन्नक अन्तल्-अज़ीज़ुल्-हकीमु (११८) क़ालल्लाहु हाज़ा यौमु यन्फ़अुस्सादिक़ीन सिद्क़ुहुम् त् लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तहृतिहल्-अन्हारु ख़ालिदीन फ़ीहा। अबदन् त् रज़ियल्लाहु अन्हुम् वरज़ू अन्हु त् ज़ालिकल्-फ़ौज़ुल्-अज़ीमु (११९) लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा फ़ीहिन्न त् व हुव अला कुल्लि शैअिन् क़दीरुन् (१२०) ★

व. नबी स.

रु. १६/६ आ ५

عليها من الشهدين ﴿١١٣﴾ قال عيسى ابن مريم اللهم ربنا انزل
علينا مائدة من السماء تكون لنا عيدا لاولنا واخرنا واية منك
وارزقنا وانت خير الرزقين ﴿١١٤﴾ قال الله اني منزلها عليكم فمن
يكفر بعد منكم فاني اعذبه عذابا لا اعذبه احدا من العلمين ﴿١١٥﴾
واذ قال الله يعيسى ابن مريم ءانت قلت للناس اتخذوني وامي
الهين من دون الله قال سبحنك ما يكون لي ان اقول ما ليس لي
بحق ان كنت قلته فقد علمته تعلم ما في نفسي ولا اعلم ما في
نفسك انك انت علام الغيوب ﴿١١٦﴾ ما قلت لهم الا ما امرتني به ان
اعبدوا الله ربي وربكم وكنت عليهم شهيدا ما دمت فيهم فلما
توفيتني كنت انت الرقيب عليهم وانت على كل شيء شهيد ﴿١١٧﴾
ان تعذبهم فانهم عبادك وان تغفر لهم فانك انت العزيز الحكيم ﴿١١٨﴾
قال الله هذا يوم ينفع الصدقين صدقهم لهم جنت تجري من
تحتها الانهر خلدين فيها ابدا رضي الله عنهم ورضوا عنه ذلك الفوز
العظيم ﴿١١٩﴾ لله ملك السموت والارض وما فيهن وهو على كل شيء قدير ﴿١٢٠﴾

بسم الله الرحمن الرحيم
الحمد لله الذي خلق السموت والارض وجعل الظلمت والنور

☪ ६ सूरतुल्अन्आमि ५५ ☪

(मक्की) इसमें अ़रबी के १२६३५ हुरूफ़ ३१०० शब्द १६५ आयतें और २० रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीमि ●

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी ख़लक़स्समावाति वल्अर्ज़ व जअलज़्ज़ुलुमाति वन्नूर ५ त् सुम्मल्लज़ीन कफ़रू बिरब्बिहिम् यअ्दिलून (१)

ओसा मरियम के बेटे ने दुआ की कि ऐ अल्लाह ! ऐ हमारे परवरदिगार ! हम पर आसमान से एक भोजन भरा थाल (ख़्वाने-निअ़मत) उतार कि वह हमारे लिए (यानी) हमारे अगलों और पिछलों के लिए ईद§ क़रार पाये और (यह) तेरी तरफ़ से (तेरी क़ुदरत की) निशानी हो और हमको रोज़ी दे और तू सब रोज़ी देने वालों में से अच्छा (रोज़ी देने वाला) है। (११४) अल्लाह ने फ़र्माया (बेशक) मैं वह (खाने का) थाल तुम लोगों पर उतारूँगा। फिर तुममें से जो शख़्स (ऐसा चमत्कार देखकर) फिर भी इन्कारी रहेगा तो मैं उसको (ऐसी) सख़्त सज़ा दूंगा कि दुनिया जहान में किसी को भी वैसी नहीं दी होगी। (११५)★

और (उस क़ियामत के दिन) जब अल्लाह (यह भी) पूछेगा कि ऐ मरियम के बेटे ओसा ! क्या तुमने लोगों से यह बात कही थी कि अल्लाह के अलावा मुझको और मेरी माता (इन) दो को (भी) अल्लाह मानो ? (तब ओसा) कहेंगे कि (ऐ मालिक !) तेरी ज़ात पाक है, मुझको क्योंकर हो सकता है कि (तेरी शान में) मैं ऐसी बात कहूं जिसके कहने का मुझको कोई अधिकार नहीं● । अगर मैं ऐसा कहता तो (मेरा कहना) तुझे ज़रूर मालूम होता (क्योंकि) तू मेरे दिल की बात जानता है और मैं तेरे दिल की बात नहीं जानता। ग़ैब (छिपी) की बातें तो तू ही ख़ूब जानने वाला है। (११६) तूने जो मुझको आज्ञा दी थी, बस वही मैंने इनको कह सुनाया था कि अल्लाह जो मेरा और तुम्हारा (सबका) पालनकर्ता है उसी की अिबादत करो, और जब तक मैं इन लोगों में (मौजूद) रहा मुझको उनकी ख़बर रही फिर जब तूने मुझको (दुनिया से) उठा लिया तो तू ही इनकी ख़बर रखनेवाला है और तू ही सब चीज़ों की ख़बर रखने वाला है। (११७) अगर तू इनको सज़ा दे तो यह तेरे बन्दे हैं और अगर तू इनको माफ़ करे तो (भी कोई रोकने वाला नहीं) निस्सन्देह तू ही ज़बरदस्त और बड़ा हिकमतवाला है। (११८) (ओसा की इस विनय को सुनकर) अल्लाह कहेगा कि यह (आख़िरत ही) वह दिन है कि सच्चे बन्दों को उनकी सच्चाई काम आयेगी, उनके लिए (बहिश्त के) बाग़ होंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, (और वह) उनमें हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे ख़ुश और वह अल्लाह से ख़ुश, यही बड़ी कामयाबी है। (११९) आसमान और ज़मीन और जो कुछ उन (आसमान और ज़मीन) के बीच में है, सब पर अल्लाह ही का अधिकार है और वह सब पर समर्थ (सर्वशक्तिमान) है। (१२०)★

★ रु. १५/५ आ ७

● व न. बी स.

★ रु. १६/६ आ ५

☪ ६ सूरतुल्अन्आमि ५५ ☪

(मक्की) अ़रबी के १२६३५ हरफ़, ३१०० शब्द, १६५ आयतें और २० रुकूअ़ हैं।※

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीमि

शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला बेहद मेहरबान है।

हर तरह की तारीफ़ अल्लाह ही को है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और अँधेरा और उजेला बनाया†। इस पर भी काफ़िर (मुशरिक) (अल्लाह के सिवा दूसरी चीज़ों को) अपने परवरदिगार का शरीक (याने पूज्य) ठहराते हैं। (१)

§ कहा जाता है कि यह थाल इतवार के दिन उतरा था। ओसाई इसीलिए इस दिन बड़ी ख़ुशी मनाते हैं। † अन्धेरा और उजेला याने रात-दिन इशारा करते हैं राह ग़लत व राह सही। राह सही एक ही है, बाक़ी सब ग़लत जो अनेक हैं।

※ सूरे अन्आमि का मक्का में, क़ुर्आन के नाज़िल होने के उत्तरार्द्ध में ग़ालिबन इस्लाम के [पेज २२५ पर]

हुवल्लजी ख़लक़कुम् मिन् तीनिन् सुम्म क़ज़ा अजलन् त़ व अजलुम्-
मुसम्मन् अिन्दहू सुम्म अन्तुम् तम्तरून (२) व हुवल्लाहु फ़िस्समावाति व
फ़िल्अर्ज़ि त़ यअ्लमु सिर्रकुम् व जह्रकुम् व यअ्लमु मा तक्सिबून
(३) व मा तअ्तीहिम् मिन् आयतिम् - मिन् आयाति रब्बिहिम् अिल्ला
कानू अन्हा मुअ्रिज़ीन (४) फ़क़द् कज्जबू
बिल्हक़्क़ि लम्मा जा'अहुम् त़ फ़सौफ़
यअ्तीहिम् अम्बा'अु मा कानू बिही यस्तह्ज़िअून
(५) अलम् यरौकम् अह्लक्ना मिन्
क़ब्लिहिम् मिन् क़र्निम्-मक्कन्नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि
मा लम् नुमक्किल्लकुम् व अर्सल्नस्समा'अ
अलैहिम् मिद्रारन् त़ व्व जअ़ल्नल्-अन्हार
तज्री मिन् तह्तिहिम् फ़अह्लक्नाहुम्
बिज़ुनूबिहिम् व अन्शअ्ना मिम्बअ्दिहिम् क़र्नन्
आख़रीन (६) व लौ नज़्ज़ल्ना अलैक
किताबन् फ़ी क़िर्तासिन् फ़लमसूहु बिअैदीहिम्
लक़ालल्लजीन कफ़रू अिन् हाजा अिल्ला
सिह्रुम् - मुबीनुन् (७) व क़ालू लौ ला
अुन्ज़िल अलैहि मलकुन् त़ व लौ अन्ज़ल्ना मलकल्-लक़ुज़ियल् - अम्रु सुम्म
ला युन्ज़रून (८) व लौ जअ़ल्नाहु मलकल्लजअ़ल्नाहु रजुलौंव ललबस्ना
अलैहिम् मा यल्बिसून (९) व लक़दिस्तुह्ज़िअ बिरुसुलिम् - मिन्
क़ब्लिक फ़हाक़ बिल्लजीन सख़िरू मिन्हुम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िअून
(१०) ★ क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि सुम्मन्ज़ुरू कैफ़ कान आक़िबतुल्-
मुकज्जिबीन (११) क़ुल लिमम्मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि त़ क़ुल् लिल्लाहि त़
कतब अला नफ़्सिहिर्रह्मत त़ लयज्मअन्नकुम् अिला यौमिल्क़ियामति ला
रैब फ़ीहि त़ अल्लज़ीन ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् फ़हुम् ला युअ्मिनून (१२)

★ रु. १/७ आ. १०

الانعام ٦ — ١٠٢ — واذا سمعوا ٧

ثم الذين كفروا بربهم يعدلون ۝ هو الذي خلقكم من طين ثم قضى اجلا واجل مسمى عنده ثم انتم تمترون ۝ وهو الله في السموت وفي الارض يعلم سركم وجهركم ويعلم ما تكسبون ۝ وما تاتيهم من اية من ايت ربهم الا كانوا عنها معرضين ۝ فقد كذبوا بالحق لما جاءهم فسوف ياتيهم انبؤا ما كانوا به يستهزءون ۝ الم يروا كم اهلكنا من قبلهم من قرن مكنهم في الارض ما لم نمكن لكم وارسلنا السماء عليهم مدرارا وجعلنا الانهر تجري من تحتهم فاهلكنهم بذنوبهم وانشانا من بعدهم قرنا اخرين ۝ ولو نزلنا عليك كتبا في قرطاس فلمسوه بايديهم لقال الذين كفروا ان هذا الا سحر مبين ۝ وقالوا لولا انزل عليه ملك ولو انزلنا ملكا لقضي الامر ثم لا ينظرون ۝ ولو جعلنه ملكا لجعلنه رجلا وللبسنا عليهم ما يلبسون ۝ ولقد استهزئ برسل من قبلك فحاق بالذين سخروا منهم ما كانوا به يستهزءون ۝ قل سيروا في الارض ثم انظروا كيف كان عاقبة المكذبين ۝ قل لمن ما في السموت والارض قل لله كتب على نفسه الرحمة ليجمعنكم الى يوم القيمة لا ريب فيه الذين خسروا انفسهم فهم لا يؤمنون ۝

منزل ٢

वही है जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर एक (अजल) (मियाद ज़िन्दगी) ठहरा दी और एक मुक़र्रर वक़्त (यानी क़ियामत) उसके पास (नियत) है,† फिर भी तुम (उसकी खुदाई में) सन्देह करते हो। (२) और आसमानों में और ज़मीन में वही अल्लाह है कि जो कुछ तुम छिपाकर और जो ज़ाहिरा करते हो वह उसको मालूम है और जो कुछ तुम (कर्मो द्वारा) कमाते हो (वह सब) उसे मालूम है। (३) और उनके परवरदिगार की निशानियों में से कोई (भी) निशानी उनके पास नहीं पहुँचती जिससे वह मुँह न फेर लेते हों। (४) सो जब सच बात इनके पास आई उसको भी झुठला दिया, तो यह लोग जिस चीज़ की हँसी उड़ा रहे हैं उसकी हक़ीक़त इनको आगे चलकर मालूम हो जायगी। (५) क्या इन लोगों ने नज़र नहीं की हमने इनसे पहले कितनी (ऐसी) उम्मतों (संगतों) का नाश कर दिया जिनकी हमने मुल्क में ऐसी जड़ बाँध दी थी कि (ऐ मुनकिरों!) तुम्हारी ऐसी जड़ (तो अब तक) नहीं बाँधी और हमने उन पर (पानी की इतनी बहुतायत की कि) ख़ूब मेह बरसाया और उसके नीचे से नहरें जारी कर दीं। फिर (हमने) उनके गुनाहों के सबब से उसका नाश कर दिया और उनके (विनाश के) बाद और दूसरी उम्मतें (संगतें) निकाल खड़ी कीं। (६) और (ऐ पैग़म्बर!) अगर हम काग़ज़ पर (लिखीलिखाई) किताब (भी) तुम पर उतारते और यह लोग उसको अपने हाथों से छू (भी) लेते, तो भी (ये) काफ़िर (यही) कहते कि यह (तो निरा) ज़ाहिरा जादू है।✠ (७) और (काफ़िर) कहते हैं कि इस (रसूल) पर कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतरा। और अगर हम फ़रिश्ते को भेजते तो झगड़ा ही चुक गया था, फिर (फ़रिश्ते के आने पर भी न मानते तो) उनको (अज़ाब से) मुहलत न मिलती@। (८) और अगर हम (किसी) फ़रिश्ते को (ही) पैग़म्बर बनाते तो उसको भी आदमी की सूरत में (ही) बनाकर भेजते। और (उस समय भी) हम उन (के दिलों) में वही शक डालते, जो शक यह (अब) कर रहे हैं। (९) और (ऐ पैग़म्बर!) तुमसे पहले भी पैग़म्बरों की हँसी उड़ाई जा चुकी है तो जिन लोगों ने पैग़म्बरों से हँसी की, वह (हँसी) उलटी उन्हीं पर (बतौर अज़ाब) आ पड़ी। (१०)★

★ रु. १/७ आ १०

(ऐ पैग़म्बर! इनसे) कहो कि देश में चलो-फिरो, फिर देखो (कि पैग़म्बरों को) झुठलाने वालों का कैसा अन्त हुआ। (११) (और इनसे) पूछो जो कुछ आसमान और ज़मीन में है (वह सब) किसका है? और (साथ ही) बतला दो कि (सब कुछ) अल्लाह का है, उसने ख़ुद ही लोगों पर मेहरबानी करने को अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है, और वह क़ियामत के दिन तक जिसके आने में कोई भी शक नहीं, तुम लोगों को ज़रूर जमा करेगा। (लेकिन) जो अपनी जानों को तबाही में बराबर डाल रहे हैं वही ईमान नहीं लाते (१२)

[पेज २२३ से] प्रचार के बारह साल बाद, उतरने का समय है। इसका अधिकांश एक साथ ही अवतरित हुआ। क़ुर्आन में इसका क्रम स्थान भी मुनासिब है कि मानव जाति का आध्यात्मिक (Spiritual) इतिहास, अल्लाह की किताबों का उतरना और समय बीतते ही लोगों के ज़रिये उनकी नाफ़रमानी (अवज्ञा) और इनमें उलट फेर, लोगों की दुनियाँ की ज़िन्दगी के लिए शरीअत व दस्तूर क़ायदे क़ायम होना और 'तौहीद' [पेज २२७ पर]

† एक अजल से मतलब दुनिया की ज़िन्दगी और दूसरी से मंशा है क़ब्र से हश्र यानी क़ियामत के दिन तक। ✠ याने जिनकी क़िस्मत में सच्ची राह नहीं है उनका शक ज़िन्दगी भर नहीं मिट सकता। @ कहने का मतलब यह कि ग़ैब से फ़रिश्ते दुनिया की ज़िन्दगी में ही आ जांय तो फिर अज़ाब भी इसी वक़्त नाज़िल होने लग सकते हैं। फिर ज़िन्दगी में वह मौक़ा कहाँ बाक़ी रहेगा कि आदमी अपने अमल सही कर सके और जन्नत का हक़दार बन सके।

व लहू मा सकन फ़िल्लैलि वन्नहारि त् व हुवस्समीअुल् - अलीमु (१३) क़ुल् अग़ैरल्लाहि अत्तख़िज़ु वलीयन् फ़ातिरिस्समावाति वल्अर्ज़ि व हुव युत्अिमु व ला युत्अमु त् क़ुल् अिन्नी अुमिर्तु अन अकून औवल मन् अस्लम व ला तकूनन्न मिनलमुश्रिकीन (१४) क़ुल् अिन्नी अख़ाफ़ु अिन् असैतु रब्बी अज़ाब यौमिन् अज़ीमिन् (१५) मैंयुस्रफ़् अन्हु यौमअिज़िन् फ़क़द् रहिमहू त् व ज़ालिकल्फ़ौज़ुल्मुबीनु (१६) व अीयम्-सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिन् फ़ला काशिफ़ लहू अिल्ला हुव त् व अीयम्सस्क बिख़ैरिन् फ़हुव अला कुल्लि शैअिन् क़दीरुन् (१७) व हुवल्क़ाहिरु फ़ौक़ अिबादिही त् व हुवल्-हकीमुल् - ख़बीरु (१८) क़ुल् अैयु शैअिन् अक्बरु शहादतन् त् क़ुलिल्लाहु क़िफ़ ला शहीदुम्-बैनी व बैनकुम् क़िफ़ व अूहिय अिलैय हाज़ल्क़ुर्आनु लिअुन्ज़िरकुम् बिही व मम्बलग़ त् अअिन्नकुम् लतश्हदून अन्न मअल्लाहि आलिहतन् अुख़्रा त् क़ुल्ला अश्हदु ज क़ुल् अिन्नमा हुव अिलाहूँवाहिदूँव अिन्ननी बरीअुम्-मिम्मा तुश्रिकून म ● (१९) अल्लज़ीन आतैनाहुमुल्-किताब यअ्रिफ़ूनहू कमा यअ्रिफ़ून अब्नाअहुम् म ● अल्लज़ीन ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् फ़हुम् ला युअ्मिनून (२०) ★ व मन् अज़्लमु मिम्मनिफ़्तरा अलल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़ब बिआयातिही त् अिन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून (२१) व यौम नह्शुरुहुम् जमीअन् सुम्म नक़ूलु लिल्लज़ीन अश्रकू अैन शुरकाअुकुमुल्लज़ीन कुन्तुम् तज़्अुमून (२२) सुम्म लम् तकुन् फ़ित्नतुहुम् अिल्ला अन् क़ालू वल्लाहि रब्बिना मा कुन्ना मुश्रिकीन (२३) अुन्ज़ुर् कैफ़ कज़बू अला अन्फ़ुसिहिम् व ज़ल्ल अन्हुम् मा कानू यफ़्तरून (२४)

● व. ला जिम ● व. ला जिम ★ रु. २/८ आ १०

وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۭ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ قُلْ اَغَيْرَ
اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ۭ قُلْ
اِنِّیْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝
قُلْ اِنِّیْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝ مَنْ
يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَىِٕذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ۭ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ۝ وَاِنْ
يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۭ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ
فَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ۭ وَهُوَ الْحَكِيْمُ
الْخَبِيْرُ ۝ قُلْ اَيُّ شَيْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ۭ قُلِ اللّٰهُ شَهِيْدٌۢ بَيْنِيْ وَ
بَيْنَكُمْ ۣ وَاُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ۭ اَىِٕنَّكُمْ
لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰى ۭ قُلْ لَّآ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا
هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِيْ بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ
يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَاۗءَهُمْ ۘ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰي عَلَي اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ
بِاٰيٰتِهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ
نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ شُرَكَاۗؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ۝
ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ۝
اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝

और (सारी सृष्टि) उसी की है जो कुछ रात और दिन में क़ायम है और वही (सब) सुनता और जानता है। (१३) (ऐ पैग़म्बर !) पूछो कि अल्लाह जो आसमान और ज़मीन का पैदा करने वाला है, क्या उसके सिवाय किसी और को अपना मददगार बनाऊँ और वही (सबको) रोज़ी देता है और कोई उसको रोज़ी नहीं देता। (और ऐ रसूल !) कह दो मुझको (तो यह) हुक्म मिला है कि सबसे पहले, मैं (ख़ुद उस एक अल्लाह का) आज्ञाकारी बनूँ और (ऐ रसूल ! तुम) मुशरिकों (किसी को भी अल्लाह का साझी बनानेवालों) में न हो जाना। (१४) कहो कि अगर मैं अपने परवरदिगार की नाफ़र्मानी (अवज्ञा) करूँ तो मुझको (क़ियामत के) एक बड़े दिन की सख़्त सज़ा से डर लगता है। (१५) उस दिन जिस (के ऊपर) से अज़ाब टल गया तो उस पर अल्लाह ने (बड़ी) मेहरबानी की और यह (उसकी खुली हुई) कामयाबी है। (१६) और (ऐ बन्दे !) अगर अल्लाह तुझको कुछ तकलीफ़ पहुँचाये तो उसके सिवा कोई उसको दूर करनेवाला नहीं और अगर (अल्लाह) तुमको भलाई पहुँचाये तो वह हर चीज़ पर शक्तिशाली है। (१७) और उसी का ज़ोर पहुंचता है अपने बन्दों पर और वही हिकमतवाला (और हर चीज़ की) ख़बर रखनेवाला है। (१८) (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि गवाही सबसे बढ़कर किसकी है ? (और) बता दो कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच (सबसे बड़ी) गवाही है और यह क़ुर्आन मेरी तरफ़ इसीलिये ख़ुदाई पैग़ाम है कि इसके ज़रिये से तुमको और जिस तक (यह) पहुँचे (उसको अज़ाब अल्लाह से) सचेत करूँ। (ऐ मुशरिको व काफ़िरो!) क्या तुम सचमुच इस बात की गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे माबूद (पूजित) भी हैं ? (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कह दो कि (तुम भले ही कहो) मैं तो (इस बात की) गवाही नहीं देता। (तुम इन लोगों से) कहो कि वह तो सिर्फ़ एक (और एकमात्र) पूजित है और जिन चीज़ों को तुम अल्लाह का शरीक बनाते हो मैं उनसे (बिलकुल) बरी हूँ। (१९) जिन लोगों को हमने किताब दे रखी है (यानी यहूद व नसारा) वह तो जैसा अपने बेटों को पहचानते हैं वैसा ही इस (मोहम्मद स०) को भी पहचानते हैं। ● (लेकिन) जिन्होंने अपने को घाटे में डाल रखा है (तो) वह ईमान लाने वाले नहीं। (२०) ★

और जो शख़्स अल्लाह पर झूठा बुहतान (आरोप) बाँधे या उसकी आयतों को झुठलाये उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है (और ऐसे) ज़ालिमों को किसी तरह सफलता (नसीब) नहीं (२१) और (एक दिन होगा) जबकि हम इन सबको (अपने रूबरू) जमा करेंगे, फिर उन लोगों से जो (हमारे साथ दूसरों को) शरीक (पूज्य) ठहराते थे, पूछेंगे कि कहाँ हैं तुम्हारे वह शरीक (देवी-देवता) जिनका तुम (शरीक ख़ुदाई होने का) दावा करते थे ? (२२) फिर इनकी और शरारत न बाक़ी रहेगी सिवा (इसके कि यों झूठ) कहेंगे कि हमको अल्लाह परवरदिगार की क़सम हम मुशरिक ही न थे। (२३) (ऐ पैग़म्बर !) देखो किस तरह अपने ऊपर आप झूठ बोलने लगे और जिन चीज़ों को वह झूठ-मूठ तराशा (काटा-छाटा) करते थे वह सब ग़ायब हो गयीं। (२४)

● अ. ला जि म ● अ. ला जि म ★ रु. २/८ आ १०

[पेज २२५ से] (The unity of God) से यहूदियों व ईसाइयों का डगमगा जाना वग़ैरः पिछली सूरतों में विस्तार से बयान किया गया है। अब यहाँ से एक ईश्वर के अलावा और भी शक्तियों को मानने वाले व अन्धविश्वासी अरब के मुशरिकों को ख़ास तौर पर 'एक अल्लाह' का सिद्धांत समझाया गया है। क्योंकि इस सूरत के उतरने का वह ज़माना था कि ज्यों ज्यों इस्लाम की जड़ मज़बूत हो रही थी मक्का में क़ुरैशों के ज़ुल्म ईमानवालों पर बढ़ते जा रहे थे। आयत १-४० में लोगों की यह ज़िद कि कोई ख़ुदाई चमत्कार आँखों देखें तो ईमान लावें, इस पर समझाया गया है कि यह उनका बहाना है। इससे पहले नबियों के ज़रिये चमत्कार प्रगट होने पर भी उन्हें क़त्ल किया गया है। अल्लाह की यह बेशबहा क़ुदरत और जो इल्म उसने उतारा है, वह काफ़ी है [पेज २३७ पर]

व मिन्हुम् मैंयस्तमिअु अिलैक ज् व जअ़ल्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् अकिन्नतन् अैंयफ़्क़हूहु व फ़ी आजानिहिम् वक़्रन् त् व अींयरौ कुल्ल आयतिल्ला युअ्मिनू बिहा त् हत्ता अिजा जाअूक युजादिलूनक यक़ूलुल्लजीन कफ़रू अिन् हाजा अिल्ला असातीरुल् - औवलीन (२५) व हुम् यन्हौन अ़न्हु व यन्औन अ़न्हु ज् व अींयुह्लिकून अिल्ला अन्फ़ुसहुम् व मा यश्अुरून (२६) व लौ तरा अिज् वुक़िफ़ू अ़लन्नारि फ़क़ालू यालैतना नुरद्दु व ला नुकज्जिब बिआयाति रब्बिना व नकून मिनल्मुअ्मिनीन (२७) बल् बदा लहुम् मा कानू युख़्फ़ून मिन् क़ब्लु त् व लौ रुद्दू लअ़ादू लिमा नुहू अ़न्हु व अिन्नहुम् लकाजिबून (२८) व क़ालू अिन् हिय अिल्ला हयातुनद्दुन्या व मा नह्नु बिमब्अूसीन (२९) व लौ तरा अिज् वुक़िफ़ू अ़ला रब्बिहिम् त् क़ाल अलैस हाजा बिल्हक़्क़ि त् क़ालू बला व रब्बिना त् क़ाल फ़जूक़ुलअ़जाब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून (३०) ★ क़द् ख़सिरल्लजीन कज्जबू बिलिक़ा अिल्लाहि त् हत्ता अिजा जाअत्-हुमुस्साअ़तु बग़्तत्न् क़ालू याहस्रतना अ़ला मा फ़र्रत्ना फ़ीहा ला व हुम् यह्मिलून औजारहुम् अ़ला ज़ुहूरिहिम् त् अला साअ मा यज़िरून (३१) व मल्हयातुद्दुन्या अिल्ला लअिबूंव लह्वुन् त् व लद्दारुल्-आख़िरतु ख़ैरुल्लिल्लजीन यत्तक़ून त् अफ़ला तअ़्क़िलून (३२) क़द् नअ़्लमु अिन्नहु लयह्ज़ुनुकल्लजी यक़ूलून फ़अिन्नहुम् ला युकज्जिबूनक व लाकिन्नज्ज़ालिमीन बिआयातिल्लाहि यज्हदून (३३) व लक़द् कुज्जिबत् रुसुलुम्मिन् क़ब्लिक फ़सबरू अ़ला मा कुज्जिबू व अूजू हत्ता अताहुम् नस्रुना ज् व ला मुबद्दिल लिकलिमातिल्लाहि ज् व लक़द् जाअक मिन् नबअिल्मुर्सलीन (३४)

★ रु. ३/६ आ १०

الانعام ٦ — ١٠٣ — ولو اننا ٧

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ
وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ حَتّٰٓى اِذَا
جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ
الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ
اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا
يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧﴾ بَلْ
بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ
وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ
بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا
بِالْحَقِّ ۚ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٠﴾
قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ ۚ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً
قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى
ظُهُوْرِهِمْ ۚ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٣١﴾ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّ
لَهْوٌ ۚ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ۚ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٣٢﴾ قَدْ
نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ
الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ
فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى اَتٰهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ

(ऐ पैग़म्बर !) इनमें से (बाज़) ऐसे भी हैं जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाकर (ध्यान से) सुनते हैं फिर भी (उनमें श्रद्धा-विश्वास न होने के कारन) उनके दिलों पर हमने परदे डाल दिये हैं। इनके कानों में बोझ है ताकि तुम्हारी बात न समझ सकें और अगर यह सारी (की सारी) निशानियाँ भी देख लें तो भी उन पर ईमान लाने वाले नहीं,§ (और इनकी हठधर्मी) यहाँ तक (बढ़ी है) कि जब तुम्हारे पास आकर तुमसे झगड़ते हैं तो (यह) काफ़िर बोल उठते हैं कि क़ुर्आन में तो सिर्फ़ अगलों की (सुनीसुनाई) दास्तानें हैं। (२५) और यह लोग इस (क़ुर्आन) से दूसरों को रोकते हैं और (खुद भी) उससे भागते हैं और (ऐसी करनी से वह) अपनी जानों को ही तबाह करते हैं और इसको समझ नहीं पाते। (२६) और (ऐ पैग़म्बर !) काश तुम (इनकी वह हालत) देखते जब आग (दोज़ख़) के सामने खड़े किये जायँगे तो (अपनी दर्दनाक दशा देखकर) कहेंगे कि अगर अल्लाह की मेहरबानी से हम फिर दुनिया में भेजे जायँ तो अपने परवरदिगार की आयतों को न झुठलाएँ और ईमानवालों में से हों। (२७) बल्कि इससे पहले जिन (दुनिया के जीवन में किये कुकर्मों) को छिपाते थे उनके आगे आये और (अज़ाब से लाचार होकर यह कहने लगे, लेकिन सच तो यह है कि) अगर (दुनिया में दुबारा) फिर वापस भेज दिये जायँ तो जिस चीज़ से इनको मना किया गया है उसको (ही) फिर दुबारा करेंगे और यह (बेशक) झूठे हैं। (२८) और (काफ़िर यह भी) कहते हैं कि (यह) जो हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है इसके अलावा और किसी तरह की ज़िन्दगी नहीं। और (मरने के बाद) हमको फिर (क़ब्र से) नहीं उठना है। (२९) (और ऐ पैग़म्बर ! अगर) तू (इनको उस वक़्त) देखे जबकि वह लोग अपने परवरदिगार के सामने लाकर खड़े किये जायँगे (और वह इनसे) पूँछेगा क्या यह अब तुम्हारा (क़ब्र से जी उठना) सच नहीं ? (इस पर वह) जवाब देंगे हमारे परवरदिगार की क़सम ज़रूर सच है। (इस पर अल्लाह) फ़रमायेगा कि अपने इन्कारी होने का मज़ा चखो। (३०) ★

★ रु. ३/६ आ १०

जिन लोगों ने (क़ियामत के दिन) अल्लाह के सामने पेश होने को झूठा जाना (बेशक) वह लोग बड़े घाटे में रहे, (यह उनका इन्कार बस) वहीं तक (जब तक क़ियामत की नौबत नहीं आई) लेकिन जब एकदम क़ियामत इन (के सर) पर आ मौजूद होगी तो चिल्ला उठेंगे कि अफ़सोस ! हमने दुनिया में (क़ियामत पर यक़ीन न लाकर) कैसी कोताही (चूक) की और अपने (गुनाहों के) बोझ अपनी पीठ पर लादे वह (भुगत रहे) होंगे। देखो तो बुरा है (कैसा वह गुनाह का बोझ) जिसको यह लादे होंगे। (३१) और दुनिया की ज़िन्दगी तो निरा खेल और तमाशा है और कुछ शक नहीं जो लोग परहेज़गार (संयमी) हैं उनके लिए आख़िरत† का घर कहीं अच्छा है। क्या तुम लोग (इतना भी) नहीं समझते। (३२) (ऐ पैग़म्बर !) हम इस बात को जानते हैं कि यह लोग जैसी-जैसी बातें (तुमसे) कहते हैं, बेशक तुमको (उनसे) दुख होता है। पस (समझ रखो कि) यह तुमको नहीं झुठलाते बल्कि (ये) ज़ालिम अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं। (३३) और तुमसे पहले भी बहुत से पैग़म्बर झुठलाये जा चुके हैं, तो उन्होंने (अपने को) लोगों के (ज़रिये) झुठलाये जाने और पीड़ा पहुँचाये जाने पर सब्र किया। यहाँ तक कि हमारी मदद उनके पास आ पहुंची और कोई (ज़ालिम से ज़ालिम भी) अल्लाह की बातों का बदलनेवाला नहीं; और पैग़म्बरों के हाल तो तुमको पहुँच चुके हैं। (३४)

§ अिल्म हासिल करने के तीन रास्ते हैं। दिल, कान और आँख। आदमी दिल से समझता है, कान से सुनता है और आँख से देखता है। मगर [पेज २३३ पर] † दूसरी दुनिया जो क़ियामत के बाद होगी।

व अिन् कान कबुर अलैक अिऽराज़ुहुम् फ़अिनिस् - ततऽत अन् तब्तग़िय नफ़क़न् फ़िल्‌अर्ज़ि औ सुल्लमन् फ़िस्समाअि फ़तअ्तियहुम् बिआयविन् त् व लौ शाअल्लाहु लजमअहुम् अलल्‌हुदा फ़ला तकूनन्न मिनल्‌जाहिलीन (३५) ● अिन्नमा यस्तजीबुल्लजीन यस्मअून त् ● वल्मौता यब्‌असुहुमुल्लाहु सुम्म अिलैहि युर्जअून ● (३६) व क़ाल लौ ला नुज़्ज़िल अलैहि आयतुम्-मिर्रब्बिही त् क़ुल् अिन्नल्लाह क़ादिरुन् अला अँय्युनज़्ज़िल आयतौंव लाकिन्न अक्सरहुम् ला यऽलमून (३७) व मा मिन् दाब्बतिन् फ़िल्‌अर्ज़ि व ला ताअिरीयतीरु बिजनाहैहि अिल्ला अुममुन् अम्सालुकुम् त् मा फ़र्रत्ना फ़िल्-किताबि मिन् शैअिन् सुम्म अिला रब्बिहिम् युह्‌शरून (३८) वल्लजीन कज़्ज़बू बिआयातिना सुम्मुँव बुक्मुन् फ़िज़्ज़ुलुमाति त् मैंयशअिल्लाहु युज़्‌लिल्‌हु त् व मैंयशअ् यज्‌अल्‌हु अला सिरातिम्मुस्तक़ीमिन् (३९) क़ुल् अरअैतकुम् अिन् अताकुम् अज़ाबुल्लाहि औ अतत्कुमुस्साअतु अग़ैरल्लाहि तद्‌अून ज् अिन् कुन्तुम् सादिक़ीन (४०) बल् अीयाहु तद्‌अून फ़यक्‌शिफ़ु मा तद्‌अून अिलैहि अिन् शाअ व तन्सौन मा तुश्‌रिकून (४१) ★ व लक़द् अर्सल्‌ना अिला अुममिम्मिन् क़ब्‌लिक फ़अख़ज़्‌नाहुम् बिल्बअ्साअि वज़्ज़र्राअि लअल्लहुम् यतज़र्रअून (४२) फ़लौ ला अिज् जाअहुम् बअ्सुना तज़र्रअू व लाकिन् क़सत् क़ुलूबुहुम् वज़ैयन लहुमुश्शैतानु मा कानू यऽमलून (४३) फ़लम्मा नसू मा ज़ुक्किरू बिही फ़तह्‌ना अलैहिम् अब्‌वाब कुल्लि शैअिन् त् हत्ता अिजा फ़रिहू बिमा अूतू अख़ज़नाहुम् बग़्‌तवन् फ़अिजा-हुम् मुब्‌लिसून (४४)

الانعام ١٠٥ واذا سمعوا

لكلمت الله ولقد جاءك من نبأى المرسلين ۞ وان كان كبر
عليك اعراضهم فان استطعت ان تبتغى نفقا فى الارض او
سلما فى السماء فتاتيهم باية ولو شاء الله لجمعهم على
الهدى فلا تكونن من الجهلين ۞ انما يستجيب الذين يسمعون
والموتى يبعثهم الله ثم اليه يرجعون ۞ وقالوا لولا نزل عليه
اية من ربه قل ان الله قادر على ان ينزل اية ولكن اكثرهم
لا يعلمون ۞ وما من دابة فى الارض ولا طئر يطير بجناحيه
الا امم امثالكم ما فرطنا فى الكتب من شىء ثم الى ربهم
يحشرون ۞ والذين كذبوا بايتنا صم وبكم فى الظلمت من
يشا الله يضلله ومن يشا يجعله على صراط مستقيم ۞ قل
ارءيتكم ان اتىكم عذاب الله او اتتكم الساعة اغير الله
تدعون ان كنتم صدقين ۞ بل اياه تدعون فيكشف ما
تدعون اليه ان شاء وتنسون ما تشركون ۞ ولقد ارسلنا الى
امم من قبلك فاخذنهم بالباساء والضراء لعلهم يتضرعون ۞
فلولا اذ جاءهم باسنا تضرعوا ولكن قست قلوبهم وزين
لهم الشيطن ما كانوا يعملون ۞ فلما نسوا ما ذكروا به فتحنا
عليهم ابواب كل شىء حتى اذا فرحوا بما اوتوا اخذنهم بغتة

منزل

नि. १/२ ● व. ग़ु. फ़. ● व. मंज़िल

★ रु. ४/१० आ ११

और अगर इनकी तवज्जोह न देना तुमको बुरा लगता है और तुमसे हो (भी) सके कि ज़मीन के अन्दर कोई सुरंग या आसमान में कोई सीढ़ी खोज निकालो और (इस तरह खुदाई चमत्कार को सरीहन आँखों देखने की इनकी फ़रमाइश पूरी करने के लिए) कोई निशानी इनको लाकर दिखाओ (भी, तब भी ये ईमान लाने वाले नहीं) और अल्लाह को (ऐसा होना) मंज़ूर होता तो इनको सीधे रास्ते पर ला जमा करता, तो देखो तुम कहीं नादानों में न हो जाना (कि लगो खुदाई इन्तज़ाम अपने हाथों में लेने) ।● (३५) वही मानते हैं जो (मानने की नियत से) सुनते हैं ● और मुर्दों को§ अल्लाह (क़ियामत के दिन ही) उठायेगा फिर उसी (अल्लाह की अदालत) की तरफ़ जायँगे ।● (३६) और कहते हैं कि इस (रसूल) के परवरदिगार की तरफ़ से इस पर कोई निशानी क्यों नहीं उतरी ? कहो कि अल्लाह निशानी के उतारने में शक्तिमान है। मगर इनमें के अक्सर (अल्लाह की मसलहत से) बे समझ हैं। (३७) और ज़मीन में जो भी चलने वाला जानवर और दो परों से उड़नेवाला पक्षी है उनकी (भी) तुम आदमियों की तरह अपनी जमातें हैं। कोई चीज़ नहीं जिसे हमने (लौह महफ़ूज़) में न लिखा हो। फिर (सब) अपने परवरदिगार के सामने जमा होंगे। (३८) और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते हैं (वे) अन्धेरे में गूँगे और बहरे (के समान) हैं, अल्लाह जिसे चाहे उसे भटका दे और जिसे चाहे उसे सीधे रास्ते पर लगा दे। (३९) (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) पूछो कि अगर अल्लाह की सज़ा तुम्हारे सामने आ मौजूद हो या क़ियामत तुम्हारे सामने (यकबयक) आ खड़ी हो तो क्या अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे को पुकारने लगोगे, भला बताओ तो सही अगर तुम सच्चे हो। (४०) बल्कि उसी (एक अल्लाह) को (मुसीबत में) पुकारते हो। तो जिस (मुसीबत से छुटकारे) के लिए पुकारते हो अगर उस (अल्लाह) की मर्ज़ी में आता है तो उसको दूर कर देता है और जिनको तुम शरीक बनाते थे (उस संकट की घड़ी में उनको) भूल जाते हो। (४१)★

और तुमसे पहले बहुत सी उम्मतों (संगतों) की तरफ़ हमने पैग़म्बर भेजे थे। (फिर आगे चलकर उन उम्मतों के कुफ़्र पर) हमने उनको सख़्ती और तकलीफ़ में डाला ताकि शायद वह (हमारे सामने) गिड़गिड़ायें। (४२) तो जब उन पर हमारी सज़ा आई थी (तो वे) क्यों नहीं गिड़गिड़ाये? मगर उनके दिल (तो) कठोर हो गये थे और जो (बुरे) काम (वे) करते थे शैतान ने उन (की नज़रों में उन) को भला दिखलाया था (ताकि वे उन्हीं शैतानी कामों में लिप्त रहें)। (४३) फिर जो शिक्षा उनको दी गई थी उसे बिसार बैठे, तो (पहले तो) हर (तरह की निअ़मतों के) दरवाज़े हमने उन पर खोल दिये, यहाँ तक कि उन (निअ़मतों) को पाकर प्रसन्न हुए, (फिर) एकाएक हमने उनको (अज़ाब में) धर पकड़ा और (अब) वह निराश होकर रह गये†। (४४)

§ मुर्दों यानी काफ़िरों को इस दुनिया में ज़िन्दः रहते भी मरा समझो कि उनमें किसी भी सीख से होश आता ही नहीं। इन्हें होश तो तभी आयेगा जब क़ियामत के दिन ये दोज़ख की ओर हँकाये जाँयगे और उस वक़्त इनका ज़िन्दः होना या देखना सुनना समझना सब बेकार होगा। † गुनहगारों को शुरू मे अल्लाह रहम करने व उनको राह रास्त पर लाने के लिए थोड़ी सज़ा में डालता है। फिर अगर गुनहगारों को होश हो गया और उन्होंने अल्लाह से गिड़गिड़ा कर माफ़ी माँगी और आइन्दः अपने को गुनाहों से बचाये रखा तब तो उन्हें न डर है न दुख। लेकिन बजाय तौबः करने के अगर वे बुरी राह में ही फँसते चले तब अल्लाह उनको दुनिया की उम्दः उम्दः भुलावे की चीज़ें देकर और भरमा देता है कि उनके गुनाहों का घड़ा भरता जाय। और तब यकबयक उन पर अल्लाह का कहर फट पड़ता है। तब वे लाचार और दुख के मारे रह जाते हैं। दुनिया में यह रोज़ की बात है कि सरकश और ज़ालिम शुरू में फलता-फूलता नज़र आता है और यह देख लोग क़ुदरत इलाही में शक करने लगते हैं। लेकिन उन सरकशों का अन्त जैसा दर्दनाक होता है, उसको देखकर अल्लाह के निज़ाम की सराहना करनी पड़ती है।

नि. १ २ ● व. गु. कु. ● व. मंजिल

★ रु. ४ १० आ ११

फ़क़ुतिअ़ दाबिरुल् - क़ौमिल्लज़ीन ज़लमू ॖ वल्ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आ़लमीन (४५) क़ुल् अरऐतुम् अिन् अख़ज़ल्लाहु सम्अ़कुम् व अब्सारकुम् व ख़तम अ़ला क़ुलूबिकुम् मन् अिलाहुन् ग़ैरुल्लाहि यअ्तीकुम् बिही ॖ अुन्ज़ुर् कैफ़ नुसर्रिफ़ुल् - आयाति सुम्म हुम् यस्दिफ़ून (४६) क़ुल् अरऐतकुम् अिन् अताकुम् अ़ज़ाबुल्लाहि बग़्ततन् औ जह्रतन् हल् युह्लकु अिल्लल्-क़ौमुज़्ज़ालिमून (४७) व मा नुर्सिलुल् - मुर्सलीन अिल्ला मुबश्शिरीन व मुन्ज़िरीन ज॒ फ़मन् आमन व अस्लह़ फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह़्ज़नून (४८) वल्लज़ीन कज़्ज़बू बिआयातिना यमस्सुहुमुल् - अ़ज़ाबु बिमा कानू यफ़्सुक़ून (४९) क़ुल्ला अक़ूलु लकुम् अ़िन्दी ख़ज़ाअिनुल्लाहि व ला अअ्लमुलग़ैब व ला अक़ूलु लकुम् अिन्नी मलकुन् ज॒ अिन् अत्तबिअ़ु अिल्ला मा यूह़ा अिलैय ॖ क़ुल् हल् यस्तविल्अअ्मा वल्बसीरु ॖ अफ़ला ततफ़क्करून (५०) ★ व अन्ज़िर् बिहिल्लज़ीन यख़ाफ़ून अंैयुह़्शरू अिला रब्बिहिम् लैस लहुम् मिन दूनिही वलीयुँव ला शफ़ीअ़ुल्-लअ़ल्लहुम् यत्तक़ून (५१) व ला ततरुदिल्लज़ीन यद्अ़ून रब्बहुम् बिल्ग़दाति वल्अ़शीयि युरीदून वज्हहु ॖ मा अ़लैक मिन् ह़िसाबिहिम् मिन् शैअिंव्व मा मिन् ह़िसाबिक अ़लैहिम् मिन् शैअिन् फ़ततरुदहुम् फ़तकून मिनज़्ज़ालिमीन (५२) व कज़ालिक फ़तन्ना बअ़्ज़हुम् बिबअ़्ज़िल् - लियक़ूलू अहाअुलाअि मन्नल्लाहु अ़लैहिम् मिम्बैनिना ॖ अलैसल्लाहु बिअअ्लम बिश्शाकिरीन (५३) व अिज़ा जाअकल्लज़ीन युअ्मिनून बिआयातिना फ़क़ुल् सलामुन् अ़लैकुम् कतब रब्बुकुम् अ़ला नफ़्सिहिर्रह़्मत ला अन्नहू मन् अ़मिल मिन्कुम् सूअम्-बिजहालतिन् सुम्म ताब मिम्बअ़्दिही व अस्लह़ फ़अन्नहू ग़फ़ूरुर्रह़ीमुन् (५४)

فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ۝ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا ۭ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝ قُلْ اَرَءَیْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَ
خَتَمَ عَلٰی قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَیْرُ اللّٰهِ یَاْتِیْكُمْ بِهٖ ۭ اُنْظُرْ كَیْفَ
نُصَرِّفُ الْاٰیٰتِ ثُمَّ هُمْ یَصْدِفُوْنَ ۝ قُلْ اَرَءَیْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ
اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً هَلْ یُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَمَا
نُرْسِلُ الْمُرْسَلِیْنَ اِلَّا مُبَشِّرِیْنَ وَمُنْذِرِیْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ
فَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ۝ وَالَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا
یَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا یَفْسُقُوْنَ ۝ قُلْ لَّاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِیْ
خَزَآىِٕنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ الْغَیْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّیْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا
مَا یُوْحٰۤی اِلَیَّ ۭ قُلْ هَلْ یَسْتَوِی الْاَعْمٰی وَالْبَصِیْرُ ۭ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ۝
وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِیْنَ یَخَافُوْنَ اَنْ یُّحْشَرُوْۤا اِلٰی رَبِّهِمْ لَیْسَ لَهُمْ مِّنْ
دُوْنِهٖ وَلِیٌّ وَّلَا شَفِیْعٌ لَّعَلَّهُمْ یَتَّقُوْنَ ۝ وَلَا تَطْرُدِ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ
رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَهٗ ۭ مَا عَلَیْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ
مِّنْ شَیْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَیْهِمْ مِّنْ شَیْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ
مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّیَقُوْلُوْۤا اَهٰۤؤُلَاۤءِ مَنَّ
اللّٰهُ عَلَیْهِمْ مِّنْ بَیْنِنَا ۭ اَلَیْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِیْنَ ۝ وَاِذَا جَآءَكَ
الَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِاٰیٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَیْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰی نَفْسِهِ

منزل

★ रु. ५ / ११ आ ६

फिर उन ज़ालिमों की जड़ कट गई और अल्लाह की ही सराहना है जो सारे संसार का मालिक है। (४५) (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) पूछो कि भला देखो तो सही, अगर अल्लाह तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे तो अल्लाह के सिवाय (क्या) और कोई इलाह (पूज्य) है कि यह तुमको (वापस) ला दे ? (ऐ नबी !) देखो तो क्योंकर हम दलीलें तरह-तरह पर बयान करते हैं, इस पर भी यह लोग मुँह फेर चले जाते हैं। (४६) तो (इनसे यह भी) पूछो कि देखो तो सही अगर अल्लाह का अज़ाब एकाएक या जता-बताकर तुम पर आ उतरे तो क्या गुनहगारों के सिवाय कोई दूसरा मारा जायगा। (४७) और पैग़म्बरों को हम सिर्फ़ इस ग़रज़ से भेजा करते हैं कि (अल्लाह की) ख़ुशख़बरी सुनावें, और (अल्लाह के अज़ाब से) डरावें तो जो ईमान लाया और (अपना) सुधार कर लिया, तो ऐसे लोगों पर (क़ियामत के दिन) न डर होगा और न वह उदास होंगे। (४८) और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया उनको हुक्म न मानने के सबब (हमारी) सज़ा (पहुँचकर) रहेगी। (४९) (ऐ पैग़म्बर !) कह दो कि मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब (अदृष्ट) का जानकार हूँ और न मैं तुमसे (यह) कहता हूँ कि मैं फ़रिश्तः हूँ, मैं तो बस उसी पर चलता हूँ जो मेरी तरफ़ (अल्लाह का) हुक्म आता है। (नबी ! इनसे) पूछो कि आया अन्धा और जिसको सूझ पड़ता है (दोनों) बराबर हो सकते हैं ? क्या तुम विचार से काम नहीं लेते। (५०) ★

★ रु. ५/११ आ ६

और (ऐ रसूल !) (क़ुर्आन के द्वारा) उन लोगों को (अज़ाब से) डराओ जो इस बात का डर रखते हैं कि (क़ियामत के दिन) अपने परवरदिगार के सामने हाज़िर किये जायँगे, (और उस समय) अल्लाह के सिवाय न कोई उनका दोस्त होगा और न सिफ़ारिश करने वाला। वे (इससे डरकर) शायद बचते रहें। (५१) और (ऐ नबी !) जो लोग सुबह व शाम अपने परवरदिगार ही से दुआएँ माँगते और उसी से उम्मीद लगाते हैं उनको† (अपने पास से अदना समझकर) मत निकालो न तो उनकी जवाबदिही किसी तरह तुम्हारे ज़िम्मे है और न तुम्हारी उनके ज़िम्मे है। (कि जवाबदिही के डर से उनको धक्के देने लगो ऐसा करोगे) तो तुम (भी) ज़ालिमों में हो जाओगे। (५२) और इसी तरह हमने एक को एक से जाँचा ताकि वह (धन व इज़्ज़त में चूर लोग इन ग़रीब ईमानपरस्तों को देखकर) यों कहें कि क्या हममें से इन्हीं (नाचीज़ों) को अल्लाह ने (ईमान की) नियामत दी है, क्या यह बात नहीं है कि अल्लाह शुक्र मानने वालों को ख़ूब जानता है ? (५३) और (ऐ पैग़म्बर !) जो लोग हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, वे जब तुम्हारे पास आया करें तो (उनको सब्र दिलाया करो और) कहो कि तुम पर सलाम (कल्याण); तुम्हारे परवरदिगार ने मेहरबानी करना अपने ऊपर ले लिया है कि जो कोई तुममें से नादानी से कोई गुनाह कर बैठे फिर किये बाद तौबा और (अपना) सुधार कर ले तो वह (बेशक) बख़्शनेवाला बेहद मेहरबान है। (५४)

[पेज २२९ से] जब दिल और कान पर मुहर लग गई, आँखों पर पर्दा डाल दिया गया तो अब न तो हिदायत को समझ सकते हैं न हक़ को देख सकते हैं न सुन सकते हैं। पस, अल्लाह क़ुदरत को पैदा करता [पेज २३५ पर]

† काफ़िरों में से कुछ सरदार रसूल स० के पास आकर कहने लगे कि हमारा जी आपकी बातें सुनने को चाहता है, लेकिन आपके पास तो ग़ुलामों की भीड़ लगी रहती है। हम उनके बराबर कैसे बैठ सकते हैं ? उनको जब हम आया करें, उठा दिया कीजिए। इस पर यह आयतें उतरीं कि अल्लाह के भक्त भले ही ग़रीब हों, उनकी ही खातिर होना चाहिये। जिनको धन-मान का नशा है वह ख़ुदा से कोसों दूर हैं, उनकी परवाह मत करो।

व कज़ालिक नुफ़स्सिलुल् - आयाति व लितस्तबीन सबीलुलमुज्रिमीन (५५) ★ क़ुल् अिन्नी नुहीतु अन् अऽबुदल्लज़ीन तद्अून मिन् दूनिल्लाहि ट क़ुल् ला अत्तबिअु अह्वा'अकुम् ला क़द् ज़लल्तु अिज़ौंव मा' अना मिनल्मुह्तदीन (५६) क़ुल् अिन्नी अला बैयिनतिम् - मिर्रब्बी व कज़्ज़ब्तुम् बिही ट मा अिन्दी मा तस्तऽजिलून बिही ट अिनिल्-हुक्मु अिल्ला लिल्लाहि ट यक़ुस्सुल्-हक़्क़ व हुव ख़ैरुल्फ़ासिलीन (५७) क़ुल् लौ अन्न अिन्दी मा तस्तऽजिलून बिही लक़ुज़ियल् - अम्रु बैनी व बैनकुम् ट वल्लाहु अऽलमु बिज़्ज़ालिमीन (५८) व अिन्दहू मफ़ातिहुल्ग़ैबि ला यऽलमुहा' अिल्ला हुव ट व यऽलमु मा फ़िल्बर्रि वल्बह्रि ट व मा तस्क़ुतु मिंव्वरक़तिन् अिल्ला यऽलमुहा व ला हब्बतिन् फ़ी ज़ुलुमातिल्-अर्ज़ि व ला रत्बिंव्व ला याबिसिन् अिल्ला फ़ी किताबिम्-मुबीनिन् (५९) व हुवल्लज़ी यतवफ़्फ़ाकुम् बिल्लैलि व यऽलमु मा जरह्तुम् बिन्नहारि सुम्म यब्असुकुम् फ़ीहि लियुक़्ज़ा' अजलुम् - मुसम्मन् ज सुम्म अिलैहि मर्जिअुकुम् सुम्म युनब्बिअुकुम् बिमा कुन्तुम् तऽमलून (६०) ★ व हुवल्क़ाहिरु फ़ौक़ अिबादिही व युर्सिलु अलैकुम् हफ़ज़तन् ट हत्ता' अिज़ा जा'अ अहदकुमुल्मौतु तवफ़्फ़त्हु रुसुलुना व हुम् ला युफ़र्रितून (६१) सुम्म रुद्दू' अिलल्लाहि मौलाहुमुल्-हक़्क़ि ट अला लहुल्हुक्मु क़िफ़् व हुव अस्रअुल् - हासिबीन (६२) क़ुल् मैंयुनज्जीकुम् मिन् ज़ुलुमातिल्-बर्रि वल्बह्रि तद्अूनहू तज़र्रुअौंव ख़ुफ़्यतन् ज लअिन् अन्जाना मिन् हाज़िही लनकूनन्न मिनश्शाकिरीन (६३) क़ुलिल्लाहु युनज्जीकुम् मिन्हा व मिन् कुल्लि कर्बिन् सुम्म अन्तुम् तुश्रिकून (६४)

وَإِذَا سَمِعُوا ١٠٧ الأنعام

الرَّحْمَةَ أَنَّهُ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْ بَعْدِهِ وَ
أَصْلَحَ فَأَنَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِينَ
سَبِيلُ الْمُجْرِمِينَ ۝ قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ
دُونِ اللّٰهِ قُلْ لَّا أَتَّبِعُ أَهْوَاءَكُمْ قَدْ ضَلَلْتُ إِذًا وَّمَا أَنَا مِنَ
الْمُهْتَدِينَ ۝ قُلْ إِنِّي عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّي وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ مَا عِنْدِي
مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهٖ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلّٰهِ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ الْفٰصِلِينَ ۝
قُلْ لَّوْ أَنَّ عِنْدِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهٖ لَقُضِيَ الْأَمْرُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَاللّٰهُ
أَعْلَمُ بِالظّٰلِمِينَ ۝ وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ وَيَعْلَمُ مَا
فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلُمٰتِ
الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتٰبٍ مُّبِينٍ ۝ وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفّٰكُمْ
بِالَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضٰى أَجَلٌ مُّسَمًّى
ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَهُوَ الْقَاهِرُ
فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتّٰى إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمُ
الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ ۝ ثُمَّ رُدُّوا إِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ
الْحَقِّ أَلَا لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحٰسِبِينَ ۝ قُلْ مَنْ يُّنَجِّيكُمْ
مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً لَئِنْ أَنْجٰىنَا
مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشّٰكِرِينَ ۝ قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ

منزل ٢

और इसी तरह पर हम आयतों को (खोल-खोलकर) बयान करते हैं (इसलिए कि तुम लोग उन पर अमल करो) और इसलिए कि गुनहगारों का (भी) रास्ता खुल जाय। (५५)★

(ऐ पैग़म्बर ! काफ़िरों से) कह दो कि मुझको इस बात की रोक है कि मैं उनकी अिबादत करूँ जिनको तुम अल्लाह के सिवाय पुकारते हो। कहो मैं तुम्हारी ख़्वाहिश पर तो चलता नहीं, (ऐसा करूँ) तो मैं (भी) गुमराह हो जाऊँगा और उन लोगों में न रहूँगा जो सीधे रास्ते पर हैं। (५६) (इन लोगों से) कहो कि मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ से खुले रास्ते पर हूँ और तुम उसको झुठलाते हो। जिस (याने अज़ाब) की तुम जल्दी मचा रहे हो वह मेरे पास तो नहीं है। वह अल्लाह के सिवाय और किसी के अधिकार में नहीं, वह हक़ (सत्य) को ज़ाहिर करता है और वही सबसे बेहतर (फ़ैसला) चुकाने वाला है। (५७) और कहो कि जिसकी (याने अज़ाब की) तुम जल्दी मचा रहे हो, अगर वह मेरे अधिकार में होता तो मेरे और तुम्हारे बीच (कभी का) फ़ैसला हो गया होता और अल्लाह ज़ालिम लोगों से ख़ूब परिचित है। (५८) और उसी के पास ग़ैब (अदृश्य) की कुँजियाँ हैं जिनको उसके सिवाय कोई नहीं जानता। और जो (भी जल-थल) जंगल और नदी में है वह सब जानता है और कोई पत्ता तक नहीं गिरता जो उसे मालूम नहीं और ज़मीन के अंधेरे (पर्दों) में एक दाना नहीं पड़ता; सूखी या हरी और कोई चीज़ (ऐसी नहीं) जो उसकी किताब (लौह महफ़ूज़) में न हो। (५९) और वही है जो रात के वक़्त तुम्हारी रूहों को (एक हद तक) क़ब्ज़ कर लेता है और जो कुछ तुमने दिन में किया था (वह उसको भी) जानता है, फिर (दिन के वक्त) तुमको उठा खड़ा करता है ताकि मियाद मुक़र्ररह (हर मनुष्य के जीवन की नियत अवधि) पूरी हो। फिर उसी की तरफ़ (अन्त में सबको) लौटकर जाना है। फिर जो कुछ तुम (दुनिया में) करते रहे हो, वह तुमको बतादेगा। (६०) ★

और वही अपने बन्दों पर हुक्मराँ है और तुम लोगों पर निगहबान (फ़रिश्ते) तैनात करता है, यहाँ तक कि जब तुममें से किसी को मौत आती है तो हमारे भेजे हुये (फ़रिश्ते) उसकी रूह क़ब्ज करते (निकालते) हैं और वह (हमारे हुक्म की तामील में) कोताही नहीं करते। (६१) फिर (ये लोग) अल्लाह की तरफ़ जो उनका सच्चा कारसाज़ (सँभालने वाला) है वापिस पहुँचाये जायँगे। सुन रखो कि उसी का हुक्म (हुक्म) है और वह (बेमिस्ल) जल्द हिसाब लेने वाला है। (६२) (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि तुमको जंगल और दरिया के अंधेरों से कौन बचाता है ? (वही) जिसे तुम (ऐसे मौकों पर) गिड़गिड़ाकर और चुपके (चुपके) पुकारते हो कि अगर (अल्लाह) हमको इस आफ़त से बचा ले तो बेशक हम (उसके) शुक्रगुज़ार होंगे (६३) (ऐ पैग़म्बर !) कहो कि इन (अंधेरों) से और हर तरह की मुसीबत से अल्लाह ही तुमको बचाता है, फिर तुम (उसके एहसानों को भूल जाते हो और) शरीक (याने दूसरों को पूज्य) ठहराने लगते हो। (६४)

रु. ६/१२ आ ५

रु. ७/१३ आ ५

[पेज २३३ से] है और इस क़ुदरत के ज़रिये दुनिया की सारी हरकतें छोटी ख्वाह बड़ी चलती हैं। इस क़ुदरत के क़ानून के अधीन इन्सान जब हठधर्मी पर आ जाता है और उसका दिल सच्चाई से मुंह मोड़ लेता है तब वह सच्ची हिदायत को सुनकर अनसुना और समझकर नासमझी करता है। ज्यों-ज्यों उसको भली राह पर लाने की बात की जाती है, उसकी फ़ितरत (प्रकृति) उसको उसके उसी हठधर्मी और कुफ़्र (अधर्म) के स्वभाव पर मज़बूत करती है। ज्यों-ज्यों उनके बुरे आमाल बढ़ते जाते हैं उनके दिल उन बुरे कामों के और आदी होते जाते हैं और उनकी ख्वाहिशों (वासनाओं) के ख़िलाफ़ अच्छी से अच्छी सलाह जान सुनकर भी उनके पल्ले नहीं पड़ती। इस हालत को यों कहा जाता है कि अल्लाह ने उनके दिल व कानों पर कुफ़्र की मुहर लगा दी है।

क़ुल् हुवल्क़ादिरु अ़ला अंयब्अ़स अ़लैकुम् अ़जाबम् - मिन् फ़ौक़िकुम् औमिन् तह्ति अर्जुलिकुम् औ यल्बिसकुम् शियअ़ौंव युजीक़ बअ़्ज़कुम् बअ्स बअ़्ज़िन् त् अुन्ज़ुर् कैफ़ नुसर्रिफ़ुल् - आयाति लअ़ल्लहुम् यफ़्क़हून (६५) व कज्जब बिही क़ौमुक व हुवल्हक़्क़ु त् क़ुल् लस्तु अ़लैकुम् बिवकीलिन् त् (६६) लिकुल्लि नबअिम्-मुस्तक़र्रुन् ज् ०व सौफ़ तअ़्लमून (६७) व अिजा रअैतल्लजीन यख़ूज़ून फ़ी आयातिना फ़अअ़्रिज़् अ़न्हुम् हत्ता यख़ूज़ू फ़ी हदीसिन् ग़ैरिही त् व अिम्मा युन्सियन्नकश्शैतानु फ़ला तक़्अ़ुद् बअ़्दज्जिक्रा मअ़ल् - क़ौमिज्जालिमीन (६८) व मा अ़लल्लजीन यत्तक़ून मिन् हिसाबिहिम् मिन् शैअिंव लाकिन् जिक्रा लअ़ल्लहुम् यत्तक़ून (६९) व जरिल्लजीनत् - तख़जू दीनहुम् लअिबौंव लह्वौंव ग़र्रत्हुमुल् - हयातुद्दुन्या व जक्किर्बिही अन् तुब्सल नफ़्सुम्-बिमा कसबत् क़् सला लैस लहा मिन् दूनिल्लाहि वलीयूंव ला शफ़ीअ़ुन् ज् व अिन् तअ़्दिल् कुल्ल अ़द्लिल्ला युअ्ख़ज् मिन्हा त् अुलाअिकल्लजीन अुब्सिलू बिमा कसबू ज् लहुम् शराबुम्-मिन् हमीमिंव्व अ़जाबुन् अलीमुम् - बिमा कानू यक्फ़ुरून (७०) ★ क़ुल् अनद्अ़ू मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अ़ुना व ला यज़ुर्रुना व नुरद्दु अ़ला अअ़्क़ाबिना बअ़्द अिज् हदानल्लाहु कल्लजिस् - तह्वत्हुश् - शयातीनु फ़िल्अर्ज़ि हैरान स् लहू अस्हाबुंय्यद्अ़ूनहू अिलल् - हुदअ़्तिना त् क़ुल् अिन्न हुदल्लाहि हुवल्हुदा त् व अुमिर्ना लिनुस्लिम लिरब्बिल् - आ़लमीन ला (७१) व अन् अक़ीमुस्सलात वत्तक़ूहु त् व हुवल्लजी अिलैहि तुह्शरून (७२)

واذا سمعوا ٧ — ١٠٨ — الانعام ٦

كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ أَنْتُمْ تُشْرِكُونَ ۞ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ ۗ انْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ ۞ وَكَذَّبَ بِهِ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ۚ قُلْ لَسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ۞ لِكُلِّ نَبَإٍ مُسْتَقَرٌّ ۚ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۞ وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ وَإِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرَىٰ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۞ وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَلَٰكِنْ ذِكْرَىٰ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۞ وَذَرِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَعِبًا وَلَهْوًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ وَذَكِّرْ بِهِ أَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ وَإِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۗ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أُبْسِلُوا بِمَا كَسَبُوا ۖ لَهُمْ شَرَابٌ مِنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۞ قُلْ أَنَدْعُو مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدَانَا اللَّهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانَ لَهُ أَصْحَابٌ يَدْعُونَهُ إِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۗ قُلْ إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۖ وَأُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۞ وَأَنْ أَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَاتَّقُوهُ ۚ وَهُوَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۞ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَ

★ रु. ८ / १४ आ १०

कहो कि उसी की सामर्थ्य है कि तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के तले से कोई अज़ाब तुम्हारे लिए निकाल खड़ा करे या तुमको गिरोह-गिरोह करके (एक दूसरे से) भिड़ा मारे और (तुममें से) किसी को किसी की लड़ाई का मज़ा चखाये§। देखो तो सही हम आयतों को किस-किस तरह फेर-फेरकर बयान करते हैं, शायद उनको समझ आजाय। (६५) और उसको तुम्हारी जाति (वालों) ने झुठलाया हालाँकि वह सच्चा है, तो कहो कि मैं तुम पर निगराँ (निरीक्षक) नहीं (कि तुमको हर घड़ी कुफ़्र करने से बचाता रहूँ)। (६६) हर बात का एक वक़्त मुक़र्रर है और (तुमको) आगे (सच्चाई का) पता लग जायगा। (६७) और जब ऐसे लोग तुम्हारी नज़र पड़ जायँ जो हमारी आयतों में ऐब निकाल रहे हों तो उन (के पास) से हट जाओ, यहाँ तक कि (हमारी आयतों के सिवाय) दूसरी बातों में लग जायँ और अगर कभी शैतान तुमको (यह चेतावनी) भुला देवे तो (उस) नसीहत के (फिर याद आ जाने के) बाद (ऐसे) ज़ालिम लोगों के साथ न बैठना। (६८) और परहेज़गारों पर ऐसे लोगों के हिसाब की किसी तरह की ज़िम्मेदारी नहीं। लेकिन नसीहत करना (ज़रूरी है) शायद वे (अवज्ञा से) डरें (और कुफ़्र से बाज़ आवें) (६९) और जिन्होंने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया है और (दुनिया की) ज़िन्दगानी में भरमे हैं, ऐसे लोगों को छोड़ो। और इस (क़ुर्आन के ज़रिये) से उसको समझाते रहो, कहीं कोई (शख़्स) अपनी करतूत के बदले (क़ियामत में) पकड़ा न जाय कि (जिस दिन फिर) अल्लाह के सिवाय न कोई उसका सहायक होगा और न सिफ़ारिशी। और (जितना) बदला (संभव हो) अगर वह सब भी दे तो भी क़बूल न किया जाय। यही वह लोग हैं जो अपने (बुरे) कामों के कारन (अज़ाब में) पकड़े गये। इनको कुफ़्र करने के बदले में पीने के लिये खौलता हुआ पानी और दुखदाई मार होगी। (७०) ✯

रु. ८/१४ आ १०

(ऐ पैग़म्बर! इनसे) पूछो क्या हम अल्लाह को छोड़कर उनको (अपनी मदद के लिये) बुलावें जो हमको न नफ़ा पहुँचा सकते हैं और न नुक़सान। और जब अल्लाह हमको सीधा रास्ता दिखा चुका तो क्या हम उसके बाद भी उल्टे पैरों (कुफ़्र की ओर) लौट जाँय? जैसे किसी शख़्स को शैतान बहकाकर ले जाय और (वह) जंगल में हैरान (मारा मारा) फिरे। और उसके कुछ साथी हैं वह उसको (सीधे) रास्ते की ओर बुला रहे हैं कि हमारे पास (चला) आ। (ऐ पैग़म्बर! इनसे कहो) कि अल्लाह का बताया रास्ता ही (सीधा) रास्ता है और हमको हुक्म मिला है कि हम तमाम दुनिया के पालनेवाले के फ़र्माबर्दार होकर रहें। (७१) और यह कि नमाज़ क़ायम रखो और अल्लाह से डरते रहो, और वही है जिसके सामने (अन्तिम न्याय के दिन) तुम सब जमा किये जाओ गे। (७२)

[पेज २२७ से] ईमानवालों के लिए। तरह-तरह के अन्धविश्वासों और शिर्क का खोखलापन खुलासा किया है। आ. ४१-८२ में दुनिया की निस्सारता और आख़िरत की महिमा का बखान है। अल्लाह ही देखे व अनदेखे (व्यक्त-अव्यक्त) का रचने व जानने व इन्तज़ाम करने वाला है। उसके इख़लास में दुनिया के कोई लोग या वह ताक़तें जिन्हें तुम अल्लाह के साथ पूजते हो तुम्हारे काम न आवेंगी, क्योंकि इन सबके पीछे भी उस अल्लाह ही की क़ुदरत काम कर रही है। हज़रत इब्राहीम अ० को जिस तरह ज्ञान हुआ है वह नज़ीर देकर लोगों को तमाम फ़ानी (नाशवान) की बन्दगी छोड़कर एक अल्लाह की ओर रुजू किया गया है। आ. ८३-१३० ह० इब्राहीम अ. से पैग़म्बर मुहम्मद स० तक नबूवत के सिलसिले का बयान करते हुये उस अल्लाह [पेज २४१ पर]

§ एक अज़ाब तो वह हैं जो रोज़-आख़िरत में कुफ़्र करने वालों को भुगतने पड़ते हैं। उनके अलावा दुनिया में भी ज़मीन-आसमान से या लड़ाई, क़ैद, क़त्ल जैसे तरह-तरह के अज़ाब बुरे आमालों में फंसे और बाज़ न आने वाले इन्सानों या गरोहों पर अल्लाह डालता रहता है।

व हुवल्लज़ी ख़लक़स्समावाति वल्अर्ज़ बिल्ह़क़्क़ि त् व यौम यक़ूलु कुन् फ़यकूनु ५ त् ● क़ौलुहुल् - ह़क़्क़ु त् व लहुल्मुल्कु यौम युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि त् आलिमुल्ग़ैबि वश्शहादति त् व हुवल्-ह़कीमुल्-ख़बीरु (७३) व इज़् क़ाल इब्राहीमु लिअबीहि आज़र अतत्तख़िज़ु अस्नामन् आलिहतन् ज् इन्नी अराक व क़ौमक फ़ी ज़लालिम्-मुबीनिन् (७४) व कज़ालिक नुरी इब्राहीम मलकूतस्समावाति वल्अर्ज़ि व लियकून मिनल्मूक़िनीन (७५) फ़लम्मा जन्न अलैहिल्लैलु रआकौकबन् ज् क़ाल हाज़ा रब्बी ज् फ़लम्मा अफ़ल क़ाल ला उह़िब्बुल्-आफ़िलीन (७६) फ़लम्मा रअल्-क़मर बाज़िग़न् क़ाल हाज़ा रब्बी ज् फ़लम्मा अफ़ल क़ाल लइल्लम् यह्दिनी रब्बी लअकूनन्न मिनल् - क़ौमिज़्ज़ाल्लीन (७७) फ़लम्मा रअश्शम्स बाज़िग़तन् क़ाल हाज़ा रब्बी हाज़ा अक्बरु ज् फ़लम्मा अफ़लत् क़ाल याक़ौमि इन्नी बरीउम्-मिम्मा तुश्रिकून (७८) इन्नी वज्जह्तु वज्हिय लिल्लज़ी फ़तरस्समावाति वल्अर्ज़ ह़नीफ़ौंव मा अना मिनल्मुश्रिकीन ज् (७९) व ह़ाज्जहू क़ौमुहू त् क़ाल अतुह़ाज्जून्नी फ़िल्लाहि व क़द् हदानि त् व ला अख़ाफ़ु मा तुश्रिकून बिही इल्ला अंयशाअ रब्बी शैअन् त् वसिअ़ रब्बी कुल्ल शैइन् अ़िल्मन् त् अफ़ला ततज़क्करून (८०) व कैफ़ अख़ाफ़ु मा अश्रक्तुम् व ला तख़ाफ़ून अन्नकुम् अश्रक्तुम् बिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही अ़लैकुम् सुल्तानन् त् फ़अय्युल् - फ़रीक़ैनि अह़क़्क़ु बिल्अम्नि ज् इन् कुन्तुम् तअ़्लमून म् ● (८१) अल्लज़ीन आमनू व लम् यल्बिसू ईमानहुम् बिज़ुल्मिन् उलाइक लहुमुल्-अम्नु व हुम् मुह्तदून (८२) ★ व तिल्क ह़ुज्जतुना आतैनाहा इब्राहीम अ़ला क़ौमिही त् नर्फ़अ़ु दरजातिम्-मन् नशाउ त् इन्न रब्बक ह़कीमुन् अ़लीमुन् (८३)

वإذ سمعوا ۱۰۹ الانعام

الْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۖ وَيَوْمَ يَقُولُ كُن فَيَكُونُ ۚ قَوْلُهُ الْحَقُّ ۚ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ ۚ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ﴿٧٣﴾ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ آزَرَ أَتَتَّخِذُ أَصْنَامًا آلِهَةً ۖ إِنِّي أَرَاكَ وَقَوْمَكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٧٤﴾ وَكَذَٰلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُونَ مِنَ الْمُوقِنِينَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَىٰ كَوْكَبًا ۖ قَالَ هَٰذَا رَبِّي ۖ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أُحِبُّ الْآفِلِينَ ﴿٧٦﴾ فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هَٰذَا رَبِّي ۖ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَئِن لَّمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ ﴿٧٧﴾ فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هَٰذَا رَبِّي هَٰذَا أَكْبَرُ ۖ فَلَمَّا أَفَلَتْ قَالَ يَا قَوْمِ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٧٨﴾ إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا ۖ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٧٩﴾ وَحَاجَّهُ قَوْمُهُ ۚ قَالَ أَتُحَاجُّونِّي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدَانِ ۚ وَلَا أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا أَن يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا ۗ وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۗ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٨٠﴾ وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُم بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا ۚ فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨١﴾ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُم بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٨٢﴾ وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ۚ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَّن نَّشَاءُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٨٣﴾ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ

منزل ٢

सू. ३ | ४

व. ला ज़िम ★ रु. ६ १५ अ। १२

और वही (सर्वशक्तिमान) है जिसने वस्तुतः आसमान और ज़मीन को पैदा किया और जिस दिन फ़र्मायेगा कि "हो" वह हो जायगा (यानी क़ियामत आ जायगी)। उसका ही वचन सत्य है। और जिस दिन सूर (नरसिंहा) फूंका जायगा उसी की हुकूमत होगी। और वह छिपी और खुली (व्यक्त-अव्यक्त सब) का जाननेवाला है और वही हिकमतवाला और ख़बरदार है। (७३) और जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र§ से कहा क्या तुम बुतों को पूज्य मानते हो, मैं तो तुमको और तुम्हारी क़ौम को सरीहन भटके हुओं में पाता हूँ। (७४) और इसी तरह हम इब्राहीम को आसमान और ज़मीन की सल्तनत (के अजायबात) दिखलाने लगे ताकि वह (पूरा) यक़ीन करनेवालों में से हो जायँ। (७५) (यानी) जब उन पर रात का अँधेरा छा गया उनको एक तारा दीख पड़ा (तो) कहने लगे कि यही मेरा परवरदिगार है। फिर (कुछ देर बाद) जब वह (तारा) छिप गया तो बोले कि अस्त हो जाने वाली चीज़ों को तो मैं नहीं पसन्द करता। (७६) फिर जब चमकते चाँद को देखा (कि बड़ा जगमगा रहा है) तो कहने लगे यह मेरा परवरदिगार है। फिर जब (चाँद भी) ग़ायब हो गया तो बोले अगर मुझको मेरा परवरदिगार राह न दिखलाता रहे तो बिलाशक मैं (भी) भूले हुए लोगों में से हो जाऊँ। (७७) फिर जब सूरज को देखा कि बड़ा जगमगा रहा है तो कहने लगे मेरा यही परवरदिगार है। यह तो (सबसे) बड़ा है। फिर जब (वह भी) छिप गया तो बोले भाइयो ! जिन चीज़ों को तुम अल्लाह का शरीक ठहराते हो, मैं तो उनसे बेज़ार (विमुख) हूँ। (७८) मैंने तो एक ही का होकर अपना ध्यान उसी (एक अल्लाह की) ओर कर लिया है जिसने आसमान और ज़मीन को बनाया। और मैं तो मुशरिकीन (बहुदेव पूजकों) में से नहीं हूँ। (७९)† और उनकी क़ौम के लोग उनसे झगड़ने लगे (तो उन्होंने) कहा क्या तुम मुझसे अल्लाह के (एक होने के) सम्बन्ध में हुज्जत करते हो हालाँकि वह तो मुझको सीधा रास्ता दिखा चुका है और जिनको तुम उसका शरीक मानते हो मैं तो उनसे कुछ डरता नहीं सिवाय इसके कि मेरे परवरदिगार की किसी चीज़ की इच्छा हो, मगर हाँ मेरे पालनेवाले के ज्ञान में सब चीज़ें समाई हुई हैं, क्या तुम ध्यान नहीं करते। (८०) और जिन चीज़ों को तुम (अल्लाह का) शरीक करते हो मैं उनसे क्यों डरने लगा जबकि तुम इस से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह के साथ ऐसी चीज़ों को शरीक ख़ुदाई बनाया जिनकी (पूजा की कोई) सनद अल्लाह ने तुम्हारे लिये नहीं उतारी; तो (इन) दोनों फ़रीक़ों (पक्षों) में से कौन अमन (सुख-चैन) का ज़्यादा अधिकारी है, अगर अक़्ल रखते हो तो कहो।* (८१) जो लोग अल्लाह पर ईमान लाये और उन्होंने अपने ईमान में ज़ुल्म (शिर्क को) नहीं मिलाया, यही लोग हैं जो अमन के हक़दार हैं और यही लोग सीधे मार्ग पर हैं। (८२)

और यह हमारी दलील थी जो हमने इब्राहीम को उनकी जाति के मुक़ाबिले में (क़ायल-माक़ूल करने के लिये) बताई। हम जिसको चाहते हैं उसके दर्जे ऊँचे कर देते हैं। (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा पालनेवाला हिक़मतवाला (है) और सब कुछ जाननेवाला है। (८३)

सु. ३/४ ध. ला जि ग रु. ६/१५ आ. १२

§ इब्राहीम के बाप का नाम क्या था ? क़ुर्आन में आज़र बताया गया है और तौरात में तारख लिखा है। लोगों का विचार है कि उनके दो नाम थे। † ह० इब्राहीम अ० बचपन से ही वहदानियत (अद्वैत) की ओर मुख़ातिब थे। अल्लाह ने उनकी इस बुद्धि को धीरे-धीरे पूरी तौर पर मज़बूत और क़ायम कर दिया। मूर्तियों पर तो उनको अश्रद्धा शुरू से ही थी। लेकिन सूरज, चाँद, तारे कुछ ज़्यादः जगमग और ग़ैर मामूली होने के कारन उनका ध्यान खींचने लगे कि लोग इनकी पूजा करते हैं, अजब नहीं यही हमारे [पेज २४१ पर]
* एक फ़रीक़ (पक्ष) वह जो सिर्फ़ एक अल्लाह की अिबादत करनेवाला है। दूसरा फ़रीक़ वह ‡[पेज २४१ पर]

व वहब्ना लहू इस्हाक़ व यअ़्क़ूब त् कुल्लन् हदैना ज् व नूहन् हदैना मिन् क़ब्लु व मिन् ज़ुर्रीयतिही दावूद व सुलैमान व अैयूब व यूसुफ़ व मूसा व हारून त् व कज़ालिक नज्ज़िल्-मुह्सिनीन ला (८४) व ज़करीया व यह्या व अ़ीसा व अिल्यास त् कुल्लुम्-मिनस्सालिहीन ला (८५) व अिस्-माअ़ील वल्यसअ़ व यूनुस व लूतन् त् व कुल्लन् फ़ज़्ज़ल्ना अ़लल्आ़लमीन ला (८६) व मिन् आबा'अिहिम् व ज़ुर्रीयातिहिम् व अिख़्वानिहिम् ज् वज्-तबैनाहुम् व हदैनाहुम् अिला सिरातिम्-मुस्तक़ीमिन् (८७) ज़ालिक हुदल्लाहि यह्दी बिही मैंयशा'अु मिन् अ़िबादिही त् व लौ अश्रकू लहबित अ़न्हुम् मा कानू यअ़्मलून (८८) अुला'अिकल्लज़ीन आतैना-हुमुल् - किताब वल्हुक्म वन्नुबूवत ज् फ़अिंयक्फ़ुर् बिहा हा'अुला'अि फ़क़द् वक्कल्ना बिहा क़ौमल्लैसू बिहा बिकाफ़िरीन (८९) अुला'अिकल्लज़ीन हदल्लाहु फ़बिहुदा-हुमुक्तदिह् त् क़ुल्ला' अस्अलुकुम् अ़लैहि अज्रन् त् अिन् हुव अिल्ला ज़िक्रा लिल्आ़लमीन (९०) ★ व मा क़दरुल्लाह हक़्क़ क़द्रिही अिज़् क़ालू मा' अन्ज़लल्लाहु अ़ला बशरिम्मिन् शैअिन् त् क़ुल् मन् अन्ज़लल्-किताबल्लज़ी जा'अ बिही मूसा नूरौंव हुदल्-लिन्नासि तज्अ़लूनहु क़रातीस तुब्दूनहा व तुख़्फ़ून कसीरन् ज् व अ़ुल्लिम्तुम् मा लम् तअ़्लमू' अन्तुम् व ला' आबा'अकुम् त् क़ुलिल्लाहु ला सुम्म ज़र्हुम् फ़ी ख़ौज़िहिम् यल्अ़बून (९१) व हाज़ा किताबुन् अन्ज़ल्नाहु मुबारकुम् - मुसद्दिक़ुल्लज़ी बैन यदैहि व लितुन्ज़िर अुम्मल्क़ुरा व मन् हौलहा त् वल्लज़ीन युअ्मिनून बिल्आख़िरति युअ्मिनून बिही व हुम् अ़ला सलातिहिम् युहाफ़िज़ून (९२)

الانعام ١٥٠ واذا سمعوا

ويعقوب كلا هدينا ونوحا هدينا من قبل ومن ذريته داود و
سليمن وايوب ويوسف وموسى وهرون وكذلك نجزي المحسنين ۝
وزكريا ويحيى وعيسى والياس كل من الصلحين ۝ واسمعيل
واليسع ويونس ولوطا وكلا فضلنا على العلمين ۝ ومن ابائهم
وذريتهم واخوانهم واجتبينهم وهدينهم الى صراط مستقيم ۝
ذلك هدى الله يهدي به من يشاء من عباده ولو اشركوا لحبط
عنهم ما كانوا يعملون ۝ اولئك الذين اتينهم الكتب والحكم
والنبوة فان يكفر بها هؤلاء فقد وكلنا بها قوما ليسوا بها
بكفرين ۝ اولئك الذين هدى الله فبهدىهم اقتده قل لا
اسئلكم عليه اجرا ان هو الا ذكرى للعلمين ۝ وما قدروا
الله حق قدره اذ قالوا ما انزل الله على بشر من شيء قل من
انزل الكتب الذي جاء به موسى نورا وهدى للناس تجعلونه
قراطيس تبدونها وتخفون كثيرا وعلمتم ما لم تعلموا انتم و
لا اباؤكم قل الله ثم ذرهم في خوضهم يلعبون ۝ وهذا كتب
انزلنه مبرك مصدق الذي بين يديه ولتنذر ام القرى و
من حولها والذين يؤمنون بالاخرة يؤمنون به وهم على
صلاتهم يحافظون ۝ ومن اظلم ممن افترى على الله كذبا

★ रु० १० १६ आ ८

और हमने उस (इब्राहीम) को इसहाक़ और याक़ूब दिये, उन सबको हिदायत दी और इन सबसे पहले नूह को भी हमने हिदायत दी थी और उन्हीं के बंश में से दाऊद और सुलेमान को और अयूब और यूसुफ़ को और मूसा और हारूँ को (इसी तरह रास्ता दिखाया) और हम नेकों को ऐसे ही बदला देते हैं। (८४) निदान ज़करिया और यहिया और ओसा और इलयास को (भी मार्ग दिखाया) ये सब (ही) नेको में हैं। (८५) और इस्माईल, यसाअ़ और यूनिस और लूत और सभी को हमने खूब दुनिया जहान के लोगों पर बुलन्दो दी। (८६) (यही नहीं बल्कि) इनके बाप दादों और इनकी संतान और इनके भाई बन्दों में से (भी) बाज़ को हमने चुना और उनको सीधी राह पर चलाया। (८७) यह अल्लाह की हिदायत (रहनुमाई) है, अपने बन्दों में से जिसको चाहे उस राह पर चलाये। और अगर यह (पैग़म्बर भी) शिर्क करते होते तो इनका (सारा) क्रिया-धरा इनके लिए अकारथ हो जाता। (८८) यह वह लोग हैं जिनको हमने किताब दी और शरीअ़त (धर्मशास्त्र) दिया और पैग़म्बरी दी तो अब ये लोग अगर इसे मानने से इन्कार करें तो (कोई परवा नहीं) हमने इन (निअ़मतों) पर वह (दूसरे) लोग (हक़दार) मुक़र्रर कर दिये हैं जो (इनकी तरह) इन (निअ़मतों) से मुँह न मोड़ेंगे। (८९) (ये पैग़म्बर) वह लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी (सो ऐ पैग़म्बर!) तुम उनकी राह पर चलो। (लोगों से) कह दो मैं (क़ुर्आन पर) तुमसे कुछ मज़दूरी नहीं माँगता, यह (क़ुर्आन) तो दुनिया जहान के लोगों के लिये उपदेश है। (९०) ★

★ रु. १०/१६ आ ८

और इन (यहूदियों) ने जैसी क़द्र अल्लाह की जाननी चाहिए थी वैसी न जानी जबकि वे कहने लगे कि अल्लाह ने किसी आदमी पर (किताब वग़ैरः) कोई चीज़ नहीं उतारी। तो पूछो कि वह किताब (तौरात) किसने उतारी जिसे मूसा लेकर आये, लोगों के लिए रोशनी है और (जो) रहनुमाई है, तुम उसके अलाहिदा अलाहिदा सफ़े करके (तब) दिखाते हो और बहुतेरे (वरक़ तुम्हारे मतलब के खिलाफ़ हैं उनको) लोगों से छिपा जाते हो, और (उसी किताब के ज़रिये) तुमको वे बातें बताई गई जिनको न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप-दादे। फिर कह दो कि (वह किताब) अल्लाह ने (ही) उतारी थी, फिर इनको छोड़ दो कि अपनी बकवास में खेला करें। (९१) और यह (भी) एक किताब (आसमानी) है जिसको हमने उतारा है, बरकतवाली है और जो (किताबें इससे) पहले की हैं उनकी तसदीक़ करती है। और (ऐ पैग़म्बर! हमने इसको इस वजह से उतारा है कि) तुम उम्मल क़ुरा (मक्का) वालों को और जो लोग उसके आस-पास रहते हैं§ उनको (अल्लाह के अज़ाब से) डराओ और जो लोग आख़िरत का यक़ीन रखते हैं वह तो इस पर ईमान ले आते हैं और वह अपनी नमाज़ की (पूरी) ख़बर रखते हैं। (९२)

[पेज २३७ से] के सत्य-स्वरूप की मशाल रोशन होते रहने का तज़्किरः है। सर्वशक्तिमान होते हुए भी लोगों पर कितना रहीम है कि बराबर उनके भले के लिए हुक्म जारी रखता है। इस पर भी जो नहीं [पेज २४३ पर]

[पेज २३६ से] परवरदिगार हों। लेकिन उनको अल्लाह ने रोशनी दी कि ये भी इन्सानों व दुनिया के तमाम सामानों की तरह ही फ़ानी (नाशवान) हैं तब वे पूरी तौर पर उस एक अल्लाह के ही होकर रहे और लोगों को यही नसीहत करते रहे। [पेज २३६ से]‡ जो दुनिया में अल्लाह के अलावा मूर्तियों, चाँद, सितारों व तमाम चीज़ों को पूजता है। गोया यह भी अपनी अलग-अलग खुदाई हस्तियाँ रखती हैं। ये दूसरे लोग ही गुमराह हैं। इनको शान्ति कैसे मयस्सर होगी।

§ उम्मलक़ुरा (असल बस्ती) याने मक्का। यह इसलिए कि रवायत है कि पानी में से ज़मीन सबसे पहले यहीं ज़ाहिर हुई थी। आस-पास की बस्ती से मतलब शुरू में अरब और अब सारा जहान है।

व मन् अज़्लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् औ क़ाल ऊहिय अिलैय व लम् यूहू अिलैहि शैऊँव मन् क़ाल सअुन्ज़िलु मिस्ल मा' अन्ज़लल्लाहु त् व लौ तरा' अिज़िज़्ज़ालिमून फ़ी ग़मरातिल्-मौति वलमला'अिकतु बासितू' अैदीहिम् ज् अख़्रिजू' अन्फ़ुसकुम् त् अल्यौम तुज्ज़ौन अ़ज़ाबल्हूनि बिमा कुन्तुम् तक़ूलून अ़लल्लाहि ग़ैरल्हक़्क़ि व कुन्तुम् अ़न् आयातिही तस्तक्बिरून (९३) व लक़द् जिअ्तुमूना फ़ुरादा कमा ख़लक़्नाकुम् औवल मर्रतिंव्व तरक्तुम् मा ख़ौवल्नाकुम् वरा'अ ज़ुहूरिकुम् ज् व मा नरा मअ़कुम् शुफ़अ़ा'अकुमुल्लज़ीन ज़अ़म्तुम् अन्नहुम् फ़ीकुम् शुरका'अु त् लक़त्तक़त्तअ़ बैनकुम् व ज़ल्ल अ़न्कुम् मा कुन्तुम् तज़्अुमून (९४) ★ अिन्नल्लाह फ़ालिक़ुल् - हूब्बि वन्नवा त् युख़्रिजुल्हैय मिनल्मैयिति व मुख़्रिजुल्मैयिति मिनल्हैयि त् ज़ालिकुमुल्लाहु फ़अन्ना तुअ्फ़कून (९५) फ़ालिक़ुल् - अिस्बाहि ज् व जअ़लल्लैल सकनौंवशशम्स वल्क़मर हुस्बानन् त् ज़ालिक तक़्दीरुल् - अ़ज़ीज़िल् - अ़लीमि (९६) व हुवल्लज़ी जअ़ल लकुमुन्नुजूम लितह्तदू बिहा फ़ी ज़ुलुमातिल्बर्रि वल्बह्रि त् क़द् फ़स्सल्नल् - आयाति लिक़ौमींयअ़्लमून (९७) व हुवल्लज़ी' अन्शअकुम् मिन् नफ़्सिंव्वाहिदतिन् फ़मुस्तक़र्रूँव मुस्तौदअुन् त् क़द् फ़स्सल्नल्-आयाति लिक़ौमीं - यफ़्क़हून (९८) व हुवल्लज़ी' अन्ज़ल मिनस्समा'अि मा'अन् ज् फ़अख़्रज्ना बिही नबात कुल्लि शैअिन् फ़अख़्रज्ना मिन्हु ख़ज़िरन् नुख़्रिजु मिन्हु हूब्बम् - मुतराकिबन् ज् व मिनन्नख़्लि मिन् - तल्अ़िहा क़िन्वानुन् दानियतुँव जन्नातिम्मिन् अअ़्नाबिंव्वज़्ज़ैतून वर्रुम्मान मुश्तबिहौंव ग़ैर मुतशाबिहिन् त् अुन्ज़ुरू' अिला समरिही' अिज़ा' अस्मर व यन्अ़िही त् अिन्न फ़ी ज़ालिकुम् लआयातिल् - लिक़ौमीं - युअ्मिनून (९९)

★ रु. ११ / १७ आ ४

الانعام ١١١ واذا سمعوا

اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٩٣﴾ وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ؕ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٩٤﴾ اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ؕ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٩٥﴾ فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٩٦﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٩٧﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ

और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ लफंट बाँधे या दावा करे कि मुझ पर अल्लाह का पैग़ाम आया है हालाँकि उसकी तरफ़ कुछ भी अल्लाह का पैग़ाम न आया हो और (उससे बढ़कर ज़ालिम कौन) जो कहे कि जैसे अल्लाह ने (क़ुर्आन) उतारा है वैसे ही मैं भी उतार सकता हूँ। चुनाँचे (ऐ रसूल!) कभी तुम देखते कि ज़ालिम जब मौत की बेहोशियों में पड़े होंगे और फ़रिश्ते हाथ फैलाकर (कहेंगे) अपनी जानें निकालो, आज तुमको ज़िल्लत की मार की सज़ा दी जायगी, इसलिए कि तुम अल्लाह (के नाम) पर व्यर्थ झूठ गढ़ते थे और उसकी आयतों से अकड़ा करते थे। (९३) और (क़ियामत के दिन उनसे कहा जायगा कि) पहली बार जैसा हमने तुमको (अकेला) पैदा किया था वैसे ही अकेले तुम हमारे पास एक एक करके आये हो और जो कुछ हमने तुमको (दुनिया में) दिया था (वह सब वहीं) अपनी पीठ पीछे छोड़ आये और तुम्हारी सिफ़ारिश करने वालों को (भी) हम तुम्हारे साथ (आज) नहीं देखते जिनको तुम समझते थे कि वह तुम्हारे मामलों में (अल्लाह के अलावा) शरीक हैं अब तुम्हारे (और उनके) आपस के मेल टूट गये और जो दावे तुम किया करते थे तुमसे गये-गुज़रे हो गये।§ (९४)★

★ रु. ११/१७ आ ४

(वह) अल्लाह ही दाने और गुठली का फाड़नेवाला है और मुर्दा से ज़िन्दा और ज़िन्दा से मुर्दा निकालता है, यही (तुम्हारा) अल्लाह है, फिर तुम कहाँ उलटे भटके चले जा रहे हो। (९५) उसी के किए से प्रातःकाल पौ फटती है और उसी ने आराम के लिए रात और हिसाब से सूरज और चाँद को रखा है। यह (उसी) बड़े क़ुदरतवाले और इल्मवाले का (सारा) करिश्मा है। (९६) वही है जिसने तुम लोगों के लिये तारे बनाये ताकि जंगल और समन्दर के अंधेरों में उनसे राह पाओ। जो लोग समझदार हैं उनके लिए हमने निशानियाँ ख़ूब तफ़सीलवार बयान कर दी हैं। (९७) और वही है जिसने तुम सबको एक शरीर (आदम) से पैदा किया, फिर कहीं तुमको ठहराव है और कहीं सुपुर्द रहना है।† जो लोग समझ रखते हैं उनके लिए हम आयतें खोल-खोलकर बयान कर चुके हैं। (९८) और वही है जिसने आसमान से पानी बरसाया फिर हमने उससे हर क़िस्म के अंकुर (बनस्पति के अँखुये) निकाले फिर अँखुवों से हमने हरियाली (खेती पेड़ वग़ैरः) निकाल खड़ी की कि उनसे हम गुथे हुए दाने निकालते हैं और ख़ज़ूर के गाभे में से जो गुच्छे झुके पड़ते हैं और अंगूर के बाग़ और ज़ैतून व अनार जो (सूरत में) मिलते-जुलते और (स्वाद में) मिलते-जुलते नहीं। (इनमें से हर चीज़) जब पकती है तो उसका फल और फल का पकना देखो। निस्सन्देह जो लोग ईमान रखते हैं उनके लिए इनमें निशानियाँ हैं। (९९)

[पेज २४१ से] चेतते और हठी और ज़ालिम हैं वे सब दोज़ख में इकट्ठा होंगे जहाँ उनके लिए कठिन अज़ाब तैयार है। और खिलक़त को उनसे बचे रहने की हिदायत है। आ. १३१-१५० में अन्याय और अन्धविश्वासों को छोड़ने पर फिर ज़ोर दिया है। ऐसा न करने पर ये यहाँ अपना काम करते रहेंगे और अल्लाह ज़ालिमों व नेककारों सबके लिए उनको मुनासिब बदले का इन्तज़ाम अपनी क़ुदरत से कर रहा है। आ. १५१ से १६५ में फिर समझाया गया है कि अल्लाह का बताया हुआ रास्ता ही सीधा रास्ता है। उसी पर चलो, आपस में फ़र्क़ मत डालो और तौहीद (Unity of God) पर ईमान रखो।

§ तुम्हारी दुनिया की दौलत, ताक़त, अक़्ल, तुम्हारे पीर या वे जिनको तुम अल्लाह के अलावा पूजते थे, सब के सब अब तुमसे छुट गये और तुम उनसे बे सहारा अब अल्लाह के रूबरू अकेले अज़ाब भुगतने के लिए हाज़िर हो। † ठहराव के लिए 'माँ का गर्भ' और सुपुर्दगी 'वाल्दैन की गोद'—यह एक राय है। कुछ लोग तफ़सीर करते हैं कि ठहराव माने 'दुनिया में मुक़र्रर वक़्त तक की ज़िन्दगी' और सुपुर्दगी माने 'क़ियामत तक क़ब्रगाह'।

व जअ़लू लिल्लाहि शुरका अल्जिन्न व ख़लक़हुम् व ख़रक़ू लहू बनीन व बनातिम् - बिग़ैरि अ़िल्मिन् त़् सुब्ह़ानहू व तआ़ला अ़म्मा यसिफ़ून (१००) ★ बदीअ़ुस्समावाति वल्अर्ज़ि त़् अन्ना यकूनु लहू वलदूँव लम् तकुल्लहू साहि़बतुन् त़् व ख़लक़ कुल्ल शैअिन् ज् व हुव बिकुल्लि शैअिन् अ़लीमुन् (१०१) जालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् ज् ला अिलाह अिल्ला हुव ज् ख़ालिक़ु कुल्लि शैअिन् फ़अ़्बुदूहु ज् व हुव अ़ला कुल्लि शैअिंव्वकीलुन् (१०२) लातुद्रिकुहुल्-अब्सारु ज़् व हुव युद्रिकुल् - अब्सार ज् व हुवल्लतीफ़ुल् - ख़बीरु (१०३) क़द् जा अकुम् बसा अिरु मिर्रब्बिकुम् ज् फ़मन् अब्सर फ़लिनफ़्सिही ज् व मन् अ़मिय फ़अ़लैहा त़् व मा अना अ़लैकुम् बिह़फ़ीजिन् (१०४) व कजालिक नुसर्रिफ़ुल् - आयाति व लियक़ूलू दरस्त व लिनुबैयिनहू लिक़ौमींयऽ़लमून (१०५) अित्तबिऽ मा ऊह़िय अिलैक मिर्रब्बिक ज् ला अिलाह अिल्ला हुव ज् व अऽरिज़् अ़निल्मुश्रिकीन (१०६) व लौ शा अल्लाहु मा अश्रकू त़् व मा जअ़लनाक अ़लैहिम् ह़फ़ीजन् ज् व मा अन्त अ़लैहिम् बिवकीलिन् (१०७) व ला तसुब्बुल्लजीन यद्अ़ून मिन् दूनिल्लाहि फ़यसुब्बुल्लाह अ़द्वम् - बिग़ैरि अ़िल्मिन् त़् कजालिक जैयन्ना लिकुल्लि अुम्मतिन् अ़मलहुम् स़् सुम्म अिला रब्बिहिम् मर्जिअ़ुहुम् फ़युनब्बिअ़ुहुम् बिमा कानू यऽ़मलून (१०८) व अक़्समू बिल्लाहि जह्द अैमानिहिम् लअिन् जा अत्हुम् आयतुल् - लयुअ्मिनुन्न बिहा त़् क़ुल् अिन्नमल्-आयातु अ़िन्दल्लाहि व मा युश्अ़िरुकुम् ला अन्नहा अिजा जा अत् ला युअ्मिनून (१०९) व नुक़ल्लिबु अफ़्अिदतहुम् व अब्सारहुम् कमा लम् युअ्मिनू बिही औवल मर्रतिंव्व नजरुहुम् फ़ी तुग़यानिहिम् यऽ़महून (११०) ★

॥ इति सातवाँ पारः ॥

★ रु. १२ १८ आ ६

★ रु. १३ १६ आ १०

الانعام ٦ ١١٢ واذا سمعوا ٨

ذلكم لايت لقوم يؤمنون ۝ وجعلوا لله شركاء الجن وخلقهم
وخرقوا له بنين وبنت بغير علم سبحنه وتعلى عما يصفون ۝
بديع السموت والارض انى يكون له ولد ولم تكن له صاحبة و
خلق كل شيء وهو بكل شيء عليم ۝ ذلكم الله ربكم لا اله
الا هو خالق كل شيء فاعبدوه وهو على كل شيء وكيل ۝
لا تدركه الابصار وهو يدرك الابصار وهو اللطيف الخبير ۝
قد جاءكم بصائر من ربكم فمن ابصر فلنفسه ومن عمي فعليها
وما انا عليكم بحفيظ ۝ وكذلك نصرف الايت وليقولوا درست
ولنبينه لقوم يعلمون ۝ اتبع ما اوحي اليك من ربك لا اله
الا هو واعرض عن المشركين ۝ ولو شاء الله ما اشركوا وما
جعلنك عليهم حفيظا وما انت عليهم بوكيل ۝ ولا تسبوا
الذين يدعون من دون الله فيسبوا الله عدوا بغير علم كذلك
زينا لكل امة عملهم ثم الى ربهم مرجعهم فينبئهم بما كانوا
يعملون ۝ واقسموا بالله جهد ايمنهم لئن جاءتهم اية
ليؤمنن بها قل انما الايت عند الله وما يشعركم انها اذا
جاءت لا يؤمنون ۝ ونقلب افئدتهم وابصارهم كما
لم يؤمنوا به اول مرة ونذرهم في طغيانهم يعمهون ۝

منزل ٢

और (मुशरिकों ने) जिन्नों को अल्लाह का शरीक बना खड़ा किया हालाँकि अल्लाह ही ने इन (जिन्नों) को पैदा किया और वे जाने-बूझे अल्लाह के बेटों बेटियों का होना गढ़ लेते हैं। (अल्लाह की बाबत) जैसी-जैसी बातें यह लोग बयान करते हैं, वह (इनसे) पाक है और इन बातों से बहुत दूर है। (१००)★

वह (इस) अनोखे आसमान और ज़मीन का बनानेवाला है। (और) उसकी संतान कहाँ से होने लगी? उसके कोई स्त्री नहीं, और उसी ने हर चीज़ को पैदा किया है और वही हर चीज़ से जानकार है। (१०१) यही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार है उसके सिवाय और कोई बन्दगी के क़ाबिल नहीं और वही सब चीज़ों का पैदा करनेवाला है तो उसी की अ़िबादत करो और उसी पर हर चीज़ का भार है। (१०२) आँखें उसको नहीं पा सकतीं और वह आँखों को पा लेता है और वह बड़ा जानकार और बेहद ख़बरदार है। (१०३) (ऐ मुहम्मद उनसे कह दो कि) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से सूझ की बातें (आयतें) तुम्हारे पास आ ही चुकी हैं, फिर जिसने (आँखें खोलकर) देखा (उसने) अपना भला किया और जो (उन हिदायतों से) अन्धा रहा (उसने) अपने लिए बुराई की, मैं तुम लोगों का कोई निगराँ (अंगरक्षक) तो हूँ नहीं (कि बार बार हुक्म को न माननेवाले अधर्मियों को भी हर घड़ी हाथ पकड़ कर राह दिखाता फिरूँ)। (१०४) और इसी तरह हम आयतों को तरह-तरह से बयान करते हैं ताकि वे कहें कि तुमने पढ़ा है, और ताकि जो लोग समझ रखते हैं हम उनको क़ुर्आन अच्छी तरह समझा दें। (१०५) (ऐ पैग़म्बर!) (क़ुर्आन) जो तुम्हारे परवरदिगार के यहाँ से पैग़ाम भेजा गया है, उसी पर चलो, अल्लाह के सिवाय कोई पूजित नहीं और मुशरिकीन को (उनके हाल पर) छोड़ो। (१०६) और अगर अल्लाह चाहता तो वे शिर्क (बहुदेव-पूजन) न करते और हमने तुमको इन पर निगाहबान नहीं किया और न तुम इन पर तैनात हो (कि इन्हें भटकने न दो)। (१०७) और लोग अल्लाह के सिवाय जिनको पुकारते (पूजते) हैं उनको तुम लोग बुरा§ न कहो कि यह लोग बे समझी के कारन व्यर्थ अल्लाह को बुरा कह (कर उसका अनादर कर बैठें), इसी तरह हमने हर जमात के काम उनको (उनकी नज़रों में) अच्छे कर दिखलाये† हैं। फिर इनको अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटकर जाना है, तो जैसे जैसे काम कर रहे थे, उनको (अल्लाह) बतायेगा। (१०८) और (मक्के वाले) अल्लाह की सख़्त क़सम खाकर कहते हैं कि अगर कोई निशानी उनके सामने आये तो वह ज़रूर ईमान ले आयेंगे। तुम कह दो कि निशानियाँ तो अल्लाह के पास हैं; और (ऐ ईमानवालो!) तुम लोग क्या यह समझते हो कि यह लोग निशानी आने पर ईमान ले आवेंगे? (हरगिज़ नहीं) (१०९) और हम उनके दिलों और उनकी आँखों को उलट देंगे (ठीक उसी तरह पर) जैसे अब से पहले (क़ुर्आन पर) ईमान नहीं लाये थे (वैसे ही फिर न लावेंगे) और हम इनको छोड़ देंगे कि अपनी (सरकशी की) मौज में पड़े भटका करें। (११०)★

।। इति सातवाँ पारः ।।

★ रु. १२ — १८ आ ६

★ रु. १३ — १६ आ १०

§ कुछ मुसलमान बुतों को काफ़िरों के सामने गाली देने लगे थे। ऐसा करने से उन्हें रोका गया है ताकि काफ़िर उलटकर अल्लाह को बुरा न कहने लगें। † हर एक अपने दस्तूर व तरीक़ों को अच्छा समझता है। उसने क्या सही-ग़लत किया है यह अल्लाह के सामने पहुँचने पर पता लगेगा।

आठवाँ पारः वलौअन्नना

सूरतुल्अन्आमि आयात १११ से १६५

व लौ अन्नना नज़्ज़ल्ना अिलैहिमुल् - मलाअिकत व कल्लमहुमुल् - मौता व हशर्ना अलैहिम् कुल्ल शैअिन् क़ुबुलम्मा कानू लियुअ्मिनू अिल्ला अैंयशाअल्लाहु व लाकिन्न अक्सरहुम् यज्हलून (१११) व कज़ालिक जअल्ना लिकुल्लि नबीयिन् अदूवन् शयातीनल् - अिन्सि वल्जिन्नि यूही बअ्ज़ुहुम् अिला बअ्ज़िन् ज़ुख्रुफ़ल्क़ौलि ग़ुरूरन् त व लौ शाअ रब्बुक मा फ़अलूहु फ़ज़र्हुम् व मा यफ़्तरून (११२) व लितस्ग़ा अिलैहि अफ़्अिदतुल्लज़ीन ला युअ्मिनून बिल्आख़िरति वलियर्ज़ौहु वलियक़्तरिफ़ू मा हुम् मुक़्तरिफ़ून (११३) अफ़ग़ैरल्लाहि अब्तग़ी हूकमौंव हुवल्लज़ी अन्ज़ल अिलैकुमुल् - किताब मुफ़स्सलन् त वल्लज़ीन आतैनाहुमुल्-किताब यअ्लमून अन्नहू मुनज़्ज़लुम्-मिर्रब्बिक बिल्हक़्क़ि फ़ला तकूनन्न मिनल्मुम्तरीन (११४) व तम्मत् कलिमतु रब्बिक सिद्क़ौंव अद्लन् त ला मुबद्दिल लिकलिमातिही ज व हुवस्समीअुल् - अलीमु (११५) व अिन् तुतिअ् अक्सर मन् फ़िल्अर्ज़ि युज़िल्लूक अन् सबीलिल्लाहि त अींयत्तबिअून अिल्लज़्ज़न्न व अिन् हुम् अिल्ला यख्रुसून (११६) अिन्न रब्बक हुव अअ्लमु मैंयज़िल्लु अन् सबीलिही ज व हुव अअ्लमु बिल्मुह्तदीन (११७) फ़कुलू मिम्मा ज़ुकिरस्मुल्लाहि अलैहि अिन् कुन्तुम् बिआयातिही मुअ्मिनीन (११८) व मा लकुम् अल्ला तअ्कुलू मिम्मा ज़ुकिरस्मुल्लाहि अलैहि वक़द् फ़स्सल लकुम् मा हर्रम अलैकुम् अिल्ला मज़्तुरिर्तुम् अिलैहि त व अिन्न कसीरल् - लयुज़िल्लून बिअह्वाअिहिम् बिग़ैरि अिल्मिन् त अिन्न रब्बक हुव अअ्लमु बिल्मुअ्तदीन (११९)

ولو اننا ٨ — ١١٣ — الانعام ٦

ولو اننا نزلنا اليهم الملئكة وكلمهم الموتى وحشرنا عليهم
كل شيء قبلا ما كانوا ليؤمنوا الا ان يشاء الله ولكن
اكثرهم يجهلون ۝ وكذلك جعلنا لكل نبي عدوا شيطين
الانس والجن يوحي بعضهم الى بعض زخرف القول غرورا
ولو شاء ربك ما فعلوه فذرهم وما يفترون ۝ ولتصغى
اليه افئدة الذين لا يؤمنون بالاخرة وليرضوه وليقترفوا
ما هم مقترفون ۝ افغير الله ابتغي حكما وهو الذي انزل
اليكم الكتب مفصلا والذين اتينهم الكتب يعلمون انه
منزل من ربك بالحق فلا تكونن من الممترين ۝ وتمت
كلمت ربك صدقا وعدلا لا مبدل لكلمته وهو
السميع العليم ۝ وان تطع اكثر من في الارض يضلوك
عن سبيل الله ان يتبعون الا الظن وان هم الا يخرصون ۝
ان ربك هو اعلم من يضل عن سبيله وهو اعلم بالمهتدين ۝
فكلوا مما ذكر اسم الله عليه ان كنتم بايته مؤمنين ۝ و
ما لكم الا تاكلوا مما ذكر اسم الله عليه وقد فصل لكم
ما حرم عليكم الا ما اضطررتم اليه وان كثيرا ليضلون
باهوائهم بغير علم ان ربك هو اعلم بالمعتدين ۝

منزل ٢
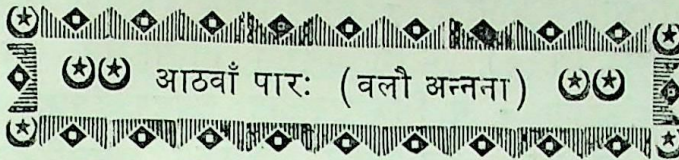
सूरतुल्अन्आमि आयात १११ से १६५

और अगर हम इन पर फ़रिश्तों को (भी) उतारें; और मुर्दे (भी) इनसे बातें करने लगें और हर चीज़ उनके सामने जिलाकर खड़ी कर दें तब भी यह सब हरगिज़ ईमान न लावेंगे सिवा इसके कि अल्लाह की ही मर्ज़ी हो लेकिन इनमें के अक्सर ज्ञान नहीं रखते (१११) और इसी तरह हमने हर पैग़म्बर के लिए आदमी और जिन्नों में से शैतान पैदा किये और जो एक दूसरे को मुलम्मा-जैसी झूठी बातें धोखा देने की सिखाते हैं और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता तो वह ऐसा काम न करते। तो उनको छोड़ दो वह जानें और उनका झूठ, (११२) और (ये इसलिए भी भटकाते थे) ताकि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल उनकी बातों से रज़ामन्द हों और जो बुरे काम यह स्वयं करते हैं वे लोग भी (वैसा ही) करें। (११३) (ऐ पैग़म्बर ! यहूदियों और ईसाइयों से पूछो) क्या (तुम्हारे और अपने बीच) में अल्लाह के सिवाय कोई और पंच तलाश करूँ ? हलाँकि वही है जिसने तुम लोगों की तरफ़ किताब भेजी जिसमें (हर तरह की) तफ़सील (मौजूद) है और (ऐ पैग़म्बर !) वह लोग जिनको हमने (तुमसे पहले) किताब दी है इस बात को (अच्छी तरह) जानते हैं कि क़ुर्आन हक़ीक़त में तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से उतरी है, सो (ख़बरदार ! कहीं) तुम शक करनेवालों में न हो जाना। (११४) और तेरे परवरदिगार की बात बिलकुल सच्ची और इंसाफ की है। कोई उसके कलाम को कोई बदल नहीं सकता और वही (सब कुछ) सुनता और (सब कुछ) जानता है। (११५) और बहुतेरे लोग दुनिया में ऐसे हैं कि अगर उनके कहे पर चलो तो तुमको अल्लाह के रास्ते से भटका दें, यह सब तो सिर्फ़ ख़्यालों पर ही चलते हैं और निरी अटकलें दौड़ाते हैं ! (११६) जो अल्लाह के रास्ते से भटका है उसे परवरदिगार ख़ूब जानता है और जो सीधी राह पर हैं उनको (भी) ख़ूब जानता है। (११७) पस अगर तुम लोगों को उसके हुक्मों का विश्वास है तो जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो उस चीज़ को खाओ। (११८) और क्या सबब है कि तुम उसमें से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो और जो चीज़ें अल्लाह ने तुम पर हराम कर दी हैं वह पूरी तरह तुमसे बयान कर दी हैं। (वह चीज़ें कि हराम तो हैं) मगर (भूख वग़ैरह की वजह से तुम उस पर) मजबूर हो जाओ (तो जान बचाने के लिए हराम नहीं) और बहुत लोग तो बिना सोचे-समझे मनमानी पर (लोगों को) बहकाते हैं। जो लोग (अपनी मनमानी पर चलकर) हद से बाहर हो जाते हैं बेशक तुम्हारा परवरदिगार उनको ख़ूब जानता है (११९)

व जरू जाहिरल्-अिस्मि व बातिनहु त् अिन्नल्लजीन यक्सिबूनल्-अिस्म सयुज्जौन
बिमा कानू यक़्तरिफ़ून (१२०) व ला तअ्कुलू मिम्मा लम् युज्करिस्मुल्लाहि
अलैहि व अिन्नहु लफ़िस्कुन् त् व अिन्नश्शयातीन लयूहून अिला औलियाअिहिम्
लियुजादिलूकुम् ज व अिन् अतअ्तुमूहुम् अिन्नकुम् लमुश्रिकून (१२१) ★

रु. १४-१ आ ११

अवमन् कान मैतन् फ़अह्यैनाहु व जअल्ना
लहु नूरैंयम्शी बिही फ़िन्नासि कमम्-मसलुहू
फ़िज़्ज़ुलुमाति लैस बिख़ारिजिम् - मिन्हा त्
कजालिक ज़ुय्यिन लिल्काफ़िरीन मा कानू
यअ्मलून (१२२) व कजालिक जअल्ना फ़ी
कुल्लि क़र्यतिन् अकाबिर मुज्रिमीहा
लियम्कुरू फ़ीहा त् व मा यम्कुरून अिल्ला
बिअन्फ़ुसिहिम् व मा यश्अुरून (१२३) व
अिजा जाअत्हुम् आयतुन् क़ालू लन् नुअ्मिन
हत्ता नुअ्ता मिस्ल मा अूतिय रुसुलुल्लाहि
त् म ● अल्लाहु अअ्लमु हैसु यज्अलु
रिसालतहू त् सयुसीबुल्लजीन अज्रमू-
सग़ारुन् अिन्दल्लाहि व अजाबुन् शदीदुम्-

ولواننا ١١٤ الانعام

وذروا ظاهر الاثم وباطنه ان الذين يكسبون الاثم
سيجزون بما كانوا يقترفون ۝ ولا تاكلوا مما لم يذكر اسم
الله عليه وانه لفسق وان الشيطين ليوحون الى اوليهم
ليجادلوكم وان اطعتموهم انكم لمشركون ۝ او من كان ميتا
فاحييناه وجعلنا له نورا يمشي به في الناس كمن مثله في
الظلمت ليس بخارج منها كذلك زين للكفرين ما كانوا
يعملون ۝ وكذلك جعلنا في كل قرية اكبر مجرميها ليمكروا
فيها وما يمكرون الا بانفسهم وما يشعرون ۝ واذا جاءتهم
اية قالوا لن نؤمن حتى نؤتى مثل ما اوتي رسل الله الله
اعلم حيث يجعل رسالته سيصيب الذين اجرموا صغار عند الله
وعذاب شديد بما كانوا يمكرون ۝ فمن يرد الله ان يهديه
يشرح صدره للاسلام ومن يرد ان يضله يجعل صدره
ضيقا حرجا كانما يصعد في السماء كذلك يجعل الله الرجس
على الذين لا يؤمنون ۝ وهذا صراط ربك مستقيما قد فصلنا
الايت لقوم يذكرون ۝ لهم دار السلم عند ربهم وهو
وليهم بما كانوا يعملون ۝ ويوم يحشرهم جميعا يمعشر الجن
قد استكثرتم من الانس وقال اولياؤهم من الانس ربنا استمتع

منزل

व. ला व. मंजिल

बिमा कानू यम्कुरून (१२४) फ़मैंयुरिदिल्लाहु अैंयह्दियहू यश्रह्
सद्रहू लिल्अिस्लामि ज व मैंयुरिद् अैंयुज़िल्लहू यज्अल् सद्रहू
ज़ैयिक़न् हरजन् कअन्नमा यस्सअ्अदु फ़िस्समाअि त् कजालिक यज्अलुल्लाहुर्रिज्स
अलल्लजीन ला युअ्मिनून (१२५) व हाजा सिरातु रब्बिक मुस्तक़ीमन् त्
क़द् फ़स्सल्नल् - आयाति लिक़ौमीं-यज्जक्करून (१२६) लहुम् दारुस्सलामि अिन्द
रब्बिहिम् व हुव वलीयुहुम् बिमा कानू यअ्मलून (१२७) व यौम यह्शुरुहुम्
जमीअन् ज यामअ्शरल्जिन्नि क़दिस्तक्सर्तुम् मिनल्अिन्सि ज व क़ाल
औलियाअुहुम् मिनल्अिन्सि रब्बनस् - तम्तअ बअ्ज़ुना बिबअ्ज़िंव्व बलग़्ना
अजलनल्लजी अज्जल्त लना त् क़ालन्नारु मस्वाकुम् ख़ालिदीन फ़ीहा
अिल्ला मा शाअल्लाहु त् अिन्न रब्बक हकीमुन् अलीमुन् (१२८)

और ज़ाहिरा और छिपे हुए गुनाह से अलग रहो, जो लोग गुनाह करते हैं उनको अपने किये की सज़ा मिलेगी।§ (१२०) और जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो उसमें से मत खाओ और उसमें से खाना पाप है और शैतान अपने दोस्तों के दिलों में बसबसा (प्रेरणा) डालते हैं कि तुमसे झगड़ा करें और अगर तुमने (भी बहकावे में आकर) उनका कहा मान लिया तो तुम मुशरिक हो जाओगे। (१२१)★

एक शख़्स जो मुर्दा (अज्ञान में) था हमने उसमें जान डाली† और उसको रोशनी दी जिसको लिए वह लोगों के बीच फिरता है। क्या वह उस शख़्स जैसा हो जायगा जो अँधेरों (अज्ञान) में पड़ा है (और) वहाँ से निकल नहीं सकता? इसी तरह काफ़िरों को जो भी (वह) कर रहे हैं भला दिखाई देता है। (१२२) और इसी तरह हमने हर बस्ती में बड़े-बड़े अपराधी खड़े किये ताकि वहाँ मक्कारियाँ करते रहें। और जो मक्कारियाँ वह करते हैं अपनी ही जानों के लिए करते हैं और (वे उसको) समझते नहीं।छ (१२३) और जब उन (मक्कावालों) के पास कोई आयत आती है तो कहते हैं कि जैसी अल्लाह के पैग़म्बरों को दी गयी है जब तक हमको न दी जाय हम तो ईमान लाने वाले नहीं हैं ●।♦ अल्लाह ख़ूब जानता है जिस पर अपना पैग़ाम भेजे। जो लोग गुनहगार हैं उनको अल्लाह के यहाँ ज़िल्लत होगी और इन मक्कारी करने वालों को सख़्त सज़ा होगी। (१२४) जिसको (उसकी नेक-अमली के कारन) अल्लाह सीधी राह दिखाना चाहता है उसके दिल को इस्लाम (हुक्मबरदारी) के लिए खोल देता है और जिस शख़्स को (उसके बदअमली के कारन) भटकाना चाहता है उसके दिल को तंग (संकुचित) कर देता है और (ईमान की राह का ख़्याल भी उसका दम) घोटता है मानो (उसकी रूह) ज़ोर से आसमान पर (भागती) चढ़ती जाती है। और जो लोग ईमान नहीं लाते उनको इसी तरह अल्लाह गंदगी (नापाक ज़िन्दगी) में डाले रखता है। (१२५) और यह तुम्हारे परवरदिगार की सीधी राह है। जो लोग ग़ौर करते हैं उनके लिए हमने आयतें तफ़सील के साथ बयान कर दी हैं। (१२६) उनके लिए अपने पालनकर्त्ता के यहाँ अमन का घर है और जो (नेक) अमल करते हैं उसके बदले वह उनसे मोहब्बत करता है। (१२७) और जिस दिन अल्लाह उन (जिन्न* व इंसानों) सबको (अपने सामने) जमा करेगा (और फ़रमायेगा) कि ऐ जिन्नों के गिरोह! आदम के बेटों में से तो तुमने अच्छी ख़ासी (जमात अपनी तरफ़) हासिल कर ली और (दुनिया में) आदम की औलाद में से जो शैतानों के दोस्त हैं कहेंगे कि ऐ हमारे पालनकर्त्ता! हम एक दूसरे से फ़ायदा उठाते रहे हैं और जो समय तूने हमारे (अमल के इंसाफ़ के) लिए मुक़र्रर किया था हम उस (मंजिल) पर पहुँच गये। तब अल्लाह कहेगा कि तुम्हारा ठिकाना आग (दोज़ख़) है, उसी में (हमेशा) रहोगे, आगे अल्लाह की मर्ज़ी। (ऐ पैग़म्बर!) (बेशक) तुम्हारा परवरदिगार हिकमतवाला और बड़ा जानकार है। (१२८)

★ रु. १४/१ आ ११

● व. ला जि म व. मं जि ल

§ याने काफ़िरों के बहकाने पर उनके मुताबिक़ न ज़ाहिर में अमल करो न मन में सन्देह को जगह दो। † याने जाहिल (अज्ञानी) को रोशनी (ज्ञान) दिया। छ अिल्म (ज्ञान) और अल्लाह का हुक्म आजाने पर और नबियों के ज़रिये समझाये जाने पर भी जब ज़ालिम (अन्यायी) लोग उनको न मानकर अपनी ख़्वाहिशों पर मनमाना चलते हैं और बार-बार माफ़ किये जाने पर भी गुनाह पर गुनाह करते चले जाते हैं तब अल्लाह की कुदरत उनको उन गुनाहों की तरफ़ और झोंकती है ताकि वे लाइलाज गुनहगार अपनी पूरी सज़ा को पहुँचें और सोसाइटी (समाज) उनसे पाक हो। ♦ याने गुनहगार होते हुये भी काफ़िरों को यह हौसला था कि जैसे पैग़म्बरों पर किताब या अिल्म उतरता था उन पर भी उतरे तब वे अल्लाह की आयत को मानें (याने अल्लाह पर इहसान करें) वरना रसूल पर उतरी आयत को ईश्वर-आज्ञा न मानकर अपनी जाहिलियत (अज्ञान और मनोरथों) के अंधेरे में ही पड़े रहें। * जिन्न वह प्राणी हैं जो आँखों से ओझल रहते हैं और इनकी उत्पत्ति आग से है जैसे कि इन्सानों की पैदायश मिट्टी से है।

★ रु. १५/२ आ ८

व कज़ालिक नुवल्ली बअ़्ज़ज़्ज़ालिमीन बअ़्ज़म्-बिमा कानू यक्सिबून (१२९) ★ यामअ़्शरल्जिन्नि वल्‌अिन्सि अलम् यअ्‌तिकुम् रुसुलुम्-मिन्कुम् यक़ुस्सून अ़लैकुम् आयाती व युन्‌ज़िरूनकुम् लिक़ा'अ यौमिकुम् हाज़ा त् क़ालू शहिद्‌ना अ़ला' अन्फ़ुसिना व ग़र्रत्‌हुमुल्-ह़यावुद्दुन्या व शहिदू अ़ला' अन्फ़ुसिहिम् अन्नहुम् कानू काफ़िरीन (१३०) ज़ालिक अल्लम् यकुर्रब्बुक मुह्‌लिकल्क़ुरा बिज़ुल्मिंव्व अह्‌लुहा ग़ाफ़िलून (१३१) व लिकुल्लिन् दरजातुम् - मिम्मा अ़मिलू त् व मा रब्बुक बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा यअ़्मलून (१३२) व रब्बुकल्-ग़नीयु ज़ुर्रह्‌मति त् अींयशअ् युज़्‌-हिब्कुम् व यस्तख़्‌लिफ़् मिम्बअ़्दि कुम् मा यशा'अु कमा' अन्शअकुम् मिन् ज़ुर्रीयति क़ौमिन् आख़रीन त् (१३३) अिन्न मा तूअ़दून लआतिन् ला ०व मा' अन्तुम् बिमुअ़्‌-जिज़ीन (१३४) क़ुल् या क़ौमिअ़्मलू अ़ला मकानतिकुम् अिन्नी आ़मिलुन् ज् फ़सौफ़ तअ़्लमून ला मन् तकूनु लहू आ़क़िबतुद्दारि त् अिन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून (१३५) व जअ़लू लिल्लाहि मिम्मा ज़रअमिनल्‌ह़र्सि वल्‌अन्‌आमि नसीबन् फ़क़ालू हाज़ा लिल्लाहि बिज़अ़्मिहिम् व हाज़ा लिशुरका'अिना ज् फ़मा कान लिशुरका'अिहिम् फ़ला यसिलु अिलल्लाहि ज् व मा कान लिल्लाहि फ़हुव यसिलु अिला शुरका'अिहिम् त् सा'अ मा यह्‌कुमून (१३६) व कज़ालिक ज़ैयन लिकसीरिम् - मिनल्मुश्‌रिकीन क़त्‌ल औलादिहिम् शुरका'अुहुम् लियुर्दूहुम् व लियल्बिसू अ़लैहिम् दीनहुम् त् व लौ शा'अल्लाहु मा फ़अ़लूहु फ़ज़र्हुम् व मा यफ़्तरून (१३७)

ولو اننا ٨ — ١١٥ — الانعام

بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ۭ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَاۗءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝ وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًۢا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۭ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓي اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ۝ ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰي بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ۝ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَاۗءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۝ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰي مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَاۗىِٕنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَاۗىِٕهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰي شُرَكَاۗىِٕهِمْ ۭ سَاۗءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَاۗؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا

منزل ٢

और इसी तरह हम ज़ालिमों को एक दूसरे का दोस्त बना देंगे, यह उनकी (उस) कमाई का फल है (जो वे दुनिया में करते थे)। (१२९)★

★ रु. १५/२ आ ८

(फिर हम जिन्नों और आदम के बेटे दोनों से मुख़ातिब होकर पूछेंगे कि) ऐ जिन्नों और इन्सानों के गिरोहो ! क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में के पैग़म्बर नहीं आये कि तुमसे मेरे हुक्म बयान करते थे और उस रोज़ (क़ियामत) के सामने आने से (तुमको) डराते थे? वह (ख़ुद ही) कहेंगे हम अपने ऊपर आप ही गवाही देते हैं§ और (सममुच) दुनिया की ज़िन्दगी ने उनको धोखे में रखा और वह क़ायल हुए अपने गुनाह पर कि बेशक वे काफ़िर थे। (१३०) वह सब इस सबब से है कि तुम्हारा परवरदिगार ऐसा नहीं कि बस्तियों को ज़ुल्म से हलाक कर दे और वहाँ के रहनेवालों को (कुछ भी) ख़बर न हो (याने बिलकुल बेख़बर हों)। (१३१) और जैसे-जैसे कर्म किये हैं उन्हीं के बमूजिब सबके दर्जे होंगे और जो कुछ (दुनिया में) कर रहे हैं तुम्हारा परवरदिगार उससे बेख़बर नहीं। (१३२) और तुम्हारा परवरदिगार बेनियाज़ (निस्पृह और) रहमवाला है, (वह) चाहे तो तुमको (दुनिया से उठा) ले और तुम्हारे बाद जिसको चाहे तुम्हारी जगह पर क़ायम करे, जैसा कि दूसरे लोगों की नस्ल से तुमको पैदा कर दिया। (१३३) (लोगो !) जो तुमको (अन्तिम न्याय के दिन का) बचन दिया वह आने वाला है, और तुम (अल्लाह को उसके लिए) रोक नहीं सकते। (१३४) तो (ऐ पैग़म्बर !) कहो कि भाइयो ! तुम अपनी जगह काम करो, मैं भी (अपनी जगह) काम करता हूँ। फिर आगे चलकर (तुमको) मालूम हो जायगा कि आख़िर में उस घर का (अच्छा) अन्जाम किसके लिए है। (और) ज़ालिमों का भला (हरगिज़) न होगा। (१३५) और अल्लाह की (पैदा की हुई) खेती और चौपायों में अल्लाह का भी एक हिस्सा ठहराते हैं फिर अपने ख़्यालों के मुताबिक़ कहते हैं कि इतना हिस्सा तो अल्लाह का और इतना (हिस्सा) हमारे शरीकों का (यानी उन पूजितों का जिनको अल्लाह का शरीक मानकर पूजते हैं); फिर जो (हिस्सा) इनके (माने हुए) शरीकों का होता है वह अल्लाह की तरफ़ नहीं पहुँचता और जो अल्लाह का है वह उनके शरीकों को पहुँच जाता है। क्या (ही) बुरा इन्साफ़ (ये लोग) करते हैं†। (१३६) और इसी तरह (अक्सर) मुशरिकों की निगाह में उनके शरीकों (बुतों) ने औलाद (यानी लड़कियों) को मार डालना भला दिखलाया जिससे वह उनको बरबाद कर डालें और उनके दीन में भ्रम पैदाकर दें और अल्लाह चाहता तो यह लोग ऐसा काम न करते। सो (उनको) छोड़ दो, वे जानें और उनका झूठ (जाने)। (१३७)

---

§ याने हम अपने कुफ़्र को मानते हैं कि बेशक आपके नबी हममें आये और हमने उनके बतलाने पर भी अल्लाह का हुक्म नहीं माना। † अरब के मुशरिक अपनी सालाना पैदावार वग़ैरः में से एक हिस्सा बतौर ख़ैर-ख़ैरात अलग निकाल देते थे। उसमें से एक हिस्सा अल्लाह के नाम का रखते जो ग़रीबों-मुहताजों पर खर्च होता और एक हिस्सा अपने पूजितों के लिए निकालते जो मुजाविरों-प्रोहितों व मन्दिरों आदि पर खर्च होता। इस बटवारे में अगर कोई गोलमाल होता तो वह अल्लाह वाले हिस्से में ही कमी आती या अगर कोई अल्लाह के हिस्से में उम्दः चीज़ होती तो उसे भी अपने देवताओं वाले हिस्से में मिला देते और दीन अनाथों का हक़ मारा जाता।

व क़ालू हाजिहिं अन्आमूंव हर्सुन् हिज्रुन् क् सला ल'ला यत्अमुहा अिल्ला मन् नशा'अु बिज़ऽमिहिम् व अन्आमुन् हुर्रिमत् ज़ुहूरुहा व अन्आमुल्ला यज़्कुरूनस्मल्लाहि अलैहफ़्तिरा'अन् अलैहि त् सयज्ज़ीहिम् बिमा कानू यफ़तरून (१३८) व क़ालू मा फ़ी बुतूनि हाजिहिल्अन्आमि ख़ालिसतुल्लिज़ुकूरिना व मुहर्रमुन् अला अज़्वाजिना ज् व अींयकुम्मैतत्न् फ़हुम् फ़ीहि शुरका'अु त् सयज्ज़ीहिम् वस्फ़हुम् त् अिन्नहु हकीमुन् अलीमुन् (१३९) क़द् ख़सिरल्लज़ीन क़तलू औलादहुम् सफ़हम्-बिग़ैरि अिल्मिंव्व हर्रमू मा रज़क़हुमुल्लाहुफ़् - तिरा'अन् अलल्लाहि त् क़द् ज़ल्लू व मा कानू मुह्तदीन (१४०) ★ ● व हुवल्लज़ी अन्शअ जन्नातिम्-मऽरूशातिंव्व ग़ैर मऽरूशातिंव्वन्नख़्ल वज़्ज़र्अ मुख़्तलिफ़न् अुकुलुहू वज़्ज़ैतून वर्रुम्मान मुतशाबिहौंव ग़ैर मुतशाबिहिन् त् कुलू मिन् समरिहिं अिज़ा असमर व आतू हक़्क़हू यौम हसादिहिं ज् सला व ला तुस्रिफ़ू त् अिन्नहू ला युहिब्बुलमुस्रिफ़ीन ला (१४१) व मिनल्-अन्आमि हमूलतौंव फ़र्शन् त् कुलू मिम्मा रज़क़कुमुल्लाहु व ला तत्तबिअू ख़ुतुवातिश्शैतानि त् अिन्नहू लकुम् अदूवुम्-मुबीनुन् ला (१४२) समानियत अज़्वाजिन् ज् मिनज़्ज़अ्निस्नैनि व मिनल्मऽज़िस्नैनि त् क़ुल्आ'ज्ज़करैनि हर्रम अमिल्अुन्सयैनि अम्मश्तमलत् अलैहि अर्हामुल्अुन्सयैनि त् नब्बिअूनी बिअिल्मिन् अिन् कुन्तुम् सादिक़ीन ला (१४३)

ولو اننا ١١٦ الانعام

عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوهُ ۖ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ۝
وَقَالُوا هَٰذِهِ أَنْعَامٌ وَحَرْثٌ حِجْرٌ لَا يَطْعَمُهَا إِلَّا مَنْ نَشَاءُ
بِزَعْمِهِمْ وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا وَأَنْعَامٌ لَا يَذْكُرُونَ اسْمَ
اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءً عَلَيْهِ ۚ سَيَجْزِيهِمْ بِمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ وَقَالُوا
مَا فِي بُطُونِ هَٰذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَىٰ
أَزْوَاجِنَا ۖ وَإِنْ يَكُنْ مَيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ ۚ سَيَجْزِيهِمْ وَصْفَهُمْ ۚ
إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ
عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ ۚ قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا
مُهْتَدِينَ ۝ وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَ جَنَّاتٍ مَعْرُوشَاتٍ وَغَيْرَ مَعْرُوشَاتٍ
وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا أُكُلُهُ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَغَيْرَ
مُتَشَابِهٍ ۚ كُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ ۖ وَلَا
تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ۝ وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولَةً وَفَرْشًا ۚ
كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ
مُبِينٌ ۝ ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ ۖ مِنَ الضَّأْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ۗ
قُلْ آلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنْثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ
الْأُنْثَيَيْنِ ۖ نَبِّئُونِي بِعِلْمٍ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ وَمِنَ الْإِبِلِ
اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ آلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنْثَيَيْنِ

और कहते हैं कि यह चौपाये और खेती (की पैदावार खाना) हराम है उस शख़्स के सिवाय जिसको हम अपने ख़्याल के मुताबिक़ (देना) चाहें। और कुछ चौपाये ऐसे हैं कि उनकी पीठ (पर सवार होना व लादना) मना है और कुछ चौपाये ऐसे हैं जिनको ज़िबह (काटने) के वक़्त उन पर अल्लाह का नाम नहीं लेते, (और यह सब) अल्लाह (के नाम) पर ही झूठ§ बाँधते हैं (और कहते हैं कि उसका ऐसा हुक्म है)। वह (यानी अल्लाह) इनको इस झूठ की (कड़ी) सज़ा देगा। (१३८) और (ये लोग) कहते हैं कि इन चौपायों के पेट से जो बच्चा ज़िन्दः निकले वह हमारे मर्दों के लिए हलाल और हमारी औरतों पर हराम है और अगर मरा हुआ हो तो (मर्द और औरत) सब उसमें शरीक हैं। अल्लाह इनको इन बातों की सज़ा देगा, वह हिकमतवाला और बेहद ख़बरदार है। (१३९) बेशक वह लोग घाटे में हैं जिन्होंने नादानी और बे समझी से अपनी औलादों (यानी बच्चियों) को मार डाला और अल्लाह ने जो रोज़ी उनको दी थी अल्लाह (के नाम) पर झूंठ बाँधकर उसको हराम कर लिया। बेशक वह लोग भटक गये और राह पर नहीं आये। (१४०) ★ ●

★ रु. १६ ३ आ ११ ● रु. ४ आ १ ४

और वह (अल्लाह ही) है जिसने बाग़ पैदा किये (बेलों की तरह) चढ़ाये हुए और (बाज़) बग़ैर चढ़ाये हुये और खजूर के दरख़्त और खेती जिनके कई तरह के फल होते हैं और ज़ैतून और अनार हैं (जो स्वाद या शक्ल में) एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं और बेमेल भी हैं। और (लोगो!) यह सब चीज़ें जब फल लावें इनके फल खाओ और उनके कटने के दिन हक़ अल्लाह का (यानी ज़कात) दे दिया करो† और फ़िज़ूलख़र्ची मत करो क्योंकि फ़िज़ूलख़र्ची करनेवालों को अल्लाह पसन्द नहीं करता। (१४१) और चौपायों में (कुछ) बोझ उठाने वाले (पैदा किये जैसे बैल, ऊँट) और (कोई) ज़मीन से लगे हुए (जो नहीं लादे जाते जैसे भेड़, बकरी) अल्लाह ने जो जो तुमको रोज़ी दी है उसमें से बेशक खाओ और शैतान के क़दमों पर न चलो (क्योंकि) वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (१४२) आठ नर और मादा (यानी चार जोड़े) पैदा किये हैं, भेड़ों में से दो और बकरियों में से दो, (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) पूछो कि अल्लाह ने दो नरों को हराम कर दिया है या दो मादीनों को या मादाओं के बच्चों को जो पेटों में हैं? अगर तुम सच्चे हो तो मुझको (इसकी) सनद बतलाओ। (१४३)

---

§ कुछ जानवरों और अनाज के बारे में अपने मन से अनेक दस्तूर गढ़ते थे (देखो आयत १०३ सू० मायदः) और कहते कि ये खुदा के हुक्म हैं। मसलन किन्हीं जानवरों को छुट्टा छोड़ देते कि इनसे फिर कोई काम न लिया जाय, ये फ़लाँ बुतों के नाम पर मन्नत हैं, वग़ैरः वग़ैरः। † माल पर ज़कात दी जाती है साल के अन्त में (देखिये सूरे बक़र आयत ४३ सफ़ा ३५ पर) लेकिन फ़सल की ज़कात उस दिन निकाली जाय जिस दिन फ़सल हाथ लगे। बिना खिराज (मालगुज़ारी) अपने मुल्क की ज़मीन की फ़सल पर अल्लाह का हक़ है। अगर पानी देने से हो तो बीसवाँ हिस्सा, बग़ैर पानी का हो तो दसवाँ हिस्सा ज़कात दी जाय।

व मिनल्-अिबिलिस्नैनि व मिनल्-बक़रिस्नैनि ॒ क़ुल् आ ज्जकरैनि हर्रम अमिल्-अुन्सयैनि अम्मश्तमलत् अलैहि अर्हामुल्-अुन्सयैनि ॒ अम् कुन्तुम् शुहदा अ अिज् वस्साकुमुल्लाहु बिहाजा ज् फ़मन् अज़्लमु मिम्मनिफ़्तरा अलल्लाहि कजिबल्-लियुज़िल्लन्नास बिग़ैरि अिल्मिन् ॒ अिन्नल्लाह ला यह्दिल्-क़ौमज्जालिमीन (१४४) ★ क़ुल् ला अजिदु फ़ी मा अूहिय - अिलैय मुहर्रमन् अला ताअिमींयत्-अमुहू अिल्ला अैंयकून मैतन्न् औदमम्-मस्फ़ूहन् औलहम खिन्जीरिन् फ़अिन्नहू रिज्सुन् औ फ़िस्क़न् अुहिल्ल लिग़ैरिल्लाहि बिही ज् फमनिज़्तुर्र ग़ैर बाग़िव्वला आदिन् फ़अिन्न रब्बक ग़फ़ूरुर्रहीमुन् (१४५) व अलल्-लज़ीन हादू हर्रम्ना कुल्ल जी ज़ुफ़ुरिन् ज् व मिनल्बक़रि वल्ग़नमि हर्रम्ना अलैहिम् शुहूमहुमा अिल्ला मा हमलत् ज़ुहूरुहुमा अविल्हवाया औ मख़्तलत बिअज्मिन् ॒ जालिक जज़ैनाहुम् बिबग़्यिहिम् ज़् सला व अिन्ना लसादिक़ून (१४६) फ़अिन् कज्जबूक फ़क़ुर्रब्बुकुम् ज़ू रह्मतिंव्वा-सिअतिन् ज् व ला युरद्दु बअ्सुहू अनिल्क़ौमिल्-मुज्रिमीन (१४७) सयक़ूलुल्लज़ीन अश्रकू लौशाअल्लाहु मा अश्रक्ना व ला आबाउना व ला हर्रम्ना मिन् शैअिन् ॒ कजालिक कज्जबल्लज़ीन मिन् क़ब्लिहिम् हत्ता जाक़ू बअ्सना ॒ क़ुल् हल् अिन्दकुम् मिन् अिल्मिन् फ़तुख़्रिजूहु लना ॒ अिन् तत्तबिअून अिल्लज्जन्न व अिन् अन्तुम् अिल्ला तख़्रुसून (१४८) क़ुल् फ़लिल्लाहिल्-हुज्जतुल् - बालिग़तु ज् फ़लौ शाअ लहदाकुम् अज्मअीन् (१४९) क़ुल् हलुम्म शुहदाअकुमुल्लज़ीन यश्हदून अन्नल्लाह हर्रम हाज़ा ज् फ़अिन् शहिदू फ़ला तश्हद् मअहुम् ज व ला तत्तबिअ़ अह्वाअल्लज़ीन कज्जबू बिआयातिना वल्लज़ीन ला युअ्मिनून बिल्-आख़िरति व हुम् बिरब्बिहिम् यअ्दिलून (१५०) ★

★ रु. १७/४ आ ४

★ रु. १८/५ आ ६

ولوانّنا ٨ ١١٤ الانعام ٦

أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنْثَيَيْنِ ۖ أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ وَصَّاكُمُ
اللَّهُ بِهَٰذَا ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِيُضِلَّ النَّاسَ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ قُلْ لَا أَجِدُ فِي
مَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَىٰ طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ
دَمًا مَسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خِنْزِيرٍ فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ
اللَّهِ بِهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝
وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي ظُفُرٍ ۖ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا
عَلَيْهِمْ شُحُومَهُمَا إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۚ
ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۝ فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ
رَبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ۝
سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا
مِنْ شَيْءٍ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا ۗ
قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا ۖ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَ
إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ۝ قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۖ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ
أَجْمَعِينَ ۝ قُلْ هَلُمَّ شُهَدَاءَكُمُ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ
هَٰذَا ۖ فَإِنْ شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا
بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ۝ قُلْ

منزل ٢

और ऊँटों से (नर व मादा) दो और गाय से (नर व मादा) दो (पैदा किये।)§ (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) पूछो दो नरों को हराम कर दिया है या दो मादीनों को या बच्चा जो मादीनों के पेट में है ? या तुमको इन चीज़ों के हराम कर देने का हुक्म अल्लाह ने जब दिया था वहाँ (खुद) उस वक़्त तुम मौजूद थे ? तो उस शख़्स से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो लोगों को रास्ते से भटकाने के लिए वे समझे-बूझे अल्लाह पर झूठ बाँधे। बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को (सीधी) राह नहीं दिखाता। (१४४) ★

★ रु. १७ — ४ आ ४

(ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कहो कि मेरी तरफ़ जो अल्लाह का पैग़ाम आया है उसमें से खाने वाला कुछ खाय मैं तो कोई चीज़ हराम नहीं पाता, सिवाय यह कि (वह चीज़) मुरदार हो या बहता हुआ ख़ून या सुअर का माँस कि यह (चीजें) नापाक हैं या उदूलहुक्मी का सबब हो (जैसे) कि अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे के नाम पर ज़िबह किया गया हो, उस पर भी जो शख़्स (भूख से बेहद) लाचार हो (और वह जान बचाने को इनमें से कुछ खा ले वह भी इस हालत में कि) न तो बे हुक्मी (अवज्ञा) का इरादा रखता हो और न हद से बढ़ जाने वाला हो तो बेशक तुम्हारा परवरदिगार माफ़ करनेवाला बेहद मेहरबान है। (१४५) और यहूदियों पर हमने तमाम (बिना चिरे हुये) नाख़ून वाले जानवरों को हराम किया और गाय और बकरियों में से उनकी चर्बी (हराम की थी) सिवाय वह (चर्बी) जो उनकी पीठ पर लगी हो या अँतड़ियों पर या हड्डी से मिली हो। यह हमने उनको उनकी शरारत के सबब सज़ा दी थी (कि वह इन चीज़ों से महरूम रहें न कि ये चीज़ें हराम याने निषिद्ध थीं) और हम सही कहते हैं। (१४६) इस पर भी यह लोग तुमको झुठलावें तो कहो कि तुम्हारा परवरदिगार बड़ा समाई वाला दयालु है (इसलिए अब तक बचे हो लेकिन यह समझे रहो कि) अपराधी से उसकी सजा टलती नहीं। (१४७) अब मुशरिक कहेंगे कि अगर अल्लाह चाहता तो हम और हमारे बाप-दादे (किसी और को अल्लाह का) शरीक न ठहराते और न किसी चीज़ को (अपने ऊपर) हराम (ही) करते। इसी तरह उनके पुरखे भी झुठलाते रहे हैं। यहाँ तक कि (अन्त में) हमारी सज़ा का मज़ा चक्खा। (ऐ पैग़म्बर ! उनसे) पूछो कि आया तुम्हारे पास कोई इल्म भी है कि उनको हमारे सामने निकालो (या) निरे वहम पर चलते और निरी अटकलें ही दौड़ाते हो। (१४८) कहो अल्लाह की दलील पूरी हुई, सो अगर वह चाहता तो तुम सबको रास्ता दिखला देता (लेकिन हमेशा गुनाहों को ही पसंद करने वाले को वह जबरन सीधी राह पर नहीं लाता) (१४९) (ऐ पैग़म्बर !) कहो कि अपने गवाहों को हाज़िर करो जो इस बात की गवाही दें कि अल्लाह ने यह चीज (इनको) हराम की है। पस अगर वह गवाही (गढ़कर खड़ी) भी (कर) दें तो तुम उनके साथ उन जैसी न कहना और न उन लोगों की ख़्वाहिशों पर चलना जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और जो आख़िरत का यक़ीन नहीं रखते और वह (दूसरे को) अपने परवरदिगार के बराबर दरजा देते हैं। (१५०) ★

★ रु. १८ — ५ आ ६

§ यानी जिन चीज़ों को मुशरिक हराम बताते हैं वह हक़ीक़त में हराम नहीं।

क़ुल् तआलौ अत्लु मा हर्रम रब्बुकुम् अलैकुम् अल्ला तुश्रिकू बिही शैऔंव बिल्वालिदैनि अिह्सानन् ज् व ला तक़्तुलू औलादकुम् मिन् अिम्लाक़िन् त् नह्नु नर्ज़ुक़ुकुम् व अीयाहुम् ज् व ला तक़्रबुल्-फ़वाहिश मा जहर मिन्हा व मा बतन ज् व ला तक़्तुलुन्नफ़्सल्लती हर्रमल्लाहु अिल्ला बिल्हक़्क़ि त् जालिकुम् वस्साकुम् बिही लअल्लकुम् तअ्क़िलून (१५१) व ला तक़्रबू मालल्-यतीमि अिल्ला बिल्लती हिय अह्सनु हत्ता यब्लुग़ अशुद्दहू ज व औ फ़ुल्कैल वल्मीज़ान बिल्क़िस्ति ज् ला नुकल्लिफ़ु नफ़्सन् अिल्ला वुस्अहा ज् व अिजा क़ुल्तुम् फ़अ्दिलू व लौ कान जाक़ुर्बा ज् व बिअह्दिल्लाहि औफ़ू त् जालिकुम् वस्साकुम् बिही लअल्लकुम् तजक्करून ला (१५२) व अन्न हाजा सिराती मुस्तक़ीमन् फ़त्तबिअूहु ज् व ला तत्तबिअुस्-सुबुल फ़तफ़र्रक़ बिकुम् अन् सबीलिही त् जालिकुम् वस्साकुम् बिही लअल्लकुम् तत्तक़ून (१५३) सुम्म आतैना मूसल्किताब तमामन् अलल्लजी अह्सन व तफ़्सीलल्लिकुल्लि शैअिव्व हुदौंव रह्मतल्लअल्लहुम् बिलिक़ाअि रब्बिहिम् युअ्मिनून (१५४) ★ व हाजा किताबुन् अन्ज़ल्नाहु मुबारकुन् फ़त्तबिअूहु वत्तक़ू लअल्लकुम् तुर्हमून ला (१५५) अन् तक़ूलू अिन्नमा अुन्ज़िलल्-किताबु अला ताअिफ़तैनि मिन् क़ब्लिना स् व अिन् कुन्ना अन् दिरासतिहिम् लग़ाफ़िलीन ला (१५६) औ तक़ूलू लौ अन्ना अुन्ज़िल अलैनल्-किताबु लकुन्ना अह्दा मिन्हुम् ज् फ़क़द् जाअकुम् बैयिनतुम्-मिर्रब्बिकुम् व हुदौंव रह्मतुन् ज् फ़मन् अज़्लमु मिम्मन् कज्जब बिआयातिल्लाहि वसदफ़ अन्हा त् सनज्ज़िल्लजीन यस्दिफ़ून अन् आयातिना सूअल्-अजाबि बिमा कानू यस्दिफ़ून (१५७)

★ रु. १९ | ६ आ ४

ولو اننا ١٤٨ الانعام

تعالوا اتل ما حرم ربكم عليكم الا تشركوا به شيئا وبالوالدين
احسانا ولا تقتلوا اولادكم من املاق نحن نرزقكم واياهم
ولا تقربوا الفواحش ما ظهر منها وما بطن ولا تقتلوا النفس
التي حرم الله الا بالحق ذلكم وصىكم به لعلكم تعقلون ۝
ولا تقربوا مال اليتيم الا بالتي هي احسن حتى يبلغ اشده
واوفوا الكيل والميزان بالقسط لا نكلف نفسا الا وسعها
واذا قلتم فاعدلوا ولو كان ذا قربى وبعهد الله اوفوا ذلكم
وصىكم به لعلكم تذكرون ۝ وان هذا صراطي مستقيما
فاتبعوه ولا تتبعوا السبل فتفرق بكم عن سبيله ذلكم
وصىكم به لعلكم تتقون ۝ ثم اتينا موسى الكتب تماما
على الذي احسن وتفصيلا لكل شيء وهدى ورحمة
لعلهم بلقاء ربهم يؤمنون ۝ وهذا كتب انزلنه مبرك
فاتبعوه واتقوا لعلكم ترحمون ۝ ان تقولوا انما انزل
الكتب على طائفتين من قبلنا وان كنا عن دراستهم
لغفلين ۝ او تقولوا لو انا انزل علينا الكتب لكنا اهدى
منهم فقد جاءكم بينة من ربكم وهدى ورحمة فمن
اظلم ممن كذب بايت الله وصدف عنها سنجزي الذين

منزل

(ऐ पैग़म्बर !) कहो कि आओ मैं तुमको वह चीज़ें सुनाऊँ जो तुम्हारे परवरदिगार ने तुम पर हराम की हैं। यह कि किसी चीज़ को अल्लाह के (साथ) शरीक (पूज्य) मत ठहराओ और माता-पिता के साथ नेकी (करते रहो) और ग़रीबी के कारन अपनी औलाद को न मार डालो, हम तुमको रोज़ी देते हैं और उनको (भी)। और बेशर्मी की बातें जो ज़ाहिर हों और छिपी हुई हों उनमें से किसी के पास भी मत फटकना और जिस जान को अल्लाह ने हराम कर दिया है उसे मार न डालना सिवाय हक़ (शरीयत) पर (जब ज़रूरी हो) यह वह बातें हैं जिनका हुक्म अल्लाह ने तुमको दिया है ताकि शायद तुम समझ सको (१५१) और अनाथ के माल के पास मत जाना। सिवाय इसके कि उसकी जिस तरह भलाई हो जब तक कि वह बालिग़ न हो जायँ। और न्याय के साथ पूरी-पूरी नाप या तौल करो। हम किसी शख़्स पर उसकी ताक़त से बढ़कर बोझा नहीं डालते और जब बात कहो तो न्याय की चाहे रिश्तेदार ही क्यों न हो और अल्लाह (से की) प्रतिज्ञा को पूरा करो। यह वह बातें हैं जिनकी अल्लाह ने ताकीद की है, शायद तुम ध्यान दो। (१५२) और (अल्लाह ने) कहा यही हमारा सीधा रास्ता है तो इसी पर चले जाओ और कई-कई रास्तों पर न पड़ना। यह तुमको अल्लाह के रास्ते से तितर-बितर कर देंगे। यह (बातें) हैं जिनका अल्लाह ने तुमको हुक्म दिया है, शायद तुम बचते रहो। (१५३) फिर हमने मूसा को किताब (यानी तौरात) दी जो नेककारों के लिए पूरी नियामत है और उसमें कुल चीज़ों का बयान मौजूद है और हिदायत और मेहरबानी है (और यह कि) शायद वह (याने यहूदी) अपने पालनकर्त्ता से सामना पड़ने का यक़ीन लायें। (१५४) ★

★ रु. १६/६ आ ४

और (इसी तौर पर) यह किताब हमने उतारी है जो बरकतवाली है तो इस पर चलो और (अवज्ञा से) डरते रहो, शायद तुम पर रहम किया जाय। (१५५) (और ऐ मुशरिकीन अरब ! हमने यह क़ुर्आन उतारा) इसलिए कि कहीं यह न कह बैठो कि हमसे पहले बस (यहूदी व नसरानी इन) दो ही गिरोहों पर किताब उतरी थी और (तुमको यह कहने का मौक़ा मिल जाय कि) हम तो उसके पढ़ने-पढ़ाने से बिल्कुल बेख़बर थे। (१५६) या यह उज़्र करने लगो कि अगर हम पर किताब उतरी होती तो हम ज़रूर (उसके मुताबिक़) उनसे कहीं ज़्यादः सच्ची राह पर होते। तो अब तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से (तुम्हारे पास) दलील और हिदायत (पथ-प्रदर्शन) और मेहरबानी आ चुकी है। तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को झुठलाये और उनसे कतराये। और जो लोग हमारी आयतों से कतराते हैं हम उनके (इस) कतराने के बदले में उनको बड़ी दुखदाई सज़ा देंगे। (१५७)

हल् यन्जुरून अिल्ला अन् तअ्तिय हुमुल्-मलाअिकतु औ यअ्तिय रब्बुक औ यअ्तिय बअ़्ज़ु आयाति रब्बिक तृ यौम यअ्ती बअ़्ज़ु आयाति रब्बिक ला यन्फ़अ़ु नफ़्सन् अीमानुहा लम् तकुन् आमनत् मिन् क़ब्लु औ कसबत् फ़ी अीमानिहा ख़ैरन् तृ क़ुलिन्तज़िरू अिन्ना मुन्तज़िरून (१५८) अिन्नल्लज़ीन फ़र्रक़ू दीनहुम् व कानू शियअ़ल्लस्त मिन्हुम् फ़ी शैअिन् तृ अिन्नमा अम्रुहुम् अिलल्लाहि सुम्म युनब्बिअुहुम् बिमा कानू यफ़्अ़लून (१५९) मन् जा'अ बिल्हसनति फ़लहू अ़श्रु अम्सालिहा ज् व मन् जा'अ बिस्सैयिअति फ़ला युज्ज़ा अिल्ला मिस्लहा व हुम् ला युज़्लमून (१६०) क़ुल् अिन्ननी हदानी रब्बी अिला सिरातिम् - मुस्तक़ीमिन् ० ज् दीनन् क़ियमम्मिल्लत अिब्राहीम हनीफ़न् ज् व मा कान मिनल्मुश्रिकीन (१६१) क़ुल् अिन्न सलाती व नुसुकी व मह्याय व ममाती लिल्लाहि रब्बिल् - आ़लमीन ला (१६२) ला शरीक लहू ज् व बिज़ालिक अुमिर्तु व अना औवलुल्-मुस्लिमीन (१६३) क़ुल् अग़ैरल्लाहि अब्ग़ी रब्बौंव हुव रब्बु कुल्लि शैअिन् तृ व ला तक्सिबु कुल्लु नफ़्सिन् अिल्ला अ़लैहा ज् व ला तज़िरु वाज़िरतुँ-विज़्र अुख़्रा ज् सुम्म अिला रब्बिकुम् मर्जिअ़ुकुम् फ़युनब्बिअुकुम् बिमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून (१६४) व हुवल्लज़ी जअ़लकुम् ख़लाअिफ़ल् - अर्ज़ि व रफ़अ़ बअ़्ज़कुम् फ़ौक़ बअ़्ज़िन् दरजातिल् - लियब्लुवकुम् फ़ी मा आताकुम् तृ अिन्न रब्बक सरीअ़ुल् - अ़िक़ाबि ज् सला व अिन्नहू लग़फ़ूरुर्रहीमुन् (१६५) ★ ●

ولو اننا ٨ ١١٩ الانعام ٦

يصدفون عن ايتنا سوء العذاب بما كانوا يصدفون ۝
هل ينظرون الا ان تاتيهم الملئكة او ياتي ربك او ياتي
بعض ايت ربك يوم ياتي بعض ايت ربك لا ينفع نفسا
ايمانها لم تكن امنت من قبل او كسبت في ايمانها خيرا
قل انتظروا انا منتظرون ۝ ان الذين فرقوا دينهم وكانوا
شيعا لست منهم في شيء انما امرهم الى الله ثم ينبئهم
بما كانوا يفعلون ۝ من جاء بالحسنة فله عشر امثالها
ومن جاء بالسيئة فلا يجزى الا مثلها وهم لا يظلمون ۝
قل انني هدىني ربي الى صراط مستقيم دينا قيما ملة
ابرهيم حنيفا وما كان من المشركين ۝ قل ان صلاتي
ونسكي ومحياي ومماتي لله رب العلمين ۝ لا شريك له
وبذلك امرت وانا اول المسلمين ۝ قل اغير الله ابغي
ربا وهو رب كل شيء ولا تكسب كل نفس الا عليها
ولا تزر وازرة وزر اخرى ثم الى ربكم مرجعكم فينبئكم
بما كنتم فيه تختلفون ۝ وهو الذي جعلكم خلئف
الارض ورفع بعضكم فوق بعض درجت ليبلوكم في ما
اتىكم ان ربك سريع العقاب وانه لغفور رحيم ۝

منزل ٢

★ रु. २० / ७ आ ११ ● नि. १/२

यह लोग क्या इसी बात की राह देख रहे हैं कि फ़रिश्ते इनके पास आयें या तुम्हारा पालनकर्त्ता (इनके पास) आये या तुम्हारे परवरदिगार का कोई चमत्कार ज़ाहिर हो। जिस दिन तुम्हारे परवरदिगार का कोई चमत्कार ज़ाहिर होगा तो जो शख़्स उससे पहले ईमान नहीं लाया या अपने ईमान में उसने कुछ नेकी न की थी उसका अब ईमान लाना उसके कुछ भी काम न आयेगा। तो (ऐ नबी !) कहो कि राह देखो, हम भी राह देखते हैं (उस निशानी याने क़ियामत की जब तुमको सिवा अज़ाब भुगतने के और चारा न रह जायगा)। (१५८) जिन लोगों ने अपने दीन में भेद डाला§ और कई फ़िर्क़ों में बँट गये तुमको उनसे कोई काम नहीं, उनका मामला अल्लाह के हवाले है। फिर जो कुछ वह किया करते थे वह (अल्लाह) ही उनको बतायेगा।† (१५९) जो (अल्लाह के यहाँ) नेकी लेकर आयेगा तो उसका दसगुना उसको मिलेगा और जो लायेगा बदी तो वह उतनी ही सज़ा भुगतेगा और उन पर ज़ुल्म (अन्याय) नहीं होगा। (१६०) (ऐ पैग़म्बर ! उनसे) कह दो मुझको तो मेरे परवरदिगार ने सीधी राह सुझा दी है कि वही इब्राहीम की मिल्लत का दीन सच्चा है कि वह एक (अल्लाह) ही के हो रहे थे और मुशरिकों (बहुदेव पूजकों) में से न थे। (१६१) कहो कि मेरी नमाज़ और मेरी क़ुर्बानी और मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह के लिए है जो सारे संसार का स्वामी है। (१६२) कोई उसका शरीक नहीं और मुझको यही हुक्म मिला है और मैं उसका सबसे पहला हुक्मबरदार हूँ (१६३) पूछो कि क्या मैं अल्लाह के सिवाय कोई और परवरदिगार तलाश करूँ (जबकि) वही तमाम चीज़ों का परवरदिगार है। और हर शख़्स अपनी करनी का ज़िम्मेदार है और कोई शख़्स किसी दूसरे का बोझ न उठायेगा। फिर तुम सबको (अन्त में) अपने पालनकर्त्ता की तरफ़ जाना है तो जिस बात में तुम झगड़ते थे वह (तुमको) बतलायेगा (कि क्या हक़ था और क्या नाहक़)। (१६४) और वही है जिसने ज़मीन में तुमको नायब बनाया और तुममें से किसी के दर्जे किसी से ऊँचे किये ताकि जो कुछ (उसने) तुमको दिया है उसमें तुम्हारी जाँच करे। तुम्हारा परवरदिगार जल्द सज़ा देने वाला है और वह बड़ा बख़्शने वाला बेहद मेहरबान (भी) है। (१६५)★ ●

★ रु. २०/७ आ ११ ● नि. १/२

§ दीन में फ़र्क़ डाला—क्या मतलब ? किताब के किसी हिस्से को मानना और अपने नामाफ़िक़ (प्रतिकूल) किसी हिस्से को न मानना या टालना। एक दिन हफ़्ते में दीन के लिए चुन लेना बाक़ी में मनमानी। मौक़ों मौक़ों पर दीन पर अमल—मानो वह सारी ज़िन्दगी के लिए नहीं है। इसी तरह अपनी सुहूलियत से दीन के हुक्मों को तोड़-मरोड़ कर टुकड़े - टुकड़े कर देना। † यानी तौरेत वालों ने अपने दीन में अपनी मनगढ़न्तों या भरम से कई राहें निकाल ली थीं तो उनमें जाँच-पड़ताल के फेर में न पड़ो कि सही या ग़लत क्या है। अपनी सही राह पर क़ायम रहो। दीन में जो बातें यक़ीन की हैं उनमें बाल की खाल न निकाल कर यक़ीन लाओ और जो अमल (करने) की हैं उनके अगर तरीक़े कई भी हों तो बुरा नहीं। (मौ॰ शाह अ॰ क़ादिर)।

☪ ७ सूरतुल् अऽराफ़ि ३९ ☪

(मक्की) इसमें अ़रबी के १४६३५ अक्षर, ३३८७ शब्द, २०६ आयतें और २४ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्‌मानिर्रहीमि •

अलिफ़् लाम् मीम् सा्द् ज् (१) किताबुन् उन्ज़िल इलैक फ़ला यकुन् फ़ी सद्‌रिक हरजुम्-मिन्हु लितुन्जिर बिही व ज़िक्‌रा लिल्मुअ्मिनीन (२) इत्तबिअू मा उन्ज़िल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम् व ला तत्तबिअू मिन् दूनिही औलियाअ त् क़लीलम्-मा तजक्करून (३) व कम् मिन् क़र्यतिन् अह्‌लक्‌नाहा फ़जाअहा बअ्सुना बयातन् औ हुम् क़ाइलून (४) फ़मा कान दअ्वाहुम् इज् जाअहुम् बअ्सुना इल्ला अन् क़ालू इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन (५) फ़लनस्-अलन्नल्लज़ीन उर्सिल इलैहिम् वलनस्-अलन्नल्-मुर्सलीन ला (६) फ़लनक़ुस्सन्न अलैहिम् बिइल्मिंव्व मा कुन्ना गाइबीन (७) वल्वज़्नु यौमइज़िनिल्-हक़्क़ु ज् फ़मन् सक़ुलत् मवाज़ीनुहू फ़उलाइक हुमुल्मुफ़्लिहून (८) व मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू फ़उलाइकल्लज़ीन ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् बिमा कानू बिआयातिना यज़्लिमून (९) व लक़द् मक्कन्नाकुम् फ़िल्अर्ज़ि व जअल्ना लकुम् फ़ीहा मआयिश त् क़लीलम्-मा तश्कुरून (१०) ★ व लक़द् ख़लक़्‌नाकुम् सुम्म सौवर्‌नाकुम् सुम्म क़ुल्ना लिल्मलाइकतिस्जुदू लिआदम क् सला फ़सजदू इल्ला इब्लीस त् लम् यकुम्-मिनस्साजिदीन (११) क़ाल मा मनअक अल्ला तस्जुद इज् अमर्‌तुक त् क़ाल अना ख़ैरुम्-मिन्हु ज् ख़लक़्‌तनी मिन् नारिंव्व ख़लक़्‌तहू मिन् तीनिन् (१२) क़ाल फ़ह्‌बित् मिन्हा फ़मा यकूनु लक अन् ततकब्बर फ़ीहा फ़ख़्रुज् इन्नक मिनस्साग़िरीन (१३)

★ रु. १ । न । आ १०

سورة الاعراف مكية ... ركوعاتها ٢٤

بسم الله الرحمن الرحيم

المص ۝ كتب انزل اليك فلا يكن في صدرك حرج منه
لتنذر به وذكرى للمؤمنين ۝ اتبعوا ما انزل اليكم
من ربكم ولا تتبعوا من دونه اولياء قليلا ما تذكرون ۝
وكم من قرية اهلكنها فجاءها باسنا بياتا او هم قائلون ۝
فما كان دعوىهم اذ جاءهم باسنا الا ان قالوا انا كنا
ظلمين ۝ فلنسئلن الذين ارسل اليهم ولنسئلن المرسلين ۝
فلنقصن عليهم بعلم وما كنا غائبين ۝ والوزن يومئذ
الحق فمن ثقلت موازينه فاولئك هم المفلحون ۝ ومن
خفت موازينه فاولئك الذين خسروا انفسهم بما كانوا
بايتنا يظلمون ۝ ولقد مكنكم في الارض وجعلنا لكم فيها
معايش قليلا ما تشكرون ۝ ولقد خلقنكم ثم صورنكم
ثم قلنا للملئكة اسجدوا لادم فسجدوا الا ابليس لم يكن
من السجدين ۝ قال ما منعك الا تسجد اذ امرتك قال انا
خير منه خلقتني من نار وخلقته من طين ۝ قال
فاهبط منها فما يكون لك ان تتكبر فيها فاخرج انك من

☪ ७ सूरतुल अऽराफ़ि ३९ ☪

(मक्की) इसमें अरबी के १४६३५ अक्षर, ३३८७ शब्द, २०६ आयतें, २४ रुकूअ् हैं। ❀

बिस्मिल्लाहिर्रह्‌मानिर्रहीमि

शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला बेहद मेहरबान है।

अलिफ़ लाम मीम सा़द। (१) (ऐ पैग़म्बर) यह किताब तेरी तरफ उतरी है सो इससे तेरा दिल तंग न हो (अब कोई संकोच न रहे) और तू इसके ज़रिये से (लोगों को अल्लाह के ग़ज़ब से) सचेत करे और ईमानवालों को शिक्षा मिले। (२) (ऐ लोगो!) जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से (पैग़म्बर के ज़रिये) तुम पर उतरा है इसी पर चले जाओ और उसके सिवाय दूसरे रफ़ीक़ों (यानी शैतानों को दोस्त समझकर उन) के पीछे मत चलो, (लेकिन चेतावनी पर) तुम कम ही ध्यान देते हो। (३) और कितनी बस्तियाँ हमने तबाह कर दीं कि रात ही रात या दोपहर दिन को सोते वक़्त हमारा अज़ाब उन पर पहुँचा। (४) जब हमारी सज़ा उन पर उतरी तो और कुछ न बोल सके, यही कहा कि हम ही गुनहगार थे। (५) तो जिन लोगों की तरफ़ पैग़म्बर भेजे गये थे हम उनसे (क़ियामत के दिन) ज़रूर पूछेंगे और पैग़म्बर से भी पूछेंगे। (६) फिर हम अपने इल्म से उनको सब हाल सुना देंगे और हम (उनकी करतूतों के समय) कहीं ग़ायब तो थे नहीं। (७) और (उनके अमलों की) तौल उस दिन (ठीक-ठीक) होगी, तो जिनकी (नेकी की) तौल भारी होगी सो वही लोग मुराद पावेंगे। (८) और जिनके कामों की तौल हल्की ठहरेगी वही लोग हैं जिन्होंने अपना नुक़सान किया इसलिये कि वह हमारी आयतों पर ज़ुल्म करते थे। (९) और हमने तुमको ज़मीन में स्थान दिया और उसी में तुम्हारे लिए ज़िन्दगी के सामान इकट्ठे किये, (लेकिन) तुम (बहुत) कम इहसान मानते हो। (१०)★

★ रु. १/८ आ १०

और हमने ही तुमको पैदा किया और तुम्हारी सूरत बनाई और फिर हमने फ़रिश्तों को आज्ञा दी कि (तुम्हारे मूल पुरुष) आदम को सिज्दः करो तो वे (आदम के आगे) झुक गये मगर इबलीस झुकनेवालों में न हुआ। (११) इबलीस से (अल्लाह ने) पूछा कि मेरे हुक्म देने पर भी तुमको किस चीज़ ने सिज्दः करने से रोका (तो वह) बोला मैं आदम से बेहतर हूँ, (क्योंकि) मुझको तूने आग से पैदा किया और उसको मिट्टी से पैदा किया। (१२) (अल्लाह ने) फ़र्माया तू यहाँ से उतर जा क्योंकि तेरी यह हस्ती नहीं कि (जन्नत में रहकर) घमण्ड कर सके, सो निकल (बेशक) तू ज़लीलों में है। (१३)

❀ 'अल् आराफ़' दोज़ख और जन्नत के दर्मियान एक दीवार होगी जिस पर क़ियामत के दिन उन लोगों को जगह मिलेगी जिनकी नेकियाँ और बुराइयाँ बराबर होंगी और वहाँ से वे दाखिल होने वालों में नेककारों और बदकारों को पहचान लेंगे। इसी 'आराफ़' पर इस सूरत का नाम रखा गया है। इस सूरत के उतरने और पढ़ने दोनों का सिलसिला पिछली सूरत के बिलकुल नज़दीक है। इस सूरत में फिर सचेत किया गया है कि अल्लाह के अज़ाब से डरो और क़ियामत के दिन हर शख्स से पूछा जायगा कि तुमने नबियों के द्वारा अल्लाह के हुक्म सुनकर भी क्या किया। उनके आमाल और उनके नबी उनके कामों की खुद तसदीक़ करेंगे।

आयात १—३१ में क़ुरआन को छोड़कर और किसी भी दूसरे रास्ते पर न चलने का हुक्म है। ह० आदम अ० व इबलीस का दृष्टांत देकर शैतान के धोखे में न फसने की चेतावनी है। आयत ३२—५८ में कहा गया है कि इन बार-बार की चेतावनियों पर भी अगर लोग ईमान न लाये तो उनके लिए दुखदायी [पि॰ २६५ पर]

क़ाल अन्ज़िर्नी अिला यौमि युब्असून (१४) क़ाल अिन्नक मिनल्मुन्ज़रीन (१५) क़ाल फ़बिमा अग्वैतनी लअक्अुदन्न लहुम् सिरातकल्मुस्तक़ीम ला (१६) सुम्म लआतियन्नहुम् मिम्बैनि अैदीहिम् व मिन् ख़ल्फ़िहिम् व अन् अैमानिहिम् व अन् शमाअिलिहिम् त् व ला तजिदु अक्सरहुम् शाकिरीन (१७) क़ालख़्रुज् मिन्हा मज्अूमम्-मद्हूरन् त् लमन् तबिअक मिन्हुम् लअम्लअन्न जहन्नम मिन्कुम् अज्मअीन (१८) व या आदमुस्कुन् अन्त व ज़ौजुकल्जन्नत फ़कुला मिन् हैसु शिअ्तुमा व ला तक्रबा हाज़िहिश्शजरत फ़तकूना मिनज़्ज़ालिमीन (१९) फ़वस्वस लहुमश्शैतानु लियुब्दिय लहुमा मा वूरिय अन्हुमा मिन् सौआतिहिमा व क़ाल मा नहाकुमा रब्बुकुमा अन् हाज़िहिश्शजरति अिल्ला अन् तकूना मलकैनि औ तकूना मिनल्ख़ालिदीन (२०) व क़ासमहुमा अिन्नी लकुमा लमिनन्नासिहीन ला (२१) फ़दल्लाहुमा बिग़ुरूरिन् ज् फ़लम्मा ज़ाक़श्शजरत बदत् लहुमा सौआतुहुमा व तफ़िक़ा यख़्सिफ़ानि अलैहिमा मिंव्वरक़िल्-जन्नति त् व नादाहुमा रब्बुहुमा अलम् अन्हकुमा अन् तिल्कुमश्शजरति व अक़ुल्लकुमा अिन्नश्शैतान लकुमा अदूवुम्मुबीनुन् (२२) क़ाला रब्बना ज़लम्ना अन्फ़ुसना सक्तः व अिल्लम् तग़्फ़िर्लना व तर्हम्ना लनकूनन्न मिनल्ख़ासिरीन (२३) क़ालह्बितू बअ्ज़ुकुम् लिबअ्ज़िन् अदूवुन् ज् व लकुम् फ़िल्अर्ज़ि मुस्तक़र्रूंव मताअुन् अिला हीनिन् (२४) क़ाल फ़ीहा तह्यौन व फ़ीहा तमूतून व मिन्हा तुख़्रजून (२५) ★ या बनी आदम क़द् अन्ज़ल्ना अलैकुम् लिबासैंयुवारी सौआतिकुम् व रीशन् त् व लिबासुत्तक़्वा ला ज़ालिक ख़ैरुन् त् ज़ालिक मिन् आयातिल्लाहि लअल्लहुम् यज़्ज़क्करून (२६)

ولوانّنا ١٢١ الاعراف

الصّٰغِرِيْنَ ۝ قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝ قَالَ اِنَّكَ مِنَ
الْمُنْظَرِيْنَ ۝ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝
ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ
شَمَآىِٕلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ۝ قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا
مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ وَ
يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا
هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ
لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ
هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ۝
وَقَاسَمَهُمَآ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ۝ فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا
الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ
الْجَنَّةِ ؕ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ
لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا
وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ قَالَ اهْبِطُوْا
بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى
حِيْنٍ ۝ قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ۝ ع
يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ؕ وَلِبَاسُ

منزل

★ रु. २ | ६ आ १५

(वह) बोला कि जिस दिन लोग उठा खड़े किये जाँयगे उस दिन तक की (ज़िन्दगी की) मुझे मुहलत दे। (१४) (अल्लाह ने) कहा तुझको मुहलत दी गई। (१५) (इस पर शैतान) बोला जैसा तूने मुझको गुमराह किया है मैं भी तेरे सीधे रास्ते पर आदम की सन्तानों की घात में जा बैठूँगा। (१६) फिर उन पर आगे से और पीछे से और दाहिनी तरफ़ से और बाईं तरफ़ से आऊँगा और (मेरे भटकाने से) उनमें तू ज़यादातर शुक्रगुज़ार नहीं पावेगा। (१७) (अल्लाह ने) फ़र्माया कि तू ज़लील मरदूद हो कर यहाँ से निकल जा। आदम के बेटों में से जो तेरी पैरवी करेगा, मैं बिला शक तुम (और तुम पर चलने वाले उन) सबसे दोज़ख़ भर दूँगा। (१८) और (हमने आदम से कहा कि) ऐ आदम! तुम और तुम्हारी स्त्री जन्नत में रहो और जहाँ से चाहो खाओ, मगर इस दरख़्त के पास न फटकना, नहीं तो तुम (भी) अन्यायियों में हो जाओगे। (१९) फिर शैतान ने (उन मियाँ-बीबी) दोनों को बहकाया ताकि उनकी पर्दगी की चीज़ें जो उनसे ओझल थीं उन पर ज़ाहिर कर दे§ और कहने लगा तुम्हारे परवरदिगार ने जो इस दरख़्त (के फल खाने) से तुमको मना किया है तो इसका कारन यही है कि कहीं ऐसा न हो कि तुम (दोनों) फ़रिश्ते बन जाओ या हमेशा जीनेवालों (अमर) में से हो जाओ। (२०) और (उसने) उनसे क़सम खाई कि मैं तुम्हारी भलाई चाहने वाला हूँ। (२१) ग़रज़ धोखा देकर (शैतान ने) उनको (मना किये गये दरख़्त की ओर) रूजू कर दिया। तो ज्योंही उन्होंने (उस) दरख़्त (का मज़ा) चखा तो दोनों के पर्दे की चीज़ें उन पर ज़ाहिर हो गईं और (पर्दे का ध्यान आते ही वह अंग ढकने के लिए) बहिश्त (के पेड़ों) के पत्ते अपने ऊपर ढाकने लगे। और तब उनके पालनकर्त्ता ने उनको पुकारा कि क्या मैंने तुमको इस वृक्ष की मनाही नहीं की थी और तुमसे नहीं कह दिया था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है। (२२) (दोनों) कहने लगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमने अपने आप अपने ऊपर ज़ुल्म किया और अगर तू हमको क्षमा नहीं करेगा और हम पर रहम नहीं करेगा तो यक़ीनन हम घाटे में हो जायँगे। (२३) (इस पर अल्लाह ने) कहा कि (तुम मियाँ बीबी और शैतान तीनों जन्नत से) नीचे उतर जाओ, तुममें एक का एक दुश्मन है। और तुमको एक (ख़ास) वक़्त तक ज़मीन पर रहना है और (एक वक़्त तक ज़िन्दगी) बसर करना है। (२४) (और) फ़र्माया कि इस (ज़मीन) में (ही तुम सब) ज़िन्दगी बिताओगे और उसी में मरोगे और उसी में से (क़ियामत के दिन) निकाल खड़े किये जाओगे। (२५)★

★ रु० २/६ आ १५

ऐ आदम के बेटो! हमने तुम्हारे लिए (ऐसी) पोशाक उतारी है जो तुम्हारे पर्दे की चीज़ों को छिपाये और (तुम्हारे बदन को) रौनक़ दे और परहेज़गारी का लिबास (सब लिबासों से) आला (श्रेष्ठ) है। ये अल्लाह की निशानियाँ हैं, शायद लोग ध्यान दें† (२६)

---

§ इससे ज़ाहिर होता है कि इंसान में गुनहगारी उसकी अपनी खसलत नहीं है बल्कि वह बाहर से उसमें दाखिल हुई है। जन्नत में ह० आदम अ० व हौवा अ० की पाकीज़ः ज़िन्दगी में अपने तन-बदन व गुनाह में फँसने वाले अंगों का उनको होश ही न था। वह शैतान था जिसने उनको अल्लाह की नाफ़र्मानी (अवज्ञा) का गुनहगार बनाकर आइन्दः उनके लिए ऐबों का रास्ता खोल दिया। शैतान का वही सिलसिला आज भी इन्सानों के साथ चालू है और उससे अपने को बचाने का रास्ता अल्लाह की हिदायत भी इन्सान के लिए हमेशा खुली हुई है। † याने दुश्मन (शैतान) ने जन्नत का पाक (दिव्य) लिबास तो तुमसे छिनवा दिया। अब अल्लाह फिर अपनी दया करता है और तुमको परहेज़गारी (संयम) की पोशाक देता है कि जिसको धारन कर तुम दुनिया में रहकर फिर अन्त में जन्नत हासिल कर सकते हो। जो अल्लाह के हुक्म के खिलाफ़ या मना (वर्जित) हो उस पर न चलो और दुनियावी कपड़ों में भी ऐसे बारीक कपड़े न पहनो कि बेपरदगी हो।

या बनी आदम ला यफ़्तिनन्नकुमुश्शैतानु कमा अख़्रज अबवैकुम् मिनल्जन्नति यन्ज़िअ़ु अन्हुमा लिबासहुमा लियुरियहुमा सौआतिहिमा त़् अिन्नहु यराकुम् हुव व क़बीलुहु मिन् हैसु ला तरौनहुम् त़् अिन्ना जअ़ल्नश्-शयातीन औलिया'अ लिल्लजीन ला युअ्मिनून (२७) व अिजा फ़अ़लू फ़ाहिशतन् क़ालू वजद्ना अ़लैहा आबा'अना वल्लाहु अमरना बिहा त़् क़ुल् अिन्नल्लाह ला यअ्मुरु बिल्फ़ह्शा'अि त़् अतक़ूलून अ़लल्लाहि मा ला तअ़्लमून (२८) क़ुल् अमर रब्बी बिल्क़िस्ति क़िफ़् व अक़ीमू वुजूहकुम् अ़िन्द कुल्लि मस्जिदिंव्वद्-अ़ूहु मुख़्लिसीन लहुद्दीन ० त़् कमा बद अकुम् तअ़ूदून त़् (२९) फ़रीक़न् हदा व फ़रीक़न् हक़्क़ अ़लैहिमुज़्ज़लालतु त़् अिन्नहुमुत्तख़ज़ुश्-शयातीन औलिया'अ मिन् दूनिल्लाहि व यह्सबून अन्नहुम् मुह्तदून (३०) या बनी आदम ख़ुज़ू ज़ीनतकुम् अ़िन्द कुल्लि मस्जिदिंव्व कुलू वश्रबू व ला तुस्रिफ़ू ज् अिन्नहु ला युहिब्बुल्मुस्रिफ़ीन (३१) ★ क़ुल् मन् हर्रम जीनतल्लाहिल्लती अख़्रज लिअ़िबादिही वत्तैयिबाति मिनर्रिज़्क़ि त़् क़ुल् हिय लिल्लजीन आमनू फ़िल् - हयातिद्दुन्या ख़ालिसतैंयौमल् - क़ियामति त़् कजालिक नुफ़स्सिलुल् - आयाति लिक़ौमीं - यअ़्लमून (३२) क़ुल् अिन्नमा हर्रम रब्बियल् - फ़वाहिश मा जहर मिन्हा व मा बतन वल्अिस्म वल्बग्य बिग़ैरिल्हक़्क़ि व अन् तुश्रिकू बिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानौंव अन् तक़ूलू अ़लल्लाहि मा ला तअ़्लमून (३३)

★ रु. ३/१० आ ६

الاعراف ١٢٢ ولو اننا

التقوى ذلك خير ذلك من ايت الله لعلهم يذكرون ۝ يبني
ادم لا يفتننكم الشيطن كما اخرج ابويكم من الجنة ينزع
عنهما لباسهما ليريهما سواتهما انه يركم هو وقبيله من
حيث لا ترونهم انا جعلنا الشيطين اولياء للذين لا يؤمنون ۝
واذا فعلوا فاحشة قالوا وجدنا عليها اباءنا والله امرنا بها
قل ان الله لا يامر بالفحشاء اتقولون على الله ما لا تعلمون ۝
قل امر ربي بالقسط واقيموا وجوهكم عند كل مسجد
وادعوه مخلصين له الدين كما بداكم تعودون ۝ فريقا
هدى وفريقا حق عليهم الضللة انهم اتخذوا الشيطين
اولياء من دون الله ويحسبون انهم مهتدون ۝ يبني
ادم خذوا زينتكم عند كل مسجد وكلوا واشربوا ولا تسرفوا
انه لا يحب المسرفين ۝ قل من حرم زينة الله التي
اخرج لعباده والطيبت من الرزق قل هي للذين امنوا
في الحيوة الدنيا خالصة يوم القيمة كذلك نفصل الايت
لقوم يعلمون ۝ قل انما حرم ربي الفواحش ما ظهر منها و
ما بطن والاثم والبغي بغير الحق وان تشركوا بالله ما لم
ينزل به سلطنا وان تقولوا على الله ما لا تعلمون ۝ ولكل

منزل

ऐ आदम के बेटो ! शैतान तुमको भटका न दे जिस तरह कि उसने तुम्हारे माता-पिता (आदम और हव्वा अ०) को (बहका कर) जन्नत से निकलवाया कि उनसे उनकी पोशाक उतरवा दी ताकि उनकी पर्दा करने की चीज़ें उन पर ज़ाहिर कर दे। वह और उसके भाईबन्द तुमको (वहाँ से) ताके रहते हैं जहाँ पर तुम उनको न देख पाओ; बेशक हमने शैतानों को उन्हीं लोगों का दोस्त बनाया है जो ईमान नहीं लाते। (२७) और (ये लोग) जब कोई बेहयाई का काम करते हैं तो कहते हैं कि हमने अपने बड़ों को (याने बाप-दादों को) इसी पर (चलते) पाया और अल्लाह ने हमको इसी की आज्ञा दी है। (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कहो कि अल्लाह बेहयाई के काम का हुक्म नहीं देता। तुम लोग अल्लाह पर क्यों (ऐसे) झूठ बोलते हो जिनको समझते (भी) नहीं।§ (२८) (ऐ पैग़म्बर !) कहो कि मेरे परवरदिगार ने इंसाफ़ करने का हुक्म दिया है और (कहा है कि) हर नमाज़ के समय अपने मुँह सीधे रखो और उसी (अल्लाह) को उसके आज्ञाकारी होकर पुकारो। जिस तरह तुमको पहली बार (पैदा) किया (उसी तरह) तुम दुबारा भी पैदा होगे। (२९) (उसी ने) एक गिरोह को हिदायत दी और एक गिरोह पर गुमराही साबित हो चुकी है। क्योंकि इन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर शैतान को (अपना) दोस्त बनाया और समझते (यह) हैं कि वह सीधी राह पर हैं। (३०) ऐ आदम के बेटो ! हर नमाज़ के वक़्त (कपड़ों से) अपने को सजा लिया करो और खाओ और पिओ लेकिन (सीमा से बाहर) फ़िज़ूलख़र्चियाँ न करो क्योंकि अल्लाह फ़िज़ूल ख़र्च करनेवालों को पसन्द नहीं करता। (३१)★

★ रु. ३/१० आ ६

(ऐ पैग़म्बर ! इनसे) पूछो कि अल्लाह ने जो रौनक़ और साफ़ सुथरी खाने की चीज़ें अपने बंदों के लिए पैदा की हैं (वह) किसने हराम की हैं ?† (और उनको) समझा दो कि दुनिया की ज़िन्दगी में भी ये (चीज़ें) ईमानवालों के लिए हैं (और) क़ियामत के दिन तो यह ख़ासकर उन्हीं को दी जायँगी। इसी तरह हम आयतें (तफ़सील के साथ) बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो अिल्म (समझ) रखते हैं। (३२) (और) कहो मेरे परवरदिगार ने बेशर्मी के कामों को मना किया है, उनमें जो खुले हों और जो छिपे हों और गुनाह और नाहक़ की ज़्यादती और इस बात को कि तुम किसी को अल्लाह का शरीक क़रार दो जिसकी उसने कोई सनद नहीं उतारी और यह कि अल्लाह के नाम पर (ऐसे) झूठ बोलो जिनका तुमको (कोई) ज्ञान नहीं। (३३)

[पेज २६१ से] अज़ाब तैयार है जिससे उनको कभी छुटकारा न होगा। जबकि ईमानवालों को दुनिया में भी आसायशें हैं और आख़िरत के दिन तो अल्लाह की निअ़ामतें सिर्फ़ उन्हीं के लिए होंगी। उसके विपरीत काफ़िर और उनके दुनियावाले रहनुमा दोनों गुरू-चेला नरक की आग का मज़ा चख रहे होंगे। आ० ५६—१०० ह० नूह अ०, हूद अ०, सालेह अ०, लूत अ० और शोऐब अ० की तवारीख़ देते हुये समझाया गया है कि अन्यायियों ने तो नबियों को हमेशा ही सताया और उनके संदेशों की अवज्ञा की है। कोई मुहम्मद स० के साथ नई बात नहीं है। लेकिन आख़िरकार सत्य की विजय और असत्य की तबाही होती है क्योंकि अल्लाह का प्लान कभी फ़ेल नहीं होता। आ० १०१—१५७ में ह० मूसा अ० का न सिर्फ़ फ़िरऔनों [पेज २६७ पर]

§ याने एक बार सुन चुके हो कि तुम्हारे बाप-दादों के भी बाप (याने ह० आदम अ०) को एक बार शैतान ने बहकाकर जन्नत से निकलवाकर इस नौबत पर पहुंचाया। फिर भी बाप-दादों के चलन की सनद देते हो। क्या तुम उनकी ही चाल पर चलोगे जिनको तुम्हारे खुले दुश्मन शैतान ने बहकाया। † मक्के वालों की धारणा थी कि कुछ प्रकार के खान-पान मना हैं। ये ऐसी चीज़ें थीं जैसे ऊँटनी के पेट से निकला हुआ बच्चा वग़ैरः वग़ैरः।

व लिकुल्लि उम्मतिन् अजलुन् ज् फ़अिजा जा'अ अजलुहुम् ला यस्तअ्ख़िरून साअ़तौंव ला यस्तक़्दिमून (३४) या बनी' आदम अिम्मा यअ्तियन्नकुम् रुसुलुम् - मिन्कुम् यक़ुस्सून अ़लैकुम् आयाती ला फ़मनित्तक़ा व अस्लह़ फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह़्ज़नून (३५) वल्लज़ीन कज़्ज़बू बिआयातिना वस्तक्बरू अ़न्हा' अुला'अिक अस्हा़-बुन्नारि ज् हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (३६) फ़मन् अज़्लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़ब बिआयातिही ृ त् अुला'अिक यनालुहुम् नसीबुहुम् मिनल्-किताबि त् हृत्ता' अिजा जा'अत्हुम् रुसुलुना यतवफ़्फ़ौनहुम् ला क़ालू' अैन मा कुन्तुम् तद्अून मिन् दूनिल्लाहि त् क़ालू ज़ल्लू अ़न्ना व शहिदू अ़ला' अन्फ़ुसिहिम् अन्नहुम् कानू काफ़िरीन (३७) क़ालद्ख़ुलू फ़ी' अुममिन् क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिकुम् मिनल्जिन्नि वल्अिन्सि फ़िन्नारि त् कुल्लमा दख़लत् अुम्मतुल् - लअ़नत् अुख़्तहा त् हृत्ता' अिजद्दारकू फ़ीहा जमीअ़न् ला क़ालत् अुख़्राहुम् लिअूलाहुम् रब्बना हा'अुला'अि अज़ल्लूना फ़आतिहिम् अ़ज़ाबन् ज़िऽफ़म्मिनन्नारि ५ त् काल लिकुल्लिन् ज़िऽफ़ूंव लाकिल्ला तऽलमून (३८) व क़ालत् अूलाहुम् लिअुख़्राहुम् फ़मा कान लकुम् अ़लैना मिन् फ़ज़्लिन् फ़ज़ूक़ुल्अ़ज़ाब बिमा कुन्तुम् तक्सिबून (३९) ★ अिन्नल्लज़ीन कज़्ज़बू बिआयातिना वस्तक्बरू अ़न्हा ला तुफ़त्तहु लहुम् अब्वाबुस्समा'अि व ला यद्ख़ुलूनल्जन्नत हृत्ता यलिजल्जमलु फ़ी सम्मिल्-ख़ियाति त् व कज़ालिक नज्ज़िल्-मुज्रिमीन (४०) लहुम् मिन् जहन्नम मिहादूंव मिन् फ़ौक़िहिम् ग़वाशिन् त् व कज़ालिक नज्ज़िज़्ज़ालिमीन (४१)

★ रु. ४ | ११ आ ८

ولو اننا ۸ ۱۲۳ الاعراف ۷

أُمَّةٍ أَجَلٌ فَإِذَا جَآءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ۝ يَٰبَنِيٓ ءَادَمَ إِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ ءَايَٰتِي فَمَنِ اتَّقَىٰ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِـَٔايَٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَآ أُولَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ۝ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِـَٔايَٰتِهِۦٓ أُولَٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيبُهُم مِّنَ الْكِتَٰبِ حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ قَالُوٓا أَيْنَ مَا كُنتُمْ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا وَشَهِدُوا عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَٰفِرِينَ ۝ قَالَ ادْخُلُوا فِيٓ أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِكُم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ فِي النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَّعَنَتْ أُخْتَهَا حَتَّىٰٓ إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا قَالَتْ أُخْرَىٰهُمْ لِأُولَىٰهُمْ رَبَّنَا هَٰٓؤُلَآءِ أَضَلُّونَا فَـَٔاتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَلَٰكِن لَّا تَعْلَمُونَ ۝ وَقَالَتْ أُولَىٰهُمْ لِأُخْرَىٰهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِن فَضْلٍ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِـَٔايَٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَٰبُ السَّمَآءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ۝ لَهُم مِّن جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِن فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّٰلِمِينَ ۝ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ

منزل ۲

और हर उम्मत (गिरोह) की (रहने व मिटने की) एक मियाद है, फिर जब उनका अन्त आ जायगा तो वह (उससे) न देर कर सकते हैं न जल्दी। (३४) ऐ आदम की सन्तान ! जब कभी तुम्हीं में से पैग़म्बर तुम्हारे पास पहुँचे (और) तुमको मेरी आयतें पढ़कर सुनावे तो जो (उन पर ईमान लाकर) डर मानेंगे और (अपनी हालत का) सुधार करेंगे तो उन पर न तो डर होगा और न वह उदास होंगे। (३५) और जो लोग हमारी आयतों को झुठलायेंगे और उनसे (शेख़ी में) अकड़ बैठेंगे वही दोज़ख़ी हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे। (३६) फिर उससे बढ़कर कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह पर झूठे जंजाल बांधे या उसकी आयतों को झुठलाये। यह लोग हैं जिनको (उनके नसीब के) लिखे मुताबिक़ उनका हिस्सा उनको मिलेगा, यहाँ तक कि जब हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उनकी रूहें निकालने के लिए मौजूद होंगे तो (उनसे) पूछेंगे कि (कहो) अब वह कहाँ हैं (तुम्हारे पूजित) जिनको तुम अल्लाह के अलावा पुकारा करते थे ? तो वह जवाब देंगे कि वह तो हमसे (बेशक) ग़ायब हो गये और (क़ायल होकर) अपने ख़िलाफ़ आप गवाही देंगे कि वह काफ़िर थे। (३७) (तो अल्लाह) फ़रमायेगा कि (गुनहगार) जिन्न और इन्सानों के गिरोहों के साथ जो तुमसे पहले हो चुके हैं, आग (दोज़ख़) में जा दाख़िल हो। जब एक गिरोह नरक में दाख़िल होगा तो अपने (से पहले) गिरोह पर लानत करेगा,§ यहाँ तक कि जब सबके सब नरक में जमा होंगे तो उनमें से बाद वाला गिरोह अपने से पहले गिरोह के हक़ में कहेगा कि ऐ हमारे परवरदिगार ! इन्हीं लोगों ने हमको गुमराह किया था, सो (हमारे मुक़ाबले) तू इनको दोज़ख़ की दूनी सज़ा दे। (अल्लाह) कहेगा कि तुम सबको दूनी सज़ा (मुनासिब है) हालाँकि तुमको पूरी ख़बर मालूम नहीं। (३८) और (यह सुनकर) उनमें के पहले लोग बादवाले लोगों से कहेंगे अब तो तुमको (सज़ा कम मिलने में) हमारे मुक़ाबले में किसी तरह की तरजीह (विशेष छूट) नहीं रही, तो (जिस तरह हम अपने बुरे आमालों की सज़ा भुगतें) तुम भी अपने किये की सज़ा भुगतो। (३९)★

★ रु. ४/११ अ ८

बेशक जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे ऐंठ दिखलाई तो उनके लिये न आसमान के दरवाज़े खोले जाँयगे और न (वे) जन्नत में दाखिल होने पायेंगे जब तक ऊँट सूई के नाके में से न निकले (अर्थात् कभी नहीं)। और अपराधियों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं। (४०) कि उनके लिये आग (दोज़ख़) का बिछौना होगा और उनके ऊपर से (आग का ही) ओढ़ना। और अन्यायियों को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (४१)

[पेज २६५ से] बल्कि उनकी अपनी क़ौम की इन्कारी से सामना पड़ने का ज़िक्र है। यह भी ज़िक्र है कि निरक्षर रसूल स० की पेशीनगोई तो ह० मूसा अ० के समय से ही थी। आ० १५८—१७१ में ह० मूसा अ० की क़ौम का आगे चलकर अपनी किताब तौरात के हुक्मों को न मानकर दुनियाबी ऐश के सामानों के पीछे [पेज २६६ पर]

§ चलन यह देखा गया है कि लोग दीन के हुक्मों को समझने और उन पर चलने के बजाय अपने-अपने बाप दादों, बुज़ुर्गों, पीर-महन्तों के हुक्मों और उनके चले गये रास्तों पर ही चलना 'दीन पर चलना' मान लेते हैं। और ये गुमराह बाप-दादे भी अपनी औलादों के लिए विरासत में हमेशा से गुमराही ही छोड़ते आये हैं। इसलिए जब लोग अपने पहले वाले लोगों को, जिनके रास्ते की ये पैरवी किया करते थे, अपने साथ साथ दोज़ख़ की आग में दाख़िल हुआ देखेंगे तो अपनी करनी और सज़ा का बानी-मुबानी उन अपने से पहले वाले लोगों को मानकर उन पर लानत करेंगे कि तुम्हारे बताये रास्ते पर चलने के ही कारन आज हमको यह अज़ाब झेलना पड़ रहा है। और अल्लाह से बद्दुआ करेंगे कि इनको हमसे दूनी सज़ा दें।

वल्लज़ीन आमनू व अमिलुस्सालिहाति ला नुकल्लिफ़ु नफ़्सन् अिल्ला वुस्अहा ज् अुलाअिक अस्हाबुल्जन्नवि ज् हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (४२) व नज़अ़्ना मा फ़ी सुदूरिहिम् मिन् ग़िल्लिन् तज्री मिन् तह्तिहिमुल्-अन्हारु ज् व क़ालुल्-ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी हदाना लिहाज़ा क़िफ़् व मा कुन्ना लिनह्तदिय लौला अन् हदानल्लाहु ज् लक़द् जाअत् रुसुलु रब्बिना बिल्ह़क़्क़ि त् व नूदू अन् तिल्कुमुल्-जन्नवु अूरिस्तुमूहा बिमा कुन्तुम् तअ़्मलून (४३) ● व नादा अस्ह़ाबुल्-जन्नवि अस्ह़ाबन्नारि अन् क़द् व जद्ना मा व अदना रब्बुना ह़क़्क़न् फ़हल् व जत्तुम् मा वअद रब्बुकुम् ह़क़्क़न् त् क़ालू नअम् ज् फ़अज़्ज़न मुअज्जिनुम्-बैनहुम् अल्लअ़्नवुल्लाहि अलज़्ज़ालिमीन ला (४४) अल्लज़ीन यसुद्दून अन् सबीलिल्लाहि व यब्ग़ूनहा अिवजन् ज् व हुम् बिल्आख़िरवि काफ़िरून म् ● (४५) व बैनहुमा ह़िजाबुन् ज् व अलल्-अअ़्राफ़ि रिजालुँय्यअ़्रिफ़ून कुल्लम्-बिसीमाहुम् ज् व नादौ अस्ह़ाबल्-जन्नवि अन् सलामुन् अलैकुम् क़िफ़् लम् यद्ख़ुलूहा व हुम् यत्मअ़ून (४६) व अिज़ा सुरिफ़त् अब्सारुहुम् तिल्क़ाअ अस्ह़ाबिन्नारि ला क़ालू रब्बना ला तजअ़्ल्ना मअल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन (४७) ★ व नादा अस्ह़ाबुल् - अअ़्राफ़ि रिजालैंयअ़्रि-फ़ूनहुम् बिसीमाहुम् क़ालू मा अग़्ना अन्कुम् जम्अुकुम् व मा कुन्तुम् तस्तक्बिरून (४८) अहाअुलाअिल्लज़ीन अक़्सम्तुम् ला यनालुहुमुल्लाहु बिरह़्मविन् त् अुद्ख़ुलुल्-जन्नव ला ख़ौफ़ुन् अलैकुम् व ला अन्तुम् तह़्ज़नून (४९)

सु. ३/४ ● ब. लाज़िम ★ रु. ५/१२ आ ८

الاعراف ٧ — ١٢٣ — ولواننا ٨

لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَنَزَعْنَا مَا فِىْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ هَدٰىنَا لِهٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِىَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوْا نَعَمْ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ۝ وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ وَعَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّاۢ بِسِيْمٰهُمْ وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ۝ وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ قَالُوْا مَآ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ۝ اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ۝ وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ قَالُوْٓا اِنَّ

منزل

और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये, हम (वैसे) तो किसी शख़्स पर उसकी सामर्थ्य से ज़्यादा बोझ नहीं डाला करते, तो यही लोग हैं जन्नत के हक़दार कि उसमें हमेशा रहेंगे। (४२) और जो कुछ उनके दिलों में मनमैल होगा हम निकाल देंगे, उनके तले नहरें बह रही होंगी और बोल उठेंगे कि अल्लाह का शुक्र है जिसने हमको यहाँ का रास्ता दिखलाया और अगर अल्लाह हमको राह न देता तो हम रास्ता न पाते। बेशक हमारे परवरदिगार के पैग़म्बर सचाई लेकर आये थे और (इन लोगों से) पुकार कर कह दिया जायगा कि यही जन्नत है जिसके वारिस तुम अपने कामों की बदौलत हुये हो। (४३) ● और जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को पुकार कर कहेंगे कि हमारे परवरदिगार ने जो हमसे वादा किया था हमने उसको सच्चा पाया, और भला जो वादा तुम्हारे परवरदिगार ने तुमसे किया था क्या तुमने भी उसे सच्चा पाया? (इस पर दोज़ख़ी) कहेंगे हाँ; इतने में (एक) पुकारनेवाला उनमें पुकार उठेगा कि (ऐसे) ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत। (४४) जो अल्लाह के रास्ते से रोकते और उसमें नुक़्स ढूँढते थे और आख़िरत (के दिन) से इन्कार रखते थे। ● (४५) और (जन्नत और दोज़ख़) दोनों के बीच में एक आड़ होगी (यानी आराफ़*) और उसके ऊपर कुछ लोग होंगे जो उन (जन्नतियों व दोज़ख़ियों) को उनकी सूरतों से पहचान लेंगे। और (वे) स्वर्गवासियों को पुकार कर कहेंगे कि अल्लाह की तुम पर सलामती हो। और यह लोग (अभी) जन्नत में दाख़िल न हुये होंगे मगर वह (उसकी) लालसा लगाये होंगे। (४६) और जब उनकी नज़र नरकवासियों की तरफ़ जा पड़ेगी तो (उनकी दुर्दशा देखकर अल्लाह से) दुआ माँगने लगेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमको इन गुनहगार लोगों के साथ न कर। (४७) ★

● सु. ३/४

● व. लाज़िम

★ रु. ५/१२ आ ८

और आराफ़ वाले (दोज़ख़ी) लोगों को जिन्हें उनकी सूरतों से पहचानते होंगे पुकार कर कहेंगे कि (आज) तुम्हारी जत्थेबन्दी और (तुम्हारा) घमण्ड करना तुम्हारे कुछ काम न आया। (४८) (और कहेंगे कि देखो! यह) वही लोग हैं जिनकी बाबत तुम क़समें खाकर कहा करते थे कि अल्लाह इन पर अपना रहम नहीं करेगा। § तो देखो (कि) इनके लिए यह हुक्म है कि जन्नत में जा दाख़िल हो (जहाँ) तुम पर न डर होगा और न तुम उदास होगे। (४९)

[पेज २६७ से] पड़ गये और तौरात में दिये हुक्मों में अपनी ग़रज़ के लिए फेरफार करने लगे। अंजाम हुआ कि ज़लील हुये और दुनिया में तितर बितर होकर मुसीबतों में जा पड़े। आ १७२—२०६ में कहा है कि ह० आदम अ० की बेशुमार संतानों में ज़्यादः ऐसे हुये जिन्होंने सच्चाई से मुंह मोड़ा और वे घाटा उठाने वालों में हुए जिसको वह समझ नहीं पाते। और बाज़ परहेज़गार (संयमी) रहे और अल्लाह की बन्दगी करते और उसी की तस्बीह फेरते रहे। उन्हीं को दुनिया व आख़िरत में सफलता हासिल है।

* 'अल् आराफ़' की पूरी कैफ़ियत पेज २६१ पर * फ़ुटनोट में दी गई है। वहीं का ज़िक्र है। मुलाहज़ः करें। § दुनिया में दौलत इज़्ज़त और जत्थे वाले लोग घमण्ड में ग़रीब दीनदारों पर हिक़ारत की नज़र रखते और उनको इस क़ाबिल नहीं समझते थे कि दुनिया क्या आख़िरत तक में अल्लाह उन पर रहमत की नज़र करेगा। आज वह अल्लाह के सामने अपनी और उनकी हालत के फ़र्क़ को अपनी आँखों देखें और पछतायें जब कि कोई चारा नहीं है। वे घमण्डी तो दोज़ख़ में पड़े हैं और वहाँ से देख रहे हैं कि जिनको हम ज़लील करते व समझते थे वे दीनदार जन्नत में हमेशा के लिए दाख़िल हो रहे हैं।

व नादा अस्ह़ाबुन्नारि अस्ह़ाबल्-जन्नति अन् अफ़ीज़ू अ़लैना मिनल्मा'अि औ मिम्मा रज़क़कुमुल्लाहु ॒ क़ालू अिन्नल्लाह ह़र्रमहुमा अ़लल्काफ़िरीन ला (५०) अ़ल्लज़ीनत्तख़ज़ू दीनहुम् लह्वौंव लअिबौंव ग़र्रत्हुमुल् - ह़यातुद्दुन्या ज् फ़ल्यौम नन्साहुम् कमा नसू लिक़ा'अ यौमिहिम् हाज़ा ला व मा कानू बिआयातिना यज्ह़दून (५१) व लक़द् जिअ्नाहुम् बिकिताबिन् फ़स्सल्नाहु अ़ला अिल्मिन् हुदौंव रह़्मतल्-लिक़ौमींयुअ्मिनून (५२) हल् यन्ज़ुरून अिल्ला तअ्वीलहू ॒ यौम यअ्ती तअ्वीलुहू यक़ूलुल्लज़ीन नसूहु मिन् क़ब्लु क़द् जा'अत् रुसुलु रब्बिना बिल्ह़क़्क़ि ज् फ़हल्लना मिन् शुफ़आ'अ फ़यश्फ़अू लना औ नुरद्दु फ़नअ्मल ग़ैरल्लज़ी कुन्ना नअ्मलु ॒ क़द् ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् व ज़ल्ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून (५३) ★ अिन्न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी ख़लक़स्समावाति वल्अर्ज़ फ़ी सित्तति अैयामिन् सुम्मस्तवा अ़लल्अ़र्शि क़िफ़् युग़्शिल्लैलन्नहार यत्लुबुहू ह़सीसन् ला व्वशशम्स वल्क़मर वन्नुजूम मुसख़्ख़रातिम् - बिअम्रिही ॒ अला लहुल्ख़ल्क़ु वल्अम्रु ॒ तबारकल्लाहु रब्बुल्-आलमीन (५४) अुद्अू रब्बकुम् तज़र्रुऔंव ख़ुफ़्यतन् ॒ अिन्नहू ला युह़िब्बुल्-मुअ्तदीन ज् (५५) व ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि बअ़्द अिस्लाह़िहा वद्अूहु ख़ौफ़ौंव तमअ़न् ॒ अिन्न रह़्मतल्लाहि क़रीबुम् - मिनल्मुह़्सिनीन (५६) व हुवल्लज़ी युर्सिलुर्रियाह़ बुश्रम्-बैन यदै रह़्मतिही ॒ ह़त्ता अिज़ा अक़ल्लत् सह़ाबन् सिक़ालन् सुक़्नाहु लिबलदिम् - मैयितिन् फ़अन्ज़ल्ना बिहिल्मा'अ फ़अख़्रज्ना बिही मिन् कुल्लिस्समराति ॒ कज़ालिक नुख़्रिजुल्मौता लअ़ल्लकुम् तज़क्करून (५७)

★ रु. ६/१३ आ ६

ولو اننا ٨ — ١٢٥ — الاعراف ٧

الله حرمهما على الكفرين ﴿٥٠﴾ الذين اتخذوا دينهم لهوا ولعبا
وغرتهم الحيوة الدنيا فاليوم ننسهم كما نسوا لقاء يومهم
هذا وما كانوا باٰيتنا يجحدون ﴿٥١﴾ ولقد جئنهم بكتب فصلنه
على علم هدى ورحمة لقوم يؤمنون ﴿٥٢﴾ هل ينظرون الا
تاويله يوم ياتي تاويله يقول الذين نسوه من قبل قد
جاءت رسل ربنا بالحق فهل لنا من شفعاء فيشفعوا لنا
او نرد فنعمل غير الذي كنا نعمل قد خسروا انفسهم و
ضل عنهم ما كانوا يفترون ﴿٥٣﴾ ان ربكم الله الذي خلق السموت
والارض في ستة ايام ثم استوى على العرش يغشي اليل
النهار يطلبه حثيثا والشمس والقمر والنجوم مسخرت بامره
الا له الخلق والامر تبرك الله رب العلمين ﴿٥٤﴾ ادعوا ربكم
تضرعا وخفية انه لا يحب المعتدين ﴿٥٥﴾ ولا تفسدوا في
الارض بعد اصلاحها وادعوه خوفا وطمعا ان رحمت الله
قريب من المحسنين ﴿٥٦﴾ وهو الذي يرسل الريح بشرا بين
يدي رحمته حتى اذا اقلت سحابا ثقالا سقنه لبلد ميت
فانزلنا به الماء فاخرجنا به من كل الثمرت كذلك نخرج الموتى
لعلكم تذكرون ﴿٥٧﴾ والبلد الطيب يخرج نباته باذن ربه

منزل ٢

और दोज़ख़ी पुकार कर जन्नतवालों से कहेंगे कि हम पर थोड़ा-सा पानी डाल दो या तुमको जो अल्लाह ने रोज़ी दी है (उसमें से कुछ हमको दे डालो)। वह कहेंगे कि अल्लाह ने यह दोनों चीज़ें काफ़िरों पर हराम कर दी हैं (५०) कि जिन्होंने अपने दीन को तमाशा और खेल बना रखा था और दुनिया की ज़िन्दगी के (लुभावने) धोखे में भूले रहे। तो आज हम इनको (वैसे ही) भुलावेंगे जैसे यह लोग अपना इस (क़ियामत के) दिन का सामना पड़ना भूले और जैसे ये हमारी आयतों का इन्कार करते रहे। (५१) और हमने इनको (क़ुर्आन) पहुँचा दिया जिसको अिल्म के साथ खोल-खोलकर (स्पष्ट) बयान कर दिया है और ईमानवाले लोगों के हक़ में हिदायत (पथ-प्रदर्शन) और रहम है। (५२) क्या यह लोग (मक्केवाले) उसके वाक़ै होने की§ राह देखते हैं। जब वह दिन आयेगा तो जो लोग उसको पहले से भूले हुए थे वह क़ायल हो जाँयगे कि बेशक हमारे परवरदिगार के पैग़म्बर सच बात लेकर आये थे। तो क्या हमारे कोई सिफ़ारशी हैं कि (आज अ़ज़ाब के सामने) हमारी सिफ़ारिश करें या हमको (दुनिया में) फिर लौटा दिया जाय, तो जैसे (बुरे) कर्म हम किया करते थे उनके ख़िलाफ़ अब (भले) काम करें। बेशक (इन लोगो ने आप) अपना नुक़सान किया और जो झूठी बातें गढ़ा करते थे वह भूल गये। (५३)★

★ रु. ६ — १३ आ ६

तुम्हारा परवरदिगार अल्लाह है जिसने छः दिन में ज़मीन और आसमान को पैदा किया फिर अर्श (तख़्त) पर जा बिराजा। वही रात से दिन को ढाँक लेता है, वह जल्दी से उसे आ लेती है। और उसी ने सूर्य और चन्द्रमा और तारों को पैदा किया कि वह सब अल्लाह की हुक्मबरदारी में लगे हैं। जान लो कि हर चीज़ अल्लाह ही की सिरजी हुई है और हुक्म भी (अल्लाह ही का है) जो (सारे) संसार का पालनेवाला और बड़ी बरकत वाला है। (५४) (इसलिए) अपने परवरदिगार से गिड़गिड़ाकर और चुपके दुआ करते रहो। वह हद्द से बढ़नेवालों को नहीं पसन्द करता। (५५) और देश के सुधरे पीछे उसमें फ़साद मत फैलाओ और (उसके अ़ज़ाब के) डर से और (उसके फ़ज़ल की) उम्मीद से अल्लाह को पुकारते रहो। बेशक अल्लाह की रहमत भले काम करने वालों के क़रीब है। (५६) और वही है जो अपनी (कृपा से) आगे (आने वाले मेंह की) ख़ुशख़बरी देने के लिए हवाएँ भेजता है, यहाँ तक कि जब वह (पानी से लदे) भारी बादलों को उठाती हैं, तब हम किसी मुर्दा† बस्ती की तरफ़ उस बादल को हाँक देते हैं, फिर उससे पानी बरसाते हैं, फिर उस पानी से तरह तरह के फल निकलते हैं। इसी तरह हम क़ियामत के दिन मुर्दों को भी निकाल खड़ा करेंगे। (यह सब हमारी क़ुदरत देखकर) शायद तुम ध्यान दो। (५७)

§ ईश्वर के कोप या अ़ज़ाब की राह देखते हैं कि अगर वह सचमुच हो तो हम दीन क़बूल करें। लेकिन ज़ालिमों को यह पता नहीं कि जब वह अ़ज़ाब का दिन आ मौजूद होगा तो उससे फिर छुटकारा कहाँ होगा कि तुम सुधार कर लो। जो कुछ भला-बुरा करना चाहो उसका मौक़ा तो दुनिया में रहते ही है।

† ऐसी बस्ती जिसकी खेती सूख रही हो।

★ वल्बलदुत्तैयिबु यख़्रुजु नबा तुहू बिअिज़्नि रब्बिही ज् वल्लज़ी ख़बुस ला यख़्रुजु अिल्ला नकिदन् त् कज़ालिक नुसर्रिफ़ुल्-आयाति लिक़ौमींयश्कुरून (५८) ★ लक़द् अर्सल्ना नूहन् अिला क़ौमिही फ़क़ाल याक़ौमिऽबुदुल्लाह मा लकुम् मिन् अिलाहिन् ग़ैरुहू त् अिन्नी अख़ाफ़ु अलैकुम् अज़ाब यौमिन् अज़ीमिन् (५९) क़ालल्मलअु मिन् क़ौमिही अिन्ना लनराक फ़ी ज़लालिम्-मुबीनिन् (६०) क़ाल याक़ौमि लैस बी ज़लालतुँव्व लाकिन्नी रसूलुम् - मिर्रब्बिल् - आलमीन (६१) अुबल्लिग़ुकुम् रिसालाति रब्बी व अन्सहु लकुम् व अऽलमु मिनल्लाहि मा ला तऽलमून (६२) अव अजिब्तुम् अन् जाअकुम् जिक्रुम्-मिर्-रब्बिकुम् अला रजुलिम्-मिन्कुम् लियुन्ज़िरकुम् वलितत्तक़ू व लअल्लकुम् तुर्हमून (६३) फ़कज़्ज़बूहु फ़अन्जैनाहु वल्लज़ीन मअहू फ़िल्फ़ुल्कि व अग़्रक़्नल्लज़ीन कज़्ज़बू बिआयातिना त् अिन्नहुम् कानू क़ौमन् अमीन (६४) ★ व अिला आदिन् अख़ाहुम् हूदन् त् क़ाल या क़ौमिऽबुदुल्लाह मा लकुम् मिन् अिलाहिन् ग़ैरुहू त् अफ़ला तत्तक़ून (६५) क़ालल् - मलअुल्लज़ीन कफ़रू मिन् क़ौमिही अिन्ना लनराक फ़ी सफ़ाहतिँव्व अिन्ना लनज़ुन्नुक मिनल् - काज़िबीन (६६) क़ाल या क़ौमि लैस बी सफ़ाहतुँव्व लाकिन्नी रसूलुम् - मिर्रब्बिल् - आलमीन (६७) अुबल्लिग़ुकुम् रिसालाति रब्बी व अना लकुम् नासिहुन् अमीनुन् (६८) अ व अजिब्तुम् अन् जाअकुम् जिक्रुम् - मिर्रब्बिकुम् अला रजुलिम् - मिन्कुम् लियुन्ज़िरकुम् त् वज़्कुरू अिज़् जअलकुम् ख़ुलफ़ाअ मिम्बऽदि क़ौमि नूहिँव्व ज़ादकुम् फ़िल्ख़ल्क़ि बस्तवन् ज् फ़ज़्कुरू आलाअल्लाहि लअल्लकुम् तुफ़्लिहून (६९) क़ालू अजिअ्तना लिनऽबुदल्लाह वहदहू व नज़र मा कान यऽबुदु आबाअुना ज् फ़अ्तिना बिमा तअिदुना अिन् कुन्त मिनस्सादिक़ीन (७०)

रु. ७ | १४ आ ५

रु. ८ | १५ आ ६

ولو اننا ۸ — ۱۳۶ — الاعراف ۷

والذي خبث لا يخرج الا نكدا كذلك نصرف الايت لقوم
يشكرون ۞ لقد ارسلنا نوحا الى قومه فقال يقوم اعبدوا الله
ما لكم من اله غيره اني اخاف عليكم عذاب يوم عظيم ۞
قال الملا من قومه انا لنرىك في ضلل مبين ۞ قال يقوم
ليس بي ضللة ولكني رسول من رب العلمين ۞ ابلغكم
رسلت ربي وانصح لكم واعلم من الله ما لا تعلمون ۞ اوعجبتم
ان جاءكم ذكر من ربكم على رجل منكم لينذركم ولتتقوا و
لعلكم ترحمون ۞ فكذبوه فانجينه والذين معه في الفلك
واغرقنا الذين كذبوا بايتنا انهم كانوا قوما عمين ۞ و
الى عاد اخاهم هودا قال يقوم اعبدوا الله ما لكم من اله
غيره افلا تتقون ۞ قال الملا الذين كفروا من قومه انا لنرىك
في سفاهة وانا لنظنك من الكذبين ۞ قال يقوم ليس بي
سفاهة ولكني رسول من رب العلمين ۞ ابلغكم رسلت ربي
وانا لكم ناصح امين ۞ اوعجبتم ان جاءكم ذكر من ربكم
على رجل منكم لينذركم واذكروا اذ جعلكم خلفاء من بعد
قوم نوح وزادكم في الخلق بصطة فاذكروا الاء الله
لعلكم تفلحون ۞ قالوا اجئتنا لنعبد الله وحده ونذر

منزل

और जो ज़मीन पाक (अच्छी) है उसमें मालिक की आज्ञा से उसकी पैदावार भी (अच्छी) निकलती है और जो (ज़मीन) ख़राब है उसकी पैदावार तो ख़राब ही होती है। इसी तरह हम आयतें तरह-तरह से उन लोगों के लिए बयान करते हैं जो शुक्र मानते हैं।† (५८)

★ रु० ७/१४ आ ५

हमने पैग़म्बर नूह को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो (उन्होंने) क़ौम को समझाया कि भाइयो! अल्लाह की बन्दगी करो, उसके सिवाय कोई और तुम्हारी पूजा के क़ाबिल नहीं, (अगर तुम इन्कारी में ही पड़े रहे तो) मुझको एक भारी दिन के प्रकोप का तुम्हारे लिए डर है। (५९) उसकी जाति के सरदारों ने कहा कि हमारे नज़दीक तो तुम ज़ाहिरा भटके हुए हो। (६०) (नूह अ० ने) कहा भाइयो! मैं बहँका नहीं हूँ बल्कि मैं तो दुनिया जहान के पालनेवाले का भेजा हुआ हूँ। (६१) तुमको अपने परवरदिगार के पैग़ाम पहुँचाता हूँ और (तुम्हें) नसीहत करता हूँ और (मैं) अल्लाह की तरफ़ से (ऐसी बातें) जानता हूँ जिनको तुम नहीं जानते। (६२) क्या तुम इस बात से चकित हो कि तुममें ही से एक शख़्स की मार्फ़त तुम्हारे पालनकर्त्ता की तरफ़ से चेतावनी (तुमको) पहुँची ताकि वह तुमको (अल्लाह की सज़ा से) सचेत करे और तुम (अल्लाह की अवज्ञा से) बचो और शायद तुम पर रहम किया जाय। (६३) (इस पर भी) उन्होंने उसे झुठलाया तो हमने नूह को और उन लोगों को जो उसके साथ किश्ती§ में सवार थे (तूफ़ान से) बचा लिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था (उनको डुबोकर) नष्ट कर दिया। वह (अपना भला-बुरा न देख पाने वाले) अन्धे थे। (६४)

★ रु० ८/१५ आ ६

और (इसी तरह क़ौम) आद की तरफ़ उनके भाई (पैग़म्बर) हूद को भेजा। (उन्होंने) समझाया कि भाइयो! अल्लाह की अिबादत करो। उसके अलावा तुम्हारा कोई पूजित नहीं। क्या तुम (अल्लाह के अज़ाब से) नहीं डरते? (६५) उसकी जाति के सरदार जो इन्कारी थे कहने लगे कि हमको तुम एहमक़ मालूम होते हो और हम तुमको झूठा समझते हैं। (६६) (हूद अ० ने) कहा भाइयो! मैं बेवकूफ़ नहीं बल्कि दुनिया के परवरदिगार का भेजा हुआ हूँ। (६७) तुमको अपने परवरदिगार का संदेश पहुंचाता हूँ और मैं तुम्हारा सच्चा (मातबर) ख़ैरख़्वाह हूँ। (६८) क्या तुम इस बात से ताज्जुब करते हो कि तुम्हीं में से एक शख़्स की मार्फ़त तुम्हारे परवरदिगार का हुक्म तुमको पहुँचा ताकि तुमको (अज़ाब से) डरावे और याद करो, जब उसने तुमको नूह की क़ौम के बाद नायब बनाया और शरीर का (डीलडौल) फैलाव तुमको ज्यादा दिया। तो अल्लाह के इहसानों को याद करो, शायद तुम्हारा भला हो। (६९) उन लोगों ने पूछा क्या तुम हमारे पास इसलिए आये हो कि हम सिर्फ़ एक अल्लाह की ही पूजा करें और जिनको हमारे बाप दादा पूजते रहे उनको छोड़ बैठें? तो अगर सच्चे हो तो जिस (अज़ाब) का हमको डर दिखाते हो उसे ले आओ (७०)

---

† जिस तरह अच्छी ज़मीन पर मेह पड़ने से पैदावार उम्दः होती है और ऊसर ज़मीन पर मेह का असर नहीं पड़ता—कहावत है 'फूलैं फलैं न बेत यदपि सुधा बरसहिं जलद। मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं विरञ्चि सम ॥' ठीक इसी तरह जिन इनसानों के दिल अल्लाह की भक्ति से ज़रख़ेज़ हैं उन पर नबियों और अल्लाह की हिदायत की छटा खिलती है और जिनके दिल कुफ़्र से जड़ और मुर्दः हो रहे हैं, उन पर कोई सीख काम नहीं देती और वे ज़िन्दः होते हुये भी मुर्दः की तरह रह जाते हैं। § ह० नूह अ० के समय में एक भयंकर तूफ़ान आया था। उनको इसका समाचार पहले ही मिल गया था। इसलिए उन्होंने एक किश्ती बना रखी थी। ह० नूह अ० और उनके साथ जो लोग उसमें बैठे वे बचे, बाक़ी लोग डूब गये।

क़ाल क़द् व क़अ अलैकुम् मिर्रब्बिकुम् रिज्सुँव ग़ज़बुन् त् अतुजादिलूननी फ़ी' अस्मा'अिन् सम्मैतुमू हा' अन्तुम् व आबा'अुकुम् मा नज़्ज़लल्लाहु बिहा मिन् सुल्तानिन् त् फ़न्तज़िरू' अिन्नी मअकुम् मिनल्मुन्तज़िरीन (७१) फ़अन्-जैनाहु वल्लज़ीन मअहू बिरह्मतिम्-मिन्ना व क़तऽ्ना दाबिरल्लज़ीन कज़्ज़बू बिआयातिना व मा कानू मुअ्मिनीन (७२) ★ व अिला समूद अख़ाहुम् सालिहन् म् ● क़ाल या क़ौमिअ्बुदुल्लाह मा लकुम् मिन् अिलाहिन् ग़ैरुहू त् क़द् जा'अत्कुम् बैयिनतुम्-मिर्रब्बिकुम् त् हाज़िहि नाक़तुल्लाहि लकुम् आयतन् फ़ज़रूहा तअ्कुल् फ़ी' अर्ज़िल्लाहि व ला तमस्सूहा बिसू'अिन् फ़यअ्ख़ुज़कुम् अज़ाबुन् अलीमुन् (७३) वज़्कुरू' अिज् जअलकुम् ख़ुलफ़ा'अ मिम्बऽ्दि आदिंव्व बौवअकुम् फ़िल्अर्ज़ि तत्तख़िज़ून मिन् सुहूलिहा क़ुसूरौंव तन्हितूनल् - जिबाल बुयूतन् ज फ़ज़्कुरू' आला'अल्लाहि व ला तऽ्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (७४) क़ालल्मलअुल्-लज़ीनस्तक्बरू मिन् क़ौमिही लिल्लज़ीनस्तुज़्अिफ़ू लिमन् आमन मिन्हुम् अतऽ्लमून अन्न सालिहम् - मुर्सलुम् - मिर्रब्बिही त् क़ालू' अिन्ना बिमा' अुर्सिल बिही मुअ्मिनून (७५) क़ालल्लज़ीनस् - तक्बरू' अिन्ना बिल्लज़ी' आमन्तुम् बिही काफ़िरून (७६) फ़अक़रुन्नाक़त व अतौ अन् अम्रि रब्बिहिम् व क़ालू यासालिहुअ्तिना बिमा तअिदुना' अिन् कुन्त मिनल् - मुर्सलीन (७७) फ़अख़ज़त् - हुमुर्रज्फ़तु फ़अस्बहू फ़ी दारिहिम् जासिमीन (७८)

★ रु. ९/१६ आ. ८ ● व. लाज़िम

مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ۭ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۭ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۭ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ عَادٍ وَّبَوَّاَكُمْ فِي الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَاۗءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِيْٓ اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ

(हूद अ० ने) जवाब दिया कि (समझ लो) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर सज़ा और ग़ज़ब आ ही पड़ा। क्या तुम मुझसे कुछ (ऐसे) नामों के बारे में झगड़ते हो, जिनको तुमने और तुम्हारे बड़ों ने गढ़ रखा है (और) अल्लाह ने तो उनकी कोई सनद उतारी नहीं। तो तुम (सज़ा का) इन्तज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तज़ार कर रहा हूँ। (७१) (अल्लाह फ़र्माता है कि) आख़िरकार हमने अपने रहम से हूद को और उन लोगों को जो उनके साथ थे बचा लिया और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते थे और ईमान न लाते थे उनकी जड़ें काट दीं। (७२)☆

और (इसी तरह क़ौम) समूद की तरफ़ उनके भाई सालेह को भेजा।● (सालेह ने) कहा कि भाइयो! (एक) अल्लाह ही की बन्दगी करो। उसके सिवाय तुम्हारा कोई मालिक नहीं। (और देखो यह) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास दलील (साफ़) आ चुकी कि—यह अल्लाह की (भेजी हुई) ऊँटनी§ तुम्हारे लिए एक निशानी है। तो इसे छुटी फिरने दो कि अल्लाह की ज़मीन में (से जहाँ चाहे) चरे और किसी तरह का नुक़सान पहुँचाने की नियत से इसको छूना भी नहीं, वरना तुमको दुखदाई सज़ा धर पकड़ेगी। (७३) और याद करो जब (अल्लाह ने) तुमको (क़ौम) आद के बाद आबाद किया और तुमको ज़मीन पर (इस तरह) ठिकाना दिया कि तुम नरम ज़मीन पर महल खड़े करते और पहाड़ों को तराशकर घर बनाते हो। सो अल्लाह के इहसानों को याद करो और ज़मीन पर फ़साद मत फैलाते फिरो। (७४) (इस पर) सालेह की क़ौम में जो बड़े (अभिमानी) सरदार थे, ग़रीब लोगों से जो उनमें से ईमान ले आये थे, पूछने लगे क्या तुमको ख़ूब मालूम है कि सालेह अल्लाह का पैग़म्बर है। उन्होंने जवाब दिया कि हाँ, जो हुक्म उनको देकर हमारी तरफ़ भेजा गया है हमारा उस पर यक़ीन है। (७५) वह (घमण्डी) बड़े लोग कहने लगे कि जिस चीज़ पर तुम ईमान ले आये हो हम तो उसे नहीं मानते। (७६) फिर उन्होंने (उस चमत्कारी) ऊँटनी को (सालेह अ० के मना करने पर भी) काट डाला और अपने परवरदिगार के हुक्म के ख़िलाफ़ सरकशी की और कहा कि ऐ सालेह! जिस (अज़ाब) का तुम हमको डर दिखलाते हो अगर तुम पैग़म्बर हो तो हम पर ला उतारो। (७७) पस उनको भूचाल ने धर दबोचा और वे सुबह को अपने घरों में औंधे पड़े (ज्यों के त्यों) रह गये। (७८)

★ रु. ९/१६ आ ८ ● प. लाज़िम

§ जब क़ौम आद अपने कुफ्र के कारन जड़ से तबाह हो गई तो क़ौम समूद को अल्लाह ने उनका जानशीन किया। उनकी तहज़ीब व ऐश इशरत के सामान ख़ूब जलवे पर पहुँचे। लेकिन जैसा दुनिया में हमेशा होता आया है आख़िर वह भी मदमस्त हो गये। अल्लाह को भूलकर सरकशी व शिर्क की इन्तिहा पर पहुंचे। तब ह० सालेह अ० को अल्लाह ने पैग़ाम देकर भेजा। चन्द ग़रीबों को छोड़ बड़े लोग ईमान न लाये। हज़रत सालेह अ० को उनकी जातिवालों ने झूठ समझा और ईद के मौक़े पर एक दिन कहा कि तुम सच्चे हो तो एक हामला ऊँटनी अभी इस पत्थर से निकालो। ह० सालेह अ० ने दुआ की तो जैसी ऊँटनी उन लोगों ने चाही थी वैसी ही पत्थर से निकल आई। क़ौम समूद में जन्दा इब्न उमर ने यह सवाल किया था और यह चमत्कार देख कर ईमान ले आया लेकिन दूसरे समूद लोग गुमराही में ही पड़े रहे और आख़िर अल्लाह के अज़ाब में उनका भी नाम निशान मिट गया। आगे की आयतों में उसी का हाल है।

फ़तवल्ला अन्हुम् व क़ाल याक़ौमि लक़द् अब्‌लग़्तुकुम् रिसालत रब्बी व नसह्‌तु लकुम् व लाकिल्ला तुहिब्बूनन्नासिहीन (७९) व लूतन् अिज़् क़ाल लिक़ौमिही अतअ्तूनल् - फ़ाहिशत मा सबक़कुम् बिहा मिन् अह्‌दिम् - मिनल् - आलमीन (८०) अिन्नकुम् लतअ्तूनर्रिजाल शह्‌वतम् - मिन् दूनिन्निसाअि त् बल् अन्तुम् क़ौमुम्-मुस्‌रिफ़ून (८१) व मा कान जवाब क़ौमिही अिल्ला अन् क़ालू अख़्‌रिजूहुम् मिन् क़र्यतिकुम् ज् अिन्नहुम् अुनासुंय्यततहहरून (८२) फ़अन्‌जैनाहु व अह्‌लहू अिल्लम्-रअतहू ज़् सला कानत् मिनल्‌ग़ाबिरीन (८३) व अम्तर्‌ना अलैहिम् मतरन् त् फ़न्ज़ुर् कैफ़ कान आक़िबतुल्-मुज्‌रिमीन (८४) ★ व अिला मद्‌यन अख़ाहुम् शुअैबन् त् क़ाल या क़ौमिऽबुदुल्लाह मा लकुम् मिन् अिलाहिन् ग़ैरुहू त् क़द् जाअत्कुम् बैयिनतुम्-मिर्रब्बिकुम् फ़औफ़ुल्कैल वल्‌मीज़ान व ला तब्‌ख़सुन्नास अश्याअ हुम् व ला तुफ़्सिदू फ़िल्‌अर्ज़ि बऽद अिस्लाहिहा त् ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् अिन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन ज् (८५) व ला तक़्अुदू बिकुल्लि सिरातिन् तूअिदून व तसुद्दून अन् सबीलिल्लाहि मन् आमन बिही व तब्‌ग़ूनहा अिवजन् ज् वज़्कुरू अिज़् कुन्तुम् क़लीलन् फ़कस्सरकुम् स्र् वन्ज़ुरू कैफ़ कान आक़िबतुल् - मुफ़्सिदीन (८६) व अिन् कान ताअिफ़तुम्-मिन्कुम् आमनू बिल्लज़ी अुर्सिल्तु बिही व ताअिफ़तुल्लम् युअ्मिनू फ़स्बिरू हत्ता यह्‌कुमल्लाहु बैनना ज् व हुव ख़ैरुल्‌हाकिमीन (८७)

★ रु. १० / १७ आ. १२

ولو اننا ١٣٨ الاعراف

فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جٰثِمِينَ ۝ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ
أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَا تُحِبُّونَ النّٰصِحِينَ ۝
وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ
أَحَدٍ مِنَ الْعٰلَمِينَ ۝ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِنْ دُونِ النِّسَاءِ
بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُسْرِفُونَ ۝ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا
أَخْرِجُوهُمْ مِنْ قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ ۝ فَأَنْجَيْنٰهُ
وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِينَ ۝ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ
مَطَرًا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۝ وَإِلٰى
مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِنْ
إِلٰهٍ غَيْرُهُ قَدْ جَاءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ
وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي
الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝
وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ
اللّٰهِ مَنْ آمَنَ بِهِ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا وَاذْكُرُوا إِذْ كُنْتُمْ قَلِيلًا
فَكَثَّرَكُمْ وَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝ وَإِنْ
كَانَ طَائِفَةٌ مِنْكُمْ آمَنُوا بِالَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ وَطَائِفَةٌ لَمْ
يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِينَ ۝

منزل

॥ इति आठवाँ पारः ॥

फिर सालेह उनके यहाँ से यों कहता हुआ चला गया कि भाइयो ! मैंने तो अपने परवरदिगार का पैग़ाम तुमको पहुँचा दिया और तुम्हारा भला चाहा मगर तुम नहीं चाहते भला चाहनेवालों को। (७९) और (हमने) लूत को (रसूल बनाकर) भेजा और (उसने) अपनी क़ौम से कहा क्यों (ऐसी बेशर्मी) करते हो जैसी दुनिया जहान में तुमसे पहले किसी ने नहीं की। (८०) तुम तो स्त्रियों को छोड़ कर शहवत के लिए मर्दों पर दौड़ते हो ? बल्कि तुम लोग हद (मर्यादा) पर नहीं रहते। (८१) और लूत की जाति ने और कुछ जवाब न दिया सिवाय यह कहने के कि इन लोगों (यानी लूत अ० व उनके घरवालों) को अपनी बस्ती से निकाल बाहर करो। यह ऐसे लोग हैं जो (बड़े) पाक साफ़ बनते हैं। (८२) पस हमने लूत को और उनके लोगों को बचा दिया। मगर उसकी बीबी (न बची) कि वह पीछे रहने वालों में थी। (८३) और हमने इन पर (पत्थरों का) मेंह बरसाया। पस देखो कि गुनहगारों का अन्त में कैसा हाल हुआ। (८४) ★

★ रु. १०/१७ आ १२

और मदयनवालों की तरफ़ (हमने) उनके भाई शोएब को (रसूल बनाकर) भेजा उसने कहा ऐ भाइयो ! अल्लाह की बन्दगी करो, उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। (अब तो) तुम्हारे पालनकर्ता की तरफ़ से तुम्हारे लिए दलील ज़ाहिर हो चुकी है तो नाप और तौल पूरी किया करो और लोगों को उनकी चीज़ें घटा (कर कम) न दो और सँवारने के बाद ज़मीन में फ़साद न करो यही तुम्हारे लिए भला है अगर तुम ईमानवाले हो। (८५) और हर राह पर मत बैठा करो कि जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाता है उसे धमकाते हो और राहे अल्लाह से रोकते और उसमें कजी (नुक़्स) ढूंढते हो और वह (समय) याद करो कि जब तुम थोड़े थे फिर (अल्लाह ने) तुम्हें बहुत किया और देखो कि (आख़िर) फ़साद करनेवालों का (दुनिया में) कैसा परिणाम हुआ। (८६) और अगर तुममें एक फ़िर्क़े ने उस पैग़ाम पर यक़ीन किया है जो मेरे हाथों (अल्लाह ने तुम तक) पहुँचाया है और एक फ़िर्क़े ने नहीं (यक़ीन किया है) तो तुम सब्र करो जब तक अल्लाह हमारे बीच फ़ैसला कर दे। और वह सबसे बढ़कर फ़ैसला करनेवाला है (८७)

॥ इति आठवाँ पारः ॥

(☆)(☆) नवाँ पारः क़ालल्मलअु— (☆)(☆)

(☆) सूरतुल्अ्ऽराफ़ि आयात ८८ से २०६ (☆)

क़ालल्-मलअुल्लजीनस्-तक्बरू मिन् क़ौमिही लनुख़्रिजन्नक याशुअ़ैबु वल्लजीन आमनू मअ़क मिन् क़र्यतिना औ लतअूदुन्न फ़ी मिल्लतिना त् क़ाल अवलौ कुन्ना कारिहीन क़िफ़् (८८) क़दिफ़्तरैना अ़लल्लाहि कजिबन् अिन् अ़ुद्ना फ़ी मिल्लतिकुम् बअ़्द अिज् नज्जानल्लाहु मिन्हा त् व मा यकूनु लना अन् नअ़ूद फ़ीहा अिल्ला अैंयशा अल्लाहु रब्बुना त् वसिअ़ रब्बुना कुल्ल शैअिन् अ़िल्मन् त् अ़लल्लाहि तवक्कल्ना त् रब्बनफ़्तह् बैनना व बैन क़ौमिना बिल्हक़्क़ि व अन्त ख़ैरुल्फ़ातिहीन (८९) व क़ालल्-मलअुल्लजीन कफ़रू मिन् क़ौमिही लअिनित्तबअ़्तुम् शुअ़ैबन् अिन्नकुम् अिजल्लख़ासिरून (९०) फ़अख़जत्-हुमुर्-रज्फ़तु फ़अस्बहू फ़ी दारिहिम् जासिमीन ज् सला ∴ (९१) अ़ल्लजीन कज्जबू शुअ़ैबन् कअल्लम् यग़्नौ फ़ीहा ज् ∴ अल्-लजीन कज्जबू शुअ़ैबन् कानू हुमुल्ख़ासिरीन (९२) फ़तवल्ला अ़न्हुम् व क़ाल या क़ौमि लक़द् अब्लग़्तुकुम् रिसालाति रब्बी व नसह्तु लकुम् ज् फ़कैफ़ आसा अ़ला क़ौमिन् काफ़िरीन (९३) ★ व मा अर्सल्ना फ़ी क़र्यतिम् - मिन् नबीयिन् अिल्ला अख़ज्ना अह्लहा बिल्बअ्सा अि वज़्ज़र्रा अि लअ़ल्लहुम् यज़्ज़र्रअ़ून (९४) सुम्म बद्दल्ना मकानस्-सैयिअतिल्-हसनत हत्ता अ़फ़ौव्व क़ालू क़द् मस्स आबा अ नज़्ज़र्रा अु वस्सर्रा अु फ़अख़ज्नाहुम् बग़्ततौंव हुम् ला यश्अ़ुरून (९५) व लौ अन्न अह्लल्क़ुरा आमनू वत्तक़ौ लफ़तह्ना अ़लैहिम् बरकातिम् - मिनस्समा अि वल्अर्ज़ि व लाकिन् कज्जबू फ़अख़ज्नाहुम् बिमा कानू यक्सिबून (९६)

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ يَا شُعَيْبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كَارِهِينَ ۝ قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُمْ بَعْدَ إِذْ نَجَّانَا اللَّهُ مِنْهَا ۚ وَمَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَعُودَ فِيهَا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا ۚ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ۝ وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِنَّكُمْ إِذًا لَخَاسِرُونَ ۝ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ۝ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَنْ لَمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۛ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا هُمُ الْخَاسِرِينَ ۝ فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۖ فَكَيْفَ آسَىٰ عَلَىٰ قَوْمٍ كَافِرِينَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا أَخَذْنَا أَهْلَهَا بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُونَ ۝ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّىٰ عَفَوْا وَقَالُوا قَدْ مَسَّ آبَاءَنَا الضَّرَّاءُ وَالسَّرَّاءُ فَأَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكَاتٍ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِنْ كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا بَيَاتًا

∴ मु. अ़ि मु त क़. ४

★ रु. ११ १ आ ९

सूरतुल्अड्राफ़ि आयत ८८ से आयात २०६ तक

(शोएब की) क़ौम के (अपने को) बड़ा समझने वाले सरदार बोले कि ऐ शोएब ! या तो तुम हमारे दीन में लौट आओ, नहीं तो हम तुमको और जो तुम्हारे साथ ईमान लाये हैं उनको अपने शहर से निकाल देंगे। (शोएब ने) कहा क्या हम (तुम्हारे तरीक़े से) बेज़ार (बिमुख) हों तब भी (लौट आवें) ? (८८) जबकि अल्लाह ने तुम्हारे मज़हब से हमें ख़लास (मुक्त) कर दिया फिर भी अगर उसमें लौट आवें तो (मानो) हमने अल्लाह पर झूठ बाँधा और हमारा काम नहीं कि उसमें फिर आवें, लेकिन कभी हमारा परवरदिगार चाहे (तो दूसरी बात है)। हमारा परवरदिगार अपने इल्म से हर चीज़ की ख़बर रखता है। अल्लाह पर हमने भरोसा किया। ऐ परवरदिगार ! हममें और हमारी जाति के बीच तू ठीक इन्साफ़ कर और तू (ही) सबसे अच्छा इन्साफ़ करने वाला है। (८९) और शोएब की जाति के सरदार जो इन्कारी थे बोले कि अगर शोएब की राह पर चलोगे तो तुम घाटे में पड़ जाओगे। (९०) फिर (यकायक) उन्हें भूचाल ने (आ) घेरा फिर वे अपने घरों में सुबह को औंधे पड़े (ज्यों के त्यों) रह गये। (९१) जिन लोगों ने शोएब को झुठलाया (वे जड़ से ऐसा मिटे) गोया उन बस्तियों में उनका कभी वजूद (अस्तित्व) ही न था। जिन लोगों ने शोएब को झुठलाया गोया वही (अपने कर्मों की बदौलत) घाटे में रहे। (९२) शोएब उनके यहाँ से चल दिया यह कहते हुये कि ऐ क़ौम ! मैंने अपने रब का संदेशा तुम्हें पहुँचाया और तुम्हारा भला चाहा, फिर भी जिन लोगों ने न माना ऐसों पर क्या अफ़सोस करूँ। (९३)★

★ रु. ११/१ आ ६

ऐसा कभी न हुआ कि हमने किसी बस्ती में पैग़म्बर भेजा हो (और) वहाँ के रहनेवालों पर हमने सख़्ती और मुसीबत न डाली हो (इस विचार से) कि शायद वह लोग तौबः करें (९४) फिर हमने बुराई की जगह भलाई को बदला, यहाँ तक कि लोग ख़ूब बढ़े और (एक दिन नौबत आई कि) कहने लगे कि इस तरह के दुख और सुख तो हमारे बड़ों को भी पहुँचते रहे हैं, तो (उनकी इस नाशुक्री पर) हमने उनको अचानक धर पकड़ा जब वे बेख़बर थे।§ (९५) और अगर बस्तियों वाले कहीं ईमान लाते और परहेज़गारी (संयम) से चलते तो हम आसमान और ज़मीन की (सारी) बरकतों (के दरवाज़े) उन पर खोल देते मगर उन लोगों ने झुठलाया तो उनके उन कर्मों के बदले में जो वह करते थे हमने उनको पकड़ा। (९६)

§ ज़मीन का कोई हिस्सा ऐसा नहीं जहाँ हमने अपने नबी और हिदायत न भेजी हो और जहाँ के लोगों को कसौटी पर न कसा हो कि वह तकलीफ़ को देखकर ग़लत से तौबः करें और हमारी सही राह पकड़ें। फिर बार बार उनकी बुराइयों को माफ़ किया और उन्हें भलाई व तरक़्क़ी देते रहे। इसके बाद भी जब वह गुनाहों की हद ही पार करने लगे तब आख़िरकार उनको अपने ग़ज़ब (कोप) में धर पकड़ा।

अफ़अमिन अह्लुल्क़ुरा अँयअ्तियहुम् बअ्सुना बयातौंव हुम् नाअिमून त़ (९७) अव अमिन अह्लुल्क़ुरा अँयअ्तियहुम् बअ्सुना ज़ुहौंवहुम् यल्अबून (९८) अफ़अ मिनू मक्रल्लाहि ज् फ़ला यअ्मनु मक्रल्लाहि अिल्लल्क़ौमुल्-ख़ासिरून (९९) ★ अवलम् यह्दि लिल्लजीन यरिसूनल्अर्ज़ मिम्बऽदि अह्लिहा अल्लौ नशाअु असब्नाहुम् बिजुनूबिहिम् ज् व नत्बअु अला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यस्मअून (१००) तिल्कल्क़ुरा नक़ुस्सु अलैक मिन् अम्बाअिहा ज् व लक़द् जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बैयिनाति ज् फ़मा कानू लियुअ्मिनू बिमा कज्जबू मिन् क़ब्लु त़ कजालिक यत्बअुल्लाहु अला क़ुलूबिल्काफ़िरीन (१०१) व मा वजद्ना लिअक्सरिहिम् मिन् अह्दिन् ज् व अिंव्व जद्ना अक्सरहुम् लफ़ासिक़ीन (१०२) सुम्म बअ्सना मिम्बअ्दिहिम् मूसा बिआयातिना अिला फ़िर्औन व मलअिही फ़ज़लमू बिहा ज् फ़न्जुर्कैफ़ कान आक़िबतुल् - मुफ़्सिदीन (१०३) व क़ाल मूसा याफ़िर्औनु अिन्नी रसूलुम् - मिर्रब्बिल् - आलमीन ला (१०४) हक़ीक़ुन् अला अल्ला अक़ूल अलल्लाहि अिल्लल्हक़्क़ त़ क़द् जिअ्तुकुम् बिबैयिनतिम् - मिर्रब्बिकुम् फ़अर्सिल् मअिय बनी अिस्राईल त़ (१०५) क़ाल अिन्कुन्त जिअ्त बिआयतिन् फ़अ्ति बिहा अिन् कुन्त मिनस्सादिक़ीन (१०६) फ़अल्क़ा असाहु फ़अिजा हिय सुअ्बानुम्मुबीनुन् ज् सला (१०७) व नज़अ यदहू फ़अिजा हिय बैज़ाअु लिन्नाजिरीन (१०८) ★ क़ालल्मलअु मिन् क़ौमि फ़िर्औन अिन्न हाजा लसाहिरुन् अलीमुन ला (१०९) युरीदु अँय्युख्रिजकुम् मिन् अर्ज़िकुम् ज फ़मा जातअ्मुरून (११०) क़ालू अर्जिह् व अख़ाहु व अर्सिल् फ़िल्-मदाअिनि हाशिरीन ला (१११) यअ्तूक बिकुल्लि साहिरिन् अलीमिन् (११२) व जाअस्-सहरतु फ़िर्औन क़ालू अिन्न लना लअज्रन् अिन् कुन्ना नह्नुलग़ालिबीन (११३)

★ रु. १२ | २ आ ६

★ रु. १३ | ३ आ ६

وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿٩٧﴾ اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى
وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٨﴾ اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ
الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩٩﴾ اَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ اَهْلِهَآ
اَنْ لَّوْ نَشَآءُ اَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا
يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾ تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآئِهَا ۚ وَلَقَدْ
جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ
كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠١﴾ وَمَا وَجَدْنَا لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ
وَاِنْ وَّجَدْنَآ اَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٢﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ
اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٠٣﴾
وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾ حَقِيْقٌ عَلٰٓى اَنْ
لَّآ اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ۚ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ
فَاَرْسِلْ مَعِيَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٠٥﴾ قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ
بِهَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٠٦﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ
مُّبِيْنٌ ﴿١٠٧﴾ وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ
قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿١٠٩﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ
اَرْضِكُمْ ۚ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿١١٠﴾ قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَاَرْسِلْ فِي الْمَدَآئِنِ
حٰشِرِيْنَ ﴿١١١﴾ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿١١٢﴾ وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ

तो क्या बस्तियों के रहने वाले (इससे) निडर हैं कि उन पर हमारा अज़ाब रातोरात आ पहुँचे जब वह सोये हुये पड़े हों ? (९७) या क्या बस्तियों के रहने वाले (इससे) निडर हैं कि हमारा अज़ाब दिन दहाड़े उन पर (टूट) पड़े जबकि वह खेल-कूद रहे हों ? (९८) तो क्या अल्लाह की चाल (छिपी तदबीर) से निडर हो गये हैं। सो अल्लाह की छिपी तदबीर (अज़ाब) से तो वही लोग निडर होते हैं जो घाटे में पड़ने वाले हैं। (९९) ★

और जो लोग वहाँ के (पहले के) लोगों के जाने के बाद ज़मीन के वारिस होते हैं क्या इतनी भी सूझ नहीं रखते कि अगर हम चाहें तो इनके गुनाहों के बदले इन पर (इनके पिछले गिरोहों की तरह) आफ़त डालें और (सच तो यह है कि इनके बराबर कुफ़्र में रहने के कारन) हम इनके दिलों पर मुहर कर देते हैं सो यह लोग नहीं सुनते। (१००) (ऐ पैग़म्बर !) यह चन्द बस्तियाँ हैं जिनके कुछ हालात हम तुमको सुनाते हैं। और इनके पैग़म्बर इन लोगों के पास निशानियाँ (पैग़ाम) भी लेकर आये मगर यह लोग ऐसी तबियत के न थे कि जिस चीज़ को पहले झुठला चुके हों उस पर ईमान ले आवें। काफ़िरों के दिलों पर अल्लाह इसी तरह मुहर लगा दिया करता है@। (१०१) और हमने तो इनमें से बहुतेरों का बचन का निबाह करनेवाला न पाया और हमने इनमें से बहुतों को बेहुक्म पाया। (१०२) फिर उनके बाद हमने मूसा का अपनी निशानियाँ देकर फ़िरऔन और उसके सरदारों की तरफ़ भेजा तो (इन लोगों ने) उनके साथ ज़्यादती की तो देखो कि उन फ़सादियों का कैसा अंजाम हुआ। (१०३) और मूसा ने कहा कि ऐ फ़िरऔन ! मैं संसार के परवरदिगार का भेजा हुआ हूँ। (१०४) लायक़ हूँ इस पर कि सच के सिवाय अल्लाह की बाबत दूसरी बात न कहूँ। मैं तुम लोगों के पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से निशानी लेकर आया हूँ सो तू इसराईल के बेटों को (जिन्हें तूने अपना गुलाम बना रखा है) मेरे साथ बिदा कर दे। (१०५) (फ़िरऔन) बोला कि अगर तू कोई करामात लेकर आया है तो वह लाकर दिखा अगर तू सच्चा है। (१०६) इस पर मूसा ने अपनी लाठी (ज़मीन पर) डाल दी, तो (क्या देखते हैं कि) वह उसी वक़्त ज़ाहिरा एक अजगर हो गया। (१०७) और अपना हाथ निकाला तो उसी वक़्त देखने वालों को वह (ऐसा) चमकता नज़र आया (कि आँखें नहीं टिकती थीं)§। (१०८) ★

फ़िरऔन की क़ौम के सरदार कहने लगे कि बेशक यह तो बड़ा होशियार जादूगर है। (१०९) चाहता है कि तुमको तुम्हारे देश से निकाल बाहर करे, तो क्या सलाह देते हो ? (११०) (सबने फ़िरऔन से) कहा कि (फ़िलहाल) मूसा और उसके भाई हारूँ को (इस वक़्त) ढील दें और गाँवों गाँवों में हलकारे भेजिये (१११) कि तमाम गुनी जादूगरों को आप के सामने लाकर हाज़िर करें। (११२) निदान जादूगर फ़िरऔन के पास हाज़िर हुए, कहने लगे कि अगर हम जीत जायँ तो हमको बदले में (इनाम) मिलना चाहिए (११३)

★ रु. १२ २ आ ६

★ रु. १३ ३ आ ६

@ अल्लाह ने हर शख्स को नेक-बद को समझने का विवेक दिया है। उसके अलावा समय-समय पर किताबों और पैग़म्बरों के ज़रिये रहनुमाई होती रही। इस पर भी जिनसे चूक हो और वे तौबः करें तो अल्लाह उनको बार-बार माफ़ भी करता है। इतनी रहमतें होने के बाद भी जो गुनाह से बजाय बचने के गुनाहों में ही लिप्त रहें और सही राह की ओर मुड़ कर देखना भी पसन्द न करें तो ऐसे गुनहगारों के दिल-दिमाग़ को जग लग जाता है। उनको अल्लाह सदा गुनाहों में भटकने को छोड़ देता है। § ह० मूसा अ० मिस्र से निकल कर मदीने में ह० शोएब अ० के पास पहुँचे और उनकी लड़की से निकाह किया। बाद को मिस्र की वापसी के वक़्त रास्ते में पैग़म्बरी मिली और खुदा का हुक्म हुआ कि मिस्र जाकर फ़िरऔन को अल्लाह की तरफ़ बुलाओ कि सरकशी से बाज़ आये। मूसा अ० को दो मुख्य चमत्कार मिले थे—(१) उनकी लाठी अजगर बन जाती थी (२) उनका हाथ इतना चमकता था कि उसकी ओर आँख भर के देखा नहीं जाता था।

क़ाल नअ़म् व अिन्नकुम् लमिनल् - मुक़र्रबीन (११४) क़ालू या मूसा अिम्मा अन् तुल्क़िय व अिम्मा अन्नकून नह्नुल्मुल्क़ीन (११५) क़ालअल्क़ू ज् फ़लम्मा अल्क़ौ सहूरू अअ्युनन्नासि वस्तर्हबूहुम् व जाअू बिसिह्रिन् अ़ज़ीमिन् (११६) व औह़ैना अिला मूसा अन् अल्क़ि अ़साक ज् फ़अिज़ा हिय तल्क़फ़ु मा यअ्फ़िकून ज् (११७) फ़-वक़अ़ल्-ह़क़्क़ु व बतल मा कानू यअ़्मलून ज् (११८) फ़ग़ुलिबू हुनालिक वन्क़लबू साग़िरीन ज् (११९) व अुल्क़ियस्सह़रतु साजिदीन ज् सला (१२०) क़ालू आमन्ना बिरब्बिल् - आ़लमीन ला (१२१) रब्बि मूसा व हारून (१२२) क़ाल फ़िर्औ़नु आमन्तुम् बिही क़ब्ल अन् आज़न लकुम् ज् अिन्न हाज़ा लमक्रुम् - मकर्तुमूहु फ़िल्मदीनति लितुख़्रिजू मिन्हा अह्लहा ज् फ़सौफ़ तअ़्लमून (१२३) लअुक़त्तिअ़न्न अैदियकुम् व अर्जुलकुम् मिन् ख़िलाफ़िन् सुम्म लअुसल् - लिबन्नकुम् अज्मअ़ीन (१२४) क़ालू अिन्ना अिला रब्बिना मुन्क़लिबून ज् (१२५) व मा तन्क़िमु मिन्ना अिल्ला अन् आमन्ना बिआयाति रब्बिना लम्मा जाअत्ना ट रब्बना अफ़्रिग् अ़लैना सब्रौंव तवफ़्फ़ना मुस्लिमीन (१२६) ★ व क़ालल्मलअु मिन् क़ौमि फ़िर्औ़न अतज़रु मूसा व क़ौमहू लियुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि व यज़रक व आलिहतक ट क़ाल सनुक़त्तिलु अब्नाअहुम् व नस्तह्यी निसाअहुम् ज व अिन्ना फ़ौक़हुम् क़ाहिरून (१२७) क़ाल मूसा लिक़ौमिहिस्तअ़ीनू बिल्लाहि वस्बिरू ज् अिन्नल्अर्ज़ लिल्लाहि क़िफ़ ला यूरिसुहा मैंयशाअु मिन् अ़िबादिही ट वल्आ़क़िबतु लिल्मुत्तक़ीन (१२८) क़ालू अूज़ीना मिन् क़ब्लि अन् तअ्तियना व मिम्बअ़्दि मा जिअ्तना ट क़ाल अ़सा रब्बुकुम् अैंयुह्लिक अ़दूवकुम् व यस्तख़्लिफ़कुम् फ़िल्अर्ज़ि फ़यन्ज़ुर कैफ़ तअ़्मलून (१२९) ★

★ रु. १४ | ४ आ. १८

★ रु. १५ | ५ आ. ३

قالوا ان لنا لاجرا ان كنا نحن الغلبين ○ قال نعم وانكم لمن
المقربين ○ قالوا يموسى اما ان تلقي واما ان نكون نحن
الملقين ○ قال القوا فلما القوا سحروا اعين الناس واسترهبوهم
وجاءو بسحر عظيم ○ واوحينا الى موسى ان الق عصاك فاذا
هي تلقف ما يافكون ○ فوقع الحق وبطل ما كانوا يعملون ○
فغلبوا هنالك وانقلبوا صغرين ○ والقي السحرة سجدين ○
قالوا امنا برب العلمين ○ رب موسى وهرون ○ قال فرعون
امنتم به قبل ان اذن لكم ان هذا لمكر مكرتموه في
المدينة لتخرجوا منها اهلها فسوف تعلمون ○ لاقطعن
ايديكم وارجلكم من خلاف ثم لاصلبنكم اجمعين ○
قالوا انا الى ربنا منقلبون ○ وما تنقم منا الا ان امنا بايت ربنا
لما جاءتنا ربنا افرغ علينا صبرا وتوفنا مسلمين ○ وقال
الملا من قوم فرعون اتذر موسى وقومه ليفسدوا في الارض
ويذرك والهتك قال سنقتل ابناءهم ونستحي نساءهم و
انا فوقهم قهرون ○ قال موسى لقومه استعينوا بالله واصبروا
ان الارض لله يورثها من يشاء من عباده والعاقبة
للمتقين ○ قالوا اوذينا من قبل ان تاتينا ومن بعد ما

منزل ٢

(फ़िरऔन ने) कहा—हाँ। और (ज़रूर) तुम मेरे नज़दीकी लोगों में हो जाओगे। (११४) (जादूगरों ने) कहा—ऐ मूसा ! या तो तुम (अपना डण्डा लाकर) डालो और या हम ही डालें। (११५) (मूसा ने) कहा तुम्हीं डालो। फिर जब उन्होंने (अपनी लाठियाँ और रस्सियाँ) डालीं तो (जादू के ज़ोर से) लोगों की नज़रबन्दी कर दी (कि चारों तरफ़ साँप ही साँप दिखलाई देने लगे) और उनको भय में डाल दिया और बड़ा जादू लाये।@ (११६) और (उस समय) हमने मूसा की तरफ़ पैग़ाम भेजा कि (तुम भी) अपना असा (लाठी) डाल दो। [मूसा ने असा (लाठी) डाल दी] तो क्या देखते हैं कि जादूगरों ने जो (साँपों का) झूठमूठ (स्वाँग) रच रखा था उसको वह (असा) निगलने लगा। (११७) पस सच बात साबित हो गई और जो कुछ जादूगरों ने किया था झूठा (साबित) हो गया। (११८) पस (फ़िरऔन और उसके लोग) उस (अखाड़े) में हारे और ज़लील हो (कर रह) गये। (११९) और जादूगर सिजदे (सिर नवाने) में गिर पड़े। (१२०) बोल उठे कि हम तो संसार के परवरदिगार पर ईमान लाये। (१२१) जो मूसा और हारूँ का परवरदिगार है। (१२२) फ़िरऔन बोला अभी मैंने हुक्म ही नहीं दिया और तुम ईमान ले आये। यह (तुम्हारा) फ़रेब है जो शहर में तुमने (मूसा से मिलकर) बाँधा है ताकि यहाँ के लोगों को (इस शहर से) निकाल बाहर करो, सो तुमको जल्दी ही पता लग जायगा। (१२३) मैं तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पाँव उल्टे (यानी दाहिना हाथ तो बायाँ पैर और बायाँ हाथ तो दाहिना पैर) काटूँगा फिर तुम सबको सूली पर चढ़ाऊँगा। (१२४) (वह) कहने लगे हमको तो अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटकर जाना है। (१२५) और (ऐ फ़िरऔन !) तू हमसे इसलिए दुश्मनी करता है कि हमने अपने परवरदिगार की निशानियाँ मान लीं जब (वे) हमारे पास तक पहुँच चुकीं। ऐ हमारे परवरदिगार ! हम पर सब्र के दहाने खोल दे और हमें (जब मौत दे) मुसलमान ही (की हालत में) मौत दे। (१२६)★

★ रु. १४/४ आ १८

और फ़िरऔन के लोगों में से सरदारों ने (फ़िरऔन से) कहा कि क्या तुम मूसा और उसकी क़ौम को यों ही छोड़ दोगे कि देश में फ़साद फैलाते फिरें और वह तुमसे व तुम्हारे बुतों से✡ किनारा कर जायें। उसने कहा अब हम इनके बेटों को मारेंगे और उनकी औरतों को ज़िन्दः रखेंगे और हम उन पर ग़ालिब (प्रबल) हैं।† (१२७) मूसा ने अपनी जाति से कहा अल्लाह से मदद माँगो और सब्र पर क़ायम रहो। ज़मीन तो अल्लाह ही की है, वह अपने बन्दों में से जिसको चाहता है उसको वारिस बना देता है और (अल्लाह की अवज्ञा से) डरनेवालों का अंजाम भला होगा। (१२८) (इस पर वह) कहने लगे कि तुम्हारे आने से पहले हमको दुख मिला और तुम्हारे आने के बाद भी। (मूसा अ० ने) कहा कि क़रीब है कि परवरदिगार तुम्हारे दुश्मन को तबाह कर दे और तुमको ज़मीन में नायब बनाये; फिर (अल्लाह तुमको भी) देखे कि तुम कैसे काम करते हो।‡ (१२९)★

★ रु. १५/५ आ ३

@ "वह इन्सानी अक़्ल व ख़िरद (बुद्धि) का कमाल था। जादूगरों ने मैदाने मुक़ाबिला [पेज २८५ पर]

✡ फ़िरऔन अल्लाह को न मानता था बल्कि अपनी और अपनी शकल की बुतें (मूर्ति) तैयार करवा कर उनकी पूजा करवाता था। † फ़िरऔन के दरबारियों ने मूसा और उनके साथियों को मार डालने की राय दी थी। फ़िरऔन ने उनसे कहा—इनके बेटे मार डाले जायँ और लड़कियाँ ज़िन्दः छोड़ दी जायें। यह पहले भी उसका तरीक़ः था। बीच में छोड़ दिया था। अब फिर क़स्द कर रहा है। ‡ यह नज़ीर मुसलमानों को सुनाने के लिए है। जिस वक़्त यह आयत उतरी वे भी बहुत सताये जा रहे थे। उनके दुश्मनों को बर्बाद कर अल्लाह ने उनको भी मौक़ः दिया कि वे बरसरेहुकूमत हों तब वे भी और अपने आमालों का नमूना दिखावें।

व लक़द् अख़ज़्ना आल फ़िर्औन बिस्सिनीन व नक़्सिम्-मिनस्समराति लअ़ल्लहुम् यज़्ज़क्करून (१३०) फ़अिज़ा जा अत्हुमुल् - हसनतु क़ालू लना हाज़िही ज् व अिन् तुसिब्हुम् सैयिअतुंय्यत् - तैयरू बिमूसा व मम्मअ़हू त् अला अिन्नमा ता अिरुहुम् अिन्दल्लाहि व लाकिन्न अक्सरहुम् ला यअ़्लमून (१३१) व क़ालू मह्मा तअ्तिना बिही मिन् आयतिल् - लितस्हरना बिहा ला फ़मा नह्नु लक बिमुअ्मिनीन (१३२) फ़अर्सल्ना अ़लैहिमुत्तूफ़ान वल्जराद वल्क़ुम्मल वज़्ज़फ़ा दिअ़ वद्दम आयातिम्-मुफ़स्सलातिन् क़िफ़् फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमम्-मुज्रिमीन (१३३) व लम्मा वक़अ़ अ़लैहिमुर्रिज्ज़ु क़ालू या मूसद्अुलना रब्बक बिमा अ़हिद अिन्दक ज् लअिन् कशफ़्त अ़न्नर्रिज्ज़ लनुअ्मिनन्न लक व लनुर्सिलन्न मअ़क बनी अिस्राईल ज् (१३४) फ़लम्मा कशफ़्ना अ़न्हुमुर्रिज्ज़ अिला अजलिन् हुम् बालिग़ूहु अिज़ा हुम् यन्कुसून (१३५) फ़न्तक़म्ना मिन्हुम् फ़अग़्रक़्नाहुम् फ़िल्यम्मि बिअन्नहुम् कज़्ज़बू बिआयातिना व कानू अ़न्हा ग़ाफ़िलीन (१३६) व औरस्नल् - क़ौमल्लज़ीन कानू युस्तज़्अ़फ़ून मशारिक़ल्-अर्ज़ि व मग़ारिबहल्लती बारक्ना फ़ीहा त् वतम्मत् कलिमतु रब्बिकल्हुस्ना अ़ला बनी अिस्राईल ० ला बिमा सबरू त् वदम्मर्ना मा कान यस्नअु फ़िर्औनु व क़ौमुहू व मा कानू यअ़्रिशून ● (१३७) व जावज़्ना बिबनी अिस्राईलल् - बह्र फ़अतौ अ़ला क़ौमींयअ्कुफ़ून अ़ला अस्नामिल्लहुम् ज् क़ालू या मूसज्अ़ल् लना अिलाहन् कमा लहुम् आलिहतुन् त् क़ाल अिन्नकुम् क़ौमुन् तज्हलून (१३८)

جِئْتَنَا ۚ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى
الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ۞ وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ
بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۞ فَاِذَا
جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا
بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ؕ اَلَآ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۞ وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا
نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۞ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَ
الْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ ۫ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا
قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۞ وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا
رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ
وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۞ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ
اِلٰٓى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ۞ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ
فِى الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۞ وَاَوْرَثْنَا
الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا
الَّتِىْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ
بِمَا صَبَرُوْا ؕ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا
يَعْرِشُوْنَ ۞ وَجٰوَزْنَا بِبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ

और हमने फ़िरऔन के लोगों को क़हत (अकाल) और मेवों (पैदावार) की कमी में फँसाया ताकि शायद उनको होश आजाय (और ज़ुल्मों से बाज़ आयें)। (१३०) फिर जब उनको कोई भलाई पहुँचती तो कहते यह हमारे (हक़ की) वजह से है और अगर उन पर कोई आफ़त आती तो मूसा और उनके साथियों की मनहूसियत (को उसका सबब) बताते। तो उनकी मनहूसियत तो (बतौर उनके आमाल) अल्लाह ही के पास है लेकिन उनमें के बहुतेरे (यह असलियत) जानते नहीं। (१३१) और (फ़िरऔन के लोगों ने मूसा से) कहा तुम कोई भी निशानी हमारे सामने लाओ कि उसके ज़रिये से (तुम) हम पर (अपना) जादू चलाओ, तो हम तो तुम पर ईमान लाने वाले नहीं हैं। (१३२) फिर हमने उन पर तूफ़ान भेजा और टीड़ियाँ, जुएँ और मेंढक और ख़ून कितनी ही निशानियाँ जुदा जुदा भेजीं। इस पर भी वह लोग (घमंड में) अकड़े रहे और ये लोग थे ही गुनहगार। (१३३) और जब उन पर अज़ाब पड़ा तो बोले ऐ मूसा! तुमसे जैसा अल्लाह ने वादा कर रखा है उसके सहारे पर अपने परवरदिगार से हमारे लिए प्रार्थना करो। अगर तुमने हम पर से सज़ा को टाल दिया तो हम ज़रूर तुम पर ईमान ले आवेंगे और इसराईल के बेटों को तुम्हारे साथ भेज देंगे। (१३४) फिर जब हमने एक ख़ास वक़्त तक के लिए जिस वक़्त तक उनको पहुँचना (ही) था सज़ा को उन पर से टाल लिया तो वह फ़ौरन (अपनी बात से) हट गये। (१३५) फिर हमने उनसे बदला लिया और नदी (क़ुलज़ुम) में डुबो दिया† क्योंकि वह हमारी आयतों को झुठलाते और उनसे बेपरवाही करते थे। (१३६) और जो (फ़िरऔनों के ज़ुल्म से) कमज़ोर (हो रहे) थे उनको हमने (मुल्क शाम की) ज़मीन के पूर्व और पश्चिम का मालिक बना दिया जिसमें हमने बरकत रखी है। और इसराईल की औलाद पर तेरे परवरदिगार का नेकी का वादा पूरा हुआ, इसलिए कि उन्होंने सब्र किया और जो फ़िरऔन और उसके क़ौम के लोगों ने (महल वग़ैरः) बनाये थे और अंगूर (के बाग़) जो छतरियों पर चढ़ाते थे (वह सब) हमने बरबाद कर दिये। (१३७) ● और हमने इसराइल के बेटों को नदी पार उतार दिया, तो (वह) ऐसे लोगों के पास पहुँचे जो अपने बुतों को पूजते थे। (उनको देखकर इसराईल के बेटे मूसा अ० से) कहने लगे कि ऐ मूसा! जिस तरह इन लोगों के पास बुतें हैं, एक बुत हमारे लिए भी बना दो। (मूसा अ० ने) जवाब दिया कि तुम जिहालत (अज्ञान) की बातें करते हो। (१३८)

रु० ब/अ० १/४

[पेज २३८ से] को पहले से क़ब्ज़ः में कर रखा था और ज़मीन में सुरंग लगाकर आग जला दी थी। बांस की लकड़ियों और चमड़े की रस्सियों में पारा भर दिया था। रस्सियों और बांसों के किनारों पर मसनूई (बनावटी) सांपों के से फन लगा दिया थे। जब ये बांस की लाठियाँ और रस्सियाँ ज़मीन पर थोड़ी देर तक पड़ी रहीं तो आग की हरारत और धूप की तपन से पारा में गर्मी पैदा हुई और बांसों और रस्सियों में हरकत पैदा हो गई। इसको साहिरी (जादू) कहिये या नज़र-बन्दी।"

† ह० मूसा अ० से और फ़िरऔनों से ४० वर्ष मुक़ाबला रहा। मूसा अ० कहते थे कि बनी इसराईल को उनके साथ जाने दिया जाय लेकिन फ़िरऔन न मानता था। उनके शाप से फ़िरऔन के देश पर यह सब आफ़तें आईं! मूसा अ० को पकड़ने के लिए फ़िरऔन ने उनका पीछा किया। मूसा अ० तो नदी को पार कर गये लेकिन फ़िरऔन डूब गया।

अिन्न हा|अुला|अि मुतब्बरुम्मा हुम् फ़ीहि व बातिलुम्मा कानू यऽ्मलून (१३९) क़ाल अग़ैरल्लाहि अब्ग़ीकुम् अिलाहौंव हुव फ़ज़्ज़लकुम् अलल्आलमीन (१४०) व अिज् अन्जैनाकुम् मिन् आलि फ़िर्ऑन यसूमूनकुम् सू|अल्अजाबि ज् युक़त्तिलून अब्ना|अ कुम् व यस्तह्यून निसा|अकुम् त् व फ़ी जालिकुम् बला|अुम्-मिर्रब्बिकुम् अज़ीमुन् (१४१) ★ व वाअद्ना मूसा सलासीन लैलतौंव अत्मम्नाहा बिअश्रिन् फ़तम्म मीक़ातु रब्बिही| अर्बअीन लैलतन् ज् व क़ाल मूसा लिअख़ीहि हारूनख़्लुफ़्नी फ़ी क़ौमी व अस्लिह् व ला तत्तबिऽ् सबीलल् - मुफ़्सिदीन (१४२) व लम्मा जा|अ मूसा लिमीक़ातिना व कल्लमहू रब्बुहू ला क़ाल रब्बि अरिनी| अन्जुर् अिलैक त् क़ाल लन् तरानी व ला|किनिन्जुर् अिलल् - जबलि फ़अिनिस्तकर्र मकानहू फ़सौफ़ तरानी ज् फ़लम्मा तजल्ला रब्बुहू लिल्जबलि जअलहू दक्कौंव ख़र्र मूसा सअिक़न् ज् फ़लम्मा| अफ़ाक़ क़ाल सुब्हानक तुब्तु अिलैक व अना औवलुल् - मुअ्मिनीन (१४३) क़ाल या मूसा| अिन्निस् - तफ़ैतुक अलन्नासि बिरिसालाती व बिकलामी ज् सला फ़ख़ुज् मा| आतैतुक व कुम्मिनश्शाकिरीन (१४४) व कतब्ना लहू फ़िल्अल्वाहि मिन् कुल्लि शैअिम् - मौअिजतौंव तफ़्सीलल्लिकुल्लि शैअिन् ज् फ़ख़ुज् हा बिक़ूवतिंव्वअ्मुर् क़ौमक यअ्ख़ुज़ू बिअह्सनिहा त् सअुरीकुम् दारल्-फ़ासिक़ीन (१४५)

रु. १६ | ६ आ १२

يَعْكُفُوْنَ عَلٰٓى اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ
اٰلِهَةٌ ۚ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ۝ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَبٰطِلٌ
مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ
عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ
الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ۚ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝ وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا
بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ
هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝
وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ
اِلَيْكَ ۚ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ
مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ
مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ
الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِيْ
وَبِكَلَامِيْ ۖ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَكَتَبْنَا لَهٗ
فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۚ
فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ۚ سَاُورِيْكُمْ دَارَ
الْفٰسِقِيْنَ ۝ سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِى الْاَرْضِ

منزل ٢

यह लोग जिस काम में लगे हैं (उससे) तबाह होनेवाले हैं और जो काम यह लोग कर रहे हैं (बिलकुल) ग़लत हैं। (१३९) (मूसा अ० ने यह भी) कहा कि क्या अल्लाह के सिवाय कोई दूसरा पूजित तुम्हारे लिए लाऊँ जबकि उसी ने तुमको संसार (के लोगों) पर बढ़ती दी है। (१४०) और (ऐ इसराईल के बेटो!) वह वक़्त याद करो जब हमने तुमको फ़िरऔन के लोगों से छुटकारा दिलाया था कि वह लोग तुमको बड़े दुख देते थे, तुम्हारे बेटों को मार डालते और तुम्हारी औरतों को (अपने लिए) ज़िन्दः रखते और इसमें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारी बड़ी आज़माइश (कसौटी) थी। (१४१) ★

★ रु. १६/६ आ १२

और हमने मूसा से तीस रात का वादा किया और हमने दस (रातें) और मिलाईं। तब तेरे परवरदिगार की मुद्दत चालीस रात पूरी हुई और मूसा ने (कोह तूर पर जाते समय) अपने भाई हारूँ से कहा कि मेरी जाति में (मेरी ग़ैरमौजूदगी में तुम मेरे) प्रतिनिधि (क़ायममुक़ाम) बने रहना और सम्भाल रखना और फ़िसाद पैदा करने वालों की राह न चलना। (१४२) और जब मूसा हमारे वादे के बमूजिब (तूर पहाड़ पर) हाज़िर हुए॰ और उनके परवरदिगार ने उनसे बातें की तो (मूसा अ० ने) अर्ज़ किया कि ऐ (हमारे) परवरदिगार! तू मुझको दिखला (यानें प्रत्यक्ष दर्शन दे) कि मैं तेरी तरफ़ एक नज़र देखूँ। (अल्लाह ने) फ़र्माया तुम हमको हरगिज़ न देख सकोगे, मगर हाँ पहाड़ पर नज़र रखो। पस अगर पहाड़ अपनी जगह ठहरा रहा तो आगे तू मुझे देख सकेगा। फिर जब उसका पालनकर्ता पहाड़ पर ज़ाहिर (प्रकाशमान) हुआ तो उस (पहाड़) को चकनाचूर कर दिया और मूसा मूर्च्छा खाकर गिर पड़ा। फिर जब होश में आया तो बोल उठा कि (ऐ परवरदिगार!) तेरी ज़ात पाक है, मैं (अपनी बेजा दरख़्वास्त के लिए) तेरे सामने तौबा करता हूँ और (तुझ पर) ईमान लानेवालों में मैं पहला हूँ। (१४३) (अल्लाह ने) फ़र्माया ऐ मूसा! मैंने तुम्हारे ज़रिये अपना पैग़ाम भेजकर और तुमसे कलाम करके तुमको (दूसरे) लोगों पर बड़ाई दी तो (अपने कलाम से) जो (तौरात) मैंने तुमको दिया है उसको लो और (मेरे) शुक्रगुज़ार रहो। (१४४) और हमने (तौरात की) तख़्तियों में मूसा के लिए हर तरह की शिक्षा और हर चीज़ की तफ़सील (ब्यौरा) लिख दी (और हुक्म दिया कि) तुम इसको मज़बूती से पकड़े रहो और अपनी जाति को हुक्म दो कि इस किताब की उम्दः बातों को पल्ले बाँधे रहें। अब मैं (जल्दी ही) तुम को बेहुक्मों (अवज्ञाकारियों) का घर दिखाऊँगा (कि कैसे वे बरबाद होते हैं)। (१४५)

॰ हज़रत मूसा अ. ४० दिन तूर पहाड़ पर रहे। यह इसलिये कि तौरात का उतरना इसी बात पर निर्भर था।

सअस्रिफ़ु अन् आयातियल्लजीन यतकब्बरून फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल् - हक़्क़ि त् व औंयरौ कुल्ल आयतिल्ला युअ्मिनू बिहा ज् व औंयरौ सबीलर्रुश्दि ला यत्तख़िज़ूहु सबीलन् ज् व औंयरौ सबीलल्ग़ैयि यत्तख़िज़ूहु सबीलन् त् जालिक बिअन्नहुम् कज्जबू बिआयातिना व कानू अन्हा ग़ाफ़िलीन (१४६) वल्लजीन कज्जबू बिआयातिना व लिक़ा'अिल् - आख़िरति हबितत् अऽ्मालुहुम् त् हल् युज्ज़ौन अिल्ला मा कानू यऽ्मलून (१४७) ★ वत्तख़ज क़ौमु मूसा मिम्बऽ्दिहीं मिन् हुलीयिहिम् अिज्लन् जसदल्लहू ख़ुवारुन् त् अलम् यरौ अन्नहू ला युकल्लिमुहुम् व ला यह्दीहिम् सबीलन् म् ● अित्तख़ज़ूहु व कानू ज़ालिमीन (१४८) व लम्मा सुक़ित फ़ी' अैदीहिम् व रऔ अन्नहुम् क़द् ज़ल्लू ला क़ालू लअिल्लम् यर्हम्ना रब्बुना व यग़्फ़िर्लना लनकूनन्न मिनल्ख़ासिरीन (१४९) व लम्मा रजअ मूसा' अिला क़ौमिहीं ग़ज़्बान असिफ़न् ला क़ाल बिअ्समा ख़लफ़्तुमू नी मिम्बऽ्दी ज् अअजिल्तुम् अम्र रब्बिकुम् ज् व अल्क़ल् - अल्वाह् व अख़ज बिरअ्सि अख़ीहि यजुर्रुहू' अिलैहि त् क़ालब्न उम्म अिन्नल् - क़ौमस्तज़्अफ़ूनी व कादू यक़्तुलूननी ज् सला फ़ला तुश्मित् बियल्अऽ्दा'अ व ला तज्अल्नी मअल्-क़ौमिज्जालिमीन (१५०) क़ाल रब्बिग़् - फ़िर्ली व लिअख़ी व अद्ख़िल्ना फ़ी रह्मतिक ज् सला व अन्त अर्हमुर्राहिमीन (१५१) ★ अिन्नल्लजीनत्तख़ज़ुल् - अिज्ल सयनालुहुम् ग़ज़बुम्मिर्रब्बिहिम् व जिल्लतुन् फ़िल्हयातिद्दुन्या त् व कजालिक नज्ज़िल् - मुफ़्तरीन (१५२) वल्लजीन अमिलुस्सैयिआति सुम्म ताबू मिम्बऽ्दिहा व आमनू' ज् अिन्न रब्बक मिम्बऽ्दिहा लग़फ़ूरुर्रहीमुन् (१५३)

قال الملاء ١٣٣ الاعراف ٧

بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ
الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوْهُ
سَبِيْلًا ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا
غٰفِلِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ
هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْ
بَعْدِهٖ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ۚ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا
يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۝ وَلَمَّا
سُقِطَ فِيْٓ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا
رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى
قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِيْ مِنْۢ بَعْدِيْ ۚ
اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ وَاَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗٓ
اِلَيْهِ ۭ قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِيْ وَكَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِيْ ۡ
فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْاَعْدَآءَ وَلَا تَجْعَلْنِيْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ قَالَ
رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِاَخِيْ وَاَدْخِلْنَا فِيْ رَحْمَتِكَ ۡ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا
السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْٓا ۡ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ

منزل ٢

★ रु. १७/७ आ ६

● व. ला जि म

★ रु. १८/८ आ ४

जो लोग नाहक़ देश में अकड़ते फिरते हैं मैं उनको अपनी आयतों से फेर दूँगा और (उनके दिलों को ऐसा सख़्त कर दूँगा कि) अगर सारी आयतें देखें तो भी उन पर ईमान न लावें और अगर (बनने वाला) सुधार का रास्ता देख पावें तो उसको (अपना) रास्ता न मानें और अगर ग़ुमराही का रास्ता देख पावें तो उसको (अपना) रास्ता बना लें। यह (नुक़्स उनमें) इससे पैदा हुआ कि उन्होंने हमारी आयतों को (लगातार) झुठलाया और उनसे बेपरवाही करते रहे। (१४६) और जिन लोगों ने हमारी आयतों को और आख़िरत के दिन का सामना होने को झुटलाया उनका किया धरा सब अकारथ हुआ; बदला तो वही पावेंगे जैसे अमल (दुनिया में) उन्होंने किये हैं ! (१४७) ★

★ रु. १७/७ आ ६

और मूसा के (जाने के) बाद उनकी जाति ने अपने ज़ेवरों को (गलाकर उसका) एक बछड़ा बना खड़ा किया। वह एक जिस्म था जिसकी आवाज़ भी बैल की-सी थी (और लगे उसकी पूजा करने)। उन्होंने यह न देखा कि वह न उनसे बात करता है और न राह दिखा सकता है ●। उन्होंने उसको (पूजा के लिए) मान लिया और वे अन्यायी थे। (१४८) और जब पछताये और समझे कि हम बहक गये, तब बोले कि अगर हमारा परवरदिगार हम पर रहम न करे और हमारे ग़ुनाह माफ़ न करेगा तो बेशक हम घाटे में आ जायँगे। (१४९) और जब मूसा (कोह तूर से) अपनी जाति की तरफ़ पलटे ग़ुस्सा और रंज में भरे हुए बोले कि मेरी ग़ैर मौजूदगी में तुमने कितना बुरा किया। क्या तुमने अपने परवरदिगार के हुक्म (के आने से पहले ही) जल्दबाज़ी की और मूसा ने (तौरात की) तख़्तियों को (एक तरफ़) डाल दिया और अपने भाई (हारूँ) के सिर (के बालों) को पकड़कर (उनको) अपनी तरफ़ खींचने लगा। (इस पर हारून ने) कहा ऐ मेरे माँजाये (भाई)! इन लोगों ने मुझको कमज़ोर समझा और क़रीब था कि मुझको मार डालते। तो दुश्मनों को मुझ पर हँसने (का मौक़ा) न दो और (इन) ज़ालिम लोगों के साथ मेरा शुमार न करो। (१५०) (इसके बाद मूसा ने) कहा कि ऐ परवरदिगार ! मुझे और मेरे भाई को क्षमा कर और हमको अपनी रहमत में ले और तू सबसे बढ़कर रहम करनेवाला है। (१५१) ★

● व. लाज़िम

★ रु. १८/८ आ ४

(अल्लाह ने फ़रमाया) अलबत्ता जो लोग बछड़े को (पूजने के लिए) बना बैठे उन पर उनके परवरदिगार का ग़ज़ब (प्रकोप) पहुँचेगा और दुनिया की ज़िन्दगी में ज़िल्लत (पड़ेगी) और झूठ बाँधनेवालों को हम इसी प्रकार सज़ा दिया करते हैं। (१५२) लेकिन जिन्होंने बुरे काम किये फिर उसके बाद तौबा की और ईमान लाये तो बेशक तुम्हारा परवरदिगार इसके बाद बड़ा ही माफ़ करने वाला और बेहद मेहरबान है। (१५३)

व लम्मा सकत अम्मूसल्ग़ज़बु अख़ज़ल् - अल्वाह़ ज् सला व फ़ी नुस्ख़तिहा हुदौंव रह़्मतुल्लिल्लज़ीन हुम् लिरब्बिहिम् यर्हबून (१५४) वख़्तार मूसा क़ौमहु सब्अ़ीन रजुलल्लिमीक़ातिना ज् फ़लम्मा अख़ज़त् - हुमुर्रज्फ़तु क़ाल रब्बि लौ शिअ्त अह्लक्तहुम् मिन् क़ब्लु व ईयाय त् अतुह्लिकुना बिमा फ़अलस्सुफ़हाअु मिन्ना ज् अिन् हिय अिल्ला फ़ित्नतुक त् तुज़िल्लु बिहा मन् तशाअु व तह्दी मन् तशाअु त् अन्त वलीयुना फ़ग़्फ़िर्लना वर्ह़म्ना व अन्त ख़ैरुल्ग़ाफ़िरीन (१५५) वक्तुब् लना फ़ी हाज़िहिद्दुन्या ह़सनतौंव फ़िल्आख़िरति अिन्ना हुद्ना अिलैक त् क़ाल अ़ज़ाबी अुसीबु बिही मन् अशाअु ज् व रह़्मती वसिअ़त् कुल्ल शैअिन् त् फ़सअक्तुबुहा लिल्लज़ीन यत्तक़ून व युअ्तूनज़्ज़काव वल्लज़ीन हुम् बिआयातिना युअ्मिनून ज् (१५६) अल्लज़ीन यत्तबिअ़ूनर् - रसूलन्नबीयल् - अुम्मीयल्लज़ी यजिदूनहु मक्तूबन् अ़िन्दहुम् फ़ित्तौराति वल्अिन्जीलि ज् यअ्मुरुहुम् बिल्मअ़्रूफ़ि व यन्हाहुम् अ़निल्मुन्करि व युहि़ल्लु लहुमुत्तैयिबाति व युह़र्रिमु अ़लैहिमुल्-ख़बाअिस व यज़अ़ु अ़न्हुम् अिस्रहुम् वल्अग़्लालल्लती कानत् अ़लैहिम् त् फ़ल्लज़ीन आमनू बिही व अ़ज़्ज़रूहु व नसरूहु वत्तबअ़ुन्नूरल्लज़ी अुन्ज़िल मअ़हु ला अुलाअिक हुमुल-मुफ़्लिह़ून (१५७) ★ क़ुल् या अैयुहन्नासु अिन्नी रसूलुल्लाहि अिलैकुम् जमीअ़निल्लज़ी लहु मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ज् ला अिलाह अिल्ला हुव युह़्यी व युमीतु त् फ़आमिनू बिल्लाहि व रसूलिहिन्नबीयिल्-अुम्मीयिल्-लज़ी युअ्मिनु बिल्लाहि व कलिमातिही वत्तबिअ़ूहु लअ़ल्लकुम् तह्तदून (१५८)

★ रु. १६ | ६ आ ६

قال الملاء ١٢٥ الاعراف ٧

رَّحِيمٌ ۝ وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَاحَ ۖ وَفِي
نُسْخَتِهَا هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ ۝ وَاخْتَارَ
مُوسَى قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا لِّمِيقَاتِنَا ۚ فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ
رَبِّ لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُم مِّن قَبْلُ وَإِيَّايَ ۖ أَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ
السُّفَهَاءُ مِنَّا ۖ إِنْ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا مَن تَشَاءُ وَتَهْدِي
مَن تَشَاءُ ۖ أَنتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا ۖ وَأَنتَ خَيْرُ الْغَافِرِينَ ۝
وَاكْتُبْ لَنَا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا هُدْنَا إِلَيْكَ ۚ
قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ مَنْ أَشَاءُ ۖ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ
فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُم بِآيَاتِنَا
يُؤْمِنُونَ ۝ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ
مَكْتُوبًا عِندَهُمْ فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنجِيلِ يَأْمُرُهُم بِالْمَعْرُوفِ وَ
يَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ
وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا
بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنزِلَ مَعَهُ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ۝ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا
الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ
فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَكَلِمَاتِهِ

ع

منزل ٢

और फिर जब मूसा का ग़ुस्सा ठण्डा हुआ तो (उन्होंने) तख़्तियों को उठा लिया और जो कुछ उनमें लिखा था उसमें उन लोगों के लिए जो अपने परवरदिगार से डरते हैं हिदायत (पथप्रदर्शन) थी और दया थी। (१५४) और मूसा ने हमारे वादे के नियत समय पर लाने के लिये अपनी जाति में से ७० आदमी चुने§ फिर जब उनको भूचाल ने आ घेरा तो मूसा ने प्रार्थना की कि ऐ परवरदिगार! अगर तू चाहता तो उन्हें और मुझे पहले ही से हलाक (नष्ट) कर देता। क्या तू हममें से चन्द मूर्खों की एक हरकत के कारन हमको नष्ट कर देगा? यह सब (तो) तेरा आज़माना है, इसके ज़रिये तू जिसे चाहे उसे विचलाये और जिसको चाहे उसे राह दे। तू ही हमारा सँभालनेवाला है सो तू हमारे गुनाह माफ़ कर और हम पर रहम कर, और तू सबसे अच्छा बख़्शनेवाला है। (१५५) और इस दुनिया में और आख़िरत में भी हमारे लिए भलाई लिख दे, हम तो तेरी तरफ़ लग गये हैं। अल्लाह ने फ़र्माया कि मेरा अज़ाब उसी पर आता है जिस पर मैं चाहूँ और मेरी दया तो सब चीज़ों पर (एक-सी) है। तो हम उस (दया) को उन लोगों के लिए लिख देंगे जो मेरा डर रखते हैं और ज़कात देते और जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं। (१५६) वह जो ताबेदार उस रसूल के हुये जो उम्मी (बे पढ़े लिखे) पैग़म्बर हैं और जिनका (ज़िक्र) अपने यहाँ तौरात और इन्जील में लिखा हुआ पाते हैं और जो उनको अच्छे काम का हुक्म देता है और बुरे (काम) से मना करता है और सब पाक चीज़ों को उनके लिए हलाल ठहराता और नापाक चीज़ों को उन पर हराम करता है और उनके बोझ और तौक़ (वे तमाम अन्धविश्वास व ग़ैर मुनासिब दस्तूर क़ायदे जिनमें वे फँसे थे उनके बन्धन) उन पर से दूर करता है; सो जो लोग उस (मुहम्मद स० की पैग़म्बरी) पर ईमान लाये और उसकी हिमायत की और उसको मदद दी और जो रोशनी (यानी क़ुर्आन) उसके ज़रिये उतारी गई है उसका अनुसरन किया, तो यही लोग हैं जो (दुनिया व आख़िरत में) सफल रहे। (१५७)★

★ रु. १९/९ आ ६

(ऐ पैग़म्बर! तुम) कहो कि लोगो! मैं तुम सबकी तरफ़ उस अल्लाह का भेजा हुआ हूँ जिसकी बादशाही तमाम आसमानों और ज़मीन में है। उसके सिवाय और कोई पूजित नहीं, (वही) जिलाता और मारता है तो (लोगो!) अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके भेजे हुये नबी बिना पढ़े (मोहम्मद स०) पर कि जो अल्लाह और उसकी सब किताबों पर ईमान रखते हैं और उन्हीं की पैरवी करो, शायद तुम सीधी राह पर आ जाओ। (१५८)

§ इसराईल की सन्तानों ने कहा था कि मूसा अ० अपने मन से एक पुस्तक गढ़ लाये हैं। हम तो तब इसे ख़ुदा की ओर से उतरी मानें जब मूसा अ० और ख़ुदा से हमारे सामने बातें हों। मूसा अ० ७० आदमियों को लेकर पहाड़ पर गये। ये लोग बछड़ा पूजने के कारन अपने परवरदिगार से अपने गुनाहों की माफ़ी माँगने गये थे, लेकिन वहाँ पहुँचने पर जब उन्होंने मूसा अ० से अल्लाह का कलाम सुना तो कहने लगे "हम ख़ुदा को प्रत्यक्ष देखें तो मानें।" इस पर एक बिजली ने उनको जलाकर राख कर दिया।

व मिन् क़ौमि मूसा अुम्मतुंय्यह्दून बिल्हक़्क़ि व बिही यअ्.दिलून (१५९) व क़त्तअ्.ना - हुमुस्नती अश्रत अस्बातन् अुममन् त़ व औहैना अिला मूसा अिजिस्तस्क़ाहु क़ौमुहू अनिज़्रिब् बिअ़साकल्-ह़जर ज् फ़म्बजसत् मिन्हुस्नता अश्रत अ़ैनन् त़ क़द् अ़लिम कुल्लु अुनासिम् - मश्रबहुम् त़ व ज़ल्लल्ना अ़लैहिमुल् - ग़माम व अन्ज़ल्ना अ़लैहिमुल्-मन्न वस्सल्वा त़ कुलू मिन् तैयिबाति मा रज़क़्नाकुम् त़ व मा ज़लमूना व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (१६०) व अिज् क़ील लहुमुस्कुनू हाजिहिल्क़र्यत व कुलू मिन्हा ह़ैसु शिअ्तुम् व क़ूलू ह़ित्ततुँवद्-ख़ुलुल्बाब सुज्जदन्नग़्फ़िर् लकुम् ख़ती-आतिकुम् त़ सनज़ीदुल् - मुह़्सिनीन (१६१) फ़बद्दलल्लज़ीन ज़लमू मिन्हुम् क़ौलन् ग़ैरल्लज़ी क़ील लहुम् फ़अर्सल्ना अ़लैहिम् रिज्ज़म्-मिनस्समाअि बिमा कानू यज़्लिमून (१६२) ★ वस्अल्हुम् अ़निल्क़र्यतिल्लती

قال الملاء ۹ ١٣٦ الاعراف ۷

وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝ وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ۝ وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ؕ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗٓ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ وَاِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْٓـٰٔتِكُمْ ؕ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ۝ وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۚ كَذٰلِكَ ۚ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝ وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمَا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖٓ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ بَـِٔيْسٍۭ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً

منزل ٢

कानत् ह़ाज़िरतल् - बह़्रि म • अिज् यअ्.दून फ़िस्सब्ति अिज् तअ्तीहिम् ह़ीतानुहुम् यौम सब्तिहिम् शुर्रअ़ौंव यौम ला यस्बितून ला ला तअ्तीहिम् ज् ∴ कज़ालिक ज् ∴ नब्लूहुम् बिमा कानू यफ़्सुक़ून (१६३) ●

नि'

व अिज् क़ालत् अुम्मतुम् - मिन्हुम् लिम तअिज़ून क़ौमन् ला अल्लाहु मुह्लिकुहुम् औ मुअ़ज्ज़िबुहुम् अ़ज़ाबन् शदीदन् त़ क़ालू मअ़्ज़िरतन् अिला रब्बिकुम् व लअ़ल्लहुम् यत्तक़ून (१६४) फ़लम्मा नसू मा ज़ुक्किरू बिही अन्जैनल्लज़ीन यन्हौन अ़निस्सूअि व अख़ज़्नल्लज़ीन ज़लमू बिअ़ज़ाबिम् - बअीसिम् - बिमा कानू यफ़्सुक़ून (१६५) फ़लम्मा अ़तौ अ़म्मा नुहू अ़न्हु क़ुल्ना लहुम् कूनू क़िरदतन् ख़ासिअीन (१६६)

रु. २० १८ आ. ५ • व. ला. जि म ∴ मु. अ़ि मु ता ख़. ६ ● नि १/२

और मूसा की जाति में से कुछ लोग ऐसे हैं जो सच्ची राह बताते हैं और सच ही के बमूजिब न्याय करते हैं। (१५९) और हमने उनको (यानी याक़ूब के बेटों को) बाँटकर एक-एक दादा की संतान के बारह क़बीले (गिरोह) बना दिये और जब मूसा से उसकी जाति ने पानी माँगा तो हमने मूसा की तरफ़ वही (अल्लाह का पैग़ाम) भेजा कि अपनी लाठी इस पत्थर पर मारो। तो (लाठी का मारना था कि) पत्थर से बारह सोते (चश्मे) फूट निकले। हर एक क़बीले ने अपना-अपना घाट मालूम कर लिया और हमने याक़ूब के बेटों पर बादल की छाया की और उन पर मन और सलवा उतारा कि यह सुथरी रोज़ी है जो हमने तुमको दी है उसे खाओ। और उन लोगों ने (उदूलहुक्मी की तो उससे) हमारा कुछ नुक़सान नहीं किया बल्कि अपना ही नुक़सान करते रहे।§ × (१६०) और जब उन (इसराईल‡ के बेटों) को आज्ञा दी गई कि इस गाँव (उरीहा) में जा बसो और इसमें से जहाँ से तुम्हारा जी चाहे खाओ और हित्तुन (गुनाह को माफ़ कर) कहते जाना और दरवाज़े में सिजदः करते हुए दाख़िल होना तो हम आगे तुम्हारे अपराध क्षमा कर देंगे और नेकों को और ज़्यादा भी देंगे। (१६१) तो जो लोग उनमें से ज़ालिम थे उन लोगों ने वह दुआ जो उनको सिखाई गई थी बदल दिया (और उनकी जगह कुछ और कहने लगे) फिर हमने उनकी शरारत के बदले आसमान से उन पर अज़ाब उतारा।छ(१६२) ★

★ रु. २० / १० आ ५

और उन (इसराईल के बेटों) से उस बस्ती का हाल पूछो जो नदी के किनारे थी ●। जब वहाँ के लोग सनीचर के दिन (अन्याय करने में) हद से बढ़ने लगे कि जब उनके सनीचर (मनाने) का दिन होता तो मछलियाँ उनके सामने आकर पानी के ऊपर जमा होतीं और जब उनके सनीचर (मनाने) का दिन न होता तो न आतीं। यों उन्हें (लालच दिखाकर) आज़माने लगे इसलिए कि यह लोग हुक्म न माननेवाले थे@। (१६३) ● और जब इनमें से एक जमात ने कहा जिन लोगों को अल्लाह हलाक (नष्ट) करना या उनको कठिन अज़ाब में फँसाना चाहता है तुम उनको क्यों उपदेश देते हो। तो उन्होंने उत्तर दिया कि तुम्हारे परवरदिगार के सामने अपने का बरी करने के लिए और (इसलिए कि) शायद यह लोग डरें (और राह पर आजायें)†। (१६४) तो जब वह नसीहतें जो उनको की गई थीं वे भुला बैठे तो जो लोग बुरे काम से मना करते थे उनको हमने बचा लिया और ज़ालिमों को उनकी बेहुक्मी के बदले हमने सख़्त अज़ाब में धर पकड़ा। (१६५) फिर जिस काम से उनको मना किया गया था जब उसमें हद से बढ़ गये तो हमने उनको हुक्म दिया कि फिटकारे हुए बन्दर बन जाओ। (१६६)

● व. ला जि म ● नि. १/२

§ देखें पेज ३७ फुटनोट § और †.आयत ५७-५८ सूरे बक़र। × बिना मेहनत मिलने वाले उस मन और सलवा के भोजन को रोज़ लेना भी उनको खलने लगा और आलस में उसे बजाय नित ताज़ी खाने का प्रबन्ध करने के यह लोग उसको जमा करके रखने और बासी खाने लगे। बासी ख़ुराक बुरी लगने पर उसके एवज़ में उन्होंने दूसरी ग़िज़ा के लिए अल्लाह से फ़रमाइश की। नतीजा यह हुआ कि घटिया चीज़ें मिल गईं और उन बढ़िया चीज़ों से महरूम (वञ्चित) हो गये। ‡ इसराईल की संतान यानी याक़ूब के बारह बेटे। इन बेटों की संतान अलग-अलग एक-एक क़बीला है। छ उनसे कहा गया था कि हित्तुन (हमारी तौबः है) कहते व अल्लाह से माफ़ी मांगते रहो। लेकिन उन्होंने हित्तुन के बजाय, हुक्म के ख़िलाफ़, हिन्तुन कहना शुरू किया जिसके माने गेहूँ है। याने तौबः करने के बजाय रोटी के ही चक्कर में पड़ गये जो अल्लाह के यहाँ से बतौर रोज़ी हमेशा मयस्सर है। अल्लाह की इस नाशुकी के बदले उन पर आसमान से अज़ाब उतरा। @ देखें पेज ३६ फ़ुटनोट § आयत ६४ सूरे बक़र। † उस बस्ती में अल्लाह के हुक्म पर चलने वाले भी थे जिनमें एक वे थे जो इन सनीचर की हराम (वर्जित) शिकार करने वालों की नसीहत करके हार [पेज २९६ पर]

व अिज् तअज्जन रब्बुक लयब्असन्न अलैहिम् अिला यौमिल्क़ियामत्ति मैंयसूमुहुम् सूअल्अजाबि त् अिन्न रब्बक लसरीअुल्-अिक़ाबि ज् स.ला व अिन्नहु लग़फ़ूरुर्-रहीमुन् (१६७) व क़त्तऽनाहुम् फ़िल्अर्ज़ि अुममन् ज् मिन्हुमुस्सालिहून व मिन्हुम् दून जालिक ज् व बलौनाहुम् बिल्हसनाति वस्सैयिआति लअ़ल्लहुम् यर्जिअून (१६८) फ़ख़लफ़ मिम्बऽदि हिम् ख़ल्फ़ुँवरिसुल् - किताब यअ्ख़ुज़ून अरज़ हाजल्अद्‌ना व यक़ूलून सयुग़्फ़रु लना ज् व अीयअ्तिहिम् अरज़ुम् - मिस्लुहु यअ्ख़ुज़ूहु त् अलम् युअ्ख़ज् अलैहिम् मीसाक़ुल्किताबि अल्ला यक़ूलू अलल्लाहि अिल्लल्हक़्क़ व दरसू मा फ़ीहि त् वद्दारुल्आख़िरतु ख़ैरुलिल्लजीन यत्तक़ून त् अफ़ला तऽक़िलून (१६९) वल्-लजीन युमस्सिकून बिल्किताबि व अक़ामुस्-सलात त् अिन्ना ला नुज़ीअ़ु अज्रल्-मुस्लिहीन (१७०) व अिज् नतक़्नल्जबल फ़ौक़हुम् कअन्नहु जुल्लवुँव जन्नू अन्नहु वाक़िअुम्-बिहिम् ज् ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बिक़ूवविंव्वज्कुरू मा फ़ीहि लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून (१७१) ★ व अिज् अख़ज रब्बुक मिम्बनी आदम मिन् ज़ुहूरिहिम् जुर्रीयतहुम् व अश्हदहुम् अला अन्फ़ुसिहिम् ज् अलस्तु बिरब्बिकुम् त् क़ालू बला ज् ∴ शहिद्‌ना ज् ∴ अन् तक़ूलू यौमल्क़ियामत्ति अिन्ना कुन्ना अन् हाजा ग़ाफ़िलीन ला (१७२) औ तक़ूलू अिन्नमा अश्रक आबाअुना मिन् क़ब्लु व कुन्ना जुर्रीयत्तम् - मिम्बऽदिहिम् ज् अफ़तुह्लिकुना बिमा फ़अ़लल् - मुब्तिलून (१७३) व कजालिक नुफ़स्सिलुल् - आयाति व लअ़ल्लहुम् यर्जिअून (१७४) वत्लु अलैहिम् नबअल्लजी आतैनाहु आयातिना फ़न्सलख़ मिन्हा फ़अत्बअहुश् - शैतानु फ़कान मिनल्ग़ावीन (१७५)

قال الملا ٩ ١٣٧ الاعراف ٧

خٰسِـِٕيْنَ ۝ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ
يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖۚ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝ وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ
دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝
فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا
الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ؕ
اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ
وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا
تَعْقِلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا
نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ۝ وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ
وَّظَنُّوْٓا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝ وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِىْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ
ذُرِّيَّتَهُمْ وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى ۛۚ
شَهِدْنَا ۛۚ اَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ۝ۙ اَوْ
تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اَشْرَكَ اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ
اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِىْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ

منزل ٢

★ रु. २१/११ आ. ६ ∴ मु. अ्रि मु ता ख़. ७

और वह समय याद करो जब तुम्हारे परवरदिगार ने जता दिया था कि वह ज़रूर उन पर क़ियामत के दिन तक ऐसे लोगों को मुक़र्रर रखेगा जो उनको बुरी तकलीफ़ें पहुँचाते रहेंगे। तुम्हारा परवरदिगार जल्द सज़ा देनेवाला है (लेकिन) वह बेशक माफ़ करनेवाला बेहद मेहरबान भी है।(१६७) और हमने यहूद को गिरोह-गिरोह करके ज़मीन में अलग अलग कर दिया है। उनमें से कुछ भले थे और कुछ (भले नहीं बल्कि) दूसरी तरह के थे और हमने उनको सुख और दुख से आज़माया शायद वह (हमारी तरफ़) रुजू हो जाँय। (१६८) फिर उनके बाद ऐसे नाख़लफ़ लोग जानशीन हुये जो किताब के वारिस बने कि इस नाचीज़ ज़िन्दगी के सामान समेटते और कहते हैं कि (यह तौरात के हुक्मों में घटा बढ़ी करने का गुनाह तो) हमारा माफ़ हो जायगा (क्योंकि हम अल्लाह के प्यारे हैं) और अगर इसी तरह की कोई सांसारिक (लाभ की) वस्तु उनके सामने फिर आ जावे तो उसे भी ले लेवें§ क्या इन लोगों से वह अहद जो किताब (तौरात) में लिखी है नहीं हुई कि सच बात के सिवाय दूसरी बात अल्लाह की तरफ़ से न कहेंगे और जो कुछ उसमें है वे उसको पढ़ चुके हैं। और जो लोग परहेज़गार हैं आख़िरत का घर उनके हक़ में कहीं अच्छा है। (ऐ याक़ूब के बेटो!) क्या तुम समझते नहीं? (१६९) और (बनी इसराईल में से) जो लोग किताब (की हिदायत) को मज़बूती से पकड़े हुए हैं और नमाज़ क़ायम रखते हैं तो हम ऐसे अच्छे काम करने वालों के सवाब को ख़त्म नहीं होने देंगे। (१७०) और (ऐ पैग़म्बर! यहूद को वह समय भी याद दिलाओ) जब हमने उन (के पुरखों) पर पहाड़ को इस तरह जा लटकाया कि गोया वह सायवान था और वे समझे कि वह उन पर आ गिरेगा, (तो हमने कहा) जो (किताब) हमने तुमको दी है उसे मज़बूती के साथ लिए रहना और जो कुछ उसमें है उसे याद रखना। (ऐसा करने पर) शायद तुम परहेज़गार बन जाओ। (१७१) ★

★ रु. २१ — ११ आ ६

और (याद दिलाओ वह समय) जब तुम्हारे परवरदिगार ने आदम के बेटों की पीठों से उनकी औलाद को निकाला था और उनके मुक़ाबले में (अल्लाह ने) उन्हीं को गवाह बनाया (और पूछा) "क्या मैं तुम्हारा परवरदिगार नहीं हूँ?" सब बोले हाँ हम मानते हैं। यह गवाही हमने इसलिए ली कि क़ियामत के दिन कहीं (यह) न कहने लगो कि हमको इस बात की ख़बर ही न थी। (१७२) या (यूँ) कहने लगो कि शिर्क (अल्लाह का साझी ठहराना) तो हमारे पुरखों ही ने निकाला था और हम तो उनके बाद उन्हीं की सन्तान हुये तो (ऐ अल्लाह!) क्या तू हमको उन गुनाहों के जुर्म के बदले में हलाक करता है जिनको करनेवाले गुनहगार (दूसरे) थे? (हमने तो सिर्फ़ जैसा बड़ों को करते देखा वैसा किया)। (१७३) और इसी तरह आयतों को हम तफ़सील के साथ बयान करते हैं कि शायद वह (नेक राह पर) फिरें (१७४) और (ऐ पैग़म्बर!) इन लोगों को उस शख़्श का हाल पढ़कर सुनाओ कि हमने उसको अपनी (आयतें) दीं फिर वह उन आयतों (पर अमल करने) को छोड़ बैठा फिर शैतान उसके पीछे लगा और (उसके बहकाने में) वह गुमराहों (भूले हुओं) में हो गया।‡ (१७५)

§ कुछ दिनों बाद यहूदियों में ऐसे लोगों की महन्ती आगई कि वे अपने दुनिआवी फ़ायदों के लिए तौरात के हुक्मों के ख़िलाफ़ मनमाने हुक्मों को अल्लाह या तौरात का हुक्म बनाकर लोगों को ठगने लगे।

‡ यह कौन शख़्स था? इसके बारे में क़ुर्आन ख़ामोश है। और लोगों ने मुख़्तलिफ़ इशारे किये हैं। लेकिन मुफ़स्सिरीन (भाष्यकारों) की राय है कि वह एक आम मिसाल है कि जब किसी दीनदार को अल्लाह की सच्ची निशानियां मिल चुकें और उसके बाद भी वह उन पर से ध्यान गवाँ बैठे तो शैतान उसको बहकाकर गुमराहों—गुनहगारों में शरीक करा देता है।

व लौ शिअ्‌ना लरफ़अ्‌नाहु बिहा व लाकिन्नहू' अख़्लद अिलल्‌अर्ज़ि वत्तबअ़ हवाहु ज् फ़मसलुहू कमसलिल्कल्बि ज् अिन् तह्‌मिल् अ़लैहि यल्‌हस् औ ततरुक्‌हु यल्‌हस् त् ज़ालिक मसलुल् - क़ौमिल्लज़ीन कज़्ज़बू बिआयातिना ज् फ़क़्‌सुसिल्-क़सस लअ़ल्लहुम् यतफ़क्करून (१७६) सा'अ मसलनिल् - क़ौमुल्लज़ीन कज़्ज़बू बिआयातिना व अन्फ़ुसहुम् कानू यज़्‌लिमून (१७७) मैंयह्‌दिल्लाहु फ़हुवल्-मुह्‌तदी ज् व मैंयुज़्‌लिल् फ़अुला'अिक हुमुलख़ासिरून (१७८) व लक़द् ज़रअ्‌ना लिजहन्नम कसीरम् - मिनल्‌जिन्नि वल्-अिन्सि ज् सला लहुम् क़ुलूबुल्ला यफ़्क़हून बिहा ज् व लहुम् अअ्‌युनुल्ला युब्सिरून बिहा ज् व लहुम् आज़ानुल्ला यस्मअ़ून बिहा' त् अुला'अिक कल्‌अन्‌आमि बल् हुम् अज़ल्लु त् अुला'अिक हुमुलग़ाफ़िलून (१७९) व लिल्लाहिल् - अस्मा'अुल्-हुस्ना फ़द्‌अ़ूहु बिहा त् व ज़रुल्लज़ीन युल्‌हिदून फ़ी' अस्मा'अिही त् सयुज्ज़ौन मा कानू यअ़्मलून (१८०) व मिम्मन् ख़लक़्ना' अुम्मतुँय्यह्‌दून बिल्‌हक़्क़ि व बिही यअ़्दिलून (१८१) ★ वल्लज़ीन कज़्ज़बू बिआयातिना सनस्तद्-रिजुहुम् मिन् हैसु ला यअ़्लमून ज् सला (१८२) व अुम्ली लहुम् त् क़िफ़ अिन्न कैदी मतीनुन् (१८३) अवलम् यतफ़क्करू सक्‌: मा बिसाहिबिहिम् मिन् जिन्नतिन् त् अिन् हुव अिल्ला नज़ीरुम्मुबीनुन् (१८४) अवलम् यन्ज़ुरू फ़ी मलकूतिस्-समावाति वल्‌अर्ज़ि व मा ख़लक़ल्लाहु मिन् शैअिन् ला ᵒव अन् असा' अैंयकून क़दिक़्तरब अजलुहुम् ज् फ़बिअैयि हदीसिम्बअ़्दहू युअ्‌मिनून (१८५)

रु. २२ | १२ आ १०

قال الملاء ٩ ۝ ٢٣٨ ۝ الاعراف ٧

مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ۝ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ
بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ
الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُ
الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ
يَتَفَكَّرُوْنَ ۝ سَآءَ مَثَلَاۨ الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ
كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ۝ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ
وَالْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ
بِهَا ۫ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ
اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ۝ وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ
بِهَا ۪ وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ؕ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝ وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ
يَعْدِلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَاُمْلِيْ لَهُمْ ؕ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ۝ اَوَلَمْ
يَتَفَكَّرُوْا ٜ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝
اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ
مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَيِّ

منزل ٢

और अगर हम चाहते तो आयतों के ज़रिये (उसका दर्जा) ऊँचा करते मगर उसने तो नीचे में गिरना चाहा और अपने दिल की ख़्वाहिशों के पीछे लग गया; तो उसका हाल कुत्ते जैसा हो गया कि अगर उसको खदेर दोगे तो जीभ बाहर लटकाये रहे और अगर उसको (उसी की दशा पर) छोड़े रखो तो भी जीभ लटकाये रहे। यह मिसाल उन लोगों की है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, तो (ऐ पैग़म्बर! उनसे) यह क़िस्से बयान करो शायद वे ध्यान दें। (१७६) जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया उनकी बुरी कहावत है और (ऐसा करने में) वह अपना ही बिगाड़ते हैं। (१७७) जिनको अल्लाह राह दिखाये वही राह पाते हैं और जिनको वह गुमराह करे वही लोग घाटे में हैं। §(१७८) और हमने बहुतेरे जिन्न और मनुष्य दोज़ख़ ही (को आबाद करने) के लिए पैदा किये हैं। उन (अज्ञानियों) के दिल तो हैं (मगर) उनसे समझते नहीं और (उनके) आँखें हैं (मगर) उनसे देखते नहीं और (उनके) कान हैं मगर उनसे सुनते नहीं। (मतलब यह कि) यह लोग (विना सींग पूँछ के) पशुओं की तरह हैं बल्कि उनसे भी ज्यादा भटके हुए यही बेखबर हैं। (१७९) और अल्लाह के अच्छे-अच्छे नाम हैं तो (जिस नाम से चाहो) वह नाम लेकर उसको पुकारो और जो लोग उसके नामों में कजी निकालते हैं उनको छोड़ दो, वह अपने किये का अन्जाम पावेंगे। (१८०) और हमारी सृष्टि में ऐसे लोग भी हैं जो सच्ची राह बताते हैं और उसी के अनुसार इंसाफ़ भी करते हैं। (१८१)★

★ रु. २२ १२ आ १०

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, (हम) उन्हें इस तरह पर कि उनको पता भी न चले, धीरे-धीरे (दोज़ख़ की तरफ़) ले जायेंगे। (१८२) और मैं उनको (संसार में) मोहलत दूँगा, बेशक मेरी तदबीर पक्की है। (१८३) क्या इन लोगों ने ख़्याल नहीं किया कि इनके साथी को (यानी इन लोगों में के ही मुहम्मद स० को) किसी तरह का जनून (पागलपन) तो है नहीं। यह तो बस साफ़ (अल्लाह के अज़ाब से) डरानेवाला है। (१८४) क्या (इन लोगों ने) आसमान और ज़मीन की सल्तनत में और अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ों पर नज़र नहीं की और न इस बात पर ध्यान देते हैं कि आश्चर्य नहीं इनकी (मौत की) घड़ी आ लगी हो। तो अब इस (रसूल स० की चेतावनी) के बाद और कौनसी बात हो सकती है जिसपर ये ईमान ले आवेंगे। (१८५)

§ क़ुर्आन में यह जगह जगह आया है कि, "अल्लाह ही समरथ है कि जिसको चाहे राह दे, जिसको चाहे गुमराह करे और जिसको चाहे गुनाहों के बदले बख़रा भी दे।" अक्सर लोग एतराज़ कर बैठते हैं कि "जब अल्लाह ही सब करनेवाला है तब फिर इन्सान गुनहगार कैसा और उसकी हस्ती क्या है?" यह एतराज़ नादानी का है। आबिद (भक्त), माबूद (भजनीय) की बाबत अिबादत (भक्ति) में झूमकर ऐसे कलमे कहता है। अल्लाह सर्वशक्तिमान है इसमें किसको शक हो सकता है। लेकिन जगह जगह यह भी लिखा है कि उसी सर्वशक्तिमान अल्लाह के कुछ हुक्म भी हैं। उन पर चलने और उनको भूलने पर याने हमारे अमलों पर ही अल्लाह हमारे हक़ में अच्छा-बुरा फ़ैसला करता है। हमारे रास्ते से भटकने पर एक बड़ी हद तक माफ़ भी करता है, यह उसकी हम पर रहमत है। "वही सब करने वाला है।" इससे यह मंशा है कि इन्सान की मनमानी नहीं चल सकती। गुनाह के बदले सवाब और सवाब के बदले गुनाह हासिल कर लेने में इन्सान का ज़ोर नहीं है। वह अल्लाह ही क़ादिर (समर्थ) है कि राह दिखाये या हमारे आमालों से हमको क़तई नालायक़ समझकर राह बन्द कर दे। मैं समझता हूँ, दुनिया के किसी मज़हब वाले को इसमें मतभेद नहीं।

मैंयुज़्लिलिल्लाहु फ़ला हादिय लहू त्‌ व यज़रुहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्‌महून (१८६) यस्अलूनक अ़निस्साअ़ति अैयान मुर्साहा त् क़ुल् अिन्नमा अ़िल्मुहा अ़िन्द रब्बी ज् ला युजल्लीहा लिवक़्तिहा अिल्ला हुव त् म् ● सक़ुलत् फ़िस्समावाति वल्‌अर्ज़ि त् ला तअ्‌तीकुम् अिल्ला बग़्तवन् त् यस्अलूनक कअन्नक हफ़ीयुन् अ़न्हा त् क़ुल् अिन्नमा अ़िल्मुहा अ़िन्दल्लाहि व लाकिन्न अक्सरन्नासि ला यअ्‌लमून (१८७) क़ुल् ला अम्लिकु लिनफ़्सी नफ़्अ़ौंव ला ज़र्रन् अिल्ला मा शा'अल्लाहु त् व लौ कुन्तु अअ्‌लमुल्ग़ैब लस्तक्सर्तु मिनल्ख़ैरि ज् सला ∴ व मा मस्सनियस्सू'अु ज् ∴ अिन् अना अिल्ला नज़ीरुंव बशीरुल् - लिक़ौमीं - युअ्‌मिनून (१८८) ★ हुवल्लज़ी ख़लक़कुम् मिन् नफ़्सिंव्वाहिदतिंव्व जअ़ल मिन्हा ज़ौजहा लियस्कुन अिलैहा ज् फ़लम्मा तग़श्शाहा हमलत् हम्लन् ख़फ़ीफ़न् फ़मर्रत् बिही ज् फ़लम्मा अस्क़लद्‌ - दअ़वल्लाह रब्बहुमा लअिन् आतैतना सालिहल् - लनकूनन्न मिनश्शाकिरीन (१८९) फ़लम्मा आताहुमा सालिहन् जअ़ला लहू शुरका'अ फ़ीमा आताहुमा ज् फ़तअ़ालल्लाहु अ़म्मा युश्रिकून (१९०) अयुश्रिकून मा ला यख़्लुक़ु शैअौंव हुम् युख़्लक़ून ज् सला (१९१) व ला यस्ततीअ़ून लहुम् नस्रौंव ला अन्फ़ुसहुम् यन्सुरून (१९२) व अिन् तद्‌अ़ूहुम् अिलल्हुदा ला यत्तबिअ़ूकुम् त् सवा'अुन् अ़लैकुम् अदअ़ौतुमूहुम् अम् अन्तुम् सामितून (१९३) अिन्नल्लज़ीन तद्‌अ़ून मिन् दूनिल्लाहि अ़िबादुन् अम्सालुकुम् फ़द्‌अ़ूहुम् फ़ल्यस्तजीबू लकुम् अिन् कुन्तुम् सादिक़ीन (१९४)

حَدِيْثٍ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ۝ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝ يَسْــَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَاۤ اِلَّا هُوَ ؔ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ؕ يَسْــَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ لَّاۤ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۛۚ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْٓءُ ۛۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّاۤ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ فَلَمَّاۤ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَاۤ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۝ وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَاۤ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ۝ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

منزل

व. ला जि म् व. मं जिल

∴ मु. अ़ि मु ता ख. ८ ★ रु. २३/१३ आ ७

जिसको अल्लाह गुमराह करे तो फिर उसका कोई भी राह दिखाने वाला नहीं और वह उनको छोड़े रखता है कि अपनी सरकशी में पड़े भटका करें। (१८६) (ऐ पैग़म्बर ! लोग) तुमसे क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि उसके आने का वक़्त कब है। तुम जवाब दो कि उसका इल्म तो मेरे परवरदिगार ही को है। बस वही उसको उसके वक़्त पर ला दिखावेगा ●। वह एक बड़ी भारी बात (दुर्घटना) आसमान और ज़मीन में होगी। (क़ियामत) आवेगी तो तुम पर अचानक आवेगी। (ऐ पैग़म्बर !) यह लोग तुमसे (क़ियामत का हाल) ऐसे पूछते हैं गोया तुम उसकी खोज में लगे रहते हो। (तो इनसे) कहो कि इसकी मालूमात तो बस अल्लाह ही को है लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते। (१८७) (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो मैं अपने भले और बुरे का कुछ भी मालिक नहीं, सिवाय (यह कि) जो अल्लाह चाहे। और अगर मैं ग़ैब (परोक्ष) की बात जानता होता तो अपना बहुत-सा भला कर लेता, और मुझको (किसी तरह की) बुराई न पहुँचती, मैं तो ईमान लाने वालों को बस (दोज़ख़ का) डर और (जन्नत की) ख़ुशख़बरी सुनानेवाला हूँ। (१८८) ★

● व. ला व. मंज़िल

★ रु. २३ १३ आ ७

(ऐ लोगो !) वही जिसने तुमको एक जान से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा बनाया ताकि वह उससे सुख हासिल करे, फिर जब पुरुष का स्त्री से साथ हुआ तो एक हल्का-सा गर्भ रह जाता है फिर वह उस (गर्भ को) लिए चलती फिरती है। फिर जब (गर्भ के कारण) ज़्यादा बोझ हो गया तो (मियाँ-बीवी) दोनों ने अल्लाह, अपने परवरदिगार से दुआ माँगी कि (ऐ अल्लाह !) अगर तू हमको भला चंगा (बच्चा) देगा तो हम तेरा बड़ा इहसान मानेंगे। (१८९) फिर जब उनको भला चंगा (बच्चा) दिया तो उसमें से जो अल्लाह ने उनको दिया था, वे अल्लाह का शरीक ठहराने लगे; तो उनके शिर्क (यानी पूजितों) से अल्लाह की शान बहुत ऊँची है। (१९०) क्या वह ऐसे को (अल्लाह का) शरीक बनाते हैं जो किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते और ख़ुद (अल्लाह के) पैदा किये हुए हैं। (१९१) और वह (यानी बुत) न इनकी मदद करने की ताक़त रखते हैं और न आप अपनी मदद कर सकते हैं। (१९२) और अगर तुम उनको सच्चे रास्ते की ओर बुलाओ तो तुम्हारी हिदायत पर न चल सकें, चाहे तुम उनको बुलाओ या चुप रहो (दोनों बातों का नतीजा) तुम्हारे लिए बराबर है। (१९३) (ऐ मुशरिको ! तुम) अल्लाह के सिवाय जिन लोगों को बुलाते हो (वह भी) तुम-जैसे बन्दे हैं, अगर तुम (शिर्क में) सच्चे हो तो उन्हें पुकारो, देखो कि वह तुम्हें जवाब भी देते हैं (या बोल ही नहीं पाते)। (१९४)

[पेज २६३ से] चुके थे और अब ख़ामोश थे। दूसरे वे जो अब भी उन्हें नसीहत देते थे। पहले वालों ने दूसरों से कहा कि ये हद से बढ़े गुनहगार अल्लाह के अज़ाब में पड़ने ही वाले हैं, क्यों इनको बेकार नसीहत देते हो ? इस पर दूसरे गरोह ने कहा कि इसलिए कि अल्लाह के सामने हम पर यह इल्ज़ाम न रहे कि हमने अन्त तक इनको नसीहत करने में कोताही की और इसलिए भी कि शायद ये अब भी सुधर जाँय।

अलहुम् अर्जुलुंय्यम्शून बिहा ज़् अम् लहुम् ऐदींयब्तिशून बिहा ज़् अम् लहुम् अअ्‌युनुंय्युब्सिरून बिहा ज़् अम् लहुम् आजानुंय्यस्मऊन बिहा त़् क़ुलिद्‌ऊ शुरकाअ कुम् सुम्म कीदूनि फ़ला तुन्जिरूनि (१९५) अिन्न वलीयि यल्लाहुल्लज़ी नज़्ज़लल् - किताब ज़् सला व हुव यतवल्लस्सालिहीन (१९६) वल्लजीन तद्‌ऊन मिन् दूनिही ला यस्ततीऊन नस्रकुम् व ला अन्फ़ुसहुम् यन्सुरून (१९७) व अिन् तद्‌ऊहुम् अिलल्हुदा ला यस्मऊ त़् व तराहुम् यन्जुरून अिलैक व हुम् ला युब्सिरून (१९८) ख़ुजिल्‌अफ़्‌व वअ्‌मुर् बिल्‌उर्फ़ि व अअ्‌रिज़् अनिल्जाहिलीन (१९९) व अिम्मा यन्ज़ग़न्नक मिनश्शैतानि नज़्‌गुन् फ़स्तअिज् बिल्लाहि त़् अिन्नहू समीअुन् अलीमुन् (२००) अिन्नल्लजीनत्तक़ौ अिजा मस्सहुम् ताअिफ़ुम् - मिनश्शैतानि तजक्करू फ़अिजा हुम् मुब्सिरून ज् (२०१) व अिख़्‌वानुहुम् यमुद्दूनहुम् फ़िल्ग़ैयि सुम्म ला युक़्सिरून (२०२) व अिजा लम् तअ्‌तिहिम् बिआयतिन् क़ालू लौ लज्तबैतहा त़् क़ुल् अिन्नमा अत्तबिअु मा यूहा अिलैय मिर्रब्बी ज् हाजा बसाअिरु मिर्रब्बिकुम् व हुदौंव रह्‌मतुल्लिक़ौमीं-युअ्‌मिनून (२०३) व अिजा क़ुरिअल्-क़ुरआनु फ़स्तमिऊ लहू व अन्सितू लअ़ल्लकुम् तुर्‌हमून (२०४) वज्कुर्रब्बक फ़ी नफ़्सिक तज़र्रुऔंव ख़ीफ़तौंव दूनल्जह्‌रि मिनल्क़ौलि बिल्ग़ुदुवि वल्आसालि व ला तकुम्मिनल् - ग़ाफ़िलीन (२०५) अिन्नल्लजीन अिन्द रब्बिक ला यस्तक्बिरून अन् अिबादतिही व युसब्बिहूनहू व लहू यस्जुदून (२०६) ★ ● ▲

صٰدِقِيْنَ ۝ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ
بِهَآ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا
قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ۝ اِنَّ وَلِيِّۦَ اللّٰهُ
الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ۝
وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَسْمَعُوْا وَتَرٰىهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ
وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ۝ خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ
الْجٰهِلِيْنَ ۝ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ
اِنَّهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ
الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ۝ وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ
فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ۝ وَاِذَا لَمْ تَاْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْلَا
اجْتَبَيْتَهَا قُلْ اِنَّمَآ اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ مِنْ رَّبِّيْ هٰذَا بَصَآئِرُ
مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ وَاِذَا قُرِئَ
الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ
فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَ
الْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا
يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ۝

★ रु. २४/१४ आ १८ ● सु. ३/४ ▲ सज्दः १

क्या उनके ऐसे पाँव हैं जिनसे चलते हैं या उनके ऐसे हाथ हैं जिनसे पकड़ते हैं या उनकी ऐसी आँखें हैं जिनसे देखते हैं या उनके ऐसे कान हैं जिनसे सुनते हैं। (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि अपने (ठहराये हुए तमाम) शरीकों को बुला लो, फिर (सब मिलकर) मुझ पर अपना दाँव कर चलो और मुझको (ज़रा भी) मोहलत मत दो। (१९५) जिसने इस किताब को उतारा है यक़ीनन (निश्चय) मददगार तो वही अल्लाह है और वही नेक बन्दों की हिमायत करता है। (१९६) और उस (अल्लाह) के सिवाय जिनको तुम (अपने संकट में) पुकारते हो वह न तुम्हारी मदद कर सकते हैं और न अपनी ही मदद कर सकते हैं। (१९७) और अगर तुम उन (बुतों) को सीधे रास्ते की तरफ़ बुलाओ तो (तुम्हारी एक) न सुनें और वह तुझको ऐसे दिखलाई देते हैं कि (गोया) तेरी तरफ़ ताक रहे हैं हालाँकि वह देखते ख़ाक नहीं। (१९८) (ऐ पैग़म्बर!) माफ़ी से ख़ूब काम लो और (लोगों से) भले काम (करने) को कहो और जाहिलों (अज्ञानियों) से अलग रहो। (१९९) और अगर कभी शैतान के उभारने से तुम्हारे दिल में उभार पैदा हो तो (होश आते ही) अल्लाह से पनाह माँगो, वही (सबकी) सुनता और (सब कुछ) जानता है। (२००) जो लोग परहेज़गार हैं जब कभी शैतान की तरफ़ का कोई ख़याल उनको छू भी जाता है तो चौंक पड़ते हैं और वह उसी दम (दिल की आँखें खोलकर) देखने लगते हैं। (२०१) और जो शैतानों के भाई हैं वह इनको गुमराही में खींचे जाते हैं, फिर कोताही नहीं करते। (२०२) और जब तुम इन लोगों के पास (कुछ अरसे तक) कोई आयत नहीं लाते तो कहते हैं कि क्यों कोई आयत (अपनी तरफ़ से) तुमने न गढ़ ली। (२०३) (तो ऐ रसूल!) तुम (इनसे) कह दो कि मैं तो जो कुछ मेरे परवरदिगार के यहाँ से मेरी तरफ़ वही (ख़ुदाई पैग़ाम) आती है उसी पर चलता हूँ। यह सूझ की बातें हैं तुम्हारे रब की तरफ़ से और हिदायत और रहम है उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। और जब क़ुर्आन पढ़ा जाया करे तो उसको ध्यान से सुनो और चुप रहो, शायद तुम पर रहम हो। (२०४) और अपने दिल में गिड़गिड़ाकर और डरते हुये और धीमी आवाज़ से सुबह व शाम (यानी हर समय) अपने परवरदिगार को याद करते रहो और (इससे) ग़ाफ़िल मत रहना। (२०५) जो तुम्हारे परवरदिगार के नज़दीकी (यानी फ़रिश्ते) हैं वे भी अपने (दर्जे के) बड़प्पन में आकर उसकी बन्दगी से मुँह नहीं फेरते और उसी पाक ज़ात (अल्लाह) का जाप करते और उसी के आगे सिर नवाते हैं। (२०६) ★ ● ▲

★ रु. २४ — १४ आ १८ ● सु. ३ — ४ ▲ सजदः १

[पेज ३०३ से] दिन ब दिन मज़बूत और संगठित होते गये और मुशरिकों व उनके हमदर्द व अक्सर मददगार यहूदी व मुनाफ़िक़ों का गिराव ही होता रहा। इसलिए जंगे बद्र को 'फ़ैसला' (यानी निर्णायक) के नाम से पुकारा जाता है। पहले की ७ सूरतों में इन्सानों की पहली दीनी (आध्यात्मिक) तवारीख़ और इस्लाम की उम्मत (संगत) के क़ायम होने व रफ़्तः रफ़्तः जमने की चरचा है। अब सूरे अन्फ़ाल से उस उम्मत के जमाती फ़र्ज़ों की हिदायत व उन पर अमलों की चरचा है। इसमें दुश्मनों के हारने पर उनके माल की लूट यानी माले ग़नीमत का बयान है कि जंग इस लिए नहीं की जाती कि लूट का माल मिले। जंग तो अल्लाह के दीन के प्रचार और काफ़िरों के ज़ुल्मों से सोसाइटी को बचाने के लिए किया जाता है। और लूट का माल तो तुमको अल्लाह की ओर से बतौर इनाम देन है; वरना फ़तह तो वही अपनी मदद से दिलाता है। इसलिए इनाम के माल में झगड़ना या अपने को कम-ज्यादः का हक़दार समझना ग़लत है। पाँचवाँ हिस्सा उम्मत के चलाने व मुहताजों वग़ैरा के लिए और बाक़ी जंग में शरीक होने या मदद करनेवालों में रसूल स० के हुक्म के बमूजिब बाँटा जायगा जिसे वह ख़ुशी-ख़ुशी तस्लीम करें। दूसरा हुक्म फ़िदयः (जंग में क़ैद हुये लोगों को बदले में रुपया लेकर छोड़ देने) का है। तो जब तक कुफ़्र तहस-नहस न होजाय तब तक (माल मिलने की लालच में) क़ैद करने [पेज ३०५ पर]

☪ ८ सूरतुल्अन्फ़ालि ८८ ☪

(मदनी) इसमें अ़रबी के ५५२२ अक्षर १२५३ शब्द ७५ आयतें और १० रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीमि •

यस्अलूनक अनिल्अन्फ़ालि त् क़ुलिल्अन्फ़ालु लिल्लाहि वर्रसूलि ज् फ़त्तक़ुल्लाह व अस्लिहू जात बैनिकुम् स् व अतीउल्लाह व रसूलहू अिन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (१) अिन्नमल् - मुअ्मिनूनल्लजीन अिजा जुकिरल्लाहु वजिलत् क़ुलूबुहुम् व अिजा तुलियत् अलैहिम् आयातुहू ज़ादत्हुम् ओमानौंव अला रब्बिहिम् यतवक्कलून ज् स़ला (२) अ़ल्लजीन युक़ीमूनस्सलात व मिम्मा रज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून त् (३) अुलाअिक हुमुल्मुअ्मिनून हक़्क़न् त् लहुम् दरजातुन् अिन्द रब्बिहिम् व मग़्फ़िरतुंव रिज़्क़ुन् करीमुन् ज् (४) कमा अख़्रजक रब्बुक मिम्बैतिक बिल्हक़्क़ि स् व अिन्न फ़रीक़म्मिनल् - मुअ्मिनीन लकारिहून ला (५) युजादिलूनक फ़िल्हक़्क़ि बअ़्द मा तबैयन कअन्नमा युसाक़ून अिलल्मौति व हुम् यन्जुरून त् (६) व अिज् यअिदु कुमुल्लाहु अिह्दत्ताअिफ़तैनि अन्नहा लकुम् व तवद्दून अन्न ग़ैर जातिश्शौकति तकूनु लकुम् व युरीदुल्लाहु अैंयुहिक़्क़ल् - हक़्क़ बिकलिमातिही व यक़्तअ़ दाबिरल् - काफ़िरीन ला (७) लियुहिक़्क़ल् - हक़्क़ व युब्तिलल् - बातिल व लौ करिहल् - मुज्रिमून ज् (८) अिज् तस्तग़ीसून रब्बकुम् फ़स्तजाब लकुम् अन्नी मुमिद्दुकुम् बिअल्फ़िम् - मिनल् - मलाअिकति मुर्दिफ़ीन (९) व मा जअलहुल्लाहु अिल्ला बुश्रा व लितत्मअिन्न बिही क़ुलूबुकुम् ज व मन्नस्रु अिल्ला मिन् अिन्दिल्लाहि त् अिन्नल्लाह अज़ीज़ुन् हकीमुन् (१०) ★

قال الملاء ۹ ۱۴۱ الانفال ۸

سورة الانفال مدنية وهي خمس وسبعون اية وعشر ركوعات

بسم الله الرحمن الرحيم

يسئلونك عن الانفال قل الانفال لله والرسول فاتقوا الله واصلحوا ذات بينكم واطيعوا الله ورسوله ان كنتم مؤمنين ۝ انما المؤمنون الذين اذا ذكر الله وجلت قلوبهم واذا تليت عليهم ايته زادتهم ايمانا وعلى ربهم يتوكلون ۝ الذين يقيمون الصلوة ومما رزقنهم ينفقون ۝ اولئك هم المؤمنون حقا لهم درجت عند ربهم ومغفرة ورزق كريم ۝ كما اخرجك ربك من بيتك بالحق وان فريقا من المؤمنين لكرهون ۝ يجادلونك في الحق بعد ما تبين كانما يساقون الى الموت وهم ينظرون ۝ واذ يعدكم الله احدى الطائفتين انها لكم وتودون ان غير ذات الشوكة تكون لكم ويريد الله ان يحق الحق بكلمته ويقطع دابر الكفرين ۝ ليحق الحق ويبطل الباطل ولو كره المجرمون ۝ اذ تستغيثون ربكم فاستجاب لكم اني ممدكم بالف من الملئكة مردفين ۝ وما جعله الله الا بشرى ولتطمئن به قلوبكم وما النصر الا من عند الله ان الله عزيز حكيم ۝ اذ يغشيكم النعاس

منزل ۲

रु० १ / ५१ आ० १०

☪ ८ सूरतुल्अन्फ़ालि ८८ ☪

(मदनी) इसमें अ़रबी के ५५२२ अक्षर, १२५३ शब्द, ७५ आयतें और १० रकूअ़ हैं। *

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीमि

(शुरू) अल्लाह के नाम से (जो) निहायत रहमवाला बेहद मेहरबान है।

(ऐ पैग़म्बर ! मुसलमान सिपाही) तुमसे ग़नीमत के माल§ का हुक्म पूछते हैं, तो कह दो कि ग़नीमत का माल तो अल्लाह का है और पैग़म्बर का है, सो (तुम लोग) अल्लाह से डरो और आपस में मेल रखो। और अगर तुम ईमानवाले हो तो अल्लाह और उसके पैग़म्बर की आज्ञा पर चलो। (१) ईमानवाले तो वही हैं कि जब अल्लाह का नाम आवे तो उनके दिल काँप उठें (अल्लाह के अज़ाब से) और जब अल्लाह की आयतें उनको पढ़कर सुनाई जाँय तो वह उनके ईमान को ज़्यादा मज़बूत करें और वह अपने परवरदिगार पर (हर हाल में) भरोसा रखते हैं। (२) जो नमाज़ क़ायम रखते हैं और हमने जो उनको रोज़ी दी है उसमें से (अल्लाह की राह में) ख़र्च करते हैं, (३) यही सच्चे ईमानवाले हैं, इनके लिए इनके परवरदिगार के यहाँ (बड़े) दर्जे हैं और (गुनाहों की) माफ़ी और इज़्ज़त (व आबरू) की रोज़ी है। (४) जैसे तुम्हारे परवरदिगार ने (बद्र की जंग के मौक़े पर) तुम्हारे घर मदीने से तुमको रवाना किया दुरुस्त काम के लिए और मुसलमानों का एक गिरोह (इस पर) राज़ी न था (५) कि वह लोग (सच्चाई) ज़ाहिर होने के बाद (भी) तुम्हारे साथ सच बात में झगड़ा करने लगे। गोया उनको (प्रत्यक्ष) मौत की तरफ़ ढकेला जाता हो और वह (मौत को) आँखों देख रहे हों। (६) (और यह वह वक़्त था) जब अल्लाह तुम (मुसलमानों) से वादा करता था कि (मक्का के मुशरिकों की) दो जमातों@ में से (कोई सी) एक तुम्हारे हाथ आ जायगी और तुम चाहते थे कि (जो क़ाफ़िला लड़ने के सामान से लैस न हो और माल से लदा है) वह तुम्हारे हाथ आ जाय और अल्लाह की मर्ज़ी यह थी कि अपने हुक्म से हक़ (सत्य) को हक़ कर दिखाये और काफ़िरों की जड़ (बुनियाद) काट कर फेंक दे। (७) ताकि सच को सच और झूठ को झूठ कर दिखावे। चाहे गुनहगारों को भले ही बुरा लगे। (८) (यह वह वक़्त था) कि जब तुम अपने परवरदिगार की ओर फ़र्याद करते थे तो उसने तुम्हारी पुकार सुन ली (और फ़रमाया) कि (सब्र रखो) मैं लगातार हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हारी सहायता करता रहूँगा। (९) और यह (फ़रिश्तों की सहायता) जो अल्लाह ने की तो सिर्फ़ (तुमको) ख़ुश करने को (की) ताकि तुम्हारे दिल (उसकी वजह से) चैन पावें वर्ना जीत तो अल्लाह की ही तरफ़ से है। बेशक अल्लाह बड़ा जबरदस्त और बड़ा हिकमतवाला है। (१०) ★

★ रु. १ / १५ आ १०

---

* यह सूरत जंगे बद्र के बाद जल्दी ही नाज़िल हुई थी। मुसलमानों व काबा के मुशरिक क़ुरैशों के बीच पहली लड़ाई जंगे बद्र थी जो २ हिजरी १७ रमज़ान को लड़ी गई। यहाँ से मुसलमान [पेज ३०१ पर]

§ वह दुश्मनों का माल जो मुसलमानों को लड़ाई के बाद हाथ लगे। बद्र की लड़ाई के बाद इस ग़नीमत के माल को बाँटते समय मुसलमानों में कुछ मनमुटाव हो गया था। ऐसे मौक़ों के लिए यह हुक्म है कि यह दुश्मनों से छूटा हुआ ग़नीमत का माल अल्लाह का माल है जो उसने तुमको तुम्हारे हक़ के अलावा बतौर इनाम दिया है। इस लिए किसको कितना मिलना चाहिये इसमें अल्लाह व रसूल का हुक्म ही काफ़ी है। तुमको झगड़ने की गुञ्जाइश नहीं है। @ आयत ५ से १० का ख़ुलासा यूँ है। मदीना हिजरत कर जाने के बाद भी क़ुरैशों का ज़ोर-जब्र बढ़ता ही रहा। एक बार उनका सरदार अबू सुफ़यान तिजारती माल से लदा क़ाफ़िला लिए नज़दीक से गुज़र रहा था। चुनांचे इरादा हुआ कि इसको रोक लिया जाय। मुसलमान [पेज ३०६ पर]

अिज् युग़श्शीकुमुन्नुआस अमनतम्-मिन्हु व युनज़्ज़िलु अलैकुम् मिनस्समा'अि मा'अल् - लियुतह्हिरकुम् बिही व युज़्हिब अन्कुम् रिज्ज़श्शैतानि व लियर्बित अला क़ुलूबिकुम् व युसब्बित बिहिल्अक़्दाम त् (११) अिज् यूही रब्बुक अिलल् - मला'अिकति अन्नी मअकुम् फ़सब्बितुल्लज़ीन आमनू त् सअुल्क़ी फ़ी क़ुलूबिल्लज़ीन कफ़रुर्रुअ्ब फ़ज़्रिबू फ़ौक़ल्-अअ्नाक़ि वज़्रिबू मिन्हुम् कुल्ल बनानिन् त् (१२) ज़ालिक बिअन्नहुम् शा'क़्क़ुल्लाह व रसूलहु ज् व मैंयुशाक़िक़िल्लाह व रसूलहु फ़अिन्नल्लाह शदीदुल्-अिक़ाबि (१३) ज़ालिकुम् फ़ज़ूक़ूहु व अन्न लिल्काफ़िरीन अज़ाबन्नारि (१४) या' अैयुहल्लज़ीन आमनू' अिज़ा लक़ीतुमुल्लज़ीन कफ़रू ज़ह्फ़न् फ़ला तुवल्लूहुमुल् - अद्बार ज् (१५) व मैंयुवल्लिहिम् यौमअिज़िन् दुबुरहू' अिल्ला मुतहर्रिफ़ल् - लिक़ितालिन् औ मुतहैयिज़न् अिला फ़िअतिन् फ़क़द् बा'अ बिग़ज़बिम् - मिनल्लाहि व मअ्वाहु जहन्नमु त् व बिअ्सल् - मसीरु (१६) फ़लम् तक़्तुलूहुम् व लाकिन्नल्लाह क़तलहुम् स् व मा रमैत अिज् रमैत व लाकिन्नल्लाह रमा ज व लियुब्लियल् - मुअ्मिनीन मिन्हु बला'अन् हसनन् त् अिन्नल्लाह समीअुन् अलीमुन् (१७) ज़ालिकुम् व अन्नल्लाह मूहिनु कैदिल्काफ़िरीन (१८) अिन् तस्तफ़्तिहू फ़क़द् जा'अकुमुल् फ़त्हु ज् व अिन् तन्तहू फ़हुव ख़ैरुल्लकुम् ज् व अिन् तअूदू नअुद् ज् व लन् तुग़्निय अन्कुम् फ़िअतुकुम् शैऔंव लौ कसुरत् ला व अन्नल्लाह मअल्मुअ्मिनीन (१९) ★ या' अैयुहल्लज़ीन आमनू' अतीअुल्लाह व रसूलहु व ला तवल्लौ अन्हु व अन्तुम् तस्मअून ज् सला (२०)

रु. २ / १६ आ ६

قال الملاء ١٣٢ الانفال

امنة منه وينزل عليكم من السماء ماء ليطهركم به و
يذهب عنكم رجز الشيطن وليربط على قلوبكم ويثبت به
الاقدام ⑪ اذ يوحي ربك الى الملئكة اني معكم فثبتوا
الذين امنوا سالقي في قلوب الذين كفروا الرعب
فاضربوا فوق الاعناق واضربوا منهم كل بنان ⑫ ذلك
بانهم شاقوا الله ورسوله ومن يشاقق الله ورسوله فان
الله شديد العقاب ⑬ ذلكم فذوقوه وان للكفرين عذاب
النار ⑭ يايها الذين امنوا اذا لقيتم الذين كفروا زحفا فلا
تولوهم الادبار ⑮ ومن يولهم يومئذ دبره الا متحرفا لقتال
او متحيزا الى فئة فقد باء بغضب من الله وماوىه
جهنم وبئس المصير ⑯ فلم تقتلوهم ولكن الله قتلهم
وما رميت اذ رميت ولكن الله رمى وليبلي المؤمنين
منه بلاء حسنا ان الله سميع عليم ⑰ ذلكم وان الله
موهن كيد الكفرين ⑱ ان تستفتحوا فقد جاءكم الفتح
وان تنتهوا فهو خير لكم وان تعودوا نعد ولن تغني
عنكم فئتكم شيئا ولو كثرت وان الله مع المؤمنين ⑲ ع
يايها الذين امنوا اطيعوا الله ورسوله ولا تولوا عنه و

منزل

(जंगे बद्र के मौक़े पर यह वह समय था) जबकि अल्लाह ने अपनी तरफ़ से (तुम्हारी) तस्कीन के लिए तुम पर औंघ को उतारा और (दुश्मनों का तालाब पर क़ब्ज़ः हो जाने पर) आसमान से तुम पर पानी बरसाया ताकि उसके ज़रिये से तुमको पाक करे और शैतानी गंदगी (व बेचैनी) को तुमसे दूर कर दे और ताकि तुम्हारे (टूट रहे) दिलों को साहस बँधावे और उसी के ज़रिये (जंग में) तुम्हारे पाँव जमाये रखे।(११) (और यह वह वक़्त था) जबकि तुम्हारा परवरदिगार फ़रिश्तों को आज्ञा दे रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम मुसलमानों को जमाये रखो, मैं जल्द काफ़िरों के दिलों में डर डाल दूंगा, बस तुम इनकी गरदनें मारो और इनके पोर-पोर को मारो।(१२) यह इस बात की सज़ा है कि उन्होंने अल्लाह और उनके पैग़म्बर का विरोध किया और जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर का विरोध करेगा तो अल्लाह की मार बड़ी कठिन है§।(१३) (काफ़िरो!) यह तो तुम (अभी) चखो और जान लो कि (आख़िरत में) काफ़िरों को दोज़ख़ की सज़ा है।(१४) ऐ ईमानवालो! जब काफ़िरों से मैदाने जंग में तुम्हारा मुक़ाबला हो तो उनको पीठ न दिखाना।(१५) और जो शख़्स ऐसे मौक़े पर लड़ाई के हुनर के कारन (बतौर तदबीर) या अपनी फ़ौज में जा मिलने की ग़रज़ से (पीठ देने) के अलावा काफ़िरों को पीठ दिखायेगा वह अल्लाह के कोप में आ गया और उसका ठिकाना दोज़ख़ है और वह कैसी बुरी जगह है (१६) पस काफ़िरों को तुमने क़त्ल नहीं किया बल्कि उनको अल्लाह ने क़त्ल किया और जब तुमने (काफ़िरों पर) मुट्ठी से ख़ाक फेंकी तो तुमने ख़ाक नहीं फेंकी बल्कि अल्लाह ने ख़ाक फेंकी♁ और उससे ग़रज़ यह थी कि वह ईमानवालों को अपनी तरफ़ से ख़ूब (इहसानों से) आज़मावे। बेशक अल्लाह (सबकी) सुनता और (सबकुछ) जानता है।(१७) यह तो हो चुका और अब जान लो कि अल्लाह को काफ़िरों की तदबीरों को कमज़ोर कर देना मंज़ूर है।(१८) तुम जो फ़ैसला माँगते थे, वह फ़ैसला तुम्हारे सामने (रसुलुल्लाह स० की जीत की शकल में) आ गया और अगर आइन्दा बाज़ रहोगे तो यह तुम्हारे हक़ में भला होगा और अगर तुम फिर (मुक़ाबले पर) आओगे तो हम भी फिर (अज़ाब लेकर) आवेंगे, और तुम्हारा जत्था कितना ही बहुत हो कुछ (भी तुम्हारे) काम नहीं आयेगा, और (अच्छी तरह) जान लो कि अल्लाह ईमानवालों के साथ है।(१९) ★

★ रु. २ / १६ आ ९

ऐ ईमानवालो! अल्लाह के हुक्म पर चलो और उसके पैग़म्बर के (हुक्म पर चलो) और उसका (हुक्म) सुन लेने पर उससे मुँह न मोड़ो।(२०)

[पेज ३०१ से] की फ़िक्र छोड़ कर दुश्मनों का दमन डट कर करना चाहिये। बाद को जो बचें और क़ैद हों, उनका ही फ़िदयः लेना जायज़ है। तीसरी बात यह है कि ईमान (धर्म) की स्थापना और कुफ़्र (अधर्म) का नाश, यह तो अल्लाह करता ही है और वही करने में समर्थ है। रहे बन्दे, तो वे जेहाद (धर्मयुद्ध) में जितने साबित क़दम (दृढ़) रहेंगे उतना ही अल्लाह उनको ज़ोरावर और दुश्मनों पर ग़ालिब (प्रबल) करता जायगा। इसके बाद मुसलमानों को हिदायत है कि जो अल्लाह पर ईमान लाया और जेहाद में शरीक हुआ वह तुम्हारा ज़्यादः हक़ीक़ी है बमुक़ाबले उसके जो सिर्फ़ ख़ून के रिश्ते से सगा है। अलबत्ता ईमानवाला रिश्तेदार दूसरे ईमानवालों के मुक़ाबले तुम्हारा ज़्यादः हक़दार है।

§ यहाँ तक बद्र की लड़ाई का हाल था। इसमें फ़रिश्तों का मुसलमानों की मदद को आना और काफ़िरों को बरबाद कर देना और पानी बरसना सब कुछ बयान किया गया है ताकि मुसलमान अल्लाह की रहमत पर ग़ौर करें और रसूल के कहने पर चलें। ♁ जंगे बद्र के शुरू में रसुलुल्लाह स० ने एक मुट्ठी धूल उठा कर काफ़िरों की तरफ़ फेंक कर कहा कि 'तुम्हारे चेहरे बिगड़ जाँय।' इसके बाद धावा हुआ। उसका ज़िक्र है। जो कुछ होता है वह अल्लाह की मर्ज़ी से होता है।

व ला तकूनू कल्लजीन क़ालू समिअ़्ना व हुम् ला यस्मअ़ून (२१) अिन्न शर्रद्दवा|ब्बि अिन्दल्लाहिस्सुम्मुल् - बुक्मुल्लजीन ला यअ़्क़िलून (२२) व लौ अ़लिमल्लाहु फ़ीहिम् ख़ैरल्ल-अस्मअ़हुम् त् व लौ अस्मअ़हुम् लतवल्लौव्वहुम् मुअ़्रिज़ून (२३) या| अैयुहल्लजीन आमनुस्तजीबू लिल्लाहि व लिर्रसूलि अिजा दअ़ाकुम् लिमा युह्यीकुम् ज् वअ़्लमू| अन्नल्लाह यहूलु बैनल्मर्अि व क़ल्बिही व अन्नहू| अिलैहि तुह्शरून (२४) वत्तक़ू फ़ित्नतल्ला तुसीबन्नल्लजीन जलमू मिन्कुम् ख़ा|स्सतन् ज् वअ़्लमू| अन्नल्लाह शदीदुल्-अ़िक़ाबि (२५) वज्कुरू| अिज् अन्तुम् क़लीलुम् - मुस्तज़्अ़फ़ून फ़िल्अर्ज़ि तख़ाफ़ून अैयतख़त्तफ़-कुमुन्नासु फ़आवाकुम् व अैयदकुम् बिनस्रिही वरज़क़कुम् मिनत्तैयिबाति लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (२६) या| अैयुहल्लजीन आमनू ला तख़ूनुल्लाह वर्रसूल व तख़ूनू| अमानातिकुम् व अन्तुम् तअ़्लमून (२७)

وَقَالَ الْمَلَأُ ١٤٣ الأنفال

أَنْتُمْ تَسْمَعُونَ ۚ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ
لَا يَسْمَعُونَ ۝ إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ
لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَأَسْمَعَهُمْ ۖ وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ
لَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُعْرِضُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ
وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ
بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَا
تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْكُمْ خَاصَّةً ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ۝ وَاذْكُرُوا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ
تَخَافُونَ أَنْ يَتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَآوَاكُمْ وَأَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهِ
وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَتَخُونُوا أَمَانَاتِكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝
وَاعْلَمُوا أَنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَأَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ
أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ
فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ
الْعَظِيمِ ۝ وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ
أَوْ يُخْرِجُوكَ ۚ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ ۖ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ ۝
وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ

वअ़्लमू| अन्नमा| अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फ़ित्नतुन् ला व अन्नल्लाह अिन्दहू| अज्रुन् अ़ज़ीमुन् (२८) ★ या| अैयुहल्लजीन आमनू| अिन् तत्तक़ुल्लाह यज्अ़ल्लकुम् फ़ुर्क़ानौंव युकफ़्फ़िर् अ़न्कुम् सैयिआतिकुम् व यग़्फ़िर् लकुम् त् वल्लाहु जुल्-फ़ज़्लिल्-अ़ज़ीमि (२९) व अिज् यम्कुरु बिकल्लजीन कफ़रू लियुस्बितूक औ यक़्तुलूक औ युख़्रिजूक त् व यम्कुरून व यम्कुरुल्लाहु त् वल्लाहु ख़ैरुल्माकिरीन (३०) व अिजा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना क़ालू क़द् समिअ़्ना लौ नशा|अु लक़ुल्ना मिस्ल हाजा| ला अिन् हाजा| अिल्ला| असातीरुल्-औवलीन (३१)

★ रु. ३/१७ आ ९

और उन (यहूदियों) जैसे न बनो जिन्होने (तौरात की निस्बत) कह (तो) दिया कि हमने सुना हालाँकि वह सुनते (यानी दिल से मानते) नहीं।(२१) अल्लाह के नज़दीक सब जानदारों में बदतरीन (निकृष्टतम) वही बहरे गूँगे हैं जो (हक़ बात को सुनकर भी) नहीं समझते। (२२) और अगर अल्लाह इनमें (कुछ भी) भलाई पाता तो इनको सुनने की योग्यता भी ज़रूर देता; लेकिन (उनकी मौजूदा बेरुख़ी में) अगर अल्लाह इनको सुनावे भी, तो यह लोग मुँह फेरकर उल्टे भागें।(२३) ऐ ईमानवालो! तुम अल्लाह और पैग़म्बर का हुक्म मानो जब कि (पैग़म्बर) तुमको ऐसे काम (दीन) की तरफ़ बुलाते हैं जो तुममें नई रूह फूंकता है, और जाने रहो कि अल्लाह आदमी और उसके दिल के दरमियान आड़े आ जाता§ है और यह कि तुम (सब) उसी के सामने जमा किये जाओगे।(२४) और उस फ़िसाद से डरते रहो जिसका (बुरा नतीजा) ख़ासकर उन्हीं लोगों पर नहीं पड़ेगा जिन्होंने तुममें से ज़ुल्म किया है (बल्कि अपनी लपेट में बेगुनाहों को भी ले लेगा)✡ और जाने रहो कि अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है।(२५) और (ऐ मुसलमानो!) याद करो जब तुम ज़मीन (मक्का) में थोड़े-से थे, दबे-दबाये समझे जाते थे, इस बात से डरते थे कि लोग तुमको ज़बरदस्ती पकड़कर उड़ा न ले जायँ; फिर अल्लाह ने तुमको (मदीना जैसी) जगह दी और अपनी सहायता से तुमको ज़ोरावर किया और सुथरी चीज़ें तुम्हें खाने को दीं इसलिए कि शायद तुम शुक्र मानो।(२६) ऐ ईमानवालो! अल्लाह और रसूल की अमानत (धरोहर) में ख़ियानत न करो न आपस की धरोहरें मारो, और (अमानत में ख़ियानत का अंजाम तो) तुम जानते हो†।(२७) जाने रहो कि तुम्हारी दौलत और तुम्हारी औलाद एक आज़माइश (कसौटी)♦ हैं और यह कि अल्लाह के यहाँ (यही) बड़ा सवाब है।(२८) ★

★ रु. ३/१७ आ ६

ऐ ईमानवालो! अगर तुम अल्लाह से डरते रहोगे तो वह तुम्हारे लिए फ़ैसला‡ देगा और तुम्हारे पाप तुमसे दूर कर देगा और तुमको माफ़ करेगा और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।(२९) और जब काफ़िर तुम पर फ़रेब करते थे कि तुमको क़ैद कर रखें या तुमको मार डालें या तुमको देश-निकाला कर दें और काफ़िर भी (अपनी) तदबीर चलते थे और अल्लाह भी (अपनी) तदबीर चलता था और अल्लाह सब तदबीर चलनेवालों से बेहतर (युक्तिवान) है।(३०) और जब हमारी आयतें इन काफ़िरों को पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहते हैं हमने सुन लिया, अगर हम चाहें तो हम भी इसी तरह की बातें कह लें, यह तो और कुछ नहीं गुज़रे लोगों की कहानियाँ हैं।(३१)

---

§ इन्सान और उसके दिल के बीच अल्लाह यूँ आड़े आता है कि ईमानवालों और उनके दिल के बीच रह कर कुफ्र का दख़ल नहीं होने देता और लाइलाज काफ़िरों व उनके दिल के बीच रह कर ईमान की रोशनी से उनको दूर रखता है। ✡ शख़्सी गुनाहों का असर भी आम तौर पर शख़्सी होता है। लेकिन कुछ जमाती फ़साद ऐसे भी होते हैं जिनकी लपेट में नेक-बद पूरी सोसाइटी आजाती है। ऐसे फ़सादों में सिर्फ़ इतने से हमारा फ़र्ज़ पूरा नहीं हो जाता कि हम उन फ़सादों या ज़ुल्मों में ख़ुद शरीक होने से अपने को बचाये रखें। बल्कि हमारा यह भी फ़र्ज़ हो जाता है कि उन फ़सादियों का फ़साद चलने ही न दें। † अल्लाह और रसूल की अमानत है अल्लाह के हुक्म व ग़नीमत (लड़ाई में दुश्मनों) का मिला माल। और आपस की अमानत (धरोहर) हैं रुपया ज़ेवर व दुनियावी चीज़ें। ♦दौलत और औलाद ही वह कसौटी है जिसमें पता चलता है कि इनके मोह में फँस कर कौन अल्लाह के हुक्मों को किस हद तक भुला बैठता है। ‡ "फ़ैसला" याने काफ़िरों पर ग़ालिब (प्रबल) रखने का फ़ैसला। एक तफ़सीर यूँ है कि नेक-बद, अज़ाब-सवाब ईमान-कुफ़्र को समझने की क़ूवत याने विवेक। अल्लाह से डरने वाले की यह विवेक-बुद्धि जाग उठती है।

व अिज़् क़ालुल्लाहुम्म अिन् कान हाज़ा हुवल्हक़्क़ मिन् अ़िन्दिक फ़अम्तिर् अ़लैना हिजारतम् - मिनस्समाअि अविअ्तिना बिअ़ज़ाबिन् अलीमिन् (३२) व मा कानल्लाहु लियुअ़ज़्ज़िबहुम् व अन्त फ़ीहिम् त़् व मा कानल्लाहु मुअ़ज़्ज़िबहुम् व हुम् यस्तग़्फ़िरून (३३) व मा लहुम् अल्ला युअ़ज़्ज़िब-हुमुल्लाहु व हुम् यसुद्दून अ़निल्-मस्जिदिल्-हरामि व मा कानू औलियाअहू त़् अिन् औलियाअुहू अिल्लल् - मुत्तक़ून व लाकिन्न अक्सरहुम् ला यअ़्लमून (३४) व मा कान सलातुहुम् अ़िन्दल्बैति अिल्ला मुकाऔंव तस्दियतन् त़् फ़ज़ूक़ुल्अ़ज़ाब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून (३५) अिन्नल्लज़ीन कफ़रू युन्फ़िक़ून अम्वालहुम् लियसुद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि त़् फ़सयुन् - फ़िक़ूनहा सुम्म तकूनु अ़लैहिम् हस्रतन् सुम्म युग़्लबून ॰ त़् वल्लज़ीन कफ़रू अिला जहन्नम युह्शरून ला (३६) लियमीज़ल्लाहुल् - ख़बीस मिनत्तैयिबि व यज्अ़लल् - ख़बीस बअ़्ज़हू अ़ला बअ़्ज़िन् फ़यर्कुमहू जमीअ़न् फ़यज्अ़लहू फ़ी जहन्नम त़् उलाअिक हुमुल्ख़ासिरून (३७) ★ क़ुल्लिल्लज़ीन कफ़रू अींयन्तहू युग़्फ़र् लहुम् मा क़द् सलफ़ ज़् व अींयअ़ूदू फ़क़द् मज़त् सुन्नतुल् - औवलीन (३८) व क़ातिलूहुम् हत्ता ला तकून फ़ित्नतुंव यकूनद्दीनु कुल्लुहू लिल्लाहि ज़् फ़अिनिन्तहौ फ़अिन्नल्लाह बिमा यअ़्मलून बसीरुन् (३९) व अिन् तवल्लौ फ़अ़्लमू अन्नल्लाह मौलाकुम् त़् निअ़्मल्मौला व निअ़्मन्नसीरु (४०)

★ रु. ४ / १८ आ ६

قَالَ الْمَلَاُ ۹   ۱۴۴   الانفال ۸

هٰذَآ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ
كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ
اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ
وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝ وَمَا لَهُمْ اَلَّا
يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْٓا
اَوْلِيَآءَهٗ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝
وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً فَذُوْقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ
اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ تَكُوْنُ
عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ۬ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ
يُحْشَرُوْنَ ۝ لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ
بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ اُولٰٓئِكَ
هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ
مَّا قَدْ سَلَفَ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ۝
وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ
لِلّٰهِ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝

منزل

॥ इति नवाँ पारः ॥

और (वह भी याद करो) जब (अबू जहल जैसे काफ़िर) कहने लगे कि ऐ अल्लाह! अगर तेरी तरफ़ से यह दीन सच्चा है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या हम पर कड़ी सज़ा डाल।(३२) और अल्लाह हरगिज़ न इन पर अज़ाब उतारता जब तक कि तुम इनमें (मौजूद) थे और अल्लाह न अज़ाब उतारेगा इन पर जब तक ये माफ़ी मांगते रहेंगे।(३३) लेकिन अब क्योंकर अल्लाह उन पर अज़ाब न उतारेगा जबकि वह मसजिदे हराम (यानी काबा के घर) में जाने से लोगों (यानी मुसलमानों) को रोकते हैं। हालाँकि वह उसके मुतवल्ली (अधिष्ठाता) नहीं, उसके लिए (सही) मुतवल्ली तो वही हैं जो परहेज़गार हैं (और अल्लाह का डर रखते हैं), लेकिन इनमें के बहुतेरे यह समझ नहीं पाते।(३४) और काबा के घर के पास सीटियाँ बजाने और तालियाँ (पीटने) के सिवाय उनकी नमाज़ ही क्या थी, तो (उनसे कहा जाता है कि) अपने कुफ़्र के बदले में अज़ाब (का मज़ा) चखो।(३५) (इसमें सन्देह नहीं कि) यह काफ़िर अपने माल ख़र्च करते हैं कि अल्लाह के रास्ते से रोकें, सो अभी और (माल) ख़र्च करेंगे, फिर (वही माल) आख़िरकार इनके हक़ में रंज का कारन होगा और आख़िर हार जायेंगे। और जो काफ़िर रहेंगे वे दोज़ख़ की तरफ़ हाँके जायँगे (३६) ताकि अल्लाह नापाक को पाक से अलग करे और नापाक को एक दूसरे के ऊपर रखकर उन सबका ढेर लगाये, फिर उन (ढेर यानी सब) को दोज़ख़ में झोंक दे। यही लोग हैं जो घाटे में रहे@।(३७) ★

★ रु. ४/१८ आ ६

(ऐ पैग़म्बर!) काफ़िरों से कह दो कि अगर कुफ़्र से बाज़ आ जाँय तो उनके पिछले (गुनाह) माफ़ कर दिये जायँगे और अगर फिर वही (हरकत) करेंगे तो अगले (गुनहगार) लोगों की (सज़ा की) चाल पड़ चुकी है, (जैसा उनके साथ हुआ है इनके साथ भी होगा) (३८) और काफ़िरों से लड़ते रहो यहाँ तक कि (मुशरिकीन अरब का) फ़साद (यानी शिर्क) बाक़ी न रहे और सब अल्लाह ही का दीन हो जाय। पस अगर वह बाज़ आवें तो जो कुछ यह लोग करेंगे अल्लाह उसको देख रहा है।(३९) और अगर वह न मानें तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा हामी (समर्थक) है और वह कैसा अच्छा हामी और वह कैसा अच्छा मददगार है।(४०)

॥ इति नवाँ पारः ॥

[पेज ३०३ से] मदीने से निकले। उधर क़ुरैशों को भी ख़बर लग गई और अबू जहल की तहत में एक बड़ा फ़ौजी लश्कर मक्का से चल पड़ा। अां हज़रत स० को ख़ुदाई पैग़ाम मिला कि अबू सुफ़यान और अबू जहल इन दो में से कोई एक तुम्हारे क़ाबू में आ सकता है। रसूल स० ने अबू जहल के फ़ौजी लश्कर का सामना करना मुनासिब समझा। कुछ मुसलमान तिजारत के माल वाले गिरोह पर हमला करना चाहते थे—कुछ तो माल की लालच में और कुछ दूसरे दस्ते की फ़ौजी तैयारी से ख़ौफ़ के कारन, गोया उन्हें मौत ही पुकार रही हो। इस राय के मुसलमानों की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ रसूलुल्लाह स० ने अबू जहल को चुना और जंगे बद्र में उनको परास्त कर क़ुरैशों के मिटने की शुरुआत भी कर दी और माले ग़नीमत भी हाथ लगा। और बाद में अबू सुफ़यान भी मुसलमानों के साथ आ गये। मंशा है कि जिस तरह तुम माल ग़नीमत में झगड़ रहे हो उसी तरह उससे पहले जंग शुरू होने के पहले भी तुम रसूल स० के ख़िलाफ़ राय रख रहे थे और झगड़ रहे थे। यह गुनाह है। दीन में और ग़नीमत के माल में भी अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानो।

@ रुकू ४ का खुलासा है कि अल्लाह धीरे-धीरे ईमानवालों को प्रबल और काफ़िरों को कमज़ोर करेगा ताकि इस बीच काफ़िर अपने जानोमाल व ताक़त को मनमाना ख़र्च कर लें और परास्त हो जायँ। ईमानवाले भी और कुफ़्र वाले भी दिन ब दिन छँटते जायँ और इकट्ठे होकर सवाब व अज़ाब की तरफ़ पहुँचाये जायँ।

दसवाँ पार: वऽलमू'

सूरतुल् अन्फ़ालि आयात ४१ से ७५

वऽलमू' अन्नमा ग़निम्तुम् मिन् शैअिन् फ़अन्न लिल्लाहि ख़ुमुसहू व लिर्रसूलि व लिज़िल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि वब्निस्सबीलि ला अिन् कुन्तुम् आमन्तुम् बिल्लाहि व मा' अन्ज़ल्ना अ़ला अ़ब्दिना यौमल्फ़ुर्क़ानि यौमल्तक़ल् - जम्अ़ानि तृ वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैअिन् क़दीरुन् (४१) अिज् अन्तुम् बिल्अ़ुद्वतिद्दुन्या व हुम् बिल्अ़ुद्वतिल्-क़ुस्वा वर्रक्बु अस्फ़ल मिन्कुम् तृ व लौ तवाअ़त्तुम् लख़्तलफ़्तुम् फ़िलमीआदि ला व लाकिल्लि - यक़्ज़ियल्लाहु अम्रन् कान मफ़्अ़ूलन् ला ५ ल्'लियह्लिक मन् हलक अ़म्बैयिनतिंव्व यह्या मन् हैय अ़म्बैयिनतिन् तृ व अिन्नल्लाह लसमीअ़ुन् अ़लीमुन् ला (४२) अिज् युरीकहुमुल्लाहु फ़ी मनामिक क़लीलन् तृ व लौ अराकहुम् कसीरल्लफ़शिल्तुम् व लतनाज़ऽतुम् फ़िल्अम्रि व लाकिन्नल्लाह सल्लम तृ अिन्नहू अ़लीमुम्-बिज़ातिस्सुदूरि (४३) व अिज् युरीकुमूहुम् अिज़िल्तक़ैतुम् फ़ी' अऽयुनिकुम् क़लीलौंव युक़ल्लिलुकुम् फ़ी' अऽयुनिहिम् लियक़्ज़ियल्लाहु अम्रन् कान मफ़्अ़ूलन् तृ व अिलल्लाहि तुर्जअ़ुल्-अुमूरु (४४) ★ या' अैयुहल्लज़ीन आमनू' अिज़ा लक़ीतुम् फ़िअतन् फ़स्बुतू वज़्कुरुल्लाह कसीरल् - लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून ज (४५) व अतीअ़ुल्लाह व रसूलहू व ला तनाज़अ़ू फ़तफ़्शलू व तज़्हब रीहुकुम् वस्बिरू तृ अिन्नल्लाह मअ़स्साबिरीन ज (४६) व ला तकूनू कल्लज़ीन ख़रजू मिन् दियारिहिम् बतरौंव रिआ'अन्नासि व यसुद्दून अ़न् सबीलिल्लाहि तृ वल्लाहु बिमा यऽमलून मुहीतुन् (४७)

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ
وَلِذِی الْقُرْبٰی وَالْیَتٰمٰی وَالْمَسٰکِیْنِ وَابْنِ السَّبِیْلِ اِنْ کُنْتُمْ
اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰی عَبْدِنَا یَوْمَ الْفُرْقَانِ یَوْمَ الْتَقَی
الْجَمْعٰنِ وَاللّٰهُ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝ اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْیَا
وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰی وَالرَّکْبُ اَسْفَلَ مِنْکُمْ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ
لَاخْتَلَفْتُمْ فِی الْمِیْعٰدِ وَلٰکِنْ لِّیَقْضِیَ اللّٰهُ اَمْرًا کَانَ مَفْعُوْلًا ۵
لِّیَهْلِکَ مَنْ هَلَکَ عَنْۢ بَیِّنَةٍ وَّیَحْیٰی مَنْ حَیَّ عَنْۢ بَیِّنَةٍ وَاِنَّ
اللّٰهَ لَسَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ۝ اِذْ یُرِیْکَهُمُ اللّٰهُ فِیْ مَنَامِکَ قَلِیْلًا وَلَوْ
اَرٰکَهُمْ کَثِیْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِی الْاَمْرِ وَلٰکِنَّ اللّٰهَ
سَلَّمَ اِنَّهٗ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ وَاِذْ یُرِیْکُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَیْتُمْ
فِیْٓ اَعْیُنِکُمْ قَلِیْلًا وَّیُقَلِّلُکُمْ فِیْٓ اَعْیُنِهِمْ لِیَقْضِیَ اللّٰهُ اَمْرًا
کَانَ مَفْعُوْلًا وَاِلَی اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ یٰٓاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْٓا
اِذَا لَقِیْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَاذْکُرُوا اللّٰهَ کَثِیْرًا لَّعَلَّکُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝
وَاَطِیْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِیْحُکُمْ
وَاصْبِرُوْا اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ ۝ وَلَا تَکُوْنُوْا کَالَّذِیْنَ
خَرَجُوْا مِنْ دِیَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَآءَ النَّاسِ وَیَصُدُّوْنَ عَنْ
سَبِیْلِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ بِمَا یَعْمَلُوْنَ مُحِیْطٌ ۝ وَاِذْ زَیَّنَ لَهُمُ

منزل

रु० ५ / १ / आ ७

(★)(★) दसवाँ पारः वड़लमू । (★)(★)

(★) सूरतुल्अन्फ़ालि आयत ४१ से ७५ (★)

और जान रखो कि जो चीज़ तुम ग़नीमत में§ लाओ उसका पाँचवाँ भाग अल्लाह के लिए और पैग़म्बर के और सम्बन्धियों के, अनाथों के और ग़रीबों और मुसाफ़िरों के (लिए है) अगर तुम अल्लाह का और उस (मदद ग़ैबी) का यक़ीन रखते हो जो हमने अपने बन्दे (मुहम्मद स०) पर फ़ैसले के दिन उतारी थी जिस दिन कि (मुसलमानों और काफ़िरों के) दो लश्कर (जंगे बद्र में) एक दूसरे से गुथ गये थे (क्योंकि अल्लाह की तरफ़ से रसूल स० पर इस मदद की बदौलत ही तुमको यह फ़तह व ग़नीमत हाथ लगी है)। और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर (समर्थ) है।(४१) यह वह वक़्त था कि तुम (मुसलमान मैदान जंग में) घाटी के इस सिरे पर थे और काफ़िर दूसरे सिरे पर और (माल से लदा वह) क़ाफ़िला (जिसको तुम हासिल करना चाहते थे वह नदी के किनारे) तुमसे नीचे की तरफ़ को उतर गया था। और अगर तुमने (और उन्होंने पहले से) आपस में (लड़ाई का) ठहराव किया होता तो ज़रूर वादे पर (लड़ाई में शरीक होने में) तुम्हारे बीच मतभेद होता (और कुछ लोग दुश्मनों का ज़ोर देखकर लड़ने में आगा-पीछा करते) लेकिन (यकायक जंग छिड़ गई क्योंकि) अल्लाह को मंज़ूर था कि जो काम होकर रहनेवाला (नियत) था उसे कर डाले ताकि जिसे मरना है वह खुली निशानियाँ आने के बाद मरे और जिसको ज़िन्दः रहना है वह (भी) खुली निशानियाँ आने के बाद ज़िन्दः रहे। और बेशक अल्लाह (सब कुछ) सुनता और जानता है।(४२) (ऐ पैग़म्बर! उसी वक़्त की घटना वह भी है) जबकि अल्लाह ने तुम्हारी नज़र में काफ़िरों को (उनकी सही तादाद से बहुत) कम दिखलाया और अगर उन्हें तुमको बहुत करके दिखाता तो तुम ज़रूर हिम्मत हार देते और (जो) काम (दरपेश था उस) में भी ज़रूर (आपस में) झगड़ने लगते। मगर अल्लाह ने (उस नौबत से तुम्हें) बचाया, बेशक वह (सब के) दिली ख़्यालों से जानकार है।(४३) और जब तुम एक दूसरे के सामने (जंगे बद्र में) आये तो काफ़िरों को तुम मुसलमानों की आँखों में थोड़ा कर दिखलाया और काफ़िरों की आँखो में तुम मुसलमानों को थोड़ा कर दिखाया ताकि अल्लाह को जो कुछ (तुम्हारे हक़ में) करना मंज़ूर था पूरा कर डाले। और आख़िरकार सब कामों का सहारा अल्लाह ही पर जाकर ठहरता है☼।(४४) ★

★ रु. ५ | १ आ ७

ऐ ईमानवालो! जब किसी फ़ौज से तुम्हारी मुटभेड़ हो तो (लड़ाई में) जमे रहो और अल्लाह को ख़ूब याद करो, शायद तुम मुराद पाओ।(४५) और अल्लाह और उसके पैग़म्बर का हुक्म मानो और आपस में न झगड़ो नहीं तो (तुममें) कमज़ोरी आ जायगी और तुम्हारी हवा उखड़ जायगी और सब्र पर क़ायम रहो और अल्लाह सब्र (से जमने) वाला के साथ है।(४६) और उन (क़ुरैशों) जैसे न बनो जो इतराते हुये और लोगों को दिखाते हुये अपने घरों से निकले और (हाल यह कि) अल्लाह की राह से रोकते थे और जो कुछ भी (आमाल) यह लोग करते हैं सब अल्लाह के एहाते (घेरे यानी पकड़) में है।(४७)

---

§ सूरः अन्फ़ालि आयत पहली पेज ३०३ नोट § पर 'ग़नीमत' की तफ़सील दी है। ☼ अल्लाह को मंज़ूर था कि इस मौक़े पर मुटभेड़ ज़रूर हो जाय और मुसलमानों को फ़तह और काफ़िरों को ज़िल्लत नसीब होवे। इसीलिए ग़फ़लत में मुसलमान काफ़िरों को थोड़ी तादाद में समझ कर पस्त हिम्मत न हुये और काफ़िरों में मुसलमानों को कम तादाद समझ कर हमले का हौसला बढ़ गया और फ़ैसलाकुन (निर्णायक) जंग छिड़ ही गई।

व अिज़् ज़ैयन लहुमुश्शैतानु अऽमालहुम् व क़ाल ला ग़ालिब लकुमुल्यौम मिनन्नासि व अिन्नी जारुल्लकुम् ज फ़लम्मा तराअतिल् - फ़िअतानि नकस अ़ला अ़क़िबैहि व क़ाल अिन्नी बरीअुम् - मिन्कुम् अिन्नी अरा मा ला तरौन अिन्नी अख़ाफ़ुल्लाह त़ वल्लाहु शदीदुल्अ़िक़ाबि (४८) ★ अिज़् यक़ूलुल् - मुनाफ़िक़ून वल्लज़ीन फ़ी क़ुलूबिहिम् मरज़ुन् ग़र्र हाअुलाअि दीनुहुम् त़ व मैंयतवक्कल् अ़लल्लाहि फ़अिन्नल्लाह अ़ज़ीज़ुन् हकीमुन् (४९) व लौ तरा अिज़् यतवफ़्फ़ल्लज़ीन कफ़रु ला अ्लमलाअिकतु यज़्रिबून वुज़ूहहुम् व अद्बारहुम् ज व ज़ूक़ू अ़ज़ाबल्हरीक़ि (५०) ज़ालिक बिमा क़द्दमत् अैदीकुम् व अन्नल्लाह लैस बिज़ल्लामिल् - लिल्अ़बीदि ला (५१) कदअ्बि आलि फ़िर्अ़ौन ला वल्लज़ीन मिन् क़ब्लिहिम् त़ कफ़रू बिआयातिल्लाहि फ़अख़ज़हुमुल्लाहु बिज़ुनूबिहिम् त़ अिन्नल्लाह क़वीयुन् शदीदुल्-अ़िक़ाबि (५२) ज़ालिक बिअन्नल्लाह लम् यकु मुग़ैयिरन्निऽमतन् अन्अ़महा अ़ला क़ौमिन् हत्ता युग़ैयिरू मा बिअन्फ़ुसिहिम् ला व अन्नल्लाह समीअ़ुन् अ़लीमुन् ला (५३) कदअ्बि आलि फ़िर्अ़ौन ला वल्लज़ीन मिन् क़ब्लिहिम् त़ कज़्ज़बू बिआयाति रब्बिहिम् फ़अह्लक्नाहुम् बिज़ुनूबिहिम् व अग़्रक़्ना आल फ़िर्अ़ौन ज व कुल्लुन् कानू ज़ालिमीन (५४) अिन्न शर्रद्दवाब्बि अ़िन्दल्लाहिल्लज़ीन कफ़रू फ़हुम् ला युअ्मिनून सला ज (५५) अल्लज़ीन आहत्त मिन्हुम् सुम्म यन्क़ुज़ून अ़हदहुम् फ़ी कुल्लि मर्रतिव्व हुम् ला यत्तक़ून (५६) फ़अिम्मा तस्क़फ़न्नहुम् फ़िल्हर्बि फ़शर्रिद् बिहिम् मन् ख़ल्फ़हुम् लअ़ल्लहुम् यज़्ज़क्करून (५७)

الشيطن اعمالهم وقال لا غالب لكم اليوم من الناس و
اني جار لكم فلما تراءت الفئتن نكص على عقبيه وقال
اني بريء منكم اني ارى ما لا ترون اني اخاف الله والله
شديد العقاب ۝ اذ يقول المنفقون والذين في قلوبهم
مرض غر هؤلاء دينهم ومن يتوكل على الله فان الله
عزيز حكيم ۝ ولو ترى اذ يتوفى الذين كفروا الملئكة
يضربون وجوههم وادبارهم وذوقوا عذاب الحريق ۝ ذلك
بما قدمت ايديكم وان الله ليس بظلام للعبيد ۝ كداب
ال فرعون والذين من قبلهم كفروا بايت الله فاخذهم
الله بذنوبهم ان الله قوي شديد العقاب ۝ ذلك بان
الله لم يك مغيرا نعمة انعمها على قوم حتى يغيروا ما
بانفسهم وان الله سميع عليم ۝ كداب ال فرعون و
الذين من قبلهم كذبوا بايت ربهم فاهلكنهم بذنوبهم
واغرقنا ال فرعون وكل كانوا ظلمين ۝ ان شر الدواب
عند الله الذين كفروا فهم لا يؤمنون ۝ الذين عهدت
منهم ثم ينقضون عهدهم في كل مرة وهم لا يتقون ۝
فاما تثقفنهم في الحرب فشرد بهم من خلفهم لعلهم

يذكرون

★ रु. ६ / २ आ ४

और (वह भी याद करो) जब शैतान ने उन (काफ़िरों) की हरकतें उनकी (नज़रों में) अच्छी कर दिखलाईं और कहा आज लोगों में कोई ऐसा नहीं जो तुमको जीत सके और मैं तुम्हारा मददगार हूं, फिर जब दोनों फ़ौजें आमने सामने आईं (तो वह) अपने पाँव उल्टे हटा और कहने लगा कि मुझको तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं, मैं वह चीज़ देख रहा हूँ जो तुमको नहीं सूझ पड़ती, मैं अल्लाह से डर रहा हूँ और अल्लाह की मार बड़ी सख़्त है। (४८)★

★ रु. ६/२ आ ४

जब मुनाफ़िक़ और जिन लोगों के दिलों में (कुफ़्र की) बीमारी थी वे (मोमिनों की दिलेरी पर ईर्षा करते व) कहते थे कि इनको अपने दीन का (बड़ा) ग़र्रा है§, तो जो अल्लाह पर भरोसा रखेगा तो (पायेगा कि) अल्लाह बहुत ज़बरदस्त और बड़ा हिक्मतवाला है। (४९) और (ऐ पैग़म्बर!) अगर तुम देखते (अजब हाल) जबकि फ़रिश्ते काफ़िरों की जान निकालते हैं उनके मुहों और पीठों पर मारते जाते हैं और (कहते जाते हैं कि) दोज़ख़ की सज़ा (का मज़ा) चखो। (५०) यह तुम्हारे उन (बुरे कामों का) बदला है जो तुमने अपने हाथों (अपने कर्मों के ज़रिये) पहले से भेजे हैं और इसलिए कि अल्लाह (अपने) बन्दों पर तो ज़ुल्म नहीं करता (५१) (यह सब वैसे ही हुआ) जैसी गति फ़िरऔन की जाति और उनके पहले वालों की हुई; उन्होंने अल्लाह की आयतों से इन्कार किया तो अल्लाह ने उनके गुनाहों के बदले उनको धर पकड़ा। अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त है, उसकी मार बड़ी सख़्त है। (५२) यह इसलिए कहा कि अल्लाह ने जो निआमत किसी क़ौम को दी हो उसको बदलने वाला नहीं जब तक कि वह लोग आप ही अपने मन की हालत न बदलें (उनकी नियत व आमालों में फ़र्क़ न आजाय) और अल्लाह (सब कुछ) सुनता और (दिलों के अन्दर तक की) जानता है। (५३) जैसी हालत फ़िरऔन और उन लोगों की हुई जो उनसे पहले थे कि (उन्होंने) अपने पालनकर्त्ता की आयतों को झुठलाया तो हमने उनके पापों के बदले उनको हलाक कर दिया और फ़िरऔन के लोगों को डुबो दिया और वह सबके सब ज़ालिम थे। (५४) अल्लाह के नज़दीक सबसे ख़राब वह जीव हैं जो कुफ़्र करते हैं, फिर वह ईमान नहीं लाते। (५५) जिनसे तुमने (सुलह का) अहद किया उनमें से अपनी अहद को हर बार वे तोड़ देते हैं और (अल्लाह के अज़ाब से) नहीं डरते। (५६) सो कभी अगर तुम उनको लड़ाई में (मुक़ाबले पर) पाओ तो उन पर ऐसा ज़ोर डालो कि जो लोग उनकी हिमायत पर हैं (इनको भागते देखकर) वह भी भाग खड़े हों शायद यह लोग सबक लें। (५७)

§ यानी मदीने के मुनाफ़िक़ व दूसरे वे लोग जो अल्लाह पर भरोसा नहीं करते थे, यह देख कर कि मुसलमानों की मुट्ठी भर फ़ौज क़ुरैश जैसी ज़बरदस्त ताक़त से टकराने को जा रही है, आपस में कहते थे कि ये मुसलमान अपने दीनी नशे में ऐसे दीवाने हो रहे हैं कि अपनी तबाही का ध्यान न रख कर मिटने को तैयार हैं और उनके इस नबी ने कुछ ऐसा जादू इन पर फूँक रखा है कि इन्हें अपना मर मिटना भला दिखाई दे रहा है।

★ रु. ७ | ३ आ १०

व अिम्मा तख़ाफ़न्न मिन् क़ौमिन् ख़ियानतन् फ़म्बिज् अिलैहिम् अ़ला सवा'अिन् तृ अिन्नल्लाह ला युहि्ब्बुल् - ख़ा'अिनीन (५८) ★ व ला यह्सबन्नल्लज़ीन कफ़रू सबक़ू तृ अिन्नहुम् ला युअ्जिज़ून (५९) व अअिद्दू लहुम् मस्ततअ्तुम् मिन् क़ूवतिंव्व मिर्रिबातिल्ख़ैलि तुर्हिबून बिही अ़दूवल्लाहि व अ़दूवकुम् व आख़रीन मिन् दूनिहिम् ज् ला तअ्लमूनहुम् ज् अल्लाहु यअ्लमुहुम् तृ व मा तुन्फ़िक़ू मिन् शैअिन् फ़ी सबीलिल्लाहि युवफ़्फ़ अिलैकुम् व अन्तुम् ला तुज़्लमून (६०) व अिन् जनहू लिस्सल्मि फ़ज्नह् लहा व तवक्कल् अ़लल्लाहि तृ अिन्नहु हुवस्समीअ़ुल् - अ़लीमु (६१) व अींयुरीदू अैंयख़्दअ़ूक फ़अिन्न हस्बकल्लाहु तृ हुवल्लज़ी अैयदक बिनस्रिही व बिल् - मुअ्मिनीन ला (६२) व अल्लफ़ बैन क़ुलूबिहिम् तृ लौ अन्फ़क़्त मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़म् - मा अल्लफ़्त बैन क़ुलूबिहिम् व लाकिन्नल्लाह अल्लफ़ बैनहुम् तृ अिन्नहु अ़ज़ीज़ुन् हकीमुन् (६३) या अैयुहन्नबीयु हस्बुकल्लाहु व मनित्तबअ़क मिनल्मुअ्मिनीन (६४) ★ या अैयुहन्नबीयु हर्रिज़िल्मुअ्मिनीन अ़लल्-क़ितालि तृ अींयकुम्मिन्कुम् अ़िश्रून साबिरून यग़्लिबू मिअतैनि ज् व अींयकुम्मिन्कुम् मिअतुंय्यग़्लिबू अल्फ़म् - मिनल्लज़ीन कफ़रू बिअन्नहुम् क़ौमुल्ला यफ़्क़हून (६५) अल्आन ख़फ़्फ़फ़ल्लाहु अ़न्कुम् व अ़लिम अन्न फ़ीकुम् ज़अ्फ़न् तृ फ़अींयकुम्-मिन्कुम् मिअतुन् साबिरतुंय्यग़्लिबू मिअतैनि ज् व अींयकुम्-मिन्कुम् अल्फ़ुंय्यग़्लिबू अल्फ़ैनि बिअिज़्निल्लाहि तृ वल्लाहु मअ़स्साबिरीन (६६)

★ रु. ८ | ४ आ ६

واعلموا ١٠ — ١٤٧ — الانفال ٨

يَذَّكَّرُوْنَ ۝ وَاِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى
سَوَآءٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ ۝ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا سَبَقُوْا ۭ اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ۝ وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ
مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَ
اٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ۭ وَمَا تُنْفِقُوْا
مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ۝ وَ
اِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ ۝ وَاِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ۭ هُوَ
الَّذِيْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ۭ
لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ
اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۭ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ
وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ
عَلَى الْقِتَالِ ۭ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ
وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ
لَّا يَفْقَهُوْنَ ۝ اَلْئٰنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ۭ
فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ
مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝

और अगर तुमको किसी जाति की तरफ़ से दग़ा का भय हो तो बराबरी (का बर्ताव) करो (यानी उनसे की हुई अहद उन्हीं की तरफ़ उलट दो। तुम्हारा अहद तोड़ देना अहद से हटना न माना जायगा।) अल्लाह दग़ाबाज़ों को नहीं पसन्द करता। (५८)★

और काफ़िर यह न समझें कि वह भाग (कर हमेशा के लिए बच) निकले। वह कदापि (हमको) थका नहीं सकते। (५९) और ज़ोर (शक्तिसञ्चय) से और घोड़ों की तैयारी से, जहाँ तक तुमसे हो सके, काफ़िरों के मुक़ाबिले के लिए सरंजाम किये रहो कि ऐसा करने से, अल्लाह के दुश्मनों पर और अपने दुश्मनों पर और उनके सिवाय दूसरों पर भी जिनको तुम नहीं जानते मगर अल्लाह उनसे जानकार है, अपनी धाक बैठाये रखोगे और (इन तैयारियों में व जैसे भी) अल्लाह की राह में जो कुछ भी ख़र्च करोगे, वह तुमको पूरा मिलेगा और तुम्हारा हक़ बाक़ी न रहेगा। (६०) और (ऐ पैग़म्बर!) अगर यह लोग सन्धि (सुलह) की तरफ़ झुकें तो तुम भी उसकी तरफ़ झुको और अल्लाह पर भरोसा रखो, बेशक वही (सब) सुनता-जानता है। (६१) और अगर उनका इरादा तुमसे दग़ा करने का होगा तो (परवाह न करो) अल्लाह तुमको काफ़ी है, (क्योंकि) उसी ने (तो) अपनी मदद और ईमानवालों के ज़रिये तुमको ज़ोर इनायत किया। (६२) और उन (ईमानवालों) के दिलों में आपस में मुहब्बत पैदा कर दी। अगर तुम ज़मीन पर के सारे ख़ज़ाने भी ख़र्च कर डालते तो भी उनके दिलों में मुहब्बत न पैदा कर सकते मगर अल्लाह ने उन लोगों में मुहब्बत पैदा कर दी, वह ज़बरदस्त हिकमत वाला है।† (६३) ऐ पैग़म्बर! तुम्हारे लिए और जितने तुम्हारे पैरो ईमानवाले हैं उनके लिए तो अल्लाह काफ़ी है। (६४)★

ऐ पैग़म्बर! ईमानवालों को जेहाद का शौक़ दिलाओ; अगर तुम में से जमे रहने वाले बीस शख़्स भी होंगे तो दो सौ पर भारी बैठेंगे और अगर तुम में से सौ होंगे तो हज़ार काफ़िरों पर भारी बैठेंगे। क्योंकि यह (काफ़िर) ऐसे लोग हैं जो समझ नहीं रखते। (६५) अब अल्लाह ने तुम पर (से अपने हुक्म का) बोझ हलका कर दिया और उसने देखा कि तुममें (अभी) कमज़ोरी है तो (इस हालत में) अगर तुममें से जमे रहनेवाले सौ होंगे तो दो सौ पर भारी बैठेंगे और अगर तुममें से (जमे रहनेवाले) हज़ार होंगे तो अल्लाह के हुक्म से वह दो हज़ार पर भारी बैठेंगे। और अल्लाह उन लोगों का साथ देता है जो जमे रहते हैं।§ (६६)

रु. ७/३ आ १०

रु. ८/४ आ ६

† अरब के कबीले हमेशा आपस में लड़ते रहते और छोटी-छोटी बातों में एक दूसरे के ख़ून के प्यासे रहते थे और वह अदावतें पुश्त दर पुश्त चला करती थीं। ऐसों को आपस में जोड़ देना और एक दीन और एक रसूल स० के पैरो बना देना अल्लाह ही की सामर्थ्य थी; बग़ैर जिसके रसूल स० जैसी हस्ती के इमकान के भी बाहर था।

§ आयत ६५ में साबित क़दम ईमानवालों के पराक्रम का ज़िक्र है कि उन्हें काफ़िरों के मुक़ाबले अल्लाह दस गुना ज़ोर देता है। लेकिन चूँकि अभी ईमान की तालीम का असर पूरा न आ सका था, इसलिए शुरू में दुगना ज़ोर उनको इनायत किया गया। ईमान की राह में जिस क़दर लोग जमते हैं उसी क़दर अल्लाह उनको ज़ोर भी देता है।

मा कान लिनबीयिन् अँयकून लहू अस्‌रा हत्ता युस्ख़िन फ़िल्अर्ज़ि त़ तुरीदून अरज़द्दुन्या क़् सला वल्लाहु युरीदुल् - आख़िरत त़ वल्लाहु अज़ीज़ुन् हकीमुन् (६७) लौ ला किताबुम् - मिनल्लाहि सबक़ लमस्सकुम् फ़ीमा अख़ज्तुम् अज़ाबुन् अज़ीमुन् (६८) फ़कुलू मिम्मा ग़निम्तुम् हलालन् तैयिबन् ज़् सला व'त्तक़ुल्लाह त़ अिन्नल्लाह ग़फ़ूरुर्रहीमुन् (६९)★ या अैयुहन्नबीयु क़ुल्लिमन् फ़ी अैदीकुम् मिनल्‌अस्‌रा ला अींयऽलमिल्लाहु फ़ी क़ुलूबिकुम् ख़ैरैंयुअ्तिकुम् ख़ैरम्मिम्मा अुख़िज मिन्कुम् व यग़्फ़िर् लकुम् त़ वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीमुन् (७०) व अींयुरीदू ख़ियानतक फ़क़द् ख़ानुल्लाह मिन् क़ब्लु फ़अम्कन मिन्हुम् त़ वल्लाहु अलीमुन् हकीमुन् (७१) अिन्नल्लजीन आमनू व हाजरू व जाहदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लजीन आवौव्व नसरू अुला अिक बऽज़ुहुम् औलिया अु बऽज़िन् त़ वल्लजीन आमनू व लम् युहाजिरू मा लकुम् मिंव्व ला यतिहिम् मिन् शैअिन् हत्ता युहाजिरू ज् व अिनिस्तन्सरूकुम् फ़िद्दीनि फ़अलैकुमुन्नसरु अिल्ला अला क़ौमिम्बैनकुम् व बैनहुम् मीसाक़ुन् त़ वल्लाहु बिमा तऽमलून बसीरुन् (७२) वल्लजीन कफ़रू बऽज़ुहुम् औलिया अु बऽज़िन् त़ अिल्ला तफ़्अलूहु तकुन् फ़ित्नतुन् फ़िल्अर्ज़ि व फ़सादुन् कबीरुन् त़ (७३) वल्लजीन आमनू व हाजरू व जाहदू फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लजीन आवौव्व नसरू अुला अिक हुमुल्मुअ्मिनून हक़्क़न् त़ लहुम् मग़्फ़िरतुंव रिज़्क़ुन् करीमुन् (७४)

रु. ९/५ आ ५

واعلموا ١٠ ١٤٨ الانفال ٨

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗۤ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِى الْاَرْضِ ؕ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَاۤ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ قُلْ لِّمَنْ فِىْۤ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰۤى ۙ اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِىْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّاۤ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْۤا اُولٰۤئِكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَىْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ فِى الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِى الْاَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْۤا اُولٰۤئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ

منزل ٢

जब तक अच्छी तरह (काफ़िरों की) ख़ूँरेज़ी न कर ले पैग़म्बर को मुनासिब नहीं कि उसके पास क़ैदियों का जमाव हो; तुम तो (बदले में धन लेकर क़ैदियों को छोड़ने और यों) संसार के माल-असबाब चाहनेवाले हो और अल्लाह (तुम्हारे हाथों दीन को क़ायम करवा कर तुम्हारे लिए) आख़िरत (की चीज़ें देना) चाहता है† और अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त बड़ा हिकमतवाला है। (६७) अगर अल्लाह के यहाँ से (फ़िदयः का) हुक्म-तहरीरी पहले से न हो चुका होता तो जो कुछ⛬ तुमने (फ़िदयः) लिया है उस (के बदले) में अवश्य तुमको सख़्त सज़ा मिलती। (६८) तो जो कुछ तुमको (ग़नीमत में) हाथ लगा है उसको हलाल समझकर खाओ और (आगे के लिए) अल्लाह का भय रखो। बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करनेवाला बेहद मेहरबान है। (६९)★

★ रु ६ / ५ आ ५

ऐ पैग़म्बर! क़ैदी जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं उनको समझा दो कि अगर अल्लाह देखेगा कि तुम्हारे दिलों में कुछ नेकी है तो जो तुमसे छिन गया है उससे अच्छा तुमको देगा और तुम्हारे अपराध भी क्षमा करेगा, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बेहद मेहरबान है। (७०) और (ऐ पैग़म्बर!) अगर यह लोग तुम्हारे साथ दग़ा करना चाहेंगे सो पहले भी अल्लाह से दग़ा कर चुके हैं तो (उसकी सज़ा में) उसने इनको (तुम्हारे हाथों) गिरफ़्तार करा दिया। और अल्लाह बड़ा जानकार और बड़ा हिकमतवाला है। (७१) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने हिजरत (यानी देश त्याग) किया और अल्लाह के रास्ते में अपनी जान-माल से लड़े और जिन लोगों (यानी अंसारों) ने देश त्याग करने वालों को जगह दी और मदद की, यही लोग (आपस में) एक दूसरे के वारिस हैं◎ और जो लोग ईमान तो ले आये लेकिन देश त्याग नहीं किया तो तुममें और उनमें एक दूसरे का वारिस होने का सम्बन्ध नहीं जब तक देश त्याग कर तुममें न आ मिलें। हाँ अगर दीन के बारे में तुमसे मदद चाहें तो तुमको (उनकी) मदद करनी लाज़िम है, मगर ऐसों के मुक़ाबिले में नहीं कि तुममें और जिनमें (सुलह की) अहद हो, और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है। (७२) और जो काफ़िर हैं वह आपस में एक दूसरे के वारिस हैं—अगर ऐसा ही (तुम भी वारिस होने का सम्बन्ध सिर्फ़ मुहाजरीन में सीमित) न रखोगे तो देश में फ़साद फैल जायगा और (देश में) बड़ी तबाही होगी। (७३) और जो लोग ईमान लाये उन्होंने देश त्याग किया और अल्लाह के रास्ते में जेहाद किया और जिन (अन्सार) लोगों ने जगह दी और मदद की, वही पक्के ईमानवाले हैं, इनके लिए (आख़िरत में) बख़्शीश और इज़्ज़त की रोज़ी है। (७४)

---

† अल्लाह का हुक्म है कि काफ़िरों का जंग में इतना दमन किया जाय कि कुफ़्र की जड़ कट जाय। जब तक गुनहगारों का पूरा क़त्लाम न होले तब तक यह गुञ्जाइश नहीं कि उनको क़ैद करके और बाद में फ़िदयः (बदले का धन) की लालच में छोड़ दिया जाय। बद्र की लड़ाई में ७० काफ़िरों को मुसलमानों ने पकड़ लिया था। उनको फ़िदयः (कुछ रुपया या माल) लेकर छोड़ दिया था। उस पर यह आयत उतरी कि अगर फ़िदयः का हुक्म पहले से मौजूद न होता तो तुम पर उसके बदले में सख़्त अज़ाब आता। ⛬ यहाँ (जो कुछ) का अर्थ है वही धन या माल जिसके बदले क़ैदियों को छोड़ दिया गया था। ◎ बाद में सूरतुन्निसा के नाज़िल होने के समय से यह व दूसरे वरासत (उत्तराधिकार) के हुक्म रद हो गये।

वल्लजीन आमनू मिम्बऽदु व हाजरू व जाहदू मअकुम् फ़उला'अिक मिन्कुम् त् व अुलुल् - अर्हामि बऽज़ुहुम् औला बिबऽज़िन् फ़ी किताबिल्लाहि त् अिन्नल्लाह बिकुल्लि शैअिन् अलीमुन् (७५) ★

रु. १०
६ आ ६

☪ ९ सूरतुत्तौबः ११३ ☪

(मदनी) इसमें अरबी के ११३६० हुरूफ़, २५३७ शब्द, १२९ आयतें और १६ रुकूअ़ हैं।

बरा'अतुम्मिनल्लाहि व रसूलिही' अिलल्लजीन आहत्तुम् मिनल्मुश्रिकीन त् (१) फ़सीहू फ़िल्अर्ज़ि अर्बअत अशहुरिंव्वऽलमू' अन्नकुम् ग़ैरु मुऽजिज़िल्लाहि ला व अन्नल्लाह मुख़्ज़िल्काफ़िरीन (२) व अज़ानुम्मिनल्लाहि व रसूलिही' अिलन्नासि यौमल्-हृज्जिल्-अक्बरि अन्नल्लाह बरी'अुम्-मिनल्-मुश्रिकीन ▲ ला व रसूलुहू त् फ़अिन् तुब्तुम् फ़हुव ख़ैरुल्लकुम् ज् व अिन् तवल्लैतुम् फ़ऽलमू' अन्नकुम् ग़ैरु मुऽजिज़िल्लाहि त् व बशशिरिल्लजीन कफ़रू बिअज़ाबिन् अलीमिन् ला (३) अिल्लल्लजीन आहत्तुम् मिनल्-मुश्रिकीन सुम्म लम् यन्क़ुसूकुम् शैऔंव लम् युजाहिरू अलैकुम् अहदन् फ़अतिम्मू' अिलैहिम् अहदहुम् अिला मुद्दतिहिम् त् अिन्नल्लाह युहिब्बुल्-मुत्तक़ीन (४) फ़अिज़न्सलख़ल् - अश्हुरुल् - हुरुमु फ़क़्तुलुल् - मुश्रिकीन हैसु वजत्तुमूहुम् व ख़ुज़ूहुम् वह्सुरूहुम् वक़्अुदू लहुम् कुल्ल मर्सदिन् ज् फ़अिन् ताबू व अक़ामुस्-सलात व आतवुज़्ज़कात फ़ख़ल्लू सबीलहुम् त् अिन्नल्लाह ग़फ़ूरुर्रहीमुन् (५) व अिन् अहदुम्मिनल् - मुश्रिकीनस् - तजारक फ़अजिर्हु हृत्ता यस्मअ कलामल्लाहि सुम्म अब्लिग़्हु मअ्मनहु त् ज़ालिक बिअन्नहुम् क़ौमुल्ला यऽलमून (६) ★

رु. व् / अ. १/४

واعلموا ١٠ — ١٣٩ — التوبة ٩

وَرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ ؕ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِىْ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ۝

[illegible]

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ فَسِيْحُوْا فِى الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِى الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِىْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ۬ وَرَسُوْلُهٗ ؕ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝ فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَاِنْ اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ؕ ذٰلِكَ

منزل

रु. १
७ आ ६

और जो लोग बाद को ईमान लाये और उन्होंने देश त्याग किया और तुम लोगों के साथ मिलकर जेहाद भी किया तो वह तुम्हीं में दाख़िल हैं और (इनमें से) जो रिश्तेदार हैं वह अल्लाह की किताब के हुक्म के बमूजिब (ग़ैर आदमियों की निस्बत आपस में) ज़्यादः हक़दार हैं। बेशक अल्लाह हर चीज़ से जानकार है। (७५) ★ ●

★ रु. १० / ६ आ ६ ● रु. व्. आ. १ / ४

(*) ९ सूरतुत्तौबः ११३ (*)

(मदनी) अरबी के ११३६० अक्षर, २५३७ शब्द, १२९ आयतें और १६ रुकूअ हैं।*

जिन मुशरिकों के साथ तुम (मुसलमानों) ने (सुलह का) अहद कर रखा था अल्लाह और उसके पैग़म्बर की तरफ़ से उनको (अब साफ़) जवाब§ है। (१) तो (ऐ मुशरिको! अमन के) चार महीने (ज़ीक़ाद, ज़िलहिज्ज, मुहर्रम और रजब की मुहलत भर और) मुल्क में चल फिर लो और जाने रहो कि तुम अल्लाह को हरा नहीं सकोगे, और (यह कि) अल्लाह काफ़िरों को (हमेशा) ज़िल्लत देता है। (२) और हज्जे-अकबर के दिन अल्लाह और उसके पैग़म्बर की तरफ़ से लोगों को मुनादी की जाती है कि अल्लाह और उसका पैग़म्बर मुशरिकों (के प्रति ज़िम्मेदारियों) से अलग है। पस अगर तुम तौबा करो तो यह तुम्हारे लिये भला है, और अगर न मानो तो जान रखो कि तुम अल्लाह को हरा नहीं सकोगे, और (ऐ पैग़म्बर!) काफ़िरों को दुखदाई सज़ा की ख़ुशख़बरी सुना दो। (३) हाँ, मुशरिकों में से जिनके साथ तुमने अहद कर रखा था फिर उन्होंने (उसके पालन में) तुम्हारे साथ किसी तरह की कमी नहीं की और न तुम्हारे मुक़ाबले किसी (दूसरे) की मदद की, तो उनके साथ जो अहद है, उसे (अहद की) मियाद तक पूरा उतारो क्योंकि अल्लाह परहेज़गारों को पसन्द करता है। (४) फिर जब (मियाद वाले चार) अदब के महीने बीत जावें तो उन (अहद तोड़ने वाले) मुशरिकों को जहाँ पाओ क़त्ल करो और उनको गिरफ़्तार करो उनको घेर लो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। फिर अगर वह लोग (कुफ़्र और शिर्क से) तौबः करें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो उनका रास्ता छोड़ दो। अल्लाह माफ़ करनेवाला बेहद मेहरबान है। (५) (और ऐ पैग़म्बर!) मुशरिकों में से अगर कोई तुमसे पनाह (शरण) माँगे तो पनाह दो, यहाँ तक कि वह (इत्मीनान से) अल्लाह का कलाम सुन ले। फिर उसको पहुँचा दो जहाँ उसको भय न हो; यह इसलिए कि यह लोग जानकार नहीं (यानी अज्ञान में फसे हैं और माफ़ी के क़ाबिल हैं)। (६)★

★ रु. १ / ७ आ ६

---

* क़ुरआन में यही अकेली सूरत है जिसका शुरू "बिस्मिल्लाह" से नहीं हुआ है। यह आख़िरी सूरतों में है। गो नबी स० की यह हिदायत थी कि आठवीं सूरः (अन्फ़ाल) के बाद इसका क्रम रखा जाय लेकिन यह निर्णय न हो सका कि आया यह अलाहदा एक सूरत है या पिछली सूरः का यह एक हिस्सा है। इस लिए इसका विषय अहम (महत्वपूर्ण) होने के कारन इसको अलग सूरः तो क़ायम किया गया लेकिन 'बिस्मिल्लाह' से यह शुरू नहीं की गई क्योंकि यह तै न पा सका कि रसूल स० ने इसके पहले "बिस्मिल्लाह" का प्रयोग किया था या नहीं।

यह सूरत ९ हिजरी में तीन मौक़ों पर नाज़िल हुई। हुदैबिया की सन्धि के मुताबिक़ मुसलमान और क़ुरैशों में मेल मुलाक़ात और हज के मौक़ों पर इकट्ठा होने की सुहूलियत बढ़ गई। नतीजा यह हुआ [पेज ३२१ पर]

§ यानी हुदैबिया के सुलहनामे को मुशरिकों ने तोड़ा तो मुसलमानों को भी हिदायत हुई कि अब उनके मुशरिकों से हुए अहद को वह भी ख़त्म होने का एलान कर दें। चार महीने की मियाद दी गई। इस बीच या तो मुशरिक इस्लाम क़ुबूल करने का फ़ैसला कर लें या जंग को तैयार हों।

कैफ़ यकूनु लिलमुश्रिकीन अह्दुन् अिन्दल्लाहि व अिन्द रसूलिहीं अिल्लल्-लज़ीन आहत्तुम् अिन्दलमस्जिदिल्-ह़रामि ज् फ़मस्तक़ामू लकुम् फ़स्तक़ीमू लहुम् त् अिन्नल्लाह युहि़ब्बुल्-मुत्तक़ीन (७) कैफ़ व औंयज़्हरू अ़लैकुम् ला यर्क़ुबू फ़ीकुम् अिल्लौंव ला जिम्मतन् त् युर्ज़ूनकुम् बिअफ़्वाहिहिम् व तअ्बा क़ुलूबुहुम् ज् व अक्सरुहुम् फ़ासिक़ून ज् (८) अिश्तरौ बिआयातिल्लाहि समनन् क़लीलन् फ़सद्दू अ़न् सबीलिहीं त् अिन्नहुम् साअ मा कानू यअ्मलून (९) ला यर्क़ुबून फ़ी मुअ्मिनिन् अिल्लौंव ला जिम्मतन् त् व उलाअिक हुमुलमुअ्तदून (१०) फ़अिन् ताबू व अक़ामुस्सलात व आतवुज़्ज़कात फ़अिख़्वानुकुम् फ़िद्दीनि त् व नुफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमींयअ्लमून (११) व अिन्नकसू अैमानहुम् मिम्बअ्दि अह्दिहिम् व तअ़नू फ़ी दीनिकुम् फ़क़ातिलू अअिम्मतल्-कुफ़्रि ला अिन्नहुम् ला अैमान लहुम् लअ़ल्लहुम् यन्तहून (१२)

التوبة ٩ — ١٥٠ — واعلموا ١٠

بانهم قوم لا يعلمون ۝ كيف يكون للمشركين عهد عند الله وعند رسوله الا الذين عاهدتم عند المسجد الحرام فما استقاموا لكم فاستقيموا لهم ان الله يحب المتقين ۝ كيف وان يظهروا عليكم لا يرقبوا فيكم الا ولا ذمة يرضونكم بافواههم وتابى قلوبهم واكثرهم فسقون ۝ اشتروا بايت الله ثمنا قليلا فصدوا عن سبيله انهم ساء ما كانوا يعملون ۝ لا يرقبون في مؤمن الا ولا ذمة واولئك هم المعتدون ۝ فان تابوا واقاموا الصلوة واتوا الزكوة فاخوانكم في الدين ونفصل الايت لقوم يعلمون ۝ وان نكثوا ايمانهم من بعد عهدهم وطعنوا في دينكم فقاتلوا ائمة الكفر انهم لا ايمان لهم لعلهم ينتهون ۝ الا تقاتلون قوما نكثوا ايمانهم وهموا باخراج الرسول وهم بدءوكم اول مرة اتخشونهم فالله احق ان تخشوه ان كنتم مؤمنين ۝ قاتلوهم يعذبهم الله بايديكم ويخزهم وينصركم عليهم ويشف صدور قوم مؤمنين ۝ ويذهب غيظ قلوبهم ويتوب الله على من يشاء والله عليم حكيم ۝ ام حسبتم ان تتركوا ولما يعلم الله الذين

منزل ٢

अला तुक़ातिलून क़ौमन्नकसू अैमानहुम् व हम्मू बिअिख़्राजिर्रसूलि व हुम् बदअूकुम् औवल मर्रतिन् त् अतख़्शौनहुम् ज् फ़ल्लाहु अहक़्क़ु अन् तख़्शौहु अिन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (१३) क़ातिलूहुम् युअ़ज्जिबहुमुल्लाहु बिअैदीकुम् व युख़्ज़िहिम् व यन्सुर्कुम् अ़लैहिम् व यश्फ़ि सुदूर क़ौमिम्मुअ्मिनीन ला (१४) व युज़्हिब् ग़ैज क़ुलूबिहिम् त् व यतूबुल्लाहु अ़ला मैंयशाउ त् वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीमुन् (१५)

अल्लाह और [illegible]सके पैग़म्बर के समीप इन मुशरिकों से अ्हद क्योंकर क़ायम हो सकता है। सिवाय उन [illegible]गों के जिनके साथ तुमने मसजिदे हराम (काबः) के क़रीब सन्धि (हुदैबिया की सुलह) [illegible]ी थी, तो जब तक (वह लोग) तुमसे (अपने अ्हद पर क़ायम रहकर) सीधे रहें तुम भी उन[illegible] सीधे रहो; क्योंकि अल्लाह उन लोगों को जो उसकी नाखुशी से डरते हैं, पसन्द करता है। ([illegible]) क्योंकर (अल्लाह का) अ्हद रह सकता है (उनसे कि) अगर तुम पर ज़ोरदार पड़ जाँय त[illegible] तुम्हारे हक़ में रिश्तेदारी और अ्हद का कोई लिहाज़ न रखें। (वे) तुमको अपने मुँह ([illegible] बात) से तो राज़ी करते हैं लेकिन उनके दिल नहीं मानते, और उनमें ज्यादातर नाफ़र्मान[illegible] (अवज्ञाकारी) ही हैं। (८) यह लोग अल्लाह की आयतों के बदले में थोड़ा-सा लाभ उ[illegible]ाते हैं फिर अल्लाह के रास्ते से रोकने लगते हैं। बेशक यह लोग जो कर रहे हैं (बहुत ही) [illegible]रा कर रहे हैं। (९) (यह लोग) किसी ईमानवाले के बारे में न तो रिश्तेदारी का ख[illegible]ाल रखते हैं और न (किये हुये) वादे का और यही लोग ज्यादती करने वाले हैं। (१०) फिर अगर वह लोग तौबा करें और नमाज़ क़ायम रखें और ज़कात दें तो (समझ लो कि) तुम्हारे दीनी भाई हुये और जो लोग समझदार हैं उनके लिए हम अपनी आयतों को खोल खोलकर बयान करते हैं। (११) और अगर यह लोग अ्हद करने के बाद अपनी अ्हद को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन में ताना‌ज़नी (आक्षेप) करें तो तुम कुफ़्र (इन्कारी) के इन सरग़नाओं से लड़ो, बेशक उनकी क़समों की क़ीमत कुछ नहीं, शायद यह लोग मान जावें। (१२) (तुम) इन लोगों से क्यों न लड़ो, जिन्होंने अपनी क़समों को तोड़ डाला और पैग़म्बर के निकाल देने का क़स्द किया और तुमसे छेड़खानी भी अव्वल (इन्होंने ही) की। क्या! तुम इन लोगों से डरते हो? पस अगर तुम ईमान रखते हो तो तुमको अल्लाह से ज़्यादा डरना चाहिए। (१३) (ऐ ईमानवालो!) इन लोगों से लड़ो, यहाँ तक कि अल्लाह तुम्हारे ही हाथों इनको सज़ा दे और इनको ज़लील करे और इन पर तुमको जीत दे और कितने ही ईमानवालों के दिलों को ठण्डा करे। (१४) और इनके दिलों में जो ग़ुस्सा है उसको भी दूर करेगा और अल्लाह जिसकी चाहे तौबा क़बूल कर ले, और अल्लाह सबके दिलों का जानकार बड़ा हिकमतवाला है। (१५)

[पेज ३१९ से] कि इस्लाम में लोग कसरत से ईमान लाने लगे। इससे घबड़ा कर क़ुरैशों ने उस सन्धि को तोड़ दिया और रसूलुल्लाह स० ने भी तंग आकर क़ुरैशों पर ज़बर्दस्त हमला करके उन्हें परास्त कर दिया। बार बार सुलह तोड़ने से अब यह ऐलान हो गया कि मुशरिकों की हम पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं। जिन्होंने अहद तोड़े वे चार महीने के अन्दर या तो इस्लाम क़बूल करलें, या देश छोड़ दें या फिर जेहाद का सामना करें और क़त्ल हों। उस घड़ी से मुशरिकों को काबा में जाने की मनाही हो गई और मुसलमान ही वहाँ की खिदमत में रहे। मुशरिकों की ज़िम्मेदारी खत्म यानी 'बराअत' के नाम पर ही इस सूरत को सूरः 'बराअत' भी कहते हैं। [पेज ३२३ पर]

† जिनसे सुलह हुई, वे तीन क़िस्म के लोग थे। एक वे जिनसे सुलह की कोई मियाद न तय थी। उन मुशरिकों को अब जवाब दे दिया गया। दूसरे वे जो मक्का की सन्धि में शामिल थे। उनसे सन्धि का पालन किया जाय जब तक वे दग़ा न करें। तीसरे वे लोग जिनसे सुलह की मुद्दत ठहरी थी। वह मुदत तक क़ायम रहेगी। आखिर तो सब मुशरिकों को उनके बार-बार दग़ा करने के कारन सुलह से हाथ धोना पड़ा और काबा के मुल्क में किसी मुशरिक को पनाह नहीं। याने मुशरिकों से तो समझौता होने का सवाल ही कहाँ जब कि उनके दिल साफ़ नहीं और वह कुफ़्र से घिरे हैं और अगर कहीं तुम उनके क़ाबू में आ जाओ तो न सम्बन्ध का न समझौते के क़ौल का ही लिहाज़ रखें। लेकिन जिनसे हुदैबिया की सुलह के मौके पर अहद हुआ और वे उस पर क़ायम भी हैं तो मुसलमानों को भी उसका पालन मियाद तक करना चाहिये।

अम् ह़सिब्तुम् अन् तुत्रकू व लम्मा यऽ्लमिल्लाहुल्लज़ीन जाहदू मिन्कुम् व लम् यत्तख़िज़ू मिन् दूनिल्लाहि व ला रसूलिही व लल्मुअ्मिनीन व लीजतन् त़ वल्लाहु ख़बीरुम् - बिमा तऽ्मलून (१६) ★ मा कान लिल्मुश्रिकीन अँयऽ्मुरू मसाजिदल्लाहि शाहिदीन अ़ला अन्फ़ुसिहिम् बिल्कुफ़्रि त़ उला'अिक ह़बितत् अऽ्मालुहुम् ज् सला व फ़िन्नारि हुम् ख़ालिदून (१७) अिन्नमा यऽ्मुरु मसाजिदल्लाहि मन् आमन बिल्लाहि वल् - यौमिल् - आख़िरि व अक़ामस्सलात व आतज़्ज़कात व लम् यख़्श अिल्लल्लाह फ़अ़सा उला'अिक अँयकूनू मिनल्-मुह्तदीन (१८) अजअ़ल्तुम् सिक़ायतल् - ह़ा'जिज व अ़िमारतल् - मस्जिदिल् - ह़रामि कमन् आमन बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि व जाहद फ़ी सबीलिल्लाहि त़ ला यस्तवून अ़िन्दल्लाहि त़ वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमज़्-ज़ालिमीन म् • (१९) अल्लज़ीन आमनू व हाजरू व जाहदू फ़ी सबीलिल्लाहि बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् ला अऽ्ज़मु दरजतन् अ़िन्दल्लाहि त़ व उला'अिक हुमुल् - फ़ा'अिज़ून (२०) युबश्शिरुहुम् रब्बुहुम् बिरह्मतिम्मिन्हु व रिज़्वानिंव्व जन्नातिल्लहुम् फ़ीहा नअ़ीमुम्मुक़ीमुन् ला (२१) ख़ालिदीन फ़ीहा अबदन् त़ अिन्नल्लाह अ़िन्दहू अज्रुन् अ़ज़ीमुन् (२२) या अैयुहल्लज़ीन आमनू ला तत्तख़िज़ू आबा'अकुम् व अिख़्वानकुम् औलिया'अ अिनिस्तह़ब्बुल्कुफ़्र अ़लल्अीमानि त़ व मैंयतवल्लहुम् मिन्कुम् फ़उला'अिक हुमुज़्ज़ालिमून (२३)

रु. २ ★ आ १०

व. ला जि म

جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ښ وَفِي النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ۝ اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰۗىِٕكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ۝ اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاۗجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ۝ يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰبَاۗءَكُمْ وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَاۗءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَي الْاِيْمَانِ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَاۗؤُكُمْ وَاَبْنَاۗؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُۨ اقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ

(और ऐ ईमानवालो!) क्या तुमने ऐसा समझ रखा है कि (बिना कसौटी पर चढ़े) यों ही सस्ते छूट जाओगे और अभी अल्लाह ने उन लोगों को (आज़मायश में) देखा तक नहीं जो तुममें से जेहाद करते हैं और अल्लाह और उसके पैग़म्बर और ईमानवालों को छोड़कर किसी को अपना दिली दोस्त नहीं बनाते। और जो कुछ भी तुम लोग कर रहे हो अल्लाह को उसकी (सब) ख़बर है। (१६) ☆

★ रु. २/८ आ १०

मुशरिकों को कोई अधिकार नहीं कि अल्लाह की मसजिद आबाद करें जबकि वे खुद अपने ख़िलाफ़ (अपने) कुफ़्र की गवाही दे रहे हैं। यही लोग हैं जिनका किया धरा सब अकारथ हुआ और यही लोग हमेशा (नरक की) आग में रहेंगे। (१७) अल्लाह की मसजिद को वही आबाद रखने का हक़दार है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाता है और नमाज़ क़ायम रखता और ज़कात देता है और जिसने अल्लाह के सिवाय किसी का डर न माना, तो ऐसे लोगों की निस्बत उम्मीद है कि ये राह पानेवालों में होंगे। (१८) (ऐ मुशरिको!) क्या तुम लोगों ने (सिर्फ़) हाजियों (हज के मुसाफ़िरों) को पानी पिलाने और (सर पर कुफ़्र लादे हुए) इज़्ज़तवाली मसजिद आबाद रखने को उस शख़्स (की हस्ती) के बराबर ठहराया है जो अल्लाह और रोज़ आख़िरत पर ईमान लाता और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करता है! अल्लाह के नज़दीक तो यह (लोग एक दूसरे के हरगिज़) बराबर नहीं और अल्लाह ज़ालिम लोगों को सीधा रास्ता नहीं दिखलाया करता। ● (१९) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने देश त्याग किया और अपने जान व माल से अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया, अल्लाह के यहाँ इनका बड़ा दर्जा (है और यही हैं जिनकी ज़िन्दगी) सफल है। (२०) इनका परवरदिगार इनको अपनी कृपा और अपनी रज़ामन्दी और ऐसे बाग़ों का मंगल समाचार देता है जिनमें इनको हमेशा का आराम मिलेगा। (२१) उन बाग़ों में हमेशा रहेंगे, यक़ीनन अल्लाह के यहाँ बड़ा बदला है। (२२) ऐ ईमानवालो! अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे भाई ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र को प्यारा समझें तो उनको अपना समझकर न पकड़ो और जो तुममें से ऐसे (बाप-भाइयों) के साथ मित्रता (का सम्बन्ध) रखेंगे तो यही लोग ज़ालिम (बेइन्साफ़) हैं। (२३)

● व. लाज़िम

[पेज ३२१ से] जिनसे सुलह हुई और उन्होंने उसे तोड़ा नहीं, उनके अहद की मियाद तक उस पर क़ायम रहने की हिदायत मुसलमानों को रही लेकिन आइन्दः के लिए मुशरिकों से नये सुलहनामे का सवाल भी खत्म कर दिया गया। इन्हीं वाक़यात को नज़र में रखकर सागर से ग़ुलाम मुहम्मद साहब क़ुरैशी "तफ़्सीर बैज़ावी कबीर" के हवाले से तहरीर फ़रमाते हैं कि सूरः तौबः "बरा'अतुम्मिनल्लाहि" से शुरू है। इस सूरः के शुरू में 'बिस्मिल्लाह' तहरीर न करने की वजह यह है कि अरब में दस्तूर था कि जिस तहरीर या बयान से मुआहदः (पक्की बात-चीत) को खत्म करने का ऐलान किया जाता था उसके शुरू में 'बिस्मिल्लाह' का नाम जो अमान (आपत्तियों आदि से रक्षा) की निशानी है, नहीं इस्तेमाल होता था। चूँकि यहाँ भी काफ़िरों से सुलह का अहद तोड़ देने या मियाद तक क़ायम रख कर फिर आइन्दः सुलह की अहद न करने का हमेशा के लिए अटल फ़ैसला का ऐलान है इस लिए इस सूरः में "बिस्मिल्लाहि" से शुरुआत नहीं है।

आयत ४२ के फ़ुटनोट के मुताबिक़ तबूक की कड़ी मुहिम में छोटे बड़े जिससे जो बना जान व माल दोनों से सबने जेहाद में हिस्सा लिया। लेकिन मुनाफ़िक़ों ने अजब-अजब बहाने बनाकर लड़ाई से जी चुराया। उस मौक़े से मुनाफ़िक़ों के साथ भी सख़्ती बढ़ा दी गई। इन जी चुराकर बैठ रहनेवालों के साथ कुछ ऐसे भी बैठ रहे थे जिनके दिल में कुफ़्र न था; महज़ सुस्ती या कमज़ोरी से बैठ रहे थे। वापसी पर उनको झिड़कने के बाद उनकी तौबः अल्लाह ने क़ुबूल कर ली और इसी से इसका नाम सूरतुत्तौबः हुआ। [पेज ३२७ पर]

क़ुल् इन् कान आबाउकुम् व अब्नाउकुम् व इख़्वानुकुम् व अज़्वाजुकुम् व अशीरतुकुम् व अम्वालुनिक़् - तरफ़्तुमूहा व तिजारतुन् तख़्शौन कसादहा व मसाकिनु तर्ज़ौनहा अहूब्ब इलैकुम् मिनल्लाहि व रसूलिही व जिहादिन् फ़ी सबीलिही फ़तरब्बसू हत्ता यअ्तियल्लाहु बिअम्रिही त् वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमल्-फ़ासिक़ीन (२४) ★ लक़द् नसरकुमुल्लाहु फ़ी मवातिन कसीरतिंव् ला व यौम हुनैनिन् ला इज् अऽ्जबत्कुम् कस्रतुकुम् फ़लम् तुग्नि अन्कुम् शैअंव ज़ाक़त् अलैकुमुल्अर्ज़ु बिमा रहुबत् सुम्म वल्लैतुम् मुद्बिरीन ज् (२५) सुम्म अन्ज़लल्लाहु सकीनतहू अला रसूलिही व अलल्मुअ्मिनीन व अन्ज़ल जुनूदल्लम् तरौहा व अज़्ज़बल्लज़ीन कफ़रू त् व ज़ालिक जज़ाउल्काफ़िरीन (२६) सुम्म यतूबुल्लाहु मिम्बऽ्दि ज़ालिक अला मैंयशाउ त् वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीमुन् (२७) याऐयुहल्लज़ीन आमनू इन्नमल् - मुश्रिकून नजसुन् फ़ला यक़्रबुल्-मस्जिदल्-हराम बऽ्द आमिहिम् हाज़ा ज् व इन् ख़िफ़्तुम् अैलतन् फ़सौफ़ युग्नीकुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही इन् शाअ त् इन्नल्लाह अलीमुन् हकीमुन् (२८) क़ातिलुल्लज़ीन ला युअ्मिनून बिल्लाहि व ला बिल्-यौमिल्-आख़िरि व ला युहर्रिमून मा हर्रमल्लाहु व रसूलुहू व ला यदीनून दीनल्हक़्क़ि मिनल्लज़ीन ऊतुल्किताब हत्ता युऽ्तुल् - जिज़्यत अंयदिंव्व हुम् साग़िरून (२९) ★ व क़ालतिल्-यहूदु उज़ैरुनिब्नुल्लाहि व क़ालतिन्नसारल्-मसीहुब्नुल्लाहि त् ज़ालिक क़ौलुहुम् बिअफ़्वाहिहिम् ज् युज़ाहिऊन क़ौलल्लज़ीन कफ़रू मिन् क़ब्लु त् क़ातलहुमुल्लाहु ज् ज् अन्ना युअ्फ़कून (३०)

واعلموا ١٠ ١٥٢ التوبة ٩

كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ
فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٤﴾ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ
حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـــًٔا وَّضَاقَتْ
عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اَنْزَلَ
اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰي رَسُوْلِهٖ وَعَلَي الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا
لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ وَذٰلِكَ جَزَاۗءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦﴾
ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰي مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٧﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ
الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ
اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖٓ اِنْ شَاۗءَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٨﴾ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ
اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
حَتّٰي يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٢٩﴾ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ
عُزَيْرُۨ ابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ
بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِــــُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۭ قٰتَلَهُمُ
اللّٰهُ ڽ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٠﴾ اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا

منزل

रु. ३ / ६ आ ८

रु. ४ / १० आ ५

(ऐ पैग़म्बर!) समझा दो कि अगर तुम्हारे बाप और बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी स्त्रियाँ और तुम्हारे कुटुम्बी और माल जो तुमने कमाये हैं और व्यापार जिसके बंद हो जाने का तुमको डर हो और मकानात जिनमें तुम्हारा मोह है, अल्लाह और उसके पैग़म्बर और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने से तुमको (अगर ये सब) ज़्यादा प्यारे हों, तो राह देखो यहाँ तक कि अल्लाह अपना हुक्म (यानी अ़ज़ाब) तुम्हारे सामने ले आये।§ और अल्लाह उन लोगों को राह नहीं दिखाया करता जो हद से बढ़ने वाले हैं। (२४) ★

रु. ३ | ६ आ ८

ऐ मुसलमानो! अल्लाह बहुत से मौक़ों पर तुम्हारी मदद कर चुका है और (ख़ास कर) हुनैन (की लड़ाई) के दिन (तुम्हारी मदद की) जब कि तुम (अपने लश्कर की) अधिकता पर घमण्ड में फूल उठे थे तो वह तुम्हारे कुछ भी काम न आयी और ज़मीन (इतनी) बड़ी होने पर भी तुम्हारे लिए (भागने को) तंग हो गई फिर तुम पीठ फेरकर भाग निकले। (२५) फिर अल्लाह ने अपने पैग़म्बर पर और ईमानवालों पर अपना सब्र उतारा और ऐसी फ़ौजें भेजीं जो तुमको दिखलाई† नहीं पड़ती थीं और काफ़िरों को (बड़ी सख़्त) मार दी और काफ़िरों की यही सज़ा है। (२६) फिर उसके बाद अल्लाह जिसको चाहे तौबा देगा, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला मेहरबान है। (२७) ऐ ईमानवालो! मुशरिक तो (शिर्क के कारन दिल के) नापाक हैं, तो इस वर्ष के बाद इज़्ज़तवाली मसजिद के पास भी न फटकने पायें,♦ और अगर तुमको (उनके वहाँ न आने से आमदनी के घाटे से) ग़रीबी का खटका हो तो अल्लाह चाहेगा तो तुमको अपनी दया से जल्द ही मालदार कर देगा। अल्लाह हर हाल से जानकार और बड़ा हिकमतवाला है। (२८) ऐसे किताबवाले जो न अल्लाह पर ईमान लाते हैं और न आख़िरत के दिन पर और न अल्लाह और उसके पैग़म्बर की हराम की हुई चीज़ों को हराम समझते हैं और न सच्चे दीन को मानते हैं उनसे लड़ो यहाँ तक कि (अपने) हाथों से जज़िया‡ दें और ज़लील होवें। (२९) ★

रु. ४ | १० आ ५

और यहूद कहते हैं कि उज़ैर अल्लाह के बेटे हैं और ईसाई कहते हैं कि मसीह अल्लाह के बेटे हैं। यह उनके मुँह का कहना है। उन्हीं काफ़िरों जैसी बातें बनाने लगे जो इनसे पहले (हो गुज़रे) हैं। अल्लाह इनको ग़ारत करे, किधर को भटके चले जा रहे हैं। (३०)

---

§ और आख़िर यह हुक्म आया कि काफ़िर मुल्क से बाहर हों। उनकी दौलत व परिवार कुछ काम न आये। या तो मरे-मिटे या फिर मजबूर होकर ईमान लाये। ♣ मक्का की विजय के बाद मुसलमानों की संख्या बढ़ गयी थी। जब उनको हवाज़िन जाति के चढ़ाई करने के इरादे का पता लगा तो कहने लगे कि उनको मार भगाना क्या मुश्किल है। हम लगभग १६००० हैं और हमारे शत्रु सिर्फ़ ४ या ५ हज़ार। अल्लाह को उनका घमंड बुरा लगा। हवाज़िन ने उन पर ऐसा कड़ा धावा किया कि रसूल स० व ७० जाँनिसारों को छोड़कर सब भाग खड़े हुए। अहंकार (घमण्ड) का यह नतीजा हुआ। बाद में अल्लाह ही की मदद से जीत नसीब हुई। † फ़रिश्तों की सेना ने हुनैन के युद्ध में मुसलमानों की सहायता की, तब उनको विजय प्राप्त हुई। इस लड़ाई में जितना लूट का माल मुसलमानों के हाथ लगा उतना किसी और लड़ाई में नहीं लगा। ♦ सन् ६ हिजरी में इस हुक्म के बाद से मुशरिकों और काफ़िरों को काबः और उसके आस-पास जाने तक पर रोक लग गई। यहाँ यह भी याद रखने की बात है कि शुरू में मुसलमानों को काबः में जाने व नमाज़ पढ़ने की रोक थी। ‡ जज़िया उस कर को कहते हैं जो मुसलमान शासक अपने ख़िलाफ़ मज़हबवालों से उनकी जान व माल की हिफ़ाज़त के लिए लिया करते थे। यह जज़िया का टैक्स अरब के रहने वालों पर लागू न था।

अित्तख़ज़ू' अह़्बारहुम् व रुह्‌बानहुम् अर्‌बाबम्मिन् दूनिल्लाहि वल्‌मसीह़ब्‌न मर्यम ज् व मा' अुमिरू' अिल्ला लियऽ्‌बुदू' अिलाहौंवाहि़दन् ज ला' अिलाह अिल्ला हुव त् सुब्‌ह़ानहु' अ़म्मा युश्‌रिकून (३१) युरीदून अैंयुत्‌फ़िअू नूरल्लाहि बिअफ़्‌वाहिहिम् व यअ्‌बल्लाहु अिल्ला' अैंयुतिम्म नूरहु व लौ करिहल्‌काफ़िरून (३२) हुवल्लज़ी' अर्सल रसूलहु बिल्‌हुदा व दीनिल्‌ह़क़्‌क़ि लियुज़्‌हिरहु अ़लद्दीनि कुल्लिही ला व लौ करिहल् - मुश्‌रिकून (३३) ● या' अैयुहल्लज़ीन आमनू' अिन्न कसीरम्मिनल्-अह़्‌बारि वर्रुह्‌बानि लयअ्‌कुलून अम्‌वालन्नासि बिल्‌बातिलि व यसुद्दून अ़न् सबीलिल्लाहि त् वल्लज़ीन यक्‌निज़ूनज़्ज़हब वल् - फ़िज़्ज़ त व ला युन्‌फ़िक़ूनहा फ़ी सबीलिल्लाहि ला फ़बश्शिर्‌हुम् बिअ़ज़ाबिन् अलीमिन् ला (३४) ऽ'यौम युह़्मा अ़लैहा फ़ी नारि जहन्नम फ़तुक्‌वा बिहा जिबाहुहुम् व जुनूबुहुम् व ज़ुहूरुहुम् त् हाज़ा मा कनज़्‌तुम् लिअन्‌फ़ुसिकुम् फ़ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तक्‌निज़ून (३५) अिन्न अ़िद्दतश्शुहूरि अ़िन्दल्लाहिस्‌ना अ़शर शह्‌रन् फ़ी किताबिल्लाहि यौम ख़लक़स्समावाति वल्‌अर्ज़ मिन्‌हा' अर्बअ़तुन् हुरुमुन् त् ज़ालिकद्दीनुल्-क़ैयिमु ऽ ला फ़ला तज़्‌लिमू फ़ीहिन्न अन्‌फ़ुसकुम् व क़ातिलुल् - मुश्‌रिकीन का'फ़फ़तन् कमा युक़ातिलूनकुम् का'फ़फ़तन् त् वऽ्‌लमू' अन्नल्लाह मअ़ल्मुत्तक़ीन (३६) अिन्नमन्नसी'अु ज़ियादतुन् फ़िल्कुफ़्‌रि युज़ल्लु बिहिल्लज़ीन कफ़रू युहि़ल्लूनहु आमौंव युह़र्रिमूनहु आमल् - लियुवातिअू अ़िद्दत मा ह़र्रमल्लाहु फ़युहि़ल्लू मा ह़र्रमल्लाहु त् ज़ुय्यिन लहुम् सू'अु अऽ्‌मालिहिम् त् वल्लाहु ला यह्‌दिल् - क़ौमल् - काफ़िरीन (३७) ★

واعلموا ١٠ ١٥٣ التوبة ٩

من دون الله والمسيح ابن مريم وما امروا الا ليعبدوا
الها واحدا لا اله الا هو سبحنه عما يشركون ۝ يريدون
ان يطفئوا نور الله بافواههم ويابى الله الا ان يتم نوره
ولو كره الكفرون ۝ هو الذي ارسل رسوله بالهدى و
دين الحق ليظهره على الدين كله ولو كره المشركون ۝
يايها الذين امنوا ان كثيرا من الاحبار والرهبان لياكلون اموال
الناس بالباطل ويصدون عن سبيل الله والذين يكنزون
الذهب والفضة ولا ينفقونها في سبيل الله فبشرهم بعذاب
اليم ۝ يوم يحمى عليها في نار جهنم فتكوى بها جباههم
وجنوبهم وظهورهم هذا ما كنزتم لانفسكم فذوقوا ما كنتم
تكنزون ۝ ان عدة الشهور عند الله اثنا عشر شهرا في كتب
الله يوم خلق السموت والارض منها اربعة حرم ذلك
الدين القيم فلا تظلموا فيهن انفسكم وقاتلوا المشركين
كافة كما يقاتلونكم كافة واعلموا ان الله مع
المتقين ۝ انما النسيء زيادة في الكفر يضل به الذين
كفروا يحلونه عاما ويحرمونه عاما ليواطئوا عدة ما حرم
الله فيحلوا ما حرم الله زين لهم سوء اعمالهم والله لا

النصف

منزل ٢

नि. ½

रु. ५ / ११ आ ८

इन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर अपने विद्वानों और अपने यतियों और मरियम के बेटे मसीह को अल्लाह बना खड़ा किया, हालाँकि इनको यही हुक्म दिया गया था कि एक ही अल्लाह की पूजा करते रहना; उसके सिवाय कोई पूजित नहीं (और) अल्लाह उनके (माने हुए) शिर्क से परे (पाक) है। (३१) चाहते हैं कि अल्लाह की रोशनी को अपने मुँह से बुझा दें और अल्लाह को मंज़ूर है कि हर तरह पर अपने नूर (की रोशनी) को पूरा करके रहे, भले ही काफ़िरों को बुरा (ही क्यों न) लगे। (३२) वही है जिसने अपने पैग़म्बर को हिदायत और सच्चा दीन देकर भेजा ताकि उसको हर दीन से ऊपर करे और भले ही मुशरिकों को बुरा (ही क्यों न) लगे। (३३) ऐ ईमानवालो! अक्सर किताबवालों (यानी यहूदियों व ईसाइयों) के विद्वान और यती, लोगों के माल नाहक़ (अनधिकार) खाते और अल्लाह के रास्ते से (लोगों को) रोकते हैं और जो लोग सोना और चाँदी जमा करते रहते हैं और उसको अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते तो उनको दुखदाई सज़ा की ख़ुशख़बरी सुना दो। (३४) जबकि उस (सोने चाँदी) को दोज़ख़ की आग में तपाया जायगा, फिर उससे उनके माथे और उनकी करवटें और उनकी पीठें दाग़ी जायँगी (और कहा जायगा) यह है जो तुमने अपने लिए जमा कर रखा था, लो (अब) अपने जमा किये का मज़ा चखो। (३५) जिस दिन अल्लाह ने आसमान और ज़मीन पैदा किये हैं (उसी समय से) अल्लाह के यहाँ उसकी किताब में १२ महीने हैं, जिनमें से चार अदब (आम तौर पर अमन से रहने) के हैं। सीधा दीन तो यह है। तो (ऐ ईमानवालो) इन चार अदबवाले महीनों में लड़ाई या ख़ूँरेज़ी करके अपने ऊपर ज़ुल्म न (लादा) करो और तुम इन सब मुशरिकों से लड़ो जैसे वह तुम सब से लड़ते हैं। और जाने रहो कि अल्लाह परहेज़गारों का साथी है। (३६) यह जो महीनों का हटा देना है यह भी कुफ़्र में एक बढ़ती (की गई) है जिसके कारण से काफ़िर गुमराही में पड़ते हैं। एक वर्ष एक महीने को हलाल समझ लेते हैं और उसी को दूसरे वर्ष हराम ठहराते हैं। ताकि अल्लाह ने जो अदब वाले महीनों को मुक़र्रर किया है उनकी महज़ गिनती पूरी कर लें और अल्लाह के मना किये को हलाल (यानी जायज़) कर लें।† इनके बुरे आचरण इनको भले दिखाई देते हैं और अल्लाह काफ़िरों की क़ौम को हिदायत नहीं दिया करता। (३७) ★

नि. १/२ रु. ५/११ आ. ८

[पेज ३२३ से] हुनैन की लड़ाई का भी एक मौक़ा है। आयत २५ के फ़ुटनोट देखिये। मुसलमानों में अपनी तादाद देखकर तकब्बुर (अहंकार) पैदा हुआ और उसकी चेतावनी भी अल्लाह ने उनको उसी वक़्त दी।

आयत १—२९ में मुशरिकों की तरफ़ से सुलह बार बार तोड़ने और विश्वासघात होने से उनसे हमेशा के लिए अहद तोड़ दिये गये। और काबः से उनका सम्बन्ध ख़त्म कर दिया गया। आ० ३०—४२ अहल किताब (यहूदी ईसाई) का अपनी किताबों से हट जाने और चुनांचे अल्लाह के पैग़ाम की सुरक्षा का भार मुसलमानों पर छोड़े जाने की चरचा है। उसको पूरा न करने पर अल्लाह इनको भी उखाड़कर दूसरों को हाकिम ला बनायेगा। आ० ४३-९६ में मुनाफ़िक़ों के गुनाहों व उनके अज़ाब की कहानी है। [पेज ३३१ पर]

† इस्लाम से पहले अरब में 'नसी' का एक रवाज था। चाँद के हिसाब से तो बारह महीने ही होते हैं। उनमें चार अदब वाले महीनों ज़ीक़ाद, ज़िलहिज्ज, मुहर्रम और रजब में लड़ाई—ख़ूँरेज़ी की मनाही थी। तो काफ़िर जब लड़ते लड़ते बीच में मुहर्रम आ गया देखते तो उसको हटाकर बदल देते कि इस बार सफ़र पहले होगा और यूँ उनको मुहर्रम के महीने में ही लड़ने का मौक़ा मिल जाता और नाम सफ़र के महीने का होता। दूसरी बात यह कि 'क़मरी' यानी 'चांद्र मास' के हिसाब से बारह महीने में एक कबीसा (लौंद) का महीना भी जोड़ देते थे ताकि वह 'शम्सी' यानी 'सौरमास' के हिसाब से मेल खा जाय। —तफ़्सीर मौलाना मादूदी साहब।

या अैयुहल्लज़ीन आमनू मा लकुम् अिज़ा क़ील लकुमुन्फ़िरू फ़ी सबीलिल्लाहिस्-साक़ल्तुम् अिलल्अर्ज़ि त् अरज़ीतुम् बिल् - हूयाविद्दुन्या मिनल्-आख़िरति ज् फ़मा मताअुल्-हूयाविद्दुन्या फ़िल्-आख़िरति अिल्ला क़लीलुन् (३८) अिल्ला तन्फ़िरू युअ़ज्ज़िबकुम् अ़ज़ाबन् अलीमन् ० ला ०व यस्तब्दिल् क़ौमन् ग़ैरकुम् व ला तज़ुर्रूहु शैअन् त् वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैअिन् क़दीरुन् (३९) अिल्ला तन्सुरूहु फ़क़द् नसरहुल्लाहु अिज् अख़्रजहुल्लज़ीन कफ़रू सानियस्नैनि अिज् हुमा फ़िल्ग़ारि अिज् यक़ूलु लिसाहिबिही ला तहूज़न् अिन्नल्लाह मअ़ना ज् फ़अन्ज़लल्लाहु सकीनतहू अ़लैहि व अैयदहू बिजुनूदिल्लम् तरौहा व जअ़ल कलिमतल्-लज़ीन कफ़रुस्सुफ़्ला त् व कलिमतुल्लाहि हियल्अ़ुल्या त् वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हूकीमुन् (४०) अिन्फ़िरू ख़िफ़ाफ़ौंव सिक़ालौंव जाहिदू बिअम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम् फ़ी सबीलिल्लाहि त् ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् अिन् कुन्तुम् तऽलमून (४१) लौ कान अ़रज़न् क़रीबौंव सफ़रन् क़ासिदल्लत्तबअ़ूक व लाकिम् - बअ़ुदत् अ़लैहिमुश्शुक़्क़तु त् व सयहूलिफ़ून बिल्लाहि लविस्ततऽना लख़रज्ना मअ़कुम् ज् युहूलिकून अन्फ़ुसहुम ज् वल्लाहु यऽलमु अिन्नहुम् लकाज़िबून (४२) ★ अ़फ़ल्लाहु अ़न्क ज् लिम अज़िन्त लहुम् हूत्ता यतबैयन लकल्लज़ीन सदक़ू व तऽलमल्काज़िबीन (४३) ला यस्तअ्-ज़िनुकल्लज़ीन युअ्मिनून बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि अैयुजाहिदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् त् वल्लाहु अ़लीमुम् - बिलमुत्तक़ीन (४४)

रु. ६ | १२ आ. ५

التوبة ٩ — ١٥٤ — واعلموا ١٠

يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ لَكُمُ انْفِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَى الْاَرْضِ اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ ۝ اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْئًا وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِي الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝ عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ۝ لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالْمُتَّقِيْنَ ۝

منزل ٢

ऐ ईमानवालो! तुमको क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि अल्लाह की राह में (जिहाद के लिए) निकलो तो तुम ज़मीन पर ढेर हुए जाते हो, क्या आख़िरत छोड़कर दुनिया की ज़िन्दगी पर रीझे हो? तो आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया (की ज़िन्दगी) के साज सामान बिल्कुल नाचीज हैं।(३८) अगर तुम (बुलाये जाने पर भी जेहाद पर) न निकलोगे तो (अल्लाह तुमको) बड़ी दुखदाई मार देगा और तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को (रसूल की पैरवी में) लाकर मौजूद करेगा, और तुम उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकोगे, और अल्लाह हर चीज़ पर ताक़तवर है। (३९) अगर तुम पैग़म्बर की मदद न करोगे तो (क्या बिगड़ जायगा) यक़ीनन अल्लाह ने अपने पैग़म्बर की मदद उस वक़्त भी की थी जब काफ़िरों ने उनको (मक्का से) निकाल बाहर किया था, जब दो में से एक वह (पैग़म्बर) थे; (और) जब वह दोनों (अबूबकर और मोहम्मद स० सौर की) गुफ़ा में (छिपे) थे उस वक़्त (पैग़म्बर) अपने साथी (अबूबकर) को समझा रहे थे कि रंज न करो, अल्लाह हमारे साथ है।† फिर अल्लाह ने पैग़म्बर पर अपनी तरफ़ से सब्र उतारा और उनको ऐसी (फ़रिश्तों की) फ़ौजों से मदद दी जिनको तुम लोग न देख सके और काफ़िरों की बात नीची की, और अल्लाह ही की बात हमेशा ऊँची है और अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त बड़ा हिकमतवाला है। (४०) हल्के और बोझिल (हथियार कम या ज़्यादः जिस हालत में भी हो पैग़म्बर के बुलाने पर) निकल खड़े हुआ करो और अपनी जान व माल से अल्लाह की राह में जिहाद करो। अगर तुम समझवाले हो तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है। (४१) अगर आसानी से फ़ायदा मिलने वाला होता और सफ़र भी मामूली दर्जे का होता तो (ये लोग) तुम्हारे साथ चल पड़ते, लेकिन उनको तो सफ़र दूर दिखाई दिया‡ और अब (चूँकि ख़तरा निकल गया है तो) अल्लाह की क़सम खा-खाकर कहेंगे कि अगर हमसे बन पड़ता तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ (जिहाद पर) निकलते। यह लोग आप अपनी जानों को तबाही में डाल रहे हैं, और अल्लाह को मालूम है कि यह लोग (निरे) झूठे हैं। (४२)★

★ रु० ६/१२ आ० ५

(ऐ मोहम्मद!) अल्लाह तुझे माफ़ करे! तूने क्यों उनको (इस लड़ाई में न जाने की) रुख़सत (छुट्टी) दी, इससे पहले कि तुमको पता चल जाता कि (इन उज्र पेश करने वालों में) कौन सच्चे हैं और (कौन) झूठे (बहानेबाज़) हैं।(४३) जो लोग अल्लाह का और आख़िरत का विश्वास रखते हैं वह तुझसे इस बात की मोहलत नहीं माँगते कि अपनी जान व माल से जिहाद में शरीक न हों और अल्लाह परहेज़गारों डर माननेवालों को ख़ूब जानता है। (४४)

---

† जब रसूल स० ने हिजरत में मक्का से मदीना को प्रस्थान किया तो यह जानकर कि काफ़िर रास्ते में उनके क़त्ल का ज़रूर मन्सूबा बाँधेंगे, वह और उनके अकेले साथी ह० अबूबकर उत्तर का आम रास्ता छोड़कर दक्खिन की ओर से मदीना चले और रास्ते में तीन दिन एक गुफ़ा में छिपे रहे। दुश्मन वहाँ तक खोजते हुये पहुँचे भी और ह० अबूबकर के घबड़ाने पर नबी स० ने बजाय अपने क़त्ल का डर छोड़ उनको समझाया और अल्लाह की बरकत से वह बाल-बाल बचकर मदीना पहुंच गये; और काफ़िरों का आगे चलकर मक्का से सफ़ाया होकर रहा। ‡ मक्का और हुनैन की विजय के बाद इस्लाम की चरचा दूर-दूर फैलने लगी और मुल्क शाम के ईसाई हाकिम ने, जो रोम के सम्राट का गवर्नर था, मदीने पर चढ़ाई करने का इरादा किया। रोम का उस समय बड़ा दबदबा और ताक़त थी। रसुलुल्लाह स० ने यह खबर सुनते ही इस विकट मोर्चे के लिए फ़ौरन कूच बोला और जाकर तबूक पर डेरा डाला। लेकिन कुछ ऐसा हुआ कि रोम से मदद न मिल पाई और शाम के गवर्नर ने पस्त होकर नबी स० से सुलह कर ली। आयत ३८ से इसी जिहाद का बयान शुरू है। यह मोर्चा बड़ा सख्त था इस लिए बहुत से लोग जी चुराने लगे। लेकिन जब अल्लाह की कृपा से बिला लड़ाई वह बला टल गई तो जिहाद पर न जाने से पछताने लगे और बहाने बनाने लगे कि वे मजबूरी से रुक गये न कि जान बचाने को।

अिन्नमा यस्तअ् - जिनुकल्लज़ीन ला युअ्मिनून बिल्लाहि वल्यौमिल् - आख़िरि वर्ताबत् क़ुलूबुहुम् फ़हुम् फ़ी रैबिहिम् यतरद्दून (४५) व लौ अरादुल्-ख़ुरूज लअअद्दूलहू अुद्दवौंव लाकिन् करिहल्लाहुम् - बिआसहुम् फ़सब्बतहुम् व क़ीलक़्अुदू मअलक़ाअिदीन (४६) लौ ख़रजू फ़ीकुम् मा ज़ादूकुम् अिल्ला ख़बालौंव लऔज़अू ख़िलालकुम् यब्ग़ूनकुमुल्-फ़ित्नव ज् व फ़ीकुम् सम्माअून लहुम् त् वल्लाहु अलीमुम् - बिज्ज़ालिमीन (४७) लक़दिब्तग़वुल् - फ़ित्नव मिन् क़ब्लु व क़ल्लबू लकल् - अुमूर हत्ता जा'अल्हक़्क़ु व ज़हर अम्रुल्लाहि व हुम् कारिहून (४८) व मिन्हुम् मैंयक़ूलुअ्ज़ल्ली व ला तफ़्तिन्नी त् अला फ़िल्फ़ित्नति सक़तू त् व अिन्न जहन्नम लमुहीततुम्-बिल्काफ़िरीन (४९) अिन् तुसिब्क हसनतुन् तसुअ्हुम् ज् व अिन् तुसिब्क मुसीबतुंय्यक़ूलू क़द् अख़ज़्ना' अम्रना मिन् क़ब्लु व यतवल्लौव्वहुम् फ़रिहून (५०) क़ुल्लैं-युसीबना' अिल्ला मा कतबल्लाहु लना ज् हुव मौलाना ज् व अलल्लाहि फ़ल्यतवक्कलिल् - मुअ्मिनून (५१) क़ुल् हल् तरब्बसून बिना' अिल्ला' अिह्दल्-हुस्नयैनि त् व नह्नु नतरब्बसु बिकुम् अैंयुसीब-कुमुल्लाहु बिअज़ाबिम्-मिन् अिन्दिही' औ बिअैदीना ज् सला फ़तरब्बसू' अिन्ना मअकुम् मुतरब्बिसून (५२) क़ुल् अन्फ़िक़ू तौअन् औ कर्हल्लैंयुतक़ब्बल मिन्कुम् त् अिन्नकुम् कुन्तुम् क़ौमन् फ़ासिक़ीन (५३) व मा मनअहुम् अन् तुक़्बल मिन्हुम् नफ़क़ातुहुम् अिल्ला' अन्नहुम् कफ़रू बिल्लाहि व बिरसूलिही व ला यअ्तूनस्सलात अिल्ला व हुम् कुसाला व ला युन्फ़िक़ून अिल्ला व हुम् कारिहून (५४)

التوبة ٩　　　١٥٥　　　واعلموا ١٠

إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَارْتَابَتْ
قُلُوبُهُمْ فَهُمْ فِي رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُونَ ۝ وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ
لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً وَلَٰكِنْ كَرِهَ اللَّهُ انْبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيلَ
اقْعُدُوا مَعَ الْقَاعِدِينَ ۝ لَوْ خَرَجُوا فِيكُمْ مَا زَادُوكُمْ إِلَّا خَبَالًا
وَلَأَوْضَعُوا خِلَالَكُمْ يَبْغُونَكُمُ الْفِتْنَةَ وَفِيكُمْ سَمَّاعُونَ لَهُمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ۝ لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوا
لَكَ الْأُمُورَ حَتَّىٰ جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ كَارِهُونَ ۝ وَ
مِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ ائْذَنْ لِي وَلَا تَفْتِنِّي ۚ أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا
وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ۝ إِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ
تَسُؤْهُمْ ۖ وَإِنْ تُصِبْكَ مُصِيبَةٌ يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا أَمْرَنَا
مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَهُمْ فَرِحُونَ ۝ قُلْ لَنْ يُصِيبَنَا إِلَّا مَا
كَتَبَ اللَّهُ لَنَا هُوَ مَوْلَانَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝
قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلَّا إِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ۖ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ
بِكُمْ أَنْ يُصِيبَكُمُ اللَّهُ بِعَذَابٍ مِنْ عِنْدِهِ أَوْ بِأَيْدِينَا ۖ
فَتَرَبَّصُوا إِنَّا مَعَكُمْ مُتَرَبِّصُونَ ۝ قُلْ أَنْفِقُوا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا
لَنْ يُتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ۖ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝ وَمَا مَنَعَهُمْ
أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَاتُهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَبِرَسُولِهِ وَ

منزل ٢

तुमसे छुट्टी के चाहनेवाले वही लोग हैं जो अल्लाह और आख़िरत पर विश्वास नहीं रखते और उनके दिल शक में पड़े हैं, तो वह अपने शक में ही भटक रहे हैं। (४५) और अगर यह लोग (जिहाद के लिए) निकलने का इरादा रखते तो उसके लिए कुछ तैयारी करते, मगर अल्लाह को इनका उठना पसन्द न हुआ, तो उसने इनको बोझिल (शिथिल) कर दिया और हुक्म (से प्रेरित) किया कि तुम भी बैठनेवालों के साथ बैठे रहो।† (४६) अगर यह लोग तुम्हारे साथ निकलते भी तो तुममें ख़राबियाँ डालने के सिवाय कुछ भला न करते और तुममें फ़साद फैलाने की ग़रज़ से तुम्हारे बीच दौड़े-दौड़े फिरते, और तुममें उनके भेदी भी बाज़ मौजूद हैं और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है।@ (४७) (और ऐ पैग़म्बर!) उन्होंने पहले भी फ़साद डलवाना चाहा और तुम्हारे खिलाफ़ तदबीरों की उलट-पलट करते ही रहे यहाँ तक कि (अल्लाह की) सच्ची प्रतिज्ञा आ पहुँची और अल्लाह की आज्ञा पूरी होकर रही और वे बुरा ही मानते रहे। (४८) और इनमें ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि मुझको छुट्टी दे और मुझको विपत्ति में न डाल§। तो जान लो! यह लोग विपत्ति में पड़े ही हैं और दोज़ख़ काफ़िरों को घेरे हुए है। (४९) अगर तुमको कोई भलाई पहुँचे तो उन (मुनाफ़िकों) को बुरा लगता है और अगर तुमको कोई आफ़त पहुँचे तो कहने लगते हैं कि हमने (इसी वजह से) पहले से ही अपना काम साध लिया था और (यह कहते हुये) खुशी मनाते वापिस चले जाते हैं। (५०) (ऐ पैग़म्बर!) कह दो कि जो कुछ अल्लाह ने हमारे लिये लिख दिया है वही हमको पहुँचेगा, वही हमारा काम का सँभालनेवाला है और ईमानवालों को चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा रखें। (५१) (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि तुम हमारे हक़ में दो भलाइयों में से‡ एक भलाई का ही इन्तज़ार कर रहे हो; और हम तुम्हारे हक़ में इस बात के मुन्तज़िर हैं कि अल्लाह तुम पर (या तो) अपने यहाँ से कोई अज़ाब उतारे या हमारे हाथों से (तुम्हें सज़ा दिलवाये)। तो तुम भी (उसका) रास्ता देखो और हम भी तुम्हारे साथ (उसी का) रास्ता देखते हैं। (५२) (ऐ पैग़म्बर! ऐसे लोगों से) कह दो कि तुम खुशदिली से ख़र्च करो या बेदिली से, अल्लाह तुमसे (ख़ैरात) क़ुबूल नहीं करेगा क्योंकि तुम हुक्म न मानने वाले हो। (५३) और उनका ख़र्च क़ुबूल नहीं होता इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर का हुक्म नहीं माना और नमाज़ को आते हैं तो अलसाये हुए से और बुरे दिल से ख़र्च करते हैं। (५४)

[पेज ३२७ से] आ० १००—११८ में अल्लाह की राह में जान-माल लड़ाने वालों को ही कामयाबी है। फ़र्ज़ से हटने वालों को यहाँ तक कि गुनहगारों को भी तौबः करने पर अल्लाह की माफ़ी खुली हुई है। लेकिन हमेशा सरकशी करने वालों को नरक की आग तैयार है। आ० ११९ से समाप्ति १२९ तक हिदायत है कि जेहाद में सबका पूरी तौर पर शिरकत करना फ़र्ज़ है। अलबत्ता सबके जंग पर कूच करने के बजाय कुछ लोगों को दीनी तालीम व समझ पैदा करने के लिए ठहर जाने की भी हिदायत है। सूरः तौबः से पता चलता है कि इस समय उम्मते इस्लाम बहुत असरदार और ज़ोरावर हो चली थीं। और अरब व आस पास के इलाक़ों में उसकी धाक बैठ चुकी थी।

† बैठनेवाले याने जिनको सचमुच लाचारी थी उन्हीं के साथ इन बहानेबाज़ों को भी घर पड़े रहने की प्रेरणा हुई। क्योंकि अगर ये मुनाफ़िक़ साथ चले भी जाते तो वहाँ फ़साद की ही साँठ गाँठ करते। @ यह हाल है उन लोगों का जो दावा मुसलमान होने का करते थे मगर दिल से मुसलमानों का बुरा चाहते थे। जब इनसे कहा जाता था कि लड़ाई के लिए तैयार हो तो एक न एक बात बना देते थे। इनका सरदार अब्दुल्लाह बिन-उबैइ था। § तबूक की चढ़ाई के समय इन्हीं बहाने से बैठ रहने वालों में एक जैद बिन क़ैस था जिसने यह अजूबा बहाना पेश किया कि मैं वहाँ रूमियों की सुन्दरता में फस जाऊँगा। इसलिए मुझे जाने से माफ़ करो, अलबत्ता माल से मदद करूँगा। यों नेककार का स्वांग रच कर जान बचाई। ‡ दो में से एक चीज़ तो हमें अल्लाह देवे गा ही—विजय या शहादत (युद्ध में वीरगति)।

फ़ला तुऽजिब्क अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् त़ अिन्नमा युरीदुल्लाहु लियुअ़ज्जिबहुम् बिहा फ़िल्हयाविद्दुन्या व तज़्हक़ अन्फ़ुसुहुम् व हुम् काफ़िरून (५५) व यह्लिफ़ून बिल्लाहि अिन्नहुम् लमिन्कुम् त़ व मा हुम् मिन्कुम् व लाकिन्नहुम् क़ौमुंय्यफ़्रक़ून (५६) लौ यजिदून मल्जअन् औ मग़ारातिन् औ मुद्दख़लल्लवल्लौ अिलैहि व हुम् यज्महून (५७) व मिन्हुम् मैंयल्मिज़ुक फ़िस्सदक़ाति ज् फ़अिन् अुऽतू मिन्हा रज़ू व अिल्लम् युऽतौ मिन्हा अिज़ा हुम् यस्ख़तून (५८) व लौ अन्नहुम् रज़ू मा आताहुमुल्लाहु व रसूलुहू ला व क़ालू हस्बुनल्लाहु सयुअ्तीनल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही व रसूलुहू ला अिन्ना अिलल्लाहि राग़िबून (५९) ★ अिन्नमस्सदक़ातु लिल्फ़ुक़राअि वल्मसाकीनि वल्आमिलीन अ़लैहा वल्मुअल्लफ़ति क़ुलूबुहुम् व फ़िर्रिक़ाबि वल्ग़ारिमीन व फ़ी सबीलिल्लाहि वब्निस्सबीलि त़ फ़रीज़तम्मिनल्लाहि त़ वल्लाहु अ़लीमुन् हकीमुन् (६०) व मिन्हुमुल्लज़ीन युअ्ज़ूनन्नबीय व यक़ूलून हुव अुज़ुनुन् त़ क़ुल् अुज़ुनु ख़ैरिल्लकुम् युअ्मिनु बिल्लाहि व युअ्मिनु लिल्मुअ्मिनीन व रह्मतुल्लिल्लज़ीन आमनू मिन्कुम् त़ वल्लज़ीन युअ्ज़ून रसूलल्लाहि लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीमुन् (६१) यह्लिफ़ून बिल्लाहि लकुम् लियुर्ज़ूकुम् ज वल्लाहु व रसूलुहू अहक़्क़ु अैंयुर्ज़ूहु अिन् कानू मुअ्मिनीन (६२) ● अलम् यऽलमू अन्नहू मैंयुहादि दिल्लाह व रसूलहू फ़अन्न लहू नार जहन्नम ख़ालिदन् फ़ीहा त़ ज़ालिकल् - ख़िज़्युल् - अ़ज़ीमु (६३)

रु. ७/१३ आ १७ ★

मु. ३/४ ●

واعلموا ١٠ — ١٥٦ — التوبة ٩

لا يأتون الصلوة الا وهم كسالى ولا ينفقون الا وهم كرهون ۝
فلا تعجبك أموالهم ولا أولادهم انما يريد الله ليعذبهم
بها في الحيوة الدنيا وتزهق انفسهم وهم كفرون ۝
ويحلفون بالله انهم لمنكم وما هم منكم ولكنهم قوم
يفرقون ۝ لو يجدون ملجأ او مغرت او مدخلا لولوا
اليه وهم يجمحون ۝ ومنهم من يلمزك في الصدقت فان
اعطوا منها رضوا وان لم يعطوا منها اذا هم يسخطون ۝ و
لو انهم رضوا ما اتهم الله ورسوله وقالوا حسبنا الله
سيؤتينا الله من فضله ورسوله انا الى الله رغبون ۝
انما الصدقت للفقراء والمسكين والعملين عليها والمؤلفة
قلوبهم وفي الرقاب والغرمين وفي سبيل الله وابن السبيل
فريضة من الله والله عليم حكيم ۝ ومنهم الذين يؤذون
النبي ويقولون هو اذن قل اذن خير لكم يؤمن بالله
ويؤمن للمؤمنين ورحمة للذين امنوا منكم والذين
يؤذون رسول الله لهم عذاب اليم ۝ يحلفون بالله لكم
ليرضوكم والله ورسوله احق ان يرضوه ان كانوا مؤمنين ۝
الم يعلموا انه من يحادد الله ورسوله فان له نار

منزل

सो तू इनके माल और औलाद (को देखकर) ताज्जुब न कर (कि यह बरकतें इन गुनहगारों को कैसे नसीब हैं)। अल्लाह दुनिया की ज़िन्दगी में इनको इन (माल और औलाद) के ज़रिये ही सज़ा देना चाहता है, और वह काफ़िर ही (रहकर) मरेंगे।§ (५५) और अल्लाह की क़समें खाते हैं कि वह बेशक तुम (ईमानवालों) में हैं, हालाँकि वह तुममें नहीं हैं बल्कि (सच तो यह है कि) वह डरपोक हैं। (५६) अगर कोई ग़ार (खोह) या घुस बैठने की जगह कहीं बचाव को पावें तो रस्सी तुड़ाकर उसी तरफ़ भागें (५७) और इनमें से कुछ लोग ऐसे भी हैं कि ख़ैरात (के बाँटने) में तुम पर (बेइंसाफ़ी की) तोहमत लगाते हैं, तो अगर इनको उसमें से (इनके मनमाफ़िक़) दिया जाय तो ख़ुश रहते हैं, और अगर इनको उसमें से (इनके मनमाफ़िक़) न दिया जाय तो वह फ़ौरन नाख़ुश हो जाते हैं। (५८) और जो अल्लाह ने और उसके पैग़म्बर ने इनको दिया था अगर यह उसमें ख़ुश रहते और कहते कि हमको अल्लाह काफ़ी है (और) आगे को अपने फ़ज़ल से अल्लाह और उसका पैग़म्बर हमको (बहुत कुछ) दे रहेगा (और कहते कि) हम तो अल्लाह ही से लौ लगाये बैठे हैं तो उनके हक़ में बेहतर होता। (५९) ✯

ख़ैरात का माल तो निर्धनों का हक़ है और ग़रीबों का और उन (महकमा सदक़ात के) कर्मचारियों का है और उन लोगों के लिये जिनके दिल इस्लाम की तरफ़ लगाना मंज़ूर है और ग़ुलामों को आज़ाद कराने में और क़र्ज़दारों (की मदद) में और अल्लाह की राह (यानी जिहाद) में और मुसाफ़िरों (में ज़कात यानी ख़ैरात के माल का ख़र्च) अल्लाह ने ठहराया है, और अल्लाह (सब कुछ) जाननेवाला बड़ा हिकमत वाला है। (६०) और उनमें से कुछ ऐसे हैं जो पैग़म्बर (के दिल) को चोट पहुँचाते हैं और कहते हैं कि यह शख़्स कान का बड़ा कच्चा࿇ है। (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो वह कान निरा तुम्हारे भले को है, वह यक़ीन करता है अल्लाह का और यक़ीन करता है ईमानवालों (की बात) का और जो लोग तुममें से ईमान लाये हैं उनके लिये (हमेशा) रहमत है। और जो लोग अल्लाह के पैग़म्बर (के दिल) को चोट पहुंचाते हैं उनको दुखदाई सज़ा होनी है। (६१) (ऐ ईमानवालो!) तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाते हैं ताकि तुमको (समझाकर) राज़ी कर लें (कि उनका मंशा रसूल को चोट पहुँचाना न था; लेकिन तुम राज़ी हो न हो असल में) अल्लाह और उसके पैग़म्बर ज़्यादा हक़ रखते हैं कि यह लोग (अगर) ईमानवाले हैं तो उनको (ही) राज़ी करें। ● (६२) क्या इन्होंने अभी तक इतनी बात भी नहीं समझी कि जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर का विरोध करता है, उसके ही लिए दोज़ख़ की आग (तैयार) है जिसमें वह हमेशा रहेगा। यह (उनकी) बड़ी ज़िल्लत है। (६३)

✯ रु. ७/१३ आ १७

● सु. ३/४

§ इनकी माल व औलाद की बहुतायत इनके लिए बरकत नहीं उल्टे अज़ाब साबित होगी। क्योंकि यह उनके ही मोह में रातदिन फँसे रहकर अल्लाह की राह से हमेशा अंधे रहेंगे और गुनाहों में फँसते व अपने लिए दुनिया में बवाल और आख़िरत के लिए अज़ाब का सामना करते रहेंगे। ࿇ कुछ मुनाफ़िक़ कहते थे कि मुहम्मद साहब स० से जो कोई हमारे बारे में कुछ कह देता है वह उसको सच्च मान लेते हैं और जब हम आकर क़सम खा लेते हैं तो हमको सच्चा समझने लगते हैं। इसका जवाब दिया गया है कि वह तुम्हारी बातों को भली भाँति जानते हैं, लेकिन तुम पर ज़ाहिर नहीं करते। वे तुम्हारी नादानी पर दया करते हैं।

यह्ज़रुल् - मुनाफ़िक़ून अन् तुनज़्ज़ल अलैहिम् सूरतुन् तुनब्बिअुहुम् बिमा फ़ी क़ुलूबिहिम् त़् क़ुलिस्तह्ज़िअू ज् अिन्नल्लाह मुख़्रिजुम् - मा तह्ज़रून (६४) व लअिन् सअल्तहुम् लयक़ूलुन्न अिन्नमा कुन्ना नख़ूज़ु व नल्अबु त़् क़ुल् अबिल्लाहि व आयातिही व रसूलिही कुन्तुम् तस्तह्ज़िअून (६५) ला तअ्तजिरू क़द् कफ़र्तुम् बअ्द ओमानिकुम् त़् अिन्नअ्फ़ु अन् ता'अिफ़तिम् - मिन्कुम् नुअज्जिब् ता'अिफ़तम् - बिअन्नहुम् कानू मुज्रिमीन (६६) ★ अल्मुनाफ़िक़ून वल्मुनाफ़िक़ातु बअ्ज़ुहुम् मिम्बअ्ज़िन म् • यअ्मुरून बिल्मुन्करि व यन्हौन अनिल्मअ्रूफ़ि व यक़्बिज़ून ऐदियहुम् त़् नसुल्लाह फ़नसियहुम् त़् अिन्नल्-मुनाफ़िक़ीन हुमुल्-फ़ासिक़ून (६७) व अदल्लाहुल्-मुनाफ़िक़ीन वल्मुनाफ़िक़ाति वल्कुफ़्फ़ार नार जहन्नम ख़ालिदीन फ़ीहा त़् हिय हस्बुहुम् ज् व लअनहुमुल्लाहु ज् व लहुम् अज़ाबुम्मुक़ीमुन् ला (६८) कल्लज़ीन मिन् क़ब्लिकुम् कानू अशद्द मिन्कुम् क़ूवतौंव अक्सर अम्वालौंव औलादन् त़् फ़स्तम्तअू बिख़लाक़िहिम् फ़स्तम्तअ्तुम् बिख़लाक़िकुम् कमस्-तम्तअल्लज़ीन मिन् क़ब्लिकुम् बिख़लाक़िहिम् व ख़ुज़्तुम् कल्लज़ी ख़ाज़ू त़् उला'अिक हबितत् अअ्मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति ज् व उला'अिक हुमुल्ख़ासिरून (६९) अलम् यअ्तिहिम् नबअुल्लज़ीन मिन् क़ब्लिहिम् क़ौमि नूहिंव्व आदिंव्व समूद ० ला व क़ौमि अिब्राहीम व अस्हाबि मद्यन वल्मुअ्तफ़िकाति त़् अततहुम् रुसुलुहुम् बिल्बैयिनाति ज् फ़मा कानल्लाहु लियज़्लिमहुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (७०)

★ रु. ८/१४ आ ७ • व. ला ज़िम

التوبة ٩ ١٥٧ واعلموا ١٠

جهنم خالدا فيها ذلك الخزي العظيم ۝ يحذر المنفقون
ان تنزل عليهم سورة تنبئهم بما في قلوبهم قل
استهزءوا ان الله مخرج ما تحذرون ۝ ولئن سألتهم
ليقولن انما كنا نخوض ونلعب قل ابالله واٰيته ورسوله
كنتم تستهزءون ۝ لا تعتذروا قد كفرتم بعد ايمانكم
ان نعف عن طائفة منكم نعذب طائفة بانهم كانوا
مجرمين ۝ المنفقون والمنفقت بعضهم من بعض
يامرون بالمنكر وينهون عن المعروف ويقبضون
ايديهم نسوا الله فنسيهم ان المنفقين هم الفسقون ۝
وعد الله المنفقين والمنفقت والكفار نار جهنم خلدين
فيها هي حسبهم ولعنهم الله ولهم عذاب مقيم ۝
كالذين من قبلكم كانوا اشد منكم قوة واكثر اموالا و
اولادا فاستمتعوا بخلاقهم فاستمتعتم بخلاقكم كما
استمتع الذين من قبلكم بخلاقهم وخضتم كالذي
خاضوا اولئك حبطت اعمالهم في الدنيا والاخرة و
اولئك هم الخسرون ۝ الم يأتهم نبا الذين من قبلهم
قوم نوح وعاد وثمود وقوم ابرهيم واصحب مدين

منزل

मुनाफ़िक़ डरते रहते हैं कि अल्लाह की तरफ़ से ईमानवालों पर (पैग़म्बर के ज़रिये कहीं) ऐसी सूरत न उतरे कि जो कुछ इनके दिलों में (साँठ गाँठ छिपी) है उसे ईमानवालों पर ज़ाहिर कर दे। (ऐ पैग़म्बर!) कहो कि हँसे जाओ! जिस का तुम्हें डर है अल्लाह वही बात ज़ाहिर करनेवाला है।⁂ (६४) और अगर तुम इन लोगों से पूछो तो वह ज़रूर यही उत्तर देंगे कि हम तो यों ही बातें-चीतें और हँसी मज़ाक़ कर रहे थे। तो (उनसे) कहो कि तुमको हँसी करनी थी तो अल्लाह के ही साथ और उसी की आयतों और उसी के पैग़म्बर के साथ? (६५) (उनसे साफ़ कह दो कि) बातें न बनाओ, (सच तो यह है कि) तुम ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गये हो। अगर हम तुममें से एक गिरोह को माफ़ भी कर दें तो भी दूसरों को ज़रूर सज़ा देंगे, (इसलिए कि) वह (हमेशा) गुनहगार रहेंगे। (६६)★

★ रु. ८ | १४ आ ७ ● व. ला ज़िम

मुनाफ़िक़ मर्द और (मुनाफ़िक़) औरतें सबकी एक चाल है।● बुरे काम की सलाह दें और भले कामों से मना करें और अपनी मुट्ठियाँ (ख़ैरात व भले कामों के लिए) बन्द रखते हैं। इन लोगों ने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने भी इन्हें भुला दिया। कुछ सन्देह नहीं कि ये मुनाफ़िक़ ही सरकश हैं।(६७) मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और काफ़िरों के हक़ में अल्लाह ने दोज़ख़ की आग का अ़हद कर लिया है, यह लोग हमेशा उसमें रहेंगे। यही उनको काफ़ी है और अल्लाह ने इनको फिटकार दिया है और इनके लिए अ़ज़ाब हमेशा के लिए है। (६८) (तुम्हारी भी वही मिसाल है) जैसी तुम से पहलों की (हुई) थी जो तुमसे बहुत ज़्यादा ज़ोरावर थे और माल और औलाद भी ज़्यादा रखते थे। तो वह अपने हिस्से के फ़ायदे (दुनिया में) उठा कर चल दिये और तुमने भी अपने हिस्से के फ़ायदे (दुनिया में) उठाये जैसे तुमसे पहलों ने अपने हिस्सों के फ़ायदे (दुनिया में) उठाये थे। और (बाद में) जैसी वह लोग (बुरी बातों में) पड़े थे वैसे ही तुम भी पड़ गये। ऐसे ही लोगों का दुनिया और आख़िरत में किया धरा अकारथ हुआ और यही नुक़सान में रहे।§ (और उन्हीं के क़दमों पर चल कर अब तुम्हारा भी वैसा ही हाल होना है)।(६९) क्या इनको उन लोगों का हाल नहीं मालूम जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं (यानी) नूह की क़ौम और आ़द और समूद और इब्राहीम की क़ौम और मदियन के लोग और उल्टी हुई बस्तियों के रहनेवालों का कि इनके पैग़म्बर इनके पास खुले हुए चमत्कार लेकर आये। सो अल्लाह ने इन पर ज़ुल्म नहीं किया (बल्कि अपने कुफ़्र के कारन) यह लोग आप अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे।(७०)

⁂ यानी तुम्हारा झूठ खुल कर रहेगा। § तुमसे पहले क़ौम नूह क़ौम आ़द और क़ौम समूद वग़ैरः हुईं। उनको अल्लाह ने बड़ी बरकतें दीं और वे तुम काफ़िरों से कहीं ज़्यादः उन्नति पर पहुँचे। लेकिन जब सरकशी पर उतर आये तो दुनिया में बुरी तरह मिटे और आखिरत में अ़ज़ाब का मज़ा चखेंगे। उसी तरह तुमको भी ताक़त इज़्ज़त हुकूमत सब मिली और अब कुफ़्र पर उतर आने के कारन उनकी जैसी हालत पर पहुँचोगे।

व. ला ज़ि म

वल्मुअ्मिनून वल्मुअ्मिनातु बअ़्ज़ुहुम् औलिया'अु बअ़्ज़िन् म ● यअ्मुरून बिल्मअ़्रूफ़ि व यन्हौन अनिल्मुन्करि व युक़ीमूनस्सलात व युअ्तूनज़्ज़काव व युतीअ़ूनल्लाह व रसूलहू त् अुला'अिक सयर्हमुहुमुल्लाहु त् अिन्नल्लाह अ़ज़ीज़ुन् हकीमुन् (७१) व अ़दल्लाहुल् - मुअ्मिनीन वल्मुअ्मिनाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदीन फ़ीहा व मसाकिन तैयिबतन् फ़ी जन्नाति अ़द्निन् त् व रिज़्वानुम्मिनल्लाहि अक्बरु त् ज़ालिक हुवल् - फ़ौज़ुल् - अ़ज़ीमु (७२) ★

रु. ६/१५ आ ६

या' अैयुहन्नबीयु जाहिदिल् - कुफ़्फ़ार वल्मुनाफ़िक़ीन वग़्लुज़् अ़लैहिम् त् व मअ्वाहुम् जहन्नमु त् व बिअ्सल्मसीरु (७३) यह्लिफ़ून बिल्लाहि मा क़ालू त् व लक़द् क़ालू कलिमतल्-कुफ़्रि व कफ़रू बअ़्द अिस्लामिहिम् व हम्मू बिमालम् यनालू ज् व मा नक़मू' अिल्ला' अन् अग़्नाहुमुल्लाहु व रसूलुहू मिन् फ़ज़्लिही ज्

واعلموا ١٠ — ١٥٨ — التوبة ٩

وَالْمُؤْتَفِكٰتِ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانَ اللّٰهُ
لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَ
الْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ
يَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ
يُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ۝ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ
عَدْنٍ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَ
مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا
وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا
بِمَا لَمْ يَنَالُوْا وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ
فَضْلِهٖ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ
اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمَا لَهُمْ فِي الْاَرْضِ
مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا
مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ فَلَمَّآ
اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝

فَلَمّا

फ़अींयतूबू यकु ख़ैरल्लहुम् ज् व अींयतवल्लौ युअ़ज़्ज़िब् - हुमुल्लाहु अ़ज़ाबन् अलीमन् ला फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति ज् व मा लहुम् फ़िल्अर्ज़ि मिंव्वलीयिंव्वला नसीरिन् (७४) व मिन्हुम् मन् आ़हदल्लाह लअिन् आताना मिन् फ़ज़्लिही लनस्सद्दक़न्न व लनकूनन्न मिनस्सालिहीन (७५) फ़लम्मा' आताहुम् मिन् फ़ज़्लिही बख़िलू बिही व तवल्लौव्व हुम् मुअ़्रिज़ून (७६)

और ईमानवाले मर्द और ईमानवाली औरतें आपस में एक दूसरे की सहायक हैं●। (वह लोग) नेक काम करने का उपदेश देते और बुरे काम से रोकते और नमाज़ क़ायम रखते और ज़कात देते और अल्लाह और उसके पैग़म्बर के हुक्म पर चलते हैं। यही लोग हैं जिन पर अल्लाह रहम करेगा। बेशक अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त बड़ा हिकमतवाला है।(७१) ईमानवाले मर्दों और (ईमानवाली) औरतों से अल्लाह ने (बहिश्त के) बाग़ों का वादा कर लिया है जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी और वह उनमें हमेशा रहेंगे और (वादा किया है) सदा रहनेवाली जन्नत में बढ़िया मकानों का और (इन निअ़मतों से भी) बढ़ कर अल्लाह की खुशी (मिलेगी), और यह बड़ी कामयाबी है। (७२) ★

ऐ पैग़म्बर! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों के विरुद्ध जिहाद करो और उन पर सख़्ती करो और उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और वह क्या ही बुरी जगह पहुँचने को है।(७३) अल्लाह की सौगन्धें खाते हैं कि (फ़लाँ बात) हमने नहीं कही§ हालाँकि ज़रूर उन्होंने कुफ़्र की बात कही, और (साफ़ ज़ाहिर है कि) इस्लाम (पर ईमान लाने) के बाद (वे) काफ़िर हो गये और ऐसा इरादा भी किया जिस को वह पूरा न कर पाये‡ और यह बदला उन्होंने इस बात का दिया कि अल्लाह ने और उसके पैग़म्बर ने इनको अपने फ़ज़्ल से (माले ग़नीमत वग़ैरः काफ़ी देकर) मालदार कर दिया था। सो यह लोग अगर (अब भी) तौबा करें तो इनके हक़ में अच्छा होगा और अगर न मानें तो अल्लाह इनको दुनिया और आख़िरत में दुखदाई सज़ा देगा और ज़मीन पर न कोई इनका साथी होगा और न मददगार। (७४) और इनमें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्होंने अल्लाह से अ़हद किया था कि अगर वह अपने रहम से हमको (माल, धन) देगा तो हम (ज़रूर) ख़ैरात किया करेंगे और हम (ज़रूर) नेक काम करनेवालों में होंगे।(७५) फिर जब (अल्लाह ने) अपनी कृपा से उनको (माल) दिया तो उसमें कंजूसी करने लगे और (अपने किये वादे से) मुँह मोड़ कर फिर बैठे।(७६) तो उसका फल यह हुआ कि अल्लाह ने उनके दिलों में निफ़ाक़ (यानी दीन से विमुखता) डाल दी उस दिन तक के लिए जब वे अल्लाह के सामने हाज़िर होंगे; (यह) इसलिए कि उन्होंने अल्लाह से प्रतिज्ञा की थी उसके ख़िलाफ़ चले और इसलिए कि झूठ बोलते थे।(७७)

व. ला ज़िम ★ रु. ९/१५ आ ६

§ तबूक की लड़ाई से पहले एक मुनाफ़िक़ जिलास बिन-स्वैद ने गधे पर चढ़कर कहा था कि अगर मुहम्मद की लाई हुई बात याने क़ुर्आन सच हो तो मैं उससे भी बुरा हूँ जिस पर सवार हूँ। इन आयतों में उसी का बयान है। ‡ इन आयतों में बार-बार उन मुनाफ़िक़ों की घटकर्मी की चरचा आ रही है जो मुसलमान हो चुके थे और मुसलमानों में घुले-मिले भी थे। लेकिन मन में उनसे बैर रखते और उनके नुक़सान की तदबीरें करते रहते। यह ज़िक्र यों है कि तबूक की मुहिम से वापस होते समय रास्ते में चन्द मुनाफ़िक़ों ने सलाह की कि आँ हज़रत स० फ़लाँ घाटी से रात के वक़्त गुज़रेंगे; वहीं उन को क़त्ल कर दिया जाय। चुनांचे हुआ भी यही। लेकिन रसूल स० के साथ दो सहाबा हज़रत हज़ीफ़ः और हज़रत अम्मार भी थे। छिपे बैठे मुनाफ़िक़ों के वार पर इन लोगों की बहादुरी ने उनकी चलने न दी और वे भाग गये। वे रात के सबब पहचाने न जा सके। लेकिन दूसरे दिन नबी स० ने उन १२ आदमियों के नाम बता दिये जो मुजरिम थे और तब वे अल्लाह की क़समें खा खा कर उससे इनकार करने लगे।

फ़अअ़क़बहुम् निफ़ाक़न् फ़ी क़ुलूबिहिम् अिला यौमि यल्क़ौनहु बिमा अख़्लफ़ुल्लाह मा वअ़दूहु व बिमा कानू यक्ज़िबून (७७) अलम् यअ़लमू अन्नल्लाह यअ़लमु सिर्रहुम् व नज्वाहुम् व अन्नल्लाह अ़ल्लामुल्ग़ुयूबि ज् (७८) अल्लज़ीन यल्मिज़ूनल् - मुत्तौवि अ़ीन मिनल्मुअ्मिनीन फ़िस्सदक़ाति वल्लज़ीन ला यजिदून अिल्ला जुह्दहुम् फ़यस्ख़रून मिन्हुम् त् सख़िरल्लाहु मिन्हुम् ज् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीमुन् (७९) अिस्तग़्फ़िर् लहुम् औ ला तस्तग़्फ़िर् लहुम् त् अिन् तस्तग़्फ़िर् लहुम् सब्ओ़ीन मर्रतन् फ़लैंयग़्फ़िरल्लाहु लहुम् त् ज़ालिक बिअन्नहुम् कफ़रू बिल्लाहि व रसूलिही त् वल्लाहु ला यह्दिल्क़ौमल् - फ़ासिक़ीन (८०) ★ फ़रिहल्मुख़ल्लफ़ून बिमक़्अ़दिहिम् ख़िलाफ़ रसूलिल्लाहि व करिहू अँयुजाहिदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिल्लाहि व क़ालू ला तन्फ़िरू फ़िल्हर्रि त् क़ुल् नारु जहन्नम अशद्दु हर्रन् त् लौ कानू यफ़्क़हून (८१) फ़ल्यज़्हकू क़लीलौंवल् - यब्कू कसीरन् ज् जज़ाअम् - बिमा कानू यक्सिबून (८२) फ़अिर् - रजअ़कल्लाहु अिला ताअिफ़तिम् - मिन्हुम् फ़स्तअ्ज़नूक लिल्ख़ुरूजि फ़क़ुल्लन् तख़्रुजू मअ़िय अबदौंव लन् तुक़ातिलू मअ़िय अ़दूवन् त् अिन्नकुम् रज़ीतुम् बिल्क़ुअ़ूदि औवल मर्रतिन् फ़क़्अ़ुदू मअ़ल्ख़ालिफ़ीन (८३) व ला तुसल्लि अ़ला अहदिम्मिन्हुम् मा त अबदौंव ला तक़ुम् अ़ला क़ब्रिही त् अिन्नहुम् कफ़रू बिल्लाहि व रसूलिही व मा तू व हुम् फ़ासिक़ून (८४)

★ रु. १०/१६ आ. ८

واعلموا ١٠ — ١٥٩ — التوبة ٩

فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِیْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰی یَوْمِ یَلْقَوْنَهٗ بِمَاۤ اَخْلَفُوا اللّٰهَ
مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا یَكْذِبُوْنَ ۝ اَلَمْ یَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ
سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ ۝ اَلَّذِیْنَ
یَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِیْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ فِی الصَّدَقٰتِ وَالَّذِیْنَ
لَا یَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَیَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ؕ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ۫
وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ۝ اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ اِنْ
تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِیْنَ مَرَّةً فَلَنْ یَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الْفٰسِقِیْنَ ۝
فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْۤا اَنْ
یُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا
تَنْفِرُوْا فِی الْحَرِّ ؕ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ لَوْ كَانُوْا
یَفْقَهُوْنَ ۝ فَلْیَضْحَكُوْا قَلِیْلًا وَّلْیَبْكُوْا كَثِیْرًا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا
یَكْسِبُوْنَ ۝ فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰی طَآىِٕفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ
لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِیَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِیَ
عَدُوًّا ؕ اِنَّكُمْ رَضِیْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِیْنَ ۝
وَلَا تُصَلِّ عَلٰۤی اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰی قَبْرِهٖ ؕ
اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ وَلَا

منزل ٢

क्या (उन्होंने) इतना भी न समझा कि अल्लाह इनके भेदों को और सलाहों को जानता है
और यह कि अल्लाह ग़ैब की (छिपी) बातों से ख़ूब जानकार है।(७८) यह (मुनाफ़िक़)
ही तो हैं कि ईमानवालों में जो लोग खुशदिली से ख़ैरात करते हैं उन पर ताना कसते हैं
और जो लोग अपनी मेहनत (की थोड़ी सी कमाई) के सिवाय ज़्यादा ख़ैरात की ताक़त नहीं
रखते उन पर हँसते हैं। तो अल्लाह इन (मुनाफ़िक़ों की हालत) पर हँसता है× और इनके
लिए दुखदाई सज़ा (तैयार) है।(७९) (ऐ पैग़म्बर!) तुम इनके हक़ में माफ़ी की दुआ
करो या न करो (सब बेकार), अगर (तुम) सत्तर दफ़े भी इनके लिए माफ़ी माँगों तो भी
अल्लाह हरगिज़ इनको क्षमा नहीं करेगा। यह इनके इस कर्म की सज़ा है कि उन्होंने अल्लाह
और उसके पैग़म्बर के साथ कुफ़्र किया और अल्लाह नाफ़र्मानी (अवज्ञा) करनेवालों को राह
नहीं दिखाता।(८०) ★

★ रु. १० / १६ / आ ८

जो (मुनाफ़िक़ लड़ाई में न जाने के बहाने बनाने पर) पीछे छोड़ दिये गये, वह अल्लाह
के पैग़म्बर (की मर्ज़ी) के ख़िलाफ़ (घरों में) बैठ रहने (और तबूक की जंग से अपने को
बचा लेने) से बहुत खुश हुए और अल्लाह की राह में अपनी जान और माल से जिहाद करना
उनको नागवार हुआ और (दूसरों को भी) समझाने लगे कि (ऐसी) गर्मी में (घर से) न
निकलना। (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि दोज़ख़ की आग (को गर्मी) तो कहीं
ज़्यादाः सख़्त है। अगर इनको इतनी समझ होती।(८१) तो यह लोग थोड़ा हँस लें और
(एक दिन आनेवाला है जब) बहुत रोवेंगे और यह परिणाम है उनकी (दुनिया की) कमाई
का।(८२) तो (ऐ पैग़म्बर!) अगर अल्लाह तुमको इन मुनाफ़िक़ों के किसी गरोह की
तरफ़ वापस (होने पर) ले जाय और (ये जेहाद के लिए) चलने का तुमसे हुक्म चाहें तो
तुम कह देना कि तुम न तो कभी मेरे साथ निकल सकोगे और न मेरे साथ होकर किसी
दुश्मन से लड़ोगे। तुम पहली बार घरों में (लड़ाई से जी चुरा कर) बैठ रहने
पर रीझे, सो (अब भी) पीछे रहनेवालों के साथ (घरों में) बैठे रहो।(८३) और
(ऐ पैग़म्बर!) अगर इनमें से कभी कोई मर जाय तो तुम कदापि उस पर नमाज़ न
पढ़ना और न उसकी क़ब्र पर खड़े होना। उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर के
साथ कुफ़्र (इन्कार) किया और वह नाफ़रमानी की दशा में ही मर गये।(८४)

× मुहम्मद साहब स० ने ख़ैरात करने का हुक्म दिया तो जिस मुसलमान से जितना हो सका ले आया।
अब्दुर्रहमान इब्न औफ़ चार हज़ार दिरहम लाये और आसिम केवल ४ सेर जौ। मुनाफ़िक़ कहने लगे
अब्दुर्रहमान अपनी नामवरी की ग़रज़ से रकम बहा रहे हैं और आसिम को देखो, वह लोहू लगा कर शहीदों
में नाम करने चले हैं। मुनाफ़िक़ों की तो हर मौक़े पर दीनवालों को गिराने की नियत रहती थी।

व ला तुऽजिब्क अम्वालुहुम् व औलादुहुम् त् अिन्नमा युरीदुल्लाहु अँयुअज्जिबहुम् बिहा फ़िद्दुन्या व तज़्हक़ अन्फ़ुसुहुम् व हुम् काफ़िरून (८५) व अिजा' अुन्ज़िलत् सूरतुन् अन् आमिनू बिल्लाहि व जाहिदू मअ रसूलिहिस्-तअ्जनक अुलुत्तौलि मिन्हुम् व क़ालू जर्ना नकुम्मअल् - क़ाअिदीन (८६) रज़ूबिअँयकूनू मअल् - ख़वालिफ़ि व तुबिअ अला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यफ़क़हून (८७) लाकिनिर्रसूलु वल्लजीन आमनू मअहू जाहदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् त् व अुला'अिक लहुमुल्ख़ैरातु ज् व अुला'अिक हुमुल्मुफ़्लिहून (८८) अअद्दल्लाहु लहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् - अन्हारु ख़ालिदीन फ़ीहा त् जालिकल् - फ़ौज़ुल् - अज़ीमु (८९) ★ व जा'अल् - मुअज्जिरून मिनल् - अऽराबि लियुअ्जन लहुम् व क़अदल्लजीन कजबुल्लाह व रसूलहू त् सयुसीबुल्लजीन कफ़रू मिन्हुम् अजाबुन् अलीमुन् (९०) लैस अलज़्ज़ुअफ़ा'अि व ला अलल्मर्ज़ा व ला अलल्लजीन ला यजिदून मा युन्फ़िक़ून हरजुन् अिजा नसहू लिल्लाहि व रसूलिही त् मा अलल् - मुह्सिनीन मिन् सबीलिन् त् वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीमुन् ला (९१) ०व ला अलल्लजीन अिजा मा' अतौक लितह्मिलहुम् क़ुल्त ला' अजिदु मा' अह्मिलुकुम् अलैहि स् तवल्लौव्व अऽयुनुहुम् तफ़ीज़ु मिनद्दम्अि हज़नन् अल्ला यजिदू मा युन्फ़िक़ून त् (९२) अिन्नमस्सबीलु अलल्लजीन यस्तअ्जिनूनक व हुम् अग़्निया'अु ज् रज़ू बिअँयकूनू मअल्ख़वालिफ़ि ला व तबअल्लाहु अला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यऽलमून (९३)

التوبة ٩　١٦٠　واعلموا ١٠

تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾ وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٨٦﴾ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨٧﴾ لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨٨﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾ وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩١﴾ وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ﴿٩٢﴾ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَآءُ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٣﴾

منزل ٢

★ रु. ११/१७ आ. ६

॥ इति दसवाँ पारः ॥

और इनके माल और इनकी औलाद (की बढ़ती) पर तू ताज्जुब न कर (कि इन गुनहगारों को यह निअमतें कैसे !) अल्लाह यही चाहता है कि इन (माल और औलाद) के ज़रिये इनको संसार में सज़ा दे और जब इनकी जान निकले तब तक काफ़िर ही रहें।(८५) और (ऐ पैग़म्बर !) जब कोई सूरत उतारी जाती है कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके पैग़म्बर के साथ जिहाद (में शिरकत) करो तो इनमें से माल वाले (लोग) तुमसे (छुट्टी का हुक्म) माँगने लगते हैं और कहते हैं कि हमको छोड़ जाओ कि बैठनेवालों के साथ हम भी (घरों में) बैठे रहें। (८६) इनको (घर पर) रह जानेवाली औरतों के साथ (पीछे बैठ) रहना पसंद आया और इनके दिलों पर (अल्लाह की) मुहर लग गई सो यह लोग समझते नहीं।(८७) लेकिन पैग़म्बर ने और जो उनके साथ ईमानवाले हैं अपनी माल और जान से (अल्लाह की राह में) जिहाद किया। और यही लोग हैं जिनके लिए (दुनिया और दूसरी दुनिया की सब) ख़ूबियाँ (मयस्सर) हैं और यही मुराद पानेवाले हैं।(८८) इनके लिए अल्लाह ने (जन्नत के) बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें हमेशा रहेंगे। यही सबसे बड़ी सफलता है।(८९) ★

★ रु. ११/१७ अ ६

(ऐ पैग़म्बर !) गवाँर (बद्दुओं) में से भी बहाना करनेवाले (बहाने बताते) आये ताकि उनको (लड़ाई से बख़्श कर घर बैठ रहने की) इजाज़त दी जाय और जिन लोगोंने अल्लाह और उसके पैगम्बर से झूठ बोला था वह (घर) बैठे रहे। इनमें से जिन्होंने इन्कार किया उनको शीघ्र ही दुखदाई सज़ा मिलेगी।(९०) (ऐ पैग़म्बर !) कमज़ोरों पर कुछ गुनाह नहीं और न बीमारों पर और न उन लोगों पर जिनकी (जिहाद के लिए सफ़र) ख़र्च की ताक़त नहीं, बशर्ते कि अल्लाह और पैग़म्बर के साथ उनके दिल साफ़ हों। नेकीवालों पर कोई इल्ज़ाम की राह नहीं और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बेहद मेहरबान है।(९१) और उन पर भी (गुनाह) नहीं है जो तुम्हारे पास (दौड़े) आये ताकि (उनको जंग में चलने को) सवारी दे (और) तुमने कहा कि मेरे पास कोई चीज़ नहीं है जो तुम्हें सवारी (के लिए) दूँ। (यह सुनकर वह लोग) वापस लौट गये और ख़र्च की ताक़त न होने के कारण उनकी आँखों से आँसू जारी थे×।(९२) जुर्म की गुंजाइश तो उन्हीं पर है जो मालदार होने पर भी तुझसे रुख़सत माँगते हैं और (घर पर) रह जानेवाली औरतों के साथ (बैठे) रहना पसन्द करते हैं और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर कर दी है (हालाँकि) वह समझते नहीं।(९३)

॥ इति दसवाँ पारः ॥

× यह लोग बक्काईन कहलाते हैं। सात आदमी हज़रत मुहम्मद स० के पास जिहाद (धर्मयुद्ध) में शरीक होने के लिए आये थे। परन्तु इनके पास सवारी नहीं थी। जब इनको सवारी का प्रबन्ध न हुआ तो ये लोग अपनी बेबसी पर रो दिये। ऐसे ग़रीबों के लिए जिहाद में भाग न लेपाने पर कोई अपराध नहीं। लेकिन जिहाद का हुक्म हो जाने पर, बिला लाचारी बैठ रहनेवालों पर लानत व अल्लाह का अज़ाब है।

ग्यारहवाँ पारः यऽ्तजिरून

सूरतुत्तौबः आयात ९४ से १२९

यऽ्तजिरून अिलैकुम् अिजा रजऽ्तुम् अिलैहिम् त् क़ुल्ला तऽ्तजिरू लन्नुअ्मिन लकुम् क़द् नब्बअनल्लाहु मिन् अख़्बारिकुम् त् व सयरल्लाहु अ़मलकुम् व रसूलुहू सुम्म तुरद्दून अिला आ़लिमिल्ग़ैबि वश्शहादति फ़युनब्बिअुकुम् बिमा कुन्तुम् तऽ्मलून (९४) सयह्लिफ़ून बिल्लाहि लकुम् अिजन्क़लब्तुम् अिलैहिम् लितुऽ्रिज़ू अ़न्हुम् त् फ़अऽ्रिज़ू अ़न्हुम् त् अिन्नहुम् रिज्सुन् ज् ॰व मअ्वाहुम् जहन्नमु ज् जज़ा'अम्-बिमा कानू यक्सिबून (९५) यह्लिफ़ून लकुम् लितर्ज़ौ अ़न्हुम् ज् फ़अिन् तर्ज़ौ अ़न्हुम् फ़अिन्नल्लाह ला यर्ज़ा अ़निल्-क़ौमिल्-फ़ासिक़ीन (९६) अल्अऽ्राबु अशद्दु कुफ़्रौंव निफ़ाक़ौंव अज्दरु अल्ला यऽ्लमू हुदूद मा अन्ज़लल्लाहु अ़ला रसूलिही त् वल्लाहु अ़लीमुन् हकीमुन् (९७) व मिनल्अऽ्राबि मैंयत्तख़िज़ु मा युन्फ़िक़ु मग़्रमौंव यतरब्बसु बिकुमुद्दवा'अिर त् अ़लैहिम् दा'अिरतुस्सौअि त् वल्लाहु समीअ़ुन् अ़लीमुन् (९८) व मिनल्अऽ्राबि मैंयुअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि व यत्तख़िज़ु मा युन्फ़िक़ु क़ुरुबातिन् अ़िन्दल्लाहि व सलवातिर्रसूलि त् अला अिन्नहा क़ुर्बतुल्लहुम् त् सयुद्ख़िलुहुमुल्लाहु फ़ी रह्मतिही त् अिन्नल्लाह ग़फ़ूरुर्रहीमुन् (९९) ★ वस्साबिक़ूनल्-औवलून मिनल्मुहाजिरीन वल्अन्सारि वल्लजीनत्तबअ़ू हुम् बिअिह्सानिन् ला र्रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु व अअ़द्द लहुम् जन्नातिन् तज्री तह्तहल्-अन्हारु ख़ालिदीन फ़ीहा अबदन् त् जालिकल्-फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीमु (१००)

★ रु १२/१ आ १०

يعتذرون اليكم اذا رجعتم اليهم قل لا تعتذروا لن
نؤمن لكم قد نبانا الله من اخباركم وسيرى الله عملكم
ورسوله ثم تردون الى علم الغيب والشهادة فينبئكم بما
كنتم تعملون ۝ سيحلفون بالله لكم اذا انقلبتم اليهم
لتعرضوا عنهم فاعرضوا عنهم انهم رجس وماوىهم جهنم
جزاء بما كانوا يكسبون ۝ يحلفون لكم لترضوا عنهم فان
ترضوا عنهم فان الله لا يرضى عن القوم الفسقين ۝ الاعراب
اشد كفرا ونفاقا واجدر الا يعلموا حدود ما انزل الله على
رسوله والله عليم حكيم ۝ ومن الاعراب من يتخذ ما ينفق
مغرما ويتربص بكم الدوائر عليهم دائرة السوء والله
سميع عليم ۝ ومن الاعراب من يؤمن بالله واليوم الاخر
ويتخذ ما ينفق قربت عند الله وصلوت الرسول الا انها
قربة لهم سيدخلهم الله في رحمته ان الله غفور رحيم ۝
والسبقون الاولون من المهجرين والانصار والذين اتبعوهم
باحسان رضي الله عنهم ورضوا عنه واعد لهم جنت تجري
تحتها الانهر خلدين فيها ابدا ذلك الفوز العظيم ۝ وممن
حولكم من الاعراب منفقون ومن اهل المدينة مردوا

ग्यारहवाँ पारः (यऽ्तज़िरून)

९४ सूरतुत्तौबः १२९

(ऐ मुसलमानो !) जब तुम मुनाफ़िक़ों की तरफ़ फिर वापस जाओगे तो (लड़ाई से मुँह चुरा कर बैठ रहने के लिए) तुम्हारे सामने (अपने तरह-तरह के) उज्र पेश करेंगे (तो इनसे) कह देना कि बहाने न बनाओ, हम किसी तरह तुम्हारा यक़ीन करनेवाले नहीं; अल्लाह तुम्हारे हालात हमको बता चुका है और अभी तो अल्लाह और उसका रसूल तुम्हारी करतूतों को देखेगा, फिर तुम उसकी तरफ़ लौटाये जाओगे जो ज़ाहिर और छिपे का जाननेवाला है, सो जो कुछ तुम करते रहे हो तुमको (सब) बतादेगा।(९४) जब तुम लौटकर उनके पास जाओगे तो यह लोग तुम्हारे आगे अल्लाह की क़समें खायेंगे ताकि तुम इन (के झूठे बहानों) की तरफ से ध्यान हटा लो। सो इनकी (तरफ़ से) ध्यान हटा ही लो क्योंकि वह लोग नापाक हैं और इनका ठिकाना दोज़ख़ है। (यह) उनकी कमाई का बदला है।(९५) यह तुम्हारे सामने क़समें खायेंगे ताकि तुम इनसे राज़ी हो जाओ। सो अगर तुम इनसे राज़ी हो जाओ तो अल्लाह (तो इन) बेहुक्म (नाफ़र्मान) लोगों से राज़ी न होगा।(९६) वे गवाँर (बद्दू) कुफ़्र (इन्कार) और निफ़ाक़ (छल-कपट) में बड़े कठोर हैं[] और वे इसी लायक़ है कि अल्लाह ने जो अपने पैग़म्बर पर (किताब के ज़रिये) हदें उतारी (यानी क़ायम की) हैं उनको न समझ सकें और अल्लाह सब कुछ जाननेवाला और बड़ा हिकमतवाला है।(९७) और देहातियों में से कुछ लोग हैं कि उनको जो (अल्लाह की राह में) ख़र्च (उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़) करना पड़ता है उसको तावान (नाहक़ का दण्ड) समझते हैं और राह ताकते हैं कि (किसी तरह) तुम ईमानवाले ज़माने की गरदिशों में फँस जाओ;‡ हालाँकि इन्हीं पर (ज़माने के) बुरे फेर का असर पड़नेवाला है। और अल्लाह सब सुनता और सब जानता है।(९८) और इन देहात (के बद्दूओं) में से कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाते और जो कुछ (अल्लाह की राह में) ख़र्च करते हैं उसमें (अपने लिए) अल्लाह के नज़दीकी होने और पैग़म्बर की दुआओं का ज़रिया समझते हैं। तो सुन रखो (बेशक) वह उनके लिए नज़दीकी होने का ज़रिया है। अल्लाह ज़रूर उनको अपने रहम (की पनाह) में ले लेगा। अल्लाह बड़ा माफ़ करनेवाला बेहद मेहरबान है।(९९) ★

★ रु. १२/१ प्रा. १०

और मुहाजरीन (देशत्यागी सहाबाओं) और मदद करनेवालों (अन्सारों) में से जो लोग क़दीम हैं (और) सबसे पहले (ईमान लाये) और वह लोग जिन्होंने नेककारी के साथ उनकी पैरवी की अल्लाह उनसे राज़ी और वह उससे राज़ी हुए† और अल्लाह ने उनके लिए (बहिश्त के ऐसे) बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी उनमें हमेशा रहेंगे। यही बड़ी कामयाबी है।(१००)

[] यहाँ से देहाती बद्दुओं का ज़िक्र शुरू होता है। इनमें ज़्यादातर मुनाफ़िक़ थे और मुनाफ़िक़त में शहरी अरबों के मुक़ाबले में बेपढ़े और गवाँर होने के कारन कहीं ज़्यादा सख़्त थे। अलबत्ता कुछ ईमानवाले भी थे। ‡ यानी चाहते हैं कि तुम पर कोई बड़ी आपत्ति फट पड़े और तुम्हारी शान घटे। † जंगे बद्र तक जो ईमान ला चुके थे उनका शुमार क़दीमों में है और उसके बाद वालों का शुमार इन क़दीमों के पैराकारों में है।

∴ मु. अ़िं मु त क़. ५ ● व. मंजिल

व मिम्मन् हौलकुम् मिनल्अअ़्राबि मुनाफ़िक़ून त् ∴ व मिन् अह्लिल्-मदीनति क़िफ़् ∴ ● मरदू अ़लन्निफ़ाक़ि क़िफ़् ला तअ़्लमुहुम् त् नह्नु नअ़्लमुहुम् त् सनुअ़ज़्ज़िबुहुम् मर्रतैनि सुम्म युरद्दून अिला अ़ज़ाबिन् अ़ज़ीमिन् ज् (१०१) व आख़रूनअ़्तरफ़ू बिज़ुनूबिहिम् ख़लतू अ़मलन् सालिहौंव आख़र सैयिअन् त् अ़सल्लाहु अैंयतूब अ़लैहिम् त् अिन्नल्लाह ग़फ़ूरुर्रहीमुन् (१०२) ख़ुज़् मिन् अम्वालिहिम् सदक़तन् तुतह्हिरुहुम् व तुज़क्कीहिम् बिहा व सल्लि अ़लैहिम् त् अिन्न सलातक सकनुल्लहुम् त् वल्लाहु समीअ़ुन् अ़लीमुन् (१०३) अलम् यअ़्लमू अन्नल्लाह हुव यक़्बलुत्तौबत अ़न् अ़िबादिही व यअ़्ख़ुज़ुस्सदक़ाति व अन्नल्लाह हुवत्तौवाबुर्रहीमु (१०४) व क़ुलिअ़्मलू फ़सयरल्लाहु अ़मलकुम् व रसूलुहू वल्मुअ़्मिनून त् व सतुरद्दून अिला आ़लिमिल्ग़ैबि वश्शहादति फ़युनब्बिअ़ुकुम् बिमा कुन्तुम् तअ़्मलून ज् (१०५) व आख़रून मुर्जौन लिअम्रिल्लाहि अिम्मा युअ़ज़्ज़िबुहुम् व अिम्मा यतूबु अ़लैहिम् त् वल्लाहु अ़लीमुन् हकीमुन् (१०६) वल्लज़ीनत्तख़ज़ू मस्जिदन् ज़िरारौंव कुफ़्रौंव तफ़्रीक़म् - बैनल्मुअ़्मिनीन व अिर्सादल्लिमन् हारबल्लाह व रसूलहू मिन् क़ब्लु त् व लयह्लिफ़ुन्न अिन् अरद्ना अिल्लल् - हुस्ना त् वल्लाहु यश्हदु अिन्नहुम् लकाज़िबून (१०७) ला तक़ुम् फ़ीहि अबदन् त् लमस्जिदुन् अुस्सिस अ़लत्तक़्वा मिन् औवलि यौमिन् अहक़्क़ु अन् तक़ूम फ़ीहि त् फ़ीहि रिजालुंय्युहिब्बून अैंयततहहरू त् वल्लाहु युहिब्बुल् - मुत्तह्हिरीन (१०८) अफ़मन् अस्सस बुन्यानहू अ़ला तक़्वा मिनल्लाहि व रिज़्वानिन् ख़ैरुन् अम् मन् अस्सस बुन्यानहू अ़ला - शफ़ा जुरुफ़िन् हारिन् फ़न्हार बिही फ़ी नारि जहन्नम त् वल्लाहु ला यह्दिल् - क़ौमज़्ज़ालिमीन (१०९)

التوبة ٩ ١٦٢ يعتذرون ١١

على النفاق لا تعلمهم نحن نعلمهم سنعذبهم مرتين ثم
يردون الى عذاب عظيم ۝ واخرون اعترفوا بذنوبهم خلطوا
عملا صالحا واخر سيئا عسى الله ان يتوب عليهم ان الله
غفور رحيم ۝ خذ من اموالهم صدقة تطهرهم وتزكيهم بها
وصل عليهم ان صلوتك سكن لهم والله سميع عليم ۝ الم
يعلموا ان الله هو يقبل التوبة عن عباده ويأخذ الصدقت وان
الله هو التواب الرحيم ۝ وقل اعملوا فسيرى الله عملكم و
رسوله والمؤمنون وستردون الى علم الغيب والشهادة فينبئكم
بما كنتم تعملون ۝ واخرون مرجون لامر الله اما يعذبهم و
اما يتوب عليهم والله عليم حكيم ۝ والذين اتخذوا مسجدا
ضرارا وكفرا وتفريقا بين المؤمنين وارصادا لمن حارب الله
ورسوله من قبل وليحلفن ان اردنا الا الحسنى والله يشهد
انهم لكذبون ۝ لا تقم فيه ابدا لمسجد اسس على التقوى
من اول يوم احق ان تقوم فيه فيه رجال يحبون ان يتطهروا
والله يحب المطهرين ۝ افمن اسس بنيانه على تقوى من
الله ورضوان خير ام من اسس بنيانه على شفا جرف هار
فانهار به في نار جهنم والله لا يهدي القوم الظلمين ۝ لا

और तुम्हारे आस-पास के देहातियों में से बाज़ मुनाफ़िक़ (कपटी) हैं और बाज़ मदीने में रहनेवालों में से भी हैं, ● जो निफ़ाक़ (कपट) पर अड़े बैठे हैं, (ऐ पैग़म्बर!) तुम इनको नहीं जानते, हम इनको जानते हैं। सो हम इनको दोहरी मार देंगे‡, फिर (ये) बड़े अज़ाब की ओर लौटाये जायेंगे। (१०१) और कुछ लोग हैं जिन्होंने अपने अपराध को मान लिया है (और उन्होंने) कुछ काम भले और कुछ बुरे (मिले-जुले) किये थे, आश्चर्य नहीं कि अल्लाह उनकी तौबा क़बूल करे। बेशक अल्लाह बड़ा क्षमा करनेवाला बेहद मेहरबान है। (१०२) (ऐ पैग़म्बर! यह लोग अपने माल की ज़कात दें तो) इनके माल में से ज़कात ले लिया करो क्योंकि उस (ज़कात के क़बूल करने) से तुम इनको पाक करते हो, और उनके लिए दुआए ख़ैर करो क्योंकि तुम्हारी दुआ इनके लिए संतोष है,† और अल्लाह सब सुनता जानता है। (१०३) क्या इन लोगों को इसकी ख़बर नहीं कि अल्लाह अपने बन्दों की तौबः आप क़बूल करता है और (वही) ज़कात लेता है और अल्लाह ही बड़ा तौबः क़बूल करनेवाला बेहद मेहरबान है। (१०४) और (ऐ पैग़म्बर! इनको) समझा दो कि तुम (अपनी जगह) अमल करते रहो सो अभी तो अल्लाह, पैग़म्बर और ईमानवाले तुम्हारे कामों को देखेंगे और ज़रूर (मरे पीछे) तुम उसकी तरफ़, जो ज़ाहिर और छिपे को जानता है, लौटाये जाओगे, फिर जो कुछ तुम (दुनिया में) करते रहे हो तुमको वह बतादेगा। (१०५) और कुछ और लोग हैं जिनका काम अल्लाह के हुक्म पर ठहरा हुआ (निर्भर) है, वह चाहे उनको सज़ा देवे चाहे उनकी तौबः क़बूल करे, और अल्लाह सब जाननेवाला और बड़ा हिकमतवाला है। (१०६) और जिन्होंने इस मतलब से एक मसजिद§ बना खड़ी की कि (ईमानवालों को) नुक़सान पहुँचायें और (अल्लाह के साथ) कुफ़्र करें और ईमानवालों में फूट डालें और उन लोगों को, उस शख़्स के लिए🟉 दाव घात बताने की (साजिश की) जगह बनायें जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर के साथ पहले लड़ चुके हैं और (जब उनसे पूछा जायगा तो) सौगन्धें खाने लगेंगे कि हमने तो भलाई (के सिवाय और किसी तरह का बुरा) इरादा नहीं चाहा था। और अल्लाह गवाही देता है कि ये झूठे हैं। (१०७) सो (ऐ पैग़म्बर!) तुम उस (मसजिद) में कभी खड़े भी न होना। हाँ वह मसजिद जिसकी नींव पहले दिन से ही परहेज़गारी पर रखी गई है, वह इस लायक़ है कि तुम उसमें खड़े हो। क्योंकि उसमें ऐसे लोग हैं जो पाक रहना पसंद करते हैं, और अल्लाह पवित्रता से रहनेवालों को पसंद करता है। (१०८) भला जो आदमी अल्लाह के डर से और उसकी ख़ुशी पर अपनी इमारत की नींव रखे वह उत्तम है या वह जो (कुफ़्र और निफ़ाक़ की) ढह जाने वाली खाई के किनारे अपनी नींव रखे, फिर वह (इमारत) उसको दोज़ख़ की आग में ले गिरे? और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं दिया करता। (१०९)

‡ याने दुनिया मे मार पर मार देंगे फिर आख़िरत में अज़ाब में झोंके जायँ गे। † आयत १०२—१०३ में बयान उन चन्द मुसलमानों का है जो तबूक के जेहाद के समय मुनाफ़िक़ों की देखादेखी जेहाद से जी चुराकर घर बैठ रहे थे। लेकिन बाद को बहुत शर्मिन्दः हो कर मसजिद में खाना-पीना छोड़ अपने को बाँध दिया व मर जाने का क़स्द किया जब तक उन्हें माफ़ी न मिल जाय। आख़िर रसूलुल्लाह स० ने इस आयत पर उनके बन्धन खोल कर माफ़ किया और संकोच छोड़ कर उनसे ज़कात भी ली जो वे माफ़ी पाने के बाद देने को बेचैन थे। § कुछ मुनाफ़िक़ों ने मुसलमानों में फूट डालने व उनको नुक़सान पहुँचाने के विचार से मुसलमानों की मौजूदा दो मसजिदों—एक मसजिद क़ुबा व एक और के अलावा एक मसजिद नई बनवाई [पेज ३४७ पर]
🟉 यह शख़्स एक ईसाई संन्यासी अबू आमिर था जो मुसलमानों व इस्लाम का बड़ा दुश्मन [पेज ३४७ पर]

★ रु. १३/२ आ ११

ला यज़ालु बुन्यानुहुमुल्लज़ी बनौरीबतन् फ़ी क़ुलूबिहिम् इल्ला अन् तक़त्तअ क़ुलूबुहुम् ॰ वल्लाहु अलीमुन् हकीमुन् (११०) ★ इन्नल्लाहश्तरा मिनल्मुअ्मिनीन अन्फ़ुसहुम् व अम्वालहुम् बिअन्न लहुमुल्जन्नत ॰ युक़ातिलून फ़ी सबीलिल्लाहि फ़यक़्तुलून व युक़्तलून क़िफ़् वऽ्दन् अलैहि हक़्क़न् फ़ित्तौराति वल्इन्जीलि वल्क़ुर्आनि ॰ व मन् औफ़ा बिअह्दिही मिनल्लाहि फ़स्तब्शिरू बिबैअिकुमुल्लज़ी बायऽ्तुम् बिही ॰ व ज़ालिक हुवल्फ़ौज़ुल् - अज़ीमु (१११) अत्ताअिबूनल् - आबिदूनल् - हामिदूनस्-साअिहूनर् - राकिअूनस् - साजिदूनल्-आमिरून बिलमऽ्रूफ़ि वन्नाहून अनिल्मुन्करि वल्हाफ़िज़ून लिहुदूदिल्लाहि ॰ व बश्शिरिल् - मुअ्मिनीन (११२) मा कान लिन्नबीयि वल्लज़ीन आमनू अँयस्तग़्फ़िरू लिल्मुश्रिकीन व लौ कानू उली क़ुर्बा मिम्बऽ्दि मा तबैयन लहुम् अन्नहुम् अस्हाबुल्जहीमि (११३) व मा कानस्-तिग़्फ़ारु अिब्राहीम लिअबीहि इल्ला अम्मौअिदतिंव्व अदहा ईयाहु ज् फ़लम्मा तबैयन लहू अन्नहु अदूवुल्लिल्लाहि तबर्रअ मिन्हु ॰ इन्न अिब्राहीम लअौवाहुन् हलीमुन् (११४) व मा कानल्लाहु लियुज़िल्ल क़ौमम् - बऽ्द अिज़् हदाहुम् हत्ता युबैयिन लहुम् मा यत्तक़ून ॰ इन्नल्लाह बिकुल्लि शैअिन् अलीमुन् (११५) इन्नल्लाह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ॰ युह्यी व युमीतु ॰ व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलीयिंव्व ला नसीरिन् (११६) लक़त्ताबल्लाहु अलन्नबीयि वल्मुहाजिरीन वल्-अन्सारिल्लज़ीनत्-तबअूहु फ़ी साअतिल् - अुस्रति मिम्बऽ्दि मा काद यज़ीग़ु क़ुलूबु फ़रीक़िम् - मिन्हुम् सुम्म ताब अलैहिम् ॰ इन्नहु बिहिम् रअूफ़ुर्रहीमुन् ला (११७)

يعتذرون ١١ ١٦٣ التوبة ٩

يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١١٠﴾ إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١١﴾ التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ السَّائِحُونَ الرَّاكِعُونَ السَّاجِدُونَ الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾ مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿١١٣﴾ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَنْ مَوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ﴿١١٤﴾ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُمْ مَا يَتَّقُونَ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾ إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿١١٦﴾ لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبُ فَرِيقٍ مِنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ إِنَّهُ بِهِمْ

منزل ٢

यह इमारत जो इन लोगों ने बनाई है इसके कारण इन लोगों के दिलों में हमेशा शक और शुबहा रहेगा, यहाँ तक कि (उस शुबहा याने निफ़ाक़ के सबब) इनके दिलों के टुकड़े-टुकड़े हो जावें। और अल्लाह सब कुछ जाननेवाला और बड़ा हिकमतवाला है। (११०) ★

★ रु. १३/२ आ ११

अल्लाह ने मुसलमानों से उनकी जानें और उनके माल ख़रीद लिये हैं कि उनके बदले उनको जन्नत देगा कि वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं, मारते हैं और मारे जाते हैं। यह अल्लाह का पक्का अ़हद हो चुका और यह अ़हद तौरात, इंजील और क़ुर्आन में है, और अल्लाह से बढ़कर अपने अ़हद का पूरा और कौन हो सकता है। तो अपने सौदे पर जो तुमने अल्लाह के साथ किया है आनन्द मनाओ और यही बड़ी कामयाबी है। (१११) तौबः करनेवाले बन्दगी करनेवाले, स्तुति करनेवाले, बेतअ़ल्लुक़ (निस्संग) रहनेवाले§, रुकूअ़ करने वाले, सिजदः करनेवाले, नेक़ काम की सलाह देनेवाले, और बुरे काम से मना करनेवाले और अल्लाह ने जो हद्दें (मर्यादा) बाँध दी हैं उन पर रहनेवाले ☼ (यही हैं जिन्होंने अल्लाह से आख़िरत का अपनी जान माल का सौदा किया है) और (ऐ पैग़म्बर ! ऐसे) ईमानवालों को ख़ुशख़बरी सुना दो। (११२) जब पैग़म्बर और मुसलमानों को मालूम हो चुका कि मुशरिकीन दोज़ख़ी होंगे तो उनको यह ज़ेब (शोभा) नहीं देता कि उनके लिए माफ़ी चाहें, गो वह रिश्तेदार (सम्बन्धी ही क्यों न) हों। (११३) और इब्राहीम ने अपने बाप के लिए (जो) माफ़ी की प्रार्थना की थी सो (सिर्फ़) एक वादे के कारन जो इब्राहीम ने अपने बाप से (पहले) कर लिया था। फिर जब उनको मालूम हो गया कि यह अल्लाह का दुश्मन है तो बाप से बेज़ार (विमुख) हो गये † (बेशक) इब्राहीम बड़े नरम दिल और सहनशील थे ! (११४) और अल्लाह की शान से बाहर है कि एक जाति को राह पर लाने के बाद राह से उन्हें भटकाये, जब तक उनको वह चीज़ें साफ़ साफ़ न ज़ाहिर कर दे जिनसे वह बचते रहें। अल्लाह हर चीज़ से जानकार है। (११५) और आसमान और ज़मीन की बादशाहत अल्लाह ही की है। वही जिलाता और मारता है, और अल्लाह के सिवाय तुम्हारा कोई सरपरस्त और मददगार नहीं। (११६) अल्लाह ने पैग़म्बर पर कृपा की और देशत्यागी (मुहाजरीन) और मदद करनेवालों (यानी अन्सारों) पर जिन्होंने संकट के समय में पैग़म्बर का साथ दिया, बाद में जबकि इनमें से बाज़ के दिल (तबूक की सचमुच बेढब मुसीबत को देखकर) डगमगा चले थे, फिर उसी ने इन पर अपनी कृपा की (और यह साबितक़दम रहे) इसमें शक नहीं कि अल्लाह इन सब पर अत्यन्त दया रखता है। (११७)

[पेज ३४५ से]‡ थी कि उसमें मुसलमानों के ख़िलाफ़ दुश्मनों से बैठकर साज़िश करे। इस मसजिद का नाम ही मसजिदे ज़िरार यानी ज़रर (नुक़सान) पहुँचाने वाली था। रसूल स० से हुक्म हुआ कि ये मुनाफ़िक़ चाहे जितनी सफ़ाई नेकनियती की दें उनकी मसजिद में पैर न रखना। बाद में रसूल स० ने इस निफ़ाक़ पर क़ायम मसजिद को गिरवा दिया था। [पेज ३४५ से]❋ था। उसने रोम के शहंशाह से मिलकर हमला कराने व और तमाम साज़िशें करने की कोशिश की। इसी रोम की चढ़ाई की खबर पर नबी स० ने तबूक पर जाकर क़िलेबन्दी की थी। अबू आमिर का भी इस मसजिद ज़िरार में अड्डा था।

§ बेतअ़ल्लुक़ रहना याने रोज़ः रखना या हिजरत करना या दुनियावी मज़ों में लिप्त न होना है। ☼ याने शरीअ़त (धर्मशास्त्र) के खिलाफ़ कभी आचरन न करना। † देखिये आयात ४७ सूरे मर्यम और आयत ८६—८६ सूरे शुअ़राअ़ि।

ऽव अलस् - सलासतिल् - लजीन ख़ुल्लिफ़ू त् हत्ता॑ अिज़ा ज़ाक़त् अलैहिमुल्-अर्ज़ु बिमा रहुबत् व ज़ाक़त् अलैहिम् अन्फ़ुसुहुम् व जन्नू॑ अल्ला मल्जअ मिनल्लाहि अिल्ला॑ अिलैहि त् सुम्म ताब अलैहिम् लियतूबू त् अिन्नल्लाह हुवत्तौवाबुर्रहीमु (११८) ★ या॑ अैयुहल्लजीन आमनुत्तक़ुल्लाह व कूनू मअस्सादिक़ीन (११९) मा कान लिअह्लिलमदीनति व मन् हौलहुम् मिनल्अअ्राबि अँ-यतख़ल्लफ़ू अर्रसूलिल्लाहि व ला यर्ग़बू बिअन्फ़ुसिहिम् अन् नफ़्सिहीऽ त् जालिक बिअन्नहुम् ला युसीबुहुम् ज़मअूँव ला नसबूँव ला मख़्मसतुन् फ़ी सबीलिल्लाहि व ला यतअून मौतिअैयग़ीज़ुल्-कुफ़्फ़ार व ला यनालून मिन् अदूविन्नैलन् अिल्ला कुतिब लहुम् बिहीऽ अमलुन् सालिहुन् त् अिन्नल्लाह ला युज़ीअु अज्रल्-मुह्सिनीन ला (१२०) व ला युन्फ़िक़ून नफ़क़तन् सग़ीरतौंव ला कबीरतौंव ला यक़्तअून वादियन् अिल्ला कुतिब लहुम् लियज्ज़िय - हुमुल्लाहु अह्सन मा कानू यअ्मलून (१२१) व मा कानल् - मुअ्मिनून लियन्फ़िरू का॑फ़्फ़तन् त् फ़लौ ला नफ़र मिन् कुल्लि फ़िर्क़तिम् - मिन्हुम् ता॑अिफ़तुल्-लियतफ़क़्क़हू फ़िद्दीनि व लियुन्जिरू क़ौमहुम् अिजा रजअू॑ अिलैहिम् लअल्लहुम् यह्ज़रून (१२२) ★ या॑ अैयुहल्लजीन आमनू क़ातिलुल्लजीन यलूनकुम् मिनल्कुफ़्फ़ारि वल्यजिदू फ़ीकुम् ग़िल्ज़तन् त् वअ्लमू॑ अन्नल्लाह मअल्मुत्तक़ीन (१२३) ● व अिजा मा॑ अुन्ज़िलत् सूरतुन् फ़मिन्हुम् मैंयक़ूलु अैयुकुम् जादतहु हाज़िहीऽ॑ ईमानन् ज् फ़अम्मल्लजीन आमनू फ़ज़ादत् - हुम् ईमानौंव - हुम् यस्तब्शिरून (१२४)

رؤوف رحيم ۝ وعلى الثلثة الذين خلفوا حتى اذا ضاقت
عليهم الارض بما رحبت وضاقت عليهم انفسهم وظنوا ان
لا ملجا من الله الا اليه ثم تاب عليهم ليتوبوا ان الله هو
التواب الرحيم ۝ يايها الذين امنوا اتقوا الله وكونوا مع
الصدقين ۝ ما كان لاهل المدينة ومن حولهم من
الاعراب ان يتخلفوا عن رسول الله ولا يرغبوا بانفسهم عن
نفسه ذلك بانهم لا يصيبهم ظما ولا نصب ولا مخمصة
في سبيل الله ولا يطـٔون موطئا يغيظ الكفار ولا ينالون من
عدو نيلا الا كتب لهم به عمل صالح ان الله لا يضيع اجر
المحسنين ۝ ولا ينفقون نفقة صغيرة ولا كبيرة ولا
يقطعون واديا الا كتب لهم ليجزيهم الله احسن ما كانوا
يعملون ۝ وما كان المؤمنون لينفروا كافة فلولا نفر
من كل فرقة منهم طائفة ليتفقهوا في الدين ولينذروا
قومهم اذا رجعوا اليهم لعلهم يحذرون ۝ يايها الذين امنوا قاتلوا
الذين يلونكم من الكفار وليجدوا فيكم غلظة واعلموا ان
الله مع المتقين ۝ واذا ما انزلت سورة فمنهم من يقول
ايكم زادته هذه ايمانا فاما الذين امنوا فزادتهم ايمانا و

★ रु. १४ | ३ आ ८

★ रु. १५ | ४ आ ४

● रुबुअ १|४

और उन तीनों † पर जिनका फ़ैसला बाद के लिए (मुल्तवी) रखा गया था यहाँ तक कि जब ज़मीन चौड़ी होने पर भी उनके लिए तंग हो उठी और वह अपनी जान से भी तंग आ गये और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह के सिवाय और कहीं पनाह नहीं। (तो) फिर अल्लाह ने उनकी तौबा क़बूल कर ली, ताकि तौबा किये रहें, बेशक अल्लाह बड़ा ही तौबा क़बूल करनेवाला बेहद मेहरबान है। (११८) ★

ऐ ईमानवालो ! अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ रहो। (११९) मदीनावालों और उनके आस-पास के देहातियों को शोभित (ज़ेब) न था कि अल्लाह के पैग़म्बर (के साथ) से पीछे रह जावें और न यह (मुनासिब था) कि पैग़म्बर की जान के मुक़ाबले अपनी जानों को ज़्यादः प्यारा समझें ; यह इसलिए (मुनासिब न था) कि उनको अल्लाह की राह में प्यास और मेहनत और भूख की जो तकलीफ़ पहुँचती है और जो क़दम वह ऐसे चलते हैं कि काफ़िरों को (उनसे) ग़ुस्सा आये या दुश्मनों से (माल ग़नीमत के तौर) कुछ चीज़ छीनते हैं तो हर काम के बदले इनका नेक अमल लिखा जाता है। (बेशक) अल्लाह नेककारों का अज्र (प्रतिफल) ज़ाया नहीं होने देता (१२०) और थोड़ा या बहुत जो कुछ (भी अल्लाह की राह में) ख़र्च करते हैं और जो मैदान उनको तै करने पड़ते हैं यह सब इनके नाम (नेक आमाल में) लिख जाता है ताकि अल्लाह इनको इनके कर्मों का अच्छे से अच्छा बदला देवे (१२१) और मुमकिन नहीं कि मुसलमान सब के सब (जिहाद के लिए) निकल खड़े हों, तो ऐसा क्यों न किया जाय कि उनकी हर एक जमात में से कुछ लोग निकलते कि दीन की समझ (अपने में) पैदा करते और जब अपनी जाति में वापस जाते तो उनको (दीन की समझ देते और उनको) डराते ताकि वह लोग (कुफ़्र से) बचें। § (१२२) ★

ऐ ईमानवालो! अपने आस-पास के काफ़िरों से लड़े जाओ और चाहिए (कि तुम्हारा रवैया अब ज़्यादः सख़्त हो) कि वह तुमसे (अपनी बाबत) सख़्ती महसूस करें और जाने रहो कि अल्लाह उन लोगों का साथी है जो अल्लाह से डरते हैं। (१२३) ◉ जिस वक़्त कोई सूरत उतारी जाती है तो मुनाफ़िक़ों में से लोग पूछने लगते हैं कि भला इसने तुममें से किसका ईमान बढ़ा दिया ? सो जो ईमानवाले हैं उसने उनका ईमान बढ़ाया और वही ख़ुशियाँ मनाते हैं (१२४)

★ रु. १४/३ आ ८

★ रु. १५/४ आ ४

◉ रु. ब/अ १/४

---

† तबूक की अहम चढ़ाई में तीन तरह के लोग शरीक न हुये। एक तो मुनाफ़िक़ जिन पर हमेशा की लानत हुई। दूसरे वे मुसलमान जो किसी न किसी उज़्र से रुक गये। ये माफ़ कर दिये गये। तीसरे यही तीन मुसलमान जो बग़ैर उज़्र के तबूक की लड़ाई में भाग नहीं ले सके थे। लेकिन ऐसी मुसीबतों में फँसे कि अपनी मृत्यु को अपने जीवन की अपेक्षा अधिक अच्छा समझने लगे। अन्त में उन्होंने अल्लाह की पनाह व माफ़ी चाही और वे माफ़ किये गये। उनके नाम हैं (१) मुरारा-बिन-रबी, (२) क़ाब-बिन-मालिक और (३) हिलाल-बिन उमैया। § कई तौर पर तफ़सीर पाई जाती है। एक राय यह कि सब लोग जिहाद के लिए न निकल पड़ें। हर जमात में से चन्द लोग दीनी समझ हासिल करने के लिए निकलें और उसे हासिल कर वापस हों और कम समझ वालों में दीन की समझ पैदा करें ताकि वे अपना दीनी फ़र्ज़ देख सकें।

व अम्मल्लजीन फ़ी क़ुलूबिहिम् मरज़ुन् फ़ज़ादत्हुम् रिज्सन् अिला रिज्सिहिम् व मा तू व हुम् काफ़िरून (१२५) अव ला यरौन अन्नहुम् युफ़्तनून फ़ी कुल्लि आमिम्मर्रतन् औ मर्रतैनि सुम्म ला यतूबून व ला हुम् यज्जक्करून (१२६) व अिजा मा अुन्ज़िलत् सूरतुन् नजर बअ़्ज़ुहुम् अिला बअ़्ज़िन् त़ हल् यराकुम् मिन् अहृदिन् सुम्मन्सरफ़ू त़ सरफ़ल्लाहु क़ुलूबहुम् बिअन्नहुम् क़ौमुल्ला यफ़्क़हून (१२७) लक़द् जा'अ कुम् रसूलुम् - मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़ीज़ुन् अलैहि मा अनित्तुम् हरीसुन् अलैकुम् बिल्मुअ्मिनीन रऊफ़ुर्रहीमुन् (१२८) फ़अिन् तवल्लौ फ़क़ुल् हस्बियल्लाहु क़् ज़् सला ला अिलाह अिल्ला हुव त़ अलैहि तवक्कल्तु व हुव रब्बुल् - अर्शिल् - अज़ीमि (१२९) ★

هم يستبشرون ﴿١٢٤﴾ واما الذين في قلوبهم مرض فزادتهم رجسا الى رجسهم وماتوا وهم كفرون ﴿١٢٥﴾ اولا يرون انهم يفتنون في كل عام مرة او مرتين ثم لا يتوبون ولا هم يذكرون ﴿١٢٦﴾ واذا ما انزلت سورة نظر بعضهم الى بعض هل يرىكم من احد ثم انصرفوا صرف الله قلوبهم بانهم قوم لا يفقهون ﴿١٢٧﴾ لقد جاءكم رسول من انفسكم عزيز عليه ما عنتم حريص عليكم بالمؤمنين رءوف رحيم ﴿١٢٨﴾ فان تولوا فقل حسبي الله لا اله الا هو عليه توكلت وهو رب العرش العظيم ﴿١٢٩﴾

سورة يونس مكية وهي مائة وتسع ايات واحد عشر ركوعا

بسم الله الرحمن الرحيم

الر تلك ايت الكتب الحكيم ﴿١﴾ اكان للناس عجبا ان اوحينا الى رجل منهم ان انذر الناس وبشر الذين امنوا ان لهم قدم صدق عند ربهم قال الكفرون ان هذا لسحر مبين ﴿٢﴾ ان ربكم الله الذي خلق السموت والارض في ستة ايام ثم استوى على العرش يدبر الامر ما من شفيع الا من بعد اذنه ذلكم الله ربكم فاعبدوه افلا تذكرون ﴿٣﴾

منزل ٣

रु. १६/५ आ ७

॥ इति मंजिल २ ॥

☪ १० सूरः यूनुस ५१ ☪

(मक्की) इसमें ७७३२ हुरूफ़ १८६१ अल्फ़ाज १०६ आयात और ११ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीमि ●

अलिफ़् ला'म रा क़िफ़् तिल्क आयातुल् - किताबिल् - हकीमि (१) अकान लिन्नासि अजबन् अन् औहैना अिला रजुलिम् - मिन्हुम् अन् अन्जिरिन्नास व बश्शिरिल्लजीन आमनू अन्न लहुम् क़दम सिद्क़िन् अिन्द रब्बिहिम् त़ ● क़ालल्काफ़िरून अिन्न हाजा लसाहिरुम् - मुबीनुन् (२) अिन्न रब्ब-कुमुल्लाहुल्लजी ख़लक़स्समावाति वल्अर्ज़ फ़ी सित्तति अैयामिन् सुम्मस्तवा अलल् - अर्शि युदब्बिरुल्-अम्र त़ मा मिन् शफ़ीअिन् अिल्ला मिम्बअ़्दि अिज्निही त़ जालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् फ़अ़्बुदूहु त़ अफ़ला तजक्करून (३)

● व. न बी स.

और जिनके दिलों में (कपट का) रोग है तो इससे उनकी गन्दगी पर गन्दगी बढ़ती गई। और यह लोग (अन्त तक) काफ़िर हो (रहकर) मरेंगे। (१२५) क्या नहीं देखते कि यह लोग हर साल एक बार या दो बार (बला में फँस कर) आज़माये जाते हैं, इस पर भी न तो तौबः ही करते हैं और न नसीहत ही पर चलते हैं। (१२६) जब और कोई सूरत उतरती है, तो उनमें से एक दूसरे की तरफ़ देखने लगते हैं और कहते हैं कि तुमको कोई देखता† है या नहीं, फिर (मुँह फेर कर) चल देते हैं। अल्लाह ने इनके दिलों को फेर दिया है इसलिए वह बिल्कुल नहीं समझते। (१२७) तुम्हारे पास तुम्हीं में के एक पैग़म्बर आये हैं। तुम्हारा दुख इनको कठिन मालूम होता है। वह तुम्हारी तलाश रखता है (कि ईमान की रौशनी में आओ) और ईमानवालों पर प्रेम रखने वाला और मेहरबान है। (१२८) इस पर भी यह लोग न मानें तो (ऐ पैग़म्बर!) कह दो कि मुझको तो अल्लाह काफ़ी है, उसके सिवाय कोई माबूद (भजनीय) नहीं है, उसी पर मैं भरोसा रखता हूं और वही उस बड़े (से बड़े) तख़्त का मालिक है। (१२९) ★

★ रु. १६/५ प्रा ७

॥ इति मंज़िल २ ॥

१० सूरः यूनुस ५१

(मक्की) इसमें अ़रबी के ७७३३ हरफ़, १८६१ शब्द, १०६ आयतें, और ११ रुकूअ़ हैं।*

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीमि।

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला बेहद मेहरबान है।

अलिफ़, लाम, रा। यह हिकमतवाली किताब की आयतें हैं १) क्या लोगों को इस बात का ताज्जुब हुआ कि हमने उन्हीं में के एक आदमी की तरफ़ इस बात का पैग़ाम भेजा कि लोगों को डराओ और ईमान लाने वालों को ख़ुशख़बरी सुनाओ कि उनके परवरदिगार के पास उनके लिए बड़ा दरजा (सम्मान) है●। काफ़िर (ऐसे नबी स० की बाबत) कहने लगे वह तो खुलासा जादूगर है। (२) तुम्हारा परवरदिगार वही अल्लाह है जिसने ६ दिन में आसमान और ज़मीन को बनाया, फिर अर्श पर जा बिराजा। (वहाँ से) हर काम का प्रबन्ध कर रहा है, (उसकी हुकूमत में) कोई सिफ़ारिशी (की गुंजाइश) नहीं सिवाय (उस सूरत में) कि उसकी रज़ा हो। वह अल्लाह है तुम्हारा पालनकर्त्ता, उसी की अ़िबादत करो, क्या तुम ग़ौर नहीं करते। (३)

● व. न बी स.

* सूरः यूनुस की ९८ आयत में पैग़म्बर यूनुस व उनकी क़ौम का ज़िक्र है। उनके नाम पर ही इस सूरत का नामकरण है। पिछली सूरतें अन्फ़ाल और तौबः में इस्लामी उम्मत के संगठित होने के बाद काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों ने अपने किये सुलहनामें तक तोड़ कर विश्वासघात और ज़ुल्म से मुसलमानों को बेहद तंग किया और इन्होंने बड़ी जवाँमर्दी, साबित क़दमी और अल्लाहनवाज़ी से सामना किया और उन पर क़ाबू पाया। यह भी तै हो गया कि अब से इन मुशरिकों और मुनाफ़िक़ों से कोई सरोकार या अ़हद न किया जायगा। [पेज ३५३ पर]

† मुनाफ़िक़ों को हर समय भय बना रहता था कि किसी आयत के उतरने पर उसमें कहीं उनकी करतूतों की तरफ़ इशारा न हो और कोई मुसलमान उनके फ़रेब को ताड़ न जाय, इसलिए जब कोई आयत उनके विषय में उतरती थी तो वह एक दूसरे को देखने लगते और तुरन्त भाग खड़े होते थे।

अिलैहि मर्जिअुकुम् जमीअन् त् वऽदल्लाहि हक़्क़न् त् अिन्नहु यब्दअुल् - ख़ल्क़ सुम्म युअीदुहु लियज्ज़ियल्लज़ीन आमनू व अमिलुस्सालिहाति बिल्क़िस्ति त् वल्लज़ीन कफ़रू लहुम् शराबुम् - मिन् हमीमिंव्व अज़ाबुन् अलीमुम् - बिमा कानू यक्फ़ुरून (४) हुवल्लज़ी जअलश्शम्स ज़िया औंवल्क़मर नूरौंव क़द्दरहु मनाज़िल लितऽलमू अददस्सिनीन वल्हिसाब त् मा ख़लक़ल्लाहु ज़ालिक अिल्ला बिल्हक़्क़ि ज् युफ़स्सिलुल्- आयाति लिक़ौमीं - यऽलमून (५) अिन्न फ़िख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि व मा ख़लक़ल्लाहु फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि लआयातिल्लिक़ौमीं-यत्तक़ून (६) अिन्नल्लज़ीन ला यर्जून लिक़ा अना वरज़ू बिल्हयातिद्दुन्या वत्मअन्नू बिहा वल्लज़ीन हुम् अन् आयातिना ग़ाफ़िलून ला (७) अुला अिक मअ्वाहुमुन्नारु बिमा कानू यक्सिबून (८) अिन्नल्लज़ीन आमनू व अमिलुस्सालिहाति

يعتذرون ١١ ٢٦٦ يونس ١٠

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا إِنَّهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ
لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ
شَرَابٌ مِنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝ هُوَ الَّذِي
جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَّرَهُ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ
السِّنِينَ وَالْحِسَابَ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَٰلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ
لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ
فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَّقُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ لَا
يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاطْمَأَنُّوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ
عَنْ آيَاتِنَا غَافِلُونَ ۝ أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِإِيمَانِهِمْ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝ دَعْوَاهُمْ فِيهَا
سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ وَآخِرُ دَعْوَاهُمْ أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ وَلَوْ يُعَجِّلُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ
لَقُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجَلُهُمْ فَنَذَرُ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُونَ ۝ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْبِهِ أَوْ قَاعِدًا أَوْ
قَائِمًا فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ كَأَنْ لَمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ ضُرٍّ مَسَّهُ
كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ

منزل ٣

यह्दीहिम् रब्बुहुम् बिअीमानिहिम् ज् तज्री मिन् तह्तिहिमुल् - अन्हारु फ़ी जन्नातिन्नअीमि (९) दऽवाहुम् फ़ीहा सुब्हानकल्लाहुम्म व तहीयतुहुम् फ़ीहा सलामुन् ज् व आख़िरु दऽवाहुम् अनिल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्आलमीन (१०) ★ व लौ युअज्जिलुल्लाहु लिन्नासिश् - शर्रस् - तिऽजालहुम् बिल्ख़ैरि लक़ुज़िय अिलैहिम् अजलुहुम् त् फ़नज़रुल्लज़ीन ला यर्जून लिक़ा अना फ़ी तुग़्यानिहिम् यऽमहून (११) व अिज़ा मस्सल् - अिन्सानज़्ज़ुर्रु दआना लिजम्बिही औ क़ाअिदन् औ क़ा अिमन् ज् फ़लम्मा कशफ़्ना अन्हु ज़ुर्रहु मर्र कअल्लम् यद्अुना अिला ज़ुर्रिम्मस्सहु त् कज़ालिक ज़ुय्यिन लिल्मुस्रिफ़ीन मा कानू यऽमलून (१२)

★ रु. १ | ६ आ १०

उसी की तरफ़ तुम सबको फिर लौटकर जाना है, अल्लाह का वादा सच्चा है। उसी ने पहली मर्तबा ख़िलक़त (जनता) को पैदा किया फिर उनको दुबारा (ज़िन्दः) करेगा ताकि जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये उनको इन्साफ़ के साथ बदला दे और काफ़िरों के लिए उनके कुफ़्र की सज़ा में पीने को खौलता पानी और दुखदाई अज़ाब होगा। (४) वह (अल्लाह ही) है जिसने चमकते सूरज को बनाया और चाँद को रौशन किया और उनकी मंज़िलें ठहराईं ताकि तुम लोग वर्षों की गिनती और हिसाब मालूम कर लिया करो। यह सब अल्लाह ने मसलहत (उद्देश्य) से बनाया है। जो लोग समझ रखते हैं उनके लिए वह अपनी आयतें खोल खोल कर बयान करता है। (५) अलबत्ता जो लोग डर मानते हैं उनके लिए रात और दिन की अदल-बदल में और जो कुछ अल्लाह ने आसमान और ज़मीन में पैदा किया है (उनमें) निशानियाँ हैं। (६) जिन लोगों ने हमसे मिलने की उम्मीद नहीं की और दुनिया की (तुच्छ) ज़िन्दगी से ख़ुश हैं और उसी पर (संतुष्ट होकर) चैन करने लगे और जो लोग हमारी निशानियों से अचेत हैं, (७) यही लोग हैं जिनकी करतूत के बदले उनका ठिकाना (दोज़ख़ की) आग होगी। (८) जो लोग (अल्लाह और उसकी आयतों पर) ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये, उनके ईमान के कारन उनका परवरदिगार उनको राह दिखा देगा कि (जहाँ) आराम के बाग़ों में रहेंगे और उनके नीचे नहरें बहती होंगी। (९) (और वहाँ की निअ़मतों को देखकर वे) उनमें पुकार उठेंगे कि सुब्हानल्लाह ! तेरी ज़ात पाक है और उनमें उनकी (आपस में) दुआए ख़ैर की सलाम होंगी। और उनकी (ज़बान पर) आख़िरी प्रार्थना होगी "अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन" (यानी हर तरह की तारीफ़ अल्लाह के लिए ही है जो दुनिया जहान का परवरदिगार है। (१०) ★

★ रु० १/६ आ० १०

और जिस तरह लोग फ़ायदों के लिए जल्दी किया करते हैं अगर अल्लाह उनको (उतनी ही) जल्दी से नुक़सान पहुँचा दिया करता तो उनकी उम्र (की मियाद कब की) पूरी हो चुकती सो हम उन लोगों को, जो हमारे पास आने की आशा नहीं लगाते, छोड़ रखते हैं कि अपनी नटखटी में पड़े भटका करें। (११) और जब मनुष्य को कष्ट पहुँचता है तो पड़ा या बैठा या खड़ा (हर हालत में) हमको पुकारता है। फिर जब हम उसकी तकलीफ़ को उससे दूर कर देते हैं तो (विमुख हो कर) ऐसे चल देता है कि गोया किसी तकलीफ़ के पहुँचने पर उसने कभी हमको पुकारा ही न था। जो लोग हद्द से बाहर निकल जाते हैं उनको उनके काम इसी तरह अच्छे कर दिखाये गये हैं। (१२)

[पेज ३५१ से] अब सूरः यूनुस व पाँच सूरतें जो मक्का में अन्तिम काल में नाज़िल हुईं इनमें बाहरी दुश्मनों पर क़ाबू पाकर अब इन्सान के अल्लाह से सम्बन्ध, अल्लाह की रहमत व उसका अज़ाब और नसीहत का पाठ है। यह दिखाई पड़ने वाला जादूई (भौतिक) संसार ही सब कुछ नहीं है बल्कि इसको बनानेवाले और इन्सान को आख़िरत में इस दुनिया से भी बड़ी निअ़मत देने वाले अल्लाह की अपार दया और उसके हुक्मों को न माननेवालों पर अज़ाब की तरफ़, हज़रत नूह अ०, हज़रत मूसा अ० के दृष्टान्त देकर, ख़ूब ख़ूब दलीलों के ज़रिये इन्सान की आखें खोली गई हैं। यह दुनिया तो एक कसौटी और इम्तहान की जगह है। यहाँ अपने आमालों (कर्मों) के ज़रिये आख़िरत के लिए अमन (मोक्ष) या अज़ाब को कमाया जा सकता है। आख़िर में हज़रत यूनुस व उनकी क़ौम का बयान देकर सूरः की समाप्ति की है कि उन्होंने गुनाह करने पर तौबः की और इस लिए ही उनके गुनाह माफ़ कर दिये गये और उनको फिर एक मुद्दत तक ख़ुशहाल रखा गया। सूरः यूनुस उस अल्लाह की रहमत और माफ़ी को ख़ास तौर पर बयान करती है। तौहीद (एकोब्रह्म) और हज़रत मुहम्मद स० की नबूवत पर शंका करनेवालों की शंकाओं को पूरी तौर पर दूर करती है।

व लक़द् अह्लक्नल् - क़ुरून मिन् क़ब्लिकुम् लम्मा ज़लमू ला व जा'अत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बैयिनाति व मा कानू लियुअ्मिनू त् कज़ालिक नज्ज़िल् - क़ौमल् मुज्रिमीन (१३) सुम्म जअ़ल्नाकुम् ख़ला'अिफ़ फ़िल्अर्ज़ि मिम्बऽदि हिम् लिनन्ज़ुर कैफ़ तऽमलून (१४) व अिज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बैयिनातिन् ला क़ालल्लज़ीन ला यर्जून लिक़ा'अनअ्ति बिक़ुर्आनिन् ग़ैरि हाज़ा' औ बद्दिल्हु त् क़ुल् मा यकूनु ली' अन् अुबद्दिलहू मिन् तिल्क़ा'अि नफ़्सी ज् अिन् अत्तबिअ़ु अिल्ला मा यूहा' अिलैय ज् अिन्नी' अख़ाफ़ु अिन् अ़सैतु रब्बी अ़ज़ाब यौमिन् अ़ज़ीमिन् (१५) क़ुल् लौ शा'अल्लाहु मा तलौतुहू अ़लैकुम् व ला' अद्राकुम् बिही ज् सला फ़क़द् लबिस्तु फ़ीकुम् अ़ुमुरम्मिन् क़ब्लिही त् अफ़ला तऽक़िलून (१६) फ़मन् अज्लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़ब बिआयातिही त् अिन्नहू ला युफ़्लिहुल् - मुज्रिमून (१७)

يعتذرون ١١ — ١٤٧ — يونس ١٠

من قبلكم لما ظلموا وجاءتهم رسلهم بالبينت وما كانوا ليؤمنوا كذلك نجزي القوم المجرمين ⑬ ثم جعلنكم خلئف في الارض من بعدهم لننظر كيف تعملون ⑭ واذا تتلى عليهم ايتنا بينت قال الذين لا يرجون لقاءنا ائت بقران غير هذا او بدله قل ما يكون لي ان ابدله من تلقاي نفسي ان اتبع الا ما يوحى الي اني اخاف ان عصيت ربي عذاب يوم عظيم ⑮ قل لو شاء الله ما تلوته عليكم ولا ادرىكم به فقد لبثت فيكم عمرا من قبله افلا تعقلون ⑯ فمن اظلم ممن افترى على الله كذبا او كذب بايته انه لا يفلح المجرمون ⑰ ويعبدون من دون الله ما لا يضرهم ولا ينفعهم ويقولون هؤلاء شفعاؤنا عند الله قل اتنبئون الله بما لا يعلم في السموت ولا في الارض سبحنه وتعلى عما يشركون ⑱ وما كان الناس الا امة وحدة فاختلفوا ولولا كلمة سبقت من ربك لقضي بينهم فيما فيه يختلفون ⑲ ويقولون لولا انزل عليه اية من ربه فقل انما الغيب لله فانتظروا اني معكم من المنتظرين ⑳ واذا اذقنا الناس رحمة من بعد ضراء مستهم اذا لهم مكر في اياتنا قل الله اسرع مكرا ان رسلنا يكتبون ما تمكرون ㉑ هو

ع

منزل ٣

व यऽबुदून मिन् दूनिल्लाहि मा ला यज़ुर्रुहुम व ला यन्फ़अ़ुहुम् व यक़ूलून हा'अुला'अि शुफ़अ़ा'अुना अ़िन्दल्लाहि त् क़ुल् अतुनब्बिअूनल्लाह बिमा ला यऽलमु फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि त् सुब्हानहू व तअ़ाला अ़म्मा युश्रिकून (१८) व मा कानन्नासु अिल्ला' अुम्मतौं - वाहिदतन् फ़ख़्तलफ़ू त् व लौ ला कलिमतुन् सबक़त् मिर्रब्बिक लक़ुज़िय बैनहुम् फ़ी मा फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (१९) व यक़ूलून लौ ला' अुन्ज़िल अ़लैहि आयतुम् - मिर्रब्बिही ज् फ़क़ुल् अिन्नमल् - ग़ैबु लिल्लाहि फ़न्तज़िरू ज् अिन्नी मअ़कुम् मिनल्मुन्तज़िरीन (२०) ★ व अिज़ा' अज़क़्नन्नास रह्मतम् - मिम्बऽदि ज़र्रा'अ मस्सत्हुम् अिज़ा लहुम् मक्रुन् फ़ी' आयातिना त् क़ुलिल्लाहु अस्रअ़ु मक्रन् त् अिन्न रुसुलना यक्तुबून मा तम्कुरून (२१)

★ रु २/७ आ १०

और (लोगो !) तुमसे पहिले कितनी उम्मतें हुईं कि जब वह ज़ालिम हो गईं तो
हमने उनको नेस्तनाबूद कर दिया। और उनके पैग़म्बर उनके पास खुली निशानियाँ लेकर
आये और (फिर भी) उनको ईमान लाना नसीब न हुआ। गुनहगार क़ौमों को हम इसी
तरह दण्ड दिया करते हैं। (१३) फिर उनके बाद हमने ज़मीन में तुम लोगों को नायब
बनाया ताकि देखें तुम कैसे अमल करते हो। (१४) और जब हमारे खुले-खुले हुक्म इन
लोगों को पढ़कर सुनाये जाते हैं तो जिन लोगों को हमारे पास आने का खटका नहीं वह कहते
हैं कि इसके सिवाय और कोई क़ुर्आन लाओ या इसी को बदल लाओ। (ऐ पैग़म्बर !) कहो
कि मेरी तो यह मजाल नहीं कि अपनी तरफ़ से उसको बदलूँ। मेरी तरफ़ जो (खुदाई)
पैग़ाम आता है मैं तो उसी पर चलता हूँ; अगर मैं अपने परवरदिगार की अवज्ञा करूँ
तो मुझे (क़ियामत के) बड़े दिन के अज़ाब का डर है। (१५) (ऐ पैग़म्बर ! यह भी)
कह दो कि अगर अल्लाह चाहता तो न मैं तुमको पढ़कर सुनाता और न अल्लाह तुमको
इससे आगाह करता। क्योंकि इससे पहले मैं एक मुद्दत तुममें रह चुका हूँ क्या तुम नहीं
समझते †। (१६) फिर उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठ बाँधे या उसकी
आयतों को झुठलाये। बेशक गुनहगारों का भला नहीं होता। (१७) और अल्लाह के
सिवाय ऐसी चीज़ों को पूजते हैं जो उनको न नुक़सान पहुँचा सकती हैं न फ़ायदा (पहुँचा
सकती हैं) और कहते हैं कि अल्लाह के यहाँ ये (माबूद यानी पूज्य) हमारे सिफ़ारिशी
हैं। तो कहो क्यों तुम अल्लाह को ऐसी चीज़ की ख़बर देते हो जिसे वह न आसमान में
पाता है और न ज़मीन में और उसकी (शान) उस शिर्क से पाक और बहुत उँची है जो
तुम कर रहे हो। (१८) और लोग (पहले) एक ही उम्मत (एक ही तरीक़े) पर थे फिर
जुदा-जुदा हो गये और (ऐ पैग़म्बर !) अगर तुम्हारे परवरदिगार की (तरफ़ से) एक
अहद पहले से न हुई होती तो जिन चीज़ों में यह फूट (कर विभेद कर) रहे हैं उनके
दरमियान उनका फ़ैसला कर दिया गया होता। (१९) (और मक्केवाले) कहते हैं इस नबी
को उसके परवरदिगार की तरफ़ से कोई चमत्कार क्यों नहीं दिया गया ? सो (ऐ रसूल !)
तुम कहो कि ग़ैब की (छिपी) ख़बर तो बस अल्लाह को ही है, तो तुम इन्तज़ार करो (अल्लाह
के हुक्म का), मैं भी तुम्हारे साथ इन्तज़ार करनेवालों में हूँ। (२०) ★

★ रु. २/७ आ १०

और जब लोगों को तकलीफ़ पहुँचने के बाद हम (अपनी) मेहरबानी का स्वाद
चखा देते हैं तो बस हमारी आयतों से (जान बचाने की) चालें चलने लगते हैं। तो
(ऐ नबी !) कहो अल्लाह (तुम्हारे मुक़ाबले) ज़्यादा चाल चलने वाला है। (वह
फ़रमाता है) हमारे (भेजे हुये फ़रिश्ते) तुम्हारी (सब) चालें लिखते जाते हैं। (२१)

† यानी मैं ४० वर्ष से तुम लोगों के साथ जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। न कभी ऐसे कलाम कहे,
न ऐसा कहने की लियाक़त मुझमें थी यह तुम भली तरह जानते हो। तो जान लो कि अब जो कुछ कह रहा हूँ
वह अपनी तरफ़ से नहीं कह रहा हूँ न कहने के लायक़ हूँ, बल्कि अल्लाह ही के हुक्म से कह रहा हूँ।

हुवल्लजी युसैयिरुकुम् फ़िल्बर्रि वल्बह्रि त् हत्ता अिजा कुन्तुम् फ़िल्फ़ुल्कि ज् व जरैन बिहिम् बिरीहिन् तैयिबतिंव्व फ़रिहू बिहा जा अत्हा रीहुन् आसिफ़ुँव जा अहुमुल् - मौजु मिन् कुल्लि मकानिंव्व जन्नू अन्नहुम् अुहीत बिहिम् ला दअवुल्लाह मुख्लिसीन लहुद्दीन ५ ज् लअिन् अन्जैतना मिन् हाजिहर्ी लनकूनन्न मिनश्शाकिरीन (२२) फ़लम्मा अन्जाहुम् अिजाहुम् यब्गून फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्हक़्क़ि त् या अैयुहन्नासु अिन्नमा बग़्युकुम् अला अन्फ़ुसिकुम् ला मताअल् - हयातिद्दुन्या ज् सुम्म अिलैना मर्जिअुकुम् फ़नुनब्बिअुकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (२३) अिन्नमा मसलुल् - हयातिद्दुन्या कमा अिन् अन्ज़ल्नाहु मिनस्समा अि फ़ख़्तलत बिहर्ी नबातुल्अर्ज़ि मिम्मा यअ्कुलुन्नासु वल्अन्आमु त् हत्ता अिजा अख़ज़तिल् - अर्ज़ु ज़ुख़्रुफ़हा वज़्ज़ैयनत् व जन्न अह्लुहा अन्नहुम् क़ादिरून अलैहा ला अताहा अम्रुना लैलन् औ नहारन् फ़जअल्नाहा हसीदन् कअल्लम् तग़्न बिल्अम्सि त् कजालिक नुफ़स्सिलुल् - आयाति लिक़ौमीं - यतफ़क्करून (२४) वल्लाहु यद्अू अिला दारिस्सलामि त् व यह्दी मैंयशा अु अिला सिरातिम्मुस्तक़ीमिन् (२५) लिल्लजीन अह्सनुलहुस्ना व ज़ियादतुन् त् व ला यर्हक़ु वुजूहहुम् क़तरूँव ला जिल्लतुन् त् अुला अिक अस्हाबुल् - जन्नति ज् हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (२६) वल्लजीन कसबुस्सैयिआति जज़ा अु सैयिअतिम् - बिमिस्लिहा ला व तर्हक़ुहुम् जिल्लतुन् त् मा लहुम् मिनल्लाहि मिन् आसिमिन् ज् कअन्नमा अुग़्शियत् वुजूहहुम् क़ितअम्-मिनल्लैलि मुज़्लिमन् त् अुला अिक अस्हाबुन्नारि ज् हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (२७) व यौम नह्शुरुहुम् जमीअन् सुम्म नक़ूलु लिल्लजीन अश्रकू मकानकुम् अन्तुम् व शुरका अुकुम् ज् फ़ज़ैयल्ना बैनहुम् व क़ाल शुरका अु हुम् मा कुन्तुम् अीयाना तअ्बुदून (२८)

يعتذرون ١١   ١٦٨   يونس ١٠

الذي يسيركم في البر والبحر حتى اذا كنتم في الفلك وجرين بهم
بريح طيبة وفرحوا بها جاءتها ريح عاصف وجاءهم الموج من
كل مكان وظنوا انهم احيط بهم دعوا الله مخلصين له الدين ه
لئن انجيتنا من هذه لنكونن من الشكرين ۝ فلما انجىهم اذا هم
يبغون في الارض بغير الحق يايها الناس انما بغيكم على انفسكم
متاع الحيوة الدنيا ثم الينا مرجعكم فننبئكم بما كنتم تعملون ۝
انما مثل الحيوة الدنيا كماء انزلنه من السماء فاختلط به نبات
الارض مما ياكل الناس والانعام حتى اذا اخذت الارض زخرفها
وازينت وظن اهلها انهم قدرون عليها اتىها امرنا ليلا او
نهارا فجعلنها حصيدا كان لم تغن بالامس كذلك نفصل الايت
لقوم يتفكرون ۝ والله يدعوا الى دار السلم ويهدي من يشاء
الى صراط مستقيم ۝ للذين احسنوا الحسنى وزيادة ولا يرهق
وجوههم قتر ولا ذلة اولئك اصحب الجنة هم فيها خلدون ۝
والذين كسبوا السيات جزاء سيئة بمثلها وترهقهم ذلة
ما لهم من الله من عاصم كانما اغشيت وجوههم قطعا من
اليل مظلما اولئك اصحب النار هم فيها خلدون ۝ ويوم نحشرهم
جميعا ثم نقول للذين اشركوا مكانكم انتم وشركاؤكم فزيلنا

منزل ٣

वही है जो तुम लोगों को ज़मीन और नदी में चलाता है यहाँ तक कि जब तुम किश्तियों में होते हो और वह लोगों को अनुकूल हवा की सहायता से लेकर चलती हैं और लोग उनसे खुश होते हैं; तो उन पर (अचानक) तूफ़ानी हवा आवे और लहरें हर तरफ़ से उन पर आने लगें और वह समझे कि अब वह घिर गये। तो ख़ालिस दिल से अल्लाह ही की बन्दगी कर उससे दुआएँ माँगने लगते हैं (और कहते हैं) कि अगर तू हमको इस (मुसीबत) से बचावे तो हम ज़रूर शुक्र करने वालों में से हो जावें। (२२) फिर जब बचा दिया तो वह (अपनी पिछली मुसीबत और अल्लाह की मेहरबानी भूल कर) उसी वक़्त से ज़मीन पर नाहक़ शरारत करने लगते हैं। लोगो! सुनो, तुम्हारी सरकशी तुम्हारी ही जानों पर पड़ेगी। यह दुनिया की ज़िन्दगी के फ़ायदे उठा लो, आख़िरकार तुम्हें हमारी ही तरफ़ लौटकर आना है, तो जो कुछ भी तुम (दुनिया में) करते रहे, हम तुमको (उसकी असलियत) बता देंगे। (२३) (इस) दुनिया की ज़िन्दगी की तो मिसाल (उस) पानी-जैसी है कि हमने उसको आसमान से बरसाया, फिर उससे ज़मीन की ख़ूब घनी पैदावार निकाली जिसको आदमी और चौपाये खाते हैं यहाँ तक कि जब ज़मीन पानी के साथ मिल कर लहलहा उठी और (यहाँ तक कि) जब ज़मीन ने अपना सिंगार कर लिया (और ख़ुशनुमा हुई) और खेतवालों ने समझा कि वह उन (पैदावार) पर क़ाबू पा गये (तो यकायक) रात के वक़्त या दिन के वक़्त हमारा हुक्म (यानी अज़ाब) उस पर आ पहुँचा फिर हमने उसका ऐसा कटा हुआ ढेर कर दिया कि गोया कल उस बस्ती का यहाँ निशान ही न था। जो लोग सोचते-समझते हैं उनके लिए हम आयतें खोल-खोल कर इसी तरह बयान करते हैं। (२४) और अल्लाह सलामती के घर (जन्नत) की तरफ़ बुलाता है और जिसको चाहता है सीधी राह दिखाता है। (२५) जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए भलाई है और कुछ बढ़कर भी और (गुनहगारों की तरह) उनके मुँहों पर स्याही न छाई होगी और न ज़िल्लत। यही जन्नत वाले हैं कि वह उसमें हमेशा रहा करेंगे। (२६) और जिन लोगों ने बुरे काम किये तो बुराई का बदला वैसे ही (बुराई) और उन पर ज़िल्लत छा रही होगी। अल्लाह से कोई उनको बचानेवाला नहीं, गोया अँधेरी रात के टुकड़े से उनके मुँह को ढाँक दिया है, यही आगवाले (दोज़ख़ी) हैं कि वह उसमें हमेशा रहा करेंगे। (२७) और जिस दिन हम उन सबको जमा करेंगे फिर (अल्लाह के साथ दूसरों को भी पूजनेवाले इन) मुशरिकीन को हुक्म देंगे कि तुम और जिनको तुमने शरीक बनाया था वह (ज़रा) अपनी जगह ठहरें। फिर हम उनके आपस में फूट डाल देंगे और उनके शरीक कहेंगे कि तुम हमारी पूजा तो कुछ करते ही नहीं थे (२८)

रु. ३/८ आ १० नि. १/२

फ़कफ़ा बिल्लाहि शहीदम् - बैनना व बैनकुम् अिन् कुन्ना अ़न् अ़िबादतिकुम् लग़ाफ़िलीन (२९) हुनालिक तब्लू कुल्लु नफ़्सिम्मा असलफ़त् व रुद्दू अिलल्लाहि मौलाहुमुल्-हक़्क़ि व ज़ल्ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून (३०) ★ क़ुल् मैंयर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समाअि वल्अर्ज़ि अम्मैं-यम्लिकुस्-सम्अ़ वल्अब्सार व मैंयुख़्रिजुल्हैय मिनल्मैयिति व युख़्रिजुल्-मैयित मिनल्हैयि व मैंयुदब्बिरुल् - अम्र त़् फ़सयक़ूलूनल्लाहु ज् फ़क़ुल् अफ़ला तत्तक़ून (३१) फ़ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुमुल्-हक़्क़ु ज् फ़माज़ाबऽदल् - हक़्क़ि अिल्लज़्ज़लालु ज् सला फ़अन्ना तुस्रफ़ून (३२) कज़ालिक हक़्क़त् कलिमतु रब्बिक अ़लल्लज़ीन फ़सक़ू अन्नहुम् ला युअ्मिनून (३३) क़ुल् हल् मिन् शुरकाअिकुम् मैंयब्दअुल्-ख़ल्क़ सुम्म युअ़ीदुहू त़् क़ुलिल्लाहु यब्दअुल्ख़ल्क़ सुम्म युअ़ीदुहू फ़अन्ना तुअ्फ़कून (३४) क़ुल् हल् मिन् शुरकाअिकुम् मैंयह्दी अिलल्हक़्क़ि त़् क़ुलिल्लाहु यह्दी लिल्हक़्क़ि त़् अफ़मैंयह्दी अिलल्हक़्क़ि अहक़्क़ु अैंयुत्तबअ़ अम्मल्ला यहिद्दी अिल्ला अैंयुह्दा ज् फ़मा लकुम् क़िफ़् कैफ़ तह्कुमून (३५) व मा यत्तबिअ़ु अक्सरुहुम् अिल्ला ज़न्नन् त़् अिन्नज़्ज़न्न ला युग़्नी मिनल्हक़्क़ि शैअन् त़् अिन्नल्लाह अ़लीमुम् - बिमा यफ़्अ़लून (३६) व मा कान हाज़ल्क़ुर्आनु अैंयुफ़्तरा मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् तस्दीक़ल्लज़ी बैन यदैहि व तफ़्सीलल् - किताबि ला रैब फ़ीहि मिर्रब्बिल् - आ़लमीन क़िफ़् (३७) अम् यक़ूलूनफ़्तराहु त़् क़ुल् फ़अ्तू बिसूरतिम्-मिस्लिहीं वद्अ़ू मनिस्ततअ़्तुम् मिन् दूनिल्लाहि अिन् कुन्तुम् सादिक़ीन (३८)

يعتذرون ١١ — ١٦٩ — يونس ١٠

بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ۝ فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ۝ هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ وَرُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚۖ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝ كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ۝ وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ؕ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ ۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝ وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا

منزل ٣

सो हमारे और तुम्हारे बीच बस अल्लाह ही गवाह है, हमको तो तुम्हारी पूजा की बिल्कुल ख़बर ही नहीं †। (२९) वहीं हर शख़्स (दुनिया में) अपने (किये हुये) कामों को जो पहले भेज चुका है खुद जाँच लेगा और सब लोग अपने सच्चे मालिक अल्लाह की ओर लौटाये जायँगे और जो झूठ लफ़्फ़ट (वे दुनिया में) बाँधते रहे हैं वह सब उनसे गये-गुज़रे हो जायँगे। (३०)

(ऐ पैग़म्बर! लोगों से इतना तो) पूछो कि तुमको आसमान और ज़मीन से कौन रोज़ी देता है या कान और आँखों (जैसी इन्द्रियों) का कौन मालिक है, और कौन मुर्दा से ज़िन्दा निकालता है और कौन ज़िन्दा से मुर्दा निकालता है ⁂ और कौन (इस सारे आलम का) इन्तज़ाम चला रहा है, तो तुरन्त ही बोल उठेंगे कि अल्लाह!; तो कहो कि (अल्लाह की यह सब क़ुदरत जानते हो) फिर भी तुम उससे नहीं डरते। (३१) तो वही अल्लाह तुम्हारा सच्चा परवरदिगार है, तो सचाई के खुल जाने के बाद (दूसरी राह चलना) गुमराही नहीं तो और क्या है? सो तुम लोग किधर को (बहके) फिरे चले जा रहे हो? (३२) (ऐ पैग़म्बर!) इसी तरह पर तुम्हारे परवरदिगार की बात इन बेहुक्म लोगों पर सच्ची साबित हुई कि यह (किसी तरह) ईमान नहीं लावेंगे। (३३) (ऐ नबी! इनसे) पूछो कि तुम्हारे (ठहराये हुये) शरीकों में कोई ऐसा (समर्थ) है कि (जहान को) अव्वल पैदा करे फिर उसको दुबारा पैदा करे। कहो अल्लाह ही (सृष्टि को) प्रथम बार पैदा करता है और उसको दुबारा पैदा करेगा, तो अब तुम किधर को उलटे फिरे चले जा रहे हो। (३४) (ऐ पैग़म्बर! इनसे) पूछो कि तुम्हारे (ठहराये हुये) शरीकों में से कोई ऐसा है जो सच्ची राह दिखा सके? (इनसे) कहो अल्लाह ही सच्ची राह दिखलाता है। तो फिर जो सच्ची राह दिखाने आया उसका हक़ है कि उसी की पैरवी की जाय या (उसकी) जो खुद ही राह नहीं पा सकता जब तक दूसरा उसको राह न दिखलाये। तो तुमको क्या हो गया है, कैसा (उलटा) इन्साफ़ करते हो? (३५) और वह लोग अक्सर अटकल पर चलते हैं सो अन्दाज़ी तुक्के हक़ या सचाई के सामने काम नहीं देते। जैसा-जैसा यह कर रहे हैं, अल्लाह अच्छी तरह जानता है। (३६) और यह क़ुर्आन इस क़िस्म की (किताब) नहीं कि अल्लाह के सिवाय और कोई इसे (अपनी तरफ़ से) बना लावे। बल्कि जो पहले वाली (किताबों के) कलाम की तसदीक़ करता है और उन्हीं की तफ़सील है §। इसमें संदेह नहीं कि यह संसार के मालिक अल्लाह ही की ओर से उतरा है। (३७) क्या कहते हैं कि इसे खुद इस (मुहम्मद स०) ने बना लिया है? (तू उनसे कह दे कि) अगर तुम सच्चे हो (कि यह आयतें एक हमाशुमा इन्सान के गढ़ लेने के बस की बात है) तो एक ऐसी ही सूरत तुम भी बना लाओ और अल्लाह के सिवाय (अपनी मदद के लिए) बुलालो जिसे बुला सकते हो। (३८)

† अल्लाह के अलावा जिन चीज़ों की लोग परस्तिश करते हैं वे अपनी अलग कोई हस्ती तो रखती नहीं। लोग अपने खयालों को बाँध कर पूजते हैं और किन्हीं नेक व बड़ी हस्तियों का नाम अपने खयाल से उन माबूदों (पूज्यों) के साथ जोड़ देते हैं जिन हस्तियों को यह पता भी नहीं कि उनको कोई पूज रहा है। अब सब अल्लाह के सामने नब पेश हैं, तो कलई खुल रही है और वे शरीक की गई हस्तियाँ व उनकी जगह क़ायम किये गये माबूद (पूज्य) सब गवाही दे रहे हैं कि कहाँ! हमें तो खबर नहीं कि तुम हमें पूजते थे, तुमने कोई निजी खयाल गढ़े होंगे। (अ० यू०)

⁂ मसलन अण्डे से पक्षी और पक्षी से अण्डा।

§ यानी क़ुर्आन में किसी नये धर्म की ओर नहीं बुलाया गया है। यह तो उन्हीं सनातन की बुनियादी हिदायतों को खुलासा बयान करता है जिनको अल्लाह के नबी हमेशा दुनिया को देते आये हैं और यह क़ुर्आन तो सारी आसमानी किताबों का समर्थन करता है।

बल् कज्जबू बिमा लम् युह़ीतू बिअ़िल्मिहू व लम्मा यअ्तिहिम् तअ्वीलुहू त़ कजालिक कज्जबल्लजीन मिन् क़ब्लिहिम् फ़न्ज़ुर् कैफ़ कान आ़क़िबतुज्जालिमीन (३९) व मिन्हुम् मैंयुअ्मिनु बिही व मिन्हुम् मल्ला युअ्मिनु बिही त़ व रब्बुक अअ़्लमु बिल्मुफ़्सिदीन (४०) ★ व अिन् कज्जबूक फ़क़ुल् ली अ़मली व लकुम् अ़मलुकुम् ज् अन्तुम् बरी'ऊन मिम्मा' अअ़्मलु व अना बरी'उम् - मिम्मा तअ़्मलून (४१) व मिन्हुम् मैंयस्तमिअ़ून अिलैक त़ अफ़अन्त तुस्मिअ़ुस् - सुम्म व लौ कानू ला यअ़्क़िलून (४२) व मिन्हुम् मैंयन्ज़ुरु अिलैक त़ अफ़अन्त तह्दिल्अ़ुम्य व लौ कानू ला युब्सिरून (४३) अिन्नल्लाह ला यज़्लिमुन्नास शैऔंव लाकिन्नन्नास अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (४४) व यौम यह़्शुरुहुम् कअल्लम् यल्बसू' अिल्ला साअ़तम् - मिनन्नहारि यतआ़रफ़ून बैनहुम् त़ क़द् ख़सिरल्लजीन कज्जबू बिलिक़ा'अिल्लाहि व मा कानू मुह्तदीन (४५) व अिम्मा नुरियन्नक बअ़्ज़ल्लजी नअ़िदुहुम् औ नतवफ़्फ़यन्नक फ़अिलैना मर्जिअ़ुहुम् सुम्मल्लाहु शहीदुन् अ़ला मा यफ़्अ़लून (४६) व लिकुल्लि अुम्मतिर्रसूलुन् ज् फ़अिजा जा'अ रसूलुहुम् क़ुज़िय बैनहुम् बिल्क़िस्ति व हुम् ला युज़्लमून (४७) व यक़ूलून मता हाजल्वअ़्दु अिन् कुन्तुम् सादिक़ीन (४८) क़ुल् ला' अम्लिकु लिनफ़्सी ज़र्रौंव ला नफ़्अ़न् अिल्ला मा शा'अल्लाहु त़ लिकुल्लि अुम्मतिन् अजलुन् त़ अिजा जा'अ अजलुहुम् फ़ला यस्तअ्ख़िरून साअ़तौंव ला यस्तक़्दिमून (४९) क़ुल् अरऐतुम् अिन् अताकुम् अ़जाबुहू बयातन् औ नहारम्मा जायस्तअ़्जिलु मिन्हुल् - मुज्रिमून (५०)

रु. ४ / ६ आ १०

يعتذرون ١١ ١٧٠ يونس ١٠

من استطعتم من دون الله ان كنتم صدقين ۝ بل كذبوا
بما لم يحيطوا بعلمه ولما ياتهم تاويله كذلك كذب الذين
من قبلهم فانظر كيف كان عاقبة الظلمين ۝ ومنهم من
يؤمن به ومنهم من لا يؤمن به وربك اعلم بالمفسدين ۝
وان كذبوك فقل لي عملي ولكم عملكم انتم بريئون مما اعمل
وانا بريء مما تعملون ۝ ومنهم من يستمعون اليك افانت
تسمع الصم ولو كانوا لا يعقلون ۝ ومنهم من ينظر اليك افانت
تهدي العمي ولو كانوا لا يبصرون ۝ ان الله لا يظلم الناس
شيئا ولكن الناس انفسهم يظلمون ۝ ويوم يحشرهم كان لم
يلبثوا الا ساعة من النهار يتعارفون بينهم قد خسر الذين
كذبوا بلقاء الله وما كانوا مهتدين ۝ واما نرينك بعض الذي
نعدهم او نتوفينك فالينا مرجعهم ثم الله شهيد على ما
يفعلون ۝ ولكل امة رسول فاذا جاء رسولهم قضي بينهم
بالقسط وهم لا يظلمون ۝ ويقولون متى هذا الوعد ان
كنتم صدقين ۝ قل لا املك لنفسي ضرا ولا نفعا الا ما شاء
الله لكل امة اجل اذا جاء اجلهم فلا يستاخرون ساعة و
لا يستقدمون ۝ قل ارءيتم ان اتكم عذابه بياتا او نهارا

منزل ٣

(असल बात तो यह कि) उस चीज़ को झुठलाने लगे जिसके समझने की इन्हें लियाक़त न हुई। और अभी तक इनकी सच्चाई इन पर खुलने का मौक़ा ही पेश नहीं आया। इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया था जो इनसे पहले थे‡। तो (ऐ पैग़म्बर !) देखो (उन) ज़ालिमों का कैसा अन्त हुआ। (३९) और इनमें से कुछ लोग ऐसे हैं कि जो क़ुर्आन पर ईमान ले आवेंगे और कुछ लोग नहीं लावेंगे और तुम्हारा परवरदिगार फ़सादियों को खूब जानता है। (४०) ★

रु. ४/६ आ १०

और (ऐ पैग़म्बर !) अगर (ये काफ़िर) तुमको झुठलावें तो कह दो कि मेरा करना मुझको और तुम्हारा करना तुमको। तुम मेरे काम के ज़िम्मेदार नहीं और न मैं तुम्हारे काम का ज़िम्मेदार हूँ † (४१) और (ऐ पैग़म्बर !) इनमें से कुछ लोग हैं जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं। तो क्या तुम बहरों को सुना सकोगे जिनमें (सुनने-) समझने की ताक़त नहीं। (४२) और इनमें से कुछ लोग हैं जो तुम्हारी तरफ़ ताकते हैं, तो क्या तुम अन्धों को रास्ता दिखा सकोगे जिनमें (देखने-) समझने की ताक़त न हो। (४३) अल्लाह तो ज़रा भी लोगों पर ज़ुल्म नहीं करता लेकिन लोग (ख़ुद) अपने ऊपर ज़ुल्म करते हैं ☸। (४४) और जिस दिन (अल्लाह) उन लोगों को जमा करेगा तो (ऐसा ख़याल वे करेंगे) गोया (दुनिया में) दिन की एक घड़ी भर (से ज़्यादः ज़िन्दा न) रहे होंगे—आपस में (एक दूसरे को) पहचानेंगे (लेकिन बेकार ! क्योंकि कोई किसी को मदद न दे सकेगा।) जिन लोगों ने (आख़िरत में) अल्लाह से सामना होने को झुठलाया वह बेशक घाटे में आ गये और उनको रास्ता ही न सूझा। (४५) और (सज़ा के) जैसे वादे हम इन पर करते हैं चाहे इनमें से बाज़ को तुम्हें दिखावें या (पहले ही) तुमको (वफ़ात दे कर) उठा लेवें, इनको तो लौटकर हमारी तरफ़ आना ही है; फिर जो कुछ यह कर रहे हैं अल्लाह (सब) देख रहा है। (४६) और हर उम्मत (गिरोह) का एक पैग़म्बर है तो जब वह उनका पैग़म्बर उनके पास आ जाता है तो (उनका इन्साफ़) के साथ फ़ैसला होजाता है और उन लोगों पर (धागा भर) ज़ुल्म नहीं होता। (४७) और (तुमसे) पूछते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो (बताओ) यह वादा (अज़ाब का) कब आयेगा ? (४८) (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कहो कि मेरा अपना फ़ायदा व नुक़सान भी मेरे हाथ में नहीं, सिवाय इसके कि जो अल्लाह चाहता है (वही होता है)। (मेरे इल्म में तो यही है कि) हर उम्मत का एक वक़्त (मियाद) मुक़र्रर है। जब उनकी वादे (की मियाद) आ जाती है तो वह (घड़ी भर भी) पीछे नहीं हट सकते और न आगे बढ़ सकते हैं। § (४९) (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) पूछो कि भला देखो तो सही अगर अल्लाह का अज़ाब रातों-रात तुम पर आ उतरे या (अज़ाब) दिन-दहाड़े (आ जाय) तो अज़ाब में कौन चीज़ ऐसी है कि मुजरिम लोग उसको जल्दी मांग रहे हैं ? (५०)

‡ इनसे पहले क़ौम आद, समूद वग़ैरः जो हो गुज़रे हैं वह भी योंही झुठलाते रहे और उनके इन ज़ुल्मों का अन्त उनकी तबाही हुई। † याने मैं जो बात तुमको पहुँचा रहा हूँ वह झूठ है तो मैं गुनहगार हूँ तुम नहीं और मैं सच्ची बात तुमको पहुँचा रहा हूँ और तुम उसको न मानो तो तुम गुनहगार हो मैं नहीं। इस लिए मान लेने में तुम किसी तरह घाटे में नहीं हो। ☸ यानी अल्लाह तो अपनी हिदायत देकर व आँख कान दिल देकर इन्सान पर सब तरह रहम ही करता है। यह तो कुफ़्र का शौक़ीन इन्सान है जो आँख कान दिल रहते भी उनसे देखता सुनता समझता नहीं और गुमराह होकर अपने ऊपर ज़ुल्म ढाता है। § अल्लाह के यहाँ से हर शख़्स और हर जमात या क़ौम की दुनिया में रहने की मियाद मुक़र्रर (नियत) है। शख़्सी और [पेज ३६३ पर] उस मियाद से न एक पल ज़्यादः न एक पल कम वह दुनिया में टिक सकते हैं।

असुम्म अिज़ा मा वक़अ़ आमन्तुम् बिहई तू आ'ल्आन वक़द् कुन्तुम् बिहई तस्तऽजिलून (५१) सुम्म क़ील लिल्लज़ीन ज़लमू ज़ूक़ू अ़ज़ाबल्-ख़ुल्दि ज् हल् तुज्ज़ौन अिल्ला बिमा कुन्तुम् तक्सिबून (५२) व यस्तम्बिऊनक अहूक़्क़ुन् हुव तू ● क़ुल् ई व रब्बी' अिन्नहु लहूक़्क़ुन् ज् तू ● व मा' अन्तुम् बिमुऽजिज़ीन (५३) ★ व लौ अन्न लिकुल्लि नफ़्सिन् ज़लमत् मा फ़िल्अर्ज़ि लफ़्तदत् बिहई तू व असर्रुन्नदामत लम्मा रअवुल् - अ़ज़ाब ज् व क़ुज़िय बैनहुम् बिल्क़िस्ति व हुम् ला युज़्लमून (५४) अला' अिन्न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि तू अला' अिन्न वऽदल्लाहि हूक़्क़ुंव लाकिन्न अक्सरहुम् ला यऽलमून (५५) हुव युहूयी व युमीतु व अिलैहि तुर्जअ़ून (५६) या' अैयुहन्नासु क़द् जा'अत्कुम् मौअ़िज़तुम्-मिर्रब्बिकुम् व शिफ़ा'उल्लिमा फ़िस्सुदूरि ० ला व हुदौंव रहूमतुल् - लिलमुअ्मिनीन (५७) क़ुल् बिफ़ज़्लिल्लाहि व बिरहूमतिहई फ़बिज़ालिक फल्यफ़्रहू तू हुव ख़ैरुम्मिम्मा यज्मअ़ून (५८) क़ुल् अरऐतुम् मा' अन्ज़लल्लाहु लकुम् मिर्रिज़्क़िन् फ़जअ़ल्तुम् मिन्हु हूरामौंव हूलालन् तू क़ुल् आ'ल्लाहु अज़िन लकुम् अम् अ़लल्लाहि तफ़्तरून (५९) व मा ज़न्नुल्लज़ीन यफ़्तरून अ़लल्लाहिल् - कज़िब यौमल् - क़ियामति तू अिन्नल्लाह लज़ू फ़ज़्लिन् अ़लन्नासि व लाकिन्न अक्सरहुम् ला यश्कुरून (६०) ★ व मा तकूनु फ़ी शअ्निंव्व मा तत्लू मिन्हु मिन् क़ुर्आनिंव्व ला तऽमलून मिन् अ़मलिन् अिल्ला कुन्ना अ़लैकुम् शुहूदन् अिज् तुफ़ीज़ून फ़ीहि तू व मा यऽज़ुबु अ़र्रब्बिक मिम्मिस्क़ालि ज़र्रतिन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समा'अि व ला' अस्ग़र मिन् ज़ालिक व ला' अक्बर अिल्ला फ़ी किताबिम् - मुबीनिन् (६१)

व. नबी स. ● व. नबी स. ★ रु. ५/१० आ १३

★ रु. ६/११ आ ७

يونس ١٠ ١٤١ يعتذرون ١١

مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ۝ أَثُمَّ إِذَا مَا وَقَعَ آمَنتُم بِهِ ۚ آلْآنَ
وَقَدْ كُنتُم بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ۝ ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ
الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ۝ وَيَسْتَنبِئُونَكَ أَحَقٌّ هُوَ
قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقٌّ ۖ وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ۝ وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ
نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ ۗ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا
الْعَذَابَ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ
مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ أَلَا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا
يَعْلَمُونَ ۝ هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ
جَاءَتْكُم مَّوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى
وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝ قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوا
هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُم مَّا أَنزَلَ اللَّهُ لَكُم مِّن
رِّزْقٍ فَجَعَلْتُم مِّنْهُ حَرَامًا وَحَلَالًا قُلْ آللَّهُ أَذِنَ لَكُمْ ۖ أَمْ عَلَى
اللَّهِ تَفْتَرُونَ ۝ وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝
وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُو مِنْهُ مِن قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ
عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ ۚ وَمَا يَعْزُبُ عَن
رَّبِّكَ مِن مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِن

منزل

सो क्या जब (अज़ाब) आ पड़ेगा तभी उस पर ईमान लाओगे ? (और तब कहा जायगा कि आख़िर) अब ईमान लाये ? और तुम इसी की तो जल्दी मचा रहे थे। (५१) फिर न (क़ियामत के दिन) ज़ालिमों से कहा जायगा कि अब हमेशा के लिए अज़ाब (का मज़ा) चखो, (अब तुम) उन्हीं (आमालों का) बदला पा रहे हो जो तुमने (दुनिया में) कमाया है। (५२) और (ऐ पैग़म्बर !) तुमसे पूछते हैं कि जो कुछ तुम उनसे कहते हो क्या यह सच है ● ? कहो मेरे परवरदिगार की वह सौगन्ध बेशक सच है ● और तुम (बच निकलने की किसी भी जुगुत से अल्लाह को) थका (यानी आजिज़) न कर सकोगे। (५३) ★

और जिस-जिसने दुनिया में अवज्ञा की है वे (उस दर्दनाक अज़ाब से) अपने छुटकारे के लिए तमाम (ख़ज़ाने) ज़मीन के जो भी उनके क़ब्ज़े में हों दे निकले (लेकिन उससे नजात कहाँ ?) और वे उस अज़ाब को देख मन ही मन पछतायेंगे और लोगों में इन्साफ़ के साथ फ़ैसला किया जायगा और उन पर ज़ुल्म न होगा। (५४) (ऐ नासमझो !) याद रखो जो कुछ आसमान और ज़मीन में है अल्लाह ही का है। और याद रखो कि अल्लाह का वादा सच्चा है, मगर ज़्यादातर लोग नहीं जानते। (५५) वही जिलाता और मारता है और (क़ियामत के दिन) उसी की तरफ़ तुमको लौटकर जाना है। (५६) ऐ लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की ओर से नसीहत और दिलों की बीमारियों की दवा और ईमानवालों के लिए हिदायत † और रहमत आ चुकी है (५७) (ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से) कहो कि यह (क़ुर्आन) अल्लाह की मेहरबानी और इनायत से नाज़िल हुई है और लोगों को चाहिए कि इस (अल्लाह की मेहरबानी और इनायत यानी क़ुर्आन) को पाकर ख़ुश हों कि जिन (दुनियावी फ़ायदों) को यह जमा कर रहे हैं, उनसे यह कहीं बढ़कर है। (५८) (ऐ पैग़म्बर ! इनसे) कहो कि भला देखो तो सही, अल्लाह ने तुम पर रोज़ी उतारी अब तुम उसमें से कोई हराम और कोई हलाल ठहराने लगे। (तो इन लोगों से पूछो) क्या अल्लाह ने तुम्हें ऐसी आज्ञा दी है या उस (अल्लाह) पर झूठ मढ़ रहे हो। (५९) और जो लोग अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं वह क़ियामत के दिन की निस्बत क्या समझते हैं ? अल्लाह तो लोगों पर (अपरम्पार) दया रखता है पर बहुतेरे शुक्रगुज़ार नहीं होते। (६०) ★

और (ऐ पैग़म्बर !) तुम किसी दशा में होते हो और क़ुर्आन में से जो भी (जब) पढ़ते हो और (लोगो !) तुम कोई भी कर्म करते हो, जब तुम उसमें लगे रहते हो (तो ऐसा कभी नहीं होता कि) हम तुम्हारे बिलकुल नज़दीक न (देख रहे) हों और तुम्हारे परवरदिगार से ज़र्रा (कण) भी छिपा नहीं रहता, न ज़मीन में और न आसमान में और ज़र्रे से छोटी या बड़ी, (ऐसी कोई चीज़ नहीं जो इस) रौशन किताब (लौह-महफ़ूज़) में न हो। (६१)

● व. न बी स. ● व. न बी स. ★ रु. ५/१० आ १३ ★ रु. ६/११ आ ७

[पेज ३६१ से] जमाती लिहाज़ से उनको सम्हलने और अपने आमाल नेक करने व ग़लत काम से तौबः माँगने का समय मिलता है। एक शख़्स की ज़िन्दगी से क़ौम की ज़िन्दगी की मियाद लम्बी सैकड़ों बरस तक की होती है।

† यानी क़ुर्आन में अच्छी-अच्छी नसीहतें हैं और सच्ची-सच्ची ईमान की बातें। इनसे दिलों के रोग यानी सारे अज्ञान मिट जाते हैं।

अला अिन्न औलिया अल्लाहि ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून ज् सला (६२) अ़ल्लज़ीन आमनू व कानू यत्तक़ून त् (६३) लहुमुल्बुश्रा फ़िल्ह़्यातिद्दुन्या व फ़िल्आख़िरति त् ला तब्दील लिकलिमातिल्लाहि त् ज़ालिक हुवल्फ़ौज़ुल् - अ़ज़ीमु त् (६४) व ला यह्ज़ुन्क क़ौलुहुम् म् ● अिन्नल्अिज़्ज़त लिल्लाहि जमीअ़न् त् हुवस्समीअ़ुल्-अ़लीमु (६५) अला अिन्न लिल्लाहि मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल्-अर्ज़ि त् व मा यत्तबिअ़ुल्लज़ीन यद्अ़ून मिन् दूनिल्लाहि शुरकाअ त् अींयत्तबिअ़ून अिल्लज़्-ज़न्न व अिन् हुम् अिल्ला यख़्रुसून (६६) हुवल्लज़ी जअ़ल लकुमुल्लैल लितस्कुनू फ़ीहि वन्नहार मुब्सिरन् त् अिन्न फ़ी ज़ालिक लआयातिल् - लिक़ौमीं-यस्मअ़ून (६७) क़ालुत्तख़ज़ल्लाहु वलदन् सुब्ह़ानहू त् हुवल्ग़नीयु त् लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि त् अिन् अ़िन्दकुम् मिन् सुल्तानिम् - बिहाज़ा त् अतक़ूलून अ़लल्लाहि मा ला तअ़्लमून (६८) क़ुल् अिन्नल्लज़ीन यफ़्तरून अ़लल्लाहिल् - कज़िब ला युफ़्लिहून त् (६९) मताअ़ुन् फ़िद्दुन्या सुम्म अिलैना मर्जिअ़ुहुम् सुम्म नुज़ीक़ुहुमुल् - अ़ज़ाबश्शदीद बिमा कानू यक्फ़ुरून (७०) ★ ● वत्लु अ़लैहिम् नबअ नूह़िन् म् ● अिज़् क़ाल लिक़ौमिही या क़ौमि अिन् कान कबुर अ़लैकुम् मक़ामी व तज़्कीरी बिआयातिल्लाहि फ़अ़लल्लाहि तवक्कल्तु फ़अज्मिअ़ू अम्रकुम् व शुरकाअ कुम् सुम्म ला यकुन् अम्रुकुम् अ़लैकुम् ग़ुम्मतन् सुम्मक़्ज़ू अिलैय व ला तुन्ज़िरूनि (७१) फ़अिन् तवल्लैतुम् फ़मा सअल्तुकुम् मिन् अज्रिन् त् अिन् अज्रिय अिल्ला अ़लल्लाहि ला व अुमिर्तु अन् अकून मिनल्मुस्लिमीन (७२)

ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرَ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝ اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝ لَهُمُ الْبُشْرٰى
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۭ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ هُوَ
الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۭ هُوَ
السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ
وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَاۗءَ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا
الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ
لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ۝
قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۭ هُوَ الْغَنِيُّ ۭ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا
فِي الْاَرْضِ ۭ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍۢ بِهٰذَا ۭ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا
لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا
يُفْلِحُوْنَ ۝ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيْقُهُمُ
الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ
اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا اَمْرَكُمْ وَشُرَكَاۗءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ
اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ ۝ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ
فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ

व. ला जिम

रु. ७/१२ आ. १०

ऊ. ३/४ व. ला जिम

सुन रखो कि जो अल्लाह वाले हैं उनको न डर होगा और न वे उदास होंगे। (६२) (यानी वह लोग) जो ईमान लाये और डरते रहे। (६३) उनको (यहाँ) दुनिया की ज़िन्दगी में भी ख़ुशख़बरी है और आख़िरत में भी। अल्लाह की बातें बदला नहीं करतीं यही बड़ी कामयाबी है। (६४) और (ऐ पैग़म्बर!) इनकी बातों से तुम उदास न हो ● यक़ीनन इज़्ज़त सब अल्लाह ही की है वह सबकुछ सुनता-जानता है। (६५) सुन रखो कि जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं सब अल्लाह ही के (बन्दे) हैं और जो लोग अल्लाह के सिवाय (अपने ठहराये हुये) शरीकों को पुकारते हैं (ख़ुदा जाने किस चीज़ के पीछे चल रहे हैं) वह और कुछ नहीं सिर्फ़ वहम के पीछे पड़े हैं और निरी अटकलें दौड़ाते हैं। (६६) वही है जिसने तुम्हारे लिए रात को बनाया ताकि तुम उसमें आराम करो और दिन दिया ताकि तुम (उसकी रौशनी में) देखो भालो। इन में उन लोगों को निशानियाँ हैं जो सुनते हैं। (६७) (और ये ईसाई) कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बना रखा है। (उन बे अक़्लों से कहो कि) उसकी ज़ात पाक है, बेनियाज़ (निस्पृह) है, जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब उसी का है। तुम्हारे पास इस (गढ़न्त) की कोई दलील तो है नहीं, तो क्या तुम अल्लाह के बारे में (झूठ) बोलते हो जिसमें तुमको जानकारी नहीं? (६८) (ऐ पैग़म्बर! इन लोगों से) कह दो कि जो लोग अल्लाह (के नाम) पर झूठी बातें गढ़ते हैं उनको मुराद नहीं मिलती। (६९) (यह भी चिता दो कि) दुनिया को (चन्द रोज़ा) बरत लें फिर उनको हमारी ही तरफ़ लौटकर आना है, तब हम उनको सख़्त सज़ा (का मज़ा) चखा देंगे इसलिए कि वे (हमारी आयतों से) इन्कार करते थे। (७०) ★ ●

और (ऐ पैग़म्बर!) इन लोगों को नूह का हाल पढ़कर सुनाओ। ● जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि भाइयो! अगर मेरा (सच्ची बात के ऐलान पर) खड़ा होना और अल्लाह की आयतें पढ़कर (तुमको) समझाना तुम पर भारी (असह्य) गुज़रता है तो मेरा भरोसा तो अल्लाह पर है, पस अब तुम सब मिलकर अपनी बात (भी) ठहरा लो, और अपने साथ अपने (ठहराये हुये) शरीकों को भी ले लो और तुम्हारी बात तुम (में से किसी) पर छिपी न रहे, फिर (जो कुछ तुमको मेरे ख़िलाफ़ करना है) मेरे साथ कर गुज़रो और मुझे (दम लेने की) मोहलत न दो। (७१) और अगर तुम मुँह मोड़ बैठे तो मैंने तुमसे कुछ मज़दूरी तो माँगी नहीं थी। मेरी मज़दूरी (प्रतिफल) तो बस अल्लाह ही पर है और मुझको हुक्म हुआ है कि (मैं उसका) हुक्मबरदार रहूँ। (७२)

[पेज ३७३ से] ही बाक़ी न रही तब अल्लाह का अज़ाब उन पर नाज़िल हुआ। वे बिलकुल तबाह हो गईं और उनकी जगह किसी दूसरी क़ौम ने ख़ुदापरस्त होकर तरक़्क़ी की। इन नज़ीरों (दृष्टान्तों) को देकर इन्सान को अल्लाह की राह की ओर दावत दी गई है। सूरः यूनुस के मुक़ाबले सूरः हूद में अज़ाब के डर से गुनहगारों को ज़्यादः तम्बीह दी गई है और ज़्यादः सचेत किया गया है। दुनिया की ज़िन्दगी में कुछ अधर्मियों को ऐश की ज़िन्दगी बसर करते हुये देख कर लोगों को अल्लाह के अज़ाब में शक पड़ने लगता है। सूरः में समझाया गया है कि यह तो अल्लाह का रहम है कि वह मौक़ा और ढील देता है कि लोग अपने आमाल सम्हाल लें। वरनः उसकी सज़ा तो अटल है। हज़रत मुहम्मद स० का कहना था कि सूरः हूद और उसी तरह की सूरतों ने ही उन पर बुढ़ापा ला दिया था कि वे रात दिन इस अन्देशे (आशंका) में घुले जाते थे कि कहीं ऐसा न हो कि मक्का के क़ुरैश सरकशी में ही अपनी मियाद गुज़ार दें और अल्लाह का अज़ाब चन्द ईमानवालों को छोड़ कर बाक़ी सारी क़ौम पर फट पड़े और पिछली आद समूद जैसी क़ौमों की तरह क़ुरैशों को भी नेस्तनाबूद कर दे। [पेज ३६७ पर]

फ़कज्जबूहु फ़नज्जैनाहु व मम्मअहु फ़िल्फ़ुल्कि व जअल्नाहुम् ख़लाइफ़ व अग्रक़्नल्लज़ीन कज्जबू बिआयातिना ज् फ़न्ज़ुर् कैफ़ कान आक़िबतुल्-मुन्ज़रीन (७३) सुम्म बअस्ना मिम्बअ़्दिही रुसुलन् इला क़ौमिहिम् फ़जाऊ हुम् बिल्बैयिनाति फ़मा कानू लियुअ्मिनू बिमा कज्जबू बिही मिन् क़ब्लु त् कज़ालिक नत्बअु अला क़ुलूबिल्-मुअ़्तदीन (७४) सुम्म बअस्ना मिम्बअ़्दिहिम् मूसा व हारून इला फ़िर्औन व मलइही बिआयातिना फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमम् - मुज्रिमीन (७५) फ़लम्मा जाअहुमुल् - हक़्क़ु मिन् अिन्दिना क़ालू इन्न हाज़ा लसिह़्रुम् - मुबीनुन् (७६) क़ाल मूसा अतक़ूलून लिल्हक़्क़ि लम्मा जाअकुम् त् असिह़्रुन हाज़ा त् व ला युफ़्लिहुस् - साहिरून (७७) क़ालू अजिअ्तना लितल्फ़ितना अम्मा व जद्ना अलैहि आबाअना व तकून लकुमल्-किब्रियाउ फ़िल्अर्ज़ि त् व मा नह़्नु लकुमा बिमुअ्मिनीन (७८) व क़ाल फ़िर्औनुअ्-तूनी बिकुल्लि साहिरिन् अलीमिन् (७९) फ़लम्मा जाअस्सहरतु क़ाल लहुम् मूसा अल्क़ू मा अन्तुम् मुल्क़ून (८०) फ़लम्मा अल्क़ौ क़ाल मूसा मा जिअ्तुम् बिहि ला अस्सिह़्रु त् अिन्नल्लाह सयुब्तिलुहु त् अिन्नल्लाह ला युस्लिहु अमलल्मुफ़्सिदीन (८१) व युहिक़्क़ुल्लाहुल् - हक़्क़ बिकलिमातिही व लौ करिहल् - मुज्रिमून (८२) ★ फ़मा आमन लिमूसा अिल्ला ज़ुर्रीयतुम् - मिन् क़ौमिही अला ख़ौफ़िम्मिन् फ़िर्औन व मलअिहिम् अैंयफ़्तिनहुम् त् व अिन्न फ़िर्औन लआलिन् फ़िल्अर्ज़ि ज् व अिन्नहु लमिनल्मुस्रिफ़ीन (८३) व क़ाल मूसा या क़ौमि अिन् कुन्तुम् आमन्तुम् बिल्लाहि फ़अलैहि तवक्कलू अिन् कुन्तुम् मुस्लिमीन (८४)

يونس ١٤٣

أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ
وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ
فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ
كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ
مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۠ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا
قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا
لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ قَالَ مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ
هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ۝ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا
عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِي الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا
بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ۝ فَلَمَّا
جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ۝ فَلَمَّآ اَلْقَوْا
قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا
يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ
الْمُجْرِمُوْنَ ۝ فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ
مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۠ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي
الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ

★ रु. ८/१३ आ. १२

फिर (इस पर भी लोगों ने) उसको (यानी नूह अ० को) झुठलाया तो हमने नूह को और जो लोग उसके साथ किश्ती में थे, उनको बचा दिया और उन्हींको ख़लीफ़ा क़ायम किया उनकी जगह पर। और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया उनको डुबो दिया। तो देखो जो लोग डराये गये (और फिर भी राह पर न आये) उनका कैसा परिणाम हुआ। † (७३) फिर नूह के बाद हमने कितने ही पैग़म्बर उनकी अपनी-अपनी जाति की तरफ़ भेजे, तो वह (पैग़म्बर) उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आये, सो (इस पर भी) जिस चीज़ को पहले झुठला चुके थे उस पर ईमान नहीं ही लाये। इसी तरह हम ज्यादती करनेवालों के दिलों पर मुहर लगा दिया करते हैं। (७४) फिर उनके बाद हमने मूसा और हारूँ को अपनी निशानियाँ देकर फ़िरऔन और उसके सरदारों की तरफ़ भेजा, तो वे (घमण्ड में) अकड़ बैठे और यह लोग गुनहगार थे। (७५) तो जब इनके पास हमारी तरफ़ से सच बात पहुँची, तो वह कहने लगे कि यह तो खुला जादू है। (७६) मूसा ने कहा कि जब सच बात तुम्हारे पास आई तो क्या तुम उसकी बाबत कहते हो (कि यह जादू है ?) और जादू करनेवालों का भला नहीं होता। (७७) (वह) कहने लगे क्या तुम इस मतलब से हमारे पास आये हो कि जिस (राह) पर हमने अपने बाप दादों (यानी बड़ों) को पाया उससे हमको फिरा दो और इस देश में तुम दोनों को सरदारी (हासिल) हो और हम तो तुम पर ईमान लानेवाले नहीं। (७८) और फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि हर गुनी जादूगर को हमारे सामने लाकर हाज़िर करो। (७९) फिर जब जादूगर आ मौजूद हुए तो उनसे मूसा ने कहा कि जो तुमको (जादू) डालना मंजूर है डालो। (८०) तो जब उन्होंने (रस्सियों को साँप बनाकर) डाला तो मूसा ने कहा कि यह जो तुम लाये हो जादू है, (सो बेशक) अल्लाह इसको झूठ करेगा, क्योंकि अल्लाह फ़सादियों को काम सवाँरने (का मौक़ा) नहीं देता। (८१) और अल्लाह अपने हुक्म से सच को सच करता है, भले ही गुनहगारों को बुरा ही क्यों न लगे। (८२) ★

★ रु. ८/१३ आ. १२

तो (इन तमाम बातों पर भी) मूसा पर कोई ईमान न लाया सिवाय उसकी क़ौम के चन्द लोग और वह भी फ़िरऔन और उसके सरदारों से डरते-डरते कि कहीं किसी आफ़त में उनको न फँसा दे और बेशक फ़िरऔन देश में बहुत बड़ाई जिता रहा था और वह हद से ज्यादा ज़्यादती वाला था। (८३) और मूसा ने (अपनी क़ौम वालों को) समझाया कि भाइयो ! अगर तुम अल्लाह पर (दिल से) ईमान रखते हो और अगर तुम हुक्मबरदार हो तो उसी पर भरोसा रखो। (८४)

[पेज ३६५ से] सूरः हूद में इन्सानों को मिनजुमलः उसके मुसलमानों को भी चेतावनी है कि महज़ किसी क़ौम या दीन का नाम लेवा हो जाने से छुटकारा नहीं है। जो अल्लाह की राह पर अमल करेंगे वही दुनिया में सरसब्ज़ होंगे और आख़िरत (परलोक) में भी सफल होंगे। लेकिन जो सरकश होंगे उनके साथ कोई रिआयत न होगी कि वे तो फलाँ दीन या फलाँ क़ौम के लोग हैं इनको छूट मिल जाय। वे दुनिया में तबाह होंगे और उनकी जगह दूसरी क़ौम या दूसरे गिरोह को सरसब्ज़ किया जायगा और आख़िरत में भी नेककारों को जन्नत और बद किरदारों को दोज़ख नसीब होगा।

† ह० नूह अ० की नसीहत के बावजूद जब उनकी क़ौम कुफ्र और सरकशी पर हद पार कर गई तो अल्लाह का अज़ाब एक बड़े तूफ़ान की शक्ल में आया। ह० नूह अ० को अल्लाह के फ़ज़्ल से पहले ही ख़बर हुई और उन्होंने एक नाव तैयार कर ली। ह० नूह अ० व उनके साथी ईमानवाले उस किश्ती में बैठ कर बच गये और वही उन सरकशों की जगह देश के अधिकारी हुये और सरकश सब के सब तूफ़ान में डूब गये।

फ़क़ालू अलल्लाहि तवक्कल्ना ज् रब्बना ला तजअल्ना फ़ित्नतल्लिल्-
क़ौमिज़्ज़ालिमीन ला (८५) व नज्जिना बिरह्मतिक मिनल् - क़ौमिल्-
काफ़िरीन (८६) व औहैना अिला मूसा व अख़ीहि अन्तबौवआ लिक़ौमि-कुमा
बिमिस्र बुयूतौंवजअलू बुयूतकुम् क़िब्लतौंव अक़ीमुस्सलात त् व बश्शिरिल्-
मुअ्मिनीन (८७) व क़ाल मूसा रब्बना
अिन्नक आतैत फ़िर्औन व मलअहु ज़ीनतौंव
अम्वालन् फ़िल्हयातिद्दुन्या ला रब्बना
लियुज़िल्लू अन् सबीलिक ज् रब्बनत्मिस्
अला अम्वालिहिम् वश्दुद् अला क़ुलूबिहिम्
फ़ला युअ्मिनू हत्ता यरवुल् - अज़ाबल्-
अलीम (८८) क़ाल क़द् अुजीबद्दअ्वतु-
कुमा फ़स्तक़ीमा व ला तत्तबिआन्नि
सबीलल्लज़ीन ला यअ्लमून (८९) व
जावज़्ना बिबनी अिस्राअीलल् - बह्र
फ़अत्बअहुम् फ़िर्औनु व जुनूदुहू बग़्यौंव
अद्वन् त् हत्ता अिज़ा अद्रकहुल्-

أَمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْا إِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ۝ فَقَالُوْا عَلَى
اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَنَجِّنَا
بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَأَوْحَيْنَا إِلٰى مُوْسٰى وَأَخِيْهِ أَنْ
تَبَوَّا لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۗ
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَا إِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَ
مَلَأَهٗ زِيْنَةً وَّأَمْوَالًا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ
رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰى أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى
يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيْمَ ۝ قَالَ قَدْ أُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَ
لَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْ إِسْرَآءِيْلَ
الْبَحْرَ فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ۗ حَتّٰى إِذَآ أَدْرَكَهُ
الْغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنْتُ أَنَّهٗ لَآ إِلٰهَ إِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا إِسْرَآءِيْلَ
وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ آٰلْئٰنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ
الْمُفْسِدِيْنَ ۝ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ
اٰيَةً ۗ وَإِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ بَوَّأْنَا
بَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّأَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا
اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ فَإِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ

ग़रक़ु ला क़ाल आमन्तु अन्नहू ला अिलाह अिल्लल्लज़ी आमनत् बिहीं बनू
अिस्राअील व अना मिनल् - मुस्लिमीन (९०) आल्आन व क़द् असैत
क़ब्लु व कुन्त मिनल् - मुफ़्सिदीन (९१) फ़ल्यौम नुनज्जीक बिबदनिक
लितकून लिमन् ख़ल्फ़क आयतन् त् व अिन्न कसीरम् - मिनन्नासि अन्
आयातिना लग़ाफ़िलून (९२) ★ व लक़द् बौवअ्ना बनी अिस्राअील
मुबौवअ सिद्क़िंव्व रज़क़्नाहुम् मिनत्तैयिबाति ज् फ़मख़्तलफ़ू हत्ता
जाअहुमुल् - अिल्मु त् अिन्न रब्बक यक़्ज़ी बैनहुम् यौमल् - क़ियामति
फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (९३) फ़अिन् कुन्त फ़ी शक्किम् - मिम्मा
अन्ज़ल्ना अिलैक फ़स्अलिल्लज़ीन यक़्रअूनल् - किताब मिन् क़बलिक ज् लक़द्
जाअकल् - हक़्क़ु मिर्रब्बिक फ़ला तकूनन्न मिनल्मुम्तरीन ला (९४)

★ रु. ९/१४ आ १०

इस पर उन्होंने जवाब दिया कि (बेशक) हमने अल्लाह ही पर भरोसा किया। ऐ परवरदिगार! हम पर इस ज़ालिम क़ौम (फ़िरऔन) का ज़ोर न आज़मा। (८५) और अपनी कृपा से हमको (इस) काफ़िर क़ौम से बचा। (८६) और हमने मूसा और उसके भाई (हारून) की तरफ़ हुक्म भेजा कि अपनी क़ौम के लोगों के लिए मिसर में घर बना लो और अपने घरों को क़िबला (यानी मसजिदें) क़रार दो § और नमाज़ क़ायम करो और ईमानवालों को ख़ुशख़बरी सुना दो। (८७) और मूसा ने दुआ माँगी कि ऐ हमारे परवरदिगार! तूने फ़िरऔन और उसके सरदारों को संसार के जीवन में रौनक़ (शान शौक़त) व माल दे रखा है और ऐ परवरदिगार! यह इसलिए (दिये हैं) कि वह तेरे रास्ते से (लोगों को रोकें और) भटकावें, तो ऐ परवरदिगार! इनकी सम्पदा को मिटा दे और इनके दिलों को कठोर कर दे कि उनको ईमान लाना नसीब ही न हो और दुखदाई अज़ाब को (आख़िर अपनी आखों) देखें। (८८) (अल्लाह ने) फ़र्माया तुम्हारी दुआ क़बूल हुई तो तुम दोनों (अपनी राह पर) जमे रहो और उन लोगों के रास्ते मत चलना जो अनजान (अज्ञानी) हैं। (८९) और हमने इसराईल की औलाद को दरया के पार उतार दिया फिर फ़िरऔन और उसके लश्करियों ने ज़्यादती और दुश्मनी से उनका पीछा किया, यहाँ तक (नौबत आई) कि जब फ़िरऔन (अपने लश्कर सहित) डूबने लगा तब बोला कि मैं ईमान लाया कि जिस पर इसराईल के बेटे ईमान लाये हैं कि उसके सिवाय कोई और पूजित नहीं और मैं अब आज्ञाकारियों में हूँ। (९०) (इसका जवाब मिला कि) अब (तू) यों बोला और पहले (बराबर) हुक्म के ख़िलाफ़ करता रहा और हमेशा फ़सादियों में रहा। (९१) तो आज तेरे शरीर को हम (दरया में नष्ट हो जाने से) बचादेंगे कि जो लोग तेरे बाद आनेवाले हैं उनके लिए (तेरी लाश तेरे आमाल और उनकी सजा की याद दिलाने के लिए) नसीहत हो। और बेशक बहुत से लोग हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल रहते हैं। (९२) ☆

रु॰ ९ | १४ आ १०

और हमने इसराईल की औलाद को एक बहुत उम्दः जगह दी और उनको सुथरे पदार्थ खाने को दिये और (इसको शुक्र मान कर बजाय ईमान पर जमे रहने के) उन्होंने विरोध पैदा किया जबकि उन पर अ़िल्म पहुँच चुका था। तो यह लोग जिन-जिन बातों में भेद डालते रहते थे तुम्हारा पालनकर्त्ता क़ियामत के दिन उन (भेदों) का फ़ैसला कर देगा। (९३) (तो ऐ पैग़म्बर! यह क़ुर्आन) जो हमने तुम्हारी तरफ़ उतारा है अगर इसकी बाबत तुमको किसी क़िस्म का सन्देह हो तो तुमसे पहले जो लोग (तौरेत वग़ैरः) किताबों को पढ़ते रहे हैं उनसे पूछ देखो, कुछ सन्देह नहीं कि तुम पर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ (सत्य) प्रकट हुआ है, तो (कभी) सन्देह करनेवालों में न होना। (९४)

§ चूँकि फ़िरऔनों की सख्ती की वजह से सरे आम मसजिद व नमाज़ क़ायम करने में दुश्वारी थी इस लिए अपने घरों को ही मसजिद मान कर नमाज़ क़ायम करने का हुक्म हुआ।

व ला तकूनन्न मिनल्लजीन कज्जबू बिआयातिल्लाहि फ़तकून मिनल्ख़ासिरीन (९५) अिन्नल्लजीन हक़्क़त् अलैहिम् कलिमतु रब्बिक ला युअ्मिनून ला (९६) व लौ जाअत्हुम् कुल्लु आयतिन् हत्ता यरवुल्-अजाबल्-अलीम (९७) फ़लौ ला कानत् क़र्यतुन् आमनत् फ़नफ़अहा ईमानुहा अिल्ला क़ौम यूनुस त़ लम्मा आमनू कशफ़्ना अन्हुम् अजाबल्-खिज़्यि फ़िल्-हयातिद्दुन्या व मत्तअ्नाहुम् अिलाहीनिन् (९८) व लौ शाअ रब्बुक लआमन मन् फ़िल्अर्ज़ि कुल्लुहुम् जमीअन् त़ अफ़अन्त तुक्रिहुन्नास हत्ता यकूनू मुअ्मिनीन (९९) व मा कान लिनफ़्सिन् अन् तुअ्मिन अिल्ला बिअिज़्निल्लाहि त़ व यज्अलुर्रिज्स अलल्लजीन ला यअ्क़िलून (१००) क़ुलिन्जुरू मा जा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि त़ व मा तुग़्निल्-आयातु वन्नुजुरु अन् क़ौमिल्-ला युअ्मिनून (१०१) फ़हल् यन्तजिरून अिल्ला मिस्ल अैयामिल्लजीन ख़लौ मिन् क़ब्लिहिम् त़ क़ुल् फ़न्तजिरू अिन्नी मअकुम् मिनल्-मुन्तजिरीन (१०२) सुम्म नुनज्जी रुसुलना वल्लजीन आमनू कजालिक ज् हक़्क़न् अलैना नुन्जिल्-मुअ्मिनीन (१०३) ★ क़ुल् या अैयुहन्नासु अिन् कुन्तुम् फ़ी शक्किम्-मिन् दीनी फ़ला अअ्बुदुल्लजीन तअ्बुदून मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् अअ्बुदुल्लाहल्लजी यतवफ़्फ़ाकुम् ज् सला व अुमिर्तु अन् अकून मिनल्-मुअ्मिनीन ला (१०४) व अन् अक़िम् वज्हक लिद्दीनि हनीफ़न् ज् व ला तकूनन्न मिनल्-मुश्रिकीन (१०५)

★ रु. १०/१५ आ ११

أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَسْئَلِ الَّذِينَ يَقْرَءُونَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ لَقَدْ جَاءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۝ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُونَ مِنَ الْخٰسِرِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝ فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَا إِيمَانُهَا إِلَّا قَوْمَ يُونُسَ لَمَّا اٰمَنُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ إِلٰى حِينٍ ۝ وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْأَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيعًا أَفَأَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللّٰهِ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ۝ قُلِ انْظُرُوا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ قُلْ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ۝ ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا وَالَّذِينَ اٰمَنُوا كَذٰلِكَ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ قُلْ يٰأَيُّهَا النَّاسُ إِنْ كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِنْ دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ أَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِي يَتَوَفّٰىكُمْ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَأَنْ أَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ

منزل ٣

और न उन लोगों में होना जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, कि तुम भी नुक़सान उठाने वालों में हो जाओ। (९५) (ऐ पैग़म्बर!) जिन पर परवरदिगार का (अज़ाब का) हुक्म तै पा चुका है वे (हरगिज़) ईमान न लावेंगे। (९६) यहाँ तक कि (उस) दुखदाई सज़ा को न देख लेंगे चाहे उनके पास सारी निशानियाँ क्यों न आ मौजूद हों। (९७) और यूनुस की जाति के सिवाय और कोई बस्ती ऐसी क्यों न हुई कि ईमान ले आती और उनका ईमान लाना उनके काम आता। तो जब (यूनुस की क़ौम वाले) ईमान ले आये तो हमने दुनिया की ज़िन्दगी में उनको ज़िल्लत की सज़ा से मुक्त कर दिया और उनको एक वक़्त तक (खुशहाल) रहने दिया §। (९८) और ऐ पैग़म्बर! अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता तो जितने आदमी ज़मीन की सतह पर हैं सबके सब ईमान ले आते। तो अब क्या तुम (हस्ती रखते हो कि) लोगों को मजबूर करो कि वह ईमान ले आवें। (९९) और किसी शख़्स के हक़ में नहीं है कि बिना हुक्म अल्लाह के ईमान ले आवे। और वह उन लोगों पर गन्दगी† डालता है जो बुद्धि से काम नहीं लेते। (१००) (उनसे) कहो कि देखो तो यह क्या कुछ (क़ुदरत अल्लाह की) है आसमानों और ज़मीन में। लेकिन निशानियाँ और डर उन लोगों का कोई भला नहीं करते जो ईमान नहीं रखते। (१०१) तो क्या वैसे ही (गर्दिश के) दिनों की राह देखते हैं जैसे इनसे पहले के लोगों पर आ चुके हैं। तो (ऐ पैग़म्बर!) इन लोगों से कह दो कि तुम भी (उस अज़ाब का) इंतज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतज़ार करनेवालों में हूँ। (१०२) फिर (अज़ाब की मार उतरने के समय) हम अपने पैग़म्बरों को बचा लेते हैं और इसी तरह उन लोगों को भी जो ईमान लाये; हमने अपने ज़िम्मे लाज़िम कर लिया है कि ईमानवालों को बचालें। (१०३) ★

★ रु. १० / १५ आ ११

(ऐ पैग़म्बर!) इन लोगों से कहो कि ऐ लोगो! अगर मेरे दीन के सम्बन्ध में तुम सन्देह में हो तो (जाने रहो) अल्लाह के सिवाय तुम जिनकी पूजा करते हो, मैं तो उनको पूजने से रहा, बल्कि मैं तो अल्लाह ही को पूजता हूँ जो कि तुम्हारी रूह को खींच लेता है (यानी जिसके हाथ में तुम्हारी ज़िन्दगी-मौत है) और मुझको हुक्म दिया गया है कि मैं ईमान वालों में रहूँ। (१०४) और यह कि (और सब तरफ़ से हट कर) दीन की तरफ़ ही अपना रुख़ रखो और मुशरिकों (बहुदेव-पूजकों) में हरगिज़ न होना। (१०५)

§ दजला नदी के किनारे नैनुआ एक पुराने राज्य का केन्द्र (मरकज़) था। यहाँ के लोग भी जब तरक़्क़ी की पूरी ऊँचाई पर पहुँचे तो घमण्डी और सरकश हो गये जैसे कि और तरक़्क़ी वाली क़ौमें हो जाया करती हैं और उन्हीं की तरह इन पर भी अज़ाब नाज़िल होने को था। लेकिन इनके नबी यूनुस अ० के ज़रिये इन पर अल्लाह के हुक्म पहुँचे और यूनुस अ० की क़ौम की तरह बजाय सरकशी करने के तोबः मान ली इस लिए इनका अज़ाब माफ़ कर दिया गया और फिर एक मुद्दत तक ये खुश व खुर्रम आबाद रहे। † गन्दगी से मतलब है कुफ़्, शिर्क और गन्दे विचार।

व ला तद्अु मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अुक व ला यज़ुर्रुक ज् फ़इन् फ़अ़ल्त फ़इन्नक इजम् - मिनज्ज़ालिमीन (१०६) व इंयम्सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिन् फ़ला काशिफ़ लहू इल्ला हुव ज् व इंयुरिद्क बिख़ैरिन् फ़ला रा'द लिफ़ज़्लिही त् युसीबु बिही मैंयशाउ मिन् अ़िबादिही त् व हुवल् ग़फ़ूरुर्रहीमु (१०७) क़ुल् या अैयुहन्नासु क़द् जाअकुमुल्हक़्क़ु मिर्रब्बिकुम् ज् फ़मनिह्तदा फ़इन्नमा यह्तदी लिनफ़्सिही ज् व मन् ज़ल्ल फ़इन्नमा यज़िल्लु अ़लैहा ज् व मा अना अ़लैकुम् बिवकीलिन् त् (१०८) वत्तबिऽ मा यूहा इलैक वस्बिर् हत्ता यह्कुमल्लाहु ज् सला व हुव ख़ैरुल्हाकिमीन (१०९) ★

रु. ११ / १६ आ ६

☪ ११ सूरः हूद ५२ ☪

(मक्की) इस सूरः में ७६२४ हुरूफ़ १६३६ शब्द १२३ आयात और १० रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीमि •

अलिफ़् ला'म रा क़िफ़ किताबुन् उह्किमत् आयातुहू सुम्म फ़ुस्सिलत् मिल्लदुन् हकीमिन् ख़बीरिन् ला (१) अल्ला तऽबुदू इल्लल्लाह त् इन्ननी लकुम् मिन्हु नजीरुँव बशीरुन् ला (२) ०'व अनिस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्म तूबू इलैहि युमत्तिऽकुम् मताअ़न् हसनन् इला अजलिम् - मुसम्मौंव युअ्ति कुल्ल जी फ़ज़्लिन् फ़ज़्लहू त् व इन् तवल्लौ फ़इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़जाब यौमिन् कबीरिन् (३) इलल्लाहि मर्जिअ़ुकुम् ज् व हुव अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरुन् (४) अला इन्नहुम् यस्नून सुदूरहुम् लियस्तख़्फ़ू मिन्हु त् अला हीन यस्तग़्शून सियाबहुम् ला यऽलमु मा युसिर्रून व मा युऽलिनून ज् इन्नहू अ़लीमुम् - बिजातिस्सुदूरि (५)

॥ इति ग्यारहवाँ पारः ॥

يعتذرون ١١ — ١٨٦ — هود ١١

حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ؕ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَاۤ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ؕ۝ وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚۖ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۝

سُوْرَةُ هُوْدٍ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَثَلٰثٌ وَعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَعَشْرُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الۤرٰ ۫ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۝ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ۝ وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ۝ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اَلَاۤ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ؕ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝

منزل ٣

और अल्लाह के सिवाय किसी को न पुकारना कि वह तुमको न तो लाभ ही पहुँचा सकता है और न नुक़सान ही (पहुँचा सकता है) और अगर तुमने ऐसा किया तो उसी वक़्त तुम भी ज़ालिमों में हो जाओगे। (१०६) और अगर अल्लाह तुमको कोई कष्ट पहुँचावे तो उसके सिवाय कोई उसका दूर करनेवाला नहीं और अगर किसी क़िस्म की भलाई (पहुँचाना) चाहे तो कोई उसकी कृपा को उलटने वाला नहीं। अपने बन्दों में से जिस पर चाहे कृपा करे और वही बड़ा क्षमा करने वाला बेहद मेहरबान है। (१०७) (ऐ पैग़म्बर!) कह दो कि लोगो! सच बात तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास आ चुकी। अब जो कोई राह अपनायेगा वह अपने भले के लिए राह अपनायेगा और जो कोई गुमराह हो तो वह गुमराह होगा अपने बुरे के लिए और मैं तुम्हारा कोई (जवाबदेह) ज़िम्मेदार नहीं हूँ। (१०८) और (ऐ पैग़म्बर!) तुम्हारी तरफ़ जो हुक्म भेजा है उसी पर चले जाओ और उसी पर जमे रहो यहाँ तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे और वह सब से बेहतर फ़ैसला करनेवाला है। (१०९) ☆

☆ ११ १६ आ ६

☪ ११ सूरः हूद ५२ ☪

(मक्की) इसमें अरबी के ७६२४ हरफ़, १६३६ शब्द, १२३ आयतें और १० रुकूअ हैं। *

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीमि।

(शुरू) अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला बेहद मेहरबान है।

अलिफ़-लाम-रा। यह (क़ुर्आन) एक किताब है जिसकी आयतें पक्की हैं और हिक्मतवाले और ख़बरदार अल्लाह की ओर से साफ़-साफ़ बयान की गयी हैं। (१) कि (लोगो!) अल्लाह के सिवाय किसी की अिबादत मत करो। मैं उसी की ओर से तुमको डराता और ख़ुशख़बरी सुनाता हूँ। (२) और यह कि अपने परवरदिगार से माफ़ी माँगो और उसी के सामने तौबः करो, तो वह तुमको एक नियत समय तक (दुनिया में) सुख से गुज़र करायेगा और हर फ़ज़्ल वाले (कृपा पात्र) को (उसके हक़ के मुताबिक़) अपना फ़ज़्ल इनायत करेगा और अगर (अल्लाह से विमुख यानी) मुँह मोड़ोगे तो (मुझको) तुम्हारी बाबत (क़ियामत के) बड़े दिन की सज़ा का डर है। (३) (आख़िर) तुमको अल्लाह ही की तरफ़ लौटकर जाना है और वह हर चीज़ पर क़ादिर (समर्थ) है। (४) (ऐ पैग़म्बर!) सुनो कि यह अपने सीनों को दुहरा किये डालते हैं ताकि (उनके दिलों की बातें) अल्लाह से छिपी रहें। (लेकिन ऐ नबी!) सुन रखो कि जब वह अपने कपड़े ओढ़ते हैं (उस समय भी) अल्लाह उनकी सारी ख़ुफ़िया और ज़ाहिरा बातों से ख़बरदार है। वह तो दिलों के अन्दर तक की बातें जाननेवाला है। (५)

॥ इति ग्यारहवाँ पारः ॥

* सूरः हूद के नाज़िल (अवतरित) होने का भी वही समय है जो रसूल स० के मक्का के अन्तिम काल में सूरः यूनुस के नाज़िल होने का है। इस सूरत का नाम क़ौम आद की ओर भेजे गये अल्लाह के पैग़म्बर हज़रत हूद अ० के नाम पर है जिनकी चरचा आयत ५० में है। क़ौम आद और दूसरी बहुत सी तरक़्क़ी वाली क़ौमों का ज़िक्र है कि जब इन्हीं अल्लाह से इनाम और बख़्शीश पायी हुई शानदार क़ौमों ने अल्लाह और उसके नबियों के हुक्मों को टाला और वे शिर्क यानी अल्लाह के अलावा दूसरों को पूजने के गुनाह व कुफ़्र (अधर्म) में ऐसा फँस गईं कि ख़ुदाई किताबों और नबियों की हिदायतों व नसीहतों पर वापस आने की नौबत [पेज ३६५ पर]

☪☪ बारहवाँ पारः वमामिन्दा'ब्बतिन् ☪☪

☪ सूरः हूद आयात ६ से १२३ ☪

व मा मिन् दा'ब्बतिन् फ़िल्अर्ज़ि इल्ला अ़लल्लाहि रिज़्क़ुहा व यअ़्लमु मुस्तक़र्रहा व मुस्तौदअ़हा त़ कुल्लुन् फ़ी किताबिम् - मुबीनिन् (६) व हुवल्लज़ी ख़लक़स्समावाति वल्अर्ज़ फ़ी सित्तति अैयामिंव्व कान अ़र्शुहु अ़लल्मा'इ लियब्लुवकुम् अैयुकुम् अह्सनु अ़मलन् त़ व लइन् क़ुल्त इन्नकुम् मब्अूसून मिम्बअ़्दिल्-मौति लयक़ूलन्नल्-लज़ीन कफ़रू' इन् हाज़ा' इल्ला सिह्रुम्मुबीनुन् (७) व लइन् अख़्ख़र्ना अ़न्हुमुल्-अ़ज़ाब इला' उम्मतिम् - मअ़्दूदतिल् - लयक़ूलुन्न मा यह्बिसुहु त़ अला यौम यअ्तीहिम् लैस मस्रूफ़न् अ़न्हुम् व हाक़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (८) ★ व लइन् अज़क़्नल् - इन्सान मिन्ना रह्मतन् सुम्म नज़अ़्नाहा मिन्हु ज इन्नहु लयऊसुन् क़फ़ूरुन् (९) व लइन् अज़क़्नाहु नअ़्मा'अ बअ़्द ज़र्रा'अ मस्सत्हु लयक़ूलन्न ज़हबस्सैयिआतु अ़न्नी त़ इन्नहु लफ़रिहुन् फ़ख़ूरुन् ला (१०) इल्लल्लज़ीन सबरू व अ़मिलुस्सालिहाति त़ उला'इक लहुम् मग़्फ़िरतुंव अज्रुन् कबीरुन् (११) फ़लअ़ल्लक तारिकुम्बअ़्ज़ मा यूहा' इलैक व ज़ा'इक़ुम्-बिही सद्रुक अैयक़ूलू लौला' उन्ज़िल अ़लैहि कन्ज़ुन् औजा'अ मअ़हु मलकुन् त़ इन्नमा' अन्त नज़ीरुन् त़ वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइंव्वकीलुन् त़ (१२) अम् यक़ूलूनफ़्तराहु त़ क़ुल् फ़अ्तू बिअ़श्रि सुवरिम्-मिस्लिही मुफ़्तरयातिंव्वद्ऊ मनिस् - ततअ़्तुम् मिन् दूनिल्लाहि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (१३) फ़इल्लम् यस्तजीबू लकुम् फ़अ़्लमू' अन्नमा' उन्ज़िल बिअ़िल्मिल्लाहि व अल्ला' इलाह इल्ला हुव ज फ़हल् अन्तुम् मुस्लिमून (१४)

रु. १/१ आ ८

وما من دابة في الارض الا على الله رزقها ويعلم مستقرها
ومستودعها كل في كتب مبين ۝ وهو الذي خلق السموت
والارض في ستة ايام وكان عرشه على الماء ليبلوكم ايكم
احسن عملا ولئن قلت انكم مبعوثون من بعد الموت ليقولن
الذين كفروا ان هذا الا سحر مبين ۝ ولئن اخرنا عنهم
العذاب الى امة معدودة ليقولن ما يحبسه الا يوم ياتيهم
ليس مصروفا عنهم وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون ۝ و
لئن اذقنا الانسان منا رحمة ثم نزعنها منه انه ليـٔوس كفور ۝
ولئن اذقنه نعماء بعد ضراء مسته ليقولن ذهب السيات
عني انه لفرح فخور ۝ الا الذين صبروا وعملوا الصلحت اولئك
لهم مغفرة واجر كبير ۝ فلعلك تارك بعض ما يوحى اليك
وضائق به صدرك ان يقولوا لولا انزل عليه كنز او جاء معه
ملك انما انت نذير والله على كل شيء وكيل ۝ ام يقولون
افترىه قل فاتوا بعشر سور مثله مفتريت وادعوا من استطعتم
من دون الله ان كنتم صدقين ۝ فالم يستجيبوا لكم فاعلموا
انما انزل بعلم الله وان لا اله الا هو فهل انتم مسلمون ۝
من كان يريد الحيوة الدنيا وزينتها نوف اليهم اعمالهم فيها

☪☪ बारहवाँ पारः (वमामिन्दा'ब्बतिन्) ☪☪

☪ सूरः हूद आयात ६ से १२३ ☪

और जितने ज़मीन में चलते-फिरते (जीव) हैं उनकी रोज़ी अल्लाह ही के ज़िम्मे है और वही उनके ठिकाने को और उनकी सौंपे जाने की जगह को जानता है। † सब कुछ खुली किताब (यानी लौह महफ़ूज़) में दर्ज है। (६) और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को ६ दिन में बनाया§ और उसका तख़्त (किब्रियाई) पानी पर था (तो उसने तुमको इस लिए बनाया) ताकि तुम लोगों को जाँचे कि तुममें किसके कर्म अच्छे हैं। और (ऐ पैग़म्बर!) अगर तुम (इन लोगों से) कहो कि मरने के बाद (फिर) तुम उठाकर खड़े किये जाओगे तो जो लोग इन्कारी हैं ज़रूर कहेंगे कि यह तो खुला जादू है। (७) और अगर हम अज़ाब को इन (पर पड़ने) से गिनती के चन्द रोज़ तक रोके रहें तो (अज़ाब की हंसी उड़ाते हुये) कहें कि कौन-सी चीज़ सज़ा को रोक रही है। सुनो जी, जिस दिन सज़ा इन पर आ पहुँचे गी इनपर से किसी के टाले टलनेवाली नहीं और जिस (अज़ाब) की यह लोग हँसी उड़ा रहे हैं, वह इनको घेर लेगा। (८) ★

★ रु. १/१ आ ८

और अगर हम मनुष्य को अपनी मेहरबानी (का स्वाद) चखा दें, फिर उसको उससे छीन लें, तो वह नाउम्मीद और नाशुक्र होता है। (९) और अगर उसको कोई तकलीफ़ पहुँची हो और उसके बाद उसको आराम (का मज़ा) चखावें तो कहने लगता है कि मुझसे सब बुराइयाँ दूर हो गईं और वह बहुत ही ख़ुश हो हो कर (अपनी) बड़ाइयाँ हाँकने लगता है। (१०) मगर जो लोग सब्र करते हैं और नेक काम करते हैं यही हैं जिनके लिए (दुनिया में किये गुनाहों की) बख़्शीश और (आख़िरत में) बड़ा सवाब है। (११) तो कहीं जो हुक्म तुम पर भेजा जाता है, तुम उसमें से कुछ छोड़ न दो और तुम्हारा जी इस बात पर तंग हो कि वे कहते हैं कि इस शख़्स पर कोई ख़ज़ाना @ क्यों नहीं उतरा या उसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया। सो (ऐ नबी!) तुम (तो सिर्फ़) डरानेवाले हो और ज़िम्मे तो हर चीज़ अल्लाह ही के है। (१२) (ऐ पैग़म्बर!) क्या (काफ़िर) कहते हैं कि (तुमने) क़ुर्आन को अपने दिल से गढ़ लिया है, तो इनसे कहो कि अगर (अपने इस कहने में) तुम सच्चे हो तो तुम (भी) इसी तरह की दस सूरतें गढ़ लाओ और अल्लाह के सिवाय जिसको तुमसे बुलाते बन पड़े बुला लो (कि तुम्हारे लिए ऐसी सूरतें गढ़ दें)। (१३) पस अगर (काफ़िर) तुम्हारा कहना न कर सकें (और वह ऐसा कर सकेंगे भी नहीं, तो उनसे कहो कि अच्छी तरह अब) जान लो कि यह (क़ुर्आन) अल्लाह ही के इ़ल्म से उतरा है और यह कि उसके सिवाय किसी की पूजा नहीं करनी चाहिए, तो क्या अब तुम (अल्लाह का) हुक्म मानने को तैयार हो! (१४)

---

† ठहरना दुनिया मे और सौंपे जाना जैसे मरने के बाद क़ब्र में एक मियाद तक के लिए जब कि क़ियामत में वे दुबारा ज़िन्दः उठा खड़े किये जायें गे। यह सब अल्लाह को एक-एक की ख़बर है। § ६ दिन में सृष्टि बनाई। यह दिन हम इन्सानों जैसे दिन नहीं। सूरः हज्ज आयत ४७ में ज़िक्र है कि हमारे हज़ार साल के बराबर एक दिन अल्लाह की नज़र में है। कहीं ५० हज़ार का ज़िक्र भी है। मतलब ६ युग ऐसे बीते जिनमें दुनिया का विकास (Evolution) होते होते यह मौजूदः शकल आई। (अ. यू) @ इन्कारी कहते थे कि मुहम्मद रसूल हैं तो इनके पास अधिक धन होना चाहिए या इनके साथ एक फ़रिश्ता निरंतर चलना चाहिए जो इनके रसूल होने की निशानी हो। इन बातों से मुहम्मद साहब स० को बड़ा दुःख होता था। इन आयतों में यह बताया गया है कि नबी को इससे तंग न होना चाहिये न उसके लिए इस आडम्बर की ज़रूरत है।

मन् कान युरीदुल् - हयातद्दुन्या व ज़ीनतहा नुवफ़्फ़ि अिलैहिम् अऽमालहुम् फ़ीहा व हुम् फ़ीहा ला युब्ख़सून (१५) अुला'अिकल्लज़ीन लैस लहुम् फ़िल्आख़िरति अिल्लन्नारु ज् सला व हबित मा सनअू फ़ीहा व बातिलुम्मा कानू यऽमलून (१६) अफ़मन् कान अला बैयिनतिम् - मिर्रब्बिही व यत्लूहु शाहिदुम् - मिन्हु व मिन् क़ब्लिही किताबु मूसा' अिमामौंव रह्मतन् त् अुला'अिक युअ्मिनून बिही त् व मैंयक्फ़ुर् बिही मिनल् - अह्ज़ाबि फ़न्नारु मौअिदुहु ज् फ़ला-तकु फ़ी मिर्यतिम् - मिन्हु क् अिन्नहुल्-हक़्क़ु मिर्रब्बिक व लाकिन्न अक्सरन्नासि ला युअ्मिनून (१७) व मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अलल्लाहि कज़िबन् त् अुला'अिक युऽरज़ून अला रब्बिहिम् व यक़ूलुल् - अशहादु हा'अुला'अिल्-लज़ीन कज़बू अला रब्बिहिम् ज् अला लऽनतुल्लाहि अलज़्ज़ालिमीन ला (१८) अल्लज़ीन यसुद्दून अन् सबीलिल्लाहि व यब्ग़ूनहा अिवजन् त् व

وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ
إِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبَاطِلٌ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ أَفَمَنْ
كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِنْهُ وَمِنْ قَبْلِهِ كِتَابُ
مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ مِنَ
الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهُ ۚ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِنْهُ ۚ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ
رَبِّكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ
عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ أُولَٰئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَٰؤُلَاءِ
الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ۝ الَّذِينَ
يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ
كَافِرُونَ ۝ أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ
مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ۘ يُضَاعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ۚ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ
السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَ
ضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ
الْأَخْسَرُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَخْبَتُوا إِلَىٰ
رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ
كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ۚ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ۚ أَفَلَا
تَذَكَّرُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝

हुम् बिल्आख़िरति हुम् काफ़िरून (१९) अुला'अिक लम् यकूनू मुऽजिज़ीन फ़िल्अर्ज़ि व मा कान लहुम् मिन् दूनिल्लाहि मिन् औलिया'अ म् युज़ाअफ़ु लहुमुल् - अज़ाबु त् मा कानू यस्ततीअूनस्सम्अ व मा कानू युब्सिरून (२०) अुला'अिकल्लज़ीन ख़सिरू' अन्फ़ुसहुम् व ज़ल्ल अन्हुम् मा कानू यफ़्तरून (२१) ला जरम अन्नहुम् फ़िल्आख़िरति हुमुल् - अख़्सरून (२२) अिन्नल्लज़ीन आमनू व अमिलुस्सालिहाति व अख़्बतू' अिला रब्बिहिम् ला अुला'अिक अस्हाबुल् - जन्नति ज् हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (२३) मसलुल् - फ़रीक़ैनि कल् - अऽमा वल्-असम्मि वल्बसीरि वस्समीअि त् हल् यस्तवियानि मसलन् त् अफ़ला तज़क्करून (२४) ★ व लक़द् अर्सल्ना नूहन् अिला क़ौमिही' ज् अिन्नी लकुम् नज़ीरुम् - मुबीनुन् ला (२५)

व. ला ज़िम

★ रु. २ | २ आ १६

जिनकी ख़्वाहिश दुनिया की ज़िन्दगी और दुनिया की रौनक़ चाहना है, हम उनके काम का बदला इसी (दुनिया) में उनको (पूरा-पूरा) भर देते हैं और वह इस (दुनिया की ज़िन्दगी) में घाटे में नहीं रहते। (१५) यही वह लोग हैं जिनके लिए आख़िरत में (दोज़ख़ की) आग के सिवाय और कुछ नहीं और जो काम इस (दुनिया) में इन लोगों ने किये, गये-गुज़रे हुए और इनका किया-धरा बेकार हुआ। (१६) भला जो अपने परवरदिगार के खुले रास्ते पर हों और उनके पास उसकी ओर से गवाही (भी) पहुँची हो § और उससे (यानी क़ुर्आन से) पहले मूसा की किताब (तौरात भी) राह दिखानेवाली और मेहरबानी (के रूप में) मौजूद हो तो वही लोग उस पर ईमान लाते हैं। और फ़िर्क़ों में से जो कोई इस (क़ुर्आन) से मुन्किर (विमुख) हों तो उनके वादे की जगह (दोज़ख़ की) आग है, तो (ऐ पैग़म्बर!) तुम इस (क़ुर्आन) की तरफ़ से शक में न रहना। इसमें कुछ संदेह नहीं कि वह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ (सच्चा) है लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (१७) और जो अल्लाह (के नाम) पर झूठ गढ़े उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है? यह लोग अपने परवरदिगार के सामने पेश किये जावेंगे और गवाह गवाही देंगे कि यही हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार पर झूठ बोला था। सुन रखो कि ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है। (१८) जो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और उसमें कजी (याने राह से बेराह वाली बातें) खोजते रहते हैं तो यही हैं जो आख़िरत (के सामना होने) से भी इन्कार करते हैं। (१९) यह लोग न दुनिया ही में अल्लाह को थका (कर अपने को बचा) सकेंगे और न अल्लाह के सिवाय इनका कोई हिमायती (आख़िरत में ही) खड़ा होगा। (ऐ पैग़म्बर!) इनको दोहरी सज़ा होगी, क्योंकि (इनका कुफ़्र इस क़दर बढ़ा था कि हमारा पैग़ाम) न ये लोग सुन सकते थे और न देख सकते थे। (२०) यही लोग हैं जिन्होंने आप अपने को घाटे में डाला और झूठ जो बाँधते थे वह सब इनसे गया गुज़रा हो गया। (२१) ज़रूर यही लोग आख़िरत में सबसे ज़्यादा घाटे में होंगे। (२२) अलबत्ता जो लोग ईमान लाये और अच्छे काम किये और अपने परवरदिगार के आगे बिनती करते रहे, यही जन्नत में रहनेवाले हैं कि यह उस (जन्नत) में हमेशा रहेंगे। (२३) (इन) दोनों फ़िर्क़ों की मिसाल ऐसी है कि एक अन्धा और बहरा और एक देखने-सुनने वाला। क्या इन दोनों का हाल एकसा हो सकता है? फिर क्या तुम ध्यान नहीं करते †? (२४) ★

व. ला ज़िम

रु. २/२ आ १६

और (ऐसे ही हालात थे जब) हमने नूह को उनकी जाति की ओर भेजा था। (उन्होंने कहा) कि मैं तुमको साफ़-साफ़ डर सुनाने आया हूँ। (२५)

§ गवाही पहुँची है याने दिल में इस दीन का नूर और मज़ा पाता है और क़ुर्आन की तिलावत व-हिदायत। † काफ़िर अन्धों की तरह हैं कि अल्लाह की निशानियाँ नहीं देखते और बहरों की तरह हैं कि रसूल की बातें नहीं सुनते और ईमानवाले आँख और कान वाले हैं कि अल्लाह की निशानियों को देखते हैं और रसूल की बातों पर कान धरते हैं।

अल्ला तऽबुदू अिल्लल्लाह त् अिन्नी अख़ाफ़ु अलैकुम् अजाब यौमिन् अलीमिन् (२६) फ़क़ालल् - मलअुल्लजीन कफ़रू मिन् क़ौमिही मा नराक अिल्ला बशरम् - मिस्लना व मा नराकत्-तबअक अिल्लल्लजीन हुम् अराजिलुना बादियर्रअ्यि ज् व मा नरा लकुम् अलैना मिन् फ़ज़्लिम्-बल् नजुन्नुकुम् काजिबीन (२७) क़ाल या क़ौमि अरअैतुम् अिन् कुन्तु अला बैयिनतिम् - मिर्रब्बी व आतानी रह्मतम् - मिन् अिन्दिही फ़अुम्मियत् अलैकुम् त् अ-नुल्ज़िमुकुमू-हा व अन्तुम् लहा कारिहून (२८) व या क़ौमि ला अस्अलुकुम् अलैहि मा लन् त् अिन् अज्रिय अिल्ला अलल्लाहि व मा अना बितारिदिल्लजीन आमनू त् अिन्नहुम् मुलाक़ू रब्बिहिम् व लाकिन्नी अराकुम् क़ौमन् तज्हलून (२९) व या क़ौमि मैंयन्सुरुनी मिनल्लाहि अिन् तरत्तुहुम् त् अफ़ला तजक्करून (३०) व ला अक़ूलु लकुम् अिन्दी ख़ज़ा अिनुल्लाहि व ला अऽलमुल् - ग़ैब व ला अक़ूलु अिन्नी मलकूँव ला अक़ूलु लिल्लजीन तज़्दरी अऽयुनुकुम् लैंयुअ्तिय - हुमुल्लाहु ख़ैरन् त् अल्लाहु अऽलमु बिमा फ़ी अन्फ़ुसिहिम् ज् सला अिन्नी अिजल्-लमिनज़् - ज़ालिमीन (३१) क़ालू या नूहु क़द् जादल्तना फ़अक्सर्त जिदालना फ़अ्तिना बिमा तअिदुना अिन् कुन्त मिनस्सादिक़ीन (३२) क़ाल अिन्नमा यअ्तीकुम् बिहिल्लाहु अिन् शाअ व मा अन्तुम् बिमुऽजिज़ीन (३३) व ला यन्फ़अुकुम् नुस्ही अिन् अरत्तु अन् अन्सह लकुम् अिन् कानल्लाहु युरीदु अैंयुग़्विय-कुम् त् हुव रब्बुकुम् क़िफ़् व अिलैहि तुर्जअून त् (३४) अम् यक़ूलूनफ़्तराहु त् क़ुल् अिनिफ़्तरैतुहू फ़अलैय अिज्रामी व अना बरीअुम्-मिम्मा तुज्रिमून (३५) ★

वما من دآبة ١٢ — ١٧٩ — هود ١١

اَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّیْٓ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ یَوْمٍ اَلِیْمٍ ﴿۲۶﴾ فَقَالَ
الْمَلَاُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ
اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِیْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِیَ الرَّاْیِ ۚ وَمَا نَرٰى لَكُمْ عَلَیْنَا
مِنْ فَضْلٍۭ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِیْنَ ﴿۲۷﴾ قَالَ یٰقَوْمِ اَرَءَیْتُمْ اِنْ
كُنْتُ عَلٰى بَیِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّیْ وَاٰتٰىنِیْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّیَتْ
عَلَیْكُمْ ؕ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ﴿۲۸﴾ وَیٰقَوْمِ لَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ
عَلَیْهِ مَالًا ؕ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَاۤ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ؕ
اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّیْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿۲۹﴾ وَیٰقَوْمِ مَنْ
یَّنْصُرُنِیْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَلَاۤ اَقُوْلُ
لَكُمْ عِنْدِیْ خَزَآىِٕنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ الْغَیْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ اِنِّیْ مَلَكٌ
وَّلَاۤ اَقُوْلُ لِلَّذِیْنَ تَزْدَرِیْۤ اَعْیُنُكُمْ لَنْ یُّؤْتِیَهُمُ اللّٰهُ خَیْرًا ؕ اَللّٰهُ
اَعْلَمُ بِمَا فِیْۤ اَنْفُسِهِمْ ۚۖ اِنِّیْۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۳۱﴾ قَالُوْا یٰنُوْحُ
قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِیْنَ ﴿۳۲﴾ قَالَ اِنَّمَا یَاْتِیْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَآءَ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِیْنَ ﴿۳۳﴾
وَلَا یَنْفَعُكُمْ نُصْحِیْۤ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ یُرِیْدُ
اَنْ یُّغْوِیَكُمْ ؕ هُوَ رَبُّكُمْ ۫ وَاِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۳۴﴾ اَمْ یَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ
قُلْ اِنِ افْتَرَیْتُهٗ فَعَلَیَّ اِجْرَامِیْ وَاَنَا بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ﴿۳۵﴾

منزل ٣

★ रु. ३/३ आ ११

(कि) अल्लाह के सिवाय किसी की अिबादत न करो। मुझको तुम पर अज़ाब (पड़ने वाले) एक दुखदाई दिन का डर है। (२६) फिर उनकी जाति के सरदार जो मुन्किर (विमुख) थे कहने लगे कि हमको तो तुम हमारे ही जैसे आदमी दिखाई देते हो और हमारे नज़दीक सिर्फ़ वही लोग तुम्हारे ताबे हो गये हैं जो हमसे नीच और कच्ची समझ वाले हैं और वह भी सरसरी राय से, हम तो तुम में अपने से कोई विशेषता नहीं पाते बल्कि हम तुमको झूठा समझते हैं। (२७) (नूह ने) कहा भाइयो! भला देखो तो सही अगर मैं अपने परवरदिगार के खुले रास्ते पर हूँ, और उसने मुझको अपनी तरफ़ से रहमत दी है फिर वह (रास्ता) तुमको सूझ न पड़े तो (आख़िर हमारे पास क्या चारा है) क्या हम उसको तुम्हारे गले मढ़ सकते हैं जब कि तुम उससे बेज़ार (विमुख) हो रहे हो। (२८) और ऐ भाइयो! मैं इस (हिदायत) के बदले में तुमसे कुछ माल तो नहीं मांगता। मेरी मज़दूरी तो अल्लाह के सिवा किसी के ज़िम्मे नहीं है और मैं लोगों को जो ईमान ला चुके हैं (अपने पास से) निकालनेवाला नहीं हूँ (भलेही तुम उनको नीच कहो क्योंकि) इनको अपने परवरदिगार से मिलना है, मैं देखता हूँ कि तुम लोग (निरे) जाहिल हो।@ (२९) और भाइयो! अगर मैं इनको निकाल दूँ तो अल्लाह के सामने कौन मेरी मदद को खड़ा होगा? क्या तुम नहीं समझते। (३०) और मैं तुमसे दावा नहीं करता कि मेरे पास ख़ुदाई ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब (अदृष्ट की बातें) जानता हूँ और न मैं (यही) कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ और जो लोग तुम्हारी नज़रों में तुच्छ हैं मैं उनके सम्बन्ध में यह भी नहीं कह सकता कि अल्लाह उनको हरगिज़ कोई भलाई न देगा। उनके दिल की बात को अल्लाह ही खूब जानता है। अगर (बढ़-चढ़कर मैं) ऐसी बातें कहने का हौसला करूँ तो मैं ज़ालिमों में हूँगा। (३१) वह बोले ऐ नूह! तूने हमसे झगड़ा किया, और बहुत झगड़ा किया, अब अगर तू सच्चा है तो जिस (अज़ाब) से हमको डराता है उसको हम पर ले आ। (३२) (नूह ने) कहा कि अल्लाह को मंज़ूर होगा तो वही सज़ा को भी तुम पर लायेगा और (तब) तुम (भाग-बचकर उसको) थका (भी) न सकोगे। (३३) और जो मैं तुम्हारे लिए नसीहत करना चाहूँ अगर अल्लाह ही को तुम्हें बेराह चलाना मंज़ूर है तो मेरी नसीहत (कुछ भी) तुम्हारे काम नहीं आ सकती। वही तुम्हारा परवरदिगार है और उसी की तरफ़ तुमको लौटकर जाना है। (३४) (ऐ पैग़म्बर! जिस तरह नूह की क़ौम ने नूह को झुठलाया था) क्या (उसी तरह यह मक्का के मुशरिक भी तुमको झुठलाते हैं और तुम पर एतराज़ करते और) कहते हैं कि क़ुर्आन को पैग़म्बर ने खुद गढ़ लिया है, तो तुम (उनको) जवाब दो कि अगर (क़ुर्आन) मैंने खुद गढ़ लिया है तो मेरा गुनाह मुझ पर है और जो गुनाह तुम करते हो उस पर मेरा कुछ ज़िम्मा नहीं। (३५) ★

★ रु. ३/३ आ ११

@ इन्कारियों ने ईमान लाने वालों को नीच कहा क्योंकि वे धंधे करके अपना पालन-पोषण करते थे। इन आयतों में बताया गया है कि किसी प्रकार का पेशा या धंधा करने से आदमी नीच नहीं हो जाता; बल्कि जो लोग उसे नीच समझते हैं वही मूर्ख हैं। हज़रत नूह अ० की ही तरह रसूलुल्लाह स० मुहम्मद पर भी यह नौबत आई कि अमीर उमरः शिकायत करते थे कि आप इन अदना आदमियों को साथ न बिठायें तो हम आपकी बात सुनें। ग़रीब ईमानवाले नीच नहीं होते बल्कि अमीर घमण्डी ही नीच होते हैं।

व अूहिय अिला नूहिन् अन्नहु लैंयुअ्मिन मिन् क़ौमिक अिल्ला मन् क़द् आमन फ़ला तब्तअिस् बिमा कानू यफ़्अलून ज् सला (३६) वस्नअिल्-फ़ुल्क बिअऽयुनिना व वह्यिना व ला तुख़ातिब्नी फ़िल्लज़ीन ज़लमू ज् अिन्नहुम् मुग़्रक़ून (३७) व यस्नअुल्फ़ुल्क क़िफ़् व कुल्लमा मर्र अलैहि मलअुम्मिन् क़ौमिही सख़िरू मिन्हु त् क़ाल अिन् तस्ख़रू मिन्ना फ़अिन्ना नस्ख़रु मिन्कुम् कमा तस्ख़रून त् (३८) फ़सौफ़ तअ्लमून ला मैंयअ्तीहि अज़ाबुंय्युख़्ज़ीहि व यहिल्लु अलैहि अज़ाबुम् - मुक़ीमुन् (३९) हत्ता' अिज़ा जा'अ अम्रुना व फ़ारत्तन्नूरु ला क़ुल्नह्मिल् फ़ीहा मिन् कुल्लिन् ज़ौजैनिस्नैनि व अह्लक अिल्ला मन् सबक़ अलैहिल् - क़ौलु व मन् आमन त् व मा' आमन मअ़हू' अिल्ला क़लीलुन् (४०) व क़ालर्कबू फ़ीहा बिस्मिल्लाहि मज्रीहा § व मुर्साहा त् अिन्न रब्बी लग़फ़ूरुर् - रहीमुन् (४१) व हिय तज्री बिहिम् फ़ी मौजिन् कल्जिबालि क़िफ़् व नादा नूहुनिब्नहू व कान फ़ी मऽज़िलीं-याबुनैयर्कम्मअ़ना व ला तकुम्मअल् - काफ़िरीन (४२) क़ाल सआवी' अिला जबलीं-यऽसिमुनी मिनल्मा'अि त् क़ाल ला आसिमल्यौम मिन् अम्रिल्लाहि अिल्ला मर्रहिम ज् व हाल बैनहुमल् - मौजु फ़कान मिनल्मुग़्रक़ीन (४३) व क़ील या' अर्ज़ुब्लअ़ी मा'अकि व यासमा'अु अक़्लिअ़ी व ग़ीज़ल्-मा'अु व क़ुज़ियल् - अम्रु वस्तवत् अलल्जूदीयि व क़ील बुऽदल्लिल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन (४४) ● व नादा नूहुर्रब्बहू फ़क़ाल रब्बि अिन्नब्नी मिन् अह्ली व अिन्न वऽदकल् - हक़्क़ु व अन्त अह्कमुल् - हाकिमीन (४५)

वमा من دآبة ١٢ — ١٨٠ — هود ١١

وَاُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝ وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ۝ وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ۝ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝ حَتّٰى اِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ وَمَا اٰمَنَ مَعَهٗ اِلَّا قَلِيْلٌ ۝ وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ وَنَادٰى نُوْحُ ِۨابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ قَالَ سَاٰوِيْ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ۝ وَقِيْلَ يٰاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ مِنْ اَهْلِيْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ ۝

منزل ٣

रु ४ अ. १ ४

§ याद रहे अरबी ज़ुबान में 'याये' मझोल नहीं होती। मगर क़ुर्आन शरीफ़ में सिर्फ़ एक जगह (आयत ४१ में रेखाङ्कित) एक लफ़्ज़ "मज्रीहा" लिखा है उसका उच्चारण मज्रीहा नहीं बल्कि "मज्रेहा" पढ़ना चाहिये।

और नूह की तरफ़ खुदाई पैग़ाम आया कि तुम्हारी जाति में जो लोग ईमान ला चुके हैं उनके सिवाय अब और कोई ईमान नहीं लावेगा तो उनकी करतूतों पर तुम (कुछ) रंज न करो। (३६) और हमारे सामने और हमारे हुक्म के बमूजिब एक नाव बनाओ और ज़ालिमों (अवज्ञाकारियों) के सम्बन्ध में मुझसे कुछ (सिफ़ारिशन) न कहो, (क्योंकि) यह लोग ज़रूर डूबेंगे। (३७) चुनांचे नूह ने नाव बनानी शुरू की और जब कभी उनकी जाति के सरदार उनके पास से होकर गुज़रते तो उनकी हँसी उड़ाते। नूह ने जवाब दिया कि अगर तुम हम पर हँसते हो तो हम भी तुम पर हँसते हैं जैसे तुम (मुझ पर) हँस रहे हो। (३८) जल्दीही (तुमको) मालूम हो जायगा कि किस पर वह अज़ाब उतरता है जो उसको ज़लील करेगा और किस पर हमेशा के लिए वह अज़ाब बर्पा होगा। (३९) यहाँ तक कि हमारा हुक्म जब आ पहुँचा और (अज़ाबे इलाही का) तनूर उबल पड़ा तो हमने हुक्म दिया कि हर क़िस्म में से दो-दो के जोड़े और जिनकी बाबत पहले (न बख़्शे जाने का) हुक्म हो चुका है उनको छोड़कर अपने घरवाले † और जो ईमान ला चुके हैं ✡ उनको किश्ती में बैठा लो। और उनके साथ ईमान भी थोड़े ही लोग लाये थे (४०) और नूह ने (किश्ती में सवार होने वालों से) कहा सवार हो उसमें और अल्लाह के नाम से ही है किश्ती का बहना और ठहरना और बेशक मेरा रब बख़्शने वाला बेहद मेहरबान है। (४१) और किश्ती इनको ऐसी लहरों में जो पहाड़ के समान थीं चलने लगी और नूह का बेटा (दूर) किनारे पर था तो नूह ने उसे पुकारा कि बेटा! हमारे साथ बैठ ले और काफ़िरों के साथ मत रह। (४२) (वह) बोला मैं अभी किसी पहाड़ पर पनाह लेता हूँ, वह मुझको पानी से बचा लेगा। (नूह ने) कहा कि आज के दिन अल्लाह के ग़ुस्से से बचानेवाला कोई नहीं सिवाय उसको कि अल्लाह ही जिस पर अपनी मेहरबानी करे। और दोनों के दरमियान एक लहर आ गई और (दूसरों के साथ नूह का बेटा भी) डूबने वालों में रह गया। (४३) और हुक्म हुआ कि ऐ ज़मीन! अपना पानी निगल ले और ऐ आसमान! थम जा और पानी समा गया और काम तमाम हो चुका और किश्ती जूदी (पहाड़) § पर टिक गई और हुक्म हुआ कि ज़ालिमों की क़ौम दूर हुई (अल्लाह की रहमत से)। (४४) ● और नूह ने अपने परवरदिगार को पुकारा और बिनती की कि ऐ मेरे परवरदिगार! मेरा बेटा मेरे घर वालों में से है और तेरा वादा सच्चा है और तू सब हाकिमों से बड़ा हाकिम है। @ (४५) (अल्लाह ने) फ़र्माया कि ऐ नूह! तुम्हारा बेटा तुम्हारे घरवालों में नहीं था, क्योंकि इसके कर्म बुरे थे। तो जो तू नहीं जानता वह बात मुझसे न पूछ। मैं तुझको नसीहत करता हूँ कि तू जाहिलों (अज्ञानियों) जैसा न हो। (४६)

● रु. ब. अ. १/४

† हज़रत नूह अ० के समय जो तूफ़ान बर्पा हुआ उसमें उनके घरवालों में से जो काफ़िर और न बचने वाले अल्लाह की ओर से बताये जा चुके थे उनको छोड़ कर बाक़ी घरवालों को किश्ती में बिठाल लेने का हुक्म हुआ। घरवालों में काफ़िरों की चरचा में एक तो हज़रत नूह अ० का एक बेटा और उनकी बीवी का नाम आता है जो तूफ़ान में तबाह हो गये। ✡ इस आयत से मालूम होता है हज़रत नूह अ० व उनके तीन बेटों के अलावा भी कुछ दूसरे लोग थे जो ईमानवाले थे और जो किश्ती में बैठकर उस प्रलय से बच गये। इस तरह सारे मौजूदा इन्सानों को महज़ हज़रत नूह अ० की ही औलादों में शुमार करनेवालों की राय का क़ुर्आन समर्थन नहीं करता। (ह० मौलाना मौदूदी) § यह एक पहाड़ का नाम है जो शाम देश में है। @ यानी तूने वायदा किया था कि तेरे घरवालों को बचा लिया जायगा तो मेरा बेटा कैसे डूब गया? ऐ अल्लाह! तेरा कहना तो कभी ग़लत नहीं हो सकता।

क़ाल या नूहु अिन्नहु लैस मिन् अह्लिक ज् अिन्नहु अ़मलुन् ग़ैरु सालिहिन् ज् क् सला फ़ला तस्अल्नि मा लैस लक बिही अ़िल्मुन् त् अिन्नी॑ अअ़िजुक अन्तकून मिनल् - जाहिलीन (४६) क़ाल रब्बि अिन्नी॑ अअूजुबिक अन् अस्अलक मा लैस ली बिही अ़िल्मुन् त् व अिल्ला तग़्फ़िर् ली व तर्हम्नी॑ अकुम्मिनल्-ख़ासिरीन (४७) क़ील यानूहुह्बित् बिसलामिम् - मिन्ना व बरकातिन् अ़लैक व अ़ला॑ अुममिम् - मिम्मम् - मअ़क त् व अुममुन् सनुमत्तिअ़ुहुम् सुम्म यमस्सुहुम् मिन्ना अ़जाबुन् अलीमुन् (४८) तिल्क मिन् अम्बा॑अिल्ग़ैबि नूहीहा॑ अिलैक ज् मा कुन्त तअ़्लमुहा॑ अन्त व ला क़ौमुक मिन् क़ब्लि हाजा त् ∴ फ़स्बिर् त् ∴ अिन्नल्-आ़क़िबत लिल्मुत्तक़ीन (४९) ★ व अिला आ़दिन् अख़ाहुम् हूदन् त् क़ाल या क़ौमिअ़्बुदुल्लाह मा लकुम् मिन् अिलाहिन् ग़ैरुहू त् अिन् अन्तुम् अिल्ला मुफ़्तरून (५०) या क़ौमि ला॑ अस्अलुकुम् अ़लैहि अज्रन् त् अिन् अज्रिय अिल्ला अ़लल्लजी फ़तरनी त् अफ़ला तअ़्क़िलून (५१) व या क़ौमिस्-तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्म तूबू॑ अिलैहि युर्सिलिस्-समा॑अ अ़लैकुम् मिद्रारौंव यज़िद्कुम् क़ूवतन् अिला क़ूवतिकुम् व ला ततवल्लौ मुज्रिमीन (५२) क़ालू या हूदु मा जिअ्तना बिबैयिनतिंव मा नह्नु बितारिकी॑ आलिहतिना अ़न् क़ौलिक व मा नह्नु लक बिमुअ्मिनीन (५३) अिन्नक़ूलु अिल्लाअ़्तराक बअ़्ज़ु आलिहतिना बिसू॑अिन् त् क़ाल अिन्नी॑ अुश्हिदुल्लाह वश्हदू॑ अन्नी बरी॑अुम्-मिम्मा तुश्रिकून ला (५४) मिन् दूनिही फ़कीदूनी जमीअ़न् सुम्म ला तुन्ज़िरूनि (५५) अिन्नी तवक्कल्तु अ़लल्लाहि रब्बी व रब्बिकुम् त् मा मिन् दा॑ब्बतिन् अिल्ला हुव आख़िजुम् - बिना सियतिहा त् अिन्न रब्बी अ़ला सिरातिम् - मुस्तक़ीमिन् (५६)

मु. अ्रि मु ता ख. ६ ★ रु. ४/४ आ १४

وما من دآبة ١٢ ١٨١ هود ١١

قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ فَلَا تَسْئَلْنِ
مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ اِنِّیْٓ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ
اِنِّیْٓ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْئَلَكَ مَا لَيْسَ لِیْ بِهٖ عِلْمٌ وَاِلَّا تَغْفِرْ لِیْ وَتَرْحَمْنِیْٓ
اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَ
عَلٰٓى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝
تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ
مِنْ قَبْلِ هٰذَا فَاصْبِرْ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ
هُوْدًا قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا
مُفْتَرُوْنَ ۝ يٰقَوْمِ لَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلَى الَّذِیْ
فَطَرَنِیْ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ
يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا
مُجْرِمِيْنَ ۝ قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ بِتَارِكِیْٓ اٰلِهَتِنَا
عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ
بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ قَالَ اِنِّیْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّیْ بَرِیْٓءٌ
مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝ مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِیْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ۝
اِنِّیْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّیْ وَرَبِّكُمْ مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا
اِنَّ رَبِّیْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ

(नूह ने) कहा ऐ मेरे परवरदिगार ! मैं तेरी ही पनाह माँगता हूँ कि जो मैं नहीं जानता हूँ उसकी बाबत तुझसे पूछ बैठूँ और अगर तू मेरा (यह) क़सूर माफ़ नहीं करेगा और (मुझ पर) रहम न करेगा तो मैं बर्बादों में हो जाऊँगा। (४७) हुक्म हुआ कि ऐ नूह ! हमारी तरफ़ से ऐसी सलामती और बरकतों के साथ (किश्ती से) उतरो जैसी तुम पर और उन गिरोहों पर जो तेरे साथवालों में हैं (उन पर होंगी)। और कुछ ऐसे भी गरोह होंगे जिनको हम (एक मुद्दत तक दुनिया के) फ़ायदे देंगे फिर (उनकी बे हुक्मी के कारन) उनको हमारी तरफ़ से दुख की मार पहुँचेगी। (४८) (ऐ मोहम्मद !) यह ग़ैब की कुछ ख़बरें हैं जो हम 'वही' द्वारा तेरी तरफ़ भेजते हैं। इससे पहले तुम और तुम्हारी जाति के लोग इन बातों को न जानते थे, तो तू सब्र कर, बेशक परहेज़गारों का अन्त भला है। (४९) ★

★ रु. ४/४ आ १४

और (इसी तरह क़ौम) आद की तरफ़ हमने (उन्हीं के भाई) हूद को (पैग़म्बरी देकर) भेजा। (उन्होने) समझाया कि भाइयो ! अल्लाह ही की अिबादत करो, उसके सिवाय तुम्हारा कोई दूसरा पूज्य नहीं। (और अल्लाह के साथ दूसरों को शरीक और पूज्य बनाना यह बातें) तुम सब झूठ बाँधते हो। (५०) भाइयो ! इस (नसीहत के) बदले मैं तुमसे कुछ मज़दूरी नहीं माँगता, मेरी मज़दूरी तो उसी के ज़िम्मे है जिसने मुझको पैदा किया, तो क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते§। (५१) भाइयो ! अपने परवरदिगार से (अपने क़ुसूरों की) माफ़ी माँगो, फिर (आगे के लिए) उसके सामने तौबः करो; वह अपने (रहम से) तुम पर ख़ूब बारिशें भेजेगा और दिन पर दिन तुम्हारे बल (ज़ोर) को बढ़ावेगा और गुनहगार बनकर उससे मुँह न मोड़ो। (५२) वह कहने लगे ऐ हूद ! तू हमारे पास कोई दलील लेकर नहीं आया और तेरे कहने से हम अपने पूजितों को न छोड़ेंगे और हम तुम पर यक़ीन लाने वाले नहीं। (५३) हम तो यही समझते हैं कि तुझ पर हमारे पूजित (देवताओं) में से किसी की मार पड़ गई है। ꣵ (हूद ने) जवाब दिया कि मै अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि अल्लाह के सिवाय जिनको तुम शरीक बनाते हो मैं उनसे (बिलकुल) बेज़ार (विमुख) हूँ। (५४) तो तुम (और तुम्हारे पूजित) सब मिलकर मेरे साथ अपनी बदी कर चलो और मुझको दम न लेने दो। (५५) मैं तो अल्लाह ही पर भरोसा करता हूँ जो मेरा परवरदिगार है और तुम्हारा परवरदिगार है। जितने जानदार हैं, सभी की चोटी उसके हाथ में है। बेशक मेरा परवरदिगार सीधी राह पर (चलने पर मिलता) है। (५६)

---

§ तमाम नबियों के बयान यही कहते हैं कि उनका अपना कोई निजी फ़ायदा नहीं रहा। वह तो दुनिया की भलाई के लिए ही अल्लाह की प्रेरणा से उसके हुक्मों को दुनियावालों में पहुँचाते हैं। उनकी ग़रज़ न होने पर भी सरकश लोग बजाय उनकी नसीहत पल्ले बाँधने के उलटे उन नबियों पर ही मुसीबत के पहाड़ ढाते रहे। और उनकी इन्हीं सरकशियों के कारन उन बड़ी-बड़ी शान-शौक़त की क़ौमों को तबाह होना पड़ा और दूसरी क़ौमों को उनकी जगह मिली। अल्लाह की क़ुदरत का यह सिलसिला दुनिया में हमेशा से क़ायम है और क़ायम रहेगा। ꣵ हूद अ॰ की सरकश क़ौम ने उनसे कहा कि हमारी समझ में तो तुम्हारी देवताओं की तरफ़ से इनकारी के कारन किसी देवता का कोप तुम पर पड़ गया है और उस कारन तुम समाज में सब तरफ़ बेइज़्ज़त हो रहे हो।

फ़अिन् तवल्लौ फ़क़द् अब्लग़्तुकुम् मा उर्सिल्तु बिही अिलैकुम् त् व यस्तख़्लिफ़ु रब्बी क़ौमन् ग़ैरकुम् ज् व ला तज़ुर्रूनहू शैअन् त् अिन्न रब्बी अ़ला कुल्लि शैअिन् हफ़ीज़ुन् (५७) व लम्मा जाअ अम्रुना नज्जैना हूदौंवल्लज़ीन आमनू मअ़हू बिरह़्मतिम्-मिन्ना ज् व नज्जैनाहुम् मिन् अ़ज़ाबिन्-ग़लीज़िन् (५८) व तिल्क आदुन् क़िफ़् ला जहदू बिआयाति रब्बिहिम् व अ़सौ रुसुलहू वत्तबअ़ू अम्र कुल्लि जब्बारिन् अ़नीदिन् (५९) व उत्बिअ़ू फ़ी हाज़िहिद्दुन्या लअ़्नतौंव यौमल्-क़ियामति त् अला अिन्न आदन् कफ़रू रब्बहुम् त् अला बुअ़्दल्लिआदिन् क़ौमि हूदिन् (६०) ★ व अिला समूद अख़ाहुम् सालिहन् म् ● क़ाल या क़ौमिअ़्बुदुल्लाह मा लकुम् मिन् अिलाहिन् ग़ैरुहू त् हुव अन्शअकुम् मिनल्अर्ज़ि वस्तअ़्मर-कुम् फ़ीहा फ़स्तग़्फ़िरूहु सुम्म तूबू अिलैहि त् अिन्न रब्बी क़रीबुम्-मुजीबुन् (६१) क़ालू या सालिहु क़द् कुन्त फ़ीना मर्जुव्वन् क़ब्ल हाज़ा अतन्हाना अन् नअ़्बुद मा यअ़्बुदु आबाउना व अिन्नना लफ़ी शक्किम्मिम्मा तद्अ़ूना अिलैहि मुरीबिन् (६२) क़ाल या क़ौमि अरअैतुम् अिन् कुन्तु अ़ला बैयिनतिम्-मिर्रब्बी व आतानी मिन्हु रह़्मतन् फ़मैंयन्सुरुनी मिनल्लाहि अिन् अ़सैतुहू क़िफ़् फ़मा तज़ीदूननी ग़ैर तख़्सीरिन् (६३) व या क़ौमि हाज़िही नाक़तुल्लाहि लकुम् आयतन् फ़ज़रूहा तअ्कुल् फ़ी अर्ज़िल्लाहि व ला तमस्सूहा बिसूअिन् फ़यअ्ख़ुज़कुम् अ़ज़ाबुन् क़रीबुन् (६४) फ़अ़क़रूहा फ़क़ाल तमत्तअ़ू फ़ी दारिकुम् सलासत अैयामिन् त् ज़ालिक वअ़्दुन् ग़ैरु मक्ज़ूबिन् (६५) फ़लम्मा जाअ अम्रुना नज्जैना सालिहौंवल्लज़ीन आमनू मअ़हू बिरह़्मतिम्-मिन्ना व मिन् ख़िज़्यि यौमिअिज़िन् त् अिन्न रब्बक हुवल्क़वीयुल् - अ़ज़ीज़ु (६६)

★ रु. ५/५ आ ११ ● व. लाज़िम

بِهٖ اِلَيْكُمْ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا اِنَّ
رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ۝ وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝ وَ
تِلْكَ عَادٌ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ
جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۝ وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَلَآ
اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ۝ وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ
صٰلِحًا قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ هُوَ اَنْشَاَكُمْ
مِّنَ الْاَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ اِنَّ رَبِّيْ
قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ۝ قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَآ اَتَنْهٰىنَآ
اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ۝
قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً
فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ تَخْسِيْرٍ ۝
وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَ
لَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ۝ فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ
تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ۝ فَلَمَّا جَآءَ
اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ
يَوْمِئِذٍ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ۝ وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا